बड़े भाई

स्मृति-ग्रंथ

•

भारतीय मजदूर संघ
केन्द्रीय कार्यालय
नई दिल्ली

प्रकाशक

प्रभाकर घाटे
महामंत्री : भारतीय मजदूर संघ
"रामनरेश भवन"
तिलक गली, चूना मंडी, पहाड़गंज
नई दिल्ली-११००५५

परामर्शदाता

दत्तोपंत ठेंगड़ी
मनहर भाई मेहता
प्रभाकर घाटे

प्रथम संस्करण

कृष्ण पक्ष:
अश्विन, संवत्–२०४४
विश्वकर्मा जयंती (राष्ट्रीय दिवस)
१७ सितम्बर सन् १९८७

मूल्य : १०० रुपये

सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन

मुद्रक

सियाराम प्रिंटर्स,
१५६२, मेन बाजार, पहाड़गंज,
नई दिल्ली-११००५५

समस्त कला, कौशल व विज्ञान के सृजनकर्ता;

उद्योगों के मूल पुरुष एवं

श्रमिकों के आदि देव

भगवान विश्वकर्मा

के चरण कमलों में

सादर समर्पित

अनुक्रमणिका

व्यक्ति

विषय	पृष्ठ
जीवन यात्रा	३
वंश वृक्ष	५
निरोगी जीवन का रोग से संघर्ष	६
परामर्श से संबंधित व्यक्तियों के नाम	२४
स्व. श्री रामनरेश सिंह जी उर्फ बड़े भाई जी का जीवन क्रम	३४
श्रद्धाञ्जलियां	४८

व्यक्तित्व

'बड़े भाई' श्रम समर्पण और निष्ठा के अग्रदूत	७१
हमारे छोटे "बड़े भाई" रामनरेश सिंह	७४
ध्येय समर्पित जीवन	७८
क्यों उठा लिया बगवैया ने ?	८२
एक अनोखा बड़ा भाई	८७
संगठन तंत्र के बेजोड़ शिल्पी	९३
निस्पृही बड़े भाई	९७
अनुकरणीय जीवन	१००
बड़े भाई	१०५

विषय	पृष्ठ
ऐसे थे बड़े भाई	२८५
भोजन पेट के लिए, स्वाद के लिए नहीं	२८६
लौह पुरुष	२८७
जब हृदय से जाग्रोगे, सबल जानि हों तोहि	२९०
आन्तरिक शक्ति	,,
कार्यालय कार्यकर्ताओं का है, होटल या धर्मशाला नहीं	२९२
बात मनवाने की अनोखी कला	२९४

प्रेरक प्रसंग

एक निरासक्त प्रचारक	२९७
आदर्श जीवन	३०१
दधीचि	३०४
जवाब शब्दों में नहीं, अनुभव से लीजिए	३०६
मर्द नेता	३०८
कथनी ग्रौर करनी एक	३१५
अपनत्व	,,
आराम हराम	३१६
निःश्छल, निर्मल, निष्कपट	,,
कोई काम छोटा नहीं	३१८
हिंसा कभी नहीं अपनाएंगे	३१९
कार्यकर्ता का मन ग्रौर मान	,,
ग्रनुपम पारखी	३२१
भक्त और ग्रनासक्त	,,
समाज की पीड़ा से पीड़ित	३२३
जरूरत है मजबूत मर्द संगठन की	३२५
जेब खर्च केवल दस रुपये	३२७
सादगी की मूर्ति	३२८
नेता नहीं साथी	३२९
श्रम की आराधना	३३०
कोरे भाषण भट्ट नहीं	,,
उच्च ग्रादर्श-सादा जीवन	३३१
विरोधियों का भी आदर	,,
आसाधारण कर्तृत्व	३३२
चन्दन सी सुगन्ध दीपक सा उजाला	३३४
श्री पिता जी	३३५

विषय	पृष्ठ
सेवा एवं परोपकार की मूर्ति	१०७
आदर्शवाद के मूर्त प्रतीक	१०९
मानवता के अग्रदूत	११२
बन्दे महापुरुष	११४
हीरा मुख से ना कहे लाख हमारो मोल	११७
केवल आशीर्वाद	१२४
दुर्लभ व्यक्तित्व	१२६
दरिद्र नारायण के पुजारी	१२८
एक बहुआयामी व्यक्तित्व	१४२

विचार

आदर्शवादियों के नाम एक आदर्शवादी का पैगाम	१५७
विचार बिम्ब	१६०
हम झुकेंगे नहीं	२१०
दृष्टिकोण	११२
ट्रेड यूनियन	२२१
सरकारी रीति-नीति	२२६
खेतिहर मजदूर	२३३
भारत में श्रम संघ (ट्रेड यूनियन) आन्दोलन	२३६
खेतिहर मजदूरों की दयनीय स्थिति और उसका निराकरण	२४९

स्मृति दीप

वे हमारी स्मृति में चिर अमर हैं	२६९
एक कर्मयोगी के सान्निध्य में	२६२
मंजिलें अभी और भी हैं	२६५
अधिकार प्राप्त किये जाते हैं	२७०
अनोखा अनुभव	२७३
बन्देमातरम् नारा नहीं धर्म है···	२७६
मजदूर संघ में तुम्हारे कई लाख भाई हैं	२७८
गुणों की खान	२८०
अपना आदमी	२८३
तपस्वी भी, रसीले भी	,,
कार्यक्रम नहीं छोड़ सकना	२८४
संघर्ष स्वयं के बल पर	,,
पितृतुल्य व्यवहार	,,

समर्पण

पूर्वी उत्तर प्रदेश में कलहट रेलवे स्टेशन से कुछ दूर हटकर एक गांव है बगही (चुनार)। स्वर्गीय श्री रामनरेश सिंह का जन्म इसी गांव के एक साधारण परिवार में हुआ था। यहीं उनका लालन-पालन हुआ और शिक्षा-दीक्षा भी। लोग उन्हें "बड़े भाई" के नाम से जानते और पुकारते थे।

परम पूजनीय श्रीगुरूजी की प्रेरणा से, कर्मयोगी श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी के नेतृत्व में २३ जुलाई १९५५ को भोपाल में भारतीय मजदूर संघ की स्थापना हुई थी। तभी श्रम आंदोलन को राष्ट्रीय जीवनधारा के साथ जोड़कर उसे एक नया आयाम प्रदान करने का विधिवत् अनुष्ठान प्रारंभ हुआ था। यह एक संयोग की ही बात थी कि उस दिन लोकमान्य तिलक का जयन्ती पर्व भी था। इस अनुष्ठान में श्री रामनरेश सिंह "बड़े भाई" एक अपराजेय सेनापति के रूप में शामिल हुए और तब से मृत्युपर्यंत भारतीय मजदूर संघ की ध्वजा देश-देशान्तर में सतत फहराते रहे। यह उन्हीं की कठोर साधन का प्रतिफल है कि भारतीय राष्ट्रीय श्रम आंदोलन में भारतीय मजदूर संघ को दूसरा स्थान प्राप्त हो सका और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी उसे प्रतिनिधित्व मिला। वह चरैवेति मंत्र के मूर्तिमंत प्रतीक थे। पैर के छालों को देखकर उनकी गति की तृषा और भी बलवती हो जाती थी। वह तन-मन से श्रम और निर्माण के आदिदेव "विश्वकर्मा" के श्रीचरणों में समर्पित थे।

"आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति," प्राचीन ऋषि-मुनियों का आदर्श रहा है। उनकी दृष्टि में परब्रह्म ही समस्त सृष्टि के अणु-परमाणु में विद्यमान है। अतः उनके अनुसार आत्मा ही दर्शनीय और श्रवणीय मानी गई है। किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी सम्पूर्ण जीवन साधना का सार होता है। उसका कर्तृत्व उसके जीवन और व्यक्तित्व की प्रतिच्छवि होती है। व्यक्ति के अन्तर्बाह्य दो पहलू हुआ करते हैं। संगठन में व्यक्ति का अन्तर्मुखी

विषय	पृष्ठ
हम तो ठहरे गांव के आदमी	३३७
"चुटकिया"	३३८
मैं ही बड़े भाई हूं	,,
मजदूर नेता नहीं, सच्चे मजदूर	३४०
मन के जरासंघ से संघर्ष करो	३४२
हम हारे वह जीते	३४४
कार्यकर्ताओं को समझाने का ढंग	३४५
रामनरेश सिंह से बड़े भाई	३४७
वह अमूल्य क्षण	३५०
बड़े भाई की लखनऊ दिनचर्या	३५२
बड़े भाई : बड़े भ्राता	३५७
धुन के धनी	३५९
न्याय के लिये	३६१
बहुआयामी व्यक्तित्व	३६२
पहली मुलाकत	३६३
अच्छे मित्र	३६४
मां जैसी ममता	३६५
गुदड़ी के लाल	३६८
दिशादर्शन	३६९

का संकलन किया। मैं "बड़े भाई" के कुटुम्बीजनों, उनके शुभचिंतकों, पुरुषोत्तमपुर (चुनार), विंध्याचल और काशी के मित्र परिवारों तथा कानपुर एवं लखनऊ के कार्यकर्ताओं का भी ऋणी हूं जिन्होंने अपने-अपने स्मृति पुष्प इस स्मृति ग्रंथ में पिरोने के लिए अर्पित किए। मैं उन बंधुओं के प्रति भी आभारी हूं जिन्होंने अपने-अपने स्तर पर उत्तर प्रदेश विधान भवन पुस्तकालय से, विधान परिषद् की कार्यवाहियों में से "बड़े भाई" के कुछ भाषणों को उपलब्ध कराने में सहयोग किया। मैं उन्हें भी कैसे भूल सकता हूं जिनके सहयोग और मार्गदर्शन में, स्मृति ग्रंथ को अंतिम रूप दिया जा सका। श्री योगेन्द्र सियाराम प्रिंटर्स, पहाड़गंज, नई दिल्ली के प्रति मैं विशेष रूप से आभारी हूं जिन्होंने इसके मुद्रण को सर्वथा व्यावसायिक कार्य न मानकर श्रद्धापूर्वक करना स्वीकार किया और पुस्तक की रूपसज्जा के लिए अपने अमूल्य सुझाव दिए। मैं उन बंधुओं के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूं जिन्होंने अल्प समय में इसके टंकन का दायित्व निभाया। संक्षेप में मैं इतना ही कह सकता हूं कि सभी बंधुओं ने एक साथ मिलकर श्रम की मथानी से स्मृति रूपी सागर को मथकर संस्मरण रूपी जो अमृत प्रदान किया वही मैंने इस स्मृति ग्रंथ रूपी अमृतकलश में संजोया है।

मेरा यह सद्प्रयास रहा है कि लेखकों के विचार यथासंभव उन्हीं के शब्दों और उन्हीं की भाषा शैली में ज्यों के त्यों प्रस्तुत किए जायं। तथापि यदाकदा जहां आवश्यक समझा है संशोधन और परिवर्द्धन करने का प्रयास किया है। लेखकों और पाठकों से इसके लिए अति विनम्रतापूर्वक मैं क्षमा प्रार्थी हूं। ऐसा करने का हमारा प्रयास इसलिए भी था ताकि प्रस्तुत विषय सामग्री में भाषाई एकरूपता न आने पाये। कुछ लेख और संस्मरण स्थानाभाव के कारण जगह नहीं पा सके, तो कुछ पुनरावृत्ति न हो, इस कारण छोड़ दिए गए। आशा है मेरी असमर्थता का अनुभव करते हुए ये सभी स्नेहीजन और लेखक कृपापूर्वक क्षमा करेंगे।

और अंत में, मैं, पाठकों से निवेदन करूंगा कि वे प्रस्तुत सामग्री की अशुद्धियों पर, यदि कोई रह गई हों तो, न जायें। बल्कि जिस भावना से सामग्री प्रस्तुत की गई है, उसे उसी भावना की कसौटी पर परखें। यदि आपने इसे सराहा और इसमें "बड़े भाई" का स्मृति रूप में स्पष्ट दर्शन कर पाए तो मैं समझूंगा कि मेरा श्रम अकारथ नहीं गया। इन्हीं शब्दों के साथ भारतीय मजदूर संघ, उसके कार्यकर्ताओं तथा श्रम के आराधकों की ओर से यह स्मृति ग्रंथ "बड़े भाई" की पुण्य स्मृति में उन्हें ही समर्पित करता हूं। त्वदीयं वस्तु गोविन्द, तुभ्यमेव समर्पयाम्।

रामदास पांडे

व्यक्तित्व ही अधिक महत्वपूर्ण होता है । उसी से उसके कर्तृत्व में मौलिकता और सरसता आ पाती हैं । "बड़े भाई" अन्तर्मुखी प्रतिभा के धनी थे । संभवत: इसी कारण वह परम पूजनीय श्रीगुरुजी के इस ध्येय वाक्य "मैं नहीं तू ही" तथा "इदं राष्ट्रय, इदं न मम्"—यह मेरा नहीं राष्ट्र का है, के प्रति निष्ठावान रहे ।

त्यजदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ।
ग्राम जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथ्वी त्यजेत् ।।

कुल के कल्याण के लिए व्यक्ति का, ग्राम के लिए कुल का, जनपद के लिए ग्राम का, तथा आत्मा के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी का त्याग कर देने के औचित्य की अनुभूति से परिपूर्ण "बड़, भाई" की एक मात्र आकांक्षा थी—

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ।।

"न मुझ राज्य की इच्छा है, न स्वर्ग की और न मोक्ष की । मैं तो केवल दुःखों से तप्त प्राणिमात्र की व्यथा हरना चाहता हूं ।"

इस प्रकार किसी माला में प्रथम मणी, उपवन में प्रथम पुष्प और गगन में जो प्रथम नक्षत्र का महत्वपूर्ण स्थान हो सकता है वही वर्तमान श्रम आंदोलन में स्वर्गीय "बड़े भाई" को प्राप्त है । उनमें ईश्वर प्रदत्त "सहजता" थी । श्रम द्वारा अर्जित "उपलब्धि" पर उन्हें विश्वास था । अपने इन्हीं गुणों के कारण वह मजदूर वर्ग में अपूर्व ख्याति अर्जित कर सके ।

ऐसे तप: पूत, त्यागी और निष्ठावान "बड़े भाई" के व्यक्तित्व और कर्तृत्व के विषय में जब स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित करने का निश्चय हुआ और उसके संयोजन का दायित्व मुझपर सौंपा गया तो मुझे यह कार्य अतीव कठिन प्रतीत हुआ । सचमुच यह एक गुरूतर कार्य था । क्योंकि "स्मृति ग्रंथ" के लिए लेखों और संस्मरणों का संकलन का कार्य कुछ वैसा ही था जैसे रत्नाकर में डुबकी लगाकर माला के लिए मोतियां चुनना ।

अस्तु,

"बड़े भाई" की पुण्य स्मृति में प्रकाशित यह स्मृति ग्रन्थ सागर में से गागर भरने का एक प्रयास मात्र है । हम उन सभी महानुभावों के प्रति आभारी हैं जिनकी रचनाएं, लेख अथवा संस्मरण इस गागर में जगह पा सके । जिन्हें मैं चाहते हुए भी स्थान नहीं दे पाया, उन सभी लेखकों से क्षमाप्रार्थी हूं । मैं कृतज्ञ हूं भारतीय मजदूर संघ के निष्ठावान विनयी और अति उत्साही कार्यकर्ता श्रीमान् अमरनाथ जी डोगरा का जिन्होंने देशव्यापी प्रवास करके सम्बन्धित व्यक्तियों से सम्पर्क साधकर स्मृति ग्रंथ के लिए लेखों और संस्मरणों

दहलीज पर

"Slowly and sadly we laid him down.
From the field of his fame fresh and gory.
We carved not a line, we raised not a stone.
But we left him alone with his glory."

(From The Burial SJM)

"तान् प्रति नैष यत्नः" ।

"दहलीज पर" लिखने के लिए बैठा हूं ।

एक वाक्य का तीव्र स्मरण हो रहा है ।

कुमेरी की लड़ाई में मल्हारराव होलकर की आंखों के सामने उनका पुत्र खंडेराव तोप के गोले से मारा गया ।

शोकविह्वल मल्हारराव ने कहा, "वास्तव में मेरा श्राद्ध तुम्हें करना चाहिए था, आज मैं तुम्हारा श्राद्ध कर रहा हूं ।"

दिल की गहराई के उत्कट भाव दिल वाले ही समझ सकते हैं, कम्प्यूटर नहीं समझ सकता ।

न ही समझ सकते हैं वे व्यवहारचतुर पुरुष जो सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों को अपनी इच्छापूर्ति के लिए शतरंज की गोटियां मात्र मानते हैं ।

हमारे देश में समान परिस्थिति में इसी प्रश्न का यही उत्तर अजीत वाडेकर ने दिया था। क्या दुनिया से निवृत्त होते समय बड़े भाई का मन भी इस उत्तर से प्रभावित था ? पता नहीं।

किन्तु उनकी महानिवृत्ति के पश्चात सभी के मन में वही प्रश्न उभर आया, जो इन दोनों पत्रकारों ने उपस्थित किया था।

× × ×

यह प्रस्तावना लिखते समय एक बात अखर रही है। बड़े भाई के कई गुणों का उल्लेख इसमें आता है। किन्तु उनसे संबंधित घटनाओं का उल्लेख जानबूझकर टाला है। क्योंकि ये घटनाएं ताजी हैं और जीवित व्यक्तियों से संबंधित हैं। अतएव नाम निर्देश करते हुए लिखना इस समय संगठनशास्त्र के अनुकूल नहीं है। ग्रेटब्रिटेन तथा अन्य कुछ देशों में ऐसी प्रथा है कि कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज तुरन्त प्रकाशित न करते हुए तीस साल के बाद प्रकाशित करना। इस प्रथा के पीछे भी शायद इसी तरह की मानसिकता होगी।

किसी भी बड़े समुदाय को चलाने वाले व्यक्ति में दो तरह के गुणों की आवश्यकता हुआ करती है—वह कुशल संगठक (Organiser) भी हो और समर्थ प्रशासक (Administrator) भी। संगठन (Organisation) और प्रशासन (Administration) दोनों वर्तुल (Overlapping) हैं, किन्तु पूरी तरह से एकरूप (Indentical) नहीं। प्रशासन (Administration) का संबंध प्रमुख रूप से बाह्य, वस्तुनिष्ठ व्यवस्था से, मशिनरी से रहता है, और संगठन (Organisation) का प्रमुख विषय सम्बन्धित लोगों की आत्मनिष्ठ प्रेरणा तथा उनका परस्पर सामंजस्य हुआ करता है। यह आवश्यक नहीं कि जो एक विषय में कुशल है, वह दूसरे विषय में भी कुशल ही होगा। किन्तु भारतीय मजदूर संघ का यह सद्भाग्य है कि उसके महामंत्री में दोनों गुणों का सुखद संयोग था।

परमपूजनीय श्रीगुरूजी के व्यक्तित्व का बहुत गहरा असर बड़े भाई के मन पर था। "किं कर्म किमकर्मेति"—क्या करें, क्या न करें, यह मानसिक द्वंद्व हर मनुष्य के जीवन में कभी-कभी उपस्थित होता है। ऐसे अवसर पर वे एकाग्रचित्त से यह कल्पना करने का प्रयास करते थे कि उस परिस्थिति में श्रीगुरूजी होते तो वे क्या निर्णय करते। उनकी कल्पना किस सीमा तक सही या गलत निकलती थी, यह तो वे ही बता सकते थे, किन्तु महत्व की बात यह थी कि द्वंद्व की स्थिति में वे श्रीगुरूजी को सन्दर्भ बिन्दु (Point of reference) मानते थे।

स्वयंसेवक के नाते बड़े भाई के लिए सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व पूजनीय सरसंघचालक जी का था। उनकी अन्तिम बीमारी के समय उनका स्वास्थ्य देखने के लिए परमपूजनीय बालासाहब पुणे के मुले हास्पिटल में गए तो उसके कारण उनका मन अतीव उल्लसित हुआ। "पुंडलीका भेटी परब्रह्म आलेगा"। उस समय उनकी ऐसी मनः स्थिति थी मानो "पुंडलीक से मिलने के लिए परब्रह्म आ गया हो"।

एक प्रसिद्ध व्यक्ति ने कहा है,

"The heart has reason that Reason does not know."

आसमान के सितारों के साथ प्यार करने वाले "व्यवहारशून्य" लोगों के लिए ही यह स्मृति ग्रंथ संकलित किया गया है, चतुर पुरुषों के लिए नहीं। तान् प्रति नैष यत्नः।

चीनी भाषा में एक कहावत है—

"If you want to plan for a year, plant corn.
If you want to plan for 30 years, plant a tree.
But if you want to plan for 100 years, plant men."

आज का कोई भी 'बुद्धिमान' व्यक्ति तीसरे प्रकार की योजना बनाने की गलती नहीं करता।

वह मेथी की सब्जी लगाता है, आम या अखरोट का पेड़ नहीं।
ऐसे बुद्धिमान व्यक्तियों में बड़े भाई की गिनती नहीं होती थी।
इसी कारण वे हमें प्रिय, आदरणीय, वंदनीय प्रतीत होते हैं।

× × ×

बड़े भाई का स्वभाव अनुशासनप्रिय, व्यवस्था-प्रधान था। हर कार्य वे नियत समय पर ही करते थे। देरी से स्टेशन पर आने के कारण ट्रेन निकल गई, ऐसा प्रसंग उनके जीवन में कभी नहीं आया। ट्रेन के नियत समय के बहुत पूर्व स्टेशन पर आकर वे प्रतीक्षा कर रहे हैं, यह दृश्य भी कभी किसी ने देखा नहीं।

ट्रेन पकड़ने के विषय में बड़े भाई ने जल्दबाजी जीवन में एक ही बार की—मृत्यु की ट्रेन पकड़ने के विषय में।

× × ×

अपने जीवन की सफलता के सर्वोच्च बिन्दु पर जॉन ब्रेडमन ने क्रिकेट के क्षेत्र से निवृत्ति की घोषणा की तो एक पत्रकार ने प्रश्न किया, "वर्तमान यश की स्थिति में आपने निवृत्ति का निर्णय क्यों किया ?"

ब्रेडमन ने उत्तर दिया, "So, that you should ask me, Why ? and not "Why not ?" (इसलिए कि आप मुझसे 'क्यों' के स्थान क्यों नहीं ? प्रश्न न पूछें।)

आदि सबको पीछे धकेलकर सीधे पंडित जी के प्राइवेट कमरे में घुमनेवाले, विंध्याचल निवासी गणेश जी हों, या अस्पताल के कमरे का वायु मण्डल प्रसन्नता का रहे, इस हेतु से अपनी विशेष शैली में दाहिना हाथ ऊपर उठाकर, ",हां, बड़े भाई ! बी० एम० एस० जिन्दाबाद", यह नारा देनेवाली पूना के मुले हास्पिटल की सिस्टर खुर्शीद हो, सभी के मन में उनके सहवास के कारण एक ही भाव समान रूप से निर्माण होता था—आत्मीयता का।

बड़े भाई का परिवार एक आदर्श हिंदू संयुक्त परिवार है। भारतीय मजदूर संघ की कार्यसमिति की बैठक वाराणसी में हुई थी। बैठक समाप्त होने के पश्चात् कार्यसमिति के सभी लोग बड़े भाई के गांव "बगही" गए। हमारे साथ कुछ महिलाएं भी थीं। वहां जाने के बाद उस विशाल परिवार के छोटे-बड़े, पुरुष-महिला, सभी लोग जिस तत्परता से हम लोगों की सेवा मे जुट गए, यह देखकर हम सभी चकित हुए। वह आदर्श पारिवारिक भाव का एक अनोखा दृश्य था। परिवार के सभी सदस्यों की मनोरचना इस तरह की रहे, यह सुसंवादित्व आश्चर्यजनक था। उनके बड़े भाई श्री रमाशंकर सिंह जी हमेशा कांग्रेस के कार्यकर्ता रहे हैं। किन्तु उसके कारण पारिवारिक प्रेम में किंचित भी न्यूनता नहीं आई। हां, वे हंसते-हंसते यह अवश्य कहा करते थे कि "मैं तुम संघवालों की एक बात समझ नहीं सका हूं, मैं बड़ा भाई हूं, रामनरेश मेरा छोटा भाई है, लेकिन आप संघवाले छोटे भाई को "बड़े भाई" के नाम से पुकारते हो।" यह सब वह प्रेम से हंसी-मजाक में कहते थे। पूरे परिवार में व्याप्त इसी प्रसन्न प्रेम के वायुमंडल का अनुभव हमने किया।

उनकी पत्नी के बारे में क्या कहा जाये ? वह कुछ दिनों के लिए लखनऊ रही थीं। उस समय लखनऊ के मजदूर संघ के कार्यकर्ता कहा करते थे कि भाभी जी को देखकर हमें लक्ष्मण की उर्मिला की याद आती है। बड़े भाई की अन्तिम बीमारी में जब भाभी जी थोड़े दिनों के लिए बम्बई आकर रहीं तो वहां के कार्यकर्ताओं ने उनके जीवन की तुलना सीता जी के कठोर जीवन से की। उनका पूरा जीवन एक उग्र तपश्चर्या था। किन्तु यह सब सहन करते हुए भी हृदय में कहीं रोष, दुःख या कटुता नहीं। सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों के साथ व्यवहार मीठा, स्नेह का। हमेशा हंसता मुख। यह बहुत कठिन परीक्षा है।

भारतीय मजदूर संघ के कार्य में वे आत्मिक समाधान तथा आत्मविकास का अनुभव करते थे। शोषित-पीड़ित-दलित जनों के साथ आंतरिक सह-अनुभूति, हर तरह के अन्याय के विषय में चिढ़ तथा उसके खिलाफ लड़ने की नित्यसिद्धता, गरीबों के सुख-दुःख में सहभागी होने की स्वाभाविक प्रवृत्ति आदि बातें उनके सहज स्वभाव का अंग थीं। इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि "गुणकर्मविभागशः" वे भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ता थे। वह भारतीय मजदूर संघ को केवल ट्रेड यूनियन नहीं मानते थे। उनकी यह धारणा थी कि यद्यपि कानून की दृष्टि से भारतीय मजदूर संघ केवल ट्रेड यूनियन ही है, किन्तु प्रेरणा की दृष्टि से वह ईश्वरीय कार्य का एक प्रभावी साधन है। संगठनात्मक तथा संवैधानिक दृष्टि से भारतीय मजदूर संघ एक स्वायत्त संगठन है। कोई भी संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक की विंग नहीं है। सत्य यह है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विंग केवल उसके स्वयंसेवक हैं। किन्तु राष्ट्रीय

जबसे मेरा बड़े भाई से संबंध आया तबसे मैंने यह अनवरत देखा कि उनका व्यक्तिगत, निजी जीवन, तितिक्षा से परिपूर्ण था। तितिक्षा का अर्थ है, "सहनं सर्वदु:खानाम् अप्रतिकारपूर्वकम्"। वह सब प्रकार के शारीरिक, मानसिक दु:ख सहज भाव से सहन कर लेते थे। और मुझे कष्ट तब अधिक होता था जब मैं यह देखता था कि कुछ निकटवर्ती लोग उनकी मन: स्थिति को समझ नहीं पाते थे। किन्तु ऐसी अवस्था में कुछ कर पाना भी संभव नहीं होता था। मानना पड़ता है कि कुछ लोगों का ग्रहयोग ही इस तरह का होता है। किन्तु तितिक्षा की भट्टी में तपने के कारण उनके व्यक्तित्व का सोना और अधिक निखर उठता था—'तप्तं तप्तं पुनरपिपुनः कान्तवर्णं सुवर्णम्"।

निर्णय करने का कार्य वे आत्मविश्वासपूर्वक करते थे, तो भी उस विषय में उनका मन बंद नहीं हो जाता था, खुला रहता था। कोई भी निर्णय उपलब्ध तथ्यों के आधार पर ही किया जा सकता है। निर्णय करने के पश्चात् कोई छोटा कार्यकर्ता उनके पास आया और उनके सन्मुख कुछ और भी तथ्य रखे, जिनके परिप्रेक्ष्य में उनका पूर्व निर्णय गलत प्रतीत हो सकता है, तो उन नये तथ्यों की जांच कराने में और वे सत्य सिद्ध हुए तो उनके प्रकाश में अपना पूर्व निर्णय बदलने में उनको संकोच नहीं लगता था। "मेरा पूर्वप्रचारित निर्णय मैं कैसे बदलूं," यह अहंकार उनके मन में नहीं आता था। "संगठन में अंतर्गत न्याय मिलेगा" यह विश्वास छोटे से छोटे कार्यकर्ता के भी मन में हमेशा रहना चाहिए। इस हेतु अपने अहंकार का विचार बीच में न लाते हुए वे निर्णय में उचित परिवर्तन कर लेते थे। यही बात लेख या ड्राफ्ट के बारे में भी थी। उनके ड्राफ्ट या लेख मे कोई भी उचित परिवर्तन किसी ने सुझाया तो उसको स्वीकार करने में वे कभी हिचकिचाहट नहीं करते थे, फिर वह सुझाव देनेवाला व्यक्ति अनुभव, आयु और अध्ययन में कितना भी छोटा क्यों न हो।

पारिवारिक वायुमंडल का निर्माण उनके सन्निध्या का एक स्वाभाविक और अपरिहार्य, परिणाम था। संघ, मजदूर संघ, विधान परिषद, यहां तक कि अंतिम बीमारी में विविध अस्पताल आदि, जहां-जहां वे गए, वहां-वहां इसी तरह का वातावरण अपने आप निर्माण होता गया। अनेकानेक परिवार उनको अपने-अपने परिवार का मुखिया मानते थे। माना जाता है कि ट्रेड यूनियन का क्षेत्र स्पर्धा-ईर्ष्या से हमेशा ओतप्रोत रहता है। किन्तु बड़े भाई इस नियम के लिए अपवाद थे। विभिन्न यूनियनों और उनके नेताओं-कार्यकर्ताओं से उनके घनिष्ठ संबंध थे। भारतीय रेलवे मजदूर संघ के लखनऊ अधिवेशन के लिए मान्यवर जगदीशचंद्र जी दीक्षित का आना, राष्ट्रीय श्रम (विश्वकर्मा) दिवस के कानपुर के समारोह की अध्यक्षता करने के लिए प्रतिवर्ष नियमित रूप से माननीय मकबूल अहमद साहब का उपस्थित रहना, या भारतीय मजदूर संघ के किसी भी कार्यक्रम को सम्पन्न करने के लिए माननीय गणेशदत्त जी वाजपेयी का सहर्ष सामने आना, ये सब घटनाएं ट्रेड यूनियन के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रतीत होने वाली थीं। आगे चलकर राष्ट्रीय स्तर पर एन० सी० सी० के नेताओं को भी यही अनुभव आया। बड़े भाई के सहवास की स्वाभाविक परिणति थी अपनेपन का भाव। इससे कोई भी व्यक्ति अछूता नहीं रह सकता था। बनारस के रेलवे कर्मचारी के केस के लिए तत्कालीन रेल मंत्री श्रीमान् कमलापति जी त्रिपाठी के निवास पर दरबान, चपरासी, सेक्रेटरी

परिणामस्वरूप पट्टी को तोड़ना कठिन काम है। इस प्रक्रिया में पट्टी तोड़ने वाले के धीरज की परीक्षा होती है। मनोविज्ञान की गहरी जानकारी न रखने वाले कार्यकर्ता, बुद्धिमान होते हुए भी, यह ठीक तरह से तय नहीं कर पाते कि मामला किस श्रेणी का है—"गार्जियन नॉट (खटाक से काट देने) की श्रेणी का, या "सैंडपेपर ट्रीटमेंट" की श्रेणी का। और एक बार यह भी तय हुआ कि मामला दूसरी श्रेणी का है तो भी उसको ठीक ढंग से निभाना कई कार्यकर्ताओं के लिए असंभव हो जाता है, क्योंकि इसमें लगातार लम्बी अवधि तक मानसिक तनाव सहन करना पड़ता है। इसके लिए मजबूत नसों की (Strong Nerves) आवश्य-होती है। जिनकी नसें इतनी मजबूत नहीं, उनका दम जल्दी उखड़ता है। वे अधीर हो जाते हैं। उनको लगता है कि मामले को जैसे-तैसे शीघ्र निपटाया जाय। अपने अधैर्य के कारण वे उचित क्षण तक प्रतीक्षा करने में असमर्थ हो जाते हैं, और फिर उनके द्वारा उठाया गया कदम कार्य की हानि करने वाला सिद्ध होता है। ऐसे मामलों में बड़े भाई का धीरज असाधारण था। बड़े भाई के व्यवहार के संदर्भ में यूरोप के एक बड़े नेता के बारे में लिखा गया इस वाक्य का स्मरण होता है कि, "His patience was infinite; he could wait and watch until others got impatient, acted and failed."

आपत्काल में बड़े भाई को भारतीय मजदूर संघ के महामंत्रीपद का दायित्व सौंपा गया। उन दिनों उसका निर्वाह करना बहुत ही कठिन था। तत्पश्चात् आई परिस्थितियां भारतीय मजदूर संघ के लिए और भी उलझन पैदा करने वाली थीं। अपने अपयश तथा अक्ष-मता के लिए किसी न किसी को बलि का बकरा (scapegoat) बनाने की चतुराई राजनैतिक लोगों में हुआ करती है। बकरे की भूमिका ट्रेड यूनियन को देना उनके लिए आसान हो जाता है। यद्यपि जनमानस में राजनेता की प्रसिद्धि-प्रतिष्ठा ऊंची हुआ करती है, परन्तु ऐसे नेताओं का भंडाफोड़ करना कठिन कार्य नहीं होता। किंतु ऐसे रहस्यस्फोट के परिणामस्वरूप राजनैतिक अस्थिरता बढ़ सकती है, जिसका परिणाम अपने पूरे परिवार के लिए दूरदृष्टि से अच्छा नहीं रहेगा, ऐसा ध्यान में आया तो फिर सारा मिथ्या दोषारोपण सहन करते हुए संयम बरतना श्रेष्ठ नेतृत्व का गुण है। इस प्रकार के संयम के कारण स्वयं अपनी बदनामी को दूर करना असंभव हो जाता है। और विशेष बात यह कि जिनके दूरगामी हितों की रक्षा करने के लिए यह संयम रखा जाता है उनको भी अज्ञान के कारण या दायित्वहीनता के कारण इस प्रकार के संयम की महत्ता ख्याल में नहीं आती। यह सब होते हुए भी अपने वृहत् परिवार के सर्वकंष-हित को प्राथमिकता देते हुए, मन की सात्विक उत्तेजना को नियंत्रित करके हंसते-हसते अप-कीर्ति को हजम कर जाना असामान्य गुण है। खासकर उस कालखण्ड में जबकि योग्यताविहीन नेता अपने व्यक्तिवाद को बढ़ावा देने के लिए आज के प्रचारतंत्र के सुपरिचित, सुलभ किन्तु प्रतिष्ठाशून्य मार्गों से अपनी प्रतिमा उज्ज्वल दिखाने का प्रयास कर रहे हों। यह असामान्यता बड़े भाई मे थी। उनके निकटस्थ सहयोगी ही यह बात जान सकते थे।

महामन्त्री बनने के पश्चात संगठन में जो कुछ भी होता था उसक पूरी जिम्मेवारी वे स्वयं पर लेते थे। अच्छी घटनाओं का श्रेय लेना तो सरल है, सवाल तब खड़ा होता है जब संगठन में या संगठन द्वारा कोई दुःश्रेय या बदनामी देने वाला कार्य हो चुका हो। ऐसे समय

स्वयंसेवक संघ से संस्कार तथा प्रेरणा प्राप्त कर मजदूर क्षेत्र में काम करने वाले बड़े भाई की श्रद्धा थी कि प्रेरणा तथा दिव्य पावित्र्य की दृष्टि से भारतीय मजदूर संघ का कार्य "त्वदीयाय कार्याय" का एक अविभाज्य अंग है। यह कार्य करते रहना ही भगवान की श्रेष्ठ पूजा है। "स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य"।

अन्य क्षेत्रों में प्रतियोजित (On deputation) काम करने वाले कार्यकर्ता की मनोवृत्ति कैसी होनी चाहिए, इस विषय मे एक आदर्श उदाहरण बाजीराव का है। उन्होंने जब कार्यभार संभाला, हिंदवी स्वराज्य के पास साधन, स्रोत तथा मनुष्यबल बहुत सीमित था। जबकि रणनीति की मांग थी कि दिल्ली की दिशा में दिग्विजय के लिए आगे बढ़ा जाय। उस समय बाजीराव ने छत्रपति शाहू महाराज से प्रार्थना की थी कि वह उत्तरदिग्विजय के लिए उनको केवल आदेश दें; इस कार्य के लिए आवश्यक धन, साधन, सेना आदि सब कुछ जुटाने का काम बाजीराव स्वयं करेंगे; इसके लिए वे छत्रपति को परेशान नहीं करेंगे; छत्रपति केवल आदेश दें। वैसा आदेश दिया गया और तद्नुसार सब आवश्यक साधन एकत्रित करके बाजीराव ने चंबल तक का प्रदेश हिंदवी स्वराज्य में शामिल कर लिया। लोगों की धारणा थी कि यह कार्य अद्भुत था। किंतु इसके कारण उनके मन में अहंकार और व्यक्तिवाद निर्माण नहीं हुआ। एक अवसर पर दक्षिण के कुछ लोगों ने उनको आदरपूर्वक "स्वामी" कहकर सम्बोधित किया तो इस पर वे बोल उठे, "स्वामी ! हम कहां के स्वामी ! हमारे स्वामी तो सातारा में बैठे हैं।" (सातारा में शाहू छत्रपति का निवास था)। असामान्य कर्तृत्व होते हुए भी सम्पूर्ण आत्मसमर्पण। अहम् का नाम नहीं। "बुद्धिमतां वरिष्ठ" और "वानरयूथपति" होते हुए भी "श्रीरामदूत"। सेव्य-सेवक भाव का यह आदर्श बड़े भाई के जीवन में भी प्रकट हुआ। मातृसंगठन पर बोझ नहीं डाला। अपने कर्तृत्व से मजदूर संघ का काम बढ़ाया, किंतु मातृसंगठन के प्रति शतप्रतिशत आत्मसमर्पणभाव सदैव मन मे जागृत रखा।

परमपूजनीय श्रीगुरूजी के बताये हुए त्रिविध पथ्यों का पालन उन्होंने निष्ठापूर्वक किया। अपने क्षेत्र में कार्य की रचना संघ के आदर्शों के प्रकाश में किया। संघ की रीति-नीति-पद्धति मजदूर क्षेत्र में चलाया। संघ-शाखा के साथ नित्य-संबंध निरपवाद रूप से निभाया। अंतिम बीमारी में अस्पताल में भी उनके झोले में निकर अवश्य रहती थी।

बड़े भाई के धैर्य की परीक्षा लेने वाले कई प्रसंग उनके जीवन में उपस्थित हुए। उलझनें संगठन के अन्दर या बाहर पैदा होने वाली दोनों तरह की हो सकती हैं। एक तो इस तरह की कि जिसमें अविलम्ब आपरेशन करना ही उचित होता है। सिकन्दर ने "गार्जियन नॉट" को तलवार से तोड़ा था। कुछ मामले इस कहावत का स्मरण दिलाते हैं कि जल्दबाजी का काम शैतान का, या सब्र का फल मीठा होता है। ऐसे मामलों में आपरेशन तो करना पड़ता है, किंतु खटाक से नहीं। कुएं से पानी निकालने के लिए उपयोग में आनेवाली रस्सी हमेशा कुएं के पत्थर से घिसती रहती है। इस प्रक्रिया में वह धीरे-धीरे टूटती रहती है और पत्थर पर भी धीरे-धीरे घिसाई का निशान अंकित होता रहता है। यह प्रक्रिया अखण्ड चलती रहती है। किंतु इस प्रक्रिया से रस्सी टूटने में बहुत देर लगती है। छेनी और हथौड़ी से लोहे की पट्टी को तोड़ना आसान है किंतु रेंगमाल (Sand Paper) से अनवरत घिसते रहना और उस प्रक्रिया के

कारण वे कभी अधीर नहीं हुए । इस तरह व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति ही अनुकूल, प्रतिकूल, विरोधी, सुखमय, भीषण दुखदायी—सभी परिस्थितियों में अविचल रहते हुए अपना तीव्र समझदारी वाला विलक्षण हृदय (Understanding Heart) रख सकता है । अवसरवादी मानसिकता वाले (Weathercock mentality) उन लोगों के बस की यह बात नहीं, जो परिस्थिति के हर परिवर्तन के समय गिरगिट के समान अपना रंग बदलने में ही व्यवहारचातुर्य का अनुभव करते हैं । ऐसे चतुर लोग बड़े भाई को पागल समझते थे तो बड़े भाई के लिए इससे अधिक अच्छा चरित्र प्रमाण-पत्र (Good Character Certificate) और क्या हो सकता था । वे तो—तुल्यनिंदास्तुतिर्मौनी—इधर-उधर की परवाह न करते हुए अपने ध्येय-पथ पर अग्रसर होते रहते थे । अपने प्रत्यक्ष व्यवहार से कार्यकर्ताओं के सन्मुख आदर्श उपस्थित करते रहते थे ।

संघ के अखाड़े से निकले हुए वे एक कुशल रणनीतिज्ञ (Strategist) थे । किन्तु उनकी रणनीति (Strategy) का आधार था विवेक, (discretion), न कि आजकल का चातुर्य (diplomacy) । महत्वकार्य करने वाले श्रेष्ठ राजनीतिज्ञों के भी चातुर्य (diplomacy) का आधार विवेक (discretion) ही रहा है । उन्होंने भी चालाकी, हथकंडे, तिकड़मबाजी आदि का सहारा नहीं लिया । किन्तु आजकल हमारे देश में तिकड़म को व्यवहारचातुर्य माना जाता है । बड़े भाई ने कभी तिकड़म नहीं किया । फिर भी बाहर वालों के व्यवहार तथा संगठन के अन्तर्गत निर्माण होने वाली उलझनों को संभालने में वह हमेशा सफल रहे । विशुद्ध ध्येयनिष्ठा, सम्पूर्ण आत्मनियंत्रण, अन्तिम विजय पर अविचल विश्वास और मानवीय मनोविज्ञान के गहरे ज्ञान के परिणामस्वरूप उन्हें सफलता प्राप्त होती थी । जब सामान्य स्वयंसेवक के नाते वे काम कर रहे थे, उस समय भी किसी बड़े राजनैतिक नेता की बनाई हुई प्रतिमा के कारण वे चकाचौंध नहीं हुए और मजदूर संघ के सर्वोच्च कार्यकारी पद पर आसीन रहते हुए भी छोटे से छोटे कार्यकर्ता का अन्तर्भूत बड़प्पन समझने में उन्हें कभी देर नहीं लगी । विभिन्न केन्द्रीय श्रम संस्थाओं के ख्याति प्राप्त नेताओं के साथ, या सरकारी मंत्री तथा अधिकारियों के साथ व्यवहार करते समय उनके स्वभाव की सहजता नित्यवत् कायम रहती थी । वैसे छोटे मजदूरों के साथ बात करते समय उनकी ईश्वरप्रदत्त मानवीय प्रतिष्ठा को वे कभी भूलते नहीं थे ।

भारतीय मजदूर संघ में नेतृत्व की द्वितीय पंक्ति खड़ी करने की दृष्टि से बड़े भाई ने सजग प्रयास (Conscious efforts) चलाए थे । कुशल संगठक होने के कारण सभी यूनियनों के सभी कार्यकर्ताओं के साथ उनका सीधा संपर्क था । हरेक के गुणावगुण की उन्हें जानकारी थी । कार्यकर्ताओं के पारस्परिक अच्छे-बुरे संबंधों का उनको पता था । उनमें से बीजीभूत क्षमता रखने वाले कार्यकर्ताओं का चयन करना, उनके गुणों को बढ़ाने तथा दोषों को दूर करने का प्रयास करना, इस दृष्टि से कार्यकर्ता का अहंकार न बढ़े यह दक्षता लेते हुए उसको प्रोत्साहन देना तथा वह निरुत्साहित होकर निष्क्रिय न हो जाय, इस सतर्कता के साथ उसको डांट-फटकार करना, पहल (initiative) करने की कार्यकर्ता की क्षमता संगठन के अनुशासन की चौखट के अंतर्गत रखते हुए बढ़ाना, उसकी पहल करने की क्षमता में कमी न आने देते हुए उसे अनुशासनबद्ध बनाना, ध्येयवाद के विषय में अलग से चर्चा न करते हुए अपनी

प्रतिमा-निर्माण के पीछे पड़े हुए हल्के और सतही नेताओं की चतुराई इसी में मानी जाती है कि उस दुर्घटना के लिए वास्तव में जो कार्यकर्ता जिम्मेवार है उस पर सीधे दोषारोपण करते हुए स्वयं की भूमिका निष्कलंक तथा श्रेष्ठ दिखाना। यह चतुराई बड़े भाई के स्वभाव में नहीं थी। गलत काम करने वाले कार्यकर्ताओं को वे एकांत में अवश्य डांटते थे। किन्तु बाहर के लोगों के साथ बात करते समय ऐसा बताते थे कि "गलती की पूरी जिम्मेवारी मेरी है"। इस तरह वह अपने कार्यकर्ताओं को पूरा संरक्षण देते थे। अपनी जिम्मेवारी दूसरे पर डाल देना (Passing the buck) चतुराई का काम हो सकता है, किन्तु यह अच्छे नेतृत्व के लिए शोभा देने वाला गुण नहीं है। बड़े भाई के स्वभाव के कारण उनका मनश्चित्र इस तरह उभरकर आता है कि वे महामंत्रीपद के कुर्सी में बैठे हैं, सामने बड़ा टेबल है, टेबल पर सामने एक छोटी प्लेट रखी है, जिस पर लिखा है—"The buck stops here."

पश्चिम में सालोमन राजा की विशेष प्रतिष्ठा है। अपने पिता की मृत्यु के समय किशोर सालोमन के कंधे पर एकदम बहुत बड़ा बोझ आया। आयु छोटी, राजकाज बड़ा और उलझनवाला। मन में बार-बार यह प्रश्न उठता कि "कैसे संभाल सकूंगा इसे"। उस समय वे अपने एकांत कमरे में गए और घुटने टेककर भगवान की प्रार्थना करने लगे। क्या मांगा सालोमन ने भगवान से? राज्य विस्तार? यशकीर्ति? नहीं। उन्होंने याचना की—"Lord! Give me an understanding heart." (हे भगवान! मुझे सूक्ष्म दृष्टियुक्त पैनी समझवाला हृदय प्रदान कर।) प्रतीत होता था कि बड़े भाई ने भी यही प्रार्थना की थी और भगवान ने "तथास्तु" कहा था। वे सबके मन को सही ढंग से समझ लेते थे। बड़े भाई को इस बात से कितनी तकलीफ होगी यह न जानने के कारण अतिश्रद्धा से उनके पूरे चेहरे पर तैल-युक्त कुंकुम लगाने वाली असम के चायबागान की मजदूर महिलाएं, भारतीय मजदूर संघ को दबाने की इच्छा से सम्बन्धित मंत्री महोदय को गुमराह करने वाले अफसरशाह, केन्द्रीय अभियान समिति (एन०सी०सी०) में हिस्सा लेने वाले विभिन्न केन्द्रीय श्रम संस्थाओं के सभी नेताओं को बुद्धू और खुद को होशियार समझने वाले छोटी संस्था के बडे नेता, उत्तर प्रदेश की संविद सरकार में उनको श्रम मंत्री बनाने के लिए बनी सर्वसम्मत योजना में बाधा डालने वाले द० बा० ठेंगड़ी, स्थानीय स्तर पर होने वाले पक्षपात या अन्याय के कारण आर्त्त हृदय से दर्शन के लिए आने वाले भारतीय मजदूर संघ के छोटे कार्यकर्ता—सभी का हृदय वे बिल्कुल ठीक ढंग से समझते थे। "ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्"—इस कोटि का उचित व्यवहार वह सबके साथ करते थे। तात्कालिक लाभ के लिए, फिर वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, चालाकी या हथकंडे करने की या निम्न स्तर पर उतर आने की कल्पना भी उनके मन को छूती नहीं थी। अपने ध्येय की अन्तिम और अपरिहार्य विजय पर उनकी दृढ़ श्रद्धा थी। उनकी यह धारणा थी कि अपवित्र साधनों से सिद्ध हुआ पवित्र कार्य भी साधनों की अपवित्रता के कारण अंततोगत्वा अपवित्र ही हो जाता है। साधन-शुचिता पर उनका विश्वास था। "नहि कल्याणकृत कश्चित् दुर्गति तात गच्छति", इस सुभाषित पर उनका पूरा भरोसा था। उनकी यह मान्यता थी कि सच्चारित्र्य अपने आप में एक सम्पूर्ण पारितोषिक है। संकट कितना भी बड़ा क्यों न हो, उसके कारण घबड़ाकर बायें-दायें देखना उनके स्वभाव में ही नहीं था। यश कभी उनके मस्तिष्क में नहीं गया। न आपत्ति ने उनके हृदय पर कभी असर किया। विलम्ब के

कठोर परिश्रम के कारण ही उनका बज्र शरीर असमय ही टूट गया । मजदूर संघ में प्रवेश करने के पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य में भी उन्हें इसी तरह के असहनीय कष्ट उठाने पड़े थे, जिनके कारण उन्हें प्ल्युरिसी (Pleurisy) हुई थी । उसमें से दुरुस्त होते ही बड़े भाई ने फिर से पूर्ववत् जीवन आरम्भ किया, मानो बीच में प्ल्युरिसी वगैरह कुछ हुआ ही न हो । मजदूर संघ में तो श्रम की मात्रा बढ़ती ही गई । इस कारण उन्हें दौरों के समय भी कई बार ज्वर रहने लगा । किन्तु वे किसी को यह बात बताते नहीं थे और निश्चित कार्यक्रम यथावत् पूरा करते रहते थे । पूना का मुले अस्पताल या बम्बई का बाम्बे अस्पताल यह पहला अस्पताल नहीं था, जिसमें उनको लम्बी अवधि तक रहना पड़ा हो । आपत्काल के पूर्व इससे भी लम्बी अवधि तक लखनऊ के अस्पताल में उन्हें रहना पड़ा था । किन्तु अपने स्वास्थ्य के विषय में वे किसी से कभी चर्चा नहीं करते थे । ज्यूलियस सीजर के बारे में प्लूटार्क ने कहा है कि वह जन्म से ही मिरगी (epilepsy) का मरीज था और वैसे भी उसकी तबीयत नाजुक थी । किन्तु उसका जीवनक्रम बहुत ही कर्मठता का था । अपना दिनक्रम कम कष्टकर हो, इस दृष्टि से अपनी गम्भीर बीमारी के बहाने का उपयोग ज्यूलियस ने कभी नहीं किया । सभी वेदनाएं-व्यथाएं सहन करते हुए दिग्विजयी जीवन के लिए उसने स्वयं को योग्य दिखाया था। बड़े भाई के विषय में भी यही कहना पड़ेगा । कई श्रेष्ठ पुरुषों न यही प्रक्रिया स्वीकार किया बनिस्बत इसके कि—

काकोऽपि जीवति चिराय—वालिं च भुक्ते ।

व्यक्तिगत जीवन और संघजीवन में विविध प्रकार का शिष्यत्व (apprenticeship) उन्होंने किया था । इस कारण मनुष्य के मनोविज्ञान के विषय में उनमें एक प्रकार की अन्तर्दृष्टि विकसित हुई थी । अतएव उनको गुमराह करना किसी भी व्यवहारचतुर आदमी के लिए संभवनीय नहीं था । दूसरे के अन्तर्हेतु को जानने की वे हमेशा कोशिश करते थे । किसी के हाथ से कुछ गलती हुई या अपराध हुआ, तो उसके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण क्या हो सकता है, यह जानने का उनका प्रयास रहता था । व्यक्ति स्वभावतः दुष्ट है, व्यक्तिवादी है, ध्येयशून्य है, यदि ऐसा प्रतीत हुआ तो उसके साथ वे एकदम सख्ती का व्यवहार करते थे । गलती करने वाला व्यक्ति ध्येयवादी तो है, किंतु कुछ व्यक्तिगत दुर्बलताओं के कारण वह वैसा व्यवहार कर रहा है, ऐसा ध्यान में आया तो उसके साथ एकदम कठोर व्यवहार न करते हुए उसको प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से समझाकर या अन्य मार्ग से उन दुर्बलताओं से मुक्त होने में वे उसकी सहायता करने का प्रयास करते थे । ऐसे व्यक्ति को छूट (long rope) देने की उनकी तैयारी रहती थी। वे उसे ठीक ढंग से काम करने का एक और अवसर देने के पक्ष में रहते थे । उनका अनुभव ऐसा था कि अधिकतर लोग गलतियां इसलिए करते हैं कि उनको भारतीय मजदूर संघ की रीति-नीति, पद्धति, जीवनमूल्य आदि की जानकारी नहीं रहती । देश के सार्वजनिक जीवन में आज जो गलत धारणाएं, प्रथाएं, पद्धतियां और संकेत प्रचलित हैं उनको ही स्वाभाविक और प्रमाणभूत मानते हुए वे प्रामाणिकता से गलत व्यवहार करते हैं । यदि हमने शांत चित्त से धीरज के साथ उनको अपनी रीति-नीति, पद्धति की जानकारी दी तो

व्यक्तिगत जीवन-शैली से कार्यकर्ताओं के सन्मुख ध्येयवादी जीवन का आदर्श उपस्थित करना, ये सारी बातें उनके स्वभाव का अंग बन गई थीं और इसके फलस्वरूप जगह-जगह कार्यकर्ताओं का आत्मविकास होता जाता था। नेतृत्व की द्वितीय पंक्ति इसी प्रक्रिया में से उभरकर ऊपर आई। हिन्दुस्थान के सार्वजनिक जीवन की आज की अवस्था में यह बात असाधारण ही मानी जानी चाहिए, क्योंकि प्रवाह इसके ठीक विपरीत दिशा में चल रहा है। जिन्होंने कुछ महान कार्य खड़ा करना है उनकी प्रवृत्ति और जिन्होंने केवल अपना व्यक्तिगत नेतृत्व, नाम और प्रतिमा निर्माण करनी है उनकी प्रवृत्ति, दोनों में स्वाभाविक महान अंतर रहता ही है। श्री रिचर्ड वुल्फ (Richard Wolff) अपनी पुस्तक "Man at the top" में लिखते हैं :

"In the case of a leader, perhaps the hardest thing is to help those who stand immediately next—those who hold the trying position of second in command, or who are near enough to the front to be constantly impressed by the fact that they fall short of being at the front. The temptation to treat them as possible rivals and to depreciate their gifts instead of magnifying them is constant to everyone but a truly great man."

ऐसे अपवादभूत वस्तुत: महान व्यक्ति (Truly great man) का दर्शन बड़े भाई में होता था। भारतीय मजदूर सघ की मजबूती और विकास का यह भी एक बड़ा कारण रहा है।

यह बात सही है कि पारिवारिक, आर्थिक आदि कारणों से बड़े भाई बहुत अधिक औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि उनके अंदर विद्योचित प्रज्ञा (Academic Intelligence) नहीं थी। कई लोग यह बात समझ नहीं पाते कि औपचारिक शैक्षणिक योग्यता (Academic Qualifications) और स्वभावज विद्योचित प्रज्ञा (Academic Intelligenec) में अंतर है। गुरुदेव टैगोर या श्री हरिनारायण आप्टे की शैक्षणिक योग्यता (Academic Qualifications) कितनी थी? आप्टे जी कालेज में प्रवेश नहीं कर पाये थे किंतु उनकी किताबें एम० ए० की परीक्षा के लिए विहित (Prescribe) की गई थीं। वह एम० ए० के विद्यार्थियों के परीक्षक भी रहे। कमाल की बात तो आईन्स्टीन की है। यह सर्वज्ञात था कि विद्यालयीन जीवन में आईन्स्टीन को उनके प्राध्यापक मंदबुद्धि का मानते थे। शैक्षणिक योग्यता) Academic Qualifications) अलग बात है, और विद्योचित प्रज्ञा (Academic Intelligence) अलग। बड़े भाई में विद्योचित प्रज्ञा (Academic Intelligence) स्वभावतः, प्रकृत्या ही बहुत थी। परिस्थितिवश वे शैक्षणिक योग्यता (Academic Qualifications) प्राप्त नहीं कर सके। अर्थात् इसके कारण सार्वजनिक कार्य की दृष्टि से त्रुटि तो अवश्य आती थी, किंतु यह अनुभव करके सबको आश्चर्य होता था कि अपने अथक परिश्रम के आधार पर उन्होंने इस त्रुटि की क्षतिपूर्ति कर लिया था। भारतीय मजदूर संघ का महामंत्रीपद सम्भालने के पश्चात तो उन्होंने इस दृष्टि से और ही कठोर परिश्रम किए।

अथक परिश्रम
कठोर परिश्रम
प्रदीर्घ कठोर परिश्रम
का ही दूसरा नाम था माननीय बड़े भाई।

नहीं सकता। जीवन में विविध क्षेत्रों में प्रत्यक्ष कार्य करने वाला कार्यकर्ता होने के कारण उन्होंने पर्याप्त शिष्यत्व (apprenticeship) की थी। संघ कार्य को रगड़ में से वे गए थे। व्यक्तिगत जीवन भी विविध संपर्क तथा विविध खट्टे-मीठे अनुभवों से युक्त था। इस कारण उनकी मनोवैज्ञानिक समझदारी बहुत गहरी, ऊंची और वास्तविकतापूर्ण थी। इस तरह की रगड़ में से न जाते हुए किसी भी एकाध गुण प्रकर्ष के कारण आसानी से ऊंचा पद प्राप्त करने वाले व्यक्ति को यह लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। परिस्थिति में जब उलझन पैदा होती है, एक ही क्षेत्र के समकक्ष कार्यकर्ताओं में अनबन पैदा होने के कारण जब समस्याएं खड़ी होती हैं, अच्छे कार्यक्षम कार्यकर्ता के स्वभाव के नुकीले कोने जब उसके सहकारी कार्यकर्ताओं को चुभने लगते हैं, बातचीत के गैर-जिम्मेवार ढंग के कारण अपने ही वृहत् परिवार में जब गलतफह-मियां पैदा होती हैं, तब पता चलता है कि नेतृत्व की वास्तविक क्षमता रखनेवाला कौन है।

भारतीय मजदूर संघ का महामंत्री पद बड़े भाई के पास पारितोषिक के रूप में नहीं, आह्वान के रूप में आया था।

आपतकाल ने सभी नेताओं की अग्नि-परीक्षा की। तब तक माना जाता था कि जन-नेतृत्व के लिए एकमात्र आवश्यक गुण यानि लच्छेदार भाषण देने की क्षमता है। महाभारत-कालीन विराट-पुत्र उत्तर भी इस कला का धनी था। आपतकाल ने स्पष्ट किया कि नेतृत्व अपने आपमें स्वयं एक परिपूर्ण गुण है। "समग्र क्रान्ति" का जोशीला भाषण देनेवाले कई नेता इस कालावधि में "समग्र आत्मसमर्पण" तक पहुंच गए थे। युद्धकाल में ही स्पष्ट होता है कि चर्चिल और चेम्बरलेन में, मार्शल पेताँ और दगॉल में कितना अंतर होता है। ट्रेड यूनियन क्षेत्र में यह परीक्षा अधिक तीव्रता से हुई। "अनुशासन पर्व" के नाम पर ट्रेड यूनियन के सारे अधिकार छीन लिए गए। आंदोलनों की बात तो दूर, ट्रेड यूनियन का निय-मित कार्यालय चलाना भी कठिन हो गया था। उसके लिए भी कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया जाता था। ऐसे समय स्वघोषित क्रांतिकारी वामपंथी ट्रेड यूनियन नेताओं की भी मनःस्थिति डांवाडोल हो गई थी। सभी गैर-इण्टक यूनियनों ने एकत्रित आकर सरकार की श्रमिक विरोधी नीतियों का प्रगट विरोध करना चाहिए, यह सिद्धांत तो सर्वमान्य हुआ, किन्तु पहले ही पत्रक पर केन्द्रीय श्रम संस्थाओं के पदाधिकारियों के हस्ताक्षर या नाम रहें, या न रहें यह चर्चा का विषय हो गया। आज इस बात का स्मरण मनोरंजक प्रतीत होता है कि उस समय पत्रक पर किसी नेता का नाम नहीं था, केवल संस्थाओं के नाम थे। क्रांतिकारी वामपंथियों के कई नेताओं का यह हाल था। उनको क्रियाशील बनाने में मेरे जैसा 'प्रतिक्रियावादी' असफल रहा, यह आश्चर्य की बात नहीं। ट्रेड यूनियन क्षेत्र के उस समय के सबसे अधिक तपोवृद्ध नेता सीटू के मान्यवर श्री पी० राममूर्ति जी भी कई वामपंथी यूनियन नेताओं का हौसला बढ़ाने में सफल नहीं हो सके थे। ऐसे समय निर्भयतापूर्वक कार्य करना, पत्रक निकालना, दौरे करना, मजदूरों का हौसला बढ़ाकर उनको संघर्ष के लिए तैयार करना और साठ हजार से अधिक मजदूरों द्वारा कानून का भंग करवाना, यह सब कार्य अद्भूत ही था। भारतीय मज-दूर संघ ने यह कार्य मान्यवर बड़े भाई के नेतृत्व में किया। उनके महामंत्रीपद के कार्यकाल का प्रारंभ ही "योद्धा नेता" के रूप में हुआ। भारतीय मजदूर संघ के अपने सभी सहकारियों को साथ में लेकर बड़े भाई इस अग्नि-परीक्षा में गौरवशाली ढंग से उत्तीर्ण हुए।

उसको समझकर वे तत्परतापूर्वक अपने व्यवहार में बदल भी कर लेते हैं। आवश्यकता उनको ठीक ढंग से और धैर्यपूर्वक समझाने की है। ऐसे कार्यकर्ताओं को समझाने में कितनी ही देर लगी तो भी उनका धैर्य टूटता नहीं था। बाहर से देखने वालों को कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता था कि बड़े भाई कभी तो एकदम गुस्सा करते हैं और कभी अतुलनीय शांति का परिचय देते हैं, यह क्या बात है ? इसका रहस्य उपरिनिर्दिष्ट प्रकार से बारीकी से मनोविश्लेषण करने की उनकी क्षमता में था। यह क्षमता उनको प्रदीर्घ शिष्यत्व और प्रशिक्षण (apprentice-ship) के कारण प्राप्त हुई थी।

भारतीय मजदूर संघ में प्रवेश करने के बाद कानपुर ही उनका केन्द्र रहा। वहां सभी कार्यकर्ताओं को प्रभावित करने वाले उनके गुण अर्थात् हर छोटे-बड़े काम के तफसील पर मजबूत पकड़ का अनुभव हुआ। वे हर समस्या की तह तक जाते थे। हवा में छलांग लगाने वाला स्वप्नदर्शी (युटोपियन) स्वभाव उनका नहीं था। वह सब बातों के विषय में सदा चौकस रहते थे। कानपुर के सुरक्षा संस्थानों में वर्षों से जमा हुआ श्री एस० एम० बनर्जी दादा का एकाधिकार कैसे समाप्त किया जाय, इण्टक को बढ़ावा देने वाले राज्यीय प्रशासन से मजदूर संघ के लिए प्रादेशिक स्तरीय मान्यता कैसे प्राप्त की जाए, लेनिन पार्क में श्री आइ० डी० सक्सेना की हत्या करने वालों की खोज कैसे की जाए, अंग्रेजी दवाओं का असर बालादीन की तबीयत पर नहीं हो रहा, क्या इसके लिए आयुर्वेदिक औषधि का प्रबंध करना चाहिए ? और संघ कार्यालय में रोटी पकाने वाले बहादुर की शादी का कुछ इंतजाम करना ही होगा। यज्ञदत्त शर्मा की पत्नी द्वारा पाले हुए कुत्तों के चक्कर से यज्ञदत्त को मुक्ति दिलाने का कोई मार्ग है क्या ? आदि सभी बातों पर एक ही समय युगपद, पूरा ध्यान। सभी विषयों की तफसील पर पूरी पकड़, केवल अपने व्यक्तिगत सुख के विषय को छोड़कर।

किसी की भी बात सुनते समय बड़े भाई कही हुई बात तो समझते ही थे, किन्तु समय-समय पर उस बात के पीछे बोलने वाले की मनःस्थिति और उसकी परिस्थिति का भी ठीक अंदाजा वे लगा सकते थे। अकारण बात को लम्बी बनाने वाले की बात, यदि दूसरा कोई अपरिहार्य कारण न रहा तो, वह बीच में काटते नहीं थे। चापलूसी या खुशामद से उन्हें नफरत थी। इसके कारण वास्तविकताओं को समझने में आने वाली कृत्रिम कठिनाई से वे मुक्त थे। एक ही घटना की ओर विभिन्न व्यक्ति अलग-अलग दृष्टि से देख सकते हैं। हर एक व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि, प्राप्त परिस्थिति में भूमिका, अन्य व्यक्तियों से समीकरण, अपने ढग का हुआ करता है। इस कारण समान ध्येयनिष्ठा रखने वाले कार्यकर्ता एक ही घटना का प्रतिवृत्त अपनी-अपनी दृष्टि से अलग-अलग ढंग से दे सकते हैं। इसमें एक सही है, दूसरा झूठ या गलत है, यह बात नहीं आती। हर एक कार्यकर्ता सत्य ही बोलता है। सत्य का जिस तरह का दर्शन उसको हुआ होगा, वह वैसा बोलता है। उपरिनिर्दिष्ट कारणों से एक ही सत्य का दर्शन विभिन्न लोगों को विभिन्न प्रकार से होता है। इसलिए हर एक कार्यकर्ता की बात को वे या तो सही या गलत ऐसा नहीं मानते थे। वे मानते थे कि कार्यकर्ता ध्येयनिष्ठ है, वह झूठ नहीं बोलेगा, वह जो बोल रहा है वह उसके सत्य की वर्णना (version) है। इसी दृष्टि से उसकी बात को वह ग्रहण करते थे। ऐसा व्यक्ति कच्चे कान का हो ही

फ्रेंच सेना के आघातों से उत्तेजित अपने साथियों को ७२ घंटे तक नियंत्रित रखने का कठिन कार्य ड्यूक ऑफ वेलिंग्टन ने किया। अफजलखान के द्वारा सब तरह का सार्वजनिक अपमान सहन करते हुए भी शिवाजी ने उत्तेजित होकर अपना पहाड़ी क्षेत्र नहीं छोड़ा। संकट के समय यह संयम (Comportment under fire) जनसाधारण से अपेक्षित नहीं। न ही अपेक्षित है वह दूरदृष्टि और दृढ़ता जो सभी श्रेष्ठ पुरुषों ने निरपवाद रीति से प्रकट की है।

किन्तु इसका दूसरा पहलू भी विचारणीय है। ऐसे महापुरुष कभी भी और कहीं भी हठात् निर्माण नहीं होते। समकालीन सामान्य जनों से उनका स्तर हर तरह से बहुत ऊँचा रहता होगा। किन्तु किसी भी श्रेष्ठ पुरुष का निर्माण करने की बीजीभूत संभावनाएं उसके देश की भूतकालीन श्रेष्ठ परम्परा और संस्कृति में सुप्तावस्था में निहित रहती हैं। ऐसी परम्परा विद्यमान न रही तो कोई भी महापुरुष एकदम शून्य में से अवतीर्ण नहीं हो सकता। समकालीन जनसाधारण का स्तर कितना ही गिरा हुआ क्यों न रहे, किन्तु उनको ही सुयोग्य साधन-माध्यम बनाकर श्रेष्ठ पुरुष अपने कार्य को सिद्ध करते हैं। ऊपरिनिदिष्ट बीजीभूत संभावना का समाज में अभाव रहा तो जनसाधारण श्रेष्ठ कार्य का वाहक बन ही नहीं सकता। तीन शताब्दियों तक साधु-संतों द्वारा जनजागरण का कार्य न होता तो महाराष्ट्र में हठात् शिवाजी का उदय न होता। वैसे ही, अन्य परिस्थितियां समान रहते हुए, शिवाजी का निर्माण न होता तो तानाजी मालुसरेकी पीढ़ी से लेकर धनाजी जाधव की पीढ़ी तक दक्षिण में सामान्य जनों को असामान्य बनाने की जो प्रक्रिया चल पड़ी वह कदापि न चल पाती। परम्परा की बीजीभूत संभावना से परिस्थिति ओतप्रोत होने के कारण सामान्य व्यक्तियों में असामान्य कर्तृत्व जागृत करने का कार्य शिवाजी कर सके। ऐसे व्यक्ति शिवाजी के कार्य के समर्थ साधन बनने के कारण शिवाजी की मूल श्रेष्ठता और भी अधिक चमक उठी।

जो दूध घना नहीं होता उसमें से घनी मलाई की अपेक्षा नहीं की जा सकती। परमपूजनीय डाक्टर जी राष्ट्र पुनर्निर्माण कार्य में श्रेष्ठ विभूतियों के योगदान का महत्व जानते थे। किन्तु उन्होंने यह निश्चय किया था कि संस्कारों के माध्यम से वे सामान्य जनों में से हर एक व्यक्ति को असामान्य बनाएंगे, ताकि अपने भविष्य के लिए दो-चार विभूतियों पर ही अवलम्बित रहने की बारी समाज पर न आए। निराशामय स्थिति में श्रेष्ठ नेता का निर्माण जैसे आशा का कारण होता है वैसे ही उसी पर अवलम्बित रहने की आदत उससे भी गहरी निराशा में समाज को डाल सकती है। घने अंधेरे में बिजली चमकी तो एकदम प्रकाश का आनंद मिलता है, लेकिन बिजली लुप्त होने के बाद अंधेरा पहले से भी अधिक घना प्रतीत होता है। ध्येयसिद्धि की दृष्टि से यह प्रक्रिया श्रेयष्कर नहीं, ऐसा पूजनीय डाक्टर जी मानते थे। इस कारण उन्होंने दूसरा मार्ग अपनाया।

श्रेष्ठ परम्परा के आधार पर श्रेष्ठ नेता का निर्माण होता है, उसी आधार पर नेता सामान्य साथियों में से असामान्य कार्यकर्ताओं का निर्माण करता है। नेता कार्यकर्ताओं की शक्ति बढ़ाता है, कार्यकर्ता नेता की शक्ति बढ़ाते हैं, और दोनों मिलकर अंगीकृत कार्य की शक्ति बढ़ाते हैं। यह प्रक्रिया काव्यप्रकाश की निम्न पंक्ति का स्मरण दिलाने वाली है—

संस्कृति में सुभाषित है—

रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्नदेवाः
न भेजिरे भीमविषेण भीतिम्।
सुधां बिना न प्रययुर्विराम
न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीरः॥

आपत्कालीन दमनचक्र के भीमविष के कारण भारतीय मजदूर संघ विचलित नहीं हुआ। किन्तु आपत्काल की समाप्ति के बाद यह देखा गया कि जो संकट की अवस्था में बहादुरी से लड़ सकते हैं ऐसे वीर पुरुष अनुकूल काल के प्रलोभनों का शिकार भी बन सकते हैं। जनता राज आने के पश्चात अच्छे-अच्छे लोग और संगठन भी इस तरह की मनःस्थिति में आ गए। कहा गया है कि विजयकाल ही प्रमादकाल होता है। राज्य परिवर्तन के पश्चात् अवसरवादी सस्ती नेतागिरी का प्रभाव एकदम बढ़ गया। मजदूरों के लिए यह सौभाग्य की बात थी कि तत्कालीन केन्द्रीय श्रम मंत्री मान्यवर श्री रवीन्द्र वर्मा इस सस्ती श्रेणी के नहीं थे। इस कारण कुछ अच्छी बातें उस अवधि में हो सकीं। किन्तु कुल मिलाकर शोरगुल अधिकतर सस्ती नेतागिरी (demagogy) का ही था और इस कारण ट्रेड यूनियन क्षेत्र में भी विलीनीकरण का सुझाव आया ताकि इस तरह विलीनीकृत केन्द्रीय श्रम संस्था जनता सरकार के साथ उसी तरह सम्बद्ध रहे, जिस तरह इण्टक कांग्रेस सरकार के साथ रही। यह बहुत बड़ा प्रलोभन था। किन्तु भारतीय मजदूर संघ ने दृढ़ता से इंकार किया। यह निर्णय करने का काम बड़े भाई के नेतृत्व में हुआ, और विशेषता यह थी कि यह निर्णय एकमत से हुआ। भारतीय मजदूर संघ का एक भी कार्यकर्ता राजाश्रय की मेनका के मोह में विश्वामित्र की मनःस्थिति में नहीं आया। ऐसे कार्यकर्ताओं का नेतृत्व बड़े भाई कर रहे थे। आपत्काल में प्रकट हुई वीरता तो श्रेयष्कर थी ही किन्तु अनुकूल परिस्थिति में प्रकट हुई यह निर्मोहिता उससे भी अधिक श्रेय देने वाली रही। इस कालखण्ड की विशेषता एक विद्वान लेखक ने वर्णन किया था कि First class problems confronting second class leadership." किन्तु यह वर्णन भारतीय मजदूर संघ को लागू नहीं हो सका। उस पूरी अवधि में मजदूर संघ की बागडोर बड़े भाई के हाथ में थी।

थॉमस कार्लाईल का विभूतिवाद और हर्बर्ट स्पेंसर का जनसाधारणकृत रचनात्मक प्रयत्नवाद, दोनों अपने आप में सत्य हैं, किन्तु दोनों अर्धसत्य हैं। परस्परावलम्बन से ही दोनों मिलकर इस विषय के संदर्भ में पूर्ण सत्य का निर्माण कर सकते हैं।

एक साहित्यिक ने कहा कि संसद द्वारा नियुक्त की हुई किसी उपसमिति के द्वारा 'हेम्लेट'' जैसी कृति का निर्माण नहीं हो सकता। उसके लिए प्रतिभाशाली लेखक आवश्यक है। दूरदृष्टि से भविष्य में सोचते हुए अपने ध्येय की सिद्धि के लिए वर्तमान में जनसाधारण को अप्रिय प्रतीत होने वाले निर्णय करने और उन पर दृढ़ रहने का कार्य संसदीय उपसमिति के लोग नहीं कर सकते। 'इण्डिया' की ओर जलप्रवास अंतहीन प्रतीत होने के कारण असन्तुष्ट तथा निराश हुए साथियों के दबाव में कोलम्बस नहीं आये। वाटरलू की प्रत्यक्ष लड़ाई के पूर्व

साथ लखनऊ में रहना पड़ा । उस समय श्रीमती भाभी के दवा-पानी, यातायात और भोजन का सारा खर्चा उनके गांव बगही से लाकर, निजी सम्पत्ति से किया गया । मानधन का एक पैसा भी इस काम में नहीं लगाया गया । इस कर्मठता का कहीं प्रोपैगंडा भी नहीं किया गया । इस कर्मठता के कारण ही उनकी वाणी में नैतिक अधिकार उत्पन हुआ था ।

आत्मानुशासन,

अपने ही हाथ से अपनी रस्सियां काट डालना।

अपने ही हाथ से अपने जहाज, अपने पुल जला डालना।

इसकी प्रेरणा बड़े भाई के जीवन से कार्यकर्ताओं को प्राप्त होती थी।

संघ प्रचारक के नाते जिस विभाग में बड़े भाई ने काम किया था उस विभाग में बड़े भाई के साथ प्रवास करने का मौका कई बार आया। उस समय ध्यान में आया कि बड़े भाई की कृतज्ञताबुद्धि बहुत ही दृढ़ थी । जिस-जिस ने उनको कभी प्रेम दिया होगा, उस-उस को वे हमेशा कृतज्ञता भाव से याद करत थे। आधुनिक रीति तो यही है कि जिस समय जिसका उपयोग करना हो, उस समय उसकी पूरी चिंता करना; और जैसे ही उसकी उपयोगिता समाप्त हो जाय, उसको तुरन्त झटक देना—ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार नींबू को पूरी तरह से निचोड़ लेने के बाद फेंक दिया जाता है । किन्तु बड़े भाई का स्वभाव इसके बिलकुल विपरीत था । उनके प्रेम में गणित और हिसाब-किताब नहीं था । यह उनका सहज स्वभाव था कि एक क्षण के लिए भी यदि किसी ने आत्मीयता का व्यवहार किया हो तो उसका स्मरण आजीवन रखना । इस कृतज्ञता भाव के कारण पुराने संपर्कों में से किसी को भी वे भूलते नहीं थे । फिर वह रेणुकूट का सेवाराम हो, या वाराणसी का मन्नालाल हनुमान जी । मानवीय संबंधों में उपयोगितावाद को ग्रहण करने में बड़े भाई पूरी तरह असफल रहे । इसके कारण प्रत्यक्ष कार्य के साथ-साथ अन्य व्याप भी उनको बहुत संभालना पड़ता था । उनकी वृत्ति थी—"नेहा लगा के पछताना क्या" ।

अन्तिम बीमारी में उनके मन में एक मात्र विचार कार्य का ही रहता था । कभी स्वप्न में भी बोलते थे तो वह बात कार्य से संबंधित ही हुआ करती थी । व्यक्तिगत या पारिवारिक जीवन की बात उनके मन में उस अवस्था में भी कभी नहीं आई । डा० मुले जी को वे कहते थे कि, "मैं मृत्यु की चिंता नहीं करता, किन्तु मेरी इस हालत के कारण भारतीय मजदूर संघ का काम मैं नहीं कर पा रहा हूं, इसी का खेद हो रहा है ।" बीमारी का प्रथम चरण समाप्त हुआ । हालत कुछ सुधर गई । थोड़े दिन के लिए अपने गांव जाने की अनुमति उनको मिल गई। अनुमति देते समय डाक्टरों ने कहा था कि पूर्ण विश्राम करना होगा । काम के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए । किन्तु यह शर्त पूरा करना बड़े भाई के लिए संभव नहीं

कमलेन सर : सरसा कमलम्, सरसाकमलेन विभाति वनम् ।।

—कमल सरोवर की, सरोवर कमल की, और कमल सरोवर दोनों मिलकर वन की शोभा बढ़ाते हैं ।

बड़े भाई में मनुष्य निर्माण की क्षमता बहुत बड़ी मात्रा में थी। मान्यवर बड़े भाई के कारण उनके कार्यकर्ताओं की, कार्यकर्ताओं के कारण मान्यवर बड़े भाई की और दोनों के कारण भारतीय मजदूर संघ की शोभा सतत बढ़ती गई । इस प्रक्रिया का आधार रहीं हमारी सनातन संस्कृति की बीजीभूत संभावनाएं । यह अन्योन्याश्रय ध्यान में न रहा तो सत्य स्थिति का समग्र दर्शन हो नहीं सकता ।

पंडित दीनदयाल जी के निर्वाण के पश्चात उनको श्रद्धांजलि समर्पित करते समय एक जनसंघ नेता ने कहा था कि पंडित जी ने हम लोगों को एम०एल०ए०, एम०पी०, मिनिस्टर बनाया; किन्तु वे स्वयं कुछ भी नहीं बने । ट्रेड यूनियन के क्षेत्र में इसी तरह के प्रतिष्ठा प्राप्ति के अवसर अन्य रूप में आते हैं। विदेश यात्राएं, सरकारी तथा अन्य समितियों में नियुक्तियाँ, आदि । ऐसे सभी अवसरों पर बड़े भाई एक-एक करके अन्य कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाते थे, स्वयं को सबसे पीछे रखते थे ।

अनुशासन का अर्थ तो सब समझते हैं, किन्तु आत्मानुशासन का मतलब लोगों के ध्यान में आसानी से नहीं आता । बड़े भाई अनुशासित भी थे और आत्मानुशासित भी । अनुशासन बाहर से आता है, आत्मानुशासन भीतर से । संस्था के संवैधानिक अनुशासन का सीधे उल्लंघन न करते हुए ऐश और आरामपरस्ती का जीवन व्यतीत करना असंभव नहीं है । संयम, चारित्र्य, उद्यमशीलता, कर्मठता आदि गुण संविधान के प्रभाव से निर्माण नहीं हो सकते । शायद इसी कारण आजकल यह कहने का फैशन हो गया है कि नेता का मूल्यांकन उसके सार्वजनिक जीवन के आधार पर करना चाहिए न कि व्यक्तिगत जीवन के आधार पर । नेता के व्यक्तिगत जीवन से जनता का क्या लेना-देना ? वह तो उसका निजी मामला है । यह 'प्रगतिशील' दृष्टिकोण बड़े भाई ने नहीं अपनाया था । किसी भी सम्बन्धित संगठन के संविधान में जिनका अप्रत्यक्ष रूप से भी उल्लेख नहीं, ऐसे कितने ही बंधन उन्होंने स्वयं अपने ऊपर डाल लिए थे । कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देने वाली दैनिक जीवन की उनकी कर्मठता संविधान के नहीं, आत्मानुशासन के कारण निर्माण हुई थी । विधान परिषद् के सदस्य के नाते प्राप्त होने वाला मानधन किस तरह से खर्च करना चाहिए, इस विषय में किसी भी संगठन ने उनके ऊपर कोई बंधन नहीं डाला था । न ही किसी संविधान की किसी धारा में यह आदेश था कि विधायक के मानधन का पूरा हिसाब विधायक को संगठन को देना चाहिए । किन्तु बड़े भाई पूरा मानधन भारतीय मजदूर संघ के काम के लिए ही खर्च करते थे और विधायक के नाते प्राप्त होने वाले पूरे पैसे का हिसाब भारतीय मजदूर संघ के अधिवेशन के सामने प्रस्तुत करते थे । एक समय उनकी पत्नी को उसकी बीमारी के कारण कुछ सप्ताह के लिए उनके

वैज्ञानिक के नाते विख्यात होते। बड़े भाई ने इसी परम्परा का निर्वाह किया।

पश्चिम में और उसका अनुकरण करने के कारण अपने देश में भी, श्रद्धांजलि समर्पित करते समय यह कहने की प्रथा है कि "उनकी मृत्यु के कारण अपूरणीय (irreperable) हानि हुई है। वैसे भी, मूल्यांकन के मापदंड भौतिकतावादियों के अलग हुआ करते हैं और अन्यों के अलग। भौतिकतावादियों की यह मान्यता है कि जिसके निधन के कारण होने वाली क्षति की पूर्ति हो ही नहीं सकती वह श्रेष्ठ। उन्हें बारबार प्रायः यह अनुभव आता भी है। विशुद्ध भौतिकतावाद व्यक्तिवाद और पदलिप्सा को जन्म देता है। व्यक्ति को स्वकेन्द्रित बना देता है। मेरी मृत्यु के बाद प्रलय (After me, the deluge) की भावना निर्माण करता है। ऐसा व्यक्ति हमेशा भयग्रस्त और असूयाग्रस्त रहता है। मेरे सहकारियों में से या अनुयायियों में से यदि किसी का व्यक्तित्व अधिक विकसित हुआ तो वह मुझे कहीं अपदस्थ न कर दें, इस प्रकार से विचार करने वाला व्यक्ति सहकारियों के विकास को प्रोत्साहन नहीं देता। नेतृत्व की द्वितीय पंक्ति निर्माण नहीं होने देता ताकि वह हमेशा के लिए अपरिहार्य (Indispensable) बना रहे। परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु के कारण होने वाली क्षति अपूरणीय ही हुआ करती है। भौतिकतावाद से मुक्त लोग ऐसे नेता को कनिष्ठ स्तर का मानते हैं। उनकी मान्यता रहती है कि श्रेष्ठ नेता वह है जो अपनी चिरंतन अनुपस्थिति के कारण होने वाली क्षति की पूर्ति की व्यवस्था पहले ही करके रखता है। संगठन में कभी शून्य पैदा न हो, इसकी योजना करता रहता है। ऐसे नेताओं के सोच-विचार का ढंग हुआ करता है —"मैं नहीं, तू ही"। उनके व्यवहार का ढंग भी भिन्न हुआ करता है। जीसस क्राइस्ट ने अपने शिष्यों को कहा था, "मेरी तुलना में अधिक श्रेष्ठ कार्य तुम लोग करोगे"। कान्फ्यूसिअस ने अपने शिष्यों को आश्वासन दिया था कि उसकी श्रेष्ठता के वे भी भागीदार हैं। संत ज्ञानेश्वर के गुरूदेव तथा प्रेरणा-स्रोत संत निवृत्तिनाथ मुमुक्षुओं के लिए दीप प्रज्वलन का कार्य स्वयं कर सकते थे। किन्तु वह कार्य तथा उसका श्रेय उन्होंने ज्ञानेश्वर को दिया। पूजनीय श्री गुरूजी ने कहा, "आप में से जिसने पूजनीय डाक्टर हेडगेवार जी को नहीं देखा, वह (उस समय के माननीय) बालासाहब देवरस को देख लें"। इस उक्ति-कृति का सारा ढंग ही अलग है। प्रयास दूसरों को छोटा दिखाने का नहीं, अपने से भी बड़ा बनाने का, ताकि पुण्यकार्य की गंगा कहीं रुक न जाय। बड़े भाई इसी परम्परा में पले थे। उनके निधन के कारण भारतीय मजदूर संघ की, मजदूरों की, राष्ट्र की हानि हुई है,वह हानि अपरिमित है, किन्तु अपूरणीय नहीं। इसी में बड़े भाई की श्रेष्ठता है।

ऐसे ध्येयवादी जीवन के संस्मरणों की दहलीज पर हम खड़े हैं। यहां से आगे भी बढ़ सकते हैं, वापस भी लौट सकते हैं। आगे बढ़ना खतरे से खाली नहीं है।

ध्येयवादी जीवन के संपर्क से मन में ध्येयवाद निर्माण होने की संभावना रहती है।

और फिर—

हुआ। उत्तर प्रदेश में कार्य की स्थिति कैसी है, उसमें कहां—क्या सुधार करने की आवश्यकता है, इस दृष्टि से सोचना और हलचल करना उन्होंने तुरन्त प्रारम्भ कर दिया। परिणाम जो निकलना था वही निकला। इस विषय में किसी ने रोका तो वे कहते थे कि "कार्य से अलग होकर आराम ही करना है तो जीवित रहना काहे के लिए ?"

संघ परिवार की अन्यान्य संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के साथ उनके सम्बन्ध बहुत सौहार्दपूर्ण रहते थे। भारत की राष्ट्रशक्ति की सर्वंकष व्यूह-रचना का एक मोर्चा इस नाते वे भारतीय मजदूर संघ का महत्व मानते थे। सभी के कार्यकर्ताओं को यथाशक्ति प्रोत्साहन तथा सहायत देना वे अपना कर्त्तव्य समझते थे। एकाध बार एकाध व्यक्ति की विकृति के कारण कटु अनुभव आया तो भी उनका मन विचलित नहीं होता था। एक बार एक नेता द्वारा बताया हुआ काम बड़े भाई ने अपनेपन की भावना से कर दिया। बाद में उनको पता चला कि उस नेता ने कुछ मित्रों के पास ऐसी बड़ाई मारी कि, "क्यों ? कैसे बनाया बड़े भाई को ? निकाला कि नहीं उनसे अपना काम ?" किन्तु यह मालूम होने के बाद भी बड़े भाई की समन्वयी वृत्ति में अंतर नहीं आया। कहने लगे, "जाने दीजिए। आदमी का कद ही छोटा है, ऊंचे स्टूल पर खड़ा किया गया है, किन्तु इससे आदमी की असली ऊंचाई तो नहीं बढ़ती।" तत्पश्चात् भी उन नेता महोदय के साथ उनका व्यवहार पूर्ववत् चलता रहा। वे सोचते थे कि हम किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं, अपितु अपने बृहद् परिवार के लिए काम कर रहे हैं।

अपने विरोधी खेमे के ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ताओं के विषय में भी उनके मन में स्नेह का भाव रहता था। उनकी ध्येयनिष्ठा का वे सम्मान करते थे। सैद्धांतिक विरोध करते हुए भी व्यक्तिगत स्तर पर उनकी सहायता करने की उनकी प्रवृत्ति थी। जहां तक मजदूरों के दुःख दर्द का सवाल है, मजदूर भारतीय मजदूर संघ विरोधी यूनियन का कार्यकर्ता क्यों न हो, वह संकट में है तो उसकी सहायता करना वे अपना कर्तव्य मानते थे। विरोधी नेताओं की भी असली योग्यता अपने साथियों को बतानी चाहिए, इस मत के वे थे। आत्मस्तुति-परनिंदा की आदत रखने वाले उनके कुछ मित्रों को यह अच्छा नहीं लगता था; तो भी बड़े भाई कहते थे कि विरोधियों के बारे में ओछी, हल्की टीका-टिप्पणी करने से अपना ही स्तर गिरता है।

बड़े भाई के समकालीन विधान परिषद् सदस्य तथा उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के रेकार्ड इस मत की पुष्टि करते हैं कि यदि बड़े भाई ने उधर चित्त एकाग्र किया होता तो वे अच्छे संसदज्ञ (पार्लियामेंटेरियन) के नाते चमक सकते थे। लोकतंत्र में "पार्लियामेंटेरियन" एक अच्छा कैरियर माना जाता है। किन्तु भारतीय मजदूर संघ की जिम्मेवारी के कारण वे अधिक ध्यान नहीं दे सके। भारतीय मजदूर संघ ने उनका कैरियर नष्ट किया। संगठन की जिम्मेवारी आंखों से ओझल कर या दूसरों को सौंपकर अपने व्यक्तिगत कैरियर के पीछे पड़ने की चतुराई बड़े भाई में नहीं थी। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की परम्परा के अनुकूल ही था। संघ ने भी अनेकानेक स्वयंसेवकों का कैरियर 'खराब' किया है। कौन नहीं जानता कि संघ के चक्कर में न आते तो मा० यादवराव जोशी एक संगीतज्ञ के नाते ख्याति प्राप्त कर सकते थे। मा० विट्ठलराव पतकी क्रिकेट पटु और मान्यवर रज्जू भैया एक विशिष्ठ

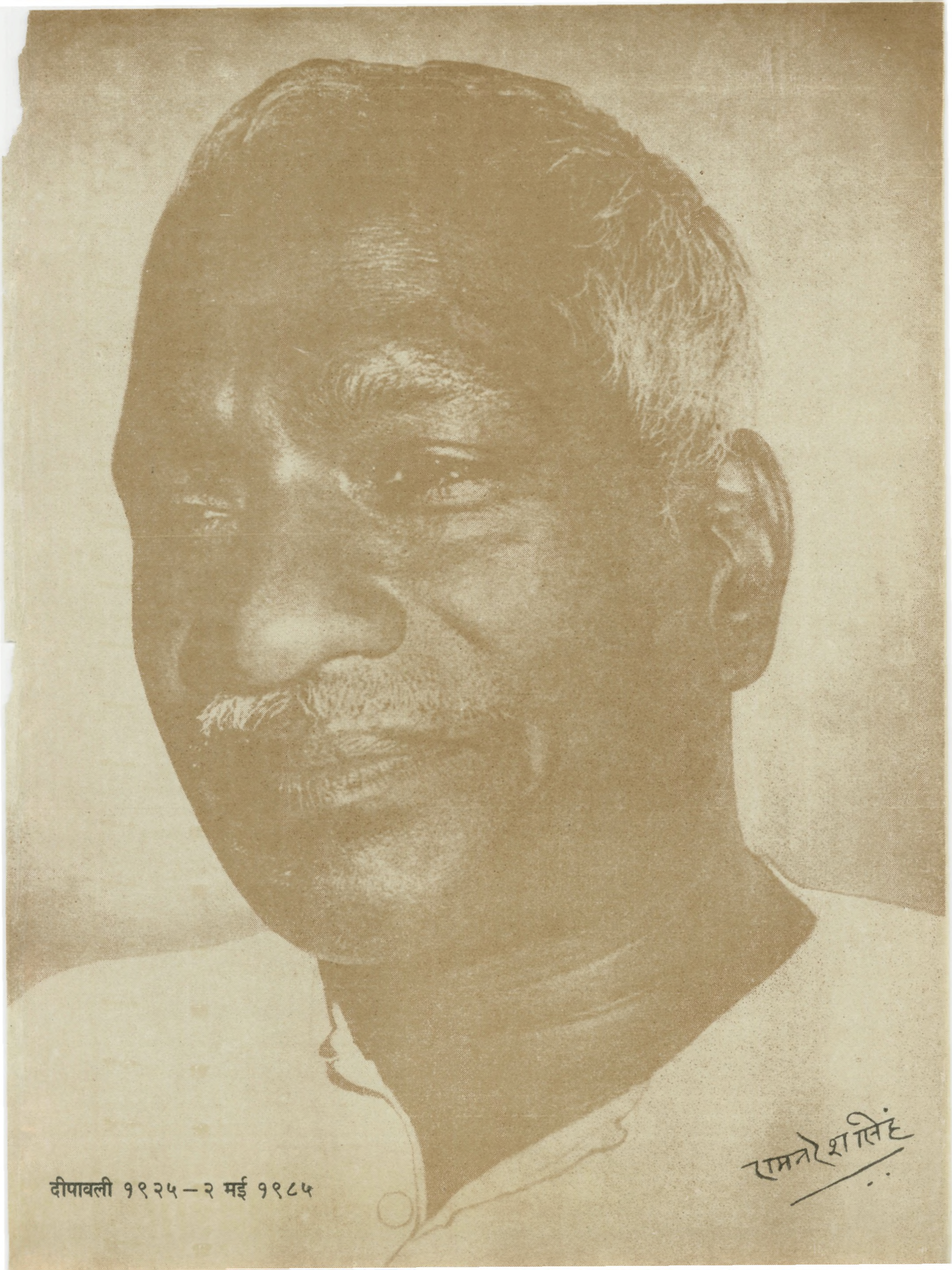
दीपावली १९२५—२ मई १९८५
रामनरेश सिंह

"लाली तेरे लाल की, जित देखो तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल॥"

यह खतरा है।

एक श्रीमान् युवक उपदेश के लिए जीसस के पास पहुंचा। जीसस ने कहा—

"Give up thy riches, take thy cross and follow me."

(अपनी धन सम्पत्ति त्याग दो, अपनी शूली उठाओ और मेरे पीछे चलो)। किन्तु वह युवक पागल नहीं था।

उसने जीसस की ओर पीठ किया और सीधे अपने मकान की ओर चल पड़ा।

हमारे लिए भी पागल बनना बाध्यता नहीं है।

हम यहां से आगे भी बढ़ सकते हैं, वापस भी लौट सकते हैं। हम दहलीज पर खड़े हैं।

—दत्तोपंत ठेंगड़ी

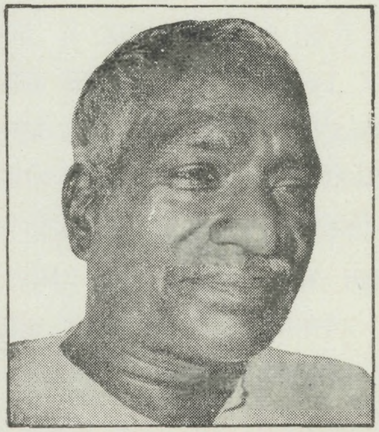

व्यक्ति

जीवन यात्रा

दीपावली १९२५ का शुभ दिन। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले की चुनार तहसील। गांव बगही। श्री दलथम्मन सिंह के घर एक पुत्र रत्न का जन्म। तब कौन यह सोच सकता था कि वह नवजात बालक रामनरेश सिंह उर्फ बड़े भाई के रूप में एक ज्योति शालाका है। कौन कल्पना कर सकता था कि एक निम्न मध्यवर्गीय किसान परिवार में पैदा यह बालक सन् १९४२ में चुनार जाकर हाईस्कूल पास करेगा। बाद में आजीविका के लिये चुनार की कचहरी में ही प्रति लिपिक का काम शुरू करेगा। तत्पश्चात अपनी प्रतिभा और मेधा समाज एवं राष्ट्र को समर्पित करके स्वयं को धन्य समझेगा। कौन अनुमान लगा सकता था कि एक सामान्य देहयष्टि में एक लौह पुरुष "योद्धा" की असामान्य युति विकसित होगी। परन्तु जिस बात को कल्पना न सहेज पाई उसे समय ने सहेजा। वक्त की शान ने घिस-तराश कर एक ऐसा अदभुत व्यक्ति गढ़ा जिसमें जहां एक ओर लोकमान्य तिलक की सिंहगर्जना "स्वतंत्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है" का बोध था वहीं श्री गुरूजी के इस बोध वाक्य की प्रतीति भी थी कि "इदम् राष्ट्राय-इदम् न मम" यह सब कुछ राष्ट्र के लिये है, मेरे लिये नहीं।

बड़े भाई ने श्रमिकों को सम्मानपूर्वक जीने के अधिकार का रास्ता दिखाया। वे आधुनिक विश्वकर्मा थे। राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन की अनेक विभूतियों की मालिका में से एक थे। वे निश्चल, निश्छल; संगठन कौशल के धनी एवं शुद्ध राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के पक्षधर, कर्मयोगी, और योद्धा थे। सत्य तो यह है कि मान्यवर श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी के मार्ग-दर्शन और सान्निध्य में रहकर उनके पारस स्पर्श से राष्ट्र समर्पित कार्यकर्ताओं की मणिमाला गुंथने की प्रक्रिया में से जिन अनेक कार्यकर्ताओं का निर्माण हुआ उनमें से एक सर्वाधिक विमल-धवल मोती थे बड़े भाई।

अन्याय और अत्याचार से टक्कर लो

निरुपद्रविता हम लोगों में एक सद्गुण माना जाता है। सदा चुप रहने वाला मनुष्य लोगों के द्वारा बड़ा सज्जन माना जाता है। सज्जन कौन है? लोग कहते हैं—सज्जन वही है जो औरों के पचड़े में कभी नहीं पड़ता, स्नान के बाद भोजन और फिर ऑफिस या दूकान उसके पश्चात पुनः भोजन और सोना जिसका दैनिक कार्यक्रम है। लोग आपस में कहते—"देखिए, कैसे हैं गोविंदरामजी। कितने शांत। कितने सीधे। पच्चीस वर्षों से पड़ोस में रहते हैं पर किसी को पता तक नहीं होता कि वे इस पड़ोस में रहते हैं। इतना सज्जन मनुष्य बिरला ही होगा।" पर हमें ऐसा सज्जन नहीं चाहिए। चुपचाप अत्याचार सहने वाला व्यक्ति यदि सज्जन माना जाय और यदि ऐसे सज्जनों की भरमार हो तो यह समाज दुनिया में जीवित नहीं रह सकता और फिर कभी भी हिन्दुस्थान उच्च अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता।

—प. पू. डॉ. हेडगेवार

आद्य सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

वंश वृक्ष

स्व. रामनरेश सिंह 'बड़े भाई'
जिला : मिर्जापुर, उ. प्रदेश
मूल ग्राम : बगही

परिवार

श्री हरनारायण सिंह "दादा"

श्रीमती सर्वोतम देवी "दादी"

१. श्री दलथम्मन सिंह "पिता"

श्रीमती बच्ची देवी "माता"

२. श्री मिठाईलाल सिंह "चाचा"

३. श्री सदाफल सिंह "चाचा"

४. श्रीमती रामलल्ली देवी "बुआ"
अध्यापिका व्यक्तिगत सत्याग्रह
१९४० में जेल में मृत्यु

१. श्री रमाशंकर सिंह "बड़े भाई"

२. श्री तेजबली सिंह "मजले भाई"

३. श्रीमती शामली देवी "बड़ी बहन"

४. श्री रामनरेश सिंह "बड़े भाई"

५. श्रीमती फूलवती देवी "पत्नी"

६. श्रीमती कमला देवी "छोटी बहन"

१. श्री दुनियाराम सिंह "चचेरा भाई"

२. श्री विजय बहादुर सिंह "चचेरा भाई"

१. श्री उदय प्रताप सिंह "चचेरा भाई"

२. श्री कृपाशंकर सिंह "चचेरा भाई"

निरोगी जीवन का रोग से संघर्ष

१९७५ (आपतकाल) से ही श्री रामनरेश सिंह—बड़े भाई के पैर में कष्ट धीरे-धीरे बढ़ता रहा। वह अपने स्वभाव के अनुसार उसका साधारण ढंग से अपना इलाज कराते रहे। समय-समय पर हम आपस में बातचीत कर लेते थे। बीच-बीच में डाक्टर को भी दिखाने का प्रयास होता रहा। दिल्ली में डा० पी. सी. चन्द्रा (हैड आफ दी डिपार्टमेंट आफ दी आर्थोपेडिक आल इण्डिया इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेस नयी दिल्ली) को दिखाया। विस्तार से चर्चा हुई। मैंने, कहा कि आप को किसी अच्छे डाक्टर को दिखाया जाए। परन्तु वे इस बात पर कभी भी सहमत नहीं हुए। एक बार फिर प्रयास किया। भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग की तैयारी की दृष्टि से पुणे में बैठक थी। पूछा, कि आप उस समय थोड़ा समय निकालें तो आप को डॉ० बी. जी. मुले को दिखा दें। मैं भी पुणे में हूं। लेकिन इसका भी उत्तर हां-हूं में रहा। संयोग की बात है कि मैं उन दिनों पुणे में था। बैठक पुणे-सिंहगढ़ रोड पर स्थित गैस्ट हाउस में थी। उस समय मिलने गया। चाय पर बातचीत करते समय पूछा, बड़े भाई, यदि आप के पास समय हो तो आप की तकलीफ के बारे में डाक्टरों से बात करूँ। वे बोले—भाई, कल तो मेरी गाड़ी है, अभी सम्भव नहीं, फिर कभी। मुझे मालूम था कि वह यही उत्तर देंगे। मन खिन्न तथा दुःखी हुआ कि जाने दो क्यों बेकार पीछे पड़ें हो, छोड़ो। मैं और, वह दोनों भूल गये।

अक्तूबर १९८४ में भारतीय मजदूर संघ का अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग इन्दौर में हो रहा था। वर्ग में अधिक मिलना-जुलना नहीं होता था। हां, बैठक या चाय पान या घूमते-फिरते समय नमस्ते होती थी। वर्ग के दूसरे दिन अलग-अलग बैठक हो रही थी। वह ऐसी बैठक थी, कुछ उद्योग एवं व्यक्तिगत जो किसी भी उद्योग में नहीं ऐसे कार्यकर्ताओं की भी बैठक थी। उस बैठक को बड़े भाई सम्बोधित कर रहे थे। एक उद्योग के कार्यकर्ताओं भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्धता के बारे में प्रश्न कर रहे थे। प्रश्नकर्ता का प्रश्न कुछ शरारत-पूर्ण था।

बैठक का वातावरण गरम हो गया। उस समय बड़े भाई उसके प्रश्नों का उतर बड़े ही संयम से किन्तु कठोर शब्दों में दे रहे थे। फिर भी उनके चेहरे पर बहुत ही तनाव और खिंचाव दिख रहा था। पांव लड़खड़ा रहे थे। कुछ प्रमुख कार्यकर्ता सामने वाली सीट पर बैठे थे। एक कार्यकर्ता से कहा, भई, बड़े भाई से कहो बैठ जायें। वह कहीं गिर न जायें। कारण, जब वह खड़े होते थे तो उस समय माइक को इतने जोर से पकड़ते थे, जैसे कि किसी खम्भे को पकड़ा हो। इसी समय मेरे मन को चिन्ता हुई कि श्रीमान दत्तोपन्त ठेंगड़ी से बात करना चाहिए। परन्तु उस समय स्व० इन्दिरा गांधी की हत्या के कारण सारे देश में वातावरण क्षुब्ध एवं गर्म हो गया था। हम लोग इन्दौर से अपने-अपने स्थानों पर वापस चले गये। तीन या चार नवम्बर १९८४ को बड़े भाई दिल्ली आये, उस समय हिम्मत करके बात की कि बड़े भाई आप का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। आप एक स्थान पर कुछ समय रुक कर अपना इलाज करायें। अपनी प्रतिक्रिया पूर्ववत व्यक्त करते हुए, वे अपने घर चले गये। इस बीच मान्यवर दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी नयी दिल्ली आये तो, उनको सारी स्थिति से अवगत कराया कि बड़े भाई को पुणे के डा० मुले जी को दिखाना चाहिये। उनकी तबीयत अच्छी नहीं है। आप बड़े भाई से बात करें। उन्हीं दिनों मान्यवर दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी को पुणे जाना था। मैंने कहा आप पुणे जा ही रहे हैं तो डा० मुले जी से बात करके फोन से बतायें। ठेंगड़ी जी पुणे चले गये।

मैं फिर बड़े भाई जी से मिला। पूछा बड़े भाई क्या हाल है? वह बोले "अरे, भाई कल घर जाकर गोरखपुर में नेचुरोपैथी उपचार करूंगा।" संयोग की बात है, अपने एक कार्यकर्ता श्री रघुनाथ जी भट्ट पीलिया से बीमार थे। उन्हें देखने जाना था। ७ नवम्बर, १९८४ प्रात. ८.३० बजे मैं श्री राजकृष्ण जी भक्त के साथ जैन मेडिकल सेन्टर भट्ट से मिलने गया। हम बैठे ही थे कि बड़े भाई का फोन आया "अरे, भाई हमारी भी भट्ट जी से भेंट करा दो।" मैंने विनोद करते हुए कहा कि आपके संगठन मन्त्री श्री ओम प्रकाश जी अग्घी हैं उन्हें कहिये कि आप को स्कूटर से लेकर हास्पिटल आ जायें। वह बोले "अरे, भाई उन्हें और कहीं जाना है।" मैंने कहा "तो फिर आप वहां ही रुकें, मैं दो-चार जगह जा कर फिर आप को लेने आता हूँ।" दोपहर के १२ बजे भारतीय मजदूर संघ के केन्द्रीय कार्यालय पहाड़गंज उन्हें लेने गया। हम दोनों दोपहिया स्कूटर से जैन मेडिकल सेन्टर, साउथ एक्स्टेंशन, नयी दिल्ली पार्ट दो, श्री रघुनाथ जी भट्ट से मिलने गये। स्कूटर से उतरते समय उनका एक पैर बाहर निकालने में कठिनाई हो रही थी तो गाड़ी खड़ी करके सहारा देकर पांव को खींच कर निकाला। वह दृश्य मुझे कुछ अजीब सा लगा और लगा कि मामला काफी बिगड़ा हुआ है। खैर, उसी समय श्री भट्ट जी को मिले और वापस साउथ एवेन्यू निवास पर आये। कुछ ऐसी चर्चा चल जिसमें मैं सहज पूछ बैठा—"क्या बात है बड़े भाई ? आप के पैर की तकलीफ काफी बढ़ गई लगती है।" वह बोले, "अरे, भाई परसों गांव गया था। उस दिन भी ऐसा ही हुआ कि मेरा बायां पैर स्कूटर से नहीं उठा। तब मेरे ध्यान में आया। भतीजे ने खींचकर स्कूटर से निकाला था। मैं कल वापस काशी जा रहा हूं, और वहां से गोरखपुर में नेचुरोपैथी का उपचार करूंगा।" हम दोनों चाय पी कर फिर पहाडगंज कार्यालय गये। रास्ते में चलते-चलते कहा—"बड़े भाई आप यदि उचित समझें तो मैं पुणे के डॉ० मुले जी से बात करूं। क्या आप समय निकालेंगे ? एक बार पूरा जांच करा लेते हैं। जैसा स्वभाव था, कहा कि नहीं भाई

अब मैं गोरखपुर जाकर इलाज कराऊंगा। मैंने सहज भाव से डरते हुए कहा, "बड़े भाई, लोग इलाज कराने दिल्ली, बम्बई और पुणे जाते हैं और आप वापस जा रहे हैं गोरखपुर। वह कुछ न बोले, मैं चुप रहा। सोचने लगा कि क्या किया जाये। इन्हें किसी प्रकार डाक्टरों को दिखाना चाहिये।

फिर दूसरे दिन फिर मिले। उनसे कहा, "अच्छा एक रास्ता और है।" वह बोले क्या ? मैंने कहा—"आप पुणे चलने का विचार करें।" तब तक हम आयुर्वेदिक इलाज कराते हैं। "यदि आराम मिला तो हम पुणे नहीं जायेंगे।" इस बीच में श्री राज कृष्ण जी भगत से चर्चा की। कहा कि बड़े भाई के स्वास्थ्य का मामला काफी बिगड़ा हुआ है। इन्हें काशी या गोरखपुर नहीं जाना चाहिये लेकिन उन्होंने शायद निश्चय कर लिया है। इसी बीच मान्यवर ठेंगड़ी जी दिल्ली आये। उनसे विस्तार से चर्चा हुई कि बड़े भाई जी को पुणे में डाक्टर मुले से इलाज कराना चाहिये। क्या आप डाक्टर साहब से बात करेंगे या मैं करूं ? वैसे आप पुणे जा रहे हैं। आप ही बात करें और मुझे फोन पर बता दें। तब तक मैं दिल्ली के वैद्य रामनारायण जी पुरी को दिखा कर इलाज कराता हूं। इसी बीच में श्री भगत जी को फोन आया कि बड़े भाई रुकेंगे। आप डाक्टर को फोन करें। फिर दूसरे दिन श्री रामनारायण जी पुरी को फोन करके समय लिया। दिनांक ६.११.८४ को प्रातः ८ बजे उनसे मिलने गये। वैद्य जी ने अपने ढंग से जांच करके चार दिन की दवाई दी और कहा कि आपका लिवर खराब है। फिर चार दिन बाद मिले। एक सप्ताह की दवाई ले कर आये। इस बीच में श्री कौशल किशोर दिल्ली प्रान्त प्रचारक एवं श्री लक्ष्मण श्री कृष्ण भिड़े जो विदेश में संघ का कार्य देखते हैं, उन्हें देखने आये। दस बारह दिन हम वैद्य जी से इलाज कराते रहे। इस बीच श्री ठेंगड़ी जी ने पुणे में डॉक्टर मुले से बात की। दिनांक २३.११.८४ को पुणे जाने की तिथि निश्चित हुई। झेलम एक्सप्रेस में आरक्षण कराया गया। आयुर्वेदिक इलाज जारी रहा। मालिश आदि होती रही। हड्डी के जानकार संघ के विभाग प्रचारक श्री देवी चरण चोपड़ा, दिल्ली सम्भाग के प्रचारक श्री प्रेम जी के आग्रह पर एक दिन बड़े भाई की मालिश करने आये। यह सिलसिला दो-तीन दिन चला। बड़े भाई को इस मालिश से काफी कष्ट महसूस हुआ। एक दिन बात-बात में कहा "रामदास, किसी तरह चोपड़ा जी से मालिश कराना छुड़वा दो। मुझे बहुत तकलीफ होती है। मैं उनका तरीका बर्दाशत नहीं कर पा रहा हूं। संयोग की बात है कि पुणे जाने का निर्णय होना और उनको सूचित करना, दोनों बात का तालमेल बैठने से उन्हें मालिश करने को मना किया। पुणे जाने की तैयारी के साथ पूर्व निश्चित कार्यक्रम मार्च तक स्थगित करने सम्बन्धी पत्र श्री बड़े भाई जी ने भेज दिये और इलाज के लिये मन की तैयारी की।

दिनांक २३.११.८४ को प्रातः झेलम एक्सप्रेस से प्रस्थान की तैयारी हुई। आठ घन्टे देर से गाड़ी आने से शाम को ४ बजे नयी दिल्ली स्टेशन के लिये साउथ एवेन्यू से कार द्वारा रवाना हुए। उस दिन श्री कौशल किशोर जी, भगत जी और श्री प्रेम नाथ शर्मा आदि उन से मिले। स्टेशन पर व्हील चेयर से उन्हें गाड़ी के डिब्बे तक पहुंचाया। प्लेटफार्म पर भारतीय मजदूर संघ के अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे। आरक्षण प्रथम श्रेणी में था। परन्तु अचानक उस दिन एक कोच कम लगने के कारण थोड़ी परेशानी रही। एकदम निर्णय बदल कर वातानुकूलित

डिब्बे में आरक्षण बदलवा कर यात्रा करने का निर्णय लिया। जब हम लोग नयी दिल्ली से विदा हो रहे थे, वहां उपस्थित सभी कार्यकर्ता अपने-अपने विश्वास के साथ मुझे यह आश्वस्त कर रहे थे कि रामदास जी आप बड़े भाई को ठीक करके लायेंगे। प्रत्येक कार्यकर्ता के चेहरे पर यही भाव जितना प्रबल था उतना ही मेरा मन टूट कर कमज़ोर होने लगा कि इस जवाबदारी को कैसे निर्वाह करूंगा। मन पर एक बोझ सा हो गया। जब गार्ड ने सीटी बजाई और गाड़ी प्लेटफार्म को छोड़ने लगी और सभी कार्यकर्ता विश्वास के साथ हाथ हिला कर हम लोगों को विदा कर रहे थे, तो मेरा मन एकदम भर आया। आंखों में आंसू आ गये। उन कार्यकर्ताओं को विदाई का जवाब देने के बजाय मैं सीधा बाथरूम में जा कर हाथ मुंह धो कर बड़े भाई के पास चला गया। आगे की यात्रा के विषय में बातचीत करने लगे। बड़े भाई जी का मन लगाये रखने के लिये दिन भर इधर उधर की गपशप और बीच-बीच में थोड़ा नाश्ता-पानी करते हुए किसी तरह हम दूसरे दिन २४.११.८४ को ६.३० बजे पुणे के स्टेशन पर पहुंचे।

पुणे में पूर्व सूचना होने के कारण स्टेशन पर सभी प्रकार की सेवायें उपलब्ध थीं। संघ कार्यालय से श्री आबा जी अभयंकर एवं मजदूर संघ के प्रमुख कार्यकर्ता बड़े भाई को लेने के लिये उपस्थित थे। स्टेशन पर चाय आदि की व्यवस्था थी व्हील चेयर से उन्हें कार तक ले गये। स्टेशन से उन्हें सीधे संघ कार्यालय मोती बाग लाया गया। रात्रि को डॉ० बी. जी. मुले उन्हें देखने आये। प्राथमिक जांच के बाद डॉ० मुले "बोले बड़े भाई हम आप को स्वस्थ करके भेजेंगे, आप चिन्ता न करें" आपके विषय में श्री ठेंगड़ी जी से चर्चा हुई है। डॉक्टर साहब ने मुझे बाहर बुला कर कहा रामदास अगला कार्यक्रम निश्चित करना है, जो कि जांच की दृष्टि से आवश्यक है। डॉ० दिलीप वाणी, डॉ० उपासनी आदि कल २५.११.८४ को आयेंगे और जांच करके जायेंगे। बड़े भाई के स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चा करने हेतु मुझे अपने साथ घर ले गये। डॉ० बी. जी. मुले ने फर्ग्यूसन रोड स्थित अपने निवास पर भोजन करते-करते बड़े भाई के विषय में विस्तार से चर्चा की। दिनांक २५.११.८४ को उन्होंने कहा यह पैरालिटिक अटैक है। यह रोग शरीर को धीरे-धीरे अपने ढंग से कमज़ोर करता है। अतः इसकी दवाई शुरू कर देते हैं। आगे की जांच जारी रखते हैं। मालिश के लिये अपने एक एल. आई. सी. के कार्यकर्ता श्री काजरेकर को बुलाया। यह सब साथ-साथ चलता रहा। उन्हें मुले रूग्णालय में दाखिल कराया। डॉ० मुले एवं डॉ० उपासनी ने निर्णय किया कि ब्रेन स्कैन किया जाय। दिनांक २७.११.८४ को पूना मैडिकल सेन्टर डिपार्टमेन्ट आफ डायोगनिस्टिक इमेजिंग, रूबी हाल, क्लिनिक कम्पाउण्ड ४०, ससून रोड, पूना-४११ ००१ में डॉ० एस. एन. कर्नावत एवं ए. बी. केलकर की देख रेख में ब्रेन स्कैन किया गया। दिनांक २८.११.८४ को रिपोर्ट आई। रात्रि ८.३० बजे डॉ० मुले ने मुझे अपने केबिन में बुलाकर कहा "बैठो रामदास जी।" फिर सिस्टर से पूछा कि बाहर कोई है तो नहीं, उसने कहा कि नहीं। वे बोले तो अब ऐसा करो कि किसी को अन्दर मत आने दो, हम दोनों बात करने बैठते हैं। हमारे लिये दो अच्छी चाय मंगवाईये" फिर बोले सारी, रामदास बड़े भाई की रिपोर्ट अच्छी नहीं है। फिर भी चिन्ता की कोई बात नहीं। दो मिनट रुक कर मेरी तरफ देखते रहे। मैं चुप बैठा रहा। कुछ देर बाद मैंने कहा डॉ० साहब आप बड़े भाई को बचाने के लिए जो करेंगे, मैं उसमें सहयोग दूंगा।

आपके आदेश का पूरा-पूरा पालन करूंगा। मुझे कहीं भी जाना पड़े और कुछ भी करना पड़े। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं आपकी पूरी मदद करूंगा। आपका इस सम्बन्ध में योग्य मार्ग दर्शन चाहिए। डॉ० साहब ने टेबल पर रखी पुस्तक उठाई और उसमें से एक पृष्ठ निकाला जिस पर डॉ० साहब ने संकेत कर रखा था। डॉ० कर्नावत एवं डॉ० केलकर की रिपोर्ट की समीक्षा करते हुये, डॉ० साहब ने कहा कि स्पेस आंक्युपचिंग विजन आफ सेन्ट्रल सेरेब्राल टयूमर के केस में जनरली, यदि टयूमर ज्यादा आवश्यकता से बाहर नहीं गया हो तो रोगी को चार साल तक जीवन मिल जाता है। डॉ० कर्नावत व केलकर की रिपोर्ट में जो संकेत मिलते हैं उसमें ग्लायोमा आफ सेरेब्राल ब्रेन के सेंटर में प्रमुख शरीर नियंत्रण केन्द्र के पास है।

डाक्टर मूले ने कहा और किताब में से मिलान किया तो बोले छः महीने तक जीवन है। उन्होंने अपनी मेडिकल किताब में से वह पृष्ठ पढ़कर सुनाया जिस पर इस प्रकार के रोगों के सम्बन्ध में मोटी-से-मोटी जानकारी भी थी। डाक्टर मूले ने कहा कि यदि आज टाइमटेबल बनाते हैं तो भी मई तक बड़े भाई को जीवन दे सकते हैं। फिर भी हम मन की शंका दूर करने के लिए फाईनल डायग्नोसिस अण्ड बायापसीकल परीक्षा के लिये बम्बई के जसलोक के. ई. एम. टाटा अस्पताल से डाक्टर से सम्पर्क करते हैं। इस सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक जानकारी प्राप्त करके इलाज का निर्धारण करेंगे। आप बम्बई डॉ० परलकर जी को फोन करके यह पता करें कि "न्यूक्लिओटाईड स्कॅन फांर ब्रेन" स्कॅन मशीन बम्बई के किस अस्पताल में है, हम दोनों ने बैठकर आगे का कार्यक्रम निश्चित किया।

अब प्रश्न यह था कि मान्यवर ठेंगड़ी जी को एवं बड़े भाई के परिवार को कैसे सूचित किया जाये। उन दिनों श्री ठेंगड़ी जी, भारतीय विचार केन्द्र के कार्यक्रम के लिये त्रिवेन्द्रम (केरल) गये हुए थे। कार्यक्रम के अन्तिम दिन दिनांक १.१२.८४ फोन द्वारा उन्हें सूचित किया कि आप सीधे पुणे चले आयें। दिल्ली में फोन करके भारतीय मजदूर संघ कार्यालय को बताया कि बड़े भाई की आवश्यक जांच करने हेतु बम्बई ले जाना है। जांच मशीन यहां नहीं है। इसलिये बम्बई अस्पताल में दिनांक ४.१२.८४ को उन्हें दाखिल करना है। काशी फोन करके बतायें कि कोई कार्यकर्ता उनके बगही घर जा कर बड़े भाई की पत्नी एवं साथ में घर के किसी व्यक्ति को बम्बई भेजने की व्यवस्था करें। साथ-साथ बम्बई अस्पताल में दाखिला कराने की दृष्टि से डॉ० माधव राव परलकर जी. नाना परलकर स्मृति बम्बई, से बातचीत होती रही। इन दो दिनों में कई प्रकार की बातें मुझे डॉ० मुले से सीखने को मिलीं जो शायद किसी कालेज की क्लास में या सन्त-महन्त के प्रवचनों से नहीं मिलती। पेशेन्ट, बीमारी, डाक्टर एवं स्टाफ, अटेन्डेंट, विज़ीटर, अस्पताल, बम्बई नगर, इन सब का अपने प्रकार का स्वभाव होगा, वे अपनी-अपनी इच्छानुसार करेंगे और चाहेंगे। इसमें सभी बातों का ध्यान रखकर तालमेल बिठाना है, यह मालूम है कि काम कठिन है, तो भी उसे करना होगा। पेशेन्ट की मनःस्थिति अपनी प्रकार की होती है, पेशेन्ट व्यक्ति कौन है, बीमारी क्या है, स्वभाव कैसा है, यह सारा होते हुए आयु और उसकी शारीरिक अवस्था कैसी है, यह ध्यान रखना होगा। आखिर वह रुग्ण मनुष्य है। उसको समझाने का और उसके अनुसार ही अपना व्यवहार होना चाहिये। उसको आवश्यक सेवायें मिलती रहनी चाहिये। प्रत्येक डाक्टर को

पेशेन्ट को देखने का अपना एक तरीका होता है। डाक्टर को चाहिये कि पेशेन्ट को पूरा आवश्यक समय देकर देखे। परन्तु डाक्टर का प्रत्येक पेशेन्ट के लिये अपना निश्चित मापदण्ड होता है। व्यक्ति कौन है, यह आधार छोड़कर उसको रोगी के नाते देखते हैं। उसके मिलने वालों का भी अपना एक स्वभाव होता है, उसकी सारी व्यवस्था अटेन्डेन्ट के ऊपर होती है। हर मिलने वाला अपने अधिकार की बात करेगा। यह सब भावनात्मक एवं उसके अपने स्तर से सम्बन्धित होगा। अतः न तो पेशेन्ट को तकलीफ होनी चाहिए, और न मिलने वाले को। इधर अस्पताल का स्टाफ, चौकीदार, लिफ्ट्मैन, सफाई वाले, चपरासी, वार्डब्वाय अपने स्थान पर बड़े अधिकारियों से कम महत्व नहीं रखते। अतः इसका भी ख्याल रखना चाहिये। दूसरी तरफ अस्पताल में कई प्रकार के रोग से ग्रस्त रोगी होते हैं, जिससे मानसिकता में फर्क पड़ सकता है। दोनों के लिये यही एक उपाय है कि हम स्वयं को भूलकर और छोटा बनकर सेवक के रूप में ही रहें। बम्बई शहर नीरस, निर्जन मानव जीवन हीन एक जंगल है, जिसमें अपने आपको एक हरा भरा वातावरण निर्माण कर मानवीयता का रिश्ता जोड़ना होगा। वह आपको करना होगा यह चर्चा का सत्र दिनांक २८.११.८४ से दिनांक ३.१२.८४ तक चलता रहा। मन में उतार चढ़ाव होता रहा, कई पहलुओं पर अलग-अलग दृष्टिकोण न देकर समाधान प्रस्तुत करके आगे काम में लगने में वे सफल हुए। दिनांक ३.१२.८४ को प्रातः यह समाचार मिला कि मान्यवर दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी त्रिवेन्द्रम से बम्बई के लिये विमान द्वारा प्रस्थान कर चुके हैं। बम्बई फोन करके पता किया कि पुणे कितने बजे पहुंचेंगे। समाचार मिला ४ बजे तक पहुंचने की सम्भावना है। घबराहट और विश्वास की उथल-पुथल के बीच बम्बई जाने की तैयारी हुई।

दिनांक ४.१२.८४ प्रातः ८.३० बजे का समय। बड़े भाई को मुले रुग्णालय से एम्बुलेन्स लेकर बम्बई के लिये विदा हुए। १२ बजे श्री रमनभाई शाहभाई के परेल स्थित निवास पर बम्बई पहुंचे। वहां चाय और भोजन आदि का डिब्बा लेकर पुनः प्रस्थान किया। सायं ३.३० बजे हमारी एम्बुलेन्स बम्बई अस्पताल के सामने पहुंची तो वहां कई कार्यकर्ता उपस्थित थे। अस्पताल की औपचारिकता पूरी करके ठीक ३.४५ बजे सायंकाल हम कमरा नम्बर १३१२ में पहुंचे। वहां सारा सामान लगाया। मिलने वाले कार्यकर्ता एक-एक कर के अपने-अपने घर वापस गये। डा० माधव राव परेलकर और रमन भाई आदि ने डाक्टर एवं स्टाफ से परिचय करा दिया। थोड़े समय के बाद डाक्टर जार्ज बड़े भाई को देख कर चले गये। मा० दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी आये और वे भी अपने निश्चित कार्यक्रमानुसार ६.३० बजे आगे के प्रवास पर चले गये। १३१२ नम्बर के कमरे में बड़े भाई एवं अप्पा साहब गोखले के साथ हमारी अस्पताल की गृहस्थी बसानी आरम्भ हुई। रात्रि ७.३० बजे सन्देश आया कि पेशेन्ट को लेकर ग्राउन्ड फ्लोर पर बुलाया है। ९ बजे तक डा० एस. एन. भगवती न्यूरोसर्जन एवं उनके सहायक डा० जार्ज दो घण्टे उन्हें देखते रहे और आगे की जांच की सूचना देकर, दूसरे दिन दिनांक ५.१२.८४ को पुनः ७.३० बजे ब्रेन स्कैन किया। ५.१२.८४ सायं को ४.३० बजे सौ० भाभी फूलवती देवी श्रीमती राजेन्द्र सिंह के साथ अस्पताल में आयीं। उस समय मैं १३१२ नम्बर कमरे के बाहर ही था। उन से नमस्ते हुई। उन्हें अन्दर ले कर गया। बड़े भाई ने भाभी जी को देखा तो दोनों रोने लगे। वे अपनी भाषा में आपस में शिकायत करने लगे।

वातावरण इतना मार्मिक हो उठा उसको शब्दों में लिख पाना सम्भव नहीं क्षमा करें। दिनांक ६.१२.८४ को प्रातः से ही मल, मूत्र, खून, ई. सी. जी., एक्स रे साथ ही पुनः ब्रेनस्कॅन करके डॉ० एस. एन. भगवती ने पेसेन्ट को उसके कमरे पर भेज कर मुझे अपने कमरे में बुलाया और बताया कि कल प्रातः ८ बजे आपरेशन होगा। आप खून की व्यवस्था करें। यह सुनते ही हमारा क्या हाल हुआ होगा आप समझ सकते हैं। उस समय मैं ग्राउंड फ्लोर से १३ वीं मंजिल पर कम से कम पांच छः बार सीढ़ियों से गया हूंगा। कारण उस समय लिफ्ट बन्द थी। पता नहीं भगवान ने मुझे कहां से शक्ति दी। अभी तक बड़े भाई एवं श्री अप्पा साहब गोखले को पता भी नहीं था कि कल आपरेशन होने वाला है। मेरे जाने के पूर्व नाई (बारबर) ने उनके बाल आदि निकाल दिये। वह दोनों घबराये हुए थे कि यह क्या मामला है। थोड़े समय बाद पहुंचा तो दोनों काफी गम्भीर एवं घबराये हुये थे। बड़े भाई बोले, "क्या बात है हमारे बाल वाल उतार दिये हैं। मैंने अपने को सम्भालते हुए कहा—बड़े भाई कोई ऐसी बात नहीं, कल आपका एक छोटा सा आपरेशन होना है, जिसकी बाद में जांच होगी।" यह कह कर विषय बदल दिया। उस दिन रात में सभी जगह फोन से सूचनायें भेजीं। रात भर हमें नींद नहीं आयी। मा. अप्पा साहेब गोखले बार-बार पूछ रहे थे "क्या बात है। बड़े भाई जी कह रहे थे क्या बात है नाई ने सिर से लेकर पांव तक सारे बाल उस्तरे से साफ किये। मैं कुछ जवाब नहीं दे पाया। मैं अपने विचार में खोया हुआ था कि अब क्या किया जाए। कल प्रातः ८ बजे उठ कर आपरेशन निश्चित हुआ कि ७.१२.८४ को प्रातः ४ बजे उठ कर बड़े भाई को स्पेंजिग कर दिया जाये। खाने को उन्हें कुछ भी नहीं देना था। इसीलिये कमरे में चाय-काफी-नाश्ता लेना उचित नहीं था। हम लोग एक-एक करके बाहर जाकर चाय-नाश्ता लेकर आये।

प्रातः का समय निकल गया, परन्तु डॉ० साहब की ओर से कोई सूचना नहीं आई। पता चला कि प्रातः ६.३० बजे जो आपरेशन शुरू किया है अभी वही पूरा नहीं हुआ है। इससे दिन भर मन अस्वस्थ बना रहा। सायं ४ बजे डाक्टर का फोन आया कि पेसेन्ट को खाने के लिये दिया जाये। इस सारी बेचैनी के वातावरण में थोड़ा खा कर सायंकाल तक बड़े भाई कमरे में ही बैठे रहे। सायं ७.३० बजे सीधे आपरेशन थियेटर से डॉ० एस. एन. भगवती बड़े भाई को मिलने आये। हमसे माफी मांगी और कहा कि "आप कष्ट एवं असुविधा के लिये क्षमा करें।" जितना बड़ा व्यक्ति उतना ही विनम्र। दिनांक ८.१२.८४ को प्रातः ८ बजे आपरेशन करने के लिये बता कर चले गये। हम सभी रात में दुःखी मन से सोये। प्रातः ३ बजे उठ कर स्नान करके तैयार हो, समय की प्रतीक्षा करते रहे। प्रातः ७ बजे वार्ड ब्वाय ट्रॉली लेकर आया। कमरा नम्बर १३१२ चौथी मंजिल पर आपरेशन थियेटर के सामने बैठा कर चला गया। कनसेन्ट डायरी पर मेरे हस्ताक्षर लेकर ट्रॉली को आपरेशन थियेटर के स्टाफ ने अपनी ओर खींच लिया। दरवाजा बन्द हुआ। मैं प्रतीक्षा में बाहर बैठा रहा। ठीक दस बजे आपरेशन थियेटर से ट्रॉली बाहर आयी और सीधी रिक्वरी रूम में चली गयी। मैं देखता रहा। थोड़ी देर बाद डॉ० भगवती एवं जार्ज ने वहां से जाते समय अपना हाथ ऊपर करके कहा "आपरेशन ठीक हुआ" और निकल गये। रिकवरी रूम से सिस्टर ने आवाज लगायी कि १३१२ नम्बर का कोई सगा वाला है क्या ? मैं चुपचाप बैठा रहा, थोड़ी देर बाद फिर

आवाज लगाई, फिर भी मैं बैठा रहा । साथ में एक मुस्लिम महिला बैठी थी। उसने पूछा १३१२ नम्बर का पेसेन्ट आप का ही है ना । मैंने कहा हां, वह बोली आपको बुला रहे हैं। जाते क्यों नहीं "मैंने कहा" दो बार प्रयत्न किया उन्होंने जाने नहीं दिया। उसने बताया कि वह आपको ही तो बुला रहे हैं। मैंने कहा वे तो सगा-सगा कुछ कह रही हैं। उसने कहा यहां अटैन्डेन्ट को इसी नाम से पुकारते हैं। तब मुझे पता लगा कि पेसेन्ट के अटैन्डेन्ट को सगा कह कर पुकारते हैं। उस दिन काफी दौड़धूप रही। चार बजे भाभी जी एवं श्री राजेन्द्र सिंह (बड़े भाई का भतीजा) रमन भाई के साथ आये। दोनों की एक-एक करके भेंट करा दी। भाभी जी थोड़ी देर रुक कर बोली कि, "क्या बात वह बोलते नहीं।" मैंने कहा, भाभीजी आपरेशन कि समय सुलाने की दवाई दी जाती है। उसी दवा का असर है। कल तक ठीक हो जायेगा आप चिन्ता न करें।" उस महिला में काफी हिम्मत है। कभी भी धैर्य खो कर उसने बात नहीं की। अस्पताल में प्रति दिन ३.३० बजे अपने भतीजे राजेन्द्र सिंह के साथ पहुंच जाती थीं। ४.१० बजे का उनको मिलने का समय निश्चित किया हुआ था। उसके अनुसार रिकवरी रूम के स्टाफ से बात कर रखी थी। कभी तो स्टाफ इतनी सख्ती से बात करता था कि मन बड़ा ही उदेलित होता था कि क्या करें फिर भी धीरे-धीरे वे मेरे अच्छे मित्र हो गये। यहां तक कि पेसेन्ट के सगे वाले भी हमें ही काम बताते थे। स्टाफ हमारा पूरा सहयोग देता था। बेहोशी में बड़े भाई बड़बड़ा रहे थे, "अरे पांडे-पांडे। तो सिस्टर ने कहा "क्या पांडया-पांडया करता है। कौन है यह। वह तो नहीं बता पाये। एक दिन सिस्टर ने पूछा।" यह पांडया कौन है। उसको बुलाओ, जिसको यह बार बार पूछता है।" मैंने कहा कोई बात नहीं हमें बताईये कोई काम हो तो।" उन्हीं के सामने सिस्टर ने पूछा, "इनके बीबी बच्चे कहां हैं, उनको बुलाओ।" उन्हें इशारे से चुप करते हुए, बात काट कर मैंने कहा, "सायंकाल जो भाभी जी आती हैं वह परेल में ठहरी हुई है। अब कल आयेंगी। थोड़ी देर के बाद बाहर जाकर कहा कि, "इनके बच्चे नहीं हैं। पत्नी गांव की होने से यहां दिक्कत होगी, इसलिये उन्हें अपने कार्यकर्ता के घर ठहराया है, ये हमारे अधिकारी हैं अर्थात भारतीय मजदूर संघ के जनरल सैक्रेटरी है। हैड आफिस दिल्ली में है और काशी के पास बगही गांव के रहने वाले हैं। इनका यहाँ कोई नहीं रहता, सारी देखभाल संगठन कर रहा है। अस्पताल की व्यवस्था मैं देख रहा हूं। साथ में अप्पा साहेब गोखले जो, सहयोग के लिये कार्यकर्ता हैं। आप लोगों को पूरा सहयोग और सेवायें मिलेंगी, चिन्ता न करें।"

दिन भर ८-१० बार जूस एवं नारियल का पानी लाना होता था। बाद में जूस बन्द किया गया। इस दौरान मिलने वालों का काफी दबाव रहता था। परन्तु रिकवरी रूम में अनुमती नहीं होने से मिलना सम्भव नहीं था। फिर भी कई कार्यकर्ता नाराज हो कर वापस लौटते थे। पूरी बात बता कर उनका समाधान करना होता था। फिर भी कहीं न कहीं किसी के मन में नाराजगी रह ही जाती थी कि हम तो मिलने आये हैं और यह हमें मिलने नहीं देता। हम तो मिल कर ही जायेंगे। परन्तु मैं क्या कर सकता था। रिकवरी स्टाफ की ओर से अनुमती मिलना इतना सरल नहीं था लोग सीधे रिकवरी रूम पर पहुंच जाते थे। जिनके कारण स्टाफ की नाराजगी मुझ पर होती थी। दोनों ओर से मेरे ऊपर अच्छा खासा दबाव रहता था। परन्तु ईश्वर की पूरी कृपा रही। समय निपटता चला था एक जाता तो दूसरा आता।

पूरा बन्दोबस्त होने पर भी कोई न कोई दिन भर में अपनी नाराज़गी प्रकट करके चला ही जाता था। इस सब का मुझे पूर्व अनुमान था। मैं प्रातः ३.३० बजे उठ कर स्नान आदि से निवृत्त हो कर ४.३० बजे ठीक रिकवरी रूम पर पहुंच जाता था और रात्रि ११.३० बजे तक यह कार्य चलता रहता था। केवल चार घन्टे मेरे हिस्से में थे जिसमें भोजन आदि सब कुछ सम्मिलित रात्रि में आपतकाल को भी अटैण्ड करना पड़ता था। कभी-कभी तो रात्रि को रिकवरी रूम में ही बैठना पड़ता था। जब बड़े भाई कभी-कभी अपने काबू से बाहर हो जाते थे, तब स्टाफ की नाराजगी एवं बड़े भाई का रोष दोनों को सम्भालना पड़ता था। यह एक कड़ी परीक्षा का समय होता था। कुछ लोगों के मार्गदर्शन एवं सहयोग के कारण सब ठीक हो जाता था।

मुझे एक दिन का स्मरण है कि रात्रि २ बजे बड़े भाई इतने बेकाबू हो गये थे कि मुझे लगा कि अब मेरी जान जाने वाली है। रोग के कारण वे अपने आप पर काबू नहीं रख पाते थे। ऐसे समय में उनसे कहते थे कि बड़े भाई जो आदमी आपको सबसे अधिक प्रिय है आप उनको याद करो। इसे भी मानने से वह इनकार करते थे। कुछ देर यही सिलसिला चलता रहता था। एक बार मैंने कहा कि आपके जो कुलदेवता हैं आप उनका स्मरण करें। किन्तु जब मुझे यह लगा कि वह यह नहीं मानने वाले हैं तो उनकी बातों को मैंने स्मरण कराया। पुणे में मुले रुग्णालय में बातचीत करते-करते बड़े भाई से पूछा था कि आपके घर में कौन से देवता हैं, जिनको आप लोग पूजते हैं। पहले तो मैं टालता रहा फिर मैंने उनको धीरे-धीरे बात करने के लिये राजी कर लिया कि बड़े भाई हर एक परिवार का अपना कुल देवता होता है। हम दोनों जब इस विषय में भावात्मक रुप से एक दूसरे से जुड़े तो बात-बात में वे रोने लगे और कहने लगे हमारे घर पर सती प्रथा थी, जो बाद में बन्द हुई। परन्तु उसकी याद में हमारे मकान के आंगन में समाधि है। वे एकदम से चुप हो गये। जब उन्हें स्मरण करा दिया तो थोड़ी देर में सो गये। प्रात : जब मिला तो एक सामान्य रोगी की तरह उनका व्यवहार था। भाभी जी का बम्बई में आना उन्हें ठीक नहीं लगता था। शायद उनके मन में विचार आता रहा हो कि उनकी उस असहाय अवस्था को देखने के लिए उनकी सहधर्माचारिणी वहां उपस्थित न होती, तो अच्छा होता। इस कारण कभी-कभी भाभी जी को देखकर वे क्षुब्ध हो जाते थे। इससे भाभी जी को दुःख होना स्वाभाविक था। एक तरफ बड़े भाई का रोग और दूसरी ओर भाभी जी की मनः स्थिति दोनों को सम्भालना मेरे लिए बहुत कठिन होता था। इस अवस्था में भी रिकवरी स्टाफ का सहयोग बराबर मिलता रहा। कई बीमारी के अटैण्डेन्ट मायूस एवं दुःखी रहते थे। एक मुस्लिम परिवार का वृद्ध डेढ़ साल से बेहोशी की हालत में रिकवरी रुम में था। चेम्बर आफ कामर्स विदर्भ के चेयरमैन की पत्नी के ब्रेन हैमरेज केस में डाक्टर और स्टाफ के साथ झगड़ा होने से उनका वहां रिकवरी रुम के सामने बैठना-मिलना मुश्किल हो गया था। महाराष्ट्र की प्रसिद्ध अभिनेत्री रंजना देशमुख कार दुर्घटना में कॉलरबोन टूटने से रिकवरी रूम में थी। सारा दिन उसके चाहने वाले एवं शुभचिन्तकों व फिल्म क्षेत्र में काम करने वाले कलाकारों का जमघट रहता था। जब शाम होती थी तो उस की साठ साल की बूढ़ी मां अकेली रिकवरी रूम के सामने वाली बैंच पर बैठी होती थी अकेले में तब उसकी भावनायें उमड़ आती थी। समाज को कोसना एक सामान्य सी बात

होती थी। कारण, उस समय उसको पानी पिलाना तो दूर रहा कोई पूछने वाला भी नहीं होता था। मैं एक दो दिन यह देखता रहा फिर धीरे से कहा, "माता जी आप इतनी परेशान क्यों हैं ? आपको कोई काम हो तो बताईये। मैं आपकी मदद करु"। थोड़ी देर में वह रोने लगी। जो भी उनके मन में भाव थे प्रकट किये, जैसा कि फिल्म इण्डस्ट्री में चलता है। लेकिन जब उन्हें पता लगा कि मैं मराठी जानता हूं तब विश्वास हुआ। जब तक वह रिकवरी रूम के सामने रहीं उनकी अपनी ओर से पूरी मदद की।

रिकवरी रुम में रहते समय बड़े भाई को मिलने वालों में मा. दत्तोपन्त जी, डॉ. बी. जी. मुले, मनहर भाई मेहता, उनकी पत्नी, रमण भाई शाह के परिवार के लोग प्रति दिन आने वालों में शामिल थे। बड़े भाई की पत्नी एवं भतीजा, रात्रि को सोने के लिये एल.आई.सी. बैंक आदि के कार्यकर्ता आते थे। बाहर से जब बड़े भाई के स्वास्थ्य की जानकारी के लिये अधिक उत्सुकता एवं पूछताछ शुरु हुई तब डॉ० मुले, मा. दत्तोपन्त ठेंगड़ी, मनहर भाई मेहता, रमण भाई शाह, डॉ० परडेकर, ने बैठ कर मीटिंग की और सोचा गया कि कार्यकर्ताओं के लिये एक पत्र निकाला जाये। दिनांक २१.१२.८४ को रमण भाई जी के हस्ताक्षर से खुशहाली का स्वास्थ्य सम्बन्धी पत्रक निकाला। रिकवरी रूम में रहते हुये व्यायाम आदि शुरु करके दिनांक २२.१२.८४ को डॉ० अरविन्द कुलकर्णी की देख रेख में रेडियेशन थैरोपी शुरु की गई। जिसकी ३० सिटिंग होनी थी। २४.१२.८४ को रिकवरी रूम से कमरा नम्बर १३१२ में शिफ्ट किया। जिसमें बराबर व्यायाम स्पजिंग आदि होता रहता था। मिलने वालों एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी लेने वालों का आग्रह बना रहा। परन्तु डॉ० की सूचना एवं व्यवस्था बनाये रखने के लिये कई बार कार्यकर्ताओं की नाराजगी लेनी पड़ी। इन सारी परिस्थितियों में भाभी जी का बहुत बड़ा योगदान रहा, जो उन्होंने कभी भी किसी प्रकार का अपना अधिकार जताने का प्रयास नहीं किया। वह पूरा सहयोग देती रहीं और अस्पताल में रहने की इच्छा प्रकट करती रहीं। परन्तु अस्पताल की परिस्थिति पूरी तरह समझा देने पर उसके पश्चात कभी भी उन्होंने आग्रह नहीं किया। अपनी समझदारी और धैर्य के कारण भाभी जी ने कभी भी मुझ से अपनी किसी भी व्यक्तिगत बात पर आग्रह नहीं किया। सामान्य वातावरण में आने के बाद लौट गयीं। इसी बीच उनके अपने रिश्तेदार मिल कर भी गये। बड़े भाई के स्वास्थ्य में बराबर सुधार होता रहा। जो सबसे बड़ी तकलीफ वाली बात थी पेशाब सम्बन्धी। वह भी सामान्य हो गयी। स्वास्थ्य भी ठीक हो रहा था। ६.१.८५ को ६३ किलो वजन था। ११.१.८५ को डॉ० कुलकर्णी हैड ऑफ दी डिपार्टमेंट ऑफ रेडियेशन को पुणे जांच के लिये मिले तो उस समय वजन ६५ किलो था। स्वास्थ्य में बराबर सुधार हो रहा था।

सभी प्रकार की जांच होने के पश्चात दिनांक २१.१.८५ को बम्बई अस्पताल से डिसचार्ज लेकर आमदार (विधायक) निवास में श्री रामनाईक और श्रीमती जयवन्ती बेन मेहता के कमरे में मुकाम के लिये गये। यह निवास संघ परिवार के लोगों का होने के कारण सभी प्रकार की व्यवस्था थी। श्रीमती हरिता अग्रवाल, सौ. लिमये को उसी उद्देय से बड़े भाई के लिये भोजन बनाकर लाती थीं। इलाज के दौरान उन्हीं के घर का भोजन बड़े भाई

ने बड़े प्रेम से खाया। डेढ़ दो महीने के बाद प्रथम स्नान कराने बड़े भाई को बाथरुम में ले गये। बड़े भाई बहुत ही क्रोधित हुए। नाराज होकर कहने लगे कि मैं स्नान नहीं करूंगा। उन्हें भय था कि आपरेशन के स्थान पर पानी जायेगा। परन्तु उनकी बातें सुनते-सुनते उन्हें बाथरुम में ले गया। दीवार के साथ खड़ा करके सब कपड़े उतार कर दो तीन बाल्टियां गरम पानी उनके बदन पर डालीं। तब तक वह बोलते रहे और मैंने अपना नहलाने का कार्य जारी रखा। साबुन लगा कर नहलाने के बाद बाहर लाया। कपड़े पहना पाउडर तेल आदि लगा कर नाश्ता कराया, दवाई देकर सुला दिया। जब उन्हें एक बजे भोजन के लिए उठाने का प्रयास किया तो इतनी गहरी नींद में थे। उठकर बैठे तो पूछा कि "बड़े भाई क्या आप हम से नाराज हैं?" कहने लगे क्यों? हमने आपको सवेरे जबरदस्ती नहलाया इसलिये। वह बोले पागल। और जोर-जोर से हंसने लगे। फिर भोजन आदि करके पुनः सो गये। ४ बजे हम लोग प्रतिदिन के अनुसार समुद्र के किनारे घूमने जाया करते थे। समुद्र के किनारे घूमते-घूमते विशेष कर उन्हें नारियल का पानी, ककड़ी, मूंगफली आदि देते थे। सामने वाली पटरी पर चाट वाले की दुकान थी। उसे देख कर कहने लगे कि पाण्डे तुम अपने दोस्त राजेश्वर को बुला लो, यहां बढ़िया से बढ़िया चाट मिलती है। तुम आना चाहो तो आ सकते हो। मैंने कहा बड़े भाई उसको यहां बुलाने से इन नव वधु के जोड़ों को चाट मिलना बन्द हो जायेगी। इस पर हम खूब हंसे। बाद में मैं तो भूल गया किन्तु उन्होंने आमदार निवास से कार्यकर्ताओं से जो पत्र व्यवहार किया है उसमें चाट सम्बन्धी बात राजेश्वर जी को एक पत्र में लिख दी।

बड़े भाई के स्वास्थ्य में निरन्तर सुधार होता रहा। हाथ बराबर काम करने लगे। १८.१.८५ को डॉ० अरविन्द कुलकर्णी को मिले। उस समय जांच करने पर स्वास्थ्य में निरंतर सुधार ही नहीं हो रहा था अपितु वजन भी बढ़ रहा था। एक दिन वजन देखा ६७ किलो हो गया था। इससे हम अन्दाजा लगा सकते हैं कि सुधार की गति कैसी थी। मैंने सोचा कि बड़े भाई कहीं मुझ से ऊब न जायें इसलिये कुछ दिन के लिए बाहर रहूं। दिल्ली चला जाऊं। वहां को व्यवस्था बम्बई के एक कार्यकर्ता को सौप कर १७.१.८५ को दिल्ली चला आया। २७ जनवरी तक बम्बई के कार्यकर्ता उनकी देखभाल करते रहे। जिसमें से श्री दादूकृष्ण भाई देसाई का नाम उल्लेखनीय है। इस बीच बड़े भाई को मिलने मा. रज्जू भैया सरकार्यवाहक रा. स्व. संघ, नानाजी देशमुख, दीनदयाल शोध संस्थान, नयी दिल्ली के महामंत्री जयाबहिन नायक, अशोक जी सिंहल, विश्व हिन्दू परिषद आदि प्रमुख अधिकारी बम्बई आये।

दिनांक २८.१.८५ को दिल्ली से पुणे होते हुए डॉ० बी० जी. मुले से मिलकर आगे की दृष्टि से सलाह मशविरा करके दिनांक २८.१.८५ को आमादर निवास बम्बई पहुंचा। बड़े भाई बहुत ही प्रसन्न एवं आनन्दित थे। इसी वातावरण में दिनांक २९.१.८५ को रेडियेशन की ३० वीं सिटिंग के बाद वजन किया। उनका वजन बढ़कर ६८ किलो पहुंच गया था। डॉ० आशावीर, हैड आफ दी डिपार्टमेंट कैमोथैरोपी बाम्बे अस्पताल से मिल कर आगे की दृष्टि से कैमोथैरोपी की साइकिल बनवा कर, एवं उनका मार्गदर्शन लेकर हम पुनः आमदार निवास लौट गये। दिनांक ३१.१.८५ को डॉ० एस. एन. भगवती हैड ऑफ दी डिपार्टमेंट न्यूरोसर्ज

के साथ मीटिंग हुई। जिसमें सभी प्रकार से जांच करवा कर डॉ० कुलकर्णी एवं डॉ० आशाबीर का रिपोर्ट देखकर, आगे की दृष्टि से एक रिपोर्ट समरी बनाकर कुछ हिदायतें एवं आगामी कार्यक्रम सम्बन्धी रूपरेखा बनाकर हमें दी गई। इतने थोड़े समय में स्वास्थ्य सुधार होकर प्रसन्न और आनन्दित होकर बड़े भाई जा रहे हैं। डॉ० भगवती को इस बात का बहुत ही आनन्द था। पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार दिनांक १.२.८५ को बम्बई से पुणे एम्बुलेंस द्वारा लाना तय था जिसमें मा. दत्तोपंत जी, आबा जी अभ्यंकर आदि के जाने का निश्चित था। मा. ठेंगड़ी जी एवं बड़े भाई जी के साथ ग्रुप फोटो भी लिया। उस समय भी अत्यन्त प्रसन्नता का वातावरण देखकर सभी कार्यकर्ता आनन्दित थे। जब हम भोजन करके बम्बई से पुणे के लिए प्रस्थान कर रहे थे तो बम्बई के कई कार्यकर्ताओं के मन की व्यथा एवं आनन्द से मिला जुला विदाई समारोह देखते ही बनता था। हम शाम को ६ बजे मुले रुग्णालय, जंगली महाराज पुणे, पहुंचे। बड़े भाई को स्वस्थ देखकर अस्पताल एवं पुणें के कार्यकर्ताओं ने बहुत ही आनन्द मनाया। दिनांक २.२.८५ को डॉ० आशाबीर के निर्देशानुसार कैमोथैरोपी का प्रथम इंजेक्शन १२ बजे मा. दत्तोपंत जी की उपस्थिति में दिया गया। कारण इन इंजेक्शनों का कई बार परिणाम विपरीत होता है इसलिए इसकी चिन्ता मन में थी। दिनांक ३.२.८५ को प्रथम कैप्सूल एवं १३.२.८५ को कैमोथैरोपी का कोर्स समाप्त हुआ। कोई भी किसी प्रकार का कष्ट या रिएक्शन नहीं हुआ। स्वास्थ्य में बराबर सुधार होता रहा स्वास्थ्य की दृष्टि से उन्हें बाहर व्यायाम कराने एवं घूमाने ले जाते थे। यह सब देखकर कार्यकर्ताओं के मन में उत्सुकता बढ़ती गई और व्यक्तिगत रूप से मिलने की इच्छा की जाने लगीं। बाहर से भी फोन और पत्र द्वारा पूछताछ बढ़ने लगी। यह सब कुछ दृष्टिगत रखते हुए महाशिवरात्रि के दिन दिनांक १७.२.८५ को कार्यकर्ताओं की जानकारी के लिए विस्तार से एक पत्रक मुले रुग्णालय से भेजा। दिनांक २२.२.८५ को मा. दत्तोपंत जी ठेंगड़ी एवं मनहर भाई जी मेहता की उपस्थिति में बैठक हुई जिसमें यह निश्चित किया गया कि बड़े भाई को गांव बगही परिवार से मिलने की दृष्टि से पहुंचाया जाये। दिनांक २३.२.८५ को पूना से दिल्ली झेलम एक्सप्रेस से शाम ६.३० बजे मा. ठेंगड़ी जी एवं कई कार्यकर्ताओं ने बड़े भाई को भावभीनी विदाई दी।

प्रवास पर निकलने के पूर्व २२.२.८५ की मिटिंग में डॉ० बी. जी. मुजे की सलाह से दत्तोपंत जी एवं मनहर भाई के साथ यह निश्चित हुआ था कि घर पहुंचाने तक उनका कहीं भी किसी प्रकार का स्वागत एवं उन्हें किसी दुखद घटना का समाचार नहीं देना है। अतएव किसी को भी बड़े भाई के प्रवास की सूचना न दी जाये। तो भी दिनांक २४.२.८५ ग्वालियर स्टेशन पर कुछ पी. एण्ड टी. के कार्यकर्ता एवं श्री रवीन्द्र जंग जी उनको मिलने आये। साथ में खाने की चीजें लेकर भी आये, जिसका बड़े भाई को परहेज था। ग्वालियर से मध्यभारत के प्रान्त प्रचारक श्री शरद मेहरोत्रा हमारे साथ हो गए। शाम को ७.३० बजे नई दिल्ली स्टेशन पर भारतीय मजदूर संघ, दिल्ली प्रदेश के प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय से कार लेकर श्री भोलानाथ जी और अन्य कार्यकर्ता भी आए हुए थे। स्टेशन से हम सीधे झंडेवाला संघ कार्यालय पहुंचे जहां कई अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने बड़े भाई को स्वस्थ देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। रात्रि में नियमित रूप से दवा-पानी लेकर

विश्राम किया। दिनांक २०.२.८५ की प्रातः बड़े भाई नेक्कर पहन कर शाखा गये। अपने कमरे पर अल्पहार लेकर कार्यकर्ताओं से मिलते रहे। उनकी व्यस्तता देखकर तथा उनके स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए यह विचार किया गया कि दिनांक २८.२.८५ की बजाय दिनांक २६.२.८५ को ही बगही गांव जाना चाहिए। कारण उन्हीं दिनों उत्तर प्रदेश विधान सभा के उप-चुनाव होने थे। उस भीड़-भाड़ में ले जाना असुविधाजनक था। साथ ही यह भी चिन्ता थी कि दिल्ली से लेकर बगही वाया काशी तक के स्टेशनों पर कोई ऐसी घटना न घट जाये जिससे उनको तकलीफ हो। कार्यकर्ताओं को मिलने की इच्छा होना और बड़े भाई का स्वागत करना स्वाभाविक था। परन्तु डॉ० के निर्देशानुसार पुनः तारीख बदल कर दिनांक २६.२.८५ को नई दिल्ली से काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से वाराणसी प्रस्थान किया। रास्ते में रेल में कई बार भीड़ के कारण परेशानी रही। एक दो जगह लोगों ने घुसकर झगड़ा करने का प्रयास किया। परन्तु कैन्सर पेसेन्ट होने के कारण बाहर डिब्बे पर कैन्सर पेसेन्ट की स्लिप लगायी। कई रेलवे अधिकारियों ने दरवाजा खोलने का असफल प्रयास किया। हरदोई स्टेशन आने पर बड़े भाई ने कहा कि दरवाजा बन्द कर दो। मैंने कहा क्या बात है बड़े भाई। वे बोले यदि दरवाजा बन्द नहीं रहेगा तो पत्थर फेंकेंगे। गरम पानी, या चलते-चलते थूक देंगे आदि। जब ११ बजे रात्रि गाड़ी लखनऊ स्टेशन पहुंची तो स्टेशन पर जिन्दाबाद-जिन्दाबाद की काफी आवाज आ रही थी। बड़े भाई ने कहा, "अरे पांडे, देखो कोई नारे लगा रहा है। मैं एक दम चौका, हक्का-बक्का रह गया। तब तक खिड़की पर कार्यकर्ता माला लेकर पहुंच गए। मैं नीचे उतरता तब तक बहुत सारे कार्यकर्ता खिड़की से माला डालने लगे। जब स्वागत का वातावरण शोर में बदलने लगा तो मैंने कुछ नाराजी से लोगों को वहां से जाने के लिए कहा। संभवतः कुछ कार्यकर्ताओं ने अच्छा महसूस नहीं किया। इसलिए एक दो कार्यकर्ता व्यक्तिगत तौर पर नाराज भी हुए। हम इधर से वाराणसी जा रहे हैं, यह जानकारी उन्हें कहां से मिली, यह एक विचारणीय विषय था। शायद उनको दिल्ली से पता लगा था। दिनांक २७.२.८५ को प्रातः काशी स्टेशन पर श्री आर. एन. सिंह, देवनाथ जी और अन्य कार्यकर्ता माला लेकर स्टेशन पर भाई की अगवानी करने आये हुए थे।

बड़े थोडे समय स्टेशन पर उतारकर स्वागत करके सीधे कार द्वारा उनकी बहन श्रीमती कमला देवी के घर सिगरा पहुंचे। जहां और भी रिश्तेदार उनकी बड़ी बहन मंगली देवी, भान्जा विनय आदि उपस्थित थे। बीमारी के बाद मिलने का उनका प्रथम अवसर था, उन सबके आनन्द और दुःख के आंसू छलक रहे थे। मुझे इस बात का आनन्द था कि बड़े भाई का स्वास्थ्य ठीक करने के बाद उनसे मिल पाया। नाश्ता करके हम लोग तिवारी जी, डॉ० नोटियाल, डॉ० बनर्जी एवं संघ कार्यालय होते हुए पिसाच मोचन मन्दिर दर्शन करके गंगाजी को पार कर रास्ते में उनके रिश्तेदारों, स्कूल, कालेजों में मिलते हुए दोपहर भोजन के लिए उनकी साली के पुत्र श्री अशोक सिंह के घर शेरपुर पहुंचे। भोजन आदि करके पुरुषोत्तमपुर माधव विद्या मन्दिर, जिसकी इन्होंने स्थापना की थी एवं जिसके व्यवस्थापक भी रहे, के प्रधानाचार्य, शिक्षक, विद्यार्थी और कर्मचारियों से मिलकर उन्हीं के द्वारा स्थापित पुरुषोत्तम चिकित्सालय, जिसको फिलहाल बड़े भाई के छोटे भाई डॉ० तेजबली सिंह जी चला रहे हैं, पहुंचे। वहां कई मित्र परिवार एवं कार्यकर्ताओं से भेंट करते हुए फिर कैलहट होते

हुए २.३० बजे बगही में उनके निवास पर पहुंचे। जहां पूरा परिवार उनसे मिलने को आतुर था। छोटे से बड़े तक की एक ही लालसा थी कि अपने घर के बुजुर्ग एक गंभीर बीमारी से ठीक होकर आये हैं उनका दर्शन करें। माहौल ऐसा था कि बड़े भाई से मिलकर एक लोभनीय आनन्द एवं कृतज्ञता भाव से सभी भरे हुए थे। वे लोग बार-बार मुझे धन्यवाद दे रहे थे किन्तु यह मुझे व्यक्तिगत तौर पर अच्छा नहीं लग रहा था। कारण एक कार्यकर्ता होने के नाते इन बातों का मुझे अभ्यास नहीं था। उन्होंने हमारा हृदय से स्वागत किया। आनन्द की चरम सीमा देखकर मैंने सोचा अब वापस चलना चाहिए। ताकि ये लोग खुलकर मिल सकें। जब जाने की बात कही तो भाभी जी एवं परिवार के लोग यह सुनकर अस्वस्थ हो गए। बोले, हमने परसों सत्यनारायण की कथा रखी है, उसमें आपको रहना है। आपने पत्र में लिखा था कि एक सप्ताह रहूंगा। अब आप एकदम से जा रहे यह अच्छा नहीं है। लेकिन वहां और अधिक रुकना न उचित था, न संभव। इसलिए बड़े भाई से अनुमति लेकर उनके भान्जे के साथ उसी गाड़ी से वापस काशी आ गया। जब चलने लगा तो भाभी जी और परिवार के लोगों के वस्त्र भेंट करके अपना स्नेह प्रगट करते हुए विदा किया। रात्रि बड़े भाई की बहन के घर भोजन करके सोने के लिए भारतीय मजदूर संघ कार्यालय गया। वहां देर रात तक आर. एन. सिंह से बात करते रहे। दिनांक २८.२.८५ को पूर्व मन की संकल्पना एवं भावना निश्चितता के अनुसार संघ कार्यालय से गंगा का स्नान करके सीधा भगवान विश्वनाथ के दर्शन बड़े भाई के लिए अभिषेक किया। विश्वनाथ जी के दर्शन करके द्वार से बाहर निकला तो बाहर दरवाजे पर मेरे जीवन में समय-समय पर मार्गदर्शन करने वाले श्री दादा जी जोशी से भेंट हुई। उन्हें देखकर मुझे अतीव आनन्द हुआ।

बगही से निकलने से पूर्व बड़े भाई को २४ अप्रैल से लेकर १७ मार्च १६८५ तक का कार्यक्रम निश्चित कर दिया था। जिसमें यह व्यवस्था थी कि बड़े भाई अपने परिवार, मित्रों और रिश्तेदारों आदि के साथ-साथ संगठन के कार्यकर्ताओं से भी भेंट कर सके और अपने भतीजे या अन्य किसी कार्यकर्ता को अपने साथ रखे। दवाई आदि की ठीक देखरेख हो सके, इस दृष्टि से डॉ० तेजवली सिंह एवं डॉ० नौटियाल को पूरी बात बताकर आया था। दिनांक २७.२.८५ को काशी से लौटते समय भारतीय मजदूर संघ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अधिकारियों को भी सब बात बता कर आया था। बड़े भाई का स्वास्थ्य सम्बन्धी समाचार आवश्यकता पड़ने पर नागपुर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय के पते पर बताने का कह आया था। क्योंकि मुझे दिल्ली आकर नागपुर अपनी माता जी को मिलने जाना था। दिनांक २८.२.८५ से दिनांक ५.३.८५ तक दिल्ली में अपना अधूरा काम पूरा करके दिनांक ५.३.८५ को जी. टी. एक्सप्रेस द्वारा नई दिल्ली से नागपुर के लिए प्रस्थान किया। दिनांक ६.३.८५ को हेगडेवार भवन में सभी संघ अधिकारियों को वृत्त देकर अपनी माता जी से मिलकर सांसद श्री रेड्डी जी को मिलने के लिए नागपुर से हैदराबाद और दिनांक ११.३.८५ को नागपुर लौट आया। दिनांक १३.३.८५ को ए. पी. एक्सप्रेस से नई दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। दिनांक १४.३.८५ को जब नई दिल्ली पहुंचा तो वहां बड़े भाई के सम्बन्ध में कोई भी जानकारी नहीं थी। मन बहुत ही अस्वस्थ हुआ। क्या किया जाये। सोचा पुनः उनके घर जाया जाये। तभी गाजियाबाद से श्री रामदौर का फोन आया। पता

लगा कि बड़े भाई ने भारतीय मजदूर संघ, उत्तर प्रदेश कार्य समिति में भाग लेना है। मैंने श्री रामदौर को मना किया कि ऐसा करना उचित नहीं होगा। उसी दिन बड़े भाई के चचेरे भाई मजदूर संघ कार्यालय में उनकी पूछताछ करने आये। उनसे जानकारी प्राप्त करनी चाही किन्तु उन्हें भी अधिक जानकारी नहीं थी। धीरे-धीरे मेरे मन की अस्वस्थता बढ़ती गई पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार दिनांक १७.३.८५ को बड़ भाई ने अपने भतीजे श्री राजेन्द्र सिंह के साथ बगही से काशी एवं नई दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। दिनांक १८.३.८५ को हम उन्हें नई दिल्ली स्टेशन लेने गये। प्लेट फार्म पर गाड़ी खड़ी थी किन्तु बड़े भाई को हम खोज नहीं पाए।

भारतीय मजदूर संघ के केन्द्रीय कार्यालय, पहाड़गंज पहुंचा तो बड़े भाई को वहां बैठा पाया। यह देखकर हमें बहुत बड़ा धक्का लगा। उनसे पूछा कि आप किधर से निकल आये। हम आपको खोजते रहे। देखते ही लगा कि स्वास्थ्य में काफी गिरावट आ गई है। उन्हें चाय आदि पिलाकर पुनः संघ कार्यालय झंडेवाला ले आया। उनके रहने की व्यवस्था की गई। जैसे-जैसे समय बीतता गया, उनका स्वास्थ्य गिरता गया। उदाहरण के लिए कमजोरी, हिचकी, 'बेवरींग माईण्ड,' शरीर दबाने का आग्रह आदि बातों से लगता था कि अब स्थिति चिन्ताजनक है। फिर भी पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार दिनांक २३.३.८५ को उन्हें पुणे ले गया था। इस बार उन्हें अकेले ले जाने की मेरी हिम्मत नहीं थी। कारण, रास्ते में कुछ भी होने की संभावना थी। बड़े भाई के स्वास्थ्य की स्थिति देखकर उनके भतीजे राजेन्द्र सिंह को भी साथ लेना पड़ा। दिनांक २३.३.८५ को हमने झेलम एक्सप्रेस से पुणे के लिए प्रस्थान किया। रात्रि के २ बजे बड़े भाई उठकर बोगी में चल दिए। मेरी आंखें अभी थोड़ी सी ही लगी थी। इतने में टी. सी. ने पूछा, वे आपके व्यक्ति हैं, जो वहां निकल गये हैं। एकदम से नींद खुली, दौड़कर गया और बड़े भाई को हाथ पकड़कर ले आया। उसके पश्चात् मैं और राजेन्द्र सिंह दोनों मिलकर पुणे तक सावधानी से उन्हें संभालते रहे। पूर्व कार्यक्रमानुसार पुणे स्टेशन पर बड़े भाई को लेने आने की सूचना थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के श्री आबा जी अभ्यंकर, भारतीय मजदूर संघ के श्री उदय पटवर्धन एवं अन्य कार्यकर्ता स्टेशन पर लेने आये थे। गाड़ी से उतरते ही व्हील चेयर से उन्हें कार तक ले जाया गया वहां से सीधे कौशिक आश्रम गये। रात्रि को डॉ० मुले एवं सम्बंधित अधिकारियों को सूचित किया स्थिति निरंतर बिगड़ती जा रही थी। पेशाब पर काबू नहीं था। वेदना बढ़ रही थी। बोलना बन्द होता जा रहा था। बातचीत करने में कठिनाई हो रही थी। चेहरे पर तनाव था। नींद लगभग बन्द हो गई थी। किसी तरह २६.३.८५ तक का समय कटा। जब मुले रुग्णालय में दाखिल किया तो उनका अचेत अवस्था गंभीर हो चुकी थी। इन्हीं दिनों मा० दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी जी के नतृत्व में भारतीय मजदूर संघ का एक प्रतिनिधि मण्डल चीन जाने की तैयारी में था और इधर बड़े भाई जी की अवस्था बिगड़ती जा रही थी। काम का दबाव बढ़ रहा था। दत्तोपंत जी से बराबर संपर्क साध रखा था कि उनका पुणे में आना जरूरी है। परन्तु चीन जाने की तैयारी की दृष्टि से उनका दिल्ली रुकना भी जरूरी था। एक समय बड़े भाई की स्थिति ऐसी हो गई कि लगा शायद ही कुछ क्षण के मेहमान हैं। अतः दत्तोपंत जी को पुणे बुलाकर डॉ० मुले जी के साथ पूर्ण विस्तार के साथ चर्चा की। आगे की दृष्टि से सलाह

मशविरा करके यह निश्चित किया कि यदि स्थिति बिगड़ती है तो इन्हें कानपुर राबर्ट अस्पताल जे. के. कैंसर यूनिट में व्यवस्था की जाये। इस दृष्टि से कानपुर के डॉ० ब्रजेश कुमार शुक्ल को व्यवस्था करने के लिए कहा जाये। कारण, दो मास पूर्व संघ के उच्च अधिकारियों ने उन्हें बनारस के हिन्दू विश्वविद्यालय के अस्पताल में रखने की चर्चा की थी, तो बड़े भाई ने व्यक्तिगत तौर से नाराजगी के साथ विरोध प्रकट किया था। उस घटना को स्मरण कराते हुए डॉ० मुले तथा मा० ठेंगड़ी जी से सलाह की और कानपुर जाने का निश्चित किया। मा० ठेंगड़ी जी चीन प्रवास पर चले गये। परम पूजनीय सरसंघचालक श्री बालासाहेब जी देवरस एवं डॉ० आबा जी थत्ते, मा० लक्ष्मणराव इनामदार जो कैंसर पेसेन्ट थे, को देखने के लिए पुणे आने वाले थे। परन्तु तिथि निश्चित नहीं थी। नागपुर सम्पर्क करके प्रार्थना की कि यदि वे जल्दी आ सकें तो बड़े भाई जी से भी भेंट हो सकेगी। संयोग और संतोष की बात है वे मुले रुग्णालय में आकर बड़े भाई एवं लक्ष्मणराव जी इनामदार को मिलकर गये। परन्तु बड़े भाई बात करने की स्थिति में नहीं थे। श्रद्धेय बालासाहेब एवं डॉ० आबा जी ने उनसे बात करने का बहुत प्रयास किया, परन्तु बड़े भाई बोल नहीं पाये। चेहरे के तनाव एवं वेदना के कारण वे कुछ कह पाये। और बिना बात पूरी हुए समाप्त हुई। स्वास्थ्य में लगातार गिरावट होती गई। दवाई के डोज डबल किये गए तो थोड़े समय के लिए ऐसा लगा कि संभवतः अब आराम मिलेगा।

उन्हीं दिनों एक सवेरे अचानक भाभी जी का आगमन हुआ। बड़े भाई की स्थिति देखकर वे बहुत ही घबरा गई। बड़े भाई से रोते हुए पूछा, "अब कब दौरा करोगे?" किन्तु उन्हें कोई जवाब नहीं मिला।

बड़े भाई को कानपुर ले जाने की तिथि तय की गई। दो दिन के बाद भाभी जी को पूना से बिदा करके कहा कि आप बगही जाकर १२.४.८५ को कानपुर पहुंच जाइए हम बड़े भाई को लेकर वाया बम्बई कानपुर आ रहे हैं। मेरी बात सुनकर वह दुखी और परेशान हो उठीं–पूछने लगी—क्या बात है, तबियत ज्यादा खराब है क्या? मैंने कहा, नहीं–ऐसी कोई बात नहीं है। अपन अब कानपुर में उनका ईलाज कराएंगे। उनकी इच्छा थी कि पुणे में ही इलाज हो। किन्तु आगे की दृष्टि से सारी व्यवस्था एवं उसका निर्णय करना जरूरी था। हमें जो स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था में थे और डाक्टरों को पता था कि बड़े भाई अब थोड़े दिन के ही मेहमान हैं। इस बीच में बड़े भाई के स्वास्थ्य में कई प्रकार के चढ़ाव उतार आते रहे। दिनांक ११.४.८५ को प्रातः ५ बजे पूरी तैयारी के साथ पुणे से बम्बई एम्बुलेन्स में प्रस्थान किया। बाम्बे वी.टी. पर सैकड़ों कार्यकर्ता अपने प्रिय नेता को मिलने हेतु उपस्थित थे। उनके सहयोगी कार्यकर्ता श्री बाबा परदेशी, किशोर मुतमवार मदद के लिए वहां आए थे। आरक्षण की पूरी व्यवस्था नहीं थी। किन्तु रेलवे के कार्यकर्ताओं की मदद से काम हो गया। एक व्यक्ति का रिजर्वेशन रहते हुए भी यात्रा में मध्य रेलवे के अधिकारियों एवं प्रवासी यात्रियों ने पूरा सहयोग किया। अपनी बर्थ देकर उदारता का परिचय दिया। पूरा प्रवास चिन्तामयी एवं गंभीर जवाबदारी का था। स्वास्थ्य की स्थिति काफी बिगड़ी हुई थी। फिर भी ईश्वर की बड़ी कृपा रही कि हम दिनांक १२.४.८५ को कुशलपूर्वक कानपुर

पहुंच गए। स्टेशन पर सैकड़ों कार्यकर्ता एकत्र थे। हम सीधे संघ कार्यालय गये। जहां आगे की व्यवस्था की दृष्टि से डॉ० ब्रजेश शुक्ल एवं स्थानीय अधिकारियों से सलाह करके जे.के. कैन्सर यूनिट राबर्ट अस्पताल कानपुर नर्सिंग होम में दाखिल करने की तैयारी की गई।

दिनांक १३.४.८५ को अस्पताल में दाखिल कराकर डॉ० गहलोत की देखरेख में डॉ० ब्रजेश से मेडिकल व्यवस्था की एवं आवश्यक सेवाओं के लिए श्री राम प्रकाश, श्री रामदौर, श्री सुखदेव, श्री जगदीश दीक्षित एवं अन्य कार्यकर्ताओं को लगा कर बड़े भाई और भाभी जी से मिलकर उसी रात संघ के अधिकारियों को मिलने के लिए लखनऊ चला गया। दिनांक १५.४.८५ से २६.४.८५ तक दिल्ली से भारतीय मजदूर संघ केन्द्रीय कार्यालय के माध्यम से बराबर सम्पर्क रखा। इस बीच में दो बार मिलकर भी आया। स्वास्थ्य बराबर बिगड़ता जा रहा था। फिर भी आवश्यक सेवाएं जारी रखने को कहा। दिनांक १९.४.८५ को कानपुर पुनः मिलने गया। भाभी जी की इच्छा थी कि मुले से पुणे सम्पर्क करके उन्हें कानपुर बुलाया जाये कि वे एक बार बड़े भाई को देख कर जाये। परन्तु स्वास्थ्य की लगातार गिरावट को ध्यान में रखते हुए स्थानीय डाक्टर की इजाजत के बिना किसी बाहर के डाक्टर को बुलाकर दिखाना या सलाह करना मेडिकल नियम के अनुसार उचित नहीं था। फिर भी भाभी जी से कहा कि प्रयास करेंगे। दिनांक २६.४.८५ को मुझे नागपुर जाना था। २८.४.८५ को नागपुर पहुंचा। पहुंचते ही संघ कार्यालय ३ बजे की चाय पर पूजनीय सरसंघचालक श्री बालासाहेब जी ने बड़े भाई के सम्बंध में पुछताछ की। पुणे में हुई उनकी भेंट के पश्चात् का वृत्त निवेदन किया और बताया कि कानपुर जे.के. कैन्सर यूनिट राबर्ट अस्पताल में व्यवस्था करके आया हुं। ठीक चार या साढ़े चार बजे के लगभग दिल्ली से श्री प्रेमनाथ जी शर्मा का फोन आया कि बड़े भाई की तबियत काफी खराब है। क्या करें? आपको कानपुर बुला रहे हैं। मैंने कहा आप रुको। थोड़ी देर में आपको फोन पर बताता हूं। तुरन्त ही डॉ० बी.जी. मुले को पुणे फोन लगाकर स्थिति से अवगत कराया। डाक्टर साहब ने सलाह दी कि वहां के स्थानीय डाक्टर और कार्यकर्ता को निर्णय करने दें। वे स्थिति को देखकर दवाई दे सकते हैं। उचित यह है कि दवाई बन्द कर दें। ताकि वे बिना कष्ट से अपने शरीर का त्याग कर सकें। उस समय मुझे ६ मास पूर्व अर्थात् २८.११.८४ को रात्रि ८.३० बजे डॉ० बी.जी. मुले जी के साथ जो कैन्सर संबंधी चर्चा हुई थी उसमें से तीन प्रकार के विचार मेरे मन में आये—एक, सादा ट्यूमर की प्रथम स्थिति में चार पांच साल चल जाता है। वह दूसरी अवस्था में पहुंचा तो दो साल, यदि ट्यूमर ऐसी जगह हो जहां ब्रेन का महत्वपूर्ण कार्य स्थान है और वह दूसरी स्थिति पार कर चुका हो तो ६ महीने तक पैसेन्ट के जीवित रहने की संभावना रहती है। दूसरी स्थिति के बाद की ६ मास वाली संभावना रहती है। दूसरी स्थिति के बाद की ६ मास वाली संभावना ही सही निकली।

मृत्यु से संघर्ष करते हुए बड़े भाई ने दिनांक १.५.८५ की मध्य रात्रि १.४५ बजे अपना नश्वर शरीर त्याग कर महाप्रयाण किया। हम लोगों को बहुत बड़ा आश्चर्य होगा कि एक मई अन्तर्राष्ट्रीय श्रम दिवस माना जाता है। परन्तु भारतीय मजदूर संघ अपने भारतीय जीवन मूल्य के आधार पर अपने पूर्वजों की धरोहर को मान्यता देते हुए विश्वकर्मा जयन्ती

को राष्ट्रीय श्रम दिवस मानता है । कहने का तात्पर्य यह कि बड़े भाई ने एक मई को अपना शरीर न त्याग कर २ मई प्रातः १ बजकर ४५ मिनट पर अपने शरीर का त्याग किया । जीवन के अन्तिम क्षण तक अपने ऊपर उन्होंने अराष्ट्रीय विचारों का प्रभाव नहीं होने दिया । यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

दिनांक २.५.८५ को सवेरे मैं नागपुर संघ कार्यालय में पहुंचा तो पता चला कि बड़े भाई की रात्रि में मृत्यु हो गई । सुनकर दिल को बड़ा धक्का लगा । परन्तु जिस रोग से वे ग्रस्त थे उसकी वेदना ध्यान में आते ही ऐसा लगा कि ईश्वर ने जो कुछ किया अच्छा ही किया । बड़े भाई के स्वास्थ्य का समाचार नागपुर पहुंच चुका था । मैं पूजनीय सरसंघ-चालक जी के पास गया । मिलते ही उन्होंने पूछा—कानपुर जा रहे हो । मैंने कहा—हां, जा रहा हूं । पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार मेरा दिल्ली का आरक्षण था । इसलिए कोई परेशानी नहीं हुई । इसी बीच बम्बई में मा. दत्तोपंत जी ठेंगड़ी से सम्पर्क करने का प्रयास किया । ताकि वे ठीक समय पर बड़े भाई की शव यात्रा में शामिल हो सकें । यह भी बताया कि मैं आज जी. टी. एक्सप्रेस से कानपुर वाया झांसी जा रहा हूं । कल प्रातः वहां पहुंच रहा हूं दुर्भाग्य से मेरी गाड़ी लेट होने से मैं बड़े भाई की अन्तिम यात्रा में सहभागी नहीं हो सका । विलम्ब से पहुंचा तो गंगा के किनारे जाकर उनकी चिता का अंतिम दर्शन करके कार्यालय वापस लौटा । इतने में भाभी जी एवं परिवार की तरफ से पूछताछ शुरु हुई । पास वाले कार्यालय में उनसे मिलने गया । वे बहुत रोईं कि आखिरी समय में मैं वहां नहीं था । वे इस कारण बहुत दुखी थे । परन्तु जो होना वह होता ही है । समय किसी के लिए नहीं रुकता ।

शाम को ६ बजे भारतीय मजदूर संघ कार्यालय, नवीन मार्किट के सामने सर्वदलीय शोकसभा हुई । जिसमें मा. दत्तोपंत जी ठेंगड़ी, मनहर भाई मेहता, श्री सूर्यवंश मिश्र, एन. एल. ओ. विजय बहादुर ए. आई. टी. यू. सी. श्री अरविंद, सीटू—रामकृष्ण त्रिपाठी व मकबूल अहमद, एच. एम. एस.—ज्ञान सिंह, यू. टी. यू. सी. (एल. एस.) एवं भारतीय मजदूर संघ के केन्द्रीय एवं प्रदेश पदाधिकारियों व चन्द्र भूषण त्रिपाठी माध्यमिक शिक्षक संघ, मुरारी लाल पुरी व कृष्ण कुमार शुक्ल लोकदल गोपाल शुक्ल तथा रवेतीराम रस्तोगी भाजपा, देवी शंकर केन्द्रीय शिक्षण मंडल, सुदर्शन चक्र, प्रगतिशील लेखक संघ, वासुदेव वासवानी मोहम्मद आरिफ, बेग कानपुर बिजली मजदूर सभा मदन गोपाल गुप्ता भारत विकास परिषद अखिल भारतीय विद्यार्थी काली शंकर अवस्थी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, कन्हैयालाल तिवारी गणेश दीक्षित, हिन्द मजदूर किसान पंचायत आदि नेताओं ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मृत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की । इसी सभा में दिनांक १५.५.८५ को ग्राम बगही (चुनार) में उनके निवास पर तेरहवी की तिथि निश्चित हुई, जहां भारतीय मजदूर संघ के केन्द्रीय एवं प्रादेशिक पदाधिकारियों एवं रिश्तेदारों, मित्रों एवं ग्रामवासियों ने भाग लिया । हवन करके श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद प्रसाद ग्रहण करके सभी अपने-अपने स्थान को वापस लौटे ।

—'रामदास पांडे'

परामर्श से संबंधित व्यक्तियों के नाम

१. मा. श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी नई दिल्ली
२. मा. डॉ० श्री भीमाशंकर जी मुले, "एम. एस." पुणे
३. मा. डॉ० श्री माधवराव जी परलकर, बम्बई
४. मा. श्री मनहर भाई जी मेहता, बम्बई
५. मा. श्री रमन भाई जी शहा, बम्बई
६. मा. श्री राजकृष्ण जी भगत, नई दिल्ली
७. श्री रामदास पांडे नई दिल्ली

डाक्टर एवं संबंधित व्यक्तियों के नाम

"मुले रुग्णालय जंगली महाराज मार्ग, शिवाजी नगर, पुणे-४११००५

१. डॉ० भीमाशंकर गणेश मुले "एम. एस."
२. डॉ० उपासनी "कार्डल्याजिस्ट"
३. डॉ० दिलिप वाणी "पॅथ्यालाजीस्ट"
४. डॉ० पटेल "आथ्योपेटीक"
५. सिस्टर खुर्शीद सैयद
६. सिस्टर यशोदा बारी बाई
७. सिस्टर रुबेका
८. आया श्रीमती गंगु बाई
९. आया श्रीमती लक्ष्मी बाई

पूना मैडिकल सेंटर (डिपार्टमेंट आफ डायग्नोस्टिक इमेजिंग)
रूबी हाल क्लिनिक, कम्पाउंड ४० ससुन रोड, पुणे-४११००१

१. डॉ० ए. वी. केलकर "रेडियालाजिस्ट"
२. डॉ० एस. एम. कर्नावत "रेडियालाजिस्ट"

मैडिकल रिसर्च सेंटर, आफ बाम्बे हास्पिटल ट्रस्ट,
१२, मारिन लाईन्स, बम्बई-४०००२०

१. डॉ० एस. बी. गोंधलेकर जी "एम. एस." मैडिकल डायरेक्टर, बाम्बे हास्पिटल ट्रस्ट,
२. डॉ० पारसे मैडिकल सुपरिटेन्डेन्ट बाम्बे हास्पिटल ट्रस्ट,
३. डॉ० शेवडे मैडिकल सुपरिटेन्डेन्ट बाम्बे हास्पिटल ट्रस्ट,
४. श्री. ज. जोशी महाप्रबंधक, बाम्बे हास्पिटल ट्रस्ट,
५. श्री शर्मा जी सहायक महाप्रबन्धक बाम्बे हास्पिटल ट्रस्ट,
६. श्री जयनारायण राठी "इक्युप्टमेन्ट सलाहकार"
७. डॉ० एस. सन. भगवती "हैड —निरोसर्जन"
८. डॉ० जार्ज "सहायक"
९. डॉ० साकला "सहायक"
१०. डॉ० डी. के. दस्तुर, डायरेक्टर ऑफ डिपार्टमेंट ऑफ निरोपैथोलाजि (रिपोर्ट)
११. डॉ० अरविन्द जी कुलकर्णी "हैड ऑफ रेडियोथेरेपी" डिपार्टमेंट
१२. डॉ० आशा वीर "हैड ऑफ डिपार्टमेंट केमोथेरेपी"
१३. डॉ० अजीत फडके "हैड ऑफ युरालजिस्ट"
१४. सिस्टर मेरी "हैड सिस्टर"
१५. सिस्टर श्रीमती पै०
१६. सिस्टर श्रीमती भगत
१७. सिस्टर श्रीमती वर्गीज्
१८. श्री बदर्स इंगले
१९. नियमित स्टाफ : सफाई कर्मचारी, वार्ड बाय, लिफ्टमैन अन्य टेक्नीशन्, चौकीदार, केमिस्ट शॉप, जूस बार, नाई (बारबर)

राबर्ट हास्पिटल, कैन्सर यूनिट, कानपुर, उत्तर प्रदेश

१. डॉ० गेहलोत जी, हैड ऑफ डिपार्टमेंट अन्य डाक्टर सहयोगी
२. डॉ० ब्रजेश कुमार जी शुक्ला, "सहायक"

नाना पालकर स्मृति समिति, बम्बई (रूग्ण सेवा)

१. डॉ० माधवराव परलकर "संघठन मंत्री"
२. श्रीमती लिमये बाई, पूरा समय, कार्यकर्ता
३. श्री नारायणराव भिडे, पूरा समय कार्यकर्ता,
४. डॉ० अन्वय वि० मुले, "रजिस्ट्रार सेंट जार्ज हास्पिटल बाम्बे वी. टी.

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, बम्बई नवयुग कार्यालय, मिनर्वा गिरगांव, बम्बई

१. श्री मुकुदराव जी पर्णाशंकर प्रचारक महानगर, बम्बई
२. श्री बालासाहेब कुलकर्णी "कार्यलिय प्रमुख", बम्बई
३. श्री दत्तोपंत बभे "दूरभाष आदि हेतु"
४. श्री बालासाहेब देसाई, "सम्पर्क अधिकारी"
५. श्री महिपत एवं उनके सहयोगी, "भोजनालय"

भारतीय जनता पार्टी बम्बई शाखा

१. श्री रामभाऊ नाईक "सदस्य विधान सभा" (आवास व्यवस्था)
२. श्रीमती जयवंती बेन मेहता "सदस्य विधान सभा" (आवास व्यवस्था)
३. श्रीमती हरिता बहन अग्रवाल एवं परिवार (व्यक्तिगत भोजन व्यवस्था)

भारतीय मजदूर संघ बम्बई शाखा

१. मा० श्री मनहर भाई मेहता "अध्यक्ष"
२. मा० श्री श्रीकान्त जी धारप "अधिवक्ता"
३. मा० श्री ताम्हणकर जी "कार्यालय प्रमुख"
४. मा० श्री मनोहर जी मोघे एवं परिवार "भोजन/कपडे धुलाई आदि"
५. मा० श्री रमन भाई जी शहा "मंत्री" व्यक्तिगत परिवार
६. मा० श्री हरीभाऊ जी गांधी "गीरगांव बम्बई"
७. मा० श्री काशीकर जी
८. मा० श्री एस. कुलकर्णी जी
९. मा० श्री मुकुन्दराव जी फडके, एवं परिवार, भोजन आदि
१०. मा० श्री शशीकान्त जी देवधर एवं परिवार, भोजन आदि
११. श्री दादू जी
१२. श्री कृष्णा जी देसाई
१३. श्री मुलगुंद दादर कार्यालय
१४. श्री जोगेन्द्र सिंह जी
१५. श्री शंकरलाल जी वधवा
१६. मा० श्री अण्णा साहेब बिवलकर जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ महाराष्ट्र प्रदेश, ३०६ शनिवार पेठ, पुणे ४११०३०

१. मा० श्री तात्या राव जी इनामदार, "व्यवस्था प्रमुख"
२. मा० श्री आबा जी (लक्ष्मणराव जी काशीनाथ अभ्यंकर)
३. मा० श्री फडके जी महानगर प्रचारक, पुणे

भारतीय मजदूर संघ, पुणे विभाग १८५, शनिवार पेठ, पुणे ४११०३०

१. मा० श्री मोहनराव जी गवंडी, "अध्यक्ष"
२. मा० श्री आप्पा जी गोखले "अधिवक्ता"
३. मा० श्री अच्युतराव जी देशपांडे
४. मा० श्री मुकुन्दराव जी गोरे "मंत्री"
५. मा० श्री एस. एन. देशपांडे "मंत्री"
६. मा० श्री कमलाकर जी फडके "मंत्री"
७. मा० श्री उदयराव जी पटवर्धन पुणे विभाग
८. मा० श्री श्रीपादराव जी देशपांडे "एन. ओ. बी. डबल्यू" पुणे
९. मा० श्री बाबा जी परदेशी "बिजली विभाग" पूरा समय कार्यकर्ता
१०. मा० श्री बाला साहेब थोरात "जी. एन. ओ. आई. डबल्यू" पुणे
११. मा० श्री किशोर मुतमवार जी "सेंच्चुरी मिल्स में नौकरी"

व्यक्तिगत रूप से जिन्होंने इस कार्य में मदद की हैं

१. गं. श्रीमती द्वारका बाई गणेश जी मुले, डाक्टर मुले जी की माता जी, पुणे
२. श्रीमती सुवर्णावयनी जी मुले, पुणे
३. श्रीमती सुशीला बाई, विनायकराव जी साठे
४. श्री विनायकराव जी साठे
५. डॉ० रजनीताई जी साठे
६. श्रीमती सुशीला बाई आठवले
७. मा. श्री आप्पा साहेब (पांडुरंग जी) आठवले
८. श्री सावता ताई आठवले के यही से भोजन लेकर आता था
९. श्रीमती शान्ता जी गवंडी, (भाभी जी) एवं गवंडी परिवार
१०. श्री प्रफुल्ल जी गंवडी
११. गं. श्रीमती ताई आपटे "प्रमुख राष्ट्र सेविका समिति"

भारतीय मजदूर संघ, कानपुर, व्यवस्था

१. मा. श्री रामप्रकाश मिश्र "मंत्री"

२. मा. श्री रामदौर
३. मा. श्री सुखदेव प्रसाद मिश्र
४. मा. जी जगदीश प्रसाद दीक्षित
५. मा. श्री मदनदास शर्मा

बगही (चुनार) एवं परिवार रिश्तेदार

१. श्रीमती फुलवती बाई (भाभी जी)
२. श्री राजेन्द्र सिंह (भतीजा)
३. श्री अशोक सिंह (साली का लड़का)
४. भाई, बहनें भतीजे, भान्जे, बहुएं, नाती-पोते, गांव का मित्र परिवार एवम् रिश्तेदार आदि

आवश्यक सेवाएं हेतु सम्पर्क के पते एवं दूरभाष

बाम्बे हास्पिटल, १२ नरिमन लाईन, बम्बई-४०००२०

दूरभाष नं० २९६५००/२९७१००

कमरा नं० १३१२

१. डॉ० बी. जी. मुले "एम. एस."
"मुले रुग्णालय"
जंगली महाराज, शिवाजी नगर
पुणे-४११००५
फोन : ५४४९२ निवास
५३३३२ कार्यालय

२. डॉ० माधवराव परलकर
"नाना परलकर स्मृति"
ऐनापुरे बिल्डिंग,
एस. एच. पी. मार्ग
दादर, बम्बई-४०००२८

३. डॉ० अन्वय विनायक मुले
हाऊस सर्जन
सेन्ट जार्ज हास्पिटल, बाम्बे वी. टी.
बम्बई—

४. मा. श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी,
प्रवास में किसी भी स्थान पर भारत वर्ष में

५. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (कार्यालय)
७, वी मंजिल नवयुग सोसायटी,
डॉ० भडकमकर मार्ग (मिनर्वा सिनेमा के सामने) फोन : ३७१५९३
गिरगांव बम्बई-४००००४ ८९२६६०

६. ६, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिला कार्यालय
नाज सिनेमा के कम्पाउंट में
गिरगांव; बम्बई-४००००४

७. भारतीय मजदूर संघ (कार्यालय)
२४२६/२७, तिलक गली चूनामंडी
पहाड़गंज,
नई दिल्ली-११००५५ फोन : ५२३६४४

८. ११५, साउथ एवेन्यू
नई दिल्ली-११००११ फोन : ३७५५४८

९. भारतीय मजदूर संघ (कार्यालय)
२, नवीन मार्किट (परेड)
कानपुर-उत्तर प्रदेश फोन : ५३५५०

१०. भारतीय मजदूर संघ (कार्यालय)
७, एफ, नगर महापालिका क्वाटर्स
पिशाच मोचन,
वाराणसी-उत्तर प्रदेश फोन : ५५६७३

११. श्रीमती फुलबती देवी
ग्राम पो. बगही (चुनार)
जिला मिर्जापुर
उत्तर प्रदेश

१२. भारतीय मजदूर संघ (कार्यालय)
१५, सहकार भवन
डॉ० अम्बेडकर रोड, परेल फोन : ४४५२८३
बम्बई-४०००१२ ४४६५५८

श्रम ही आराधना

भारतीय मजदूर संघ
१८५ शनिवार पेठ,
पुणे-४११ ०३०

रामदास पांडे,
"मुले रूग्णालय"
जंगली महाराज रोड,
पुणे-४११००५
महाराष्ट्र
दिनांक १७.२.८५
महाशिवरात्री

आदरणीय श्री.........

सादर सप्रेम नमस्कार,

आपके यथा सहयोग के लिए धन्यवाद का पत्र योग्य समय पर नहीं भेजा, इसके लिए मुझे क्षमा करें। मा० श्री बड़े भाई जी (श्री रामनरेश सिंह जी) जीवन की बड़ी गंभीर बीमारी से ग्रसित है। "श्री" परमेश्वर की कृपा और मान्यवर डाक्टर एवं अनेक सहयोगी व्यक्तियों के परिश्रमों से आप स्वस्थ हो रहे हैं, यह समाचार देते हुए मन को आनन्द हो रहा है, और आप सभी बन्धुओं को होगा ही।

आदरणीय श्री. दत्तोपन्त जी एवं मा० डॉ० बी. जी. मुले जी के सलाह पर ही मा० बड़े भाई जी को (नई दिल्ली) नवम्बर १९८४ में पुणे लेकर आया था। आज फरवरी १९८५ चल रहा है (अर्थात) चार मास होने जा रहे। पुणे में "मुले रूग्णालय" एवं बम्बई में "बाम्बे हास्पिटल" व्यवस्था रही। और साथ-साथ इलाज होता रहा। इस बीच में उनकी शारीरिक स्थिति एवं मान्यवर डाक्टरों को निर्देश (सूचना) के कारण आप सभी बंधुओं को मा. बड़े भाई जी से सम्पर्क या मिलकर स्वास्थ्य की जानकारी या शुभकामनाएं एवं आदर प्रेम (व्यक्त) प्रगट करने की इच्छा होना यह स्वाभाविक था। परन्तु आपको नहीं मिलने देने का कटु काम केवल कर्त्तव्य के रूप में मुझे दिया था। इस काल में मेरे द्वारा व्यवहार में मिलने नहीं देने की कठोर भूमिका रही होगी या अंजाने में कटु शब्दों का प्रयोग हुआ होगा ऐसा कई बन्धुओं के मन में भाव या विचार आ सकते हैं। इसी के कारण कई बन्धुओं के नाराज होने की संभावना है। यदि मेरे अज्ञानता (अंजानपन) में ऐसा कोई गलत आचरण मेरे व्यवहार में हुआ है यह अनुभव (महसूस) करते हैं तो, मेरा आप बन्धुओं की हृदय से नम्र निवेदन है कि कोई भी बन्धु किसी प्रकार यह भाव (गलत फहमी) व्यक्तिगत स्तर पर न ले। कष्ट के लिए क्षमस्व। पुनःश्च सहयोग के लिए धन्यवाद। शेष शुभ।

आपका ही
हस्ता/-
रामदास पांडे

१८, वृंदावन सोसायटी,
नयी पेठ दत्तवाड़ी पुल के पास
पुणे-४११०३० फोन : ४४२०४८

२१. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (कार्यालय)
डॉ० हेडगेवार भवन,
महाल, नागपुर-४०००० २ फोन : ४३००३

२२. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (कार्यालय)
"केशव कुंज" फोन : ७७०३६५
झन्डेवाला मन्दिर ७७५०१६
देशबंधु गुप्ता रोड ५१९९९६
नई दिल्ली-११००५५

२३. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (कार्यालय)
घटाटे का राम मंदिर
गदोलिया चौक,
वाराणसी-उत्तर प्रदेश फोन : ६५९४१

मूल अंग्रेजी

भारतीय मजदूर संघ

१५ सहकार भवन
डॉ० अम्बेडकर रोड
परेल बम्बई-४०००१२
दिनांक २१.१२.८४

प्रिय बन्धुवर...............

बड़े भाई के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जानकारी के लिये अनेक पत्र प्राप्त हो रहे हैं जो कि स्वाभाविक है।

मैं बताना चाहता हूं कि उनकी सम्पूर्ण जांच पूरी हो चुकी है। वे दाहिने और सेरिब्राल ग्लायोमा से पीड़ित हैं, डाक्टरों ने उनके आगे के उपचार की योजना बनायी है। वे अब काफी ठीक हैं।

आपका भाई
हस्ता/-
(रमन गिरधर शहा)

स्व0 श्री रामनरेश सिंह जी उर्फ बड़े भाई जी का जीवन क्रम

तिथि वर्ष	जीवन क्रम
१९२५	सन् १९२५ को दीपावली के शुभदिन पर समान्य कृषक परिवार में ग्राम बगही "चुनार' में जन्म हुग्रा जो जरगो नदी के किनारे, गंगा जी के दोग्राब में बसा हुग्रा है। जिला मिर्जापुर है।
१९२८	१९२८ में ग्रार्यसमाज के शुद्धि ग्रान्दोलन के ग्रंतर्गत मुसलमान परिवारों को हिन्दू समाज में पुनः वापस लेकर सबके साथ सहभोज किया। इसलिए इनके परिवार को गांव की पंचायत तथा बिरादरी ने बाहर निकाल दिया।
१९३६	छठी कक्षा में मौलाना बख्स (उर्दू ग्रध्यापक) ने बुलाकर कहा कि यह बालक किसी दिन बड़ा ग्रादमी बनेगा। जब बड़े भाई १९६८ में विधान परिषद के सदस्य बने, यह समाचार उन्हें मिला तो उसकी ग्राँखों में प्रसन्नता के ग्रांसू ग्रा गये।
१९४०	हाई स्कूल चुनार जिला मिर्जापुर से किया।
१९४२	हाई स्कूल की परीक्षा पश्चात् चुनार कचहरी में ग्रावेदन पत्र लिखने का काम शुरू किया। नकल-नवीस के पद पर नियुक्ति हुए।

प्रेस नोट

दिनांक १०.४.८४

रामदास पांडे
मुले रुग्णालय
जंगली महाराज रोड
पुणे-५

भारतीय मजदूर संघ के महामंत्री श्री रामनरेश सिंह जी (बड़े भाई) जी गत ६ मास से बीमार हैं। उनका इलाज बम्बई पुणे होता रहा था। इस बीच में स्वास्थ्य में काफी सुधार हुआ उस समय दिल्ली; बनारस एवं अपने ग्राम बगही में परिवार, रिश्तेदारों में रहकर एवं परिवार से मिलकर पुनः २४ मार्च १९८५ को कैमोथेरेपी के लिए पुणे लाया गया है। स्वास्थ्य में काफी उतार-चढ़ाव होने के कारण आगे इलाज की व्यवस्था जे. के. कैन्सर यूनिट राबर्ट हास्पिटल कानपुर करने का निर्णय किया है। इस बीच में प. पू. सरसंघचालक श्री बाला साहेब देवरस, डॉ० आबा जी थत्ते, मा. श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी, एवं महाराष्ट्र के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व भारतीय मजदूर संघ एवं अन्य परिचित मान्यवर व्यक्ति मा. बड़े भाई जी को मिलकर स्वास्थ्य की पूछताछ करके गये हैं। आज पूर्व निर्णय के अनुसार दिनांक ११.४.८५ को प्रातः ५ बजे पुणे से बम्बई कार द्वारा एवं बम्बई से कानपुर गोरखपुर एक्स. द्वारा प्रस्थान कर रहे हैं।

तिथि वर्ष	जीवन क्रम
	कार्य समिति की बैठक में विशेष ग्रामंत्रित सदस्य—कानपुर
	प्रथम कार्यालय
	भारतीय मजदूर संघ कार्यालय १४/१२ बंबा रोड दर्शनपुरवा, कानपुर।
	१६ दिसम्बर १९६० में महामंत्री—भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश ।
	२४ यूनियनें, ४७३० सदस्य संख्या । एक पूरा समय कार्यकर्ता ।
	बड़े भाई जी १९ दिसम्बर १९६० भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश को राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त करने में सफल हुए ।
मई १९६२	प्रथम पुस्तक "यूनियन पथ प्रदर्शक" कानपुर ।
	३० अगस्त १९६२ दुकान व वाणिज्य प्रतिष्ठान अधिनियम में संशोधन करने हेतु भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश द्वारा आन्दोलन एवं प्रदर्शन किया । संशोधन कराने में सफलता प्राप्त की ।
	९ दिसम्बर १९६२ राष्ट्रीय मोर्चे का निर्माण "राष्ट्रीय जागरण के लिये पंचमांगियों के विरोध में ।
१९६३	भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश ११८ यूनियन १८,००० सदस्य संख्या ।
अक्तूबर १९६३	भारतीय मजदूर संघ, राष्ट्रवादी श्रम संगठन के संबंध में प्रस्ताव पास "बरेली" ।
१९६४	भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश, १२८ यूनियन २०,००० सदस्य संख्या ।
१९६६	भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश । १३५ यूनियन ३०,००० हजार सदस्य संख्या ।

तिथि वर्ष	जीवन क्रम
	महात्मा गांधी के भारत छोड़ो ग्रान्दोलन में व्यक्तिगत सत्याग्रह किया। इसी समय श्री राम लल्ली देवी (बुग्रा) ग्रध्यापिका का जेल में देहान्त हो गया।
जुलाई १९४४	जुलाई १९४४ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में जाना शुरू किया, चुनार रामनरेश सिंह से "बड़े भाईया" जिन्हें ग्राज बड़े भाई जी के नाम से ही पहचान है।
१९४६	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चुनार तहसील-प्रचारक के रूप में काम शुरू किया।
१९४७	राम का ग्रनुज लक्ष्मण (बडे भाई पिताजी से बातचीत करते समय)।
१९४८	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रतिबंध काल में विध्यांचल क्षेत्र से ५० कार्यकर्ताग्रों के साथ सत्याग्रह किया ग्रौर नैनी जेल में रखा गया।
१९४९	मिर्जापुर जिला-प्रचारक का पद संभाला।
१९५०	पुरुषोत्तम चिकित्सालय की स्थापना की, पुरुषोत्तम "चुनार" में।
१९५२	माधव विद्या मंदिर हाईस्कूल की स्थापना की, एवं व्यवस्थापक बने, पुरुषोत्तमपुर "चुनार" जिला मिर्जापुर। विध्यांचल क्षेत्र से भारतीय जनसंघ के विधान सभा के लिये प्रत्याशी, जिला मिर्जापुर।
१९५३	पंडा समाज की स्थापना की "विध्यांचल में"।
१९५३ से १९५४	फौजदारी केस—कोर्ट कचहरी करते रहे।
१९५६	स्वास्थ्य खराब/टी. बी. की बीमारी का इलाज करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ वस्तु भण्डार एवं कार्यालय प्रमुख रहे, (कानपुर)
१९६०	३ ग्रप्रैल १९६० भारतीय मजदूर संघ की उत्तर प्रदेश की चौदहवीं

तिथि वर्ष	जीवन क्रम
	विधिवत निर्वाचित ।
	१९७० में उत्तर प्रदेश सरकार का मंत्री पद ठुकराया ।
सितम्बर १९७९	भारत में श्रम संघ (ट्रेड यूनियन) आंदोलन पुस्तिका कानपुर ।
८ फरवरी १९८०	बोनस औद्योगिक संबंध तथा वर्तमान मजदूर समस्याओं पर श्रम मंत्री से वार्ता ।
३० जून १९८०	केंद्रीय श्रम संगठनों के श्रमिक प्रतिनिधियों के बीच केन्द्रीय श्रम मंत्री टी. अंजैया के आह्वान पर बड़े भाई ने भाग लिया ।
	२५ सितम्बर केन्द्रीय योजना मंत्री द्वारा बुलायी गयी बैठक में छठी योजना पर सलाह मशविरा ।
१९८१	श्रम विवादों को निपटाने हेतु अपीलेट, ट्रिब्युनल स्थापित करने हेतु उत्तर प्रदेश विधान सभा में गैर सरकारी बिल पास करवाया ।
	६वें अखिल भारतीय अधिवेशन कलकत्ता में पुनः महामंत्री पद पर निर्वाचित ।
१९८२	नागरिक अभिनंदन एवं थैली भेंट उत्तरी कर्णपुरा डकरा जिला ।
१९८३	१९८१ के आखिरी तक १०३ स्थानों पर नागरिक अभिनंदन एवं धन राशि भेंट ।
	राष्ट्रीय अभियान समिति के देशभर के हजारों मजदूरों की तालकटोरा इंडोर स्टेडियम नई दिल्ली में मीटिंग ।
जनवरी १९८४	७वें अखिल भारतीय अधिवेशन हैदराबाद में महामंत्री पद पर पुनः निर्वाचित ।
	१९८२-यूनियन २००७ सदस्य संख्या २०,५०,७२१
सितम्बर १९८४	केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों की सांकेतिक हड़ताल को सफल करने

तिथि वर्ष	जीवन क्रम
१९६७	अखिल भारतीय मंत्री भारतीय मजदूर संघ, दिल्ली
१९६८	भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश, १६६ यूनियन ३७,००० सदस्य संख्या।
	सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल सफल बनाने में योगदान। सदस्य विधान परिषद् उत्तर प्रदेश "१९६८ से १९७४"।
१९६९	भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश १७४ यूनियन ४२,००० सदस्य संख्या।
	भारतीय मजदूर संघ की ओर से राष्ट्रीय मांग पत्र महामहिम राष्ट्रपति वी.वी. गिरी को दिया।
मई १९७४	ऐतिहासिक रेलवे हड़ताल को सफल बनाने में योगदान।
१९७५	भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश २७७ यूनियन सदस्य संख्या १,२६,०००।
	९ जुलाई डी.आई.आर. कानून में गिरफ्तार। लखनऊ जेल में बंदी पुलिस कर्मी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वृद्ध वकील गंगाराम जी तलवार को धक्का देकर गाली दी, जिस पर बड़े भाई जी ने उस कर्मी को वहीं तमाचा दे मारा।
फरवरी १९७६	महामंत्री भारतीय मजदूर संघ पद। मा. दत्तोपंत जी द्वारा नियुक्ति। सदस्य विधान परिषद् उत्तर प्रदेश "१९७६ से १९८२"।
२५ दिसम्बर, १९७६	प्रथम कार्यसमिति बैठक, बम्बई में मा. दत्तोपंत जी के भाषण की टेप सुनायी।
दिसम्बर १९७७	भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधि के रूप में त्रिदलीय श्रम सम्मेलन, में भाग लिया "दिल्ली"।
१९७८	५ वें अखिल भारतीय अधिवेशन जयपुर में महामंत्री पद पर

तिथियां/वर्ष	जीवन क्रम
	लिए केश रैफर डॉ० ए. बी. केलकर जी डॉ० एम. एस० कर्नावत रेडियोलाजिस्ट पूना मैडिकल सेंटर, रुबी हॉल पूना।
२६.११.८४	उपचार
२७.११.८४	ब्रेन स्कॅन डॉ० ए. बी. केलकर जी, एम. एस. कर्नावत "रेडियोलाजिस्ट" की देख-रेख में व्यक्तिगत सूचना डॉ० मुले जी
२८.११.८४	डॉ० बी. जी. मुले, एम. एस. द्वारा रात्रि ८.३० बजे ट्यूमर की सूचना ।
२९.११.८४	प. पू. सरसंघचालक श्री बालासाहेब डॉ० आवाजी थत्ते के द्वारा नागपुर सूचना। सरकार्यवाह मा. रज्जू भैया, शिमला मा. श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी "त्रिवेन्द्रम" केरल श्री रमन भाई शहा, बम्बई श्री राजकृष्ण भगत भा. म. संघ, नई दिल्ली श्रीमती फुलवती बाई (भाभी जी) को बगही सूचना। डॉ० माधवराव परलकर जी हास्पिटल सम्बन्धी बम्बई
३०.११.८४	फोन पर बराबर सम्पर्क । बम्बई में बड़े भाई जी के परिवार की व्यवस्था ।
दिसम्बर १९८४	
१.१२.८४	फोन द्वारा मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी से त्रिवेन्द्रम (केरल) में सम्पर्क ।
२.१२.८४	डॉ० माधवराव परलकर जी की सूचना बम्बई अस्पताल में व्यवस्था।
३.१२.८४	मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी त्रिवेन्द्रम से बम्बई, बम्बई से पुणे विमान द्वारा आगमन। डॉ० बी. जी. मुले के साथ सलाह ।
४.१२.८४	पुणे से बम्बई एम्बुलेंस द्वारा ८.३० बजे प्रस्थान मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी, मा. रमन भाई शहा, मा. आप्पा साहेब गोखले ।

तिथि वर्ष	जीवन क्रम
	की तैयारी।
१९८४	७ अक्तूबर अंतिम लेख-पांचजन्य साप्ताहिक में शीर्षक "सरकार हारी मजदूर जीता"
१९८४	२ नवम्बर मजदूरों की मिलिटरी "बनाम" मर्द यूनियन "अंतिम भाषण" अभ्यास वर्ग-इंदौर में।

मा. श्री रामनरेश सिंह उर्फ बड़े भाई जी

तिथियां/वर्ष	जीवन की अन्तिम समय की कुछ घटनाऐं
१.११.८४	अभ्यास वर्ग इंदौर बैठक में चेहरे पर मानसिक तनाव।
७.११.८४	जैन मैडिकल सेंटर नई दिल्ली स्कूटर से पैर नहीं उठा।
८.११.८४	श्री राजकृष्ण भगत के साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चा।
९.११.८४	बैद्य श्री रामनाथ पुरी, दिल्ली आयुर्वेदिक उपचार।
१८.११.८४	श्री देवी चरण जी चौपड़ा दिल्ली द्वारा तेल मालिश।
२०.११.८४	मा. श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी का पुणे से फोन। डॉ० मुले जी के यहां इलाज का निश्चित।
२३.११.८४	पुणे स्टेशन आगमन सायंकाल। मुक्काम, रा. स्व. संघ कार्यालय ३० शनिवार पेठ, पूना। डॉ० बी. जी. मुले, द्वारा प्राथमिक जांच आरम्भ।
२४.११.८४	डॉ० बी. जी. मुले, डॉ० दिलिप वाणी, डॉ० उपासनी द्वारा जांच एवं ब्रेन स्कॅन करना चाहिये सूचना।
२५.११.८४	'मुले रुग्णालय' जंगली महाराज, शिवाजी नगर, पुणे दाखिल एवं प्येरेल्याटिक रोग की शंका एवं इस दृष्टि से इलाज, ब्रेन स्कॅन के

तिथियां/वर्ष	जीवन क्रम
जनवरी १९८५	
४.१.८५	पेशाब की थैली निकाली।
६.१.८५	६३ किलो वजन।
११.१.८५	डॉ० कुलकर्णी रेडियथन द्वारा जांच ६५ किलो वजन।
१२.१.८५	बम्बई अस्पताल से डिस्चार्ज सायं ४ बजे आमदार निवास बम्बई में मुक्काम।
१३.१.८५	प्रथम स्नान।
१४.१.८५	दूसरा स्नान।
१५.१.८५	स्पंजींग।
१६.१.८५	स्नान।
१८.१.८५	वजन ६७ किलो।
२५.१.८५	मा० श्री नानाजी देशमुख दीनदयाल शोध संस्थान दिल्ली। श्रीमती जयाबहिन नायक भा. म. संघ महिला विंग बम्बई।
२७.१.८५	मा. श्री रज्जू भैया (राजेन्द्र सिंह जी सरकार्यवाह, रा. स्व. संघ) दिल्ली।
२९.१.८५	डॉ० अरविन्द कुलकर्णी हैड ऑफ डिपार्टमेन्ट रेडियथन बम्बई अस्पताल। डॉ० आशा वीर हैड ऑफ डिपार्टमेंट केमोथेरेपी बम्बई अस्पताल। रेडियथन की ३० सीटिंग पूरी। ६८ किलो वजन।
३०.१.८५	मा० श्री अशोक जी सिंहल, मंत्री विश्व हिन्दू परिषद, केन्द्र दिल्ली।
३१.१.८५	डॉ० एस. एन. भगवती न्यूरोसर्जन के साथ मिटिंग में आगे की सूचना देकर रिपोर्ट पेपर वापस दिये।

तिथियां/वर्ष	जीवन क्रम
	बम्बई अस्पताल कमरा न. १३१२ में ३.४५ बजे दाखिल ।
४.१२.८४	डॉ० एस. एन. भगवती न्यूरोसर्जन सहायक डॉ० जार्ज डॉ० साकल, द्वारा रात्रि ७.३० बजे प्राथमिक जांच ।
५.१२.८४	भाभी जी श्री राजेन्द्र सिंह के साथ बम्बई अस्पताल पहुंची ।
६.१२.८४	सभी प्रकार की जांच, आपरेशन निश्चित ।
७.१२.८४	आपरेशन प्रातः ८.३० बजे । डॉ० ने समय अभाव के कारण रद्द किया । डॉ० भगवती द्वारा क्षमा याचना ७.३० बजे सायं ।
८.१२.८४	आपरेशन पुस्तक पर हस्ताक्षर "रामदास पांडे" आपरेशन ८.३० बजे से १०.३० बजे तक दो घंटे । डॉ० एस. एन. भगवती, डॉ० जार्ज डॉ० साकल, अन्य
९.१२.८४ से २४.१२.८४ तक	रिकवरी रूम में
१६.१२.८४	व्यायाम एवं फिजोयोथेरिपी
२१.१२.८४	प्रथम पत्रक श्री रमन भाई शहा बम्बई द्वारा
२२.१२.८४	रेडियथन शुरू एवं प्रथम सीटिंग । "३० सीटिंग लेना है" डॉ० अरविंद जी कुलकर्णी ।
२४.१२.८४	रिकवरी रूम से कमरा न. १३१२ में शिफ्ट किया ।
२७.१२.८४	कमरा नं. १३१२ से कमरा नं. ८१३ में बदला ।
२८.१२.८४	कमरा नं. ८१३ में मा. बड़े भाई जी,
२९.१२.८४	रेडियोलाजी एवं व्यायाम प्रारंभ

तिथियाँ/वर्ष	जीवन क्रम
२७.२.८५	काशी (बनारस) आगमन प्रातः ६ बजे काशी से बगही कार द्वारा ग्राम जाते समय रास्ते में शेरपुर, पुरुषोत्तमपुर अपने रिश्तेदारों एवं मित्रों परिवारों को मिलते दोपहर २.३० बजे बगही पहुंचे इस आनंद वार्ता वर्णन को देखकर एकदम निर्णय लिया कि अब यहां से वापस निकलना चाहिए और उसी कार से पुनः काशी वापस लौट आये।
२८.२.८५	गंगा स्नान एवं भगवान विश्वनाथ के दर्शन एवं अभिषेक श्री गंगाधर जी दादा जी जोशी की द्वार पर भेंट रामदास द्वारा।
मार्च १९८५	
२८.२.८५ से १७.३.८५	अपने निवास पर ग्राम बगही चुनार से मिर्जापुर उत्तर प्रदेश। बनारस से नई दिल्ली काशी विश्वनाथ एक्स० द्वारा प्रस्थान श्री राजेन्द्र सिंह, (भतीजे) के साथ।
१८.३.८५	नई दिल्ली आगमन स्वास्थ्य में गिरावट पुनः शुरू।
१९.३.८५ से २२.३.८५	तबियत खराब हुई। श्री राजेन्द्र सिंह (भतीजे) ने पुणे साथ जा से इंकार किया।
२३.३.८५	नई दिल्ली से पुणे १७८ अप झेलम एक्स० ए. सी.—२ टायर सिलिपर।
२४.३.८५	पुणे आगमन, मुक्काम। "कौशिक आश्रम मित्रमंडल कालोनी पुणे"
२५.३.८५	मुले रूग्णालय जंगली महाराज रोड पुणे दाखिल। प. पू. सरसंघचालक श्री बालासाहेब देवरस जी, डॉ० आबा जी थत्ते, श्री लक्ष्मण राव, श्री इनामदार "बीमारी" की अवस्था में मिलने आये।
२६.३.८५	मा. दत्तोपंत ठेंगडी पुणे आगमन कानपुर ले जाने का निर्णय।

तिथियां/वर्ष	जीवन क्रम
फरवरी १९८५	
१.२.८५	बम्बई से पुणे एम्बुलैन्स द्वारा मा० दत्तोपन्त ठेंगड़ी, मा० आबा जी, अभ्यंकर पुणे, श्री रमन भाई शहा के घर भोजन कार्यक्रम एवं ग्रुप फोटो सायं ६ बजे ।
	६ बजे सायं मुले रूग्णालय जंगली महाराज पूना ।
२.२.८५	केमोथेरेपी प्रथम इन्जैक्शन १२ बजे मा० दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी की उपस्थिति में ।
३.२.८५	प्रथम कैंपशूल २ गोलियां ।
४.२.८५	इन्जैक्शन दूसरा चरण ।
१३.२.८५	केमोथेरेपी कोर्स समाप्त ।
१४.२.८५	रिएक्शन नहीं ।
१६.२.८५	बाहर घुमाने ।
१७.२.८५	क्षमा याचना पत्रक रामदास पांडे, पुणे ।
२२.२.८५	स्वास्थ्य सामान्य रहा, मा० ठेंगड़ी जी व मनहर मेहता के साथ मिटिंग मार्गदर्शन पुणे ।
२३.२.८५	पुणे से दिल्ली १७७ डाउन भेलम एक्स० द्वारा सायं स्टेशन पर मा० दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी एवं अन्य कार्यकर्ता ।
२४.२.८५	नई दिल्ली आगमन सायं स्टेशन पर कार्यकर्ताओं द्वारा स्वागत रात्रि रा. स्व. संघ झंडेवाला, नई दिल्ली मुक्काम ।
२५.२.८५	नई दिल्ली मुक्काम ।
२६.२.८५	नई दिल्ली से बनारस काशी-विश्वनाथ एक्स० द्वारा दोपहर १.५० बजे ।

तिथियां/वर्ष	जीवन क्रम
	हिन्द मजदूर सभा उत्तर प्रदेश एवं अन्य संगठनों के नेता।
१५.५.८५	तेहरवीं के दिन दरिद्र नारायण सेवा संकल्प दिवस के रूप में मनाया।
	ग्राम बगही (चुनार) निवास पर हवन एवं ग्राम सहभोज का आयोजन किया था; जहां भारतीय मजदूर संघ के केन्द्रीय एवं प्रदेश पदाधिकारियों ने व चुनार क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया।
जुलाई १९८५	
१२.६.८५	भारतीय मजदूर संघ की अखिल भारतीय कार्यसमिति की बैठक में शोक प्रस्ताव पास किया, कोटा।
	उत्तक प्रदेश विधान परिषद में शोक प्रस्ताव पास किया, लखनऊ।
१४.६.८५	स्मृतिग्रंथ निकालने की भारतीय मजदूर संघ की अखिल भारतीय समिति बैठक कोटा में निर्णय।
१६.६.८५	स्मृतिग्रंथ संबंधी महामंत्री का सभी कार्यकर्ताओं के नाम केन्द्रीय कार्यालय से पत्रक।

मा. श्री रामनरेश सिंह जी
उर्फ बड़े भाई जी

आमदार निवास
बम्बई

दिनांक ३०-१-८५

व्यक्तिगत जांच (रिपोर्ट)

१.	पेशाब	३० मिनट के बाद
२.	शौच	सामान्य है
३.	भूख	सामान्य है

तिथियां/वर्ष	जीवन क्रम
अप्रैल १९८५	
११.४.८५	पूना से बम्बई एम्बुलेन्स द्वारा प्रातः ५ बजे प्रस्थान प्रातः ९ बजे आगमन बम्बई से कानपुर, गोरखपुर एक्स. प्रातः ११.२० प्रस्थान। विदाई के समय सैकड़ों कार्यकर्ता स्टेशन पर मौजूद थे।
१२.४.८५	कानपुर आगमन दोपहर १.१५ बजे। रा. स्व. संघ कार्यालय कानपुर मुक्काम (श्री अनांतराव जी गोखले की भेंट।
१३.४.८५	जे.के. कैन्सर यूनिट, राबर्ट अस्पताल कानपुर डॉ० गहलोत की देख-रेख में सहायक डॉ० ब्रजेश शुक्ला जी व्यवस्था में परिवार एवं कार्यकर्ता रा. स्व. संघ के अधिकारियों को लखनऊ भेंट करके सूचना।
१४.४.८५	राबर्ट अस्पताल में इलाज चलता रहा कानपुर।
२८.४.८५	प. पू. सरसंघचालक जी मा. श्री बाला-साहेब देवरस को वृत्त निवेदन ३.०० बजे। नागपुर दिल्ली से प्रेमनाथ जी का फोन 'तबियत काफी खराब है', क्या करें। पुणे डॉ० मुले जी को पूछ कर बताता हूं। थोड़ी देर में फोन से दिल्ली बताया कि स्थानीय डाक्टर को ही निर्णय करने दें। अब दवाई बन्द कर दें। ठीक छः मास पूर्व दिनांक २८.११.८४ को रात्रि ८.३० की भविष्यवाणी, उसका स्मरण आता है।
मई १९८५	
१/२.५.८५	रोग से अंतिम संघर्ष जीवन के साथ १.४५ बजे प्रातः नश्वर शरीर को त्याग कर महाप्रयाण। वे मृत्यु के समय ६० वर्ष के थे।
२.५.८५	शव दर्शनार्थ भारतीय मजदूर संघ कार्यालय २ नवीन मार्किट, कानपुर।
३.५.८५	प्रातः १० बजे भागीरथ के तट पर अग्नि को समर्पित किया। ६ बजे सायं सर्वदलीय शोक सभा।
	मा. श्री दत्तोपंत ठेंगडी, श्री मनहर भाई जी, भारतीय जनता पार्टी भारतीय मजदूर संघ, रा. स्व. संघ उत्तर प्रदेश।

श्रद्धाञ्जलियां

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ—नागपुर

अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक-१९८५

दिनांक ६ जुलाई १९८५

श्री रामनरेश सिंह ग्रामीण परिवार में जन्म लेकर अपने यौवन काल में संघ के प्रचारक बने। एक योग्य संगठक, समर्पित नेता और कठिन समस्या-निवारक के रूप में उनकी अद्भुत क्षमता के कारण वे शीघ्र ही "भारतीय मजदूर संघ" के महामन्त्री के उच्च पद पर पहुंच गए। उनके लिए अपने सहयोगियों की सेवा ही पूजा थी। वे गत कई वर्षों से ब्रेन कैंसर से पीड़ित थे, जिसका समय रहते निदान नहीं हो पाया। अत्यधिक पीड़ा के बावजूद वे अपने महनीय दायित्व का धैर्य व शांति से निर्वाह करते रहे। मजदूरों की समस्याएं समझने एवं उन्हें सहानुभूतिपूर्वक सुलझाने का उनका गुण "भारतीय मजदूर संघ" के लिए एक बहुत बड़ा वरदान था। उनके महाप्रयाण से ऐसी रिक्तता पैदा हो गई है, जिसके भरने में बहुत समय लगेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का अ०भा० कार्यकारी मण्डल इन सभी दिवंगत महानुभावों को श्रद्धांजलि अर्पित करता है और उनके परिवार जनों के दुख में सहभागी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रधान कार्यालय—नागपुर

सरसंघचालक : **म. द. देवरस** सरकार्यवाह **राजेन्द्रसिंह :**

डॉ० हेडगेवार भवन नागपुर ४४०००२ दूरभाष ४३००३

पत्र क्र. १/१९०८/ दिनांक ८-६-८६ तिथि ज्येष्ठ शुक्ल १, संवत् २०४३

भारतीय मजदूर संघ के भूतपूर्व महामंत्री स्व. श्री. रामनरेश सिंह जी उपाख्य "बड़े-भैय्या" का व्यक्तित्व रा. स्व. संघ की कार्यपद्धति से निर्माण हुआ है। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् वे शासकीय सेवा में लिपिक इस नाते काम करते रहे। १९४४ में

४.	उल्टी	नहीं
५.	दर्द	नहीं
६.	सरदर्द	नहीं
७.	कमर में दर्द	नहीं
८.	गर्दन में दर्द	नहीं
९.	आँखों में दर्द	नहीं
१०.	कानों में दर्द	नहीं
११.	नाक में दर्द	नहीं
१२.	गले में दर्द	नहीं
१३.	पांव/हाथ में दर्द	नहीं
१४.	बातचीत में कष्ट	नहीं
१५.	भोजन करते समय	नहीं
१६.	बैठते-उठते समय	नहीं
१७.	सोते-उठते समय	नहीं
१८.	जी. मचलना	नहीं
१९.	गले में जलन	नहीं
२०.	खाँसी	नहीं
२१.	कान में सुरसराहट	नही
२२.	छीक आने से दर्द	नहीं
२३.	पांव के जोड़ों में दर्द	नहीं
२४.	बलगम	नहीं
२५.	कमजोरी	नहीं
२६.	हांफना	नहीं
२७.	व्यायाम या चलने से	नहीं
२८.	दवाई लेने से कोई कष्ट	नहीं
२९.	हिचक से नींद नहीं आती	हां
३०.	सिर पर खुजलाहट है	हां
३१.	हिचकी	हां

—'राम दास पांडे'

इमरजेंसी के काल में उनके साथ जेल में रहने का अवसर भी आया और वहां दिखा कि जबकि एक ओर वह उत्तम व्यवस्था का प्रबन्ध कर सकते थे साथियों को सक्रिय कार्यो में लगाये रह सकते थे वहां ही किसी अन्याय या शासनिक ज्यादती का डट कर मुकाबला भी कर सकते थे। वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल वह हो सकते थे इन्हीं गुणों के कारण उन्होंने भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय महामंत्री के पद को भी बड़े गौरव और सफलता से निभाया। यह समाज का दुर्भाग्य था कि बहुत अल्पायु में ही कैन्सर जैसे रोग से उन्हें पीड़ित होकर शरीर छोड़ना पड़ा। वह एक आदर्श कार्यकर्ता थे। अत्यन्त योग्य और एक निष्ठ किन्तु बिल्कुल अहंकार शून्य। उनका स्थान भरना अत्यन्त कठिन होगा।

नरेन्द्र कांत सिंह

कु० सरस्वती अम्माल,
राज्य मंत्री, श्रम।

विधान भवन
लखनऊ
दिनांक २१ अगस्त, १९८६

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भूतपूर्व विधान परिषद् सदस्य एवं भूतपूर्व राष्ट्रीय महामन्त्री भारतीय मजदूर संघ स्व. श्री रामनरेश सिंह की स्मृति में भारतीय मजदूर संघ एक स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित कर रहा है।

स्व. श्री रामनरेश सिंह अपने जीवन काल में मजदूरों की समस्याओं के निराकरण के लिये सतत प्रयत्नशील रहे और विधान परिषद् में भी उन्होंने अपना पूर्ण सहयोग देकर प्रजातन्त्र को मजबूत बनाया।

मैं स्व. श्री रामनरेश सिंह की स्मृति में प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ की सफलता के लिए कामना करती हूं।

(सरस्वती अम्माल)

श्री प्रेम सागर मिश्र,
मन्त्री
भारतीय मजदूर संघ, उ० प्र०
६ नवीन मार्केट केसरबाग,
लखनऊ।

उनका संघ से सम्पर्क हुआ । तत्पश्चात् वे संघ के कार्य में अधिकाधिक सहभागी होते रहे। १९४७ में वे प्रचारक बने । प्रचारक इस नाते भिन्न भिन्न कार्य सफलता से पूर्ण करने के पश्चात् वे भारतीय मजदूर संघ का कार्य करने लगे । इस कार्यकाल में वे १२ वर्ष उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य रहे । कार्य के प्रति लगन, अध्ययनशीलता, सतर्कता, सभी प्रश्नों का सम्पूर्ण एवं मूलगामी विचार करने की क्षमता, सेवावृत्ति इन गुणों के कारण सभी पक्षोपक्षों के विधायकों के आदरपात्र बने थे । भारतीय मजदूर संघ के महामंत्री इस नाते आखिर तक वे काम करते रहे । परिश्रमशीलता, मिलनसार वृत्ति, सबको अपने साथ लेकर उनको कार्यप्रवण बनाने की क्षमता, संगठनकुशलता आदि गुणों के कारण महामंत्री का कठिन दायित्व सफलतापूर्वक वे निभा सके ।

संघ के स्वयंसेवकों के द्वारा संचालित सभी कार्य तथा संघटना का अन्तिम उद्दिष्ट भारतीय समाज में उचित परिवर्तन लाना यह है । ऐसी संस्थाओं के लिये सैद्धांतिक अधिष्ठान कालसुसंगत तथा उद्दिष्टानुकूल कार्यपद्धति एवं विशिष्ठ गुणवत्तापूर्ण कार्यकर्ताओं का समूह आवश्यक रहता है । भारतीय मजदूर संघ ये तीनों पहलुओं की दृष्टि से आदर्श संगठन बना हुआ है । इसमें श्री रामनरेश सिंह जी का बड़ा योगदान रहा है । उनके स्मृति में प्रकाशित होने वाले "स्मृति ग्रन्थ" में उनके व्यक्तित्व के सभी पहलु प्रकाशित होंगे तथा उससे सभी कार्यकर्ताओं को प्रेरणा तथा मार्गदर्शन नित्य प्राप्त होता रहेगा यह विश्वास प्रगट करता हूं ।

भ. द. **देवरस**

रामनरेश सिंह जी जिन्हें सब लोग स्नेहवश बड़े भाई कहते थे विवाहित होते हुए भी युवावस्था से ही संघ के प्रचारक थे । मिर्जापुर उत्तर प्रदेश के जिला प्रचारक के नाते उनसे सबसे पहले परिचय आया । स्वयं किसान परिवार के तथा ग्राम्य जीवन में पले होने के कारण ग्रामीण क्षेत्र के लिए एक आदर्श कार्यकर्ता तो थे ही किन्तु अपने अध्ययन सूक्ष्म बुद्धि तथा सूझबूझ के कारण नगर वासी स्वयंसेवकों पर भी उनका प्रभाव कुछ कम नहीं रहता था। व्यवस्था की बारीकियों पर पूरा ध्यान देते थे । इसी कारण सारे उत्तर प्रदेश के वस्तु भण्डार की व्यवस्था उनके सुपुर्द की गई थी । उस समय देश भर के गणवेश के कई अंश कानपुर में ही बना करते थे । इन सबका निर्माण व्यवस्था स्थान स्थान पर समय से पहुंचाना बड़े भाई के सुपुर्द था और वह इस कार्य को बड़ी दक्षता से चलाते थे ।

अत्यन्त मृदुभाषी तथा संघ के समन्वयात्मक दृष्टिकोण को समझने के कारण भारतीय मजदूर संघ के प्रान्तीय संगठन मंत्री के नाते उन्होंने कार्यभार संभाला । बहुत तीव्रगति से कार्य बढ़ाते हुए उन्होंने कार्य की नींव प्रांत भर में जमाई व धीरे-धीरे भारतीय मजदूर संघ मजदूर क्षेत्र में एक प्रभावी संगठन माना जाने लगा । कुछ समय बाद वह विधान परिषद् के सदस्य बने । इतने महत्व के स्थानों पर रहते हुए भी वह सर्वदा इतने विनम्र रहते थे कि उनके राजनीतिक विरोधी भी उन्हें अपना ही समझते थे । किसी से कटुता की बातचीत या आवेश में बातचीत करना उन्हें आता ही नहीं था । इसीलिये वह अजमन शत्रु थे । सब विरोधी भी उन्हें आदर व स्नेह से देखते थे ।

विश्व हिन्दू परिषद्

बी-११, साऊथ एक्सटेन्शन भाग-२,
नई दिल्ली-११००४६.

क्र०: वि०हि०प०/२००/८५ दिनांक: १० अगस्त, १९८५

श्री रामदास जी पांडे,
भारतीय मजदूर संघ कार्यालय,
२४२६, तिलक गली,
चूना मण्डी, पहाड़गंज,
नई दिल्ली-११००५५.

बन्धुवर श्री पांडे जी,

सप्रेम नमस्कार।

विश्व हिन्दू परिषद् की प्रबन्ध समिति ने अपनी बैठक दिनांक १४ जुलाई, १९८५ को भारतीय मजदूर संघ के भूतपूर्व महामंत्री श्री रामनरेश सिह जी के असामयिक दुःखद देहान्त पर गहरा शोक प्रगट करते हुये, एक शोक प्रस्ताव पारित किया। श्री रामनरेश सिह जी ने अपना सारा जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा भारतीय मजदूर संघ में कार्य करते हुये, देश सेवा में लगा दिया और अन्त समय तक अपनी बिमारी की अवस्था में भी देश का हित-चिन्तन करते रहे। उनका सक्रिय जीवन हम सभी का मार्ग-दर्शन करता रहेगा।

भारतीय मजदूर संघ को उनके चले जाने के पश्चात् जो अपार क्षति हुई है, उसकी पूर्ति करना बड़ा ही कठिन होगा।

विश्व हिन्दू परिषद की प्रबन्ध समिति ने दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए तथा उनके शेष परिवार के प्रति सहानुभूति प्रगट करते हुए, परमपिता परमेश्वर से दो मिनट का मौन रखकर प्रार्थना की।

हमारा आपसे नम्र निवेदन है कि विश्व हिन्दू परिषद की प्रबन्ध समिति का यह शोक सन्देश आप श्री रामनरेश सिह जी के परिवार तक पहुंचा दें।

दिनांक १२-१४ जुलाई १९८५ को कोटा में भारतीय मजदूर संघ की कार्यसमिति की बैठक में पारित शोक-प्रस्ताव।

अपने प्रिय नेता बड़े भाई रामनरेश सिंह जी की अनुपस्थिति में हम यहां प्रथम बार मिल रहे हैं। उन्होंने वर्ष, १९७६ से समय-समय पर आने वाली कठिन परिस्थितियों में सतत हमारा मार्ग-दर्शन किया है। आपत्काल के कठिन समय में उन्होंने संगठन का पदभार सम्भाला उनके निःसंदेह साहसपूर्ण प्रयास ने भारतीय मजदूर संघ की प्रगति को तीव्रतर करके उसे ट्रेड यूनियन क्षेत्र में अग्रिम पंक्ति पर ला दिया है।

बड़े भाई जी का जीवन एक समर्पित जीवन था। वे सीधे-सादे परन्तु अति उत्तम एवं उच्च विचार और सर्वोच्च धारणायुक्त आदर्श व्यक्ति थे। अपनी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात अति अल्पकाल के व्यवसाय के मध्य वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये और उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र निर्माण कार्य के लिए समर्पित कर दिया तथा कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। निःसंदेह उनका जीवन एक तपस्वी का जीवन था। पूरे देश में उनका निरन्तर प्रवास और यूनियन के सक्रिय कार्यकर्ताओं व साधारण कार्यकर्ताओं के निरन्तर सम्पर्क ने उनको सबका प्रिय बना दिया। सदैव प्रसन्नचित और हृदय से अति कोमल बड़े भाई जी पूर्णतया अनुशासन प्रिय थे।

उनके बिना यह कार्य समिति बहुत बड़ी रिक्तता अनुभव करती है जो अपूर्णीय है। यद्यपि उनका पार्थिव शरीर अब हमारे बीच नहीं है किन्तु उनकी प्रेरणादायी स्मृतियां सदैव हमारा मार्ग-दर्शन करती रहेंगी।

यह कार्यसमिति उनके सम्मान में नत मस्तक है तथा उस दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

कार्यसमिति भारतीय मजदूर संघ के कार्य को उस लक्ष्य तक बढ़ाने की प्रतिज्ञा करती है जब तक भारतीय मजदूर संघ मजदूरों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक मात्र विशुद्ध श्रम संगठन नहीं बन जाता। हमें विश्वास है कि ऐसा करने से ही उनकी आत्मा को शान्ति मिलेगी तथा यही उनकी स्मृति अक्षुण बनाए रखने का उपयुक्त मार्ग है। इस अवसर पर कार्यसमिति अस्पताल एवं नर्सिग होम के डाक्टरों तथा सभी कर्मचारियों को जहां बड़े भाई जी की कठिन बीमारी का उपचार हो रहा था की अनवरत सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रगट करते हुए उन्हें हार्दिक धन्यवाद देती है।

परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति दे यही हम सब की प्रार्थना है।

वनवासी कल्याण परिषद्
मध्य प्रदेश, भोपाल

मकान नं०-२०, सिन्धी कालोनी,
बेरसिया मार्ग, भोपाल-४६२०१८
फोन : ७२७८०
क्रमांक : ८१३
दिनांक : १६.२.८६

प्रति

कार्यालय प्रमुख
भारतीय मजदूर संघ
राम नरेश भवन, तिलक गली,
पहाड़गंज, नई दिल्ली ।

महोदय,

श्रद्धेय श्री रामनरेश सिंह जी (बड़े भैया) के अवसान से हम सभी को गहरा दुःख हुआ है । वनवासी कल्याण परिषद् मध्य प्रदेश की कार्यकारिणी एवं प्रतिनिधी सभा ने ३१ जनवरी १९८६ को वार्षिक बैठक में (राजगढ़ जिला धार) उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की है ।

परम् पिता परमेश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान कर परिवार जनों तथा स्नेही, जनों को इस महान दुःख को सहन कर पाने की क्षमता प्रदान करें ।

भावनाश्री से अवगत कराने हेतु उक्त प्रस्ताव भेज रहा हूं ।

हस्ता/-
महामन्त्री
वनवासी कल्याण परिषद, भोपाल

उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की कार्यवाही का उद्धरण

खण्ड संख्या	शुक्रवार, दिनांक २१ आषाढ़, शक संवत् १९०७	अंक
२००	(१२ जुलाई, सन् १९८५ ई०)	१

स्वर्गीय श्री रामनरेश सिंह, भुतपूर्व सदस्य, विधान परिषद् के निधन पर शोक-प्रस्ताव :

श्री सभापति,

मुझे सदन को अत्यन्त दुःख के साथ यह सूचित करना है कि श्री रामनरेश सिंह, भूतपूर्व सदस्य, विधान परिषद् का निधन दिनांक २ मई, १९८५ को प्रातः पौने दो बजे लाला लाजपतराय अस्पताल, कानपुर में मस्तिष्क के कैंसर के कारण हो गया ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

विदर्भ प्रांत
संघ कार्यालय तिलक पुतला,
अकोला-४४४००१

श्री राम प्रकाश जी,

सादर प्रणाम ।

मान्यवर श्री रामनरेश सिंह जी के निधन का दुःखद समाचार सुनकर मन सुनसान सा बन गया । वे पिछले कुछ माह से सक्त बीमार है यह जानकारी थी फिर भी आशा थी कि इसमें से वे सम्हलेंगे । परन्तु ईश्वरी इच्छा नहीं थी ।

मा० बड़े भैया के निधन से केवल मजदूर संघ की या मजदूर जगत की हानि हुई है अपितु सारे समाज की बड़ी ही हानि हुई है । उन जैसे कार्यकर्ता विरला होते हैं । शरीर को काफी तकलीफ होते हुए भी पीठ और कमर को पट्ठा बांध कर बैठकों में और कार्यक्रमों में उपस्थित उनकी श्याम मूर्ति आँखों के सामने आज भी विराजमान है ।

उनकी आत्मा को सद्‌गति प्राप्त हो तथा उनकी स्मृति अनेकानेक कार्यकर्ताओं को कार्य की प्रेरणा देती रहे यही परमेश्वर को प्रार्थना

उनके परिवार के सदस्यों को हम सबकी दुःखद संवेदना अवगत करायें ।

आपका
(भा० वि० कुंटे)
प्रांत कार्यवाह

वनवासी कल्याण परिषद्
मध्य प्रदेश, भोपाल

मकान नं०-२०, सिन्धी कालोनी,
बेरसिया मार्ग भोपाल-४६२०१८
दिनांक : ३१.१.८६

शोक-प्रस्ताव

श्री रामनरेश सिंह (बड़े भैया) महामन्त्री, भारतीय मजदूर संघ का विगत दिनों अवसान हो गया । वे वनवासी क्षेत्र की सेवा योजनाओं में भी सहयोगी रहते थे । उनके निधन से एक महान देशभक्त चला गया ।

प्रतिनिधी सभा उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है ।

समय में साथ हैं। हम सभी प्रार्थना करें कि हम उनके त्याग, तपस्या अनुप्रेरित हों।

मैं अपनी श्रद्धांजलि अपने समाज की ओर से समर्पित करता हूं।

भवदीय

हस्ता/-

(गोपेश्वर)

आई०सी०एफ०टी०यू०

श्री राजकुमार गुप्ता,
महामंत्री,
भारतीय मजदूर संघ, दिल्ली प्रदेश,
अजमेरी गेट, दिल्ली-११०००६.

यूनाइटेड वेस्टर्न बैंक एम्पलाइज यूनियन
(सम्बद्ध—ए. आई. बी. ई. ए.)

७१०, बलीमारान्,
चांदनी चौक, दिल्ली-६

शोक-संदेश

महामन्त्री,
भारतीय मजदूर संघ,
दिल्ली प्रदेश

आज समाचार पत्र द्वारा जानकारी मिली कि भारतीय मजदूर संघ के महामन्त्री श्री रामनरेश सिंह जी (बड़े भैया) का देहान्त हुआ यह एक बड़ी दुर्घटना है। रामनरेश जी के देहान्त से जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति नहीं हो सकती है। इस दुःख में समस्त भारत की ट्रेड यूनियन की जनता बराबर की भागीदार है। उनके बताये हुये मार्ग पर चलकर अधूरे कार्य को पूरा करें यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। और श्रमिक वर्ग के लिए संघर्ष करते हुए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर सदैव सच्चाई, ईमानदार और मजदूरों के हक को शामिल करने का एक आदर्श जो छोडा है। उनके इन आदर्श को हम आप पूरा करेंगे यही हमारी प्रतिज्ञा है। यही सच्ची श्रद्धांजलि है।

आपका

(नन्द किशोर)

स्वर्गीय श्री सिंह का जन्म १९२५ में जिला मिर्जापुर के एक कृषक परिवार में हुआ था, उन्होंने हाईस्कूल की शिक्षा चुनार में तथा स्नातक की शिक्षा वाराणसी से प्राप्त की थी, विद्यार्थी जीवन में ही आपका सम्पर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हुआ और सम्पूर्ण राष्ट्र में बड़े भाई के नाम से प्रसिद्ध हो गये, वे भारतीय मजदूर संघ के राष्ट्रीय महामन्त्री भी थे।

श्री सिंह उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के दो बार सदस्य निर्वाचित हुए प्रथम बार ६ मई, १९६८ से ५ मई, १९७४ तथा दूसरी बार ६ मई, १९७६ से ५ मई, १९८२ तक रहे। स्व० श्री सिंह ने परिषद् की सदस्यता की अवधि में तथा बाद में पेंशन के समय की भी सम्पूर्ण धनराशि को भारतीय मजदूर संघ को देकर एक आदर्श प्रस्तुत किया है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शांति प्राप्त हो तथा उनके शोक संतप्त परिवार के सदस्यों को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति, साहस व धैर्य प्रदान करें।

अब आप सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि अपने-अपने स्थान पर दो मिनट मौन खड़े होकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करें।

सदन के सभी मा० सदस्यों ने दो मिनट मौन खड़े होकर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

लखनऊ
शुक्रवार, दिनांक २१ आषाढ़, शक संवत् १९०७
(१२ जुलाई, १९८५ ई०)

आज्ञा से,
हरिनंदन शरण भटनागर,
सचिव
विधान परिषद्, उत्तर प्रदेश

पोस्ट बाक्स नं० १०८
जमशेदपुर-८३१००१
(बिहार)

गोपेश्वर,
सह-अध्यक्ष,
इण्टरनेशनल कान्फैडरेशन ऑफ फ्री ट्रेड यूनियन,
(आई०सी०एफ०टी०यू०)

मित्रवर गुप्ता जी,

नमस्कार।

श्री बड़े भाई जी का महाप्रयाण सुनकर बड़ी चोट लगी। कुछ दिन पहले उन्होंने मुझे बंबई अस्पताल से लिखा था और मुझे पूरा विश्वास था कि वे स्वस्थ हो जायेंगे। जीवन की गतिविधि कौन जानता है, उनका स्नेह हमें सभी समय मिलता रहेगा। हम सभी आपके इस

Rambhau Joshi and Suresh Sharma, M.P., Ram Das Pande, Virendra Bhatnagar and Anoop Agarwal, Delhi, Kartar Singh, Punjab and Ghanshyam Das Gupta from U.P. paid their homage to the departed soul.

Sarvashri Dattopant Thengadi and Manharbhai Mehta expressed their grief and sorrowfully mentioned that Bade Bhai had passed away at a time when the labour movement of the country needed him the most. Both the speakers appealed the workers to endeavour to build up a strong and united movement—the cause that was very dear to Bade Bhai.

CONDOLENCE MESSAGES

International Labour Organisation, 7, Sardar Patel Marg, New Delhi-1

230.2/9 2803 31 May, 1985

We reproduce below a telex which has been received from Mr. S. Nakatani, Asstt. Director, General responsible for ILO Activities in Asia and the Pacific in Bangkok;

Secretary from Nakatani Uninayar And Colleagues (Stop) We deeply grieve the untimely demise of Ram Naresh Singh General Secretary BMS (Stop) Appreciate Convey Our Heartfelt Condolences to BMS and Singh's Family (Stop)

Yours sincerely,
Sd/-
(S. Sankar Narayanan)
Director

INTERNATIONAL LABOUR ORGANISATION

ILO, Office : Bhutan, India & Republic of Maldives, 7, Sardar Patel Marg, New Delhi-21

230.2/9 2326 7th May, 1985

Dear Mr. Sharma,

We were profoundly grieved to learn from a Press Report about the sad and untimely demise of Mr. Ram Naresh Singh, General Secretary of Bharatiya Mazdoor Sangh.

THE LAST JOURNEY

Kanpur, May 3—The mortal remains of late Ram Naresh Singh (Bade Bhai), the General Secretary of Bhartiya Mazdoor Sangh, were cremated today. The funeral procession started at 8.00 a.m. Thousands of workers and leading personalities from trade unions, cultural and political organisations attended the funeral. Bharatiya Mazdoor Sahgh President, Shri Manharbhai Mehta and the founder General Secretary, Shri Dattopant Thengdi attended the funeral.

Shri Ram Naresh Singh, who died here yesterday in Lala Lajpatrai Hospital, was suffering from brain cancer. He was 60. Born in Mirzapur District, in 1925, he started to work as a copy-writer in a Magistrate's Court at Chunay after completing his matriculation from Varanasi. He started R.S.S. work in these days. It is here that he acquired the popular adjective "Bade Bhai" by which he was named and known. He was an humble person with strong will and determination. A sense of humour and strict discipline were combined in his personality.

The all party condolence meeting arranged by N.C.C. constituents, at Teachers Park in Navin Market area, was attended by thousands of workers and members of public. The meeting was addressed by Sarvashri Surya Bans Mishra, N.L.O., Vijay Bahadur, AITUC, Arvind of CITU, Ramkishor Tripathi and Saiyad Ali Akbar of H.M.S. Gian Singh, UTUC (LS) Kripal Singh Gautam, NTC, Chandra Bhushan Tripathi, Madhyamik Shikshak Sangh, Rambhau Joshi, Raj Kishan Bhakt and Ram Prakash Mishra all of B.M.S. Ganesh Dixit, H.M.K.P. Mohammed Arif Baig of Kanpur Bijli Sabha.

The representatives of political parties also addressed the meeting. Sarvashri Murari Lal Puri, and Krishan Kumar Goel of Lok Dal, Gopal Avasthi and Revati Raman Rastogi of B.J.P. Kanhaya Lal Tiwari of Janata Party, spoke on the occasion.

Shri Kali Shankar Avasthi, Rashtriya Swayam Sevak Sangh, Vasudeo Vaswani, Bharatiya Sindhu Sabha, Sudarshan Chakra, Progressive Writers Association, Madan Gopal Gupta Bharat Vikash Parishad, Ram Kishore Agrawal, Goshala Society also addressed.

Various office bearers of various Pradesh B.M.S. bodies attended the funeral and the Condolence meeting. Sarvashri Ramdeo Prasad, Bihar, Saroj Mitra, Orissa, Dhan Prakash and Rishi Raj Sharma, Rajasthan,

"DEEPLY AGRIEVED OVER DEATH OF RAM NARESH SINGH JI (.) AN IRREPARABLE LOSS TO WORKING CLASS MOVEMENT (.) CONVEY OUR CONDOLENCE TO BEREAVED FAMILY".

General Secretary and Others, I.N.T.U.C.

"With great shock I heared the sad news of passing away of Shri Ram Naresh Singh, General Secretary of BMS at Kanpur Yesterday.

Bade Bhai, as he was popularly known, was a trade Union Leader of long standing and played a meritorious role in founding and building the National Comaign Committee of Trade Unions. In his passing away the United Trade Union Movement lost a great front ranking fighter.

I deeply convey my heart-felt condolences to the Bharatiya Mazdoor Sangh and bereaved members of his family.

Yours sincerely
Sd/-
(M.K. Pandhe)
Secretary, CITU

"NFITU SINCERELY SHARES BEREAVEMENT WITH YOUR MEMBERS OVER PREMATURE DEATH OF BELOVED BROTHER RAM NARESH SINGH (.) MOURNS FOR IRREPARABLE LOSSES FOR INDIAN TOILING MASSES (.)

Sd/-
(NAREN SEN)
President NFITU

CONDOLENCE MEETINGS
: JAMMU :

A meeting of the Bharatiya Mazdoor Sangh, Jammu and Kashmir held in Geeta Bhavan, Jammu condoled the untimely death of Shri Ram Naresh Singh.

"Shri Ram Naresh Singh, was an embodiment of idealism dedication sincerity and simplicity. He toiled hard throughout his life to better the lives of the millions of workers and it was his effort that the workers felt that their future was secure under the banner of BMS. He was a source of inspiration," says a condolence resolution.

On behalf of the ILO, we send sincere condolence and sympathy to the BMS and Mr. Singh's family.

Yours sincerely,
Sd/-
(S. Sankar Narayanan)
Director

ALL INDIA ORGANISATION OF EMPLOYERS

Federation House, Tansen Marg, New Delhi-1

Ref. No. I.E.,/616/V 3rd June, 1985

My dear Bhakt Ji,

I have seen your letter of 16th May received last week. This is the height of postal inefficiency.

I am shocked to learn about the sad demise of Shri Ram Naresh Singh. He was one of the pillars of the responsible Trade Union Movement. Strange are the ways of Almighty.

Would you kindly convey my heart felt condolence to the bereaved family.

Yours sincerely
Sd/-
(B.M. Sethi)

Dear Shri Thengdi Ji,

I was deeply distressed to learn from the newspapers the sad and sudden demise of our beloved Shri Ram Naresh Singh, General Secretary of Bharatiya Mazdoor Sangh. As a colleague in the National Campaign Committee of Trade Unions, I got an occasion of knowing him from close range. I was much impressed by his genuine and most dedicated endeavours for the welfare of Indian working class. May God grant BMS and his family members to stand this unbearable loss. Kindly accept my heart-felt condolences.

With best regards,

Yours sincerely,
Sd/-
(J. S. Dara)
Indian Trade Union Congress

Shri Ajoy Kumar Nandi, Secretary. BMS (W.B) and Shri Ramji Dass Sharma, Org. Secretary paid their heart-felt homage to Bade Bhai. Smt. Bomani Datta offered her homage with Tagore song and Smt. Minakshi Saksena recited one poem.

BANGALORE

The Condolence Meeting was held at Bangalore on 15th May 1985 to pay respectful homage to S hri Ram Naresh Singh.

Poojas were conducted in 3 temples of the city and the offerings were distributed to devotees. "Annadanam" was also done through these Temple authorities at two places.

In the evening a condolence meeting was held. Nearly 100 activists from several unions attended the meeting. Glowing tributes were paid by M/s. Allampalli Venkataram Devidas Pai and D. K. Sadashiva.

Shri B.S. N. Mallya, a Senior R. S. S. Pracharak and Editor "Vikrama" weekly delivered his speech recalling his 25 years long association with Bade Bhai. A condolence resolution was moved by Shri C. A. S. Sastry. The meeting disbursed after observing silent prayer for 2 minutes.

BOMBAY

The condolence meeting in Bombay was addressed by Shri Dattopant Thengdi. The Meeting held in Vanmali Hall near Dadar Station on 13th May was attended by hundreds of activists from various BMS affiliated unions.

"In Ram Naresh Singh the labour movement lost an exceptionally ideal selfless personality", said Shri Thengdi, "The labour movement in the country needed him the more than ever before in the wake of emerging technological policies of the Government. Wholesale Computerisation; without giving a proper thought to its after-effects would ultimataly prove detrimental to national interests. Influence of foreign capital on the Government is on increase. Anti-worker policies are being drafted and implemented, and more people are pushed below the poverty line. In such a critical situation the movement has lost a disciplined and determined personality like Bade Bhai," he stated and expressed confidence that the vacuum created by his death would be fulfilled by BMS activists by putting in more hard work.

Speakers in the meeting from different organisations like Sanatan Dharm Sabha, R.S.S. Vishwa Hindu Parishad, Vidayarthi Parishad, Hindu Raksha Samiti, Bharatiya Mazdoor Sangh affiliated units in L.I.C. Banks, Insurance, Nagar-Palika P. & T, Defence, Super Bazar, Salal project Srinagar and Kathua paid rich tributes to the departed leader describing him as the great guiding force for the millions of workers of our country. All prayed the Almighty to give solace to his soul and bestow enough strength to his near and dear to bear the loss.

CALCUTTA

The condolence meeting was held at "SILPA BHAWAN" in the evening of 10-5-1985 to pay homage to Shri Ram Naresh Singh. The meeting was presided over by Shri Shantimoy Choudhuri, President BMS (W.B). Many Trade Union Leaders belonging to various Organisations placed wreaths and paid homage to the departed soul. Sh. Paritosh Pathak, General Secretary BMS (W.B) offered homage to the departed leader and said that BMS lost one of its greatest leaders who was able to reach the heart of each and every worker of the Mazdoor Sangh. "We feel ourselves orphaned," he said. He prayed for the peace to the departed soul.

The All India Secretary of BMS Shri Rash Behari Maitra said on this occasion that in Bade Bhai we lost a leader of rare qualities. He (Bade Bhai) was an organiser in real sense. Shri Maitra also expressed his deepest sorrow and pledged to work for fulfilling the desire of Bade Bhai to build up BMS as a powerful labour organisation.

Shri Baijnath Rai, General Secretary, Bharatiya Jute Mazdoor Sangh also paid homage to Bade Bhai and said that Bade Bhai never compromised with anything in the cause of labour. "He was always ready to sacrifice everything in its cause," he said.

Shri Sree Krishna Motlak, Sah Pranta Pracharak of RSS. West Bengal, Shri Vishnu Kanta Dhashtri, President B.J.P. (W.B.) Shri Phatik Ghosh U.T.U.C. (L.S.) also paid their homages.

Shri Shantimoy Chowdhuri, President BMS (W. B) described Shri Bade Bhai as a true labour leader who lived and worked for them. In his death not only the BMS but the entire working class of our country has lost one of our sincerest friends. His life and work will always shine as an example which will guide and inspire us to continue and expand our work.

Shri Babu lal Gaur MLA, mentioned his hardworking nature and urge for spreading BMS. Shri Divakar Varma Pradesh Secretary, M. P. B. M. S. said that Bade Bhai lived for workers cause.

Shri Giriraj Kishore Secretary, Bhopal Distt. BJP. Corporator also expressed grief and sorrow for the loss due to the death.

Shri Narendra Paliwal, Bhopal BMS also addressed.

COPY OF LATTER

P. J. Ovid,
Commissioner of Labour
Maharashtra State
BOMBAY.

D. D. No. s CL/PJO/1085/HC-1
Office of the Commissioner of
Labour, BOMBAY-400034
Dated 7th May, 1985

Dear Shri Mehta,

I am very sorry to read the news in the local News Papers about the sad demise of Shri Ram Naresh Singh, the all India General Secretary of the Bharatiya Mazdoor Sangh at Kanpur. My heart-felt condolences to you and your Sangh.

Yours sincerely
Sd/-
(P. J. Ovid)

Shri Manharbhai Mehta,
Bharatiya Mazdoor Sangh,
Rajan Building, Poibawdi,
Bombay 4000 12.

HIND MAZDOOR SABHA

Delhi Office 120 Babar Road, New Delhi-1

President : Rajkishore Samantrai,
General Secretary, Umraomal Purohit,

The President,
Bharatiya Mazdoor Sangh,
2426, Tilak Gali,
Chuna Mandi,
Paharganj,
New Delhi-55

Dear Friend,

We have been shocked to read the news in the newspapers today to

Shri Virendra Sharma, All India Secretary of Bharatiya Kisan Singh said that the common farmer lost his best friend in Bade Bhai. Shri Madhav Devlekar, BJP, Dilip Karambelkar, Editor Weekly Vivek, Prakash Surve of ABVP, Shri Devade of Maharashtra Jana Kalyan Samiti (RSS). Shri R. Venugopal all India Secretary of BMS also spoke.

Com. Krishnan, CITU, Bombay said that it was rare to find a selfless, determined and disciplined personality, like late Shri Ram Naresh Singh, in a labour Organisation.

KARNAL

Condolence meeting was held in Vivekanand Shishu Mandir Hall on 13th May at 6.00 p.m. to pay homage to the late Shri Ram Naresh Singh.

RSS Pracharak Shri Prem Kumar, General Secretary of Haryana Vishwa Hindu Parishad Shri Trilok Chand Gupta, Shri Chetan Das of BJP General Secretary of Haryana Bharatiya Janata Yuva Morcha, Shri Om Parkash Atre, Shri Jai Parkesh of Seva Bharati and representatives of Municipal Karamchari Union, Karnal, Haryana Tourism Karamchari Sangh, Super Tyre Karamchari Sangh, Agricultural & Engineering Mazdoor Union, H. S. M. I. T. C. Karamchari Union, Haryana Rikshaw Chalak Sangh prayed for peace to the departed soul.

Haryana Pradesh BMS Genral Secretary Shri Jit Singh Khurana and other activists of BMS praised late Bade Bhai for his dedicated life long service to the Working Class.

The meeting was presided over by RSS Nagar Karyavaha Shri Padma Pradesh Jain.

BHOPAL

A condolence meeting to pay homage to late Bade Bhai held on 4th May 1985, was presided over by Sh. Uttam Chand Israni, Prant Karyavaha, Madhya Bharat Rashtriya Swayam Sewak Sevak Sangh. The Meeting was attended and addressed by the representatives of all unions in Bhopal District.

Shri Israni said that Bade Bhai possessed a pleasant personality and was working with a mission for the workers' cause.

No. 35 (10)/84-Vfn.

Office of the Chief Labour
Commissioner (Central)
Ministry of Labour Shram Shakti
Bhavan, Rafi Marg-New Delhi-1

Dated : 3rd May, 1985

Dear Shri Bhagat,

I am shocked to hear the sad demise of Shri Ram Naresh Singh, General Secretary of the B. M. S. During my meetings with him, I found him to be a kind, affectionate and amicable personality. His death is a great loss to the trade union movement. Please convey heart-felt condolences of the officers and staff of our Organisations to the bereaved members of his family.

With regards,

Yours sincerely,
Sd/-
(P. D. Shenoy)

Shri R. K. Bhakat,
Secretary, H. M. S.
2426/27, Tilak Gali, Chuna Mandi,
New Delhi-55.

Dated 4/5/85

My Dear Bhakt Ji,

I was the saddest person to know about the sudden death of Shri Ram Naresh Singh, my good friend and a friend of the working class. Only yesterday we talked about him and you told me about his sickness. H. M. S. also has lost a dear one as Ram Naresh ji despite his being the General Secretary of B. M. S. had a soft corner for democratic values which he always felt H. M. S. was wedded to.

Kindly convey my personal condolences to the members of the family and to the committee he led for so long.

Yours brotherly,
Sd/-
Brij Mohan Toofan

Viee President, Hind Mazdoor Sangh

the sudden death of Bro. Ram Naresh Singh, General Secretary, B. M. S., Bro. Singh besides being a champion of the cause of workers was also a noble soul. We pray that his soul will rest in peace.

Kindly accept our heart-felt condolences and convey the same to the members of his family.

Yours sincerely,
Sd/-
Umraomal Purohit
General Secretary.

ALL INDIA TRADE UNION CONGRESS
241,Canning Lane, New Delhi-1

President : Chaturnan Mishra, M. P, Dated 3 May, 1985

General Secretary ; Indrajit Gupta, M. P.

To,

The President,
Bharatiya Mazdoor Sangh,
2426/27, Tilak Gali, Chuna Mandi,
Paharganj, New Delhi-55

Dear Friend,

We write to express our grief and sincere condolences at the sudden demise of Shri Ram Naresh Singh, General Secretary of B. M. S.

Please convey our condolences and sympthy to the bereaved family.

Yours sincerely,
Sd/-
Indrajit Gupta
General Secretary.

"श्रद्धांजलि"

उस भारतीय मजदूर संघ के लौह पुरूष को,
श्रमिकों के अग्रज पथ दर्शक को,
पीड़ित श्रम जन के सम्बल को,
सादे सच्चे उस सौम्य जन को,
उस आंदोलन-सिद्ध पुरूष को,
ओजस्वी, अनुशासित श्रम योद्धा को,
दलितों के श्रद्धालय को,
सबके अपने उस सरल मन को,
उस साधक मौन तपी को,
भेंटें कैसी श्रद्धांजलि ?
केवल शोक सुमन का अर्पण,
और श्रद्धागीत विमोचन
या यशो-लेख के मुद्रण,
अथवा स्मारक नामांकन से,
होगी पूर्ण न उनकी श्रद्धांजलि।
उनका बतलाया पथ चलना,
उनके सब आदर्शों को जीना,
उनका सा सेवाव्रत पालन,
और ध्येय समर्पणरत रहना ही,
है उनको सच्ची श्रद्धांजलि।
तो उनके पुण्य स्मरण में,
उनकी सच्ची श्रद्धा में,
दे फूंक प्रगति का पाञ्चजन्य,
भेंटें अन्याय-विषमता-शोषण,
औद्योगिक प्रगति को गति दें,
करें राष्ट्र का पूर्णोत्थान।
तम-तिमिर तिरोहित करें,
कि भय दलितों का भागे,
इक नई भोर का नया सवेरा,
सुख समृद्धि में जागे,
विजयी हो अपना देश,
विजयी उद्योगों में श्रम हो।

ऋषिराज शर्मा, महामंत्री
भारतीय परिवहन मजदूर संघ

'A MEMORABLE MOMENT WITH BADE BHAI'

Sanat Kumar Das
President,
Durgapur Ispat Karamchari Sangh,
6D/5, Kanishka Road,
Durgapur—713 204.

Probably in early seventies, respected Bade Bhaiji made his maiden visit to Durgapur when our unit was merely a new born baby. We had purely a paper union having a few voices would be trade union activists fully unaware of Laws, Acts and precess of working. Naturally I failed to answer his queries about our activities. Certainly he understood me and said, "B. M. S. union is like a Batabriksha. If you plant it in a tub, it will grow as a Tulsibriksha which is mainly used for worship purposes. If you grow it in to the field, the real Batabriksha will come up." I understood him very well.

Gradually I learnt that no qualification or experience as in the case of doctors or lawyers is essential for starting trade union activity. These very few words were my lesson to become a B. M. S. activist. On every occasion, while meeting him to discuss about our problems in Steel Industry, I remembered his first lesson and thought myself how far I obeyed him and now I feel this is the only lesson to all of us.

Passion for herfection

'BADE BHAIJI AT A GLANCE'

A. MAHADEVAPPA,
SECRETARY,
B. M. S. (A. P.)

Under the auspious of Bharatiya Mazdoor Sangh, 7th All India Conference have been celebrated in Hyderabad at 'VISHWAKARMA NAGAR' on 9th, 10th and 11th of January, 1984.

All the arrangements for the peaceful and proper conduct of above All India Conferences have well been made. Late Sri Ram Naresh Singhji had attended the said conference four days in advance. In the case of arrangements like Dinner, Buntings, Banners etc. Singhji took personal initiative and under his care the above arrangements were completed to the entire satisfaction of all the members. Though he was acting as the General Secretary of Bhartiya Mazdoor Sangh, he used to supervise all the minute arrangements with intense care. Let us all follow him for his simplicity and devotion to duty in every aspect. May his virtues sacrifice to others and service to humanity guide us in future for the acceleration of the Organisation.

बगहा स्थित बड़े भाई का पैतृक मकान ।

(नीचे) पैतृक मकान का एक भीतरी कक्ष और वह पलंग जहां बड़े भाई आराम करते थे ।

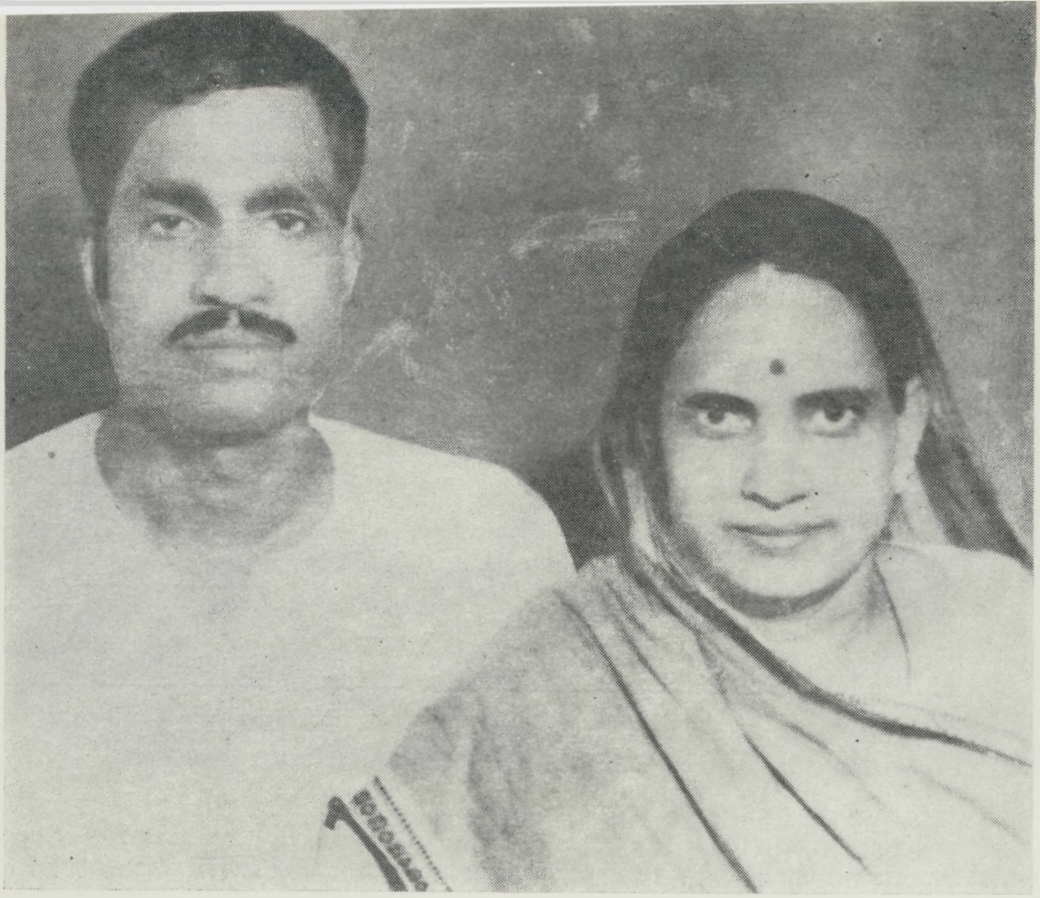

धर्मपत्नी श्रीमती फूलवती बाई के साथ बड़े भाई ।
(नीचे) बड़े भाई के भरेपूरे परिवार का चित्र ।

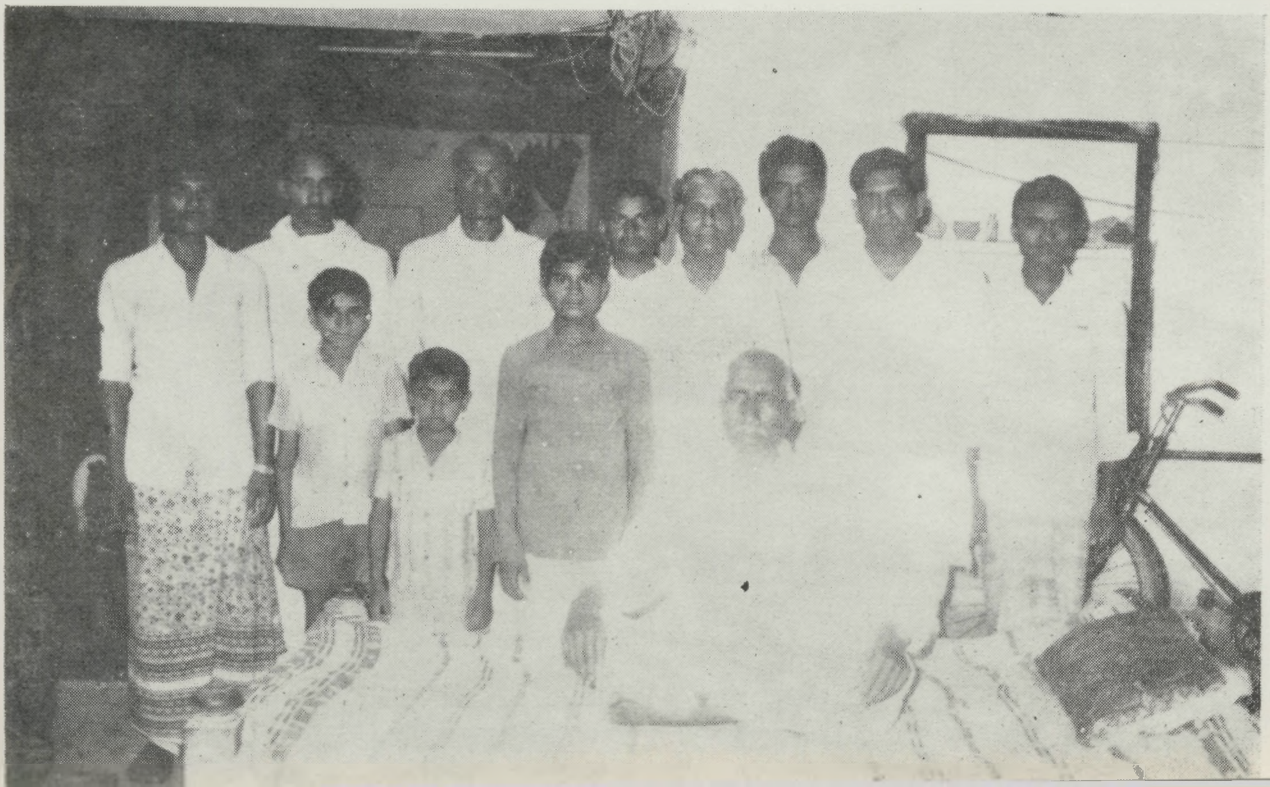

रामनरेश
भवन
भारतीय मज़दूर संघ
BHARATIYA MAZDOOR SANGH
CENTRAL OFFICE
भारतीय मज़दूर संघ
BHARATIYA MAZDOOR SANGH
CENTRAL OFFICE

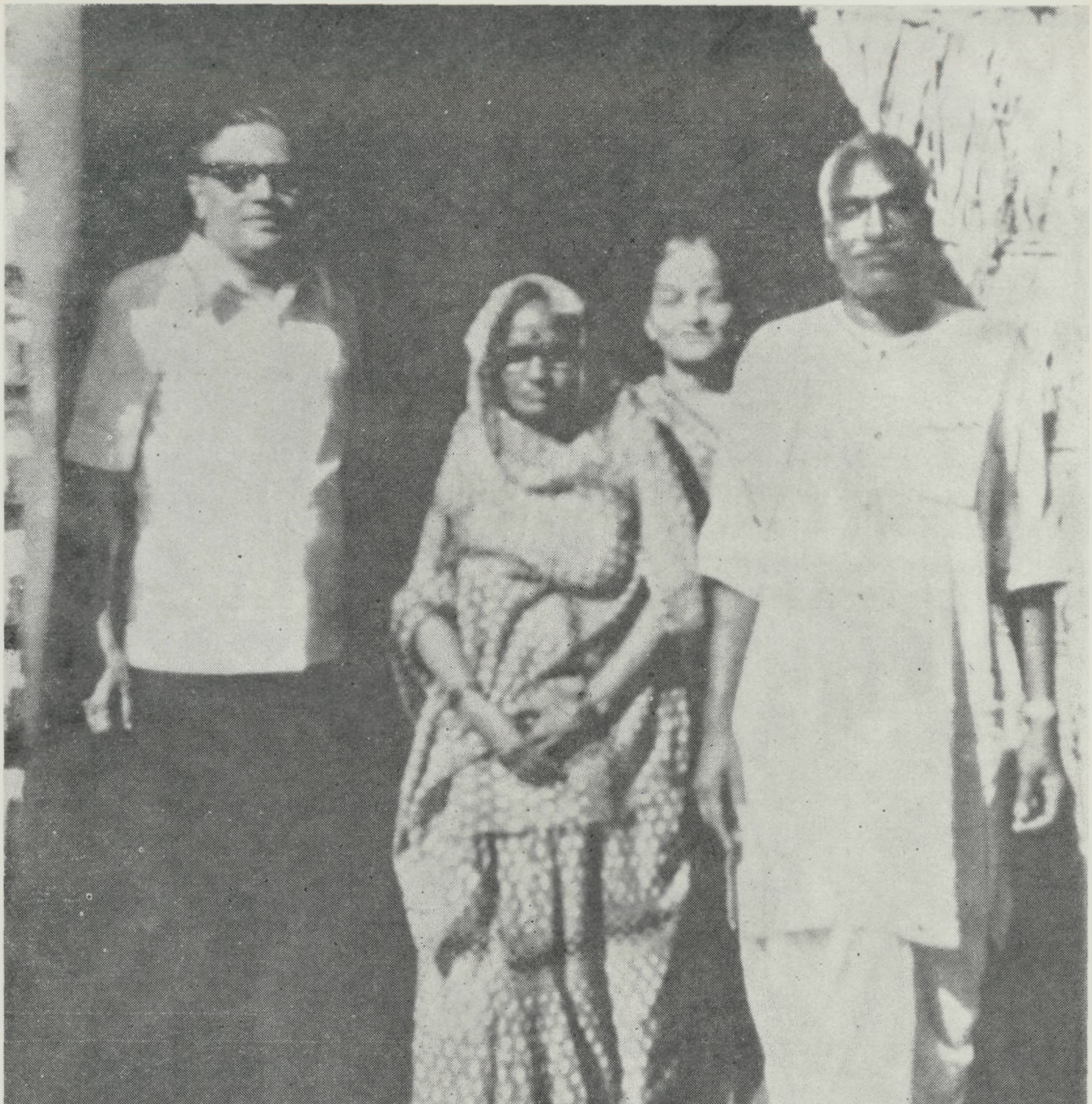

बड़े भाई और उनकी पत्नी, मजदूर संघ के अध्यक्ष मनहर भाई मेहता और उनकी पत्नी मंजुला मेहता के साथ ।

अपना पसीना बहाओ

इन सब पूजा-पाठ, जप-तप और मंत्र-पाठ, और स्तुतिवानो को पड़ा रहने दो। मन्दिर के किवाड़ बन्द किए अन्धकार-मय जन-हीन कोने में चुप-चुप बैठ कर मन-ही-मन तू किसको पूजता है ? आँखें खोलकर तो देख, तेरे आराध्य-देव मन्दिर में नहीं है।

वे तो वहाँ विराजते हैं, जहाँ बंजर तोड़कर खेतहर खेती करते हैं, जहाँ पथ-निर्माता मजदूर पत्थर कूट रहे हैं और रास्ता बना रहे हैं और जहाँ की बारहमासी परिश्रम से लिखी जाती है। बरसात हो या कड़कती धूप, वे उनके बीच में हो मौजूद रहते हैं। उनके दोनों हाथ माटी में सने रहते हैं यह आडम्बर-पूर्ण पवित्र पोशाक उतार, फेंक, और उनके समान ही धूल-माटी में रम जा।

मुक्ति ? कहाँ मिलेगी यह मुक्ति ? हमारे नाथ तो खुद ही अपने को सृष्टि-बन्धन में बँधवा बैठे हैं। वे हमारे साथ सदा के लिए सम्बद्ध (संबंधित) हो गये हैं।

ये ध्यान-पूजा और फूलों की डाली पड़ी रहने दे न, कपड़े फटें या धूलमाटी में सने पर्वाह नहीं। तू कर्मयोग में उनका साथी बनकर अपना पसीना बहा।

—रविन्द्रनाथ टैगोर

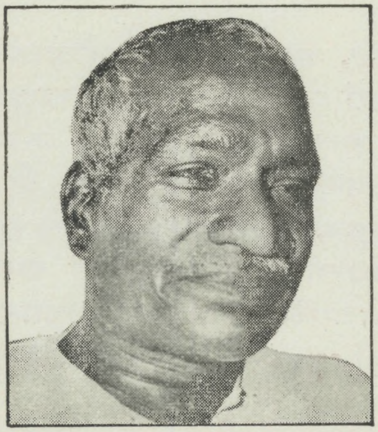

अभिनन्दन

मान्यवर श्री दत्तोपंत श्री ठेंगड़ी के मार्गदर्शन और नेतृत्व में जब भारतीय मजदूर संघ की स्थापना हुई और उत्तर प्रदेश के कार्य के निमित्त कोई ऐसा कार्यकर्ता देने का निश्चय हुआ जो मजदूरों के जीवन और उनकी समस्याओं के साथ एकरूप हो सके तो श्री रामनरेश सिंह जी को उसके योग्य पाया गया। प्रारम्भ में कोई न तो मजदूरों के क्षेत्र की जानकारी रखता था और न उस क्षेत्र में कार्य करने की इच्छा। अन्य राजनीतिक संस्थाओं—कांग्रेस, सोशलिस्ट, एवं कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बंधित मजदूर संगठन पहले से ही मजदूर क्षेत्र पर प्रभुत्व जमाये हुए थे। इस प्रकार के क्षेत्र का, कोई सहयोगी न होते हुए भी उन्होंने उत्तर प्रदेश में मजदूरों की समस्याओं का अध्ययन और मजदूर क्षेत्र में छोटी-छोटी यूनियन चलाने का प्रयास किया। इस कालखण्ड में काशी नगर से मेरा सबसे अधिक सम्बन्ध रहता था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से संघ कार्य के लिये योग्य कार्यकर्ता मिलते रहे हैं, इस कारण मैं वहां अधिक रहता था। काशी में रहने के कारण श्री रामनरेश सिंह वहां बहुधा आया करते थे। इसलिए उनसे मेरा निकट का सम्बन्ध था। वे मजदूरों के क्षेत्र में प्रभावशाली कार्यकर्ता के रूप में खड़े होंगे, प्रारम्भ में मुझे स्वयं को विश्वास नहीं था। परन्तु उन्होंने निष्ठा पूर्वक कार्य करते हुए अपने परिश्रम से कार्य खड़ा करके अपनी योग्यता सिद्ध कर दी। भारतीय जनसंघ के पंडित दीनदयाल जी के समान भले ही उनकी प्रतिभा और योग्यता न रही हो, परन्तु उनका जीवन ध्येयनिष्ठ और अत्यन्त सरल था। बाल्यकाल में विवाह होने के पश्चात् भी, गृहस्थ आश्रमी होते हुए भी, उन्होंने उस काल में संघ के कार्यकर्ताओं के सम्मुख एक असामान्य और अत्यंत प्रेरणादायी आदर्श प्रस्तुत किया। मजदूर संघ का कार्य जैसे-जैसे बढ़ता गया, उनका प्रमुख केन्द्र उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा औद्योगिक केन्द्र, कानपुर बना। कानपुर को ही केन्द्र बनाकर वे उत्तर प्रदेश में प्रवास करने लगे। जब भारतीय जनसंघ एक प्रभावशाली राजनीतिक दल के रूप में उभरा तो वे दो बार उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य भी चुने गये। वे वहां भी संघ के आदर्श प्रचारक के समान ही सादर सरल जीवन व्यतीत करते थे। विधान परिषद् के सदस्य होने के कारण जो धन प्राप्त होता था उसे वे संघ कार्यालय में जमा करते थे। अपने श्रम और निष्ठा के परिणामस्वरूप वे मजदूर संघ के अखिल भारतीय महामंत्री बने।

अधिकतर लोग एवं संघ के स्वयंसेवक भी उनको बड़े भाई के नाम से जानते और पुकारते भी थे। उनका यही नाम अंत तक चलता रहा।

महामंत्री के नाते जब वे सारे देश में प्रवास करने लगे और माननीय दत्तोपंत जी ठेंगड़ी का अत्यन्त निकट का सानिध्य उन्हें मिला तो मजदूर क्षेत्र के ऐसे श्रेष्ठ कार्यकर्ता बने कि श्री ठेंगडी जी ने उन्हीं के कंधों पर सारा दायित्व डाल दिया और अपना पर्याप्त समय भारतीय किसान संघ को खड़ा करने में लगाना शुरू कर दिया। अत्यधिक परिश्रम और प्रवास के कारण कभी-कभी उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता था। काशी के डॉ० केशवानन्द नौटियाल का जो उनके परिवारिक चिकित्सक थे, कुछ वर्षों तक चुनार तहसील के उन ग्रामों में संघ की ओर से एक निःशुल्क चिकित्सालय भी चलाते थे एवं प्रचारक के नाते भी कार्य देखते थे, बड़े भाई एवं उनके परिवार के साथ निकट का सम्बन्ध था। उनके स्वास्थ्य का निरीक्षण वही करते

'बड़े भाई' श्रम समर्पण और निष्ठा के अग्रदूत

भाऊराव देवरस

वाराणसी जिले के निकट का जिला है मिर्जापुर। मिर्जापुर जिले की एक तहसील है चुनार। पुराने समय में काशी नगर के धनाढ्य और प्रतिष्ठित व्यक्ति मनोरंजन और आमोद भ्रमण के लिए चुनार जाते थे। विंध्याचल पर्वत की अंतिम श्रेणियां चुनार तक पहुंची हैं। उन श्रेणियों में कुछ रमणीय प्रपात हैं। और कुछ स्थानों पर सुन्दर तालाब भी बने हैं। गंगाजी का प्रवाह भी चुनार के पास ही है। यहां अति प्राचीन सुप्रसिद्ध किला आज भी विद्यमान है।

वाराणसी के निकटवर्ती क्षेत्रों में जब संघ की शाखाओं का विस्तार होने लगा तो इस छोटे से तहसील केन्द्र में भी, जिसकी जनसख्या उस समय ५-६ हजार के लगभग होगी, संघ की शाखा प्रारम्भ हुई। प्रारम्भ के स्वयंसेवकों में थे श्री रामनरेश सिंह। वे उस समय संभवतः चुनार तहसील में लिपिक का काम कर रहे थे। यह कालखण्ड १९४८ के पूर्व का था। १९४८ में संघ पर लगे प्रतिबन्ध के पूर्व का। काशी और चुनार के मध्य एक छोटा सा ग्राम प्रतापपुर है। चार-पाँच सौ की जनसंख्या वाले इस ग्राम में भी संघ कार्य प्रारम्भ हुआ। धीरे-धीरे आसपास के ग्रामों में भी संघ-शाखाओं का विस्तार होने लगा, और संघ का अच्छा कार्य क्षेत्र बन गया। इन ग्रामों में से एक बगही ग्राम के निवासी थे श्री रामनरेश सिंह। कुछ वर्षों पश्चात्, श्री रामनरेश सिंह चुनार तहसील के कार्यवाह का दायित्व लेकर कार्य करने लगे। संघ पर से प्रतिबन्ध हटने के पश्चात् संघ कार्य पुनः बढ़ने लगा तो उन्होंने नौकरी छोड़ दी और संघ प्रचारक के नाते कार्य करने लगे।

हमारे छोटे "बड़े भाई" रामनरेश सिंह

प्रो० राजेन्द्र सिंह
सरकार्यवाहक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

रामनरेश सिंह जिनको हम लोग स्नेह से "बड़े भाई" कहते थे, एक मई की रात कानपुर के हेलेट ग्रस्पताल में काल कवलित हो गये। उस समय वे ग्रपने जीवन के ६० वें वर्ष में थे। पिछले नवम्बर मास (१९८६) में उनके मस्तिष्क में एक रसौली का पता चला जिसके कारण उनकी स्थिति लकवे जैसी हो गयी थी। बाम्बे हास्पिटल में उस पर दिसम्बर में शल्य-क्रिया हुई ग्रौर फिर जनवरी–फरवरी मास में किरण उपचार हुग्रा। इन दोनों उपचारों के फलस्वरूप उनके स्वास्थ्य में काफी सुधार हुग्रा ग्रौर वे मार्च में ग्रपने पुराने कार्य क्षेत्र कानपुर, लखनऊ, वाराणसी जाकर ग्रपने घर के निकटस्थ लोगों से भी मिल ग्राए। परन्तु मार्च में वापस लौटने पर स्थिति पुनः खराब हो गयी। वे पुनः पूना गये पर कीमोथेरेपी के ग्रतिरिक्त कुछ ग्रन्य करना संभव नहीं था। जब यह निश्चित हो गया कि वे कुछ दिनों के ही मेहमान हैं तो उन्हें उनके पुराने सहयोगियों के बीच कानपुर लाया गया ग्रौर वहीं हेलेट ग्रस्पताल के एक निजी वार्ड में रखा गया। उनकी हालत कई दिन से गम्भीर चल रही थी। मैं भी तीन दिन पूर्व उनको देखकर ग्राया था। वे किसी को पहचानने की स्थिति में नहीं थे।

सन् १९४२ में हाई स्कूल पास कर वह मिर्जापुर कचहरी में नकल नवीस के रूप में कार्य करने लगे। एक छोटा सा मकान किराये पर था। उसमें चुनार तहसील से ग्राये हुये कुछ विद्यार्थी भी रहते थे। इसी समय श्री माधव देशमुख रा. स्व. संघ के प्रचारक होकर मिर्जापुर ग्राए। उन्हीं के सम्पर्क में ग्राकर वे स्वयंसेवक ग्रौर कार्यकर्ता बने। विवाहित होने के बाद भी वे प्रचारक बने। मगर घर की चिंता ने उन्हें कभी नहीं सताया।

थे। अंतिम बीमारी के पूर्व कुछ कष्ट प्रारम्भ हुए और जब रोग का निदान ठीक प्रकार से करने के लिए उन्हें बम्बई लाया गया तो बम्बई के तज्ञ चिकित्सकों ने निदान किया कि इनको मैलिग्नैन्ट ट्यूमर है। तब तक रोग असाध्य हो गया था। कुछ तात्कालिक चिकित्सा होती रही। परन्तु अन्त में सभी इस निर्णय पर पहुंचे कि इनके जीवन का अन्त निकट है। अवस्था थोड़ी ठीक होने के पश्चात् डाक्टरों ने उनको उनके जन्मग्राम ले जाने की अनुमति देकर उपचार चिकित्सा की दिशा निर्धारित कर दी। परन्तु ग्राम में उस प्रकार की चिकित्सा उपलब्ध न होने से चिकित्सा चल न सकी। पहले काशी विश्वविद्यालय के चिकित्सालय में रखकर अन्त तक वहीं उपचार हो, यह विचार हुआ। परन्तु शायद वे अपने ग्राम व परिवार के इतना निकट रहना नहीं चाहते थे इस कारण उन्हें कानपुर चिकित्सालय में भर्ती किया गया। कानपुर से दिल्ली प्रायः प्रतिदिन उनके स्वास्थ्य का समाचार आता था। मैं स्वयं उस काल में अस्वस्थ होने के कारण उनसे मिलने न जा सका। परन्तु संघ के माननीय श्री रज्जू भैया उनसे मिलते रहते थे। उनकी मृत्यु के दो दिन पूर्व वे उन्हें मिलकर आये थे और तभी उन्होंने शीघ्र ही सर्वस्व समाप्त होने की सम्भावना की सूचना दी थी।

श्री रामनरेश सिह "बड़े भाई" सचमुच श्रम समर्पण और निष्ठा की एक अद्भुत मिशाल थी। योग्यता अर्जन, दायित्व का निर्वाह और कार्य सम्पादन की कला सीखना हो तो कोई उनके जीवन प्रकाश में बैठ कर सीखो।

रामनरेश सिंह १९६० तक कानपुर कार्यालय में रहे। स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक होने पर उनके विषय में विचार चल ही रहा था कि श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने अनुरोध किया कि उत्तर प्रदेश में मजदूर संघ के कार्य में कुछ वकील और कुछ मजदूर नेता साथ आए हैं, पर उन सबको साथ में ले चलने वाला, हिसाब—किताब में श्रेष्ठ, कानून समझने की बुद्धि रखने वाला और समाज के श्रमिक वर्ग का विश्वास भाजन कोई कार्यकर्ता उन्हें चाहिए। हम लोगों ने बड़े भाई को भारतीय मजदूर संघ में भेजने का निश्चय किया। बड़े भाई को पूरी तरह न जानने के कारण हमारे कुछ सहयोगियों और ठेंगड़ी जी को भी पहले हमारा चयन पूरी तरह नहीं जंचा। पर थोड़े दिनों के कार्य संचालन के बाद उन्होंने अपनी ऐसी प्रतिभा दिखाई कि सभी उनसे प्रभावित हुए। नये कानून में मजदूर के हित और अहित को समझने की वे गहन दृष्टि रखते थे। ऊपर से रंगरूप में तो पूरे मजदूरों के साथी लगते ही थे। मजदूरों के साथ खूब घुलने-मिलने पर भी उनको अनुशासन में रखते थे।

एक बार यह विचार-विमर्श चला कि क्यों न श्रमिकों के हितों की रक्षा हेतु संघर्ष करने के लिए श्रमिक परिवार के एक व्यक्ति को विधान सभा में भेजा जाय। यदि इस संगठन का एक कर्यकर्ता विधायक रहा तो उसको घूमने और दौरा करने के लिए सारी सुविधायें सरकार से मिलेंगी। यह विचार बनते ही १९६८ में उत्तर प्रदेश विधानसभा क्षेत्र से बड़े भाई विधान परिषद के सदस्य चुने गये। भारतीय जनसंघ, जिसके उस समय विधानसभा में लगभग १०० सदस्य थे अपने ३३ मत उनको देने को तैयार हो गया। इस प्रकार रामनरेश जी १९६८ से १९७४ तक विधायक रहे। उनकी सदस्यता का आर्थिक लाभ भी मजदूर संघ को ही मिला। क्योंकि उनका निजी व्यय बहुत कम था। अपनी गतिविधियों के कारण विधानसभा में वे सभी विधायकों की प्रशंसा के पात्र रहे। यहां तक कि जब आपत्काल में जनसंघ के केवल ४० विधायक रह गये और एक ही व्यक्ति विधान परिषद में भेजा जा सकता तब पुनः १९७६ में बड़े भाई का नाम ही तय हुआ क्योंकि अन्य नामों पर विवाद होने और मत विभाजन की संभावना थी। विधायी कार्य में भी बड़े से बड़े व्यक्ति के साथ बात करने की उनकी क्षमता से सभी प्रभावित होते थे। श्रम मंत्री उनसे सदैव सावधान रहता था, क्योंकि कानून के साथ वे व्यवहरिक कठिनाईयों को भी जानते थे और उन्हें उजागर करने में उनको कोई संकोच नहीं होता था।

धीरे-धीरे मजदूर संघ देश के मान्यता प्राप्त संगठनों में से एक हो गया। उत्तर प्रदेश में उसका क्रम पहला है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार सदस्य संख्या और यूनियन संख्या दोनों में अखिल भारतीय स्तर पर उसका दूसरा स्थान है। श्रम वार्ताओं में उसके प्रतिनिधि जाने लगे। ४०-५० वर्षों से श्रम क्षेत्र में कार्यरत दिग्गज कम्युनिस्ट विचारों के अनेक नेताओं के साथ कंधा रगड़ने का अवसर भी मजदूर संघ के लोगों को मिला। पर अपनी स्पष्ट नीतियों के कारण वे कहीं भी पीछे नही रहे। अपनी राष्ट्रवादी श्रम नीति पर गर्व होने के कारण उन्होंने भारतीय श्रम दिवस के रूप में विश्वकर्मा दिवस मनाने का निश्चय किया तो "मे-डे" को विश्व दिवस मानने वाले कुछ चौके। उस समय तो कुछ लोग सशंकित हुए पर उस पर दृढ़ रहने के कारण और उसका भारत के रक्त संस्कारों से सम्बन्ध होने के कारण धीरे-धीरे उसने अपना स्थान बना

मेरा और उनका सम्पर्क सन् १९४८ में नैनी जेल में उस समय हुआ जब वे बहुत बड़ी संख्या में विन्ध्याचल के पण्डों सहित स्वयंसेवकों को लेकर पहली और दुसरी बार सत्याग्रह में आये। विन्ध्याचल के पण्डों को अनुशासित रखना सरल नहीं था। उनको अच्छे खान-पान की आदत थी। पर बड़े भाई ने जिस कुशलता से उनको सम्भाला, उससे मेरे मन पर उनकी नेतृत्व क्षमता की छाप लग गई।

जेल से मुक्त होने के बाद मिर्जापुर और विन्ध्याचल तहसीलों का संघ कार्य देखते हुए उन्होंने विन्ध्याचल के पण्डों की व्यवस्था सुधारने का काम हाथ में लिया। उसी समय छोटी-मोटी मारपीट के साथ एक बड़ा काण्ड भी हो गया, जिसके कारण कचहरी में उनकी बहुत शक्ति लगी किन्तु बड़े भाई व्यवस्था सुधारने में सफल रहे और अधिकांश पण्डों के उस व्यवस्था पर हस्ताक्षर भी हुए। इस व्यवस्था से वे छोटे और दुर्बल पण्डे, जो जोर-जबरदस्ती करने की स्थिति में नहीं थे, बहुत लाभान्वित हुए। इस प्रसंग में भी बड़ें भाई की नेतृत्व कुशलता के गुणों का पूरा प्रमाण मिला।

बड़े भाई के प्रयास से चुनार तहसील में एक जमीन मिलने पर १९५० में पुरूषोत्तम चिकित्सा लय की स्थापना भी हुई। एक जूनियर स्कूल भी शुरू हुआ। डाक्टर केशवानन्द नौटियाल (तहसील प्रचारक) के साथ बड़े भाई इस कार्य की भी देखरेख करते थे। उक्त विद्यालय ने बहुत प्रगति की। आज वह इन्टर कालेज है। पुरूषोत्तमपुर चिकित्सालय ने भी क्षेत्र में अच्छा नाम कमाया। शायद चुनार उत्तर प्रदेश की पहली तहसील थी जहां संघ की ५० शाखायें हो गई। पर यहां पर भी गांव के कुछ लोगों ने स्कूल की दी हुई भूमि पर जबरदस्ती कब्जा करना चाहा और फौजदारी में एक व्यक्ति मारा गया। डॉ० नौटियाल का इस मारपीट से कोई सम्बन्ध नहीं था। फिर भी आरोप लगा। जिला प्रचारक होने के कारण मुकदमे की जिम्मेदारी बड़े भाई पर आ पड़ी। इसमें उनका बहुत समय और शक्ति नष्ट हुई। १९५६ में जब मैं इस क्षेत्र के दौरे पर गया तो देखा कि बड़े भाई को सोने के समय रात भर रह-रह कर खांसी आती है। प्रातः काल पूछने पर पता चला की खांसी दो-तीन महीने से है। मुकदमों के कारण वे उस पर ध्यान नहीं दे पाये। मैं उन्हें अपने साथ काशी ले गया। एक्सरे कराने पर निदान में क्षयरोग का पता चला। ऐसी स्थिति में उन्हें विश्राम की आवश्यकता थी, इसलिए तुरन्त उन्हें कानपुर प्रांतीय कार्यालय ले गया, जहां वे चार वर्ष रहे।

तब मैं उत्तर प्रदेश का प्रांत प्रचारक था। उस समय मुझे उनकी कार्यक्षमता की बहुत निकट से देखने का अवसर मिला। कार्यालय का हिसाब अत्यन्त व्यवस्थित था कानपुर से पेटियां (बेल्ट) बनकर देशभर में जाती थीं। उनकी देखरेख के कारण सब शिकायतें समाप्त हो गई। प्रांतीय व्यवस्था से कुछ साहित्य भी हर जिले में जाता था। उसका हर जिले से व्यवस्थित रूप से हिसाब चुकता रहने लगा। उनकी इस कुशलता से आभास हो गया कि यह हिसाब-किताब में बहुत पक्का व्यक्ति है। वे रद्दी कागज भी बेचकर रूपया हिसाब में जमा करते। कहीं पैसे-पाई की भूल नहीं मिलती।

ध्येयसमर्पित जीवन

मनहर भाई मेहता
अध्यक्ष,
भारतीय मजदूर संघ

भारतीय मजदूर संघ के महामंत्री रामनरेश सिंह अर्थात् मा. बड़े भाई हम लोगों को छोड़ कर चले गये । भारतीय गगन मंडल से एक और ज्योतिमय नक्षत्र अदृश्य हो गया । प्रखर राष्ट्रभक्त, कुशल संगठक, आदर्श स्वयंसेवक और मजदूरों के हृदय सम्राट बड़े भाई को कालचक्र की गति ने हमसे छीन लिया । भारतीय संस्कृति के पुजारी, प्राचीन राष्ट्र के अर्वाचीन निर्माता, राजनीतिमुक्त श्रमिक संघ के पक्षधर तथा मजदूरों के लिए जीवन सर्वस्व लूटाने वाला नवदधीचि हमारे बीच से सदा के लिए अदृश्य हो गया । जिस महान विभूति के व्यक्तिमत्व में हम अविरत कृतत्व, कुशल नेतृत्व और भावात्मक भ्रातृत्व के पवित्र त्रिवेणी संगम का साक्षात् दर्शन करते थे उस महान विभूति को हम खो बैठे हैं ।

उनका पुण्य स्मरण करते ही हमारे ध्यान में आता है कि उनका जीवन पूर्ण रूप से राष्ट्र समर्पित था । बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में त्याग और सेवा के उदात्त संस्कार पाने के कारण 'क्षण-क्षण, तिल-तिल, हंस-हंस, जल-जल' अपना तन जलाते हुए वे राष्ट्र की नि:स्वार्थ सेवा करते रहे । राष्ट्र सेवा के एक साधन के नाते उन्होंने मजदूर क्षेत्र में १९६० में प्रवेश किया और भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक मान्यवर दत्तोपत ठेंगड़ी ने उनके श्रेष्ठ गुणों का उपयोग संगठन की वृद्धि के लिए शीघ्र ही उत्तर प्रदेश के संगठन मंत्री के नाते उनकी नियुक्ति की ।

लिया । यह ठीक है कि इन विषयों में चिन्तन का काम अधिकांशतः मान्यवर ठेंगड़ी जी का ही रहा है, पर उसके क्रियान्वयन में बड़े भाई का महत्व भी कम नहीं रहा ।

आज मजदूर संघ में अनेक प्रमुख लोग है । काम करने वालों की एक टोली हैं । अप्रैल १९८५ में चीन के मजदूर संगठनों ने भारतीय मजदूर संघ के पांच लोगों को बुलाया । बड़े भाई बीमारी के कारण नहीं जा सके, पर यह क्या कम है कि तथाकथित साम्यवादी देश एक राष्ट्रीय भावना वाले मजदूर संगठन को विचार-विमर्श करने के लिए न्यौता दें ?

आज सभी कम्युनिस्ट देशों में राष्ट्रवाद विकसित हुआ है और उसकी छाप सभी क्षेत्रों पर पड़ रही है । चीन अब यह कहने लगा है कि दुनियां आज मार्क्सवाद से बहुत आगे बढ़ गई है । ऐसी अवस्था में भारत के श्रम क्षेत्र में मार्क्सवादियों के मार्गदर्शन का उत्तरदायित्व भी भारतीय मजदूर संघ पर है । जहां सिद्धान्तों का प्रमुख स्थान होगा और जिस संगठन के पास ठेंगड़ी जी जैसे अग्रण्य विचारक और भारतीय चिन्तन के अक्षय भण्डार की पूंजी है—सहज ही उन विचारों को सफलता के साथ क्रियात्मक रूप प्रदान करने वाले सैकड़ों समर्पित कार्यकर्ता भी होंगे । किन्तु उन कार्यकर्ताओं को साथ लेकर निश्चय के साथ भयंकर तूफानों में भी नाव खेने वाला मांझी चिर निद्रा में लीन हो गया । बहादुर सहयोगियों, नई राहें जोड़ने वाले साथियों, उनके जाने का दुःख तो मनाना परन्तु एक संकल्प भी मन में रखना कि भगवान का स्मरण रखकर निःस्वार्थ भाव से काम करने वालों को सदा स्वयं से ही मार्गदर्शन मिलता है । हम प्रार्थना करें कि उस निस्पृही दिवंगत आत्मा की स्मृति हमें कभी न निराश होने दे, न अभिमानी बनने दे

कठोर किन्तु कोमल

वे एक गांव में पैदा हुए और पले । उन्हें कालेज में जाने का अवसर नहीं मिला, फिर भी रामनरेश सिंह जो इतनी ऊचाई तक कैसे पहुंचे । हम उनके उन गुणों का अनुकरण कर सकते हैं, अन्य बातों की नकल तो उचित नहीं । उनको निकट से जानने के कारण मैं समझता हूं कि ध्येय के प्रति उनका समर्पण विलक्षण था । उसके लिए वे असीम परिश्रम कर सकते थे । प्रामाणिकता उनमें कूट-कूट कर भरी थी । इसलिए उनकी स्पष्टवादिता को कोई बुरा नहीं मानता था । वह आर्थिक मामलों में बड़े कठोर थे । श्रम क्षेत्र में इस ओर जरा कम ही ध्यान रहता है । अपने सहयोगियों के तो वास्तव में वे बड़े भाई के अपने कष्टों के विषय में सदैव निर्लिप्त रहे । उनके कैंसर का निदान छः महीने पूर्व ही हो पाया, पर कष्ट लगभग चार वर्षों से था । चलना फिरना कठिन होने के बावजूद वे अपने पार्थिक शरीर से निरन्तर काम लेते रहे। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे देश की प्रमुख बीस लाख सदस्यों वाले मजदूर संगठन के महामंत्री पद के दायित्व को सफलता पूर्वक निभाने में सफल रहे । अपने ऐसे छोटे "बड़े भाई" को हमारी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि ।

जारी रखने का आग्रह रखा । अतः मजदूर हित की रक्षा के लिये जहां भी हड़ताल और आंदोलन करने की आवश्यकता थी वहां भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं ने आंदोलन किये । इसके परिणामस्वरूप मजदूर जगत में भा. म. संघ ने मजदूरों का अतीव विश्वास प्राप्त किया । १९७८ के जयपुर में हुए पंचम अखिल भारतीय अधिवेशन में बड़े भाई ने आपत्स्थिति में प्राप्त किया हुआ मजदूरों के विश्वास का पूरा लाभ लेकर संख्यात्मक और गुणात्मक कार्य कैसे बढ़ाया जाय इसकी योजनाएं बनाई । फलस्वरूप भारतीय मजदूर संघ का कार्य तीव्र गति से बढ़ा । १९८१ तक के केवल पांच साल के उनके महामंत्री पद की अल्पावधि में भारतीय मजदूर संघ की सदस्य संख्या ९.२ लाख से हनुमान छलांग मारकर १८.०५ लाख पहुंच गई । मजदूर क्षेत्र में भगवा झंडा उच्च स्थान पर फहराने लगा । यह निश्चित रूप से बड़े भाई के नेतृत्व की महान सिद्धि है । केन्द्रीय सरकार ने सभी केन्द्रीय संगठनों की सदस्यता की जांच की । केन्द्रीय सरकार ने, राजवंशी इंटक को छोड़ दिया जाय तो भारतीय मजदूर संघ को प्रथम स्थान पर घोषित किया। भारतीय मजदूर संघ के संगठन की इस अद्वितीय प्रगति का प्रमुख श्रेय बड़े भाई को है ।

संतों के सम्बन्ध में यह कहा गया है कि वे 'वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादीपि' होते हैं । बड़े भाई भी ऐसे ही थे । साधारण तौर पर सभी से उनका व्यवहार स्नेहपूर्ण एव ममतापूर्ण रहता था परन्तु स्वयं अनुशासन प्रिय होने के कारण अनुशासन भंग उनको कभी सहन नहीं होता था । संगठन के सर्वोच्च व्यक्ति को भी अपने कनिष्ठ अधिकारियों के अनुशासन में रहना चाहिये, उनका ऐसा निरहंकारी और आदर्श अनुशासन था । उनका आग्रह था कि स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा तय किया हुआ पूर्व निश्चित कार्यक्रम किसी भी परिस्थित में रद्द न हो । शरीर में एक सौ चार-पांच डिग्री ज्वर होने पर भी उन्होंने भाषणों तथा बैठकों के कार्यक्रम निभाये हैं । थाना में कार्यकर्ताओं की बैठक थी । आपको १०४ डिग्री ज्वर था । पैर में अतीव दर्द हो रहा था, परन्तु किसी को भी इसका पता नहीं लगने दिया । बैठक लेने के लिए निकल पड़े । मैं भी साथ में था । बैठक लेते-लेते अचानक कुछ क्षण रुक गये । मैंने पूछा क्या हुआ ? परन्तु उन्होंने कुछ नहीं कहा और फिर विनोद, वार्तालाप शुरू हो गया । मुझे संदेह था कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है । मैंने उनके हाथ का स्पर्श किया । ध्यान में आया कि उनको लगभग १०५ ज्वर है । मुझे मालूम था कि बड़े भाई देश-व्यापी अखंड भ्रमण, सर्वव्यापी, सर्वकश विस्तार योजना सहस्रों कार्यकर्ताओं को व्यक्तिगत संपर्क द्वारा भावनात्मक रूपांतर सहस्त्रों वैयक्तिक पत्र द्वारा उद्बोधन आदि अपने कार्यक्रम शरीर की परवाह न करते हुए जारी रखते हैं । इसलिए मुझे बड़े भाई को कहना पड़ा कि आपको बैठक छोड़कर तुरन्त मेरे साथ डाक्टर के पास चलना होगा । उनकी दृष्टि से यह इस प्रकार का अनुशासन भंग था । इसलिए बड़ी हिचकिचाहट के साथ वह मेरे साथ डाक्टर के पास गये । इस प्रकार स्वयं अपने प्रति अति कठोर होने के कारण स्वाभाविक रूप से अनुशासन भंग वह सहन नहीं कर पाते थे। पुष्प के समान कोमल स्वाभाव वाले तथा सदैव प्रसन्न रहने वाले बड़े भाई अनुशासन के मामले में अत्यन्त कठोर हो जाते थे । ऐसे अवसर पर प्रगट होने वाला बड़े भाई का क्रोध सात्विक एवं क्षणिक होता था । थोड़ी देर के पश्चात् उनके स्थायी स्वभाव के अनुसार फिर वही हास्य और वही स्नेह का अनुभव कार्यकर्ताओं को होता था ।

मजदूर क्षेत्र में बिल्कुल नये होते हुए भी एक साल में ही उन्होंने मजदूर क्षेत्र के प्रत्यक्ष कार्य के विभिन्न पहलुओं के विषय में व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की। बाद में इस क्षेत्र में अनेक नये कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करने की दृष्टि से १९६२ में उन्होंने 'यूनियन पथ प्रदर्शक' नाम की पुस्तक लिखी। कार्यवृद्धि की गति बढ़ाने की दृष्टि से उन्होंने संगठन को स्वावलंबी तथा संघर्षक्षम बनाने का प्रयत्न किया। उनका सदैव कहना रहा कि ट्रेड यूनियन का कार्य मजदूरों में जागृति निर्माण करना है। उनकी संगठित शक्ति पैदा करना है। सभी मजदूरों को साथ लेकर चलना और उसके आधार पर न्यायपूर्ण मांगों का हासिल करना है। उसकी मांगों की पूर्ति शॉर्टकट से नहीं, हिंसा से नहीं, विधायक अथवा सांसद से नहीं, सत्ताधारी पक्ष के द्वारा नहीं, अपितु मुख्यतः मजदूरों के संगठित सामर्थ्य के द्वारा ही करना है। जो यूनियन राज्य के सत्ता के आधार पर बढ़ती है सत्ता के टूटते ही वह भी टूट जाती है। ट्रेड यूनियन संरक्षणात्मक नहीं, अपितु आक्रमक संस्था है। ट्रेड यूनियन याचकों की या रोने वालों की नहीं अपितु आह्वान स्वीकार करने वाली पराक्रमी संस्था है जिसकी शक्ति को देखकर अन्याय और शोषण करने वाले प्रबंधक, पूंजीपति अथवा सरकार भय से कंपित हो। इस स्पष्ट धारणा त्याग, तपस्या, वीर वृत्ति तथा कार्यकर्ताओं को काम में जुटाने की उनकी कुशलता के कारण उत्तर प्रदेश का कार्य दिन दूना रात चौगुना बढ़ा। शून्य में से सृष्टि निर्माण किया। १९७५ तक उत्तर प्रदेश में २७७ यूनियन्स तथा सदस्यता १,२६,००० तक पहुंचा दिया।

२६ जून, १९७५ को भारत सरकार ने आपत्स्थिति घोषित की। नागरिकों की मूलभूत स्वातंत्रताएं छीन लीं गई। मजदूरों के अधिकारों का निर्लज्ज अपहरण किया गया। इस राष्ट्रीय आपत्ति का मुकाबला करने के लिये 'लोक संघर्ष समिति' स्थापित हुई। इसी समिति के कार्य की जिम्मेदारी उठाने और लोकतंत्र की पुन: स्थापना करने के लिए मान्यवर दत्तोपंत ठेंगड़ी को भारतीय मजदूर संघ के महामंत्री पद से निवृत्त होना पड़ा। उस संकटकालीन परिस्थिति में बड़े भाई की कार्यक्षमता, संगठन कुशलता, साहस तथा निर्भयता को ध्यान में रखकर भारतीय मजदूर संघ के महामंत्री पद की जिम्मेदारी सौंपी गई। यह समय राष्ट्र के लिये ही नही, भारतीय मजदूर संघ तथा उसके नवीन कर्णधार बड़े भाई के लिए भी कसौटी का था।

इस झंझावात के समय में बड़े भाई ने अपूर्व सिद्धि प्राप्त की। उन्होंने मजदूर संघ की नौका को न केवल सुरक्षित रखा परन्तु उसे आगे भी बढ़ाया। राष्ट्रीय संघर्ष की सफलता में मजदूर संघ का महत्वपूर्ण योगदान रहा। प्रमुख रूप से उनके प्रयत्नों के कारण ही आपत्स्थिति के विरोध में चलाये गए लोकसंघर्ष में भारतीय मजदूर संघ के एक लाख से भी अधिक कार्यकर्ताओं ने कानून तोड़ा तथा ५००० कार्यकर्ता बन्दी बनकर जेल गये। इनमें २५० मीसा के अन्तर्गत गिरफ्तार हुए थे। बड़े भाई ने एमरजेंसी का मुकाबला करने के लिए एच. एम. एस., सीटू आदि श्रमिक संगठनों को भी एक मंच पर सफलतापूर्वक लाया तथा तानाशाही के अन्तर्गत चल रही श्रमिक विरोधी नीतियों के खिलाफ संयुक्त विरोध आयोजित किया। बड़े भाई ने आपत्स्थिति में सभी मुसीबतों का सामना करते हुए दिन-प्रतिदिन की गतिविधियां

क्यों उठा लिया बगवैया ने ?

श्री लक्ष्मण श्री कृष्ण भिड़े,
नौरोबी.

व्यक्ति चाहे और व्यक्ति को सुयोग्य वातावरण मिले अर्थात् व्यक्ति और वातावरण संयोग भाग्य से मिले तो व्यक्ति कितनी प्रगति, कितना विकास कर सकता है इसका एक बिरला उदाहरण प्रस्तुत करने वाला जीवन है श्री बड़े भाई का आदर्श जीवन । कहने के लिए बहुत उच्च नहीं, बहुत निम्न स्तर में भी नहीं, परन्तु समाज श्रेणी में मध्य से निम्न माने जाने वाली कुर्मी जाति में उनका जन्म हुआ । इस जाति में शिक्षा-दीक्षा की दृष्टि से बहुत सुविधा प्राप्त नहीं थी । 'उत्तम खेती, मध्यम बान, निषिद्ध चाकरी, भीख निदान' के सूत्र के अनुसार कृषि के उत्तम व्यवसाय में होने से धनार्जन की सुविधा होने पर भी शिक्षादि की ओर परिवारजनों का ध्यान नहीं था । कुछ थोड़ा लिखने-पढ़ने योग्य अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त हुआ कि इन परिवारों के बच्चे छोटे-मोटे काम-धन्धे की ओर बढ़ जाते थे ।

बड़े भाई के सबसे बड़े भाई श्री रमाशंकर सिंह को अपनी युवावस्था में ही राजनीति का चसका लग गया था । वे घर की ओर से लगभग उदासीन हो गए । अतः परिवार का जिम्मा दूसरे भाई श्री तेजबली पर आया । छोटी उम्र में उनसे जितना संभव था खेती संभाला । खेती से जो आमदनी होती, उससे ही घर का कार्य चलाना पड़ता । रमाशंकर सिंह उस समय कांग्रेस के कार्यकर्ता थे । गांधी टोपी लगाकर उनके साथ आने वाले सभी लोगों का घर पर स्वागत होना आवश्यक था । घर की थोड़ी आमदनी में यह सब कैसे पार लगता ? अतः श्री रामनरेश सिंह को सबसे छोटे होने पर भी अपनी शिक्षा बीच में ही छोड़कर मिरजापुर जिले की चुनार तहसील में मुंशीगीरी का कार्य स्वीकारना पड़ा । बचपन से प्राप्त ऊंचा कद और

बड़े भाई का भाषण अत्यन्त सीधी-सरल भाषा में तथा सुगम होता था। किन्तु उसके पीछे पारदर्शक सहृदयता तथा भावोत्पादकता रहती थी। उसमें श्रोताओं की पकड़ करने का सामर्थ्य रहता था। उनकी वाणी और व्यवहार, विचार और आचार तथा कथनी और करनी में अन्तर नहीं था। वह जो करते थे वही उनके मुख से प्रकट होता था। उनका एक-एक शब्द उनकी अनुभूति का आशीर्वाद लेकर ही निकलता था। वाणी में दंभ, आडम्बर या औपचारिकता नहीं थी। उनके व्यस्त जीवन में उनको बहुत अधिक अध्ययन करने की सुविधा नहीं मिली थी। अतः बड़े-बड़े ग्रन्थकारों के उद्धरण, संदर्भ आदि का प्रयोग यह आमतौर से नहीं करते थे। उन्होंने अध्ययन किया था जनमानस का। उनका अध्ययन था देश, काल एवं मजदूर क्षेत्र की परिस्थिति का। इस वाचन और अध्ययन के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया था। सहजगता उनके वक्तृत्व का प्राण थी। प्रत्यक्ष क्रियाशीलता को चालना देने वाला तथा निराशा को दूर करने वाला बड़े भाई का वक्तृत्व उनके जीवन का प्रतिबिंब होता था। केवल पठित पांडित्य का कोरा संतोष उन्हें रूचिकर नहीं था। अर्थात 'यः क्रियावान् स पंडितः' की कोटि में वे अग्रगण्य थे।

कानपुर की उनकी अंतयात्रा में मैंने प्रत्यक्ष देखा कि मजदूरों का मानव-सागर शोकाकुल होकर उनके अन्तिम दर्शन के लिए उमड़ पड़ा था। कानपुर की शोक सभा में भी अनेक केन्द्रीय श्रम संगठनों, राजनीतिक दलों तथा सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि बड़े भाई को अर्पित की। अध्यक्ष होने के कारण मुझे भी देश के कोने-कोने से उनके श्रद्धांजलि के पत्र प्राप्त हुए। इससे मुझे प्रतीति हुई कि बड़े भाई के पार्थिक देह के जाने के पश्चात् भी समाज के लाखों व्यक्तियों के हृदय में उन्होंने एक स्थायी तथा चिरंतन प्रेरणा-स्थान प्राप्त किया है। इस दृष्टि से वह मर कर भी अमर हो गये हैं। आखिर अमरत्व क्या है? देहान्त के पश्चात् भी समाजहृदय में चिरंजीव स्थान प्राप्त करने को ही तो अमरत्व कहते हैं। इस अर्थ में बड़े भाई भी अमर हो गये हैं।

हम सभी दृढ़ सकल्प करें कि हम अपनी सारी शक्ति लगाकर उनके अधूरे सपनों को पूर्ण साकार स्वरूप देंगे। उनकी मनोकामना के अनुसार श्रमशक्ति के आधार पर अपने राष्ट्र को अतीव समृद्धशाली तथा परम वैभवशाली बनायेंगे। अंततोगत्वा भारत को सम्पूर्ण विश्व में उच्चतम स्थान प्राप्त करवा देंगे।

यह सही है कि इस आघात के कारण हम स्तब्ध हैं। हमारा मन व्यथित है। हमारी बुद्धि व्याकुल है। अंतःकरण प्रक्षुब्ध है। आंखों में आंसू है। परन्तु एक हाथ से आंसू पोंछ कर दूसरे हाथ से हमें कार्य करना होगा? इस पीड़ा की उर्जा को कार्यतत्परता में बदलने की प्रक्रिया अविलम्ब प्रारंभ करनी होगी।

संघ कार्य निर्मित हुआ है। संघ इसी भाव से प्रेरितग्रक्षुण्य ग्रागे बढ़ता जा रहा है। जो कुएं में, वहीं लोटे में, जो बीज में, वही फल में, यही तो प्रकृति का नियम ही है परमपूजनीय डाक्टर जी द्वारा बीज रूप में निर्मित यह संघ-वृक्ष भी वैसा ही फल देता ग्रा रहा है।

शिविर के ग्राखिरी दिन चुनार शाखा के स्वयंसेवकों ने शिविर में सम्मिलित स्वयं-सेवकों को ग्रपना ग्रतिथि मानकर उन्हें बूंदी खाने की दावत दी थी। बूंदी भी बेशुमार बनी थी। बहुत ग्रधिक बच भी गई। शिविर का सायंकाल समारोप हुग्रा। परन्तु प्रश्न यह था कि उस बूंदी का क्या करें ? निश्चय हुग्रा कि सभी स्वयंसेवकों को घर चुनार की 'माई' का वह प्रसाद पहुंचाया जाय। ग्रडौसी-पडौसियों को भी वह प्रसाद बांटा गया।

तभी दिनांक ३० जनवरी की सायंकाल दिल्ली में महात्मा गांधी की निर्मम हत्या हुई। संघ को 'शिकार' बनाकर पूर्णतः बदनाम करने का प्रयास सुनियोजित रूप से प्रारम्भ हुग्रा। उसी योजना के ग्रंतर्गत यह प्रचारित किया गया कि मिरजापुर में सप्ताह भर मिठाई बांटी गई। मिरजापुर के संघ कार्यकर्ताग्रों की बड़े पैमाने पर धरपकड़ की गई। संपूर्ण प्रतिबंध काल में बड़े भाई ने मिरजापुर जिला संभाला। प्रतिबंध हटने पर वे जिला प्रचारक भी नियुक्त हुए। इस काल में श्री गणेशजी—विन्धयावासिनी देवी के पंडा, श्री विष्णुजी पंडा, श्री भगवानदास जी बरनवाल, श्री शंभू जी ग्रादि की मित्रमंडली ध्येयनिष्ठा की ग्रोर ग्रग्रसर होती गई। बड़े भाई का साहस, निर्भय मन से कार्य करने की प्रवृत्ति, समय सूचकता, मित्र परिवार को बढ़ाने की कला, सामने ग्राई।

विन्ध्याचल के पास ही मांडा तहसील है। जिसमें मांडा राज्य भी है। मांडा के राजा एक वयोवृद्ध साधु प्रकृति के व्यक्ति थे। ग्रपने बढ़ते हुए कार्यक्षेत्र में बड़े भाई को मांडा नरेश को भी समेटने में कोई समय नहीं लगा। मांडा में शाखा राजदरबार के पास ही प्रारम्भ की गई। स्वाभाविक ही मांडा नरेश की ग्रोर से पूछताछ होने लगी। उसी दौरान बड़े भाई की उनसे भेंट हुई। उन्होंने उनसे सहानुभूति प्राप्त करने में सफलता पाई।

विन्ध्याचल के पास एक ग्रकोढ़ी ग्राम है। वह उस समय तस्करों का ग्रड्डा था। वहां के कुछ बच्चे विन्ध्याचल पढ़ने ग्राते थे। उनका विन्ध्याचल की शाखा में ग्राना प्रारम्भ हुग्रा। ग्रकोढ़ी ग्राम में भी शाखा प्रारम्भ करने का विचार चलने लगा। परन्तु सभी को लगता था कि वहां की परिस्थिति देखते हुए वहां के ग्रभिभावक इस कार्य के लिए ग्रनुमति नहीं देंगे। बड़े भाई ने ग्राम के सामने चामुण्डेश्वरी मंदिर पर बन बिहार की योजना बनाया उसमें ग्रकोढ़ी ग्राम के बंधुग्रों को भी बुलाया। उनकी ओर से ही जलपान की व्यवस्था भी करवाया। परिणाम जो होना चाहिए था, वही हुग्रा। कुछ ग्रामवासियों ने कार्य को सराहा। वहां शाखा प्रारम्भ हुई। परन्तु शाखा के स्वरुप को देखकर तस्कर मारपीट पर उतर ग्राए। बड़े भाई शीघ्र ही वहां पहुंचें। एक सप्ताह वहीं रहे। परिणाम यह हुग्रा कि सभी ने मिलकर मान्य किया कि शाखा चलती रहे।

उमदा स्वभाव के कारण वे शीघ्र ही सर्वप्रिय लिपिक हो गए । अधिकारी, वकील और मुवक्किल सभी उन्हें चाहने लगे ।

इन्हीं दिनों उनका संबन्ध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक श्री माधवराव देशमुख से आया । 'संतासद्भिः संगः कथमपिहि पुण्येन भवति' का प्रत्यक्ष दृष्टांत उपस्थित हुआ । दोनों का परस्पर आकर्षण बढ़ता गया । श्री माधवराव देशमुख का संपर्क चुंबक और पारस के संपर्क से भी आगे बढ़कर खींचकर अपने से चिपका लेने वाला और संतों के हृदय समान छूते ही अपने जैसा बना देने वाला प्रासादिक सम्पर्क था । परिणामस्वरूप रामनरेश सिंह उनकी ओर खिचते चले गये । अपनी नौकरी छोड़कर स्वतंत्र अनुवादक का कार्य वे कैसे करने लगे और उसे भी त्याग कर माधवराव के जैसे ही संघ के प्रचारक वे कब और कैसे बने, यह भी उनके ध्यान में नहीं आया । रमाशंकर जी की ओर से प्रारंभ में कुछ विरोध का प्रयास हुआ, परन्तु माधवराव का व्यक्तित्व कुछ ऐसा था कि वह विरोध बाद में पूर्ण अनुमोदन में परिवर्तित हो गया । इतना ही नहीं तो रामनरेश सिंह परिवार में छोटे भाई होने पर भी देखते-देखते स्वाभाविक रूप से 'बड़े भाई' बन गए । जैसे-जैसे मिरजापुर जिले के संघ परिवार में उनका बड़े भाई का स्थान बनता चला गया वैसे-वैसे घर परिवार में भी कोई कार्य हो तो प्रमुख सलाहकार और निर्णायक वे ही रहने लगे अपने बगही ग्राम के मुखिया के भी वे एक आवश्यक हितैषी और सलाहकार हो गए । संघ कार्य की व्यस्तता के कारण वे तीन-तीन, चार-चार मास बाद घर आ पाते तो भी लोग उनकी सलाह के लिए तब तक रुकना पसंद करते ।

संघ कार्य में धीरे–धीरे बड़े भाई का स्थान महत्वपूर्ण बनता गया । माधवराव के द्वारा मिरजापुर जिले में निर्मित कार्यकर्ता बंधु श्री विष्णु पांडे, श्री शिवदत्तसिंह, श्री त्रिलोकीनाथ त्रिपाठी, श्री शम्भू, श्री भगवानदास बरनवाल आदि के सूत्रधार बड़े भाई ही रहे । उनमें विंध्याचल की प्रख्यात विंध्यावासिनी देवी तीर्थ क्षेत्र के प्रमुख पण्डों में श्री गणेश भी एक हैं । इन सभी को संभालना कितना कठिन कार्य था, जिन्होंने इन सभी को एकत्रित बैठकर अथवा अकेले में ही उग्र विचार करते देखा हो, वे ही इसकी कल्पना कर सकते हैं । मिरजापुर के संघचालक श्री शीतलप्रसाद जी बरनवाल (चाचा जी) और बड़े भाई ही केवल उन्हें संभाल सकते थे, अपने नियंत्रण में रख सकते थे ।

१९४८ का जनवरी मास संघ का कार्य सर्वदूर तेजी से बढ़ता जा रहा था । उसका प्रत्यक्ष परिणाम यह देखने को मिला कि उस वर्ष का मिरजापुर जिले का वार्षिक शिविर २४,२५,२६,२७ जनवरी में चुनार के प्रसिद्ध किले में लग सका । शिविर बड़े पैमाने पर हुआ था । देव-दानव युद्ध इस शिविर की विशेषता थी । बहुत जोर से युद्ध हुआ । उसे देखकर चुनार किले पर स्थित सैनिक अधिकारी भी दंग रह गए । "प्रत्यक्ष लड़ाई में भी हम इस भावना से नहीं लड़ पाते ।" सैनिक अधिकारियों ने पूछा था—"आपके लिए यह कैसे संभव हो पाता है ? वे क्या जानते कि यही घुलमिलकर कार्यरत रहने की भावना निर्माण करने का ही तो कार्य संघ कर रहा है—'तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित' की भावना होने पर भी यह चाह कि 'कुछ और भी दूं' की भावमयवृत्ति के आधार पर ही तो

ध्यान में रखने का आग्रह वे बारम्बार श्री रामदास पांडे से कर रहे थे। उनका यह स्वभाव क्या कभी भुलाया जा सकेगा ? बम्बई और पूना में भी उनकी परिचर्या करने के लिए नियुक्त अपने कार्यकर्ता बंधु-भगिनी भी उनके इस स्वभाव से प्रभावित रहे हैं।

ऐसे थे अपने बड़े भाई। सर्वगुणसम्पन्न। परन्तु भगवान ऐसे गुण सम्पन्न व्यक्ति को अपने पास शीघ्र बुला लेते हैं। स्यात् कहीं अन्यत्र अधिक अच्छे उपयोग के लिए। 'जो फूल खिले रोशन से थे, सब उठा लिए बगवैंया ने'। बागवान उन्हें उठाकर अधिक अच्छे कार्य में मंडित करने के लिए ही उनका निर्माण और पोषण करता है। बड़े भाई के विषय में भी ऐसा ही हुआ होगा।

बड़े भाई को राजनीति के क्षेत्र में भी उतरना पड़ा । चुनार तहसील के अघेड़ी क्षेत्र से विधान सभा के लिए श्री रमाशंकर सिंह चुनाव लड़ना चाहते थे । परन्तु उन्हें कांग्रेस ने टिकट नहीं दिया । अतः श्री रमाशंकर सिंह ने निर्दलीय रूप से चुनाव लड़ा । उसमें वे असफल हुए । परन्तु उससे उनकी संघ कार्य और कार्यकर्ताओं से अधिक निकटता आई । अगली बार चुनाव के लिए उन्होंने ही बड़े भाई के नाम का प्रस्ताव किया और बड़े भाई को चुनाव लड़ना पड़ा । चुनाव के समय और बाद में भी उनका संतुलन विरोधी दल के कार्यकर्ता भी मानते थे ।

इसी समह उन्हें मजदूर संघठन के कार्य हेतु श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी द्वारा मांगा गया । उस क्षेत्र में जाने के बाद उन्होंने अपने जीवन का जो विकास किया वह तो किसी की भी कल्पना के बाहर था । संघ जीवन में आने पर मनुष्य का मानसिक और व्यावहारिक विकास कैसा सहज, सुलभ और कितनो ऊंचाई तक हो सकता है इसका भी प्रत्यक्ष उदाहरण बड़े भाई का जीवन है ।

मजदूर संघ में आने के पश्चात् इस क्षेत्र से संबंधित सभी पहलुओं तथा इस क्षेत्र को श्री ठेंगड़ी जी के द्वारा दिए गए भारतीय आयाम का आकलन उन्होंने अपने अध्यवसायी जीवन से इतना परिपूर्ण कर रखा था कि किसी भी मजदूर संगठन का कार्यकर्ता उनके पास आकर अपना पूर्ण समाधान प्राप्त कर लेता था । बीच के काल में जब वे यक्ष्मा रोग से पीड़ित होकर चिकित्सा के लिए काशी आये थे तो कई दिन साथ रहने के कारण हमें उनसे वार्तालाप करने का सुयोग मिला था । उस ससय वर्ग संघर्ष की कल्पना को लेकर बिना करण समस्या निर्माण करना और अपना तात्कालिक लाभ उठा लेने का मजदूर क्षेत्र का अध्ययन भारतीय मजदूर संघ भी कर रहा है । यह कहां तक उचित है इस प्रश्न पर वे बहुत सुन्दर ढंग से अपनी कार्य-पद्धति की विशेषता बताते थे । साथ ही यह भी प्रतिपादित करते थे । कि परिस्थिति का दुर्लक्ष्य करके नहीं चल सकता । जब श्री महेश शर्मा जैसे विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं के साथ समस्याओं पर विचार करने लगते थे तो उनके सामने भी वे अपनी विचार धारा बहुत ही स्पष्ट रूप से रखकर समाधान निकालते थे । इसी प्रकार माध्यमिक शिक्षक संघ, ग्राहक संघ आदि का कार्य अपनी पद्धति से किस प्रकार हो, इसको भी मजदूर संघ की कार्यपद्धति से तुलना करके वे विशेषता के साथ रखते थे ।

हास्य विनोद में अपने सभी साथियों को योग्य शिक्षा देकर उनका विकास करते जाना, उनका स्वभाव बन गया था । कानपुर के गांधी नगर संघ कार्यालय पर रहते समय श्री श्याम जी गुप्त, श्री बालकृष्ण त्रिपाठी, श्री वीरेश्वर, श्री सुरेन्द्र द्विवेदी (जो बाद में हिन्दुस्थान समाचार में कार्यरत हुए) आदि को उन्होंने कैसे गढ़ा, यह न तो वे ही समझ सके और न ही कार्यालय में सदा रहने वाले श्री वाजपेयी जी और अन्य बन्धु । कार्यालय में रहने वाले पाक शास्त्री से लेकर पड़ोस के श्री गोविंद भाई के परिवार की भाभी जी आदि सभी सदस्यगण उनके स्नेह से अभिभूत रहते थे । उनकी रुग्णावस्था में मृत्यु से ६ मास पूर्व दिल्ली में उनके साथ वैद्यराज जी के पास जाने का अवसर मिला था । उस समय उन्हें अत्यधिक कष्ट था । चलना भी दुष्वार हो रहा था । फिर भी अपनी व्याधि की चिंता न करके मेरी ही सुविधा को

सहज स्नेह से मेरा हाथ उनकी पीठ सहला रहा था—'बड़े भाई' ! आपने हिम्मत हार दी तो दुनिया कैसे चलेगी, 'मेरे मुंह से शब्द फूट पड़े थे।

आवेग पर कुछ काबू पाते हुए उन्होंने उत्तर दिया—"नहीं यादव जी, न हारा हूं, न और किसी बात का कष्ट है। दुख केवल इस बात का है कि मेरी बीमारी के कारण आप सबको परेशान होना पड़ रहा है। सब काम छोड़कर आपको यहां आना पड़ा। इधर मैं तो कुछ कर नहीं पा रहा हूं—आप लोगों को इतना कष्ट दे रहा हूं। ऐसी जिंदगी किस काम की।"

ब्रेन-ट्यूमर का आपरेशन हुआ था। डाक्टरों ने कैंसर होने की पुष्टि कर दी थी। अस्पताल में बिस्तर पर पड़े बड़े भाई को अच्छी प्रकार यह ज्ञात था कि मौत उनका पीछा कर रही है। पर उस स्थिति में भी उन्हें मौत से डर नहीं था। आपरेशन के परिणाम-स्वरूप असह्य वेदना की भी चिंता नहीं। परेशानी थी तो इस बात की कि सभी लोगों को उनके कारण कष्ट उठाना पड़ रहा है।

मैंने कुछ अधिकार भरे स्वर में कहा, "बड़े भाई" यह कैसी बच्चों जैसी बातें कर रहे हैं। आपसे मिलने में किसी को कष्ट होता है क्या ?"

अब तक वे स्वयं को पर्याप्त संयत कर चुके थे। बोले—"मेरी अस्वस्थता के कारण ही तो आपको लखनऊ से यहां तक आना पड़ा। ये देखिए रामदास, चौबीस घंटे मेरी ही सेवा में लगा है। मैं तो किसी की सेवा नहीं कर सका। सभी से सेवा ले रहा हूं।" कहते-कहते एक क्षण के लिए उन्होंने आँखें बन्द कर ली थीं।

"मैं किसी की सेवा नहीं कर सका।" यह वेदना उस व्यक्ति की थी जिसने अपनी समूची जिंदगी देश की सेवा में लगा दी थी। घर की अच्छी खेतीवाड़ी, भरा-पूरा परिवार, अच्छी आमदनी वाली कचहरी की नौकरी सब कुछ छोड़कर जिसने सेवा का व्रत लिया और आजन्म उसे पूरी शक्ति और निष्ठा के साथ निभाया भी।

रामनरेश सिंह को भगवान ने उन सभी बातों से वंचित कर रखा था जो बाहरी व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। न रूप, न रंग, न कोई ऐसी शिक्षा या विद्वता, जो लोगों को आकर्षित कर सके। ऐसा होते हुए भी यह 'अति साधारण' व्यक्ति "अति साधारण व्यक्ति" कैसे बन गया ? हजारों लोगों का हृदय जीतने वाला सफल नेता कैसे बन सका ? यह समझने के लिए उनके हृदय की गहराई को समझना आवश्यक है।

अपनी मैट्रिक तक की पढ़ाई समाप्त करके नौकरी में प्रवेश करते समय ही उनका संबंध चुनार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से आया। उनकी कर्मशक्ति को नई दिशा मिली। अपनी योग्यता और संगठन-कुशलता प्रदर्शित करने का अवसर भी मिला। कुछ ही दिनों में राष्ट्र सेवा का सर्वोत्तम माध्यम मनाकर उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन संघ के प्रचारक के रूप में

एक अनोखा बड़ा भाई

यादवराव देशमुख
संगठन मंत्री,
दीनदयाल शोध संस्थान,
लखनऊ.

क्रिया सिद्धि : सत्वे भवति महतां नोपकरणे :

उस दिन हिमाचल रो पड़ा था ।
सिसकियां थमती ही न थीं ।।

बड़ी से बड़ी चुनौतियों का दृढ़तापूर्वक सामना करने वाले हिमालय सदृश उस व्यक्तित्व की आंखों में अविरल बहती-अश्रु धारा देखकर क्षण भर के लिए मैं अवाक् होकर उन्हें देखता रहा ।

जीवन में कभी पराजय स्वीकार न करने वाला वह व्यक्ति क्या स्वयं को मौत के हाथों पराजित पाकर अश्रुओं के रूप में अपनी दयनीयता प्रकट कर रहा था !

नहीं ! यह हो ही नही सकता । जिसने गीता के कर्मयोग' को अपने जीवन में उतार कर 'स्थित धी' : की स्थिति प्राप्त कर ली हो, वह मृत्यु से आतंकित नहीं हो सकता—कभी नहीं हो सकता ।

चाणक्य बुद्धि वाले बड़े भाई के दिमाग में जरूर कोई नई योजना होगी । मैंने पूछा—"वहां आ तो जाऊंगा, पर कोई कार्यक्रम कैसे संभव होगा ?" उनका वही आत्मविश्वासपूर्ण उत्तर—"आइए, कार्यक्रम भी जरूर होगा ।"

और कार्यक्रम की पूर्व-संध्या में उन्होंने मुझसे भेंट करके अपनी योजना बताई ।

एक स्वयंसेवक का विवाह हुआ है । उसी के उपलक्ष्य में सामूहिक सत्यनारायण की कथा विन्ध्यावासिनी देवी के प्रांगण में आयोजित की गई है ।

फिर मेरी तरफ देखकर कुछ शरारत भरे स्वर में बोले—"काशी के एक विद्वान पंडित उसमें कथा कहने के लिए आएंगे ।" यह कहते हुए उन्होंने अपने झोले से सत्यनारायण कथा की एक पोथी मेरे हाथ में थमा दी ।

अपने इस कुशाग्र बुद्धि सहयोगी की योजकता पर मैं स्तम्भित था । दूसरे दिन उन्होंने विधिवत् मुझे कथावाचक पंडित के रूप में श्रोताओं की भारी भीड़ के बीच प्रस्तुत कर कार्यक्रम संपन्न कराया । वहां पुलिस और गुप्तचर विभाग के लोग भी थे । वे देख रहे थे कि यह संघ का विधिवत् कार्यक्रम हो रहा है पर वे अंत तक यह निर्णय कर पाने में असमर्थ रहे कि इसके विरुद्ध क्या कार्रवाई की जाए ? कैसे की जाए ?

एक बार किसी व्यक्ति या परिवार से बड़े भाई का संपर्क हुआ और वह आजीवन उनके स्नेह बंधन में आबद्ध न हुआ हो, ऐसा एक भी उदाहरण ढूंढ़ कर निकालना कठिन है। उस व्यक्ति या परिवार के सुख-दुख के साथ वे इतने समरस हो जाते थे कि कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वे उस परिवार के सदस्य नहीं हैं। वह प्रसंग आज भी मेरी आंखों के सामने तैर रहा है जब संघ सत्याग्रह में जेल में रहने के कारण एक स्वयंसेवक की मां ने यह जिद पकड़ ली कि जब तक बड़े भाई छूट नहीं जाते, तब तक बेटे की शादी नहीं होगी । निश्चय ही इस आत्मीयता के पीछे बड़े भाई की मूक सेवा और साधना थी ।

एक बार वे गंभीर रूप से बीमार हो गए । उन्हें 'प्लूरिसी' हो गई थी । इलाज के लिए उन्हें तीन माह तक बनारस में रहना पड़ा । जिन कार्यकर्ताओं को उनकी देख-रेख एवं सेवा-सुश्रुषा के लिए नियुक्त किया था, उनमें से एक स्वयं ही ज्वर-ग्रस्त होकर अस्पताल में भर्ती हुआ । 'बड़े भाई' को बिस्तर पर ही रह कर पूर्ण विश्राम की सलाह दी गई थी । जब उन्हें उस सहयोगी की बीमारी का पता चला तो उससे मिलने के लिए बेचैन हो उठे । पर उन्हें अस्पताल कोई जाने ही न देता था । अंततः उन्होंने एक युक्ति निकाली । सहयोगियों को यह बताकर कि आज डॉक्टर से जांच करवाना है, वे अकेले ही रिक्शा करके निकल पड़े । पूरे चार घंटे बाद वापस आए । चेहरे पर अत्यधिक थकान थी, पर मन में था आत्मिक संतोष । यह बात दूसरे दिन पता चल पाई कि वास्तव में वे उन चार घंटों में उस बीमार सहयोगी के पास अस्पताल में बैठे रहे, जबकि उन्हें एक घंटा भी बैठने में बहुत शारीरिक कष्ट होता था ।

अर्पित कर दिया ।

विन्ध्याचल मिरजापुर जिले का प्रमुख तीर्थस्थल है । आधी से अधिक आबादी पुजारियों और पंडों की, वह भी कट्टर पन्थी । संघ कार्य का विस्तार विन्ध्याचल क्षेत्र में करने की बात चली तो यह यक्ष-प्रश्न उपस्थित हुआ कि वहां के 'खूंखार' पंडों के बीच काम करने के लिए भेजा किसे जाए ? बड़े भाई ने जब देखा कि अधिकारी इस यक्ष-प्रश्न का उत्तर नहीं ढूंढ़ पा रहे हैं तो उन्होंने बड़ी सहजता से कहा, "आप मुझे वहां भेज दीजिए । मैं वहां जाऊंगा ।" इस एक छोटे से वाक्य में जहां उनकी सहजता प्रतिबिंबित थी वहीं उसके प्रत्येक शब्द में उनका अजेय आत्मविश्वास भी प्रकट हो रहा था । पर इसमें एक अड़चन थी—भारी अड़चन । बड़े भाई ने एक कुर्मी परिवार में जन्म पाया था और विन्ध्याचल में जिन लोगों के बीच उन्हें काम करना था—वे थे ब्राह्मण । ऊंच-नीच का भेद तो आज भी हिन्दू समाज से मिटा नहीं । उन दिनों तो वह अपनी चरम सीमा पर था । फिर भी बड़े भाई को विन्ध्याचल भेजा गया ।

और मात्र एक वर्ष के अन्दर उन्होंने विन्ध्याचल में जो कुछ कर दिखाया है उसे एक चमत्कार ही कहना होगा । विन्ध्याचल का शायद ही कोई पंडा परिवार रहा हो जिसके घर में बड़े भाई ने सचमुच ही 'बड़े भाई' का स्थान न बना लिया हो । उनकी अद्भुत संगठन शैली का ही परिणाम था कि छोटे छोटे घरेलू झगड़ों और हत्या जैसे जघन्य अपराध में लिप्त रहने वाला विन्ध्याचल क्षेत्र अक्षरशः संघमय बन गया था । सन् १९४८ में इन पंक्तियों के लेखक को जब प्रथम बार संघ के जिला प्रचारक के रूप में विन्ध्याचल जाने का अवसर मिला तो संपूर्ण विन्ध्याचल की बाल और युवा पीढ़ी संघ स्थान पर देखकर आश्चर्य चकित होना पड़ा । संघ के आह्वान पर सन् १९४८ के अखिल भारतीय सत्याग्रह में ५० से भी अधिक स्वयंसेवकों ने जेल यात्रा की थी ।

जेल जीवन के दौरान जब अनेक स्वयंसेवकों से मैंने यह जानने का प्रयास किया कि बड़े भाई ने उनके परिवारों में इतना विश्वास और सम्मान कैसे अर्जित किया तो सभी के उत्तरों में यह भाव निहित था कि उनके सहज, निश्छल आत्मीय स्नेह ने ऊंच-नीच की दीवारें ढहाकर परिवार में बच्चों से बड़ों तक के मन में आदर का स्थान अर्जित करने में सफलता पाई थी । एक स्वयंसेवक ने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि टाइफाइड की बीमारी के दौरान लगातार दो सप्ताह तक रात-रात भर बड़े भाई उसका सिर सहलाते हुए बैठे रहते । घर के अन्य सदस्यों यहां तक कि मां को भी आग्रह करके सोने के लिए भेज देते और स्वयं सेवा सुश्रुषा में लगे रहते । यह कहते हुए उस स्वयंसेवक की आंखें कृतज्ञता से भर आई कि "उस समय बड़े भाई न होते तो मैं शायद ही जिंदा बच पाता ।"

संघ पर प्रतिबंध के दौरान उन्होंने एक दिन कहा कि शासकीय कुदृष्टि के कारण काफी दिनों से स्वयंसेवक एक साथ मिल नहीं पाये हैं । अतः कोई एकत्रीकरण करना चाहिये । मैंने पूछा—"यह कैसे करेंगे ?" हल्की मुस्कान के साथ वे बोले—"बस आप अगली पूर्णिमा को वहां आ जाइए, सब एकत्रित मिल जाएंगे ।" यह समझने मुझे देर नहीं लगी कि

उनकी यह तन्मयता और कुशग्रता केवल किसी मुकदमें तक ही सीमित नहीं थी। कालान्तर में जब मान्यवर श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी के साथ मजदूर आंदोलन का दायित्व उन्होंने स्वीकार किया तो इस क्षेत्र का किसी प्रकार का पूर्व अनुभव न रहते हुए भी अत्यंत कम अवधि में उन्होंने उत्तर प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ को एक प्रभावी सगठन के रूप में खड़ा करने में सफलता पाई। बाद में अखिल भारतीय महामंत्री के रूप में उनके यश की गाथा मजदूर संघ के लाखों सदस्यों से सुनी जा सकती है।

बड़े भाई लेखक नहीं थे। पर क्या यह कम आश्चर्य की बात है कि कार्य की आवश्यकता अनुभव होने पर उन्होंने अध्ययन करते हुए मजदूर आन्दोलन के विविध आयामों पर दर्जनों पुस्तकें लिखी, जो बाद में सामान्य मजदूर कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का आधार बनीं। वे कोई जन्मजात वक्ता नहीं थे, पर आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने एक प्रभावी वक्ता के रूप में मजदूर क्षेत्र में अपनी धाक जमाई। वे विधि वेत्ता नहीं थे, पर दो बार विधान परिषद् के सदस्य चुने जाने पर सफल विधायक के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करने में में सफल हुए।

आखिर उनकी इस सफलता का रहस्य क्या था ? लगन, अध्यवसाय और इन सबसे बढ़कर उनकी समर्पण भावना। एक बार अपने जीवन को राष्ट्रकार्यार्थ अर्पित कर देने के बाद उन्होंने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। जीवन का कण-कण राष्ट्र की सेवा में खपा दिया।

जीवन के उत्तरार्ध में लगभग तीन दशकों तक गरीब मजदूरों की मान-मर्यादा और हितों के लिए सतत् संघर्षरत बड़े भाई को एक सफल मजदूर नेता के रूप में सदैव याद किया जाएगा। पर उन्होंने सस्ती लोकप्रियता या सतही नेतागिरी का सहारा कभी नहीं लिया। ग़रीब मजदूरों के शोषण से उनका अंतःकरण कितना व्यथित होता था इसका अनुभव अनेक अवसरों पर होता रहा है। कार्यकर्ताओं की एक बैठक में एक बार एक कार्यकर्ता ने मजदूरों पर अपमानजनक कटाक्ष कर दिया सदैव शांत दीखने वाले बड़े भाई का मुख मंडल क्रोध से तमतमा उठा—"मजदूरों को भला-बुरा कहने के पूर्व क्या कभी आपने एक क्षण के लिए भी यह जानने का प्रयास किया है कि अधिकांश मजदूर ऐसी दुर्दशा में जीने को मजबूर क्यों हैं ? आप यह समझ भी नहीं पाएंगे कि जितना धन आप प्रतिदिन अपने पान और सिगरेट पर खर्च करते हैं उससे भी कम में उसे अपने पूरे परिवार का पोषण करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उसके दुःख–दर्द में सहानुभूति रखने के स्थान पर आप उसका उपहास करें, इससे अधिक दुख की बात और क्या हो सकती है ?"

यह मानवीय संवेदना ही उनको अति सामान्य व्यक्ति से असामान्य व्यक्तित्व में परिणत करने का कारण बनी थी। क्रूर काल ने असमय ही उन्हें हमसे छीन लिया। सचमुच ही लाखों लोग अपने 'बड़े भाई' से वंचित हो गए। ऐसा अनोखा 'बड़ा भाई' हमें शायद ही मिल सके। उनकी प्रेरणास्पद स्मृति में शत-शत हार्दिक नमन।

'बड़े भाई' चुनार तहसील के रहने वाले थे। उनके ही क्षेत्र में एक बार संघ के तत्कालीन सरसंघचालक परमपूजनीय श्री गुरूजी का कार्यक्रम तय हुआ। लगभग ढ़ाई सौ ग्रामों में बड़े भाई ने स्वयं जाकर लोगों से संपर्क किया। उतनी विराट सभा और उसकी सुव्यवस्था बड़े भाई की कुशलता का परिचय दे रही थी। इस सफल कार्यक्रम के बाद बड़े भाई ने प्रमुख नागरिकों की एक बैठक बुलाकर यह विचार रखा कि केवल सभा और भाषण ही पर्याप्त नहीं है। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए कोई जनोपयोगी रचनात्मक कार्य प्रारंभ किया जाए। सभी की सहमति और सहयोग का परिणाम निकला "माधव विद्या मंदिर।" उस क्षेत्र के हजारों बच्चों को सुशिक्षित बनाने वाला यह विद्यालय आज एक अच्छे इंटर कॉलेज के रूप में क्षेत्र की सेवा कर रहा है।

ऊपर से अत्यन्त अनाकर्षित व्यक्तित्व वाले इस सामान्य व्यक्ति में भगवान ने कितने असामान्य गुण भर दिए थे इसकी थाह कभी कोई न पा सका। काम चाहे कोई भी हो, एक बार उसका दायित्व स्वीकार कर लेने के बाद अपनी पूरी शक्ति-बुद्धि उसमें उड़ेल देना उनका सहज स्वभाव था।

एक बार चुनार तहसील में कुछ विरोधी विचार के लोगों ने वहां के प्रचारक डॉ० केशवानन्द नौटियाल सहित अनेक कार्यकर्ताओं को एक हत्या के मामले में फंसा दिया। इसकी पैरवी का दायित्व बड़े भाई पर था। मिरजापुर के तत्कालीन एक विख्यात वकील, (जो बाद में प्रयाग उच्च न्यायालय में न्यायाधीश भी बने) को उन्होंने अपना वकील बनाया। जैसा बड़ा नाम वैसी ही उनकी फीस भी थी। इतना धन कहां से लाया जाए? वकील साहब को फीस कम करने के लिए राजी करना कोई सरल काम न था। बड़े भाई का ही यह कमाल था कि वकील साहब ने खुशी-खुशी यह स्वीकार कर लिया कि "तुम जो कुछ भी दोगे मैं उतने पर ही काम करुंगा।" इस बात पर कोई जल्दी विश्वास नहीं कर पाता था। आखिरकार यह चमत्कार हुआ कैसे? असल में बड़े भाई ने उनसे सीधा एक सवाल किया था कि "अपना घर-बार छोड़ कर समाज के लिए काम करने वाले युवा डाक्टर क्या एक झूठे आरोप में इसलिए फांसी पर चढ़ा दिए जाएंगे कि आप जैसे अनुभवी वकील की फीस नहीं जुट सकी? उनके साहित्यक अन्तःकरण से निकले इन चंद शब्दों ने वकील साहब को झकझोर दिया था।

स्वयं वकील न होते हुए भी 'बड़े भाई' ने उस मुकदमें की पैरवी में वकील साहब को इतने तर्क और प्रमाण जुटा दिए कि अंततः न्यायालय ने सभी को निर्दोष घोषित करते हुए ससम्मान रिहा कर दिया। इस निर्णय की घोषणा पर जब हम लोग वकील साहब को धन्यवाद देने गए तो उन्होंने कहा, "भाई ईमानदारी की बात तो यह है कि यह मुकदमा रामनरेश ने जीता है। आज तक मैंने इतना कुशल पैरवीकार नहीं देखा। मैं एक प्रमाण जुटाने को कहता तो ये दूसरे ही दिन दस प्रमाण प्रस्तुत करते।" फिर हंसते हुए उन्होंने कहा कि "अच्छा हुआ रामनरेश सिंह वकील नहीं बने, अन्यथा ये हम सब वकीलों के कान काट लेते।"

सामाजिक कार्य के लिए किसी डिग्री की आवश्यकता नहीं होती। यह जन सेवा का कार्य है। बड़े भाई विश्वविद्यालय की डिग्रियां भले ही प्राप्त न कर सके हों किन्तु विभिन्न विषयों का उनका बहुत अधिक अध्ययन था। उनकी कार्यक्षमता अद्वितीय थी। प्रातः संघ शाखा से लेकर रात्रि दीप विसर्जन तक एक पल भी विश्राम नहीं करते थे। थकना तो वह जानते ही हो नहीं थे। कुछ न कुछ करते ही रहते थे। अन्य लोग जब विश्राम कर रहे होते तो वह पत्र लिखते। अध्ययन करते। अनेक विषयों की जानकारी प्राप्त करते। स्वहस्तलिखित पत्रों का तो इनका रिकार्ड था। सबको अपने हाथ से उत्तर लिखकर भेजते थे। सबसे जीवन्त सजीव सम्बन्ध रखते थे। संगठन के तो वह बेजोड़ शिल्पी थे। सबको समेट कर रखने, साथ लेकर चलने की उनमें अपार क्षमता थी।

वह समस्या की गहराई तक जाते थे। उनका निर्णय बहुत परिपक्व हुआ करता था। एक भी व्यक्ति मुझे ऐसा नहीं मिला जिससे बड़े भाई के बारे में आलोचना सुनने को मिली हो। वह बिल्कुल निस्पृह तथा निःस्वार्थ भाव से प्रेरित होकर संगठन के हित में कार्य करते थे। इसी कारण उनके प्रयास सफल होते थे।

बड़े भाई में त्याग का भाव सर्वोपरि रहा है। उन्होंने आदर्शवाद को कायम रखते हुये ट्रेड यूनियन क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार को मिटाने में भी बड़ा भारी कार्य किया है। भारतीय मजदूर संघ की स्थापना के पूर्व मजदूर ट्रेड यूनियनें न केवल पूंजीपतियों से सांठगांठ रखती थी बल्कि अपने सदस्यों से भी धोखाधड़ी करने से नहीं कतराती थी। बड़े भाई ने इन बुराइयों पर दृढ़ता से अंकुश लगाया। हमारे परिचय के कितने ही उद्योगपति अक्सर कहते हैं कि आपका यह संगठन मजदूर संघ हमारे किस काम का। यह प्रतिष्ठा अपने संगठन को बड़े भाई ने दिलवाई है कि इसे पैसे की शक्ति से खरीदा नहीं जा सकता। यह सब आदर्शवाद के बल पर ही संभव हो सका।

हमारा कार्यकर्ता, कार्यालय और व्यवहार कैसा हो ? नारे क्या हों ? इन सब बातों पर उनका बराबर ध्यान रहता था। बात उन दिनों की है जब जीवन बीमा निगम में हड़ताल के समय कम्युनिस्ट यूनियन तथा भारतीय मजदूर संघ का संयुक्त मोर्चा बना था। मजदूर संघ उस समय आज की भांति शक्तिशाली नहीं था। कम्युनिस्ट यूनियन ने भारतमाता की जय के नारे पर आपत्ति उठाते हुए कहा कि यह नारा यहां नहीं लगाया जाएगा। बड़े भाई का आग्रह था कि संयुक्त मोर्चा छोड़ सकते हैं किन्तु भारतमाता का जयघोष नहीं छोड़ सकते। मामला तूल पकड़ गया। सभी श्रमिकों में यह बात फैल गई। आंदोलन नाजुक स्थिति में था और अत्यन्त महत्वपूर्ण भी था। कर्मचारियों में आम चर्चा होने लगी कि भारतमाता की जय बोलने में बुराई क्या है ? किन्तु कम्युनिस्ट नेतृत्व अपनी जिद पर अड़ा रहा। इधर बड़े भाई छोटी यूनियन होने के बावजूद अपनी बात पर डटे रहे। आखिर यह तय हुआ कि बम्बई में कम्युनिस्टों का वरिष्ठ नेतृत्व जो निर्णय करेगा उसे स्वीकार कर लिया जाए। बम्बई से यह निर्णय आया कि भारतमाता की जय का नारा संयुक्त आंदोलन में लगाने दिया जाए। इसका सभी श्रमिकों पर जबरदस्त प्रभाव हुआ। यह भी स्पष्ट हुआ कि कम्युनिस्ट नेतृत्व

संगठन तंत्र के बेजोड़ शिल्पी

अशोक सिंहल,
महामंत्री,
विश्व हिन्दू परिषद् से भेंट वार्ता

घटना उन दिनों की है जब प्रथम बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबन्ध लगाया गया था उस समय संघ ने सभी प्रचारकों से वापस घर-गृहस्थी में लौट जाने के लिए कहा था। यही बात बड़े भाई को कही गई तो इन्होंने वापस लौटने से इन्कार कर दिया । बोले "घर परिवार छोड़कर आया हूं, वापस नहीं लौटूंगा । संघ कार्य ही अब जीवन कार्य है।" भूमिगत रहकर वे संघ कार्य में जुटे रहे। ऐसे दृढ़व्रती थे बड़े भाई । एक बार जो निर्णय कर लिया उसे प्राणों पर खेल कर भी निभाने की हिम्मत उनमें थी ।

बड़े भाई से मेरा बहुत पुराना परिचय था । वे एक ऐसे प्रचारक थे जिनसे मेरा वर्षों से अत्यन्त निकट का सम्बन्ध रहा है । मान्यवर ठेंगड़ी जी ने एक बार पूछा था कि मजदूर संघ के लिए बड़े भाई कैसे रहेंगे ? मेरा कहना था कि वे एकदम उपयुक्त एवं उत्कृष्ट सिद्ध होंगे । मजदूर संघ के लिए इनसे बढ़िया कोई दूसरा व्यक्ति शायद ही हो । मजदूर संघ में जाने के पश्चात् जो कार्य उनके द्वारा हुआ है वह आज सबके सामने है ।

लोगों को आश्चर्य होता है कि बड़े भाई ने किसी विश्वविद्यालय से डिग्री आदि प्राप्त नहीं की थी । सामान्य पढ़ाई के बावजूद वह आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र की जटिल समस्याओं को सुलझाने तथा संगठन को बढ़ाने में कैसे सफल हुए किन्तु आश्चर्य करने का कोई कारण नहीं है ।

श्रम की महत्ता सबके सामने लाए। राष्ट्र की उन्नति के लिए बड़े भाई मनसा-वाचा-कर्मणा प्रयास करते रहे। मजदूर क्षेत्र में राष्ट्रवाद और आदर्शवाद की पुनर्स्थापना के कारण अन्याय यूनियनें घटती चली गई। उनका प्रभाव समाप्त होता गया। मजदूर संघ की पकड़ दृढ़ होती गई। परिणामस्वरूप भारतीय मजदूर संघ अन्य संगठनों को पीछे छोड़ते हुये सबसे आगे आया।

व्यक्ति की सही पहचान बड़े भाई की विशिष्टता थी। कौन क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता यह वह जान जाते थे। उनके निष्कर्ष प्रायः शत्प्रतिशत् सही उतरते थे। जिसकी जितनी क्षमता होती उसे वह वैसा ही कार्य सौंप देते। कार्यकर्ता की क्षमता बढ़ाने का सतत प्रयास करते। उसके गुणों के विकास पर पूरा ध्यान देते। जिन लोगों को उन्होंने कार्य में जुटाया उन्होंने असह्य कष्ट झेले। अनेक विपत्तियों का सामना किया। किन्तु संगठन कार्य नहीं छोड़ा और न ही कभी बड़े भाई के आदेश की अवहेलना की।

समूचे मजदूर आंदोलन एवं राष्ट्र को बड़े भाई की देन का किन शब्दों में वर्णन करूं ? समय के साथ-साथ कई पक्ष सामने आएंगे। किन्तु इतना तो स्पष्ट है कि जिस समय बड़े भाई भारतीय मजदूर संघ में आए उस समय कम्युनिस्ट मजदूर क्षेत्र पर छाए हुए थे। मजदूर तथा राजनीतिक क्षेत्र में जो दृश्य था उसे देखकर लगता था कि पं० नेहरू के बाद कम्युनिस्ट राज आएगा। क्या छात्र, क्या अध्यापक, श्रमिक बुद्धिजीवी सभी का झुकाव उसी ओर लगता था। ऐसे समय श्रमिकों में कोई कम्युनिस्टों से भी बड़ा संगठन बना लेगा यह कल्पना हास्यास्पद लगती थी कम्युनिस्ट बहुत सावधानी और योजनाबद्ध तरीके से समाज को राष्ट्रवादी चिन्तन से काट रहे थे। विशेषकर हमारे श्रमिकों को राष्ट्रवाद से विमुख करके लाल क्रांति के ताने बाने बुन रहे थे। कामगार बन्धु भी भारतीय मान्यताओं से दूर हटते चले जा रहे थे। उन्हें फिर से राष्ट्रवाद की ओर लाया जा सके, यह कार्य अत्यन्त दुरूह था। उतना ही दुरूह, जितना दुरूह भारत को स्वतंत्र करवाना था। श्रमिकों को उस चंगुल से मुक्त करवाने का कार्य बड़े भाई के महान संकल्प द्वारा ही संभव हो सका।

आज मजदूर संघ निर्माण के लगभग ३० वर्ष पश्चात् जब मजदूर क्षेत्र पर दृष्टिपात करते हैं तो देखते हैं कि बहुत बड़ी मंजिल हम तय कर चुके हैं। जो लोग उस समय भारतीय मजदूर संघ का उपहास उड़ाया करते अथवा उपेक्षा किया करते थे उन्हें भी बाध्य होकर भारतीय मजदूर संघ तथा बड़े भाई को स्वीकार करना पड़ा। मान्यता देनी पड़ी। इतना ही नहीं तो मजदूर संघ की सलाह और सम्मति का वे आदर करने लगे। संयुक्त कार्य-क्रमों में इसे आमंत्रित करने लगे।

बड़े भाई के स्वभाव की विशेषता थी कि जिस कार्य को करने की वह ठान लेते थे उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। कार्य सिद्ध करने में वह कौन से सम्पर्क सूत्र जोड़ते—क्या-क्या तरकीब निकालते यह वही जानते थे। एक घटना याद आती है—श्री ठेंगड़ी जी वोटर लिस्ट में नाम न होने के कारण राज्य सभा का चुनाव लड़ना नहीं चाहते थे। बड़े भाई को पता चला तो बिना ठेंगड़ी जी को बताए सारे कागज पत्र तैयार करवा लाए। वोटर सूची में भी नाम लिखा दिया। नामांकन के अन्तिम दिन ठेंगड़ी जी के पास सारे कागज पत्र इस आग्रह के साथ ले गए कि सभी कागज तैयार हैं आप केवल हस्ताक्षर कर दीजिये। कार्य करवा लेने में लगता था उन्हें कोई सिद्धि प्राप्त थी।

भारत के प्रति निष्ठावान नहीं है। अतः बड़ी संख्या में उन्हें छोड़ कर श्रमिक मजदूर संघ में चले आए। कम्युनिस्ट यूनियन भी इस विवाद को लेकर दो भागों में बंट गई।

राजनीतिक क्षेत्र की भी गहरी जानकारी बड़े भाई को रहती थी। राजनीतिक नेतृत्व को प्रभावित करने की कला में वह माहिर थे। उनसे कब, क्या, कैसे काम लिया जा सकता है यह वह जानते थे। आपत्काल में चौधरी चरण सिंह जेल से रिहा होकर आए थे। देश भर में इस दौरान कैसी-कैसी ज्यादतियां हुई हैं, वह इससे अनभिज्ञ थे। बड़े भाई इन ज्यादतियों की ब्यौरेवार एक फाईल बनाए हुये थे, जिसे चौधरी साहब को दिखाया। सभी ब्यौरे तथ्यों पर आधारित अत्यन्त प्रमाणित थे। अतः चौधरी साहब ने इन तथ्यों के आधार पर विधानसभा में चर्चा उठाई। समाचार पत्रों में खूब धूम रही। इस चर्चित बहस के सारे तथ्य बड़े भाई ने ही जुटाए थे। यह तथ्य सुने-सुनाए नहीं बल्कि उन सभी स्थानों की यात्रा और संबंधित लोगों से बातचीत करके जुटाए गए थे।

उनकी भाषण एवं लेखन शैली सीधी एवं सरल थी। अपनी बात निःसंकोच ढंग से रखते थे। दृष्टांत देकर समझाते थे। दृष्टांत बहुधा विनोदपूर्ण होते।

अनुशासन को अत्यन्त स्नेह और प्रेम के दायरे में रखते हुए स्वयं अनुशासित रहकर दूसरों को अनुशासन में रखते थे। उन्हें मिर्जापुर छोड़े वर्षों हो गए थे किन्तु जब कभी उनका मिर्जापुर जाना होता था तो लोग उनसे मिलने के लिये दौड़े चले आते थे। सभी के मन में पक्का विश्वास रहता था कि उनके सुख-दुख की चिन्ता करने वाले बड़े भाई हैं। उनसे सलाह-मशविरा करने सभी प्रकार के लोग आते थे। इनमें बुद्धिजीवी, सामाजिक कार्यकर्ता, औद्योगिक एवं खेतिहर मजदूर भी होते थे। कभी-कभी असामाजिक किस्म के लोग भी आते थे। बड़े भाई उनकी भी बात सुनते थे। अनुचित कार्यों के लिए डांटते किन्तु मन में उद्देश्य उन्हें सुधारने का ही रहता था। बड़े भाई से वे कुछ भी छिपाते नहीं थे। सब बता देते थे। गलत कार्य को सहन करने की बड़े भाई की आदत नहीं थी किन्तु सब प्रकार के लोगों को पिरोने की उनकी क्षमता अद्भुत थी। अतः सुधारक की भूमिका लेकर प्रत्यक्ष रोष प्रकट करते तो सुनने वाले पर यह प्रतिक्रिया होती कि वास्तव में उसे अपने में सुधार लाना चाहिए। बड़े भाई में अपनत्व और आत्मीयता का भाव इतना अधिक रहता था कि उनसे डांट खाकर भी बुरा नहीं लगता था। स्वयं की भूल स्पष्ट दिखने पर सुधार की प्रवृत्ति उभरती थी। वह अनुशासन के मामले में कठोर अवश्य थे किन्तु सच्ची आत्मीयता एवं अपनत्व के कारण किसी को भी बुरे नहीं लगते थे।

मजदूर संघ का जो भी विचार दर्शन है, जिसे ठेंगड़ी जी ने रचा बुना उसे व्यावहारिक रूप बड़े भाई ने ही दिया। जैसे मार्क्स को लेनिन मिले वैसे ही ठेंगड़ी जी को बड़े भाई। मजदूर कोई बिकाऊ माल नहीं हैं। उन्होंने उसकी अस्मिता को जगाया। उसे स्वाभिमानी बनाया। राष्ट्र भक्ति के भावों से पुष्ट किया। उसे राष्ट्रव्यापी सम्मानजनक पहचान दी। हर हाथ को काम मिले इसलिये आटोमेशन और अन्धाधुन्ध यंत्रीकरण का डट कर विरोध किया।

विश्वविद्यालय की औपचारिक पढ़ाई का अभाव उनके कार्य में कभी अड़चन नहीं बना। उनकी व्यावहारिक तीक्ष्ण बुद्धि तथा प्रत्यक्ष ज्ञान कई बार अच्छे-अच्छे डिग्रीधारी स्नातकों को मात कर देता था।

यह सही है कि वह कठोर अथवा यूं कहें कट्टर अनुशासन प्रिय थे। कठोर अनुशासन ऐसे लोगों को हानि पहुंचाता है जो स्वयं अपने दैनिक जीवन में कठोरता के साथ संयमित व्यवहार न करते हों। बड़े भाई स्वयं अपने प्रति यदि अधिक नहीं तो समान रूप से कठोर अवश्य थे।

प्रश्न उठता है कि वर्तमान आर्थिक दबावों के बोझ तले क्या पारिवारिक और अच्छी सामाजिक परम्पराओं के टूटने का खतरा पैदा हो गया है। बात आर्थिक दबाव की नहीं है। सभी परम्पराएं अनन्त काल तक नहीं चलती। पुरानी छूट जाती हैं, नई परम्पराओं का निर्माण होता है। ट्रेड यूनियन क्षेत्र में मजदूर संघ ने नई परम्पराओं को जन्म दिया है। जब तक आदर्श और सिद्धांत जीवित हैं बड़े भाई का जीवन चरित्र भी जीवित रहेगा। बड़े भाई का आदर्श व्यवहार प्रेरणा देगा। अपने व्यक्तित्व को नकार कर मैं को परे रखकर कार्य करना युवकों और आगामी कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देगा। बड़े भाई का जीवन दीर्घकालिक प्रेरणा का स्रोत होगा।

यद्यपि वर्ग संघर्ष पर बड़े भाई क्या कहते-सोचते थे इसकी विशिष्ट जानकारी मुझे नहीं है किन्तु मैं यह मानता हूं कि संघर्ष और समन्वय साथ-साथ चलते हैं। समन्वय जब समर्पण तक पहुंच जाए, तब बुरा है। संघर्ष जब विद्वेष और घृणा की पराकाष्ठा कर दे तब वह भी बुरा है। किन्तु संघर्ष तो है। यह शाश्वत सत्य है। विभिन्न वर्गों में संघर्ष है। मालिक मजदूर हित विपरीत है। ऐसा वर्ग संघर्ष के समर्थक बतलाते हैं। किन्तु देश उद्योग और मजदूर हित क्या एक ही नहीं हैं। अर्थात् उद्योग और मजदूर हित माने राष्ट्रहित। फिर भी संघर्ष तो है। संघर्ष अपने आप में बुरा नहीं है। किन्तु यह विवेक आवश्यक कि कब संघर्ष और कब समन्वय। इस विवेक के निर्माण का आधार धर्म है। धर्म याने कारखाना बंद पड़ा है, उद्योग बंद हो गया है तो मजदूर का धर्म है कि 'मैं काम करूंगा'। अन्याय के विरूद्ध सघर्ष धर्म है किन्तु उद्योग के विरूद्ध नहीं। भारतीय मजदूर संघ ने विवेक दिया, साथ ही संघर्ष और समन्वय भी। अन्याय के विरुद्ध प्रबल संघर्ष किन्तु राष्ट्रहित में समन्वय।

चीन राष्ट्रवाद की ओर लौट रहा है। यह सही है। वास्तव में यही होना था। चीन अस्वाभाविक स्थिति में रह रहा था। देश प्रेम एक स्वाभाविक स्थिति है। इस ओर लौटना आश्चर्यजनक नहीं है। क्रांति के पश्चात् रूस ने साम्यवादी अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का निर्माण किया था। किन्तु १९२५-२६ में वह लगभग समाप्त हो गया। इसकी समाप्ति के पश्चात् रूस ने तय किया कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साम्यवाद के प्रभाव को मानकर चलने वाली श्रम संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी जाएगी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वास्तव में कोई भी कामगार आंदोलन प्रभावी नहीं है। और हो भी नहीं सकता। कारण, देश प्रेम और उस पर

निस्पृही बड़े भाई

जगदीश प्रसाद माथुर,
भूतपूर्व सांसद.

यही कोई बीस-पच्चीस वर्ष पूर्व की बात है। परम पूजनीय श्री गुरूजी का कोई कार्यक्रम था; जिसमें सर्वप्रथम बड़े भाई से मेरा परिचय हुआ। सन् १९७१ में भारतीय जनसंघ के मंत्री के नाते जब मेरे पास उत्तर प्रदेश तथा बिहार प्रदेश का दायित्व था, उन दिनों बड़े भाई से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हुए।

बड़े भाई में सबसे बड़ा गुण था सादगी, कड़ी मेहनत तथा निस्पृही भाव। यद्यपि बड़े भाई जनसंघ के सहयोग से दो बार उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य बने किन्तु कभी भी मैंने उन्हें राजनीतिक प्रभाव, पदलिप्सा अथवा सत्ता प्राप्ति की ओर आकृष्ट होते नहीं देखा। इस बारे में वह नितांत निर्मोही थे। मानो संगठन के लिए वह वहां थे अन्यथा व्यक्तिगत आकर्षण तो उनके लिए कुछ था ही नहीं। उनका स्वयं का कोई स्वार्थ कभी नहीं देखा।

बहुत वर्षों तक मैं इस मुगालते में रहा कि वह अविवाहित हैं। उनका कार्य करने का ढंग ही कुछ ऐसा था और वह संगठन के लिए इतना अधिक समय देते थे जिसके कारण लगता ही नहीं था कि वह परिवार वाले हैं। उन दिनों बड़े भाई के बारे में एक विनोद प्रचलित था कि बड़े भाई जब बहुत दिनों बाद घर गए तो उनकी धर्मपत्नी (भाभी जी) ने पूछा "दिन-रात कहां रहते हैं।" बड़े भाई ने मासूमियत से कहा, "भाई, अपनी पार्टी है; उसी के साथ रहता हूं।" भाभी जी ठहरीं देहात की। पार्टी को सौतन समझकर कहने लगी तो फिर यहां आने की क्या आवश्यकता है। उसी के साथ घर बसा लीजिए। बड़े भाई ने थोड़ी देर बाद वस्तुस्थिति बताकर उन्हें शांत किया।

अनुकरणीय जीवन

संकटा प्रसाद सिंह
मन्त्री,
भारतीय किसान संघ

श्री रामनरेश सिंह का जन्म मिर्जापुर जिले की चुनार तहसील के बगही ग्राम में एक किसान परिवार में हुआ था। गंगा जी के द्वाब में बसा हुआ यह ग्राम पहले से ही कृषि व्यवसाय में उन्नत था। इनके परिवार में भी उस समय केवल खेती होती थी। ग्राम का सामाजिक जीवन आर्य समाज के सिद्धांतों से प्रभावित था। इनके बड़े भाई कांग्रेस के आन्दोलन में रूचि रखते थे।

श्री रामनरेश सिंह की पढ़ाई का कार्य चुनार में रहकर पूर्ण हुआ। उस समय द्वितीय महायुद्ध चल रहा था। चुनार का किला भी सेना का केन्द्र था। पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात् घर वालों की इच्छा से तहसील कचहरी चुनार में नौकरी हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया। प्रथम जांच में ही प्रभावित होकर अधिकारियों ने इनकी नियुक्ति 'नकल-नबीस' के पद पर कर दिया कचहरी में तुरन्त सेवा कार्य प्रारम्भ हो गया। अपनी कुशलता और परिश्रम के कारण शीघ्र स्थायी होकर उस विभाग के प्रमुख बना दिये गये गये। यह विभाग अतिरिक्त आय का स्रोत माना जाता था। किन्तु उन्होंने वेतन के अतिरिक्त किसी भी प्रकार की आय को स्पर्श तक नहीं किया। उनके निवास पर कोई व्यक्ति नकल के काम से आ नहीं सकता था।

कचहरी में सेवारत बाबू कुछ विशेष वेश पहनते थे। किन्तु श्री रामनरेश सिंह का पहनावा कोट, कमीज, धोती और बूट था। मोजा भी नहीं पहनते थे। धोती पहनने का ढंग

आधारित आंदोलन ही स्वाभाविक स्वरूप है राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में दीर्घकालिक परम्पराओं, इतिहास और विचार की पृष्ठभूमि में जन्म लेता है। देश प्रेम का यह भाव साम्यवाद समाप्त नहीं कर सकता। इसके बिना वर्तमान स्थितियों में मानव का विकास और वैज्ञानिक उपलब्धियां कुंठित हो जाएगी।

मजदूर संघ का आधार शुद्ध देशप्रेम है। बड़े भाई की गिनती कट्टर देशभक्तों में होगी। इस देशप्रेम की लौ को उन्होंने लक्ष-लक्ष श्रमिकों के हृदयों में जगा दिया। इस राष्ट्र की माटी के लिए जीनामरना सिखा दिया। यह कार्य इस अत्यन्त बीहड़ मजदूर क्षेत्र में बड़ा भाई ही कर सकते हैं।

निस्पृह भाव से अपने संगठन के माध्यम से जन-जन की सेवा ही उनका लक्ष्य था उनकी व्यवहार कुशलता, एवं लोक संग्रह की कला कार्यकर्ताओं को बहुत बड़ी देन है।

बारे में सारी जानकारी ली। प्रसन्नता व्यक्त किया कि समाज सेवा के कार्य में लगा हूं। किन्तु यह भी निर्देश दिया कि घर परिवार छोड़कर यह सब करना ठीक नहीं है। फिर हम सब लोग भोजन के लिए चले गए। भोजन करके लौटने के पश्चात् पिता जी ने मुझे फिर बुलाया। कुछ कड़े भाव में कहा कि तुम जो चाहो सो करो किन्तु इनके साथ रहकर इनकी भी नौकरी न खा लेना कि ये भी मारे-मारे फिरें। मैंने चुपचाप उनकी बातें सुना और हंस कर वहां से चल दिया। 'बड़े भाय' भी पास में थे। उनको यह अच्छा नहीं लगा कि उनके घर पर मुझे ऐसा कहा जाय। दूसरे दिन हम सब चुनार चले आये। उन्होंने पिता जी से कुछ कहा नहीं किन्तु उनके क्रोध में कहे हुये शब्दों को पूर्ण करने के लिए आगे बढ़े।

उनके वेश में बदल नहीं हुआ। उनका कचहरी वेश ही शाखा वेश था। किन्तु शेष व्यवहार स्वेयंसेवक के रूप में प्रगट होने लगा। एक अच्छे कार्यकर्ता के गुण उनमें पहले से ही थे। अब उसका उपयोग संघ और शाखा के लिये होने लगा। १९४४ के दिसम्बर मास में जिले का प्राथमिक शिक्षा वर्ग चुनार में था। 'बड़े भाय' से मैंने वर्ग में शिक्षार्थी होने का आग्रह किया। तुरन्त स्वीकृति और शुल्क दे दिया। वर्ग का वेश केवल खाकी नेकर और सफेद कमीज था। इसकी जानकारी उनको हुई। वर्ग के प्रथम दिन खाकी नेकर पहन कर आये। आगे यही उनके जीवन का सम्मानित वेश बना। अब शाखा चलाने का दायित्व लेकर कार्य करना प्रारम्भ हुआ।

१९४६ में नौकरी करके परिवार पोषण में जीवन व्यतीत करने का विचार समाप्त हो गया तथा संघ के लिए पूरा समय लगाने लगे। अपनी इच्छा से ही सरकारी नौकरी का परित्याग कर दिया। १९४६ में संघ के प्रचारक होकर विन्ध्याचल आये। यहां शाखा प्रारम्भ थी। किन्तु संघ नहीं था। शाखा में उपस्थिति १०० से ऊपर रहती थी। किन्तु अनुशासन में रहना किसी के स्वभाव में नहीं था। किसी की बात मानना, प्रत्येक व्यक्ति अपना अपमान समझता था। थोड़े दिनों में विन्ध्याचल के पण्डे स्वयंसेवक भाव से भरपूर हो गये। 'बड़े भाय' का प्रभाव मानकर, उनके माध्यम से कही गई प्रत्येक बात सबको प्रिय लगने लगी। विन्ध्याचल से शाखा कार्य ग्राम में बढ़ाने की योजना बनी। किन्तु कठिनाई बहुत थी। संघ की बात सब मानते थे, किन्तु सरदारगिरी सम्पूर्ण क्षेत्र में थी। एक गुट के सरदार का दूसरे गुट के सरदार के पास जाना सम्भव न था। छोटी-छोटी बात पर संघर्ष होता था। अकोढ़ी-बिरोही प्रमुख गांव थे। इनमें शाखा प्रारम्भ होने से पूरे क्षेत्र पर प्रभाव पड़ने की सम्भावना थी।

'बड़े भाय' ने अकोढ़ी ग्राम में शाखा शुरू करने का निश्चय किया। लोगों से अलग-अलग वार्ता किया। लोगों ने बताया कि यहां आप १६ शाखाएं खोलो, क्योंकि यह इतने ही गुट हैं। 'बड़े भाय' ने सरल शब्दों में एक प्रश्न गांव के लोगों के सम्मुख अलग-अलग रखा कि विन्ध्याचल देवी के मन्दिर कितने हैं, सबका उत्तर था एक। मन्दिर में आप सब जाते हैं न। उत्तर मिला हां। तो उसी प्रकार शाखा भी एक मन्दिर है। ध्वज हमारा देवता है। इसकी पूजा करने हम सब गांव के बाहर मैदान में जो किसी एक का नहीं, इकट्ठे हों। सबने सरलता

भी अन्त तक एक ही समान रहा । नौकरी करते समय उनकी मित्रमण्डली में कर्मचारी समूह नहीं था । कालेज विद्यार्थी बड़ी संख्या में उनके मित्र थे । वे स्वयं न तो घूस लेते थे और न किसी को देते थे । इस कारण अधिकारी और सहयोगी दोनों ही कचहरी में उनसे असन्तुष्ट रहते थे । बार-बार उन पर आरोप करते थे। तहसीलदार द्वारा जांच होती थी तो काम पूरा रहता था; किन्तु नकल करने के लिए मिसिलों की संख्या बहुत शेष रहती थी । वे निःसंकोच उत्तर देते थे कि ३००० अंग्रेजी और २५०० हिन्दी के शब्द नकल करने का नियम है । यह एक दिन का कार्य है । इसके हिसाब से वर्ष में जितना काम अपेक्षित है जांच करके देखा जाए यदि कम हो तो मैं दोष स्वीकार करूंगा ।

जिले का कलक्टर अंग्रेज था । अपने वार्षिक प्रवास में उसने भी जांच किया । किन्तु कोई त्रुटि नहीं मिली । उसके पूछने पर कि काम पूरा है फिर भी नकलें बाकी क्यों हैं । इनका स्पष्ट उत्तर था कि अस्थायी नियुक्तियां की जाए तो काम पूरा होगा । जिलाधिकारी का आदेश प्राप्त कर उन्होंने कुछ विद्यार्थी काम में लगाए । नकलें पूरी हुई । "उनका कहना था कि दूसरों को भी काम का अवसर मिले तथा उनका भी पेट भरे यही प्रत्येक को सोचने का ढंग होना चाहिए । सब हमको ही मिले यह सोचना उचित नहीं ।"

सन् १९४४ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पहली शाखा चुनार में श्री माधव राव देश-मुख ने प्रारम्भ किया । कुछ समय बाद मिर्जापुर से विस्तारक होकर मैं चुनार गया । चुनार के संघचालक राय कृष्णादास जी के हाते में निवास था । वहां तीन विद्यार्थी, श्री रामनरेश सिंह और मैं रहता था । जुलाई का महीना था । निवास के विद्यार्थी शाखा में रूचिपूर्वक जाते थे । कचहरी से वापसी के मार्ग में संघ स्थान था । कचहरी वेश में बड़े भाई भी शाखा आते थे । कोट, कमीज, धोती और बूट पहने ही शाखा के कार्यक्रमों में भाग लेते थे । नेकर पहनने में संकोच था । इसलिए बनवाते नहीं थे । मैं भी कुछ नहीं कहता था । धीरे-धीरे कुछ ही दिनों में शाखा अच्छी हुई। हम सब आपस में घनिष्ठ हो गये ।

विद्यालय और कचहरी की छुट्टी थी । हम सभी निवास पर थे । मेरे मन में सदैव यह बात खटकती थी कि निवास के विद्यार्थी उनको रामनरेश नाम से पुकारते थे । सबके सम्मुख मैंने यह आग्रह रखा कि आज से श्री रामनरेश सिंह को 'बड़े भाय' कहा जाय । १९४४ के जुलाई मास से शाखा में और बाहर भी यही नाम चलने लगा । बाद में श्री माधव राव देशमुख आये । उन्होंने भी अपना समर्थन दिया । ग्रामीण पद्धति में 'बड़े भाय' शब्द ही प्रचलित था । मिर्जापुर के स्वयंसेवक अब तक उन्हें 'बड़े भाय' ही कहते थे। सन् १९५६ में जब वह कानपुर आये तो स्वयंसेवकों ने उन्हें 'बड़े भाई' कहना प्रारम्भ किया ।

'बड़े भाय' के बगही ग्राम में शाखा प्रारम्भ करने का विचार हुआ । छुट्टी के दिन मैं उनके साथ घर गया । गांव में प्रतिदिन एकत्रीकरण के प्रारम्भ का विचार पक्का हुआ । हम सब प्रसन्न थे कि यहां अपनी शाखा प्रारम्भ होगी । दोपहर का समय था । 'बड़े भाय' के आदरणीय पिता जी कहीं बाहर गये थे। वे भी आ गये । मेरा उनसे परिचय हुआ । उन्होंने मेरे

ही करते थे। मिर्जापुर जिले की लम्बाई उत्तर-दक्षिण लगभग २५० किलोमीटर है। उनके समय में शाखायें अन्तिम छोर तक फैलीं। जिले का दो तिहाई से अधिक भाग पठारी है। ६०० फीट तक ऊंचाई है। सड़कें ऊंची-नीची हैं। कहीं-कहीं खड़ी चढ़ाई है। वहां जंगली जानवरों में शेर तक का निवास है। वे रात और दिन समान रूप से यात्रा करते थे। साइकिल की सवारी करना, जब लोग मना करते थे तो वे कहते थे कि समाज का कार्य इसी सवारी से होगा। साइकिल पर बैठे रहकर भी, रुक कर परिचितों से वार्ता करना सम्भव है। कभी-कभी साइकिल से उन्होंने एक दिन में १०० मील तक यात्रा किया। ४०-५० मील चलना तो नित्य होता था। साइकिल से यात्रा अधिक हुई किन्तु भोजन का ध्यान नहीं रहा। मन स्वस्थ रहा किन्तु शरीर के जोड़ तथा फेफड़ जबाव देने लगे। मन की प्रबलता के कारण अवयवों से काम लेना बन्द नहीं हुआ। सहयोगी कार्यकर्ताओं के मना करने पर भी साइकिल प्रवास चलता रहा। मान्यवर रज्जू भैया ने उनकी रात भर खांसी के दौर को सुना। 'बड़े भाय' के स्वभाव से परिचित होने के कारण उनकी योजना संघ वस्तु भंडार हेतु सन् १९५६ में कानपुर नगर में किया। काम बदल स्वीकार किया किन्तु शरीर सुख का ध्यान करके काम रोकना कभी पसन्द नहीं किया।

सन् १९६० से भारतीय मजदूर संघ के मन्त्री बने। केन्द्र कानपुर ही रहा। दो बार उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य रहे। विधायक निवास में उनका निवास प्रत्येक कार्यकर्ता के लिये सुविधा केन्द्र था। कभी उनके घर से भाई-भतीजे और धर्मपत्नी भी वहां आती थी। घर के लोगों की कोई व्यवस्था स्वयं नहीं करते थे। वे लोग स्वत: अपनी व्यवस्था करते थे। उनके काम-काज के लिए भी अतिरिक्त समय नहीं लगाते थे। एक बार एक कार्यकर्ता ने आग्रह किया कि घर से सब लोग आये हैं उनकी कुछ व्यवस्था कर दी जाय। यह सुनकर बहुत नाराज हुए। बोले, घर के लोगों ने मुझे एम.एल.सी. नहीं बनाया है। विधायक बनने के बाद भी उनका रहन-सहन यथावत था। कोई बदल नहीं हुआ। विधायक के नाते प्राप्त धन तथा कूपन का उपयोग केवल संगठन के लिये किया।

प्रारम्भ से अन्त तक उनका कर्मठ जीवन किसी पुस्तक के खुले पृष्ठ के समान है। प्रत्येक कार्यकर्ता के लिये उनका जीवन अनुकरणीय है। इस लम्बी कालावधि में ऐसे भी प्रसंग आये जिसमें व्यक्ति विचलित हो सकता है। संघ के स्थानीय कार्यकर्ताओं तथा 'बड़े भाय' के बड़े भाई का संघर्ष चुनार तहसील में हुआ। इनके जीवन में संघ और समाज ही ऊपर रहा। संगठन हित में निर्णय करते समय व्यक्तिगत मित्रता कभी बाधक नहीं बन पाई। उनका श्रेष्ठ जीवन नि:संदेह सबको प्रेरणा देता रहेगा।

से इसे स्वीकार कर लिया। शाखा चलने लगी। अब क्या था, थोड़े ही समय में अनेक प्रभावी शाखायें हो गई।

'बड़े भाय' प्रारम्भ से ही बहुत विनोदी थे। विनोद में भी कठिन से कठिन प्रश्न का उत्तर अकाट्य देते थे। प्रचारक बनने से पिता जी दुखी थे, किन्तु कुछ कहते नहीं थे। एक बार अपनी चर्चा में उन्होंने रोचक प्रसंग छेड़ा। वास्तव में उसका तुरन्त उत्तर कठिन था। पिता जी ने कहा कि संघ वाले 'राम' के अनुयायी हैं। वन गमन के समय 'राम' सीता जी को साथ ले गये थे। उनका संकेत 'बड़े भाय' के लिये था। 'बड़े भाय' की धर्मपत्नी घर में थीं। विवाह बचपन में हो गया था। जिसका स्पष्ट दायित्व परिवार के लोगों पर ही था। मित्रों ने यह प्रसंग जब इनको सुनाया तो बहुत जोर से हंस पड़े। पल भर भी न रुकते हुए उन्होंने कहा कि "मैं 'राम' का अनुयायी हूं परन्तु 'राम' नहीं हूं। मैं 'राम' का अनुज लक्ष्मण हूं।" लक्ष्मण जी की धर्मपत्नी अयोध्या में ही थी। जब इनका यह उत्तर पिता जी को ज्ञात हुआ तो वे भी हंसने लगे। फिर कभी कुछ नहीं कहा। उनके इस उत्तर की चर्चा सर्वत्र होने लगी। स्वयंसेवकों पर भी इसका उत्तम प्रभाव हुआ। संघ शाखा विस्तार के लिए अनेक कार्यकर्ता विन्ध्याचल क्षेत्र से पूरा समय देकर निकल पड़े। शाखायें बढ़ने लगी।

'बड़े भाय' की कर्मठता तथा कार्यकुशलता के कारण संघ अधिकारियों ने कुछ मास बाद उनका क्षेत्र बढ़ाकर भदोही तक कर दिया। विन्ध्याचल (मिर्जापुर) के अतिरिक्त इनके क्षेत्र में वाराणसी जिले की ज्ञानपुर तहसील भी जुड़ गई। ज्ञानपुर और भदोही क्षेत्र कालीन उद्योग का केन्द्र है। इस क्षेत्र में शाखाओं का जाल बिछना प्रारम्भ हुआ। थोड़े दिनों में अनेक प्रभावी शाखायें प्रारम्भ हो गई। कालीन उद्योग में जो प्रमुख हिन्दू थे वे सब संघ के प्रभाव में आये। संघचालक स्तर तक के कार्यकर्ता बने। आज तक यह क्षेत्र संघ प्रभाव का है। विन्ध्याचल तथा उसी से लगा ज्ञानपुर क्षेत्र जिसके बारे में सब लोग समझते थे कि वहां माल-मलाई छकने वाले ही रहते हैं, सुविधा भोगी जीवन जीना ही वहां की सामान्य प्रकृति है, वहां कष्ट सहन करने वाली टोलियां खड़ी हो गई।

महात्मा गांधी की हत्या में संघ को जवाहर लाल नेहरू शासन ने फंसा कर बिना किसी आरोप के ४ फरवरी सन् १९४८ को प्रतिबन्ध लगा दिया। संघ के स्वयंसेवक और कार्यकर्ता पकड़े गये। 'बड़े भाय' भी नजरबन्द करके नैनी जेल भेज दिये गये। नई योजना के अनुसार उनके क्षेत्र में प्रतिबन्ध के दिनों में मैंने मई सन् १९४८ में विन्ध्याचल, अकोढ़ी, टिलठी कम्हरिया, गोपीगंज, ज्ञानपुर, चील्ह और कछवा में जाकर स्वयंसेवकों से भेंट किया। स्वयं-सेवक निर्भय थे। अकोढ़ी गांव के एक स्वयंसेवक ने कहा "हम सब तैयार हैं। 'बड़े भाय' क सनेस आयबा ओके के न मानी।" सभी शाखाओं में ऐसा ही भाव था। जो योजना बताई जाती थी उसे सभी बड़ी तत्परता से पूरा करते थे।

धीरे-धीरे कार्यक्षेत्र बढ़ता गया। संघ पर से प्रतिबन्ध हटने के पश्चात् कुछ वर्ष बाद वे मिर्जापुर जिला-प्रचारक बने। सम्पूर्ण जिले का दायित्व आने पर भी प्रवास साइकिल से

था। वह मेरी बहुत खातिर करते। उन दिनों मैं सोस्लिस्ट पार्टी का नेता था। मगर उनके दिमाग में पार्टीबन्दी का नाम तक नहीं था और न वह कोई भेद रखते थे। ट्रेड यूनियन के नेताओं को यह सबक उनसे लेना चाहिए कि ट्रेड यूनियन में राजनीतिक कटुता न लायें।

मेरा उनका सम्पर्क कई सरकारी श्रमिक कमेटियों तथा त्रिदलीय सम्मेलनों में रहा। मैंने देखा कि उन्होंने मजदूरों के हक को बहुत सफाई और ईमानदारी के साथ रखा। जिससे सरकार भी प्रभावित हुई। मजदूर नेताओं में ऐसे बहुत कम मजदूर नेता हैं जिन्हें बेईमान नहीं कहा जा सकता। मैंने आज तक किसी भी श्रमिक, सरकार के अफसरों या सार्वजनिक व्यक्ति को यह कहते नहीं सुना कि बड़े भाई ने मजदूरों के किसी मामले में बेईमानी की हो। ईमानदारी उनका लक्ष्य था।

एक वाक्या मैं जरूर लिखूंगा। जब कानपुर में भारतीय मजदूर संघ का अखिल भारतीय सम्मेलन होना था तो एक रोज ८ बजे सुबह वे मेरे दफ्तर में आए। उन्होंने मुझसे कहा कि आपको मैं सम्मेलन का स्वागताध्यक्ष बनाना चाहता हूँ। मैं कुछ देर तक उनको देखता रहा। मैंने समझा कि वह यह बात भूल से मुझे कह रहे हैं। मैं कुछ नहीं बोला। वह मेरे असमंजस को समझ गए। उन्होंने कहा आप जो कुछ अपनी तकरीर में कहना चाहें, कह सकते हैं। कोई जरूरी नहीं कि आप भारतीय मजदुर संघ की नीति को ही समर्थन दें या उस पर ही बोलें। आप चाहे तो विरोध में भी बोल सकते हैं। मगर आप वह दायित्व स्वीकार कर लीजिए। अब मेरे पास कोई जबाव न था। मैंने उनसे दो-तीन दिन का समय मांगा। जिस समय वह मुझसे यह बात कर रहे थे, मेरे पास कम्युनिस्ट पार्टी के एक वयोवृद्ध नेता बैठे थे। वह यह सब बात सुन रहे थे। मेरी और बड़े भाई की बात के बीच में तो वह कुछ नहीं बोले। जब बड़े भाई चले गए तो उन्होंने मेरे ऊपर दबाव डाला कि मुझको इस प्रकार के सम्मेलन का स्वागताध्यक्ष नहीं बनना चाहिए। कम्युनिस्ट पार्टी के वह नेता मुझे बराबर कई दिन समझाते रहे कि आप इसमें न शामिल हों।

तीन दिन बाद बड़े भाई मुझसे पूंछने आए। मैंने उनका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। मैं इकबाल करता हूं कि कम्युनिस्ट नेता के दबाव में आकर ही मैंने अस्वीकार किया था। यद्यपि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। इसका मुझे आज भी अफसोस है। सबसे खास बात यह है कि जब मैंने अस्वीकार किया तो बड़े भाई हंसते हुए चले गए। इलाहाबाद हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज को स्वागताध्यक्ष बनाया।

पहले जब कानपुर में श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी आते थे, तो उनके सम्मान में मैं एक छोटी-मोटी दावत अपने निवास स्थान पर किया करता था। बड़े भाई अवश्य ठेंगड़ी जी के साथ में आते थे और खाने के इन्तजाम में मेरा हाथ कभी-कभी बंटाया करते थे। यह उनकी महानता थी। अब तो ठेंगड़ी जी आते हैं तो मुझे सूचना तक नहीं मिल पाती। यह कार्यक्रम अब मध्यम पड़ गया है।

बड़े भाई एक महान व्यक्ति थे। ट्रेड यूनियन आन्दोलन में उनका बहुत बड़ा योगदान है। खुदा ने उन्हें समय से पहले ही हम लोगों के बीच से उठा लिया।

"बड़े भाई"

मकबूल अहमद खान, एम. ए. एल. एल. बी.
अध्यक्ष,
सूती मिल मजदूर पंचायत, कानपुर.

बड़े भाई की बीमारी के बारे में मुझे रामकृष्ण त्रिपाठी ने बताया था। साथ ही साथ यह भी बताया कि उनके अब बचने की कोई उम्मीद नहीं है। आखिरी समय है। यह बात सुनकर मुझे बहुत ही रंज हुआ। मैं सकते में आ गया। काफी देर तक सोचता रहा। आखिर में मैंने दिल को समझाया कि अच्छे आदमियों को खुदा जल्दी ही बुला लेता है। मैं उन्हें देखने अस्पताल गया।

उनकी याद, उनके और हमारे सम्पर्क के वाक्यात सिनेमा की रील की तरह नजर के सामने आते रहे। मेरा उनका सम्पर्क भारतीय मजदूर संघ बनने के बाद हुआ। पहली बार वह मेरे कार्यालय मेस्टन रोड पर आये। पहली ही मुलाकात में हम दोनों भाई की तरह से दोस्त हो गए। आखिरी दम तक दोस्ती बढ़ती ही गई। ट्रेड यूनियन आन्दोलन में अक्सर ऐसा होता है कि अपने निकटतम साथियों में भी कटुता हो जाती है। मगर बड़े भाई में यह अच्छाई थी कि वह दोस्ती में फर्क नहीं आने देते थे। ट्रेड यूनियन के साथियों को यह सबक बड़े भाई से सीखना चाहिए।

जब यह एम. एल. सी. थे और रायल होटल लखनऊ के विधायक निवास में रहते थे तो उन दिनों मुझे ट्रेड यूनियन कार्य से सरकारी अधिकारियों तथा मिनिस्टरों से मिलने अक्सर लखनऊ जाना होता था। जब कभी रात को रुकना होता तो मैं उन्हीं के कमरे में रुक जाता

बड़े भाई का जीवन ऐसा ही था। वे प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक रहे। भारतीय मजदूर संघ को अखिल भारतीय स्तर पर खड़ा करने का बहुत बड़ा श्रेय उनको है। वे दिन-रात अपने कार्य में जुटे रहे। अन्तिम क्षण तक अपने शरीर एवं स्वास्थ्य की भी चिन्ता नहीं की। जब से वे कानपुर प्रचारक के नाते आए मैंने उन्हें बहुत निकट से देखा। उनके संपर्क में रहा। भारतीय मजदूर संघ के कार्य में व्यस्त रहते हुए भी वे नियमित संघ स्थान पर जाते थे। ग्रीष्म शिक्षा वर्ग में पूरा माह १८-१८ घन्टे लेखा-जोखा और कार्यालय के कार्य में जुटे रहते थे। प्रयाग में कुम्भ के अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित अनेक नगरों की व्यवस्था का पूर्ण उत्तरदायित्व उन्होंने सम्भाला। सैकड़ों कार्यकर्ताओं को इस कार्य में लगाया। जिस कार्य को वे प्रारम्भ करते, पूर्ण करके ही विश्राम लेते। हजारों पत्र उन्होंने कार्यकर्ताओं को लिखे होंगे। प्रत्येक बन्धु के दुख-सुख में सक्रिय योगदान देते थे। सैकडों लोगों से उनके पारिवारिक सम्बन्ध थे।

एक बार मिर्जापुर की एक तहसील के वार्षिक उत्सव पर प्रमुख वक्ता के नाते १० मील साइकिल पर चढ़कर समय से २ घन्टा पूर्व पहुंच गये। एक साधारण स्वयंसेवक समझकर वहां के मुख्य शिक्षक ने उन्हें दरियां आदि बिछाने और अन्य व्यवस्था कार्य में सहयोग देने के लिए कह दिया। बड़े भाई ने उससे यह नहीं कहा कि मैं यहां भाषण देने आया हूं। मुख्य शिक्षक भी उन्हें नहीं पहचानता था। बाद में उत्सव के समय चिंता हुई कि बड़े भाई नहीं आये। कार्यक्रम आरम्भ होते ही मुख्य शिक्षक ने घोषणा किया कि किसी कारणवश श्री रामनरेश सिंह जी नहीं आ सके, तो तुरन्त मंच के पास पहुंच कर बड़े भाई ने बताया कि मैं तो २ घन्टे पूर्व से ही यहां उपस्थित हूं।

एक बार मेरा बड़ा सुपुत्र चन्द्रमोहन अपने बैंक के कार्य के निमित्त दिल्ली गया हुआ था। वहीं उसकी बड़े भाई से भेंट हो गई। परिवार का समचार पूछा। चन्द्रमोहन ने विशेष आग्रह किया कि निकट भविष्य में जब भी आप दौरे पर कानपुर आयें हमारे घर अवश्य आयें। बड़े भाई ने उसे कहा कि तुम्हारे पिता जी और तुम्हारे चाचा जी श्री जगदीश चन्द्र जी तो कई बार घर आने का आग्रह कर चुके हैं, परन्तु व्यस्तता के कारण काफी समय से तुम्हारे घर नहीं आ सका हूं। इस बार जब भी कानपुर आऊंगा तुम्हारे घर अवश्य आऊंगा। भोजन भी तुम्हारे घर करूंगा। माता जी (तुम्हारी दादी जी) के भी दर्शन करूंगा। मैं आपत्काल में कानपुर जेल में भी उनके साथ था। अपने अन्तिम प्रवास के पूर्व जब वे कानपुर आये तो श्री गिरीश अवस्थी और अन्य अधिकारियों के साथ घर आये। अत्यन्त व्यस्त होने के कारण बहुत थोड़ा समय निकाल कर परिवार के सभी सदस्यों से मिले। कष्ट होते हुए भी हंसते हुए बात करते रहे।

माननीय दत्तोपंत जी ठेंगड़ी ने, जिन्होंने भारतीय मजदूर संघ की नींव रखी है, एक विशेष मन्त्र दिया है। "राष्ट्रहित, उद्योगहित, अन्ततः मजदूरहित।" बड़े भाई जी ने आवाह्न किया है। संगठन संघर्ष के लिए; संघर्ष संगठन के लिए, संगठन और संघर्ष राष्ट्र हित के लिए। इस कार्य में किसी से किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं। राष्ट्र ही सर्वोपरि है।

अन्तिम दिनों में लाला लाजपतराय चिकित्सालय में जब वह मृत्यु से जूझ रहे थे होश आने पर कार्य सम्बन्धी बातें कहने का प्रयास करते थे। वह एक सच्चे निर्भीक कर्मयोगी थे। वह कुशल मार्गदर्शक, संगठन और श्रमिक क्षेत्र के विशेषज्ञ थे।

सेवा एवं परोपकार की मूर्ति

जगमोहन खन्ना,
प्रधान–आर्य समाज,
स्वरूप नगर (कानपुर)

स्वर्गीय बड़े भाई ने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र और समाज के लिए समर्पित किया था। अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन की चिन्ता न करते हुए दूसरों के दुख-सुख की ही उन्होंने चिन्ता की। दूसरों के लिये ही जिये। अपने जीवन में उन्होंने कितना कार्य किया वह हम सबके सम्मुख है। बड़े भाई का जीवन वास्तव में यज्ञमय था। अपने जीवन का उत्सर्ग करने हेतु वे निरन्तर आगे बढ़ते गये।

सामवेद का एक बहुत सुन्दर मन्त्र है। जिसमें कहा गया है कि "अपने हृदयों को दया और परोपकार की भावना से इतना सींचो कि वह दया तुम्हारे हृदयों से बाहर प्रवाहित होने लगे और स्वयं तुम दुखियों के समीप पहुंचकर उनके जीवन को सुखी बनाओ। दुखी पुरूष जब हमारे समीप आये तो हम उनकी सहायता करें, यह भी भद्रता है। परन्तु प्रभु इससे कुछ अधिक चाहते हैं। प्रभु की इच्छा है कि हम दुखियों के आने की प्रतीक्षा क्यों करें। हम उनके समीप पहुंच कर उनको सुख पहुंचाने का ध्यान करें। जब इस प्रकार की समर्पण की भावना हमारी होगी तो वेद कहता है कि उसके बाद अवश्य ही प्रभु तुम्हें प्रिय होंगे और प्रभु को प्राप्त करोगे। प्रभु प्राप्ति केवल इस प्रकार के सर्व-भूत-हितेरता: को ही होती है। यह ठीक है कि जब दूसरों के हित, समाज की सेवा और सही मार्ग दर्शन के लिए कोई व्यक्ति निरंतर अपने जीवन की आहुति देता है तो अपनी निजी आवश्यकताओं और अपने परिवार की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं कर पाता। वह पूरे समाज और राष्ट्र को ही अपना परिवार समझता है। प्रभु की प्रजा के कल्याण में ही अपना सम्पूर्ण जीवन लगा देने का अवसर सौभाग्यशाली मानव को ही मिलता है।"

तथा लाखों साधारण मजदूरों के साथ उनका जीवन्त सम्पर्क था। किसी भी प्रान्त से यदि कोई कार्यकर्ता बड़े भाई को पत्र लिखता था, तो अति व्यस्त रहने पर भी उसके पत्रों का वे जबाव जरूर देते थे। इस प्रकार की मिशाल श्रमिक जगत में विरल ही है। आधी रात को सोना और सुबह तड़के उठना। सारा दिन कार्यक्रमों में व्यस्त रहने पर भी वे कभी थके हुए दिखाई नहीं देते थे। वे सचमुच लौह पुरुष थे।

जब उन पर भारतीय मजदूर संघ के महामन्त्री का दायित्व आया उस समय वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य थे। उनको विधायक के रूप में अपने प्रदेश में जितना आवश्यक हैं और अन्य प्रदेशों में सीमित मात्रा में प्रथम श्रेणी से रेल यात्रा करने की सुविधा प्राप्त थी। उस समय भी वे अन्य प्रदेशों में दौरा करते समय द्वितीय श्रेणी में आरक्षण या बिना आरक्षण के यात्रा किया करते थे। वे हमेशा हम लोगों को लिखते थे, "मेरे लिए द्वितीय श्रेणी में आरक्षण करवा देना।" मैं बलपूर्वक यह कह सकता हूँ कि उनके स्तर का कोई श्रमिक नेता शायद ही दूसरे श्रेणी से सफर करता होगा। भारतीय मजदूर संघ के महामन्त्री को प्रथम श्रेणी में यात्रा करवाने का सामर्थ्य कार्यकर्ताओं को था किन्तु उसका उपयोग न करते हुए बड़े भाई का यह आचरण हमारे सामने चिरकाल तक प्रेरणा बन कर रहेगा।

बड़े भाई की वेशभूषा अत्यन्त साधारण थी। वे हमेशा मोटी धोती और मोटा कुर्ता पहनते थे और अपने कपड़े रोज स्नान करते समय स्वयं साबुन से धोते थे। कभी उनको धोबी के पास कपड़ा देते नहीं देखा। वे वर्ष भर दौरे पर रहते थे। कभी उनको सूटकेश का प्रयोग करते नहीं देखा। अपना कपड़ा और बिस्तर आदि रखने के लिए कपड़े का बना हुआ एक थैला प्रयोग में लाते थे। संगठन तन्त्र के वे विशेषज्ञ थे। भारत में श्रमिक संगठनों में जहां तीव्र प्रतिद्वन्द्विता और खासकर हमारे संगठन पर सरकार की कोप दृष्टि रहती आई है; भारत सरकार द्वारा सदस्य संख्या की जांच की प्रक्रिया में भारतीय मजदूर संघ को देश का दूसरे बड़े संगठन का सम्मान प्राप्त कराने का श्रेय बड़े भाई को ही है।

उनके विचार से संगठन के हित में कोई छोटा या बड़ा काम नहीं होता। बड़े भाई के चरित्र में यह भी हम लोगों ने देखा कि वे सब कामों को समान महत्व देते थे और स्वयं अगुआ बनकर सबके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करते थे। १९७८ के जयपुर अधिवेशन के समय अचानक आंधी के कारण सारा पंडाल गिर पड़ा तो बड़े भाई ने हम लोगों को पुन: मण्डप बनाने में सहयोग दिया। शाब्दिक सहयोग नहीं, अपने हाथों से उन्होंने खूंटे गाड़े, रस्सियां भी बांधी।

आलस्य और अकर्मण्यतावश कई बार हम उनके भोजन या ठहरने की उपयुक्त व्यवस्था नहीं कर पाते थे। किन्तु उन्होंने कभी क्षोभ प्रकट नहीं किया। हंसते हुए हर परिस्थिति को झेल लेते थे। वह स्वयंपूर्ण थे। जहां वह उपस्थित रहते थे वहां स्वयं नाना प्रकार के कार्यक्रम लेते रहते। कार्यकर्ताओं का मनोरंजन भी करते। परन्तु वे एक बात में बहुत सख्त थे। वह मजदूर संघ के कार्यक्रम में अव्यवस्था सहन नहीं कर पाते थे। वे कहते थे,

आदर्शवाद के मूर्त प्रतीक

रास बिहारी मैत्र
मन्त्री, भारतीय मजदूर संघ
कलकत्ता.

स्वर्गीय रामनरेश सिंह (बड़े भाई) आदर्शवाद के मूर्तरूप थे। भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ता के नाते गत् बीस वर्षों से मैं उनके सम्पर्क में रहा हूं। वे महान श्रमिक नेता और साधारण कार्यकर्ता भी थे। वे दृढ़संकल्प, कर्त्तव्यनिष्ठ और विशाल हृदय वाले व्यक्ति थे। वे अन्याय के साथ कभी समझौता नहीं करते थे। संगठन के लिए हानिकर मामलों के विरुद्ध डटे रहना और उसके प्रतिकार के लिए कोई भी मूल्य देने के लिए सदा तैयार रहना उनका विशेष गुण था। वे कहते थे, हमारी लड़ाई जैसे रोटी-रोजी के लिए है उसी प्रकार मौलिक अधिकारों की रक्षा करने के लिए भी है। श्रमिक आन्दोलन के द्वारा अर्जित अधिकार यदि कोई छीनने की चेष्टा करेगा तो हर तरह का जोखिम उठाकर हम उसकी रक्षा करेंगे।

भारतीय मजदूर संघ के उच्च पद पर रहते हुए, श्रमिक क्षेत्र में विभिन्न विचारधाराओं के पुराने संगठनों के साथ हर परिस्थिति में कदम से कदम मिलाकर चलने में वे कभी पीछे नहीं हटे। यदि कोई अन्य श्रमिक संगठन किसी बुरे विचारों से हमारे ऊपर प्रहार करने का प्रयास करता था तो बड़े भाई उसका मुंह तोड़ जबाव देने में हिचकिचाते नहीं थे। नेशनल कैम्पेन कमेटी और इन्डियन लेबर कान्फ्रेंस में भाग लेते समय उनके इन गुणों का अनुभव हम लोगों ने किया है।

बड़े भाई मजदूर संघ के नेता अवश्य थे, परन्तु वर्तमान मजदूर नेताओं के समान केवल मंच पर खड़े होकर भाषण देने वाले नहीं। भारतीय मजदूर संघ के हजारों कार्यकर्ताओं

मानवता के अग्रदूत

ना. ग. डोंगरे,
महामंत्री,
अखिल भारतीय कृषि मजदूर संघ (बुलढ़ाणा)

इस दुनिया में कुछ लोग अनन्य असाधारण तो कुछ लोग सामान्य जीवन जीते हैं । इसके अतिरिक्त कुछ लोग ऐसे होते हैं जो साधारणों में असाधारण होते हैं । वैसे देखा जाए तो लौकिक दृष्टि से वे लोग सामान्य जीवन जीते हैं । किन्तु अपने उच्चतम अंगभूत गुणों के कारण वे असामान्य की श्रेणी में गिने जाते हैं । स्व. बड़े भाई इस श्रेणी के व्यक्तित्व वाले असाधारण पुरुष थे ।

भारी भरकम शरीर, आकर्षक ऊंचाई, कृष्ण वर्ण, तथा सामान्य वेशभूषा में प्रथम परिचय में वे कुछ उग्र व्यक्ति जैसे लगते थे । किन्तु अल्प से परिचय में उनके चेहरे पर जो प्रसन्न हास्य की दुधिया चांदनी खिलती थी उस मधुर स्नेह में आगंतुक सराबोर हो जाता था । उनका हास्य नैसर्गिक एवं सहज होता था । सभी को, विरोधियों को भी, अपना बनाने वाला विशुद्ध संगठन मंत्र-तंत्र को आत्मसात करने वाले, श्रेष्ठ संगठक बड़े भाई का मन प्रेम से लबालब भरा शुद्ध निर्मल मन था । उनके कुशल नेतृत्व के कारण भारतीय मजदूर संघ ने सिंह की छलांग के समान तेज रफ्तार से प्रगति की और दूसरे क्रमांक के अखिल भारतीय मजदूर संगठन के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की । भारतीय मजदूर संघ का स्वप्न हैं, भारत में प्रथम क्रमांक का मजदूर संगठन बनना किन्तु यह स्वप्न साकार देखने का सौभाग्य प्राप्त होने के पहले ही बड़े भाई भगवान को प्यारे हो गये ।

विनम्र वृत्ति और अति सादगी का दर्शन उनके रहन-सहन और बाणी-व्यवहार में होता था । कई वर्ष विधायक रहे किन्तु शासकीय सुख-सुविधाओं के उपभाग की लालसा उन्हें जरा भी न थी । वाराणसी भारतीय मजदूर संघ के दो छोटे-छोटे कमरों में विधायक बड़े भाई

"हमारी यूनियन ही हमारी शक्ति है। इस विचारधारा से श्रमिकों को संस्कारित करना चाहिए।"

भारतीय मजदूर संघ के वे सांख्यिकी विशेषज्ञ थे। उनके लेखों और भाषणों के माध्यम से यह प्रकट होता था कि भारतीय श्रम शास्त्र, अर्थशास्त्र और उत्पादन सम्बन्धी नवीनतम आंकड़ों के वे कम्प्यूटर हैं।

बड़े भाई सुवक्ता थे। वे जटिल से जटिल तत्व बड़े सहज भाव से सरल भाषा और रोचक शब्दों में उपमा और उपमेय के साथ कहानी और किस्से के रूप में कार्यकर्ताओं को समझा देते थे।

त्याग-तपस्या और बलिदान के मूर्त प्रतीक थे बड़े भाई। १९८४ में इन्दौर शिक्षा वर्ग के समय (जो उनके जीवन का अन्तिम कार्यक्रम था) वे काफी अस्वस्थ थे। दुख की बात यह है कि हम लोग उनकी बीमारी की गम्भीरता नहीं जानते थे। कार्यक्रम के अन्तिम दिन दोपहर को हम सब जब भोजन की पंक्ति में खड़े थे, तो वे कार्यसमिति के सदस्यों को एक-एक पुस्तिका दे रहे थे। शरीर चल नहीं रहा था फिर भी हम लोगों को न बताते हुए वे अपना काम तत्परता से करते जा रहे थे।

आपत्स्थिति के समय जेल से छूटने के बाद वे कार्यकर्ताओं के मनोबल को कायम रखने के लिए सारे भारत का दौरा करते रहे। बिना डर के विधान परिषद की बैठकों में आपत्स्थिति के खिलाफ जोरदार शब्दों में बोलते रहे। उन्होंने विधान परिषद् में साफ शब्दों में कहा था कि मीसा और नासा कानून का प्रयोग मुनाफाखोरों, कालाबाजारियों और समाज विरोधियों के ऊपर न करके विद्यार्थियों, श्रमिकों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के ऊपर निष्ठुरता से किया जा रहा है।

तत्वज्ञानी ठेंगड़ी जी के साथ में व्यवहार ज्ञानी बड़े भाई गांडीवधारी पार्थ के समान थे। अब और कभी उनका बलिष्ठ कंठ सुनने को नहीं मिलेगा। उनका भौतिक-पार्थिव सहवास अब नहीं मिलेगा। किन्तु बड़े भाई भारतीय मजदूर संघ के हर कार्यकर्ता के हृदय मन्दिर में सदा चैतन्य रूप में विराजमान रहेंगे।

बन्दे महापुरुष

दत्ता राव देव,
महामंत्री,
भारतीय रेलवे मजदूर संघ, बंबई.

बड़े भाई के बारे में क्या लिखूं ? किस तरह लिखूं ? उस महापुरुष के बारे में मेरे जैसा सामान्य कार्यकर्ता कुछ लिख पायेगा यह बात असम्भव सी लगती है। भक्तिशास्त्र में कहा गया है कि वह (भक्ति) जिसको मिल जाती है, वह तृप्त हो जाता है, अमृत हो जाता है, परन्तु उसका दिव्य अनुभव वह शब्दों से अभिव्यक्त नहीं कर पाता क्योंकि शब्दाभिव्यक्ति से वह परे होता है। इसी तरह एक महानुभाव, 'बड़े भाई' हमारे बीच आया, अपने व्यक्तित्व और कार्यकुशलता से वह हमें प्रभावित करता रहा। और फिर एक दिन परलोकगामी होकर हमसे बिछुड गया।

बड़े भाई के सहवास में रहकर उनसे बातचीत एवं संभाषण का सौभाग्य मेरे लिये बड़े आनन्द की बात होती थी। कितने किस्से-कहानी उनके पास थे। वह हम लोगों के लिये मार्गदर्शक और प्रेरणा के स्रोत थे। बड़े भाई का सादा जीवन, सहज वाणी, वक्तृत्व कला और कार्यसमिति का कामकाज चलाने वाली गम्भीर मुद्रा, बड़ों के प्रति विनम्र भाव तथा सामान्य कार्यकर्ताओं के प्रति अकृत्रिम स्नेहभाव उनकी इन विशेषताओं को भला कभी भुलाया जा सकता है।

एक धोती और एक कुर्ता, जाड़े में एकाध जाकिट, मफलर, बदन ढांकने के लिये एक शाल और बाकी यात्रा का सामान, झोले में बंधा कंधे पर लटकाये आजीवन प्रवास करते रहे। विदेशी तो क्या अनावश्यक स्वदेशी वस्तुओं से भी बड़े भाई सदा दूर ही थे। उनका

ने इस लेखक एवं अन्य कई छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं के साथ भीड़भाड़ में कई बार निवास किया। वहीं पर वे हमेशा ठहरते थे।

कार्यकर्ता बड़ा हो या छोटा उनके लिए समान था। वे कार्यकर्ताओं को कभी निराश नहीं होने देते थे। कार्यकर्ताओं के कार्य का सहानुभूतिपूर्वक एवं अर्थपूर्ण मूल्यांकन करना उनका सहज स्वभाव था। बुलढाणा में १९८३ में अखिल भारतीय कृषि मजदूर संघ का पहला अधिवेशन हुआ। अधिवेशन के बाद व्यवस्था विभाग प्रमुखों की बैठक हुई। भोजन व्यवस्था बहुत अच्छी थी। किन्तु उपहास करने की दृष्टि से एक कार्यकर्ता बोला कि भोजन व्यवस्था अच्छी थी किन्तु दाल की कटोरी में सौ गोते लगाने पर भी दाल के दाने का पता नहीं लग पाता था। यह सुनकर स्वाभाविक ही भोजन विभाग प्रमुख का चेहरा कुछ तन गया। शीघ्र ही बड़े भाई ने कहा कि ऐसा कभी-कभी करना ही पड़ता है। समय पर संख्या बढ़ने पर सबको भोजन प्रदान करने का यही एक मार्ग होता है। इस जबाव से कार्यकर्ता को अपनी भूल समझ में आ गई और भोजन विभाग प्रमुख का गुस्सा भी गायब हो गया।

उन्हें मजदूरों से अपार प्यार था। अन्याय के विरोध में संघर्ष करना उनकी तेजस्वी सीख है। असंगठित ग्रामीण मजदूरों की समस्याओं का उनका विशद अध्ययन था। इस संदर्भ में उन्होंने इस लेखक एवं उनके समान अनेकों को बहुमूल्य मार्गदर्शन किया। उत्तर प्रदेश में प्रवास करने का मेरा पहला मौका था। स्वास्थ्य कुछ खराब था। उस समय बड़े भाई ने मुझे अमूल्य मार्ग-दर्शन तो किया ही साथ ही मेरे स्वास्थ्य के अनुसार सारा प्रबन्ध करने के लिए वहां के कार्यकर्ताओं को सूचना देना भी वह नहीं भूले। उन्होंने यह काम जिस अपनेपन से किया उससे उनके स्नेह तथा आदर्श नेतृत्व का हमें आभास मिला।

प्रतिकूल परिस्थिति में सब मुसीबतों का सामना करने वाले बड़े भाई मृत्यु की पकड़ में आसानी से नहीं आए। उनकी बीमारी के प्रदीर्घ काल में उनकी प्रकृति ने चढ़ाव-उतार देखे। कैंसर रोग जैसी भीषण और दर्दभरी बीमारी में मृत्यु की छाया में निरन्तर होते हुए भी बड़े भाई, अपने प्रिय ध्येय के चिंतन में मग्न होकर कर्मयोगी की तरह डटे रहे। उनके शालीन व्यक्तित्व में प्रखर ध्येय निष्ठा तथा कठोर कर्मयोग के साथ ही मन की कोमलता का सुरम्य संगम हो गया था।

रुग्णशय्या पर अपनी जिन्दगी के अन्तिम क्षणों के समय यदि कोई चिरपरिचित अन्तरंग सहयोगी कार्यकर्ता उनसे मिलने आता तो वे उसके साथ भावना विवश होते हुए सजल नेत्रों से बातें करते। किन्तु वे अश्रु नैराश्य या अतिरेक के प्रतीक न होते। उस अश्रु में से ध्येय-निष्ठा के तेजस्वी, स्फुलिंग बाहर निकलते थे। मृत्यु के तीन माह पूर्व जब पुणे के डॉ० मुले के अस्पताल में उनका औषधोपचार हो रहा था, उस समय बड़े भाई यह सपना देख रहे थे कि तीन-चार माह में पूर्णतः अच्छे होकर पूर्ववत कार्यभार सम्भाल लेंगे।

१३ दिसम्बर, १९८४ को मुझे उन्होंने जो पत्र लिखा उसमें लिखा है कि "इस समय डॉ० मुले के अस्पताल पूना में विश्राम कर रहा हूं। चार-छः माह तो कमजोरी जाने में लग जायेंगे। आगे की योजना मान्यवर ठेंगड़ी जी की राय से तय की जायेगी। मेरा सभी को प्रणाम्।

पंडाल और उसकी साजसज्जा, निवास और प्रसाधन की पर्याप्त व्यवस्था, भोजन का समुचित इन्तजाम, व्यासपीठ की उपयुक्त रचना, ध्वज का स्थान, कार्यक्रम की अग्रिम रूपरेखा और समय का पालन आदि उनके सचेत और सावधान चित्त की गहराई प्रकट करते थे। इन सब कामों के लिए उपयुक्त कार्यकर्ताओं का चयन उनकी सूझ-बूझ का परिचायक था। संगठन की कार्यपद्धति के सभी पहलुओं पर बड़े भाई का चिंतन बड़ा ही मनोहारी और मौलिक हुआ करता था।

भारतीय मजदूर संघ की कार्यसमिति की बैठक के मर्यादित समय में सभी विषयों को एक के बाद एक विचारार्थ लेकर निश्चित समय में सभा का उचित निर्णयों सहित सफल समापन करना उनकी संचालन कुशलता की परिचायक था। कोई विषय बिना स्पर्श रह नहीं जाता था और न अनिर्णित। मजदूर संघ की बागडोर पकड़े बड़े भाई रामनरेश होते हुए भी नरेश कृष्ण की तरह कुशल सारथी थे। कार्यसमिति में उनका व्यक्तित्व सचमुच ही बड़े भाई जैसा ही होता था। कभी हंसकर, कभी डांट कर सभी विषय और चलती बहस पर गरमागरम चर्चा, नियोजित समय में वे पूरा कर ही लेते। विश्राम के समय भी सदस्यों के साथ बातचीत करके आगे के कार्यक्रमों को निश्चित करना, तदनुसार व्यवस्था प्रारम्भ कर देना, आदरणीय ठेंगड़ी जी के सभी कार्यक्रम, कार्यक्रमों की तिथि, यात्रा का आरक्षण आदि सभी बातें बड़े भाई निपटा दिया करते थे।

संगठन एवं कार्यकर्ताओं के लिये उनका व्यक्ति कल्पतरू के समान था ; वे पूर्ण चन्द के समान विरोध भाव लेकर चलने वालों के लिये भी शीतल स्निग्ध स्नेह और आदर की किरण बरसाते रहते थे। निश्चय ही वे पूर्ण चन्द थे, परन्तु निष्कलंक थे। कार्यावेश में प्रखर सूर्य की तरह परन्तु तापहीन थे। वे हम श्रमिकों के हृदय के नरेश भी थे और राम भी। बड़े भाई आज हमारे बीच में नहीं हैं पर मन इसे नहीं मानता। उनको विदा कहने के लिये प्रयत्न करने पर भी कण्ठ से कोई शब्द या ध्वनि नहीं निकलती। केवल मूक भावनाएं निःशब्द मुखर उठती है।

मान्यवर। हे वन्द्य नश्वर। शुक्र के तारे महात्मन।
हे तपस्वी, हे गुरो, हे मानधन, हे पुण्यपावन ।।
दिव्य जीवन ही तुम्हारा, हो हमें पथ का प्रदर्शन।
लो नमस्ते—ओ मुक्त आत्मन ।।

जीवन सात्विक सरल और सादगीमय था। "निर्वाहः प्रतिपन्न वस्तुषु"। आवश्यकता कम, स्वभाव अनाग्रही और संतृप्त।

भारतीय मजदूर संघ की शुरुआत के समय जब अधिक काम करने की नौबत आई तो उस वक्त के उनके अनुभव बड़े ही विस्मयकारक, रोमांचक तथा अनोखे हैं। कई बार गुंडों की बस्ती में अकेले घुसकर उनको 'दादाओं' से मुठभेड़ करनी पड़ी। वह किसी के धमकाने से पीछे हटने वाले व्यक्ति नहीं थे। वे कहा करते थे कि जब कभी काम के लिए निकलता हूं तो खाली हाथ नहीं लौटता। यात्रा किसी भी गाड़ी से करनी हो और उसमें चाहे कितनी भी भीड़ हो, मगर उनको जगह मिल ही जाती थी। जगह मिली नहीं और ट्रेन छोड़नी पड़ी ऐसा कभी हुआ ही नहीं। इसी प्रकार यात्रा के समय भोजन भी संयोगवश कहिये, मिल ही जाया करता था। यात्रा के समय भोजन का समय किस स्टेशन पर आयेगा इसका भी उन्हें पता नहीं रहता था। पर जिस किसी स्टेशन पर भोजन के समय गाड़ी रुकती थी, उस स्टेशन पर बड़े भाई को ढूंढते हुए कोई न कोई कार्यकर्ता पहुंच ही जाता था। वह उनके भोजन का प्रबन्ध कर देता था। यदि कभी एकाध बार ऐसा न भी हो तो उनके साथ यात्रा करने वाले सज्जन ही उनसे अपने साथ भोजन करने का आग्रह करते थे। उनके लाख मना करने पर भी वे उन्हें भोजन करवा कर ही रहते थे।

बहती हुई नदी के समान उनकी यात्रा अपनी स्वाभाविकता से अखंड चलती रहती थी। सभा, सम्मेलन, कार्यकर्ताओं के साथ विचार विमर्श की उनकी दिन चर्या रहती थी। इस सारी व्यस्तता में भी वे पत्राचार करते रहते थे। कोई भी पत्र लेखक ऐसा नहीं था जिसे बड़े भाई का उत्तर तुरन्त न मिला हो। कार्यक्रम का दिन तय करना, ट्रेन या बस का समय बराबर याद रखना, वापसी यात्रा का सजगता से आरक्षण करना आदि सभी छोटे-बड़े काम एक संगणक की भांति जिंदगी भर बड़े भाई निभाते रहे और वह भी इस सावधानी से कि भूल से भी कभी उसमें भूल न रह जाए :

बड़े भाई कार्यक्रम के लिये जैसे ही सभा स्थल पर पहुंचते थे कार्यकर्ताओं के बीच एक रोमांचकारी लहर दौड़ जाती थी। सारा वातावरण हर्ष और उल्लास से भर जाता था। ऐसा रोमांचक कि कार्यकर्ताओं को ऐसा अनुभव होने लगता था कि कोई आलौकिक प्रेरणापुंज उनके सामने व्यासपीठ पर विराजमान है। उनका भाषण कार्यकर्ताओं के साथ एक जीता जागता सीधा संवाद हुआ करता था। शब्दों में सादगी, किन्तु विचार, भाष्य अनुभव सम्पन्न, उपयुक्तता से भरपूर, सही व्यवहार का सम्यक दर्शन कराने वाला तथा शय और आश्य से भरा हुआ होता था।

अधिवेशन किसी संगठन का हो, उसकी सफलता के वे प्रमुख प्रहरी बन जाते थे। भारतीय रेलवे मजदूर संघ के तीनों अधिवेशनों, मद्रास, लखनऊ तथा नागपुर में विशेषकर यह अनुभव आया। अधिवेशन में कितने प्रतिनिधि शामिल हो सकते हैं इसका उनका स्वयं का अंदाज होता था और वह कभी गलत नहीं निकला। उसके आधार पर अधिवेशन के लिए

उनकी भावधारा उनके दृढ़मन को द्रवित करती सदा बहती रही। यदि दुश्यंत के शब्दों में कहें तो :

हो गई है पीर पर्वत सी, पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए॥

उनका मानस अन्याय के प्रतिकार के लिये संगठित होकर कार्यवाही करने का था :

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
जो तु सेवै मूल को फूलै-फलै अघाय॥

सभी समस्याओं का समाधान उन्होंने समाज की संगठित शक्ति बताया। इसी विश्वास को मूर्त रूप देने के लिए वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयंसेवक बने। गृहस्थ (विवाहित) होते हुए भी संघ के प्रचारक बन गये।

बड़े भाई में देश-भक्ति कूट-कूट कर भरी थी। इसी भक्ति ने उनको दलितोत्थान की ओर प्रेरित किया। "बड़े भाई" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहते हुए भारतीय मजदूर संघ का कार्य सन् १९६० से कर रहे थे।

पहले वे उत्तर प्रदेश के महामन्त्री, बाद में बिहार, बंगाल के क्षेत्रीय मन्त्री बनाये गये। प्रतिकूल परिस्थितियों में बंगाल का काम शून्य से प्रारम्भ किया था। पर वह आज अन्य श्रम संगठनों को पीछे छोड़ रहा है। कब कहां-कसे-किस प्रकार से कार्य खड़ा हो सकता है, तदनुरूप समय पर सहायता देना, मार्गदर्शन देना; उनका स्वभाव बन गया था।

आपत्काल के दमघोंटू वातावरण में जब लोगों के पेरों में बेड़ी, हाथों में हथकड़ी और मुंह पर ताले डाल दिये गये थे, उस समय जब मान्यवर ठेंगड़ी जी को लोक संघर्ष समिति का अखिल भारतीय स्तर पर संचालन का काम दिया गया तो बड़े भाई ने १९७५ में अखिल भारतीय महामन्त्री का दायित्व सम्हाला। भारतीय मजदूर संघ को बहुत कम समय में ही उन्होंने देश में दूसरे क्रमांक के श्रम संगठन के रूप में खड़ा कर दिया। उनके नेतृत्व में भारतीय मजदूर संघ स्वदेशी-विदेशी मंचों तक पहुंचा। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय श्रय संगठनों, समितियों, गोष्ठियों में मजदूर संघ सम्मान के साथ आमंत्रित किया जाने लगा। प्रत्येक व्यक्ति का उचित उपयोग करना वे जानते थे। अपनी इसी योग्यता के कारण प्रत्येक कार्यकर्ता को उन्होंने कार्य में लगाया। उनका मानना था कि :

अमंत्रमक्षरं नास्ति मूलमनोषधम्।
अयोग्यं पुरुषों नास्ति, योजकः तत्रः दुर्लभः॥

हीरा मुख से ना कहे लाख हमारो मोल

मदनलाल सैनी,
संगठन मंत्री,
अखिल भारतीय कृषि मजदूर संघ,
सीकरी (राजस्थान)

गहरा पक्का रंग, लम्बा इकहरा बदन। मजबूत कद-काठी छोटे-छोटे बाल। धोती पर साधारण कुर्ता-जाकिट। ठेठ देहातीपन। चेहरे पर दमक। दुधिया चमकीले दांत। पावों में साधारण चप्पल। लम्बे डग भरने की आदत। योगियों का साधनापूर्ण जीवन। कबीराना फक्कड़पना। चौराहों और राजपथों पर श्रमिकों का मसीहा, चट्टानी अडिगता और दीनों के प्रति दयालुता इन्हीं सबके समुच्चय थे 'बड़े भाई' उर्फ रामनरेश सिंह जो दस वर्ष तक भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय महामन्त्री के रूप में हर मजदूर के हृदय में आस्था, सामर्थ्य, सम्पर्ण और विश्वास का बीज बोते हुए चले गये। वह बीज उनके चले जाने के बाद भी निःशेष नहीं हुआ है। काव्य के देवता निराला की तरह 'बड़े भाई' जीवन भर दुखी आंखों के अश्रु पोंछते रहे, कुटियों की विषम वेदना और उसमें से उठते धुएं को एक सही अर्थ और दिशा देते रहे।

दीपावली की शुभरात्रि को दलथम्मन सिंह के घर में 'बड़े भाई' ने अपनी नन्हीं आंखें खोली थीं। वे केवल मैट्रिक तक पढ़े। पर कबीर की तरह वे बहुज्ञ और बहुश्रुत थे। यही कारण था कि उन्होंने अपने जीवन के लिए जो मार्ग चुना उसमें कांटे ही कांटे थे। पांवों के लहू लुहान हो जाने के बावजूद वे उस रास्ते पर अविराम चलते रहे। वे सचमुच ही दीनबन्धु थे :

दीन सबन को लखत है दीनहि लखहि न कोई।
जो रहीम दीनहि लखे, दीनबन्धु सम होई॥

उस श्रम सेवाव्रती ने भारतीय स्मृतियों, धर्मग्रन्थों का भी गहरा अध्ययन किया था। पंचतन्त्र, शुक्रनीति, चाणक्य नीति, मनुस्मृति के कई प्रसंग वे अपने भाषण के बीच उद्धृत करते थे। उनकी सपाट बयानी और जुझारू शैली के बीच दृष्टांत और प्रसंग कक्षाएं अलंकृत मणि-सा महत्व रखती थीं। किसी चिकित्सक की भांति उनकी पैनी नजर सदा विकार को जड़मूल से खत्म करने पर रहती थी। उनका चिन्तन सदा समसामयिक होने के साथ-साथ शाश्वत मूल्यों पर आधारित रहता था उनकी प्रखर जीवन शैली अपने साथ और ईर्द-गिर्द रहने वाले लोगों को अपने ढंग से कांट-छांट कर तराशती रहती थी। वे अन्याय के विरुद्ध संगठित रूप से खड़े होने का आह्वान करते थे।

व्यक्ति की धन सम्पत्ति की लालसा कभी समाप्त नहीं होती। वह एक के बाद एक नई योजना बनाता रहता है। सन्तोष जीवन में कहीं दिखाई नहीं देता। पर बड़े भाई इसके अपवाद रहें। परिवार का काम चल रहा है—आने वाले मेहमान का भी सम्मान करने में परिवार समर्थ है तो और अधिक नहीं चाहिए :

साईं इतना दीजिये जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाए॥

आन्दोलनों के दौरान अपने गहरे अनुभवों, पैनी दृष्टि द्वारा वे हमेशा ही छोटी-छोटी बातों के लिए संघर्ष करने की राय नहीं देते थे। वे कहते थे कि यदि मुख्य समस्याएं (मांगे) पूरी होती हैं तो शेष तो उनके साथ-साथ अपने आप ही प्राप्त (सुलभ) हो जाती है। बांबी को नहीं, सांप को मारना चाहिए। कंटीले पेड़ को समाप्त करना हैं तो टहनी और तना नहीं, उसकी जड़ (मूल) ही काट दो :

बांबी कूटे बावरा सर्प न मारा जाहि।
मूर्ख बांबी न डसें, सर्प सबन को खाहि॥

श्रम संगठनों में आपसी तालमेल, दंद-फंद, आन्दोलन, सेठों और मजदूरों के झगड़े, सामन्ती टुकड़ों पर पलने वाले श्रम संगठनों की खींचतान के न जाने कितने अवसर, कार्य और प्रसंग बड़े भाई के जीवन में आये होंगे—पर वे अपने विरोधियों के बीच भी सदा सम्मान पाते रहे। शायद यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उन्होंने अपना व्यक्तित्व अजात शत्रु सा बना लिया था। आन्दोलनों के दौरान उनकी दृष्टि 'व्याघ्र-लोमड़ी' नीति का अंग बन जाती थी। आन्दोलन और संघर्ष की व्यूह रचना करते समय पुनीत राष्ट्रहित-उद्योगहित-मजदूरहित का लक्ष्य उनकी आँखों से कभी ओझल नहीं हुआ। विरोधियों के घर में, उनके किले में फंसकर भी, कभी वे विचलित नहीं हुए। चिन्ता या कमजोरी की कोई शिकन उनके चेहरे पर कभी नहीं उभरी। उनकी निडरता और निर्भयता सदा इस क्षेत्र के सिपाहियों (कार्यकर्ताओं) के लिए पाथेय बनकर रहेगी। उनकी धारणा को दुष्यंत के शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है—

उनके सद्प्रयासों के कारण ही अन्याय, अत्याचार, शोषण और विषमता के विरुद्ध देश के श्रमिक संगठन एक मंच पर राष्ट्रीय श्रमिक अभियान समिति के मंच पर एकत्रित हो सके। देश में उनका तथा भारतीय मजदूर संघ का सम्मान निरन्तर बढ़ता रहा पर इनके मन वाणी से ऐसा नहीं लगा कि उन्हें इसका अभिमान हो :

बड़ा बड़ाई ना करे, बड़ा न बोले बोल।
हीरा मुख से ना कहे लाख हमारो मोल ॥

दीन दुखियों के हितों के लिए जीवन भर जूझने वाला श्रम क्षेत्र का वह लौह पुरुष अपनी तपश्चर्या के अन्तिम दिनों में ब्रेन ट्यूमर जैसे भीषण रोग से ग्रसित हो गया। यद्यपि पूना, बम्बई और कानपूर में उनको उपचाराधीन रहना पड़ा पर वह मसीहा एक दिन "अरे ससुर सब चलता है, ठीक होई जायेंगे" कहता हुआ स्मृति पट पर एक गहरा प्रतिबिंब खींचता है कि किसी भी परिस्थिति को बड़े सहज एवं अविचल ढंग से झेलना उनकी आदत बन गई थी।

बड़े भाई साहस के पुतले थे। कांटों पर चलने और अंगारों से खेलने की उनकी आदत थी। जिस जीवन में खतरे या जोखिम उठाने की स्थितियां न हों उनकी दृष्टि में वह जीवन पौरुषहीन कायर लोगों का था। सफेद पोश लोगों को यदि कहीं वे पथ विचलित होते या संघर्ष से कतराते देखते तो अपने लोगों को आगाह करते थे कि उन्हें भी संघर्ष प्रेरित एवं लक्ष्य संकल्पित करते हुए साथ रखा जाय, जब भी ऐसा अवसर आता इस प्रकार के लोगों को अपने प्रेरणास्पद किन्तु चुटीले और मनोरंजनपूर्ण, कभी-कभी हास्य-व्यंगपूर्ण छोटे-छोटे कथानकों द्वारा मन पर सीधी चोट करके अपेक्षित प्रभावोत्पादकता और उत्साह सहज रूप में जागृत कर देते थे।

बड़े भाई का कहना था कि साहसी, मेहनती, हम्म मत वाले व्यक्तियों को ही समाज ने सम्मान दिया है—जो लोग हिम्मत वाले नहीं होते उनकी स्थिति समाज में रद्दी कागज की तरह होती है।

हिम्मत किम्मत होय, बिन हिम्मत किम्मत नाहि।
करे न आदर कोय, रद्द कागज ज्यों राजिया ॥

लाचारी, बेबसी, दीनता और हीनता को बड़े भाई अपने पास तक नहीं फटकने देते थे। उनका विचार था कि यदि हम अपनी सम्पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य से काम करें और फिर भी कुछ त्रुटि रह जाय, कुछ अघटित घट जाये तो उसका दुख और बुरा नहीं मानना चाहिए। उनकी दृष्टि से कर्म सफलता की पहली शर्त और समर्पण पहला आदर्श था। उन्होंने वामपंथियों के गढ़ बंगाल में भारतीय मजदूर संघ का काम खतरे उठाकर, संकट झेलकर, किया। उनका कहना था, "कटेगा काऊ के सीखेंगे नाऊ के" अर्थात् खरोचें किसी को क्यों न लगे, नाई का लड़का तो बाल काटना सीख ही लेगा।

उदयपुर (राज.) में उदयपुर डिवीजन के भारतीय मजदूर संघ के अधिवेशन के पश्चात् प्रेस कांफ्रेंस थी। प्रेस कांफ्रेंस में बड़े भाई बोल रहे थे। अखिल भारतीय स्तर के प्रश्नों के दौरान पत्रकारों ने राजस्थान में कहां कैसा काम है पूछा। बड़े भाई ने प्रदेश से सम्बन्ध के प्रश्न होने से इसका उत्तर देने के लिए मुझे कहा। मैंने प्रश्न का उत्तर देते समय प्रथम उन स्थानों के उद्योगों का वर्णन किया जहां काम कम था। बाद में उन स्थानों की चर्चा की जहां काम बहुत अधिक था।

पत्रकार वार्ता के बाद बड़े भाई ने कहा आपने राजस्थान में अपने कार्य की स्थिति का वर्णन तो अच्छा किया लेकिन प्रारम्भ ठीक नहीं किया। ऐसे अवसरों पर जब भी कार्य के सम्बन्ध में बताना हो, जानकारी देनी हो तो अच्छा प्रभावी काम कहां-कहां है, पहले वह बताना चाहिए। फिर जहां काम कम है बताना आवश्यक हो तो बताना चाहिए अन्यथा छोड़ देना चाहिए।

२६ सितम्बर, १९८४ को भारतीय मजदूर संघ से संबन्धित भारतीय डाकतार कर्मचारी महासंघ, अखिल भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ, भारतीय रेलवे मजदूर संघ तथा केन्द्रीय कर्मचारियों ने एक दिन की सांकेतिक हड़ताल का आवाहन किया था। बड़े भाई राजस्थान के प्रवास के दौरान जयपुर पधारे थे। डाक कर्मचारियों की एक विशाल सभा रखी गई थी। सभा समाप्ति के बाद बड़े भाई ने कहा इन कर्मचारियों ने लम्बे समय से कोई संघर्ष नहीं किया है। इस कारण इनकी हिम्मत नहीं हो रही है। प्रदेश में स्थान-स्थान पर प्रवास करके नीचे पोस्ट आफिस स्तर तक हड़ताल के लिए 'हड़का दो', खड़े हो जायेंगे। जिसका काम है उसको उससे ही करवाने की योग्यता उसमें पैदा करो।

आपत्काल के पश्चात् बड़े भाई का राजस्थान प्रवास था। नया-नया काम था। कार्यकर्ता काम के दबाव को संभाल सकने की दृष्टि से अपर्याप्त थे। बातचीत में मैंने कहा बड़े भाई नये श्रम संघ बड़ी संख्या में हमारे साथ आ रहे हैं। हमारी टीम छोटी है। विशेषकर कानूनी कार्यवाही के लिए योग्य कार्यकर्ताओं की बड़ी कमी है। इस पर बड़े भाई बोले—हमारे पास जो कार्यकर्ता हैं, उनमें से ही योग्य बनाने पड़ेंगे। मैंने शंका व्यक्त की कि बड़े भाई नये लोग मुकदमें (कानूनी कार्यवाही) में हार गये तो लोगों को बहुत हानि हो सकती है तथा हमें भी यश की प्राप्ति न होगी।

बड़ भाई बोले, "काहे को चिन्ता करते हो। जिसके भाग्य में जो लिखा होगा, व होगा। नाई का लड़का यदि यह सोचे कि मैं तो उस्तरा उस समय ही हाथ में लूंगा जब अच्छी तरह से बाल काटना दाढ़ी बनाना आ जायेगा तो वह भूखा ही मरेगा।"

भारतीय मजदूर संघ में आने पर हमारा स्वभाव, व्यवहार, जो समाज में प्रिय था बदलना नहीं चाहिए। यह कहते हुए बड़े भाई ने बताया कि "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक पूर्व परिचित कार्यकता के घर, जो आजकल भारतीय मजदूर संघ को एक यूनियन का काम

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं ।
मेरी कोशिश है कि यह सूरत बदलनी चाहिए ।।

उनकी स्मृतियां उनके सानिध्य में बिताए क्षण हमारा सम्बल है। धरोहर है स्मरण आता है कि उन दिनों बड़े भाई का राजस्थान प्रवास था । मैं प्रदेश में जहां-जहां जाता वहां-वहां कार्यकर्ता मेरे अमेरीका के अनुभवों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा व्यक्त करते । अलवर में बड़े भाई का प्रवास था । वहां मैं अपने अनुभव सुना रहा था । बड़े भाई के सामने भी अलग-अलग समय पर अलग-अलग कार्यकर्ताओं द्वारा पूछे जाने पर मैंने अपने अमेरिका के अनुभव सुनाए । मुझे सबसे अधिक कष्टदायक अनुभव वहां के काम (सेक्स) जीवन का हुआ । भारतीय संस्कारों के अनुरूप मैंने वहां के काम जीवन के प्रति हर बार अनुभव सुनाते हुए उनके जीवन के सम्बन्ध भला-बुरा कहा । बड़े भाई के सामने मैंने चार-पांच बार अमेरीकी जीवन के इस प्रसंग का वर्णन किया, तो वे बोले :

—मदन जी

—हां बड़े भाई ।

—देखो, एक सन्यासी था । उसके दो शिष्य थे । सन्यासी ने उन्हें कहा था औरत को छूना सन्यासी के लिए वर्जित है । किसी भी सन्यासी को महिला कभी न छुए। दोनों शिष्य गुरू के आदेश का बराबर पालन करते रहे । एक दिन दोनों शिष्य अपने गुरू के पास दूसरे गांव जाने के लिए तैयार हुए । गुरू के गांव जाने के लिए नदी पार करनी पड़ती थी । वहां कोई नाव न थी । दोनों शिष्यों ने तैर कर नदी पार करने की ठानी । दोनों शिष्य नदी किनारे पहुँचे । वहां उन्हें एक महिला मिली । महिला ने शिष्यों को देखकर कहा, "रात्रि हो रही है । पीछे लौटना खतरे से खाली नहीं है । रात्रि में यहां खड़े रहना भी सुरक्षित नहीं है । नाव भी नहीं दिखाई देती जो मुझे नदी के उस पार पहुंचा दे । तैरना भी मुझे नहीं आता । इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि मुझे नदी पार करवा दें ।

दोनों शिष्य असमंजस में पड़ गये । महिला के बार-बार आग्रह, दूर गांव और रात्रि के खतरे का वर्णन करने से एक साधु ने उसे पीठ पर लाद कर नदी के उस पार पहुंचा दिया । महिला अपने गन्तव्य स्थान पर चली गई । दूसरा शिष्य इसका प्रारम्भ से ही विरोध कर रहा था कि गुरू जी ने महिला को छूना अनुचित बताया है । चलो तुम्हारी शिकायत गुरू जी से करूंगा कि तुमने उस महिला को पीठ पर लादकर नदी पार करवाई । दोनों शिष्य गुरू के पास पहुंचे । दूसरे शिष्य ने गुरू से कहा कि उसके गुरू भाई ने एक महिला को छुआ ही नहीं, पीठ पर लादकर नदी पार करवाया । गुरू जी यह तो साधु धर्म से गिर गया है । जब भी कभी प्रसंग आता वह साधु कहता यह कोई साधु है ? इसने एक महिला को पीठ पर लाद कर नदी पार करवाई है । यह साधु धर्म से गिर गया है ।" एक दिन गुरू ने कहा, बेटे इसने महिला को पीठ पर लादकर केवल नदी पार करवाई पर तुमने तो उसे अभी भी पीठ पर लाद रखा है ।" मैं इशारा समझ गया । फिर कभी मैंने काम जीवन का वह वर्णन उस प्रकार नहीं किया ।

केवल आशीर्वाद

मुकुन्द गोरे
महामंत्री,
भारतीय मजदूर संघ (महाराष्ट्र)

वर्ष १९८४ भारतीय मजदूर संघ द्वारा संगणक (कम्प्म्पूटर) विरोधी मनाने का निर्णय किया गया था। २३ जुलाई, १९८४ को श्री ठेंगड़ी जी का बम्बई में इस विषय पर 'संगणक विरोधी परिषद' में भाषण हुआ था। इसके पूर्व श्री ठेंगड़ी जी ने इस विषय पर गहरा अध्ययन भी किया था।

आटोमेशन विषय पर ८-१० पुस्तकें लेकर मैंने बड़े भाई को दिखाने का प्रयास किया। लेकिन उन्होंने उन पुस्तकों को देखा तक नहीं। कहा, यह पुस्तकें मैं नहीं पढ़ूंगा और आप भी मत पढ़िये। यह स्पष्ट है कि आटोमेशन से मजदूरों की छंटनी होती है। इसलिए आज की स्थिति में आटोमेशन लाना अनुचित है।"

जो बात मैं उनको गर्व से बताना चाहता था, उस पर उनकी यह स्पष्ट प्रतिक्रिया थी।

पुणे मजदूर संघ की 'लीगल विंग' (कानूनी सहायता शाखा) मजबूत हो, यह सोचकर पुस्तकालय के लिए हजारों रुपए खर्च करके पुस्तकें लाई जा रही थीं। वहां के उपसचिव ने बड़े भाई को पुस्तकालय दिखाया और कहा कि, "पुस्तकों की संख्या अभी जितनी हम चाहते हैं उतनी नहीं है। वकीलों की संख्या भी बढ़ानी पड़ेगी। शायद उनकी अपेक्षा यह थी कि बड़े भाई कहेंगे कि आपने काफी पुस्तकें इकट्ठी कर ली हैं। इतनी पुस्तकें अन्यत्र नहीं हैं। लेकिन बड़े भाई ने कहा, "आपका 'लीगल विंग" जितना कमजोर रहे उतना ही अच्छा है। आप कानूनी कार्रवाई में फंसोगे तो संगठन का काम कब करोगे?"

देखते है, गया। तो दरवाजे (बैठक) में घुसते ही उनके पिता जी ने कहा, "बड़े भाई थोड़ा ठहरिये, अपने लाड़ले की बात तो सुन लीजिए। वह अपनी पत्नी से क्या कह रहा है। मैंने ध्यान से सुना अपना कार्यकर्ता जोर-जोर से हथेली पर मुक्का मार-मार कर बोल रहा था "कैसे देरी हो गई भोजन में, मैं देख लूँगा कल कैसे देरी होती है? वह अपनी पत्नी से इस प्रकार बात कर रहा था मानो वह उसका पति नहीं, यूनियन का नेता हो। अपनी पत्नी से नहीं, मैनेजमेंट से बात कर रहा हो।

उनके पिता जी बोले, "बड़े भाई इससे तो यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्यकर्ता था तभी अच्छा था।" उन्होंने कहा घर परिवार के प्रति हमारा ऐसा व्यवहार उचित नहीं है। कहां लड़ना—कहां जोर से बोलना, कहां मित्रतापूर्ण व्यवहार करना, कहां धीरे और मधुर बोलना, यदि यह समझ कार्यकर्ता में नहीं आयेगी तो वह संगठन और परिवार दोनों को हानि पहुंचाकर समर्थक के स्थान पर शत्रु ही पैदा करेगा।

दुर्लभ व्यक्तित्व

सुखदेव प्रसाद मिश्र,
संपादक,
भा० म० संघ समाचार

स्नातक की शिक्षा पूर्ण करने के बाद मैं संघ विस्तार योजना में रत था। १९६९ में उत्तर प्रदेश का शीत शिविर लखनऊ में लगा था। वहीं पर मेरी पहली भेंट बड़े भाई से हुई। तभी मजदूर क्षेत्र में मेरी योजना हुई थी। उस दिन लगभग ३ बजे हम कानपुर पहुंचे। बड़े भाई ने पूछा, "कैसे आये—इस समय तो कोई गाड़ी नहीं है।" मैंने उत्तर दिया "साइकिल से।" पुखराय से ८० मील साइकिल से। पास बुलाया। मेरी पीठ पर हाथ रखा। बोले-शाबाश तब से लेकर २ मई, १९८५ तक कितनी भेंटें हुईं, पता नहीं। मैं उनके प्रति समर्पित और निष्ठावान कैसे बन गया, इसका भी पता नहीं चला।

बड़े भाई के बिछोह की वेदना इतनी घनी है कि छटपटाहट को शब्द ढूंढ़ें नहीं मिलते। हृदय का वह वैराट्य, वह सहज वात्सल्य, स्नेह आत्मीयता, ममता, क्षमाशीलता, जिसने पग-पग पर प्रेरणा के साथ अनवरत संरक्षण दिया अब सब कुछ सदुर्लभ हो गया है।

भारतीय मजदूर संघ के उच्च पद पर होते हुए भी अदना से अदना कर्मचारी कार्यकर्ता के साथ उन्होंने ऐसा अपनापन जोड़ा कि पूरे देश में मजदूर संघ कार्य ने एक परिवार का गरिमापूर्ण रूप धारण कर लिया। मान्यवर ठेंगड़ी जी ने कार्य के पारिवारिक स्वरूप की परिभाषा की तो बड़े भाई ने उसके कार्यरूप में परिणित किया।

पुणे से 'मजदूर वार्ता' नामक पत्र प्रकाशित होता है। उससे सम्बंधित कार्यकर्ताओं की एक बैठक चल रही थी। हर १५ दिन में २००० प्रतियों पर टिकट एवं पते चिपकाना बड़ा ही मुश्किल काम है। यह काम बाहर के लोगों को पैसे देकर करवाया जाये, इसकी इजाजत वे बड़े भाई से लेना चाहते थे। बड़े भाई बोले, "क्यों भाई, आपको दफ्तर के बाद यूनियन का क्या काम रहता है? दो हजार प्रतियां कोई ज्यादा थोड़े ही है। आपको यह काम करने में क्या शर्म आती है? जब मुझे समय रहता है तो मैं भी 'मजदूर संघ समाचार पत्रिका' पर टिकट चिपकाता हूं। आपको क्या तकलीफ है?

कार्यकर्ताओं पर उनकी पूरी नजर होती थी। समय-समय पर सूचनाओं द्वारा उन्हें सुधारने में बिल्कुल हिचकते नहीं थे। एक बार एक बैठक में ५०-५५ कार्यकर्ता आये हुए थे। सभी ने अपना-अपना परिचय देते हुए वृत्त कथन किया। एक कार्यकर्ता ने अपना पूरा वृत्त कथन सर झुका कर किया। बैठक समाप्त होने के बाद चाय-पान के दौरान बड़े भाई ने उस कार्यकर्ता को नाम से पुकारा। उसे समझाया कि भाई आप नीचे देखकर वृत्त कथन क्यों करते हो? यह आदत बुरी है। ऊपर देखकर बातें करनी चाहिए।

एक बार उन्होंने कहा था, "यूनियन का क्या होगा इसकी मुझे चिन्ता नहीं। यूनियनें आती हैं, जाती हैं। लेकिन अपना वहां का जो कार्यकर्ता है, उसकी मुझे चिन्ता है।" कहीं पर मुठभेड़ होने का समाचार मिला था। कार्यकर्ताओं की कुशलता का समाचार मिलने तक वह अस्वस्थ होते हुए भी कार्यकर्ताओं के प्रति व्याकुल हो उठे थे।

दरिद्र नारायण के पुजारी

अमरनाथ डोगरा,
उपाध्यक्ष, भारतीय प्रतिरक्षा
मजदूर संघ एवं मंत्री, भारतीय
मजदूर संघ, दिल्ली प्रदेश।

बड़े भाई से प्रथम भेंट कब हुई थी ठीक से कुछ स्मरण नहीं। किन्तु स्मृति पटल पर जो घटना अंकित है, वह सन् १९७१-७२ की है। पठानकोट में प्रतिरक्षा कर्मचारियों का आंदोलन चल रहा था। आंदोलन को श्रमिकों का भरपूर सहयोग एवं समर्थन प्राप्त हो रहा था। इस क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ का यह प्रथम बड़ा संघर्ष था। आंदोलन की सफलता से विरोधी संगठनों का बौखलाना स्वाभाविक था। किन्तु स्थानीय एवं ऊपर के बड़े अधिकारी भी उन संगठनों से मिलीभगत होने के कारण न्यायोचित संघर्ष को कुचलने के लिए अनुचित हथकण्डे अपनाएंगे, ऐसी अपेक्षा नहीं थी। इन्हीं चुनौतियों के दृष्टिगत पंजाब प्रदेश भारतीय मजदूर संघ के तत्कालीन महामन्त्री श्री राजकृष्ण जी भक्त मांगे पूरी होने तक आमरण-अनशन पर बैठे गये।

रक्षा मंत्री एवं सेना मुख्यालय के अधिकारियों से वार्ता हेतु मुझे दिल्ली भेजा गया। संगठन की गतिविधियों का केन्द्र तथा देश भर से दिल्ली आने वाले कार्यकर्ताओं का आश्रय उन दिनों श्री ठेंगड़ी जी का निवास ५७ साऊथ एवेन्यू हुआ करता था। दिल्ली पहुंचने पर विदित हुआ कि ठेंगड़ी जी प्रवास पर हैं। अब क्या हो ? दिन किसी प्रकार बीता। रात्रि को देखा कि किसी कारण से बड़े भाई भी कानपुर से दिल्ली आए हुए हैं। बड़े भाई को अभी तक दूर ही से देखा था। कभी वास्ता तो पड़ा नहीं था। उनके आने से सहारा हुआ कि चलो अब बड़े भाई इस समस्या का निपटारा करवा देंगे।

बड़े भाई की एक बड़ी विशेषता थी 'शक्ति'। प्रवास की थकावट और अधिवेशनों-कार्य-क्रमों की व्यस्तता का उनके शरीर पर कोई प्रभाव नहीं होता था। मैंने उन्हें प्रातः ४ बजे से रात्रि दो-दो बजे तक कार्य करते देखा है। उनके चेहरे पर थकान नहीं देखी। हम थक जाते थे, लेकिन वह थकने का नाम तक नहीं लेते थे। कानपुर में अखिल भारतीय अधिवेशन के समय दिन भर काम करने के बाद मैंने उनसे कहा, "बड़े भाई आज तो बहुत थक गया हूं।" उन्होंने जवाबी सवाल दागा, "यह कहने से तुम्हारा मतलब क्या है कि मैं भी थक गया हूं. मैं तो कभी नहीं थकता।"

बड़े भाई के साथ पंडित राजाराम पढ़ते थे। अपनी बीमार मां की दवा ले जाने के लिए वे घर से पांच रुपये लाये थे। रुपये विद्यालय में कहीं गिर गये। वे बड़े भाई को पड़े मिल गये। उन्होंने कक्षाध्यापक श्री त्रिलोचन त्रिपाठी को यह कह कर दे दिया कि ये रुपये पड़े मिले हैं, जिसका हो उसे दे दें। उस समय पांच रुपये की बहुत बड़ी कीमत थी। फिर क्या था पढ़ाई बीच में रोक दी गई। सभी लड़कों को मैदान में बुलाया गया। सभी लड़के डर रहे थे कि आज किसी को जरूर पीटा जायेगा। बड़े भाई एक मुलजिम की भांति मेज के ऊपर खड़े थे। श्री त्रिपाठी ने सभी से पूछा "यह रुपये किसके हैं? क्या चोरी करके लाये गये हैं?" सम्बन्धित छात्र राजाराम रोते हुए बोले, "मैं पांच रुपये अपनी मां की दवा के लिए लाया था। पता नहीं कब, कहां गिर गये थे। कक्षाध्यापक ने मेज पर खड़े विद्यार्थी की ओर इशारा करते हुए कहा—यह रुपया रामनरेश सिंह को मिला था, इसने हमको दिया, सबको इसकी भांति ईमानदार बनना चाहिए।"

"चट्टी खोलो चट्ट से—विद्या आवे पट्ट से।"

बड़े भाई और यदुनन्दन सिंह कक्षा पांच के छात्र थे। उस समय बड़े भाई पढ़ने में तेज नहीं थे। कक्षाध्यापक पं० त्रिलोचन त्रिपाठी ने कहा कि जो लड़के पढ़ने में कमजोर हैं यदि वह चट्टी खोल ले तो विद्या जल्दी आ जावेगी। एक दिन यदुनन्दन सिंह और बड़े भाई साथ-साथ जा रहे थे। रास्ते में उन्हें सीसा का टुकड़ा मिला और उसी से उन्होंने (बड़े भाई ने) चट्टी (माथा) चीर लिया और लहूलुहान विद्यालय पहुंचे। कक्षाध्यापक ने पूछा कि यह क्या हो गया रामनरेश। उन्होंने बड़ी सहजता में उत्तर दिया, "पंडित जी, आप ही ने तो कहा था कि चट्टी खोलो चट्ट से—विद्या आवे पट्ट से। मैंने कुछ भी नहीं, केवल आपकी आज्ञा का पालन किया है। और सचमुच इस घटना के बाद वे कुशाग्र बुद्धि हो गए।"

आपत्कालीन में बड़े भाई मीसा में बन्दी थे। चौदह दिन के बाद रिमाण्ड पर बाहर आते थे। मैं (रामसिंह उनका लड़का बनकर) मिलने जाता था। उस दिन रिमाण्ड पर लगभग ४०-५० लोग कचहरी लाये जा रहे थे। एक पुलिसकर्मी ने संघ के वयोवृद्ध कार्यकर्ता प्रसिद्ध वकील श्री गंगाराम तलवार को धक्का दिया —अबे बुड्ढे जल्दी आगे बढ।' इतना सुनना था कि बड़े भाई ने उस पुलिसकर्मी को ऐसा तमाचा मारा कि वह दीवार पर जा गिरा। तड़प कर कहा—"तुमको बात करने की तमीज नहीं है।"

स्मृति पटल पर अंकित एक अन्य दृश्य उभर रहा है। आठ केन्द्रीय श्रम संगठनों द्वारा गठित राष्ट्रीय अभियान समिति के आह्वान पर २३ नवम्बर १९८३ को देश भर से लाखों श्रमिक संसद भवन पर प्रदर्शन के लिए दिल्ली में एकत्रित हुए हैं। इण्डिया गेट से लेकर कृषि भवन तक राजपथ के दोनों ओर नर मुण्डों का ठाठें मारता, लहराता एक अथाह जन समुद्र उमड़ पड़ा है। बोट क्लब घास के मैदानों ने इतना विराट मजदूर मोर्चा पहिले शायद ही कभी देखा हो। भगवा ध्वज सबसे आगे, सबसे ऊपर। भारतीय मजदूर संघ के सदस्यों की विशाल उपस्थिति देखकर मोर्चे के अन्य, विशेषकर साम्यवादी, घटक हतप्रभ हैं। उनके अधिकतर सदस्य बंगाल से आए हैं, किन्तु संख्या अपेक्षा से कहीं कम।

तीस फुट ऊंचे मंच से बोलने वाले वक्ता की आवाज दूर-दूर तक फैले श्रोताओं तक पहुंच नहीं पाती है। अतः शोर हो रहा है। नारे लगाये जा रहे हैं। मोर्चे के जिस घटक के जिम्मे मंच व्यवस्था थी लगता है उसने पूर्वानुमान और पूरी जिम्मेदारी से कार्य नहीं किया है। ध्वनि विस्तारकों की संख्या कम है। अब क्या हो? नारे और भी जोर से बुलन्द होने लगते हैं। एक ओर से भारतमाता की जय तो दूसरी ओर से इन्कलाब जिन्दाबाद के घोष उभरते हैं। एक होड़ सी लगने लगी है। यह दृश्य संयुक्त मोर्चे की एकता की भावना के अनुरूप नहीं है। मंच संचालक उपस्थित विराट जन समुदाय को शांत करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। किन्तु शोर बढता ही जाता है। लोग उठने लगते हैं और तभी मंच पर धोती कुर्ता पहने लम्बा, ऊंचा, भरा-पूरा एक व्यक्ति दिखायी पड़ता है। अपनी लम्बी-लम्बी बाहों को हवा में लहराते हुए उसने सिंह के समान गर्जना की "बहुत हो गया-अब यह नारे बन्द करिए" जहां है वहीं बैठ जाइए। माईक की व्यवस्था की जा रही है। आप शांति से बैठेंगे तो सब सुनाई देगा। बैठिए—बैठ जाइए। नारे बन्द। अब कोई नारा नहीं लगेगा। मंच से कुछ कहा जा रहा है उसे सुनिए। बैठिए। और कोलहल थम गया है। ज्वार भाटे के पश्चात् समुद्र जैसे शांत हो जाता है वैसे ही सब शांत स्थिर हो गया है। लाखों की इस भीड़ को थामने नियंत्रित और अनुशासित करने वाले बड़े भाई थे। उनकी वाणी में प्रभाव था। शब्द प्राणवान थे। उनमें अपार जन-समुदाय को स्तब्ध कर देने की अपार क्षमता थी। इस ऐतिहासिक रैली को भारतीय मजदूर संघ संस्थापक मान्यवर ठेंगड़ी जी ने सम्बोधित किया था।

बोट क्लब की इस विराट रैली के बाद एक और प्रसंग। राष्ट्रीय अभियान समिति के आह्वान पर दिनांक २१ अगस्त, १९८३ को देशभर से हजारों श्रमिक प्रतिनिधि तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में उपस्थित हैं। स्टेडियम खचाखच भरा हुआ है। कहीं तिल धरने के लिए स्थान नहीं है। स्थान न होने के कारण स्टेडियम के बाहर भी बड़ी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित हैं। बारी-बारी से वक्ता भाषण करते जा रहे हैं।

बड़े भाई मंच पर भाषण के लिए उपस्थित होते हैं। तुमुल हर्षध्वनि और भारतमाता की जय घोष के साथ बड़े भाई का स्वागत होता है। स्टेडियम में उपस्थित भारतीय मजदूर संघ के हजारों प्रतिनिधि उत्साह से भरकर भारतमाता की जय के नारे सुर और ताल के साथ बोलने लगे हैं। बड़े भाई चारों ओर निहारते हैं। लगता है स्टेडियम में उपस्थित साम्यवादी

आंदोलन के बारे में सुनकर वह प्रसन्न हुए। किन्तु श्री भक्त जी आमरण-अनशन पर बैठे हैं यह सुनकर परेशान हो गए। बोले, "आमरण-अनशन पर बिठाने के लिए उस भले पुरुष के अतिरिक्त और कोई नहीं मिला था। स्वयं क्यों नहीं बैठ गए ? किससे अनुमति लेकर अनशन पर बिठाया ? दिल्ली आकर क्या होगा ? चलो, अब आए हो तो अधिकारियों से वार्ता करके मामले का तुरन्त निपटारा करो। उस समय वहां उपस्थित आठ-दस कार्यकर्ताओं के मध्य बड़े भाई ने सहारा देना तो दूर, खिचाई कर डाला। उनके आने से जो आशा बंधी थी उस पर पानी फिरता हुआ सा लगा। मन को चोट लगी कि यह तो बहुत रूखे हैं। हमारी समस्या को तो समझा नहीं, ऊपर से डांट दिया। खैर, मैं रक्षा मन्त्रालय और सेना मुख्यालय के चक्कर काटने लगा।

श्री जगजीवन राम उन दिनों रक्षा मन्त्री थे। पारे की भांति उन्हें पकड़ पाना सरल नहीं था। सेना मुख्यालय के संबंधित अधिकारी कान ही न धरते। एक-एक दिन भारी हो रहा था। उधर भक्त जी मांगे पूरी होने से पूर्व आमरण-अनशन तोड़ने के लिए तैयार नहीं, इधर सेना मुख्यालय को मांगे स्वीकार नहीं। बड़ी विकट स्थिति थी। दिन भर कार्यालयों, अधिकारियों के बंगलों की खाक छान कर देर रात गए वापस लौटता तो बड़े भाई पूछते क्या हुआ ? कुछ नहीं हुआ, सुनकर बिगड़ते "दिन भर मटर गश्ती करने से क्या होगा ? अरे, मन्त्री जी का घेराव करो। धरना दे डालो। कुछ तो करो। भक्त जी को शहीद करवाओगे क्या। और थोड़ा रुक कर पूछते भोजन भी हुआ कि नहीं। हरि का होटल बन्द हो जाएगा। उसे भोजन रखने के लिए कह दिया है। जाओ, पहले भोजन करके आओ।

भोजन हुआ कि नहीं यही थी उनके स्वभाव की विशेषता और इसीलिए उनकी डांट की चिंगारी जलाती नहीं थी। सुहाती थी, गर्माती थी। कार्यकर्ता को तपाती, ऊष्णता प्रदान करती थी। उनके प्रति मेरे मन में प्रारम्भ में एक रूखे-सूखे मजदूर नेता की जो छवि बन गई थी धीरे-धीरे वह लुप्त होती चली गयी और ऊपर से रूखे दिखने वाले बड़े भाई भीतर से किस कदर कोमल हैं उनका यह स्वरूप उजागर होता गया। वह तो पारस थे। कार्यकर्ताओं को गढ़ने-तराशने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। उनका इस विषय में व्यवहार कुछ ऐसा ही था जैसे :—

गुरू कुम्हार शिष्य कुंभ है—गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट।
अन्दर हाथ सहाय दे—बाहिर बाहिर चोट॥

वह साधारण मनुष्य होकर असाधारण प्रतिभा, योग्यता, क्षमता एवं कर्मठता के स्वामी थे। मनुष्यों में मनुष्यत्व तथा पुरूषों में पुरुषत्व के प्रतीक थे। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी आयु पर्यन्त मर्यादाओं का दृढतापूर्वक पालन करने के कारण वह वास्तव में मर्यादा पुरुष थे।

उद्योगपति अपने भाषणों में हिंसा की जिम्मेदारी मजदूर यूनियनों पर डालते हैं। हिंसा के कारण उत्पादकता में व्यवधान के फलस्वरूप राष्ट्र की हानि उनके भाषणों का मुख्य स्वर है।

बड़े भाई बोलने के लिए खड़े होते हैं। सदैव की भांति निर्भीकता और बेबाकी से कहते हैं, "हिंसा का कारण धन है। मजदूर तो निर्धन है। वह क्या हिंसा करेगा। वह स्वभाव से ही शांतिप्रिय है। शान्ति चाहता है। धन के बल पर हिंसा करवाई जाती है। मारधाड़, लूटपाट तोड़फोड और हत्याएं धन के कारण होती है। औद्योगिक शांति और उत्पादन वृद्धि से राष्ट्र समृद्धि और अहिंसा के सिद्धान्त का पालन करने वाले हमारे संगठन से आप बात भी करना नहीं चाहते किन्तु उन तत्वों अथवा संगठनों को आपसे मान्यता मिलती है जो हिंसा और हिंसक क्रान्ति में विश्वास रखते हैं।

अपने भाषण में उदाहरण देते हुए बड़े भाई ने कहा, "कानपुर के एक बड़े उद्योग में हमारे संगठन द्वारा किये गए आन्दोलन और मांगों के विषय में समझौता वार्ता करने के लिए मैं उद्योग के मालिक से मिलने गया। मालिक ने कहा आप का संगठन तो शाकाहारी है। आप ब्लैकमेल नहीं कर सकते। मां-बहन की गाली नहीं दे सकते। तोड़फोड़ नहीं कर सकते। हिंसा नहीं अपना सकते। फिर आप से डर किस बात का ? समझौता वार्ता की क्या आवश्यकता ? यानी आप उन्हीं संगठनों की मांगें मानते हैं जिनसे हिंसा का डर है। हिंसा के बढ़ावे का मूल कारण यही है। सम्मेलन में कानपुर के उपरोक्त उद्योगपति उपस्थित थे। बड़े भाई से नजर मिली तो उनकी नजर नीची हो गई। देशभर से सम्मेलन में सम्मिलित हजारों उद्योगपति प्रतिनिधियों को बड़े भाई के भाषण ने झकझोर दिया। राष्ट्रहित में हम सर्वस्व अर्पण करने के लिए तत्पर है किन्तु इस यज्ञ में आप शामिल नहीं होंगे तो कैसे चलेगा। राष्ट्रहित में हम उत्पादन बढ़ाएंगे, किन्तु बढ़े हुए उत्पादन का सारा लाभ आपकी तिजोरियां भरें यह कैसे चलने दिया जा सकता है। बाद में बड़े भाई मजदूर संघ कार्यालय पर देर तक इस विषय पर बात करते रहे थे।

यह घटना छोटी है कि बड़ी इसका निर्णायक मूल्यांकन कदाचित् इतिहास ही बेहतर ढ़ंग से कर पाएगा। किन्तु यह तो स्पष्ट है कि सत्य बात करने से वह डरते नहीं थे। दबते नहीं थे। उन्होंने कभी भी, कहीं भी, कैसा भी, कोई अनुचित व्यवहार नहीं किया। अपनी बात वे बेधड़क, निशंक, निर्भय होकर रखते थे कि औद्योगिक उत्पादन वृद्धि राष्ट्र के लिए है, न कि उद्योगपतियों के लिए। यह उन्हें भी तो समझना सीखना चाहिए। मजदूर संघ विचार की पताका उस दिन बहुत ऊंचे आकाश में फहराने लगी थी। बड़े भाई के भाषण की भूरि-भूरि सराहना हुई थी।

संगठन तंत्र के वह बेजोड़ शिल्पी थे। एक-एक कार्यकर्ता का निर्माण करते हुए उन्होंने कार्यकर्ताओं की सेना खड़ी कर दी। जुझारू, स्वावलम्बी, स्वाभिमानी, धीर, गम्भीर उदात्त, देश भक्ति से ओतप्रोत, दृढ़व्रती, दृढ़ निश्चयी, कर्मठ एवं शोषित दलितों के उत्थान और

घटाकों के सदस्य बोट क्लब की भांति इन्क्लाव जिन्दाबाद का नारा कहीं बुलन्द कर देंगे तो यहां भी नारों की होड़ से अप्रिय दृश्य निर्मित हो जाएगा। किन्तु आश्चर्य, घोर आश्चर्य। भारतमाता की जय में सभी ने स्वर मिलना प्रारम्भ कर दिया है। सबने एक साथ भारतमाता की जय बोल कर स्टेडियम को गुंजा दिया है।

बड़े भाई पुलकित नेत्रों से अब भी उपस्थित जन समुदाय को निहार रहे हैं। नारे लगने देने के थोड़े समय बाद उन्होंने अपना एक हाथ ऊपर उठा दिया है। नारे बन्द हो गए हैं। सब ओर ऐसा सन्नाटा छा गया है कि सुई गिरने की आवाज भी सुनाई दे जाये। उसके बाद बड़े भाई ने जो धुआंधार भाषण किया उसका स्मरण आने पर आज भी रोमांच हो आता है। आर्थिक विषयों पर आग उगलने के लिए मंच पर विराजमान बड़े-बड़े विख्यात कामरेड नेता उस दिन निःस्तेज दिखने लगे थे।

आवाज में दम हो तो सब सुनते हैं। यह दम बड़े भाई में था। संगठन में शक्ति हो तो सब साथ देते हैं। यह शक्ति उन्होंने संगठन में पैदा की थी। अभियान समिति में साम्य-वादी घटाकों के सदस्य संयुक्त कार्यक्रमों में भारतमाता की जय के नारे का प्रारम्भ के दिनों में विरोध किया करते थे। धीरे-धीरे शान्त होकर चुप रह जाने लगे और आज स्वर में स्वर मिला कर भारतमाता की जय बोल रहे थे। यह संस्कार उन्हें दिया जा सका इससे बड़े भाई की सामर्थ्य का परिचय मिलता है।

एक और घटना याद आती है। भारतीय मजदूर संघ का मार्च १९८१ का कलकत्ता अधिवेशन। बंगाल प्रदेश में साम्यवादी सरकार। साम्यवादी यूनियनों के गढ़ में मजदूर संघ का अधिवेशन। अधिवेशन की सफलताओं को लेकर आशंकाएं। किन्तु बड़े भाई निश्चिन्त। उन्हें सफलता का पूरा विश्वास। अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। दस हजार से अधिक प्रतिनिधि विशाल पंडाल में उपस्थित थे। दूसरे दिन शोभा यात्रा निकली। हजारों हजार भगवे ध्वज। मीलों लम्बा जलूस। "देश के हित में करेंगे काम–काम के लेंगे पूरा दाम" लाल सलाम के नारे सुनने के अभ्यस्त कलकत्ता निवासी अचकचा कर सड़कों, बाजारों, मकानों दुकानों पर एकत्रित हो गए कि यह भारतमाता की जय कहां से गूंज रही है? कुछेक हर्षविभोर हो शोभा यात्रा पर पुष्प बरसाने लगे। राष्ट्रभक्त मजदूरों, कर्मचारियों का ऐसा विशाल जलूस कलकत्ता के बाजारों से पहले शायद कभी गुजरा नहीं था। इसे देख देश की माटी से जुड़े राष्ट्रवादियों के सीने चौड़े हो गए। मस्तक शान से ऊपर उठ गये। सन्ध्या हो शहीद मीनार मैदान में जो विराट जनसभा हुई और मान्यवर ठेंगड़ी जी का साम्यवादियों को उनके घर में घुसकर चुनौती देने वाला जो ऐतिहासिक भाषण हुआ वह अविस्मरणीय है। इतिहास की धरोहर है।

एक छोटी सी घटना। मार्च, १९८२। दिल्ली के ताजमहल होटल में उद्योगपतियों के संगठन एम्पलाईज कौंसिल आफ इण्डिया का वार्षिक सम्मेलन था। केन्द्रीय श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया गया है। अन्यान्य मजदूर संगठनों के नेताओं के साथ बड़े भाई भी उपस्थित हैं। चर्चा का विषय है औद्योगिक एवं ट्रेड यूनियन क्षेत्र में व्याप्त हिंसा।

बगलें झांकने लगा। गोलमोल उत्तर देकर बैठने लगा। बड़े भाई बोले, "नहीं, बैठिए नहीं। थोड़ा खड़े रहिए—आप कब से अमुक कार्यकर्ता के बारे अनाप-शनाप बोलते चले आ रहे हैं किन्तु अपने बारे में थोड़ा सा भी नहीं बता पा रहे हो।"

रात्रि भोजनोपरांत तनिक चहलकदमी के लिए हम लोग बाहर जा रहे थे कि सामने से बड़े भाई आते दिखे। वह कार्यकर्ता थोड़ा अलग हटते हुए बचकर निकलने लगा कि बड़े भाई ने उसे आवाज देकर अपने पास बुला लिया। पूछा—'भोजन हुआ कि नहीं। कोई कष्ट तो नहीं,' आदि सहज आत्मीय प्रश्न। फिर व्यवस्था में लगे कार्यकर्ता की ओर मुड़ कर बोले, "भाई ये इतनी दूर से आए हैं, जरा ध्यान रखिये। इन्हें अच्छा-अच्छा बनाकर खिलाइए।" नए कार्यककर्ता की समझ में आ गया कि यह संगठन एक परिवार है। यहां डांट है तो भरपूर मान-मनुहार और दुलार भी है।

रोते, बिसूरते, बगलें झांकते, समस्याओं के पहाड़ को सर पर उठाये घूमते कार्य-कर्ताओं को देखकर वे कहते—'ट्रेड यूनियन रोने धोने के लिए नहीं है। समस्याओं' को सिर पर उठाए घूमने से समाधान नहीं होगा। एक-एक करके निपटा डालो। दुर्बल और कायर बने रहने से क्या होगा। दुनिया शक्ति को ही मानती, पहचानती है। देवी-देवताओं पर अजापुत्र (बकरे) की ही बलि चढ़ाई जाती है। सिंह को किसी सम्मेलन में भले ही राजतिलक न किया गया हो फिर भी वह जंगल का राजा कहलाता है। डंडे से आवश्यक दूरी रखकर ही कुत्ते भौंकते हैं। सब शक्ति का खेल हैं। 'जहां दम वहां हम' चरितार्थ करने पर विजय का मार्ग प्रशस्त होता है।

दिल्ली से विशाखापतनम की रेल यात्रा। झांसी से श्री गिरीश अवस्थी (महामन्त्री, भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ) भी डिब्बे में आ जाते हैं। उन्हें भी विशाखापतनम उसी कार्य-क्रम में उपस्थिति रहना है जिसके लिए मैं जा रहा हूं। आरक्षण न हो पाने के कारण हम दोनों एक ही शायिका पर यात्रा करते हैं।

गोधूलि वेला है। नागपुर से आगे किसी छोटे से स्टेशन पर गाड़ी रुकती है। प्लेट-फार्म पर भगवा ध्वज उठाए दो-तीन लोग इधर-उधर भाग दौड़ करते दिखे। यह किसी को लेने आए हैं अथवा विदा करने, पता करना चाहिए। थोड़ी ही दूरी पर पांच-सात कार्यकर्ताओं के साथ श्री जुमड़े जी खड़े दिखाई देते हैं। थोड़ा हट कर एक ओर बड़े भाई भी खड़े हैं। पता चला बड़े भाई एक कार्यक्रम में यहां आए थे। अब उन्हें रायपुर जाना है। रात्रि यात्रा है। आरक्षण नहीं हो सका। इसलिए सभी चिंतित हैं। बड़े भाई को हम अपने डिब्बे में ले आते हैं।

शायिका एक, यात्री तीन। टिकट चैकर का खीजना स्वाभाविक था। उसे बड़े भाई का परिचय दिया तो बोला, "ठीक है इन्हें यहां सोने दीजिए। आप दोनों चलिए।" उसकी तर्जनी दरवाजे की ओर उठ गई। शायिका की बगल में नीचे चादर-दरी बिछाने का तो प्रश्न

राष्ट्र के नव निर्माण के लिए कटिबद्ध कार्यकर्ता संगठन और कार्यकर्ता का चित्र अत्यन्त स्पष्ट और उज्जवल था। उनके चित्ताकाश में शुभ आत्म ज्योति जगमग-जगमग करती थी। उसी ज्योति से वह एक के बाद एक ज्योति जलाते गए। वे स्वयं प्रकाश पुंज थे। उनके मनः क्षेत्र से विद्युत प्रवाह की भांति विचार शक्ति की प्रबल तरंगे फूटतीं थीं, जो सबको अपने में समेटने की सामर्थ्य रखती थीं। सबको बांध लेती थीं।

कार्यकर्ताओं की योग्यताओं, क्षमताओं, गुणों-अवगुणों, त्रुटियों पर वे बराबर नजर रखते थे। गुणों का विकास अवगुणों का नाश तथा त्रुटियां दोहराई न जाएं, कार्यकर्ता को उपदेश दिए बिना स्वयं के व्यवहार से, कर्म से कार्यक्षेत्र में कार्य करते-करते समझा देते थे। मन में बिठा देते थे। कार्यकर्ता कैसा हो। एक आचार संहिता उन्होंने बना दी थी कि—लड़ाकू और साहसी हो। बहुत अधिक शिक्षित होने से प्रशिक्षित और कार्य में स्वयं सिद्ध होना आवश्यक है। अच्छा वक्ता हो। कानूनी मांग-पत्र बनाने, आरोप पत्र का उत्तर देने आदि का आवश्यक ज्ञान हो। कार्यालय पर नियमित आये। कार्यकर्ता की ईमानदारी संगठन की प्रगति की गारंटी है। यह ईमानदारी मालिकों के साथ व्यवहार चन्दे के हिसाब आदि सब में दिखाना चाहिए। समुचित हिसाब-किताब रखना सार्वजनिक कार्यकर्ता का आवश्यक गुण होनी चाहिए। पैसे पदोन्नति, नियुक्ति आदि सभी प्रकार की लालच से बचना चाहिए। सिद्धांतों और निश्चयों के प्रति कट्टर होना चाहिए।

बनावट, दिखावट, धूर्तता चालाकी उनके सामने चल नहीं सकती थी। तिकड़म को फौरन ताड़ जाते थे। पाखंड और आडम्बर के वह सख्त खिलाफ थे। कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण चाहते थे। कार्यकर्ता की रुचि और योग्यता को दृष्टि में रखते हुए कार्य सौंपते थे। उसकी कार्य-क्षमता बढ़ाते जाते थे। एक स्थान अथवा कार्य में अनुपयुक्त पाये जाने पर कार्यकर्ता को दूसरे स्थान पर लगा देते थे। किन्तु एक बार जो संगठन कार्य की माला में पिरोया गया उस मनके को वह कभी टूटने नहीं देते थे। उसे काट कर तोड़कर अलग नहीं फेंकते थे।

बड़े भाई का यह विश्वास था कि व्यक्तिगत मान-अपमान राग द्वेष, मोह, वितृष्णा तथा सुख-दुख की अनुभूतियों से विचलित न होते हुए कठोर साधना के मार्ग पर जो सतत चल सकता है, कार्य कर सकता है आकाश की ऊंचाइयां उसके पैरों तले होती हैं।

अपने प्रति दर्शायी गई अभद्रता को वह नजरन्दाज कर सकते थे किन्तु कार्यकर्ताओं में आपसी दोषारोपण, सन्देह और विद्वेष उनसे सहन नहीं होता था। औद्योगिक महासंघ के एक कार्यकर्ता ने बैठक में वृत्त देते समय अपनी त्रुटियों को छिपाने के लिए एक ऐसे वरिष्ठ कार्यकर्ता पर दोषारोपण करने प्रारम्भ कर दिए जो बैठक में उपस्थित नहीं था। बड़े भाई बीच ही में टोकते हुए बोले, "रुको—तुम्हें केन्द्र से धन संग्रह के लिए कूपन दिए गये थे—अमुक तिथि तक ब्योरेवार समस्त हिसाब-किताब केन्द्र के पास पहुंच जाना चाहिए था। हिसाब जमा करवा दिए क्या ?" धनराशि जमा नहीं करवाई गई थी। अतः वह कार्यकर्ता विषय बदलने लगा। बड़े भाई बोले—"बात को टालो नहीं। जरा सबके सामने आने दो।" वह कार्यकर्ता

सामने से भोजन वितरक निकलते हैं। बड़ भाई मेरी ओर इंगित करके वितरक को कहते हैं, "भाई यह प्रातः से काम में जुटे हैं—भूख जोरों से लगी होगी। अतः दो चपातियां ज्यादा ही परोसना।" मैं उस दिन रंगे हाथों पकड़ा गया था।

एक और प्रसंग। महासंघ का वार्षिक अधिवेशन है। पहले दिन रात्रि तक अधिकांश प्रतिनिधि। पहुंच चुके हैं। बड़े भाई भी आ गए हैं। उन्होंने व्यवस्था संबन्धी सब जानकारी प्राप्त की है। प्रतिनिधि संख्या, भोजन व्यवस्था, मंच, माईक, भाषण, प्रस्ताव, शोभा यात्रा, आमसभा सब प्रबन्ध ठीक-ठाक हैं, ऐसा उन्हें बताया गया।

भोजन के बाद सब सोने चले गए हैं। बड़े भाई भी सोने के लिए अपने कक्ष में जा चुके हैं। कार्यकारिणी के सदस्यों के साथ हम प्रातः काल के कार्यक्रम पर विचार कर रहे हैं कि बड़े भाई मुझे और श्री गिरीश अवस्थी को बाहर बुलाते हैं। रात लगभग बारह बजे का समय। आश्चर्य, बड़े भाई अभी जाग रहे हैं। बड़े भाई हमें साथ लेकर टहलने लगते हैं। कहते हैं, "भोजन व्यवस्था आदि प्रबन्ध सब ठीक-ठाक है ऐसा आपने बताया है किन्तु मुझे इसमें गड़बड़ लगती है। पाकशाला और भंडार में एक दाना अनाज और भोजन तैयार करने की सामग्री नहीं है। प्रतिनिधियों को समय से अल्पाहार और भोजन दिया जा सके इसके लिये आवश्यक है कि इसी समय सारा राशन मंगवाया जाय, नहीं तो कल सब व्यवस्था चौपट हो जायेगी।

बाद की घटनाओं से विदित हुआ कि बड़े भाई के निर्देशानुसार उस रात अगर भोजन के लिए राशन मंगवा कर रख न लिया जाता तो दूसरे दिन सारी व्यवस्था भंग होने से बचाई नहीं जा सकती थी।

अबाध गति से बहने वाली वायु के समान आप सदैव गतिमान रहे। सतत प्रवाह्यान निर्झर के समान कार्य क्षेत्र में कर्म करते रहे। उन्हें कभी थकते, थककर विश्राम करते नहीं देखा। नींद अत्यल्प अहंनिश कार्य और लगातार कार्य। बड़े भाई की अद्भुत कार्यक्षमता, कर्मठता और ध्येय समर्पित जीवन हम सबके लिए एक अनुपम आदर्श है। घोर शारीरिक पीड़ा का अनुभव करते हुए भी सदैव मुस्कराते रहकर अपने ध्येय देव की पूजा अर्चना में अन्त तक अविचल अविकल संलग्न रहे।

दिल्ली में केन्द्रीय कार्यालय के लिए भारतीय मजदूर संघ का अपना भवन होना चाहिए ऐसा विचार किया गया (निर्माण की लागत या बने बनाए भवनों के मूल्यों को देखते हुए मजदूर संघ कार्यालय भवन बना सकेगा यह कठिन दिखाई देता था। बड़े भाई सबका सहयोग एवं सबके इन्वाल्वमेंट में विश्वास रखते हुए सामूहिक रूप से चलते थे। देश भर में अपने सभी सदस्यों से केन्द्रीय कार्यालय निर्माण हेतु चन्दा देने की बड़े भाई ने अपील जारी की। देश भर के अपने लाखों सदस्यों से चन्दा एकत्र होने लगा। दिल्ली के जिस बहुमंजले भवन में आज केन्द्रीय कार्यालय स्थित है यह इमारत बड़े भाई की अपील ही का परिणाम है। बड़े भाई के निधन के पश्चात् इस भवन का नाम 'रामनरेश भवन' रखा गया है।

ही नहीं। डिब्बे में यात्रा की अनुमति तक नहीं दी जा सकती। आप लोग अगले स्टेशन पर-डिब्बा बदल लीजिए। देखा, बड़े भाई मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं। मानो कह रहे हों और बुलाओ हमें अपने डिब्बे में। अब निबटो।

गाड़ी सरपट दौड़ी जा रही है। बड़े भाई शायिका पर बैठे रहने के लिए कहते हैं किन्तु हमारे बैठे रहने से बड़े भाई सो नहीं सकेंगे। अतः हम वहीं कहीं चादर बिछा कर पड़े रहने की बात करते हैं। हम दोनों एक अखबार लेकर उसके कुछ पन्ने दरवाजे के सामने वाश बेसिन के नीचे वाले स्थान पर बिछा कर सोने का प्रयास करते हैं। गाड़ी किसी स्टेशन पर रुकती है। यात्री दरवाजा थपथपा रहे हैं—हम अपना-अपना अखबार उठा कर एक किनारे खड़े हो जाते हैं। यात्री भीतर आते हैं। गाड़ी चल देती है। दरवाजा बन्द कर अखबार बिछा कर हम फिर लेटते हैं कि अगला स्टेशन और फिर वही क्रम। बीच-बीच में टिकट चैकर की कानों में 'अमृत रस' घोलती वाणी। दरवाजे से चढ़ते-उतरते यात्रियों की खीझ। उस पर वाश बेसिन से रिसता हुआ पानी अखबार और कपड़े गीले किये जा रहा है। बड़े भाई पुकारते हैं—"काहे को वहां पड़े हो। इधर शायिका पर आ जाओ।" हम कहते, "बड़े भाई आप सो जाइए। हम मजे में हैं।"

प्रातः काल सात आठ बजे अल्पाहार का समय। गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी हुई है। बड़े भाई अपने कपड़े के झोले में रखे हुए भीगे अंकुरित चने और आंवले के मुरब्बे निकालते हैं। हमने पूछा—'लगता है आप भी रात भर सो नहीं पाए। वे कहते हैं, "नहीं भाई, मैं तो सो रहा था।" हमने कहा—"हम सब जानते हैं। टिकट चैकर से हमारे वार्तालाप के बाद शायिका (बर्थ) पर आ जाने के लिए आपकी आवाज हमें सुनाई पड़ती थी। यह क्रम सारी रात चलता ही रहा। आप सोए कब? बड़े भाई ने खिलखिला कर हंस दिया। कोई उत्तर नहीं। देखता हूं बड़े भाई समाचार पत्र उठा कर पढ़ने में मग्न हो गए हैं। मुझे उत्तर मिल गया है। बच्चे गीले में हो तो मां को नींद आएगी क्या? कैसी देव दुर्लभ ममता—कैसा निश्चल निर्मल वात्सल्य। बड़े भाई सचमुच बड़े भाई थे।

एक बड़े कार्यक्रम के निमित्त निवास का प्रबंध रामलीला ग्राउण्ड में किया गया था। व्यवस्था दिल्ली प्रदेश कार्यकर्ताओं के जिम्मे थी। तम्बू शामियाने, कनातें लगाई जा रही थीं। ध्येय पट और नामपट लिखे जा रहे थे। दर्जनों कार्यकर्ता प्रातःकाल से ही काम में जुटे थे। बड़े भाई स्वयं देख-रेख कर रहे थे। किसी कारणवश मैं प्रातःकाल पहुंच नहीं पाया। सोचा कार्य तो शाम तक चलता ही रहेगा—दोपहर को भोजन के समय उपस्थित होकर अन्य कार्यकर्ताओं के साथ कार्य में जुट जाऊंगा।

दोपहर को भोजन के लिए जिस पंक्ति में बैठता हूं दैवयोग से सामने की पंक्ति में बड़े भाई भी भोजन के लिए बैठते हैं। मन में यह सोच कर कि मैं देरी से तो आया हूं किन्तु दर्जनों कार्यकर्ताओं के बीच काम करते हुए इसका किसी को पता नहीं चला है; अतः सामान्य ढंग से बातचीत करने लगता हूं। बड़े भाई भी सामान्य रूप से बातचीत कर रहे हैं। तभी

की आवश्यकता थी वहां जमानतों की व्यवस्था करवाते रहे। एक कार्यकर्ता की छोटी सी भूल के परिणामस्वरूप आखिर कानपुर कार्यालय से पकड़े गए। देश की विभिन्न जेलों में मजदूर संघ के हजारों कार्यकर्ता इस अवधि में बन्द किए गए थे। सैंकड़ों की नौकरी चली गई थी। मकान-क्वार्टर खाली करवा लिये गए थे। परिवार सड़कों पर आ गए थे। बड़े भाई सब कुछ देख सम्भाल रहे थे किन्तु उनके जेल चले जाने से यह सहायता कार्य बन्द हो गया।

घोर निराशा के दिनों में तानाशाही अमावस का अंधेरा समूचे राष्ट्र को निगलने पर उतारू जान पड़ता था। मान्यवर ठेंगड़ी जी सभी राष्ट्रवादी एवं लोकतंत्र में विश्वास रखने वाली शक्तियों को एक मंच पर लाकर संघर्ष में जुटाए हुए थे। भारतीय मजदूर संघ के हजारों कार्यकर्ता एक छोटे दीपक की भांति हृदयों का सारा विश्वास और स्नेह निचोड़ कर प्राणों की बाती को तिल-तिल जलाकर गहन तिमिर से जूझ रहे थे। इन अनगिनत दीयों की अपूर्व साधना आखिर फलीभूत हुई। राष्ट्र क्षितिज पर लोकतन्त्रके नये सूर्य के उदय से नवप्रभात की सुनहरी किरणों के कोमल स्पर्श से मन के कमल खिल उठे।

नेतृत्व जब ध्येयवादी, आदर्शवादी होता है तो छोटे-बड़े असंख्य कार्यकर्ता ध्येय प्राप्ति हेतु सर्वस्व निछावर करने के लिए हंसते-हंसते निकल पड़ते हैं। हजारों लोग जेल गए नौकरियां गंवाई, यातनाएं सही; कष्ट उठाए किन्तु डरे नहीं, बिके नहीं, झुके नहीं, रुके नहीं। सच ही कहा है वे दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति जो प्राण देने के लिए तैयार हैं, ब्रह्माण्ड तक को अपने हाथों पर उठा सकते हैं। देशभक्त मजदूरों ने समूचे राष्ट्र को हाथों पर उठा लिया था।

तत्कालीन शासक दल (जनता पार्टी) का वह निमन्त्रण कि सत्तारूढ़ दल का बाकायदा मजदूर मंच बनना स्वीकार करने पर सभी सुविधाएं, बल्कि उससे भी अधिक जो इन्टुक को कांग्रेस दल से प्राप्त थी, भारतीय मजदूर संघ को प्रदान की जाएगी, इसको कैसे जनसंगठन, राजनीतिक दलों का मंच नहीं अपितु स्वतंत्र रूप से चलाया जाना उचित है, यही लोकतंत्र और राष्ट्र के हित में है, कहते हुए मान्यवर ठेंगड़ी जी ने अस्वीकार कर दिया था, यह अलग इतिहास है। यहां उस सब का वर्णन न तो अपेक्षित और न सम्भव ही है। आपत्काल के प्रारम्भिक दिनों में जब समाचार पत्रों पर सेंसरशिप लागू थी अपनी गतिविधियों, कार्यक्रमों, भावी योजनाओं के समाचार नहीं मिल पाते थे तो बड़े भाई हस्तलिखित, टंकित और साइक्लोस्टाइलड पर्चे छपवाते थे। बांटते थे जिन्हें पढ़ने-वांचने से शिथिल पड़ी रक्त धमनियों में स्फूर्ति और उत्साह का संचार होता था। वह बहुधा इन पंक्तियों की याद दिलाया करते थे कि "यदि चिड़ियां एका कर लें तो शेर की खाल खींच सकती हैं।"

उनका सम्पूर्ण लेखन सीधी-सरल-सपाट भाषा में है। एकदम समझ में आने वाला। उनके लेख भाषा सौष्ठव, पाँडित्य तथा लालित्य से मुक्त ठेठ मजदूर की भाषा में मन को छू सकने की सामर्थ्य रखने वाले हैं। सटीक, छोटे-छोटे, जानदार वाक्य गूढ़ से गूढ़ विचार चिन्तन को अत्यन्त सरल-सुगत रीति से प्रस्तुत करते हैं। मान्यवर ठेंगड़ी जी के विचार दर्शन और अर्थिक चिन्तन को जन-जन तक पहुंचाने में बड़े भाई की विशिष्ट भूमिका रही है। वह

सरकारी समितियों में प्रतिनिधित्व देने के लिए भारत सरकार ने केन्द्रीय श्रम संगठनों की सदस्यता सत्यापन का निर्णय किया। तद्नुसार श्रम संगठनों को प्रत्येक प्रदेश में पंजीकृत यूनियनों के आधार पर सम्पूर्ण देश में उद्योगशः कुल सदस्य संख्या के दावे दाखिल करने का आग्रह किया गया था। इसी सदस्य संख्या की जांच श्रम मन्त्रालय, श्रमायुक्तों एवं अन्य सरकारी एजेंसियों द्वारा करवाने वाला था।

मजदूर संघ की देश भर में हजारों यूनियनें, लाखों की सदस्यता। अट्ठाइस उद्योगों में उसके महासंघ कार्यरत। सभी यूनियनों के हिसाब-किताब ठीक हों। सदस्यता रजिस्टर, कार्यवाही पूंजी और आय-व्यय ब्यौरा जांच किए जाने पर ठीक मिलें बड़े भाई इस भगीरथ कार्य में जुटे गए देश भर में अखंड प्रवास। सभी यूनियनों को निर्देश प्रदेश मंत्रियों को हिदायतें। केन्द्रीय कार्यसमिति में विचार विमर्श। कार्य जितना जटिल, परिश्रम उतना ही अधिक। सरकार सख्ती से जांच कर रही है। यूनियनों के कार्यालयों पर जाकर श्रम निरीक्षक रिकार्डस की जांच कर रहे हैं। यूनियन के सदस्यों को बुलाकर पूछताछ कर रहे हैं। इधर बड़े भाई दिन रात एक किए हुए हैं।

जांच कार्य समाप्त हुआ। सरकार ने सत्यापित सदस्य संख्या घोषित की है। इन्टुक को छोड़ भारतीय मजदूर संघ सभी केन्द्रीय श्रम संगठनो से आगे है। एटुक, सीटु, हिन्द मजदूर सभा, यूटीयूसी (लेनिन सारणी) और दूसरे सभी श्रम संगठन मजदूर संघ ने बहुत पीछे छोड़ दिए हैं।

नवम्बर, १९८५ को चौदह वर्षों के अन्तराल के पश्चात् बुलाए गए भारतीय श्रम सम्मेलन में इन्टुक के नौ, भारतीय मजदूर संघ के पांच, हिन्द मजदूर सभा के तीन, यूटीयूसी के दो, एटुक, सीटु, यूटीयूसी, और एनएलओ के एक-एक प्रतिनिधि आमंत्रित किए गए हैं। इस ऐतिहासिक महत्व वाले त्रिपक्षीय सम्मेलन में मजदूर संघ की उपस्थिति गौरवशाली और गरिमायुक्त है। देश-विदेश में भारतीय मजदूर संघ को बलशाली श्रम संगठन के नाते प्रतिष्ठा, सम्मान और मान्यता प्राप्त हुई है। बड़े भाई का त्याग, तप और बलिदान रंग लाया है।

एक विचारक ने कहा है कि, "विजय निश्चित हो तो कोई बुजदिल भी लड़ सकता है मगर मुझे ऐसा आदमी बताओ जो पराजय निश्चित होने पर भी लड़ने का पराक्रम दिखाता है।" आपत्काल सन् १९७५-७६ के काले दिनों में कुछ ऐसी ही परिस्थितियां थीं जब लोकतन्त्र बहाली की कमान संभालने के पूर्व मान्यवर ठेंगड़ी जी ने भारतीय मजदूर संघ के महामन्त्री पद का दायित्व बड़े भाई को सोंप दिया। स्थिति भयावह थी। पूरा देश बेड़ियों से जकड़ा हुआ था। चारों ओर गहन अन्धकार था। बड़े भाई त्याग, तपस्या और बलिदान की अलख जगाए मंजिल की ओर निकल पड़े थे।

आपत्काल में जब तक जेल से बाहर थे भूमिगत रह कर संगठन कार्य करते रहे। जो कार्यकर्ता जेल गए थे उनके परिवारों को आर्थिक सहायता और जहां कहीं जमानतें करवाने

'आवश्यकता है उपभोक्ता समितियों की' आदि पुस्तिकाओं में मजदूर संघ के दृष्टिकोण को अत्यंत सीधी सपाट भाषा में उन्होंने प्रस्तुत किया है।

उस दिन बड़े भाई का हमारे घर भोजन था—टमाटर, मूली, गाजर, प्याज, निंबू, मिर्च, खीरे आदि का सलाद बनाया गया था। उसे बच्चों ने कलात्मक ढंग से सजा कर मेज पर रखा था। बड़े भाई ने बुलाकर कहा 'खीरा दिन में हीरा, रात में कीड़ा। दिन में मूली, रात में सूली। इन्हें रात्रि के समय खाना हानिकारक है। हमारी छोटी बिटिया उस समय द्वितीय अथवा तृतीय कक्षा में पढ़ती थी। उसे पास बुलाया। पूछा 'तुम गणित पढ़ती हो। एक प्रश्न का उत्तर दो—'मुझे एक आंख से दो कोस दिखाई देता है तो दो आंखों से कितने कोस दिखाई देगा।' वह तपाक से बोली—जी, चार कोस। 'अरे वाह बिटिया कभी एक आंख बन्द करके फिर दोनों आंखों से देखकर बताना। वैसे आमतौर से तुम्हारा गणित बराबर है। 'चलो एक और प्रश्न पूछते हैं—पूरे पृष्ठ में कितने कोण (कोने) होते हैं उसने कहा—चार। वे बोले, बिल्कुल ठीक। अब एक कोना मोड़ दिया तो बाकी कितने बचे ? जवाब किला—जी तीन। वाह बड़े भाई जोर से हंसे—हां, सरसरी तौर पर तुम्हारा गणित सही है। किन्तु अब एक कागज लेकर उसका कोना मोडो फिर गिन कर मुझे बताओ।''

नींबू के आचार में नींबू के दाने भी थे। हमारी धर्मपत्नी को बुलाकर समझाया—'अरे बहन जी नींबू का आचार जितना स्वादिष्ट और उत्तम होता है किन्तु उसके दाने उतने ही हानिकारक होते हैं। जब भी नींबू का आचार डालें, दाने अलग कर दें।

उनकी प्रत्येक बात शिक्षाप्रद होती थी। छोटी छोटी बातों में भी बड़प्पन प्रकट होता था। हिमालय का धैर्य तथा सागर की गम्भीरता लेकर लाखों लोगों में उन्होंने समता-ममता के भाव भर दिये थे नई आशाएं, नई आकांक्षाएं जगा दी थीं। उनके लिए संसार में कुछ भी दुष्कर नहीं था।

स्वर्गीय बड़े भाई को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए शोक-सभा का आयोजन किया गया है। दिल्ली स्थित दीन दयाल शोध संस्थान का सभागार शोकाकुल श्रोताओं वक्ताओं और कार्यकर्ताओं से भरा हुआ है। श्रद्धाञ्जलि के भावुक स्वर सुनाई देते हैं, ''अजर अमर तुम ध्रुव अटल, नगर-नगर और डगर-डगर, बन पुष्प गंध तुम गए बिखर।'' श्री नाना जी देश-मुख उन्हें चन्दन वृक्ष बताते हैं जो स्वयं को घिस कर दूसरों को शीतलता एवं सुगंध प्रदान करता है।

श्री हरमोहन लाल जी (महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद अब स्वर्गीय एवं श्री जगदीश जी माथुर (पूर्व सांसद) उन्हें ऐसा आत्म बलिदानी बताते हैं जिसने मजदूर और राष्ट्रहित में सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

श्री भानु प्रताप शुक्ल (पूर्व सम्पादक पांचजन्य) अंजुलि में पुष्प भरकर बड़े भाई के चित्र को निहारते हैं। भाव विह्वल हो बड़े भाई के चरणों पर पुष्प अर्पित कर धीरे-धीरे ध्वनिवर्धक

प्रचिलित मुहावरों, सूक्तियों और आंकड़ों का बहुत सुन्दर तालमेल बिठाते हुए प्रयोग करते थे।

एक बार प्रवास पर जा रहे थे। मुझे चार बातें बताई और बोले इन्हें समुचित विस्तार देकर 'पान्चजन्य' में प्रकाशनार्थ प्रेषित कर दीजिएगा। पान्चजन्य में कुछ दिनों के पश्चात् लेख प्रकाशित हो गया। बड़े भाई का अन्तर्देशीय पत्र मिला। लिखा था, "आप को चार बातें बताई थीं—आपने एक छोड़ दिया, एक अपनी ओर से जोड़ दिया। चार बातें निम्नलिखित थी।

"अकेले किए गए अपने निर्णय को सबके ऊपर न थोपना, सामूहिक रूप से निर्णय करना, अपनी अच्छी बात को सबकी ओर से आई हुई है—इस प्रकार की स्थिति बनाना। सबके परामर्श को योग्य स्थान देना। अपनी प्रत्येक छोटी-बड़ी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाना। जबरदस्ती से बाध्य करके, लादने और थोपने से नहीं सभी स्वेच्छा से स्वीकार करें इसके लिए प्रयत्नशील रहना। "मुझे नहीं, हमें इसकी पूर्ति के लिए जुटना है, मेरा नहीं, हमारा यह कार्य हैं। मैंने नहीं, हम सभी ने यह तय किया है—इस प्रकार के सभी व्यवहार अनुशासन की श्रेणी में आते हैं।

अनुशासनहीनता की श्रेणी में आने वाले व्यवहार की समीक्षा करते हुए वे लिखते हैं "हम चाहे जो करें। जहां चाहें जायें या न जायें। मन चाहा व्यय करें। हमसे कोई पूछे नहीं। हमें कोई टोंके नहीं। ऐसे सभी कार्यकलाप स्वच्छन्दता के हैं। ये अनुशासनहीनता की श्रेणी में आते हैं। आज सामाजिक कार्यकर्ता की मनः स्थिति ऐसी बनती जा रही है कि जब तक उसके मन की बातें होती रहेंगी तब तक वह अनुशासित सिपाही की भांति व्यवहार करेगा किन्तु जैसे ही उसकी इच्छा के विपरीत निर्णय हुआ कि वह विरोध करने अथवा तटस्थ बने रहने की स्थिति में आ जाता है। कुछ कार्यकर्ता अनुशासन का उपदेश तो देते हैं किन्तु स्वयं को उस दायरे से मुक्त मान लेते हैं। कुछ संस्था के महत्वपूर्ण पद की सुविधाओं को लेने हेतु ही अपनी शक्ति लगाते हैं और बहुत से ऐसे होते हैं जो सफलता मिलने पर अपने अकेले को श्रेय देते हैं। असफलता के लिए दूसरों को जिम्मेदार ठहराते हैं। हमारी एक सीमा है। एक परिधि है। एक दायरा है। एक मर्यादा है, और मर्यादा से ऊपर कोई भी नहीं है।"

भारतीय मजदूर संघ विचार, निर्माण, रीति-नीति, कार्यपद्धति आन्दोलन, व्यवहार, उद्देश्य, नारे श्रम दिवस, आर्थिक दर्शन आदि विषयों पर उन्होंने अनेक छोटी-छोटी पुस्तिकाओं की रचना की है। अनेक लेख लिखे हैं जो समय-समय पर अनगिनत पत्र-पत्रिकाओं, में प्रकाशित होते रहे हैं। वामपंथी ट्रेड यूनियनों द्वारा दूषित परंपराओं और राष्ट्र विरोधी नारों की काट उनके 'अर्थहीन नारे व गलत परंपराएं' नामक लेख में दिखाई पड़ती हैं तो 'आर्थिक लोकतंत्र' लेख में आर्थिक समालोचना है। 'हमारी प्रेरणा' लेख में श्रम क्षेत्र में राष्ट्र-भक्ति के भाव पुष्ट करने पर जोर दिया है तो 'हमारा श्रम दिवस' में विश्वकर्मा जयन्ती के, महत्व पर प्रकाश डाला है। 'श्रमिक और वेतन', 'सामूहिक सौदेबाजी', 'भारत में श्रम संघ'

एक बहुआयामी व्यक्तित्व

डायरी मन का दर्पण है अभिन्न अंतरंग मित्र और सखा। जो बातें कहीं और नहीं कही जा सकतीं, वे डायरी के पन्नों में लिखी जा सकती हैं। डायरी नितान्त निजी व्यक्तिगत बातों का लेखा-जोखा होती है। दैनन्दिनी द्वारा लेखक के निजी जीवन एवं मानस के विविध पक्षों का उद्घाटन होता है।

बड़े भाई का जीवन पूर्णतया समाज समर्पित था। उनके व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक जीवन में कोई अंतर नहीं था। उनकी डायरियों में कहीं भी इस प्रकार का लेखन पढ़ने को नहीं मिलता जिसे रहस्यमय, अस्पष्ट अथवा निजी कहा जा सके। स्वयं के सुख-दुःख, घर-गृहस्थी अथवा-रिश्तेदारों-नातेदारों का कही उल्लेख नहीं है। बड़े भाई की डायरी के प्रत्येक पन्ने पर संगठन के कार्यक्रमों, प्रवास, कार्यकर्ताओं के पते, उनके सुख-दुख, सद्पुरुषों के वचन, सूक्तियां, उक्तियां सुभाषित् तथा महापुरुषों के भाषणों का अंश अंकित मिला।

विगत् आठ-दस वर्ष की डायरियों में सैकड़ों कार्यक्रमों की सूचनाएं लिखी हुई हैं। उन कार्यक्रमों के निमित्त मान्यवर ठेंगड़ी जी का नाम लिखा हुआ है। विशेषता यह है कि एक बार भी ठेंगड़ी जी के नाम के पूर्व सम्मानजनक "माननीय" शब्द लिखना बड़े भाई भूले नहीं हैं। पिछले बर्ष की डायरी, उसके पूर्व, उससे भी पहले हर वर्ष की डायरी का प्रत्येक पन्ना पलटते जाइए, कहीं भी, असावधानी से भी नहीं ठेंगड़ी जी के नाम के पूर्व "माननीय" शब्द बड़े भाई से कहीं भी छूटा नहीं है।

आपत्काल के समय १९७५-७६ में जेल गए हुए कार्यकर्ताओं की जमानत, उनके परिवारों की देखभाल तथा अन्य कार्यकर्ताओं से सम्पर्क, बैठक, आपत्काल के विरोध और संगठन की शक्ति बनाये रखने सम्बन्धी सांकेतिक लेखन उनकी डायरियों में है।

यंत्र के सामने आते हैं। कुछ क्षण मौन खड़े रहते हैं। चारों ओर सन्नाटा छा जाता है। सभागार में बैठे लोग आतुर प्रतीक्षा में हैं कि भानु जी कुछ बोलेंगे, बहुत बोलेंगे, लम्बा बोलेंगे। किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। बड़ी मुश्किल से वे पहले स्वयं को सम्भालते हैं। फिर कहते हैं, "जिसके विषय में बहुत जानकारी हो, जिससे अतिशय आत्मीयता हो, उसके विषय में बोल पाना बहुत कठिन होता है। आप लोग मुझे क्षमा करने की कृपा करें, मैं कुछ कह नहीं पा रहा हूं, जबकि कहने के लिए मेरे पास बहुत कुछ है।" और फिर वह वापस आकर अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। भानु जी की मजबूर अन्तरव्यथा उस दिन उनके मौन में मुखरित हो उठी थी। उनके मन की पीड़ा सबकी पीड़ा बनकर सबके मन को ममहित करके सबको रुला गई थी। यदि परमेश्वर ने श्रद्धा को स्वर और दुख को स्वरूप दिया होता तो भानु जी उस दिन जरूर बोलते। वाणी विहीन श्रद्धा का शोक सन्तप्त होकर सुन्न हो जाना स्वाभाविक था। अपने आप में वह एक अद्वितीय और अद्भुत श्रद्धांजलि थी।

बड़े भाई कहा करते थे कि जब तक ध्येय की प्राप्ति नहीं होती, विश्रान्ति कैसी? मोक्ष अथवा अमरता के भी आप इच्छुक नहीं थे। ध्येय पर आपकी अटूट निष्ठा थी। सबल श्रमिक, उन्नत उद्योग एवं वैभवशाली राष्ट्र आपको अभीष्ट था। कर्म और अनवरत कर्म ही आपका जीवन था। ऋषियों की वाणी का आप स्मरण करवाते थे कि "बैठे हुए का सौभाग्य बैठा रहता है। सोने वाले का सौभाग्य सोया रहता है और उठकर चलने वाले का सौभाग्य चल पड़ता है। इसलिए चलते रहो, चलते रहो, चरैवेति-चरैवेति।"

श्रमिक समाज तथा राष्ट्र कल्याण हेतु रचाए गए महायज्ञ के हवनकुण्ड में पहले तो आपने लोभ, क्रोध, मद, मोह, अहंकार की आहुति दी, तत्पश्चात् स्वयं की पूर्णाहुति। उस हवन कुण्ड से उठने वाली सुगंध से आज दशों दिशाएं भर गई हैं। चतुर्दिक एकात्मकारी चमत्कारी भावना का सृजन हुआ है। एक अभिनव संगठन और समाज का नवनिर्माण हुआ है।

हे श्रमिक जगत के सिद्ध पुरुष, राष्ट्रभक्त, महापुरुष, आप हमारा शत्-शत् प्रणाम स्वीकार करें और कृपा पूर्वक हमें यह आशीष दें कि हम आपके पद चिन्हों पर सदैव चलते रहें।

चन्दन का वृक्ष काटने पर भी अपनी उत्तम सुगन्ध नहीं छोड़ता, वृद्ध हाथी भी अपनी लीलाएं नहीं छोड़ता, कोल्हू में पिरने के बाद भी गन्ना अपनी मधुरता नहीं छोड़ता। कुलीन व्यक्ति बल के क्षीण होने पर भी अपने उत्तम गुणों को नहीं छोड़ता।

"छिन्नोपि चंदनतरूर्न जहाति गंधं
वृद्धोपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम्।
यंत्रापितो मधुरतां न जहाति चेक्षु:
क्षीणोपि न त्यजति शीलगुणान् कुलीन:॥

केन्द्रीय कार्यसमिति तथा संचालन समिति में विचारार्थ विषयों को भी वह क्रमवार डायरी में अंकित करते थे। उनकी डायरी के पन्नों में स्पष्ट लिखा हुआ मिलता है —

मा. श्री ठेंगड़ी जी हैदराबाद २५.११.८३ संचालन समिति

१. वित्तीय अनुशासन की दृष्टि से अनुभव क्या आये?
२. संविधान में परिवर्तन करना है क्या?
३. पदाधिकारी परिवर्तन करना है क्या?
"Nation is flesh and blood"—सोच आवश्यक है,

केवल देश भारतमाता है इतना ही पर्याप्त नहीं है, कोई भी सरकार हिन्दुत्व की प्रेमी आ जाये किन्तु पूंजीपतियों की समर्थक हो तो हम क्या करेंगे। सरकार गरीबों की ओर ध्यान न देने वाली हो तो हम क्या करेंगे?

"राष्ट्र कहने का एक अलग अर्थ आता है। flesh and blood (रक्त और मांस) के अर्थ में लोग कम लेते हैं।

1.Resolution Committee (प्रस्ताव समिति)
श्री मनहर भाई
श्री अन्ना जी मिटकरी
श्री गोविन्द राव
श्री काशीकर

२. जनरल सेक्ट्री रिपोर्ट
श्री प्रभाकर जी
श्री भक्त जी

कहीं-कहीं तो मान्यवर ठेंगड़ी जी को समूचा भाषण लिखा हुआ पढ़ने को मिलता है।

बैठक और सभा में जाने से पूर्व वहां किस बात पर जोर देना हैं, कार्यक्रम कैसा हो, क्या सावधानी रखी जानी चाहिए, उसे वह लिख लेते थे।

अपने स्वयं के भाषण के पूर्व मुख्य-मुख्य बिन्दु वह डायरी में नोट करते थे। ऐसे कार्यक्रम जिनमें मान्यवर ठेंगड़ी जी को उपस्थित रहना होता उसके बारे वह विशेष सावधानी बरतते थे। कब क्या किया जाएगा इसे ब्यौरेवार डायरी में लिख लेते थे।

कहीं भी कोई शिक्षाप्रद ज्ञानवर्धक बात पढ़ते अथवा सुनते उसे डायरी में लिख लेते। अनेक दोहे, कविताए, मुहावरे, शेयर, एवं श्लोक उनको डायरियों में लिखे मिलते हैं। पैगम्बर मुहम्मद साहब का कथन एक स्थान पर इस प्रकार नोट किया हुआ मिलता है :—

—: पैगम्बर उवाच :—

—मजदूर को मजदूरी उनका पसीना सूखने से पहले अदा करो।
—मजदूर से उतना ही काम लो जितना आसानी से वह कर सके।
—मजदूर यदि थक जायें तो काम में उनकी सहायता करो।

—: सहज एवं सरल श्लोक जैसे :—

"विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषुच,
व्याधि हस्यौषधं मित्र धर्मामित्र मृतस्यच"

:—शेयर :—

"मैंने लाख बताया कि लहू सबका सुर्ख है, फिर भी उन्होंने देख लिया काट कर मुझे"

—: एक स्थान पर बहुत ही बोधपुर वाक्य लिखे हैं :—

यह मत सोचो कि वीरतापूर्ण कार्य लड़ाई में ही किये जाते हैं।

मनुष्यता और वीरता की परख लड़ाई के मैदान की अपेक्षा शांति के समय अधिक होती है।

यदि कोई व्यक्ति हंस सकता है तो वह गरीब नहीं है।

—कुतिया चोरों से मिल गई, पहरा देवे कौन।
—डोली न कहार, बीबी बैठी तैयार।
—तेली की जोरू पानी नहाई।
—तोले भर की आरसी, नानी बोले फारसी।
—नाई की बारात में सभी ठाकुर ही ठाकुर।
—सब दिन चंगे, ईद के दिन नंगे।
—बारह वर्ष मामा पोषण करे, चाचा देख गोद में बैठे।
—राजा बोले मुल्क हिले, बुढ़ा बोले दाढ़ी हिले।
—राजा किस का बाप, रंडी किसकी मां।
—आसमान देखने के लिए धक्कम धक्का क्यों।
—बोलते-बोलते बात, गाते-गाते राग।
—न गांव की दुश्मनी अच्छी, न चोर का पड़ोस।
—पीर साहब का जन्माष्टमी से क्या वास्ता।
—मुर्गी को पूछ कर मसाला थोड़ ही पीसा है।
—पुरुष का विनाश कर्ज से और स्त्री का बदचाल से।
—बन गए तो अमीर, बिगड़ गए तो फकीर, मर गए तो पीर।
—बिल्ली को बुखार, चूहे की तीमारदारी।
—रखवाले को दिन भर, चोर को घड़ी भर।
—वैद्य का बेटा बीमारी से नहीं अपितु दवा से मरेगा।
—सिर की रक्षा के लिए धन, कुर्बान और सम्मान की रक्षा के लिए सिर कुर्बान।
—दिगम्बर साधु को धोबी की क्या आवश्यकता।
—मामा के घर शादी और मां परोसने वाली।
—घूमते राम जहां बैठे वहीं मुकाम।
—अड़ियल बैल का डंडा राजा।
—ऐसी जगह बठ जहां से कोई न कहे उठ।
—जैसा चारा वैसी दूध की धारा।
—हजार कौओं के लिए एक कंकड़ काफी है।
—आदमी हो प्रतिष्ठित, औरत हो संयमित।
—हाथी से दस हाथ, मतवाले से बीस हाथ और दोगले से अनगिनत हाथ दूर रहना चाहिए।

भिन्न-भिन्न अवसरों पर कहे जा सकें ऐसे कबीर, रहीम, तुलसी, जायसी, आदि के दोहे भी लिखे मिलते हैं :—

—जो कबीर काशी मरे—रामहिं कौन निहोरा।

—कहु रहीम कैसे निभे, बेर केर को संग।
वे डोलत रस आपने इनके फाटत अंग॥

श्री अमरनाथ डोंगरा जी
श्री सोनी जी
श्री प्रेम जी
श्री अमलदार सिंह जी

३. उपसमिति हैदराबाद जानेवाली
श्री साठ्ये जी
श्री अग्धी जी
श्री रमण शाह
श्री घाटे जी
रामनरेश सिंह

मा. ठेंगड़ी जी, बी. आर. एम. एस. अधिवेशन समारोह नागपुर १५.११.८३

१. अधिष्ठान २. दैव ३. कार्यकर्ता ४. साधन ५. कार्यक्रम।
राजाश्रय द्वारा दो बातें प्राप्त होती है—साधन सामग्री और भ्रष्टाचार।

बढ़ती महंगाई के विषय में डायरी में लिख रखा है कि :-

अलाउद्दीन खिलजी के जमाने में दूध एक रुपये का बीस मन, मोर्य काल में चावल ६ पैसे मन, घी ७५ पैसे प्रति मन, शक्कर ६५ पैसे और नमक तीन पैसे प्रति मन सुलभ था।

मोहम्मद तुगलक के समय चावल ३६ पैसे मन, घी १.४४ रुपये मन, शक्कर १.४४ रुपये प्रति मन।

जब अंग्रेज इस देश में आए तब चावल १.२७ रुपये, घी १७.५० रुपये और गेहूं २.०० रुपये प्रति मन बिक रहा था। १९३० में चावल ५ रुपये, १९४५ में ४० रुपये, १९६४ में ७० रुपये मन और १९८१ में ४ रुपये प्रति किलो हो गया।

इसी प्रकार के और आंकड़े भी बड़े भाई की डायरियों में लिखे मिलते हैं। सैकड़ों मुहावरे, दोहे, श्लोक, और शेयर चटपटे सटीक और धारदार ऐसे कि प्रत्येक अवसर पर खरे उतरें। सभी की समझ में आ सकें। यथा "कटते बकरे को क्या शनि, क्या मंगल"।

"चण्डाल को देवता—वेश्या को पति किस काम का"।
—इन्द्र की सभा में उल्लू का आलाप।
—गाय की चोरी की और रस्सी पकड़ने में शर्म।

अर्थात् :

चाहे जितना भी घिसो चन्दन सुगन्ध ही देता है । चाहे (दांतों से) कितना भी काटें गन्ना मीठा ही रहता है । चाहे (आग में) कितना भी जलाएं सोना चमचमाता ही रहता है । प्राणान्त के समय भी सत्पुरुषों का स्वभाव बदलता नहीं है ।

बड़े भाई की डायरियों में गजलें और शेयर भी मिलते हैं।

—मंजिल मिले न मिले, मुझे इसका गम नहीं ।
मंजिल की जुस्तजू में मेरा कारवां तो है ।।

—ऐ । बुलबुलों खिजां में शुक्रे खुदा करो ।
तिनके कहां से लाओगे, सफरे वहार में ।।

—कोई यह लूट तो देखे कि उसने जब चाहा ।
तमाम हस्तिए दिल को जगा के लूट लिया ।।

—बहुत अजीब है ये दर्दो गम के रिश्ते भी ।
कि जिसको देखिए अपना दिखाई देता है ।।

—भीड़ से कट के न बैठा करो तनहाई में ।
बे ख्याली में कई शहर उजड़ जाते हैं ।।

—मुझको खुद मुझसे भी मिलने नहीं देती दुनिया ।
छिपके मिलता हूं कभी जब नहीं होता कोई ।।

-ऐ मोजे बला दे उनको भी दो चार थपेड़े हल्के से ।
दूर खड़े जो साहिल पे तूफां का नजारा करते हैं ।।

वड़े भाई प्रभावशाली एवं जोशीले वक्ता तो थे ही, बहुत अच्छे लेखक भी थे। विशेष कर पत्र लेखन कला में तो वह परागंत थे । समर्थ, सक्षम शब्दों के छोटे वाक्यों के छोटे-छोटे अनुच्छेद और कुल मिला कर दो तीन अनुच्छेद । जम्मू-कश्मीर के भारतीय मजदूर संघ के एक कार्यकर्ता को लिखते हैं :—

दिनांक ११-९-८४

परम प्रिय श्री स. न.

२८ अगस्त का पत्र मिला । कल से बंगाल प्रवास पर जा रहा हूं । २९ सितम्बर की केन्द्रीय कर्मचारियों की हड़ताल सफल हो, इसके लिये सब दूर प्रयास है । अन्तरिम राहत

—पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुश्रा, पंडित भया न कोय ।
ढ़ाई श्राखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय ।।

—चाह गई चिन्ता मिटी मनुश्रा बे परवाह ।
जिनको कुछ न चाहिए ते शाहन के शाह ।।

—कौश्रा काको धन हरै—कोयल किसको देय ।
मीठे वचन सुनाय कर जग श्रपनों कर लेय ।।

—कबीरा खड़ा बाजार में लिए लुकाठी हाथ ।
जो घर फूके श्रापना चले हमारे साथ ।।

—सिंहों के लंहड़े नहीं, हंसों को नहिं पांत ।
लालों की नहिं बोरियां, साधु न चलै जमात ।।

श्लोक की एक बानगी :—

कर्मणा रहितं ज्ञानं पंगुना सदृशं भवेत् ।
न तेन प्राप्येत किंचित न च किंचितत्प्रसध्येत् ।।

श्रर्थात् :

कर्म से रहित ज्ञान पंगु के समान होता है । उससे न तो कोई वस्तु प्राप्त की जा सकती है श्रौर न कोई कार्य सिद्ध किया जा सकता है ।

"गते शोकों न कर्त्तव्यो भविष्य न विचिंतयेत ।
वर्तमानेन कालेन प्रवर्तंते विचक्षणः ।।

श्रर्थात् :

बीते हुए का शोक तथा भविष्य की चिंता नहीं करनी चाहिए । बुद्धिमान लोग वर्तमानकाल में ही समयानुसार कार्य करते हैं ।

"घृष्टं-घृष्टं पुनरपि पुनश्चदनं चारूगन्धं ।
छिन्नं-छिन्नं पुनरपि पुनः स्वादुचैवक्षुदण्डम् ।।
दग्धं-दग्धं पुनरपि पुनः कान्चनं कान्तवर्णं ।
न प्राणान्ते प्रमृति विकृतिजायते सज्जनानाम् ।।

दुःख की घड़ी में सान्तवना एवं ढांढ़स ही नहीं बंधाते थे अपितु जीवन पथ पर दृढ़ता पूर्वक आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा भी देते थे।

कानपुर दिनांक : १०.६.६७

परम मित्र श्री......

सप्रेम नमस्ते,

सोचा था स्वयं उपस्थित होकर दुःख में भागीदार बनूं, पर वाराणसी की हड़ताल आन्दोलन के फलस्वरूप तार द्वारा तुरन्त बुलाये जाने के कारण कुछ भी सम्भव न हो सका। पत्र भेजने से भी वंचित रहा। देर से पत्र देकर तुम्हारे घाव को पुनः हरा करना नहीं चाहता था। तुम्हारा पत्र न आया होता तब तो और भी दिन तुम्हें पत्र न भेजता। अनेक बार ही नहीं अपितु प्रतिदिन तुम्हारा स्मरण होता रहता है। मन की व्यथा को व्यक्त न करने के कारण।

ईश्वर की यही लीला है और इसी को सृष्टि कहते भी हैं। सुख-दुःखों का मेल ही दुनिया है। अपना क्या है ? सब उसका है, जब चाहे सब ले लेवे। संसार में भावनाओं से ऊपर कर्त्तव्य कठोर होकर विचार करना पड़ता हैं ! वही सफल भी होता है। एक दिन सबको जाना है। पिता जी की मंजूरी तुम्हारे लिये साथ में रहने का उतने दिन की ही हुई थी। हरि इच्छा के आगे जड़-चेतन सबको झुकना पड़ता है। उसके निष्ठुर न्याय पर कोई अंगुली भी तो नहीं उठा सकता ? पूज्य पिता जी नहीं रहे, पर उनके सुपुत्र होने का गौरव तुम्हें प्राप्त हुआ है। पढ़ाई-लिखाई-समझदारी सब सुख के दिनों के लिये नहीं अपितु दुःखों को झेलने, साहस के साथ आगामी कार्यक्रमों में जुटने के लिये ही तो है। पिता जी ने तुम्हें इसी लिये पढ़ाया हैं। परिवार को सान्त्वना हो नहीं अपितु एक जुट रखकर उत्साह के साथ आगे बढ़ाने में तुम्हारी कुशलता है। स्वयं जितना दुखी रहोगे अन्य आत्मीय जनों को भी दुखित करते रहोगे। सयानों के लक्षण यही हैं सब कुछ पीकर, पचाकर सबको प्रसन्नता पूर्वक रखना।

आशा है तुमसे जून के आखिरी दिनों में अवश्य भेंट होगी।

आपका

रामनरेश सिंह

(दूसरी किश्त) सार्वजनिक क्षेत्र के बराबर किया जाय, यह प्रमुख मांग शेष है। इस समय प्रति मास ३५०/- रुपये का अन्तर है।

२०-२१ अक्तूबर का वर्ग आपने रखा है, कोई हर्ज नहीं है। डब्लू. ई. से स्वीकृत मिल जावेगी। श्री गोबिन्दराव आठवले को विश्वकर्मा श्रमिक शिक्षा संस्था की ओर से भी स्वीकृत कराने के लिये पत्र लिख दें।

इन्दौर वर्ग के लिये नामों को बढ़ाने के लिये न सोचें। कोई पूर्णकालिक कार्यकर्ता बढ़ने वाला हो तो उसके नाम को बढ़ाया जा सकता है। ३-४ नाम बढ़ाने का तो प्रश्न ही नहीं है।

मा. श्री ठेंगड़ी जी गुजरात के प्रवास पर हैं, स्वास्थ्य ठीक है, आनंद में हैं। १४ सितम्बर को बोट क्लब की रैली को वे सम्बोधित करेंगे।

शेष शुभ है। प्रभु आपको मंगलमय व प्रसन्न रखे—मेरी प्रार्थना है।

आपका
"रामनरेश सिंह"

कार्यकर्ताओं के सुख-दुःख में बड़े भाई बराबर शरीक होते। जहां उपस्थित न हो पाते वहां पत्र द्वारा सन्देश प्रेषित करते। विवाह आदि के प्रसंग पर हर्ष व्यक्त करते हुए नवदम्पत्ति को आशीर्वाद द्वारा कर्त्तव्य बोध कराते।

भारतीय मजदूर संघ
२, नवीन मार्किट, कानपुर।
दिनांक : ३०.५.८३

मित्रवर श्री········
सप्रेम नमस्कार।

पर्याप्त दिनों से प्रवास पर बाहर था। इस कारण देर से आपका निमंत्रण पत्र पा सका। आयुष्मती सुपुत्री के शुभ पाणिग्रहण संस्कार शुभ मूहुर्त पर मेरी बधाई स्वीकार करें।

भगवान से विनीत हूं कि गंगा-यमुना के अक्षय जल के समान आयु. जयेन्द्रबाला का सौभाग्य सिन्दूर अखण्ड रखे। चि. लक्ष्मी एवं आयु. जयेन्द्र को मेरी अनेक शुभकामनायें एवं शुभाशीर्वाद प्रस्तुत है। ईश्वर नवदम्पति को सुदीर्घ, यशपूर्ण एवं मंगलमय जीवन प्रदान करे।

आपका
रामनरेश सिंह

मैं पूर्णरूपेण स्वस्थ हूं। दवा व इन्जेक्शन तो चलेगा-दो चार मास तक। परहेज भी।

आप सबका
रामनरेश सिंह

पूना
दिनांक : १०.२.८५

मित्रवर श्री स. न.

आप सबकी शुभेच्छा व प्रेम के कारण मैं अनपेक्षित रूप में स्वस्थ हो चुका हूं। स्वयं मेरे शुभचिंतक डॉ० लोग भी आश्चर्यचकित हैं।

श्रीमान् डॉ० मुले जी का तो कहना है कि यह सब चमत्कार भारतीय मजदूर संघ के असंख्य लोगों की भगवान से प्रार्थना का है।

मेरे स्वयं घर में मा. ठेंगड़ी जी, श्रीमान् भक्त जी व प्रिय मन्नालाल जैसे भगवान के भक्त होते हुये मेरे स्वास्थ्य में सुधार होना लाजिमी ही था। यह अब जो आयु मिली है वह पूरी की पूरी आप सबकी सद्भावना व प्रेम के कारण ही मिली है।

पूना में बहुत दिन रहने की आवश्यकता न पड़े तो भी अभी निश्चित तिथि लिखना मेरे लिये सम्भव नहीं है। मा. श्री ठेंगड़ी जी व डॉ० मुले जी दोनों के सम्मिलित परामर्श पर कुछ निश्चय हो सकेगा।

मेरे प्रवास कार्यक्रम के लिये अभी प्रोत्साहन न दीजियेगा। कमजोरी पर्याप्त है, जा न सकूंगा। नई डायरी छपने के पश्चात् केन्द्रीय मिनिस्ट्री में परिवर्तन हुआ है। (१) क्या यह उपयोगी रहेगा कि अलग से साइकलोस्टाइल करके केन्द्रीय कार्यसमिति के सदस्यों के पास नई व सही सूची भेज दी जाय? श्रीमान् भक्त जी से परामर्श करके यह कर सकें तो अति उत्तम होगा। (२) श्रीमान् गोपेश्वर बाबू सांसद सदस्य से सामूहिक रूप से आप अग्धी जी व भक्त जी उनके बंगले पर जाकर मिल सके तो अच्छा रहेगा। (३) तमिलनाडू के अध्यक्ष व महामंत्री पूर्णरूपेण चुन लिये गये हैं--साइक्लोस्टाइल में आगे चले जाना आवश्यक है। (४) टैक्साटाइल फेडरेशन के महामन्त्री श्री साटम का नाम भी आगे के परिपत्र में चला जाना ठीक रहेगा। (५) भारतीय पोर्ट डाक मजदूर संघ का कार्य कलकत्ता' व प्रिय अजयनन्दी से सम्भव नहीं है। मुम्बई के लोग जिम्मेवारी ले चुके हैं अस्तु अजयनन्दी को संगठन मन्त्री व महामन्त्री बाम्बे का रहे—यह भी केन्द्रीय कार्यसमिति के लोगों को सूचित करना ठीक रहेगा। प्रिय रमन भाई को पत्र लिख रहा हूं। वे नाम का सुझाव आपको भेजेंगे।

पुणे
दिनांक : १८.२.८५

मित्रवर श्री.........
सादर सप्रेम नमस्कार।

अभी तक मा. ठेंगड़ी जी से भेंट न होने के कारण नागपुर की बैठक में मैं जाऊं या नहीं तय नहीं कर पा रहा हूं।

जो स्वयं तय किया हूं वह इस प्रकार है।

२३ को झेलम एक्सप्रेस से पूना से प्रस्थान। २४ रात्रि दिल्ली। २८ तक दिल्ली।

१ मार्च को दोपहर विश्वनाथ एक्सप्रेस से वाराणसी के लिये प्रस्थान। २ से ६ मार्च घर। १० मार्च को वाराणसी होते हुये लखनऊ। ११ और १२ मार्च को कानपुर।

१२ की सायं नागपुर के लिए प्रस्थान। १३ की सायं दक्षिण एक्सप्रेस से नागपुर। १३ से १८ मार्च तक नागपुर की बैठक।

१६ मार्च को दोपहर महाराष्ट्र एक्सप्रेस से पूना के लिए प्रस्थान। २० मार्च की प्रातः पूना। डाक्टर मुले जी के निर्देशानुसार दवाओं व इन्जेक्शन का दूसरा चक्र प्रारम्भ। एक चक्र अभी पूरा हुआ है। दूसरा चक्र एक मास के पश्चात् पूरा करना है। १५ दिनों के लिये चक्र का समय है।

एक बार आवश्यकता लगी तो मुम्बई जाना होगा। आखिरी जांच पड़ताल के लिये जैसा डॉ० मुले जी कहेंगे।

शेष शुभ है। २८ फरवरी के बीच मा. ठेंगड़ी जी से दिल्ली में भेंट हो सकेगी ऐसी आशा है। वैसे वे २२ फरवरी को पूना भी आ रहे हैं। उस समय पूरा कार्यक्रम तय करूंगा।

मित्रवर श्रीमान् अग्र्वा जी, वशिष्ठ जी, भटनागर जी, गुप्ताजी, पठेलाजी, मिटकरी जी, मामतानी जी सहित कार्यालय के सभी लोगों को मेरा सादर सप्रेम नमस्कार कहें।

बगल वाली आदरणीय चाची जी व बाबू जी को प्रणाम कहें। झंडे वाले पर सभी को मेरा प्रणाम। २५ को आकर स्वयं उन सभी के दर्शन करूंगा।

आप सभी का
रामनरेश सिंह

और क्या लिखूं ? पर्याप्त आराम कर चुका हूं। आप सभी को कष्ट देने के लिये शीघ्र ही पहुंचने की आशा रखता हूं।

इस समय कोई तकलीफ नहीं है। दवा के नाम पर दो-एक गोलियां चल रही हैं। फिर तो टानिक ही रहेगा और आप सभी का साथ व प्रेम।

मित्रवर भक्त जी, अग्घी जी तथा प्रिय मन्नालाल व जगदीश आदि सभी को यथा-योग्य मेरा सादर सप्रेम कहें। आदरणीय चाची जी व बाबू जी को मेरा प्रणाम कहना न भूलें। शेष शुभ।

आपका
रामनरेश सिंह

प्रिय पाण्डेय आप सभी को सादर नमस्कार कह रहे हैं।

बड़े भाई की डायरियों में साहित्य, समाज, संगठन, मानव, स्वभाव, दुःख, दरिद्रता लोक परलोक आदि अनेक विषयों पर जितनी मात्रा में सामग्री उपलब्ध है उस पर अलग से एक पुस्तक की रचना की जा सकती है। यहां उस सामग्री की मात्र एक छोटी सी झलक ही प्रस्तुत की जा सकी है। बड़े भाई की डायरियों में अनगिनत अनमोल रत्न भरे पड़े हैं। कोई पन्ना खाली नहीं। सभी भरे हुए लिखे हुए। डायरियों के पन्नों में बड़े भाई के बहुआयामी व्यक्तित्व के दिगदर्शन होते हैं। सच ही है कि :—

"हजूमे बुलबुल हुआ चमन में,
किया जो गुल ने जमाल पैदा।
कमी नहीं कद्रदां की अकबर,
करे तो कोई कमाल पैदा॥

संकलन : अमरनाथ डोगरा (दिल्ली)

हैदराबाद में सम्पन्न भारतीय मजदूर संघ अधिवेशन के उद्घाटन समारोह पर मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री हंसराज जी खन्ना को मंच की ओर ले जाते बड़े भाई।

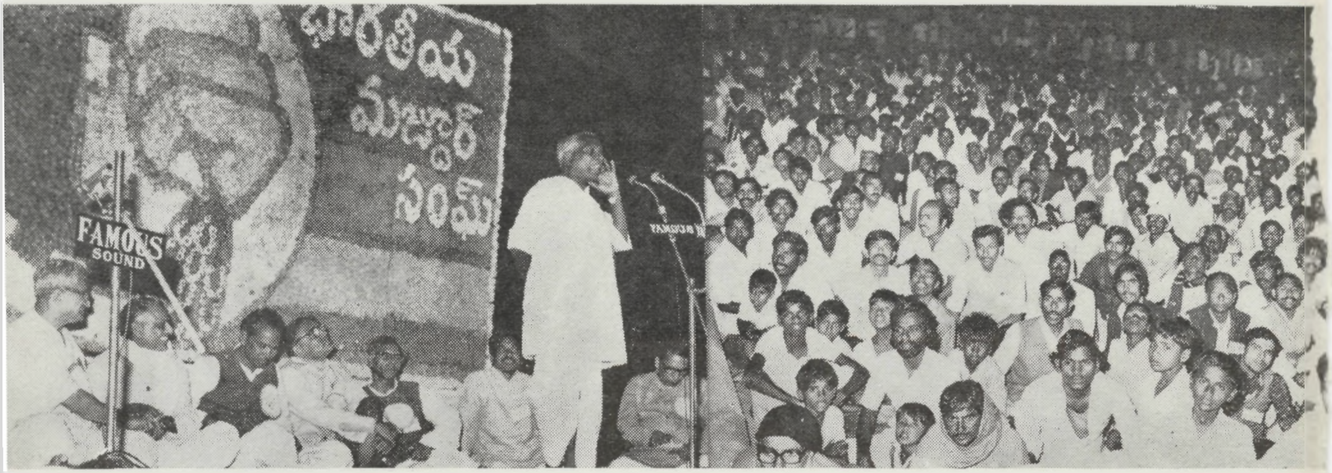

हैदराबाद अधिवेशन के अवसर पर आयोजित सार्वजनिक सभा में माईक पर बोलते हुए बड़े भाई। मंच पर बैठे है (बाएं से दाएं) सर्वश्री दत्तोपंत ठेंगड़ी (संस्थापक भारतीय मजदूर संघ), रीतलाल वर्मा (पूर्वसांसद) टी० एस० रामराव, मनहरभाई मेहता, दयाराम शाक्य, सत्यनारायण जटिया (पूर्व सांसद) और ओम प्रकाश अग्घी।

बढ़ रहे हैं
हम निरन्तर
चिर विजय की
कामना ले ।

●

श्री दत्तोपंत ठगड़ी, संस्थापक, भारतीय मजदर संघ ।

(नीचे) रामनरेश सिंह उपाख्य बड़े भाई

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रांत प्रचारक बैठक

दिल्ली-दीपावली सं० २०४१ वि०

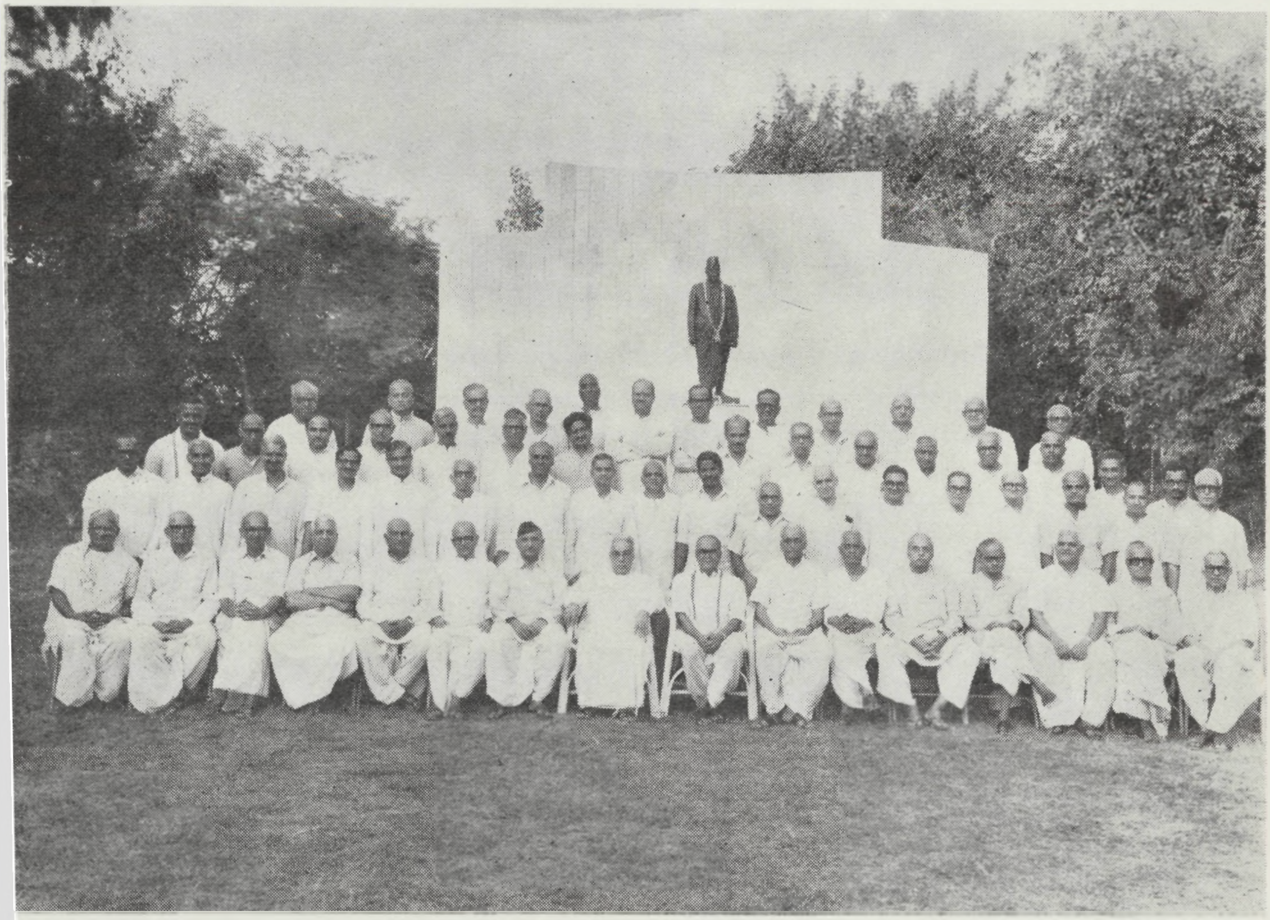

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारकों की बैठक (दिल्ली-१९८५ दीपावली) के अवसर पर अंतिम पंक्ति में एकदम बाएं बड़े भाई।

१६७८ में उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्यों के विदाई समारोह में बीच की पंक्ति में दाएं से ग्यारहवें बड़े भाई।
(नीचे) भारतीय मजदूर संघ के अ. भ. अधिवेशन (अप्रैल १६७८-जयपुर) के अवसर पर केन्द्रीय कार्यसमिति के बीचोंबीच बैठे बड़े भाई, स्व० सर्वश्री नरेशचंन्द गांगुली और दत्तोपंत जी ठेंगड़ी।

निर्भय बनो संगठित बनो

"मैं देखता हूं कि सरकार ऐसा सोचती है कि लोगों को भयभीत करें—पुलीस के भरोसे लाइसन्स परमीट के भरोसे और डंडे चलाकर। स्वाधीन देश के नागरिक अपनी सरकार से भय करें यह स्वाधीन देश का चित्र नहीं। स्वाधीन होने के बाद भी इतना भय? स्वाधीन देश के नागरिक कैसे होने चाहिए? बड़ी हिंमतवाले, आँख से आंख मिलाने वाले, निर्भय और हम सब बराबर हैं ऐसा सोचने वाले चाहिये।

परंतु हम देखते हैं कि अपने यहां बड़ा भय निर्माण हुआ है। जहां आत्म की अमरता का सिद्धान्त है, कौन मरने वाला है और कौन मारने वाला है, ऐसी शिक्षा दी जाती है, 'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोपराणि' ऐसा गीता के श्लोक का पाठ करते हैं, वहीं लोग डरपोक रहें, भयभीत रहें यह बड़े दुख की बात है।

निष्कर्ष यह कि सरकार को अपनी गलत नीति बदलने को मजबूर करने के लिए भी लोगों को संगठित होना पड़ता है आंदोलन करना पड़ता है। तब कहीं सरकार सही रास्ते पर आती है। जब सामान्य नागरिक जागृत होता है, निर्भय होता है, संगठित होता है तब सरकार की या नेतृत्व की भी अक्कल ठिकाने आती है।"

—मा० बालासाहब देवरस
१-१२-१९७४

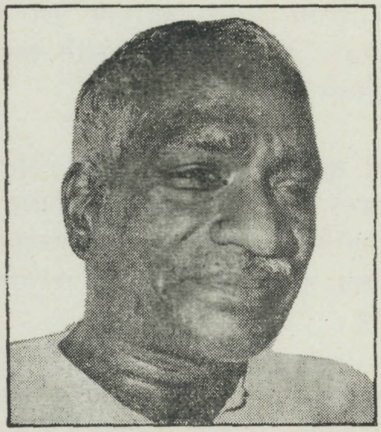

विचार

राजनीति के रंग में सराबोर वर्तमान वातावरण में अवसरवादिता और स्वार्थ-सिद्धि का चारो ओर बोलबाला है । हो सकता है कि ऐसे वातावरण में माँ का सन्देश ग्रहण करने वाले हम अपने आपको आत्मसंशयी, भग्नमना और निराश अनुभव करें । इन परिस्थितियों में टेरेंस मैक्स्वाइनी का यह स्वस्थ परामर्श सभी आदर्शवादियों के लिए बड़े काम का सिद्ध होगा ।

—"नये उत्साही जनो ! झण्डे तले एकत्र होने वाले नवागन्तुको ! निराशा की उस घड़ी से सावधान, जो सर्वाधिक उत्साही, सर्वाधिक निर्भय और बलवान को भी ग्रस लेती है ।

हमारा कार्य ऐसे लोगों का कार्य है जो उन उतार-चढ़ावों को झेलते हैं जो समस्त मानवीय प्रयास के चारों ओर मंडराते रहते हैं, भर्ती किये गये प्रत्येक जन को संघर्षों एवं काली घड़ियों का डटकर सामना करना होगा । निराशा उस डरावने, ठण्डे काले कुहरे की भांति आ धमकती है जो हर सुन्दर वस्तु और आशा कि प्रत्येक किरण को ग्रस लेती है । इसके अनेक कारण हो सकते हैं—संभवतः निर्बल शरीर, जिसे घोर मानसिक श्रम ने जर्जर कर दिया हो सम्भवतः वर्षों के प्रयास की स्मृति, जो विस्मृति और व्यर्थता के भंवर द्वारा निगली जाती दिखायी दे रही हो, संभवतः अपने पक्ष के ऐसे लोगों से सम्पर्क, जिनकी उपस्थिति एक पहेली हो, जो चरित्रहीन हों और जिन्हें उद्देश्य की महानता का लेशमात्र बोध न हो जिनके घटिया, तुच्छ और धूर्ततापूर्ण द्वेष-कर्मों से आपके प्राण सिहर उठते हों—जबकि आप सोचते हो कि जो इतने सुन्दर ध्वज को प्रणाम करते हैं जितना कि हमारा है, उन्हें तो स्वतः वीर स्पष्ट-वक्ता और उदार होना चाहिए, सम्भवतः प्रत्यक्षतः शत्रु की विराट संख्या और उन सहस्त्रों लोगों का निरूत्साह, जो उन्मत होकर स्वाधीनता का स्वागत करने को आतुर हों, पर जो अब निराशा के नद में आकंठ डूब कर एक ओर खड़े हों, तथा इस सब पर "करेला और नीम चढ़ा" अपने उस आत्मतुष्ट व्यावहारिक मित्र की वाणी, जिसके पास इस घड़ी के लिए परमावश्यक उच्च आवेग और अविकारी सिद्धांत के लिये व्यंग्य की बर्छी के अतिरिक्त कुछ न हो । स्वाधीनता के सैनिक को ऐसे अनुभवों की बाढ़ को पार करना होगा । किन्तु यह ध्रुव सत्य है कि जब-जब ऐसी घड़ी आती है तो ऐसे घोर काले आकाश में अन्धकार को चीरने वाला कोई तेजोमय नक्षत्र भी उदय होता है । वे, जो कभी-कभी युद्ध में थकान का अनुभव करते हैं, स्मरण रखें कि जब रणभूमि में केवल एक या दो ही योद्धा रह जायें तो हो सकता है कि उन्हें कोई सार्थकता न दीख पड़े ।

फिर भी, उन्हें अपनी निष्ठा पर अडिग रहना चाहिए, उनकी संख्या बढ़ती जायेगी । सत्य का प्रेम संक्रामक बनकर फैलता है । जब प्रगति अवरुद्ध हो जाये तो वर्तमान की मत सोचो, वरन् इस बारे में सोचो कि हमने क्या पाया था, क्या कुछ बचा है और क्या कुछ हम अभी प्राप्त कर सकते हैं । यदि कुछ लोग ढ़ीले पड़ गये हैं और थोड़ी अवसरवादिता दिखाने लगे हैं तो अपनी ओर से और अधिक दृढ़ता से उनके प्याले में अपनी थोड़ी सी सहानुभूति उड़ेल दो । लड़ते-लड़ते वीरगति प्राप्त करना कठिन कार्य है, पर सतत संघर्ष का जीवन जीना और भी दुष्कर है । उदार-वृतिवाले अधिकांश लोग सर्वोच्च घड़ी के लिए अपना पूरा साहस बटोर कर लक्ष्य के लिए मर मिटेंगे, किन्तु बारम्बार और बिना चेतावनी के उस सर्वोच्च घड़ी के लिये

आदर्शवादियों के नाम एक आदर्शवादी का पैगाम

दत्तोपंत ठेंगड़ी जी

(आपत्काल में भारतीय मजदूर संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक बम्बई में होने वाली थी। उस समय तक श्री ठेंगड़ी जी ने भारतीय मजदूर संघ के महामंत्री पद से त्याग-पत्र दे दिया था। उन्हें लोक संघर्ष समिति के सचिव का कार्यभार सम्हालना था। संघर्ष समिति के दूसरे सचिव श्री रवीन्द्र वर्मा को बन्दी बना लिया गया था। ठेंगड़ी जी के बाद श्री रामनरेश सिंह जी उपाख्य "बड़े भाई" भारतीय मजदूर संघ के महासचिव बने। उन काले दिनों में भारतीय मजदूर संघ राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक की पूर्व-सन्ध्या पर ठेंगड़ी जी ने जो पत्र नव-निर्वाचित महासचिव को लिखा था उसकी जितनी प्रसांगिकता उस समय थी उतनी ही आज भी है और कदाचित् सदैव रहेगी। बड़े भाई सदृश्य बूंद-बूंद जलने तदुपरान्त राष्ट्र की बलि वेदी पर कुर्बान हो जाने वाले राष्ट्र भक्तों की लड़ी में पिरोए गए असंख्य कार्यकर्ताओं को ठेंगड़ी जी द्वारा बड़े भाई को लिखा यह पत्र प्रेरक एवं उत्साह बढ़ाने में सक्षम हैं—सं)

प्रिय बड़े भाई,

आपने मुझ से कहा है कि मैं राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक की पूर्व-संध्या पर अपना सन्देश भेजूं। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं इस योग्य नहीं हूं कि आदर्शवादियों को अपना सन्देश दूं। किन्तु इस अवसर पर मैं आदर्शवादियों के नाम टेरेंस मैकस्वाइनी का सन्देश भेज रहा हूं जो स्वयं एक आदर्श आदर्शवादी थे।

विचार बिम्ब

प्रेरणा स्त्रोत

भारतीय मजदूर संघ की स्थापना के साथ ही उसके संस्थापक ने श्री गुरू जी के बोधवाक्य "इदम् राष्ट्राय इदम् न मम्"—सब कुछ राष्ट्र के लिए अर्पित, का उच्चारण करते हुए भारतीय मजदूर संघ के उद्देश्य को प्रकट किया था।

भारतीय मजदूर संघ सर्वतोमुखी राष्ट्र-निर्माण-कार्य का एक अंग है। यह राष्ट्रहित की चौखट के अंतर्गत मजदूर हित की कल्पना लेकर चल रहा है। विशुद्ध राष्ट्रवादी एवं सही ट्रेड यूनियन आंदोलन के आधार पर चलने के कारण स्वभावतः यह "मजदूरों के लिए, मजदूरों द्वारा" संचालित है। हर प्रकार के बाहरी प्रभाव तथा विदेशी विचारधारा के प्रभाव आदि से मुक्त है। "पोलिटिकल यूनियनिज्म" एवं "ब्रेड-बटर यूनियनिज्म" से दूर हैं। यह भारतीय संस्कृति, परम्परा और प्रतिभा के आधार पर चलने वाला श्रम संगठन है। इसके मत के अनुसार राष्ट्रहित, उद्योगहित तथा मजदूरहित, तीनों एक ही दिशा में जाने वाले, एक दूसरे के पूरक और अन्योन्याश्रित हैं।

भारतीय मजदूर संघ को "वर्ग" कल्पना अमान्य है। इसका स्पष्ट मत है कि सभी देशवासी भारतमाता के पुत्र हैं। इसे "वर्ग संघर्ष" या "वर्ग समन्वय" नहीं, अपितु "अन्याय, शोषण और विषमता के विरूद्ध संघर्ष" इष्ट है। यह "वर्ग संघर्ष" या "वर्ग समन्वय" के स्थान पर परिस्थिति के अनुसार "संघर्षक्षम" व "समन्वयक्षम" बनाने की आकांक्षा रखता है। राष्ट्र का औद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण तथा श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण के इन तीन सूत्रों में अपने उद्देश्य को इसने प्रकट किया है। इसकी धारणा है कि मजदूर उत्पादन कर्ता है, कमाऊ पूत है, सबको खिलाने वाला है। वह कमाता है, शेष

साहस जुटाते रहना महान व्रत के लिये जीवन का दायित्व है । और इस महान व्रत की जो प्राणों को सुखाने वाली कष्टसाध्य अनिवार्यता है, उसी का प्रभाव है कि अनेक लोग असफल हो गये हैं । हमें ऐसे व्यक्ति चाहिए जो यह हृदयंगम कर सकें कि जीने में भी उतने ही साहस और वीरता की आवश्यकता है, जितनी कि मरने में । किन्तु हमारे युग में इस सपाट युक्ति ने संभ्रम पैदा कर दिया है : आपसे यह नहीं कहा गया है कि आप आयरलैंड के लिये मरें, वरन् कहा गया है कि आप उसके लिये जियें । कायरों की भांति गिड़गिड़ाकर जीना कोई जीना नहीं है । यदि ऐसे घटिया जीवनदर्शन की बात बाहर फैली तो हम शीघ्र ही देखेंगे कि यह देश गीदड़ों का देश बन जायेगा, जिसमें न तो आपदा से दृढ़तापूर्वक लड़ते हुए जीने की और न ही वीरतापूर्वक मरने की शक्ति रह जायेगी ।

ये सभी परिस्थितियां निराशा की घड़ी को जन्म देती हैं । और हो सकता है कि ऐसी घड़ी में, भावशून्यता और विश्वासघात के वातावरण में, निष्ठुर मित्रों और सक्रिय शत्रुओं के बीच आपका तन जर्जर हो जाये, आप किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जायें, आप पुराने महान व्रत का समर्थन करते समय ऐसा अनुभव करें कि आपकी वाणी तो अरण्यरोदन है और हो सकता है ऐसा अवसर आये कि रक्त फिर उबलने लगे, विचारों में फिर तड़प आ जाये और सोचने पर विवश करे कि किस प्रकार एक वाणी, जो सहस्त्रों वर्ष पूर्व अरण्यरोदन प्रतीत होती थी, आज सशक्त और प्रेरक है, जबकि अवसरवादी "व्यावहारिक" जनों की वाणी काल के गाल में समा गई ।

"इस सुन्दर दंभ के गर्भ में कि हम सहजता से उनका पालन कर सकते हैं, सुन्दर सिद्धांत निहित नहीं है, वरन् इस पूर्ण सजगता के गर्भ में निहित है कि सम्भवतः हम उनसे दूर नहीं रह सकते—कि मुठ्ठी भर सत्यव्रती लोग अपयश का टीका लगाने वाली भीड़ से अधिक प्रभावशाली होते हैं ।"

समाज की चेतना जगाने वाला यह दिवस इस पवित्र कर्त्तव्य का बोध कराता है कि कार्य में निहित देवत्व का सम्मान किया जाय और यह स्मरण किया जाय कि किस प्रकार देवी उपासना के रूप में किया गया कार्य भौतिक सम्पन्नता प्रदान करने के साथ-साथ कर्मयोग की शिक्षा भी देता है।

हमारा बोध-चिह्न

निर्माण का जनक, कर्मशक्ति का पुंज, उद्यम, विकास और विजय का सम्बल, श्रमजगत का पूर्ण प्रतिनिधित्व करने वाला "मानव अंगूठा" ही भारतीय मजदूर संघ का बोध-चिह्न है।

मैं मनुष्य हूं

आज अपने देश में करोड़ों की संख्या में ऐसे लोग हैं जो अपने किसी भी मानवीय अधिकार का उपयोग नहीं कर पाते। इस महत्वपूर्ण बात को ध्यान में रखकर भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक का कहना है कि मजदूर की मांग असीमित और अपरिमित नहीं, वरन् उसकी केवल एक ही मांग है कि "मैं मनुष्य हूं और मनुष्य के नाते मेरी न्यूनतम आवश्यक्ताओं की पूर्ति होनी चाहिए"। "आहार, निद्रा, भय, मैथुनंच" के मर्यादित एवं शास्त्रीय संदर्भ में उन्होंने यह कहा है कि प्रत्येक मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति कराने का दायित्व समाज का होता है। भारतीय मजदूर संघ इसी सामाजिक दायित्व का बोध कराने के लिए कटिबद्ध है।

उद्योगों का श्रमिकीकरण

भारतीय मजदूर संघ का कहना है कि "काम के अधिकार" को मौलिक अधिकार के रूप में संविधान में जोड़ा जाय। यदि "काम और रोटी की गारंटी" नहीं दी जा सकती तो "बेकारी भत्ता बीमा योजना" लागू हो।

उद्योग में पैसे के समान पसीने का भी (शेयर) अंश माना जाय। उद्योगों के श्रमिकीकरण की मांग व्यवहार में लाई जाय। औद्योगिक मिल्कियत के आधार पर एक "राष्ट्रीय आयोग" की स्थापना की जाय।

सभी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण हो अथवा किसी का भी राष्ट्रीयकरण न हो, इन दोनों अतिवादी छोरों से अलग हटकर प्रत्येक उद्योग के बारे में उसकी रचना और स्थिति के अनुसार उसके स्वामित्व के ढांचे के बारे में विचार होना चाहिए, जिसमें सहकारीकरण, निगमीकरण, जनतंत्रीकरण, स्वरोजगार क्षेत्र, संयुक्त क्षेत्र, राष्ट्रीयकरण तथा पूर्णरूपेण श्रमिकीकरण आदि की व्यवस्था की जा सके।

समाज खाता है, अतः उसे दुत्कारने और उसका दुर्लक्ष्य करने वाले लोग निश्चित् ही शोषण-परस्त हैं। मजदूर को उसके योग्य पद पर प्रतिष्ठित कराने हेतु "श्रमिकीकरण" तथा पैसे के समान पसीने के (शेयर) अंश को निर्धारित कराने का इसने संकल्प लिया है। इसका नारा है—"धन की पूंजी श्रम का मान, कीमत दोनों एक समान।"

भारतीय मजदूर संघ का कार्य कोरे "विधान" पर नहीं, अपितु "पारिवारिकता" पर आधारित है। इसके सदस्य "यूनियन कान्सेन्स" से नहीं, अपितु "भारतीय मजदूर संघ कान्सेन्स" से प्रेरित हैं। वे श्रेष्ठतम जीवनमूल्यों की आराधना में रत हैं। "अहंकार" नहीं, "ध्येयनिष्ठा" उनका सम्बल है। "देश के हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम" एवं "बी०एम०एस० की क्या पहचान, त्याग-तपस्या और बलिदान", उनके लिए मात्र नारे ही नहीं, ध्येयवाक्य भी हैं। "दुनिया के मजदूरों—एक हो" के अवैज्ञानिक एवं फरेब से भरे हुए नारे को हटाकर इसने "मजदूरों, दुनिया को—एक करो, एक करो" का शाश्वत नारा दिया है। वह नियोजक और सरकार, दोनों के "प्रत्युत्तरीय सहयोग" के लिए आह्वान करता है।

भारतीय मजदूर संघ का स्पष्ट मत है कि लोक सभा और राज्यों की विधान सभाओं की प्रकृति एवं रचना में परिवर्तन होना चाहिए। क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व को अंकात्मक रूप से घटाकर व्यवसाय के अनुसार प्रतिनिधित्व के तत्व का समावेश किया जाना चाहिए।

हमारा स्फूर्ति केन्द्र

मनुष्य जीवन त्यागमय, पवित्र, वैराग्य तथा संयमयुक्त हो। अतीतकाल से हमारा राष्ट्र-जीवन इन्हीं तत्वों को लेकर बना है। इसके प्रतीक के रूप में हमारा भगवा ध्वज है। इसे अपने कन्धे पर रखकर विश्व को भारतीय जीवन दर्शन के सार्वभौमिक तत्वों से परिचय कराने वाले सर्वस्व त्यागी-सन्यासी भ्रमण करते थे। धर्म और राष्ट्र की रक्षा करने के लिए प्राणों की आहुति देने वाले हमारे वीर पूर्वज इसी की छत्रछाया में शत्रुओं से संघर्ष करते थे। यह ध्वज "अभ्युदय व निःश्रेयस"—दोनों का प्रतीक है। यह राष्ट्र की आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है। वायुमण्डल को विशुद्ध करने वाली पुनीत यज्ञ की ज्वाला एवं अंधकार का हरण करने वाली उषा की लालिमा के रूप में हम अपने इस ध्वज का दर्शन करते हैं। अपने पूर्वजों से प्राप्त आदिकाल से चला आया यही ध्वज भारतीय मजदूर संघ का स्फूर्ति केन्द्र है।

हमारा श्रम दिवस

मजदूर और गैर-मजदूर में भेद करने वाला नहीं, मानव को दो वर्गों में बांटने वाला नहीं, अपितु "सभी मानव एक हैं" की घोषणा करने वाली "विश्वकर्मा जयन्ती" ही हमारा "राष्ट्रीय श्रम दिवस" है।

अभावग्रस्तों को आपस में लड़ाने की साजिश की है। इस प्रकार गरीबों का दोहन करने के रास्ते इन लोगों ने ढूंढ लिए हैं। भारतीय मजदूर संघ की घोषणा है कि "आय-विषमता समाप्त हो—एक-दस का अनुपात हो"। यदि देश के एक गरीब की आय १० रुपये है तो सबसे धनी टाटा हों या बिड़ला अथवा देश के प्रधानमंत्री, उनकी आय १०० रुपये से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। न्यूनतम और अधिकतम आय का अंतर तर्कसंगत और न्यायोचित हो।

जब आय के वितरण पर दृष्टि डालते हैं तब मालूम होता है कि राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अन्तर्गत जनसंख्या का ८० प्रतिशत निम्न वर्ग राष्ट्रीय उत्पादन का शहरी क्षेत्र के ६.८६ प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र के केवल ८.०८ प्रतिशत का उपभोग कर पाता है, जबकि २० प्रतिशत उच्च वर्ग शहरी क्षेत्र के ४२.११ प्रतिशत का और ग्रामीण क्षेत्र के ३८.४५ प्रतिशत का उपभोग कर लेता है। स्पष्ट है कि आय और वितरण संबंधी विषमताएं पूर्ववत् प्रचलित हैं तथा साथ-साथ समाजवादी घोषणाएं भी निरंतर जारी हैं।

विकसित कृषि तकनीकी का लाभ किसानों के १० से १५ प्रतिशत बड़ी इकाइयों को ही हुआ है। औद्योगिक क्षेत्र में २० बड़े घरानों तथा ५० दूसरे प्रतिष्ठानों ने ही अपनी स्थिति मजबूत बनायी है।

इस प्रकार आर्थिक विकास और समृद्धि के फायदे मुट्ठी भर लोगों को मिल रहे हैं और अधिकाधिक लोग गरीबी-रेखा के नीचे ढकेले जा रहे हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार ७० करोड़ जनसंख्या में अब तक मात्र तीन करोड़ लोगों, जिनमें सत्ता पर बैठे हुए लोग, अफसर, उद्योगपति और बड़े-बड़े किसान हैं, मालामाल हुए हैं और देश की जनसंख्या का ६० प्रतिशत और अधिक विपन्न होता चला गया है।

महंगाई का कारण?

अपने देश में मुद्रा-आपूर्ति में प्रतिवर्ष औसतन ८ प्रतिशत की वृद्धि होती रही है, जबकि राष्ट्रीय उत्पादन की वार्षिक वृद्धि-गति केवल ३ प्रतिशत रही है। लेकिन इधर हाल में मुद्रा आपूर्ति १९-२० प्रतिशत बढ़ गई है, जबकि राष्ट्रीय उत्पादन अपेक्षाकृत बहुत कम बढ़ पाया है। १९७६-७७ से १९७८-७९ के तीन वर्षों में ८३ खरब ८७ करोड रुपये की अतिरिक्त मुद्रा राष्ट्रीय अर्थतंत्र में डाली गई, अर्थात् हर वर्ष लगभग २८ अरब रुपये के अतिरिक्त करेंसी नोट छापे गये। मार्च १९७९ में प्रचलित करेंसी नोट २१,७१० करोड़ रुपये तक पहुंच गए। सरकार करेंसी नोट तो छापती चली जा रही है, लेकिन उसके अनुपात में वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि का उपाय नहीं कर पा रही है। अत्याधिक महंगाई का यह एक प्रमुख कारण है।

टैक्सों का ढांचा और कानून का अमल इतना त्रुटिपूर्ण है कि जिसके कारण चोर-बाजारी व जमाखोरी जोरों से पनपती है। सरकार कालेबाजारियों की समानान्तर अर्थव्यवस्था पर प्रभावी अंकुश नहीं लगा पा रही है, क्योंकि चुनाव की राजनीति कालेधन से चलती है। बड़े

राष्ट्रीय नीति का निर्धारण आवश्यक

भारतीय मजदूर संघ की यह पुरजोर मांग है कि राष्ट्रीय आय (वेतन), मूल्य, पूंजी-निवेश, रोजगार, कर तथा उत्पादकता आदि नीतियों को निर्धारित करने हेतु सभी आर्थिक-हित पक्षों का, (जिसमें "उद्योगपति, लघु उद्योगपति, कृषक, व्यापारी, मजदूर, उपभोक्ता और विशेषज्ञों" के प्रतिनिधि रहें) गोलमेज सम्मेलन बुलाया जाय। इस पद्धति से सभी वर्गों को आपस में चर्चा करने, दूसरों की बात सुनने, अपनी बात सुनाने तथा विचारों का आदान-प्रदान का अवसर मिलेगा।

राष्ट्रीय योजना को प्रभावी बनाने की दृष्टि से मजदूरों को योजना के सभी स्तर पर प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए।

वास्तविक (असली) वेतन की सुरक्षा

भारतीय मजदूर संघ का यह स्पष्ट मत है कि देश के सभी मजदूरों के लिए वैज्ञानिक आधार पर वेतन व्यवस्था हेतु सर्वतोमुखी विचार हो। देश के सभी औद्योगिक केन्द्रों पर शास्त्रीय और वैज्ञानिक आधार पर मजदूरों के परिवारिक बजट (परिवारों के मासिक खर्चे) की जांच के अनुसार "राष्ट्रीय न्यूनतम वेतन का निर्धारण" किया जाय और यह न्यूनतम वेतन अकुशल मजदूरों का प्रारंभिक वेतन मानकर अन्यान्य श्रेणी के मजदूरों के वेतनक्रम का निर्धारण कार्य-मूल्यांकन और कार्य-विश्लेषण के आधार पर हो। म भत्ता और मूल वेतन अलग-अलग नहीं अपितु सम्पूर्ण वेतन को उपभोक्ता मूल्य सूचकांक से सम्बद्ध करके असली वेतन की सुरक्षा की जाय। मूल्य-वृद्धि ही नहीं, अपितु उत्पादकता वृद्धि के अनुपात में भी मजदूरों के वेतन में वृद्धि की जाय। वेतन वृद्धि के कारण, मूल्य तभी बढ़ते हैं जब वेतन वृद्धि, उत्पादकता वृद्धि से अधिक होती है। किन्तु हमारे देश में किसी भी उद्योग में वेतन वृद्धि उत्पादकता वृद्धि से अधिक नहीं हुई है। जब तक प्रत्यक्ष वेतन जीवन-वेतन के स्तर तक नहीं पहुंच जाता, तब तक "बोनस" को "विलम्बित" तथा "पूरक वेतन" माना जाय। भारतीय मजदूर संघ की घोषणा है—

"देश की रक्षा पहला काम, सबको काम-बांधो दाम।
असली वेतन सबको दो, मूल्यों पर नियंत्रण हो॥"

आय-विषमता समाप्त हो

खेतीहर मजदूर, ग्रामीण तथा वन क्षेत्र के अधिकांश निवासी गरीब हैं। उनकी इस स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार है? क्या आठ सौ या एक हजार रुपये मासिक पाने वाले संगठित क्षेत्र के कर्मचारी अथवा एक हजार करोड़ अथवा १५०० करोड़ रुपये की मिल्कियत जुटाने वाले लोग? स्पष्ट है कि सत्ताधारियों और धनपतियों ने गुपचुप सांठगांठ करके दो

"साम्यवाद" केन्द्रित अर्थनीति का एक अंग है। अतः उसकी नीति भारतीय अर्थव्यवस्था की दृष्टि से अनुपयुक्त ही नहीं, निरर्थक भी है। हमारा लक्ष्य है आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण। आर्थिक सत्ता का केन्द्रीकरण चाहे राज्य के हाथ में हो या व्यक्ति के, आर्थिक प्रजातंत्र को नष्ट करता है। अतएव अर्थव्यवस्था विकेन्द्रित होनी चाहिए।

कम मनुष्यों का उपयोग करने वाली बड़ी मशीनों के द्वारा भी उत्पादन बढ़ सकता है, पर वह हमारे देश के लिए उपयुक्त नहीं है। बड़े पैमाने पर उत्पादन चाहिए, किन्तु बड़ी संख्या में जनसमूह द्वारा।

महात्मा गांधी के शब्दों में "मेरी योजना में प्रत्येक ऐसी मशीन के लिए स्थान है, जो व्यक्ति की सहायता के लिए बनाई गई है। किंतु मेरी योजना में ऐसी मशीन के लिए कोई स्थान नहीं है जो मानव-शक्ति का स्थान ले ले और शक्ति का केन्द्रीकरण कुछ हाथों में कर दे।"

बड़े उद्योग छोटे उद्योगों को, या बड़े कारखाने हस्त-शिल्प उद्योग को यदि नष्ट करते हों तो उन पर भी सीमाएं लगाना आवश्यक है। स्वरोजगार क्षेत्र को खड़ा करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय आय बढ़ती रहने के बाद भी देश में गरीबी बढ़ती ही जा रही है। राष्ट्रीय आय बढ़ने का अर्थ यह नहीं कि चंद लोगों के हाथ में सम्पत्ति केन्द्रित हो। वरन् उसका सही अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति की आय में वृद्धि होना।

हमारे ऋषियों का हमें आदेश है कि "शत हस्त समाहर, सहस्त्र हस्त संकिर"—सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथ से बांटों।

प्राथमिकताओं के निर्धारण का आधार

यदि हम चाहते हैं कि देश समृद्ध हो, समाज के कमजोर वर्ग ऊपर उठें तो इस प्रकार के उपाय ढूंढ़ने होंगे कि ऐसे किसी भी वर्ग की क्रय-शक्ति घटे नहीं, बरन् बढ़ती ही रहे। हमारी यदि यह इच्छा है कि ग्रामीण गरीब वर्ग का जीवन स्तर ऊंचा उठे, उसे दो जून का भोजन मयस्सर हो, तो भूमि-सुधारों और भूमि आवंटन के साथ-साथ छोटे-छोटे घरेलू उद्योग बड़े पैमाने पर आरंभ करने होंगे तथा सहकारी समितियों के जाल बिछाकर ग्रामीण गरीबों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने होंगे। कारखानों का स्थान घरों को देना होगा। उद्योगों का अधिक से अधिक विकेन्द्रीकरण करके अधिकाधिक लोगों का काम देने होंगे। आर्थिक विकास की धारा को नगरों के बजाय ग्रामों की ओर मोड़ना होगा। उत्पादन बढाते हुए भी शोषण और मुनाफाखोरी पर कड़े प्रतिबन्ध लगाने होंगे। निर्धनों को सामने रख कर प्राथमिकताएं निर्धारित करनी होंगी। कम से कम समय में समाज के अधिक से अधिक

पैमाने पर पनपने वाला कालाधन भारतीय अर्थव्यवस्था और राज्य व्यवस्था की सबसे गंभीर समस्या बना हुआ है।

विदेशी सहायता

विदेशी सहायता के नाम पर प्राप्त होने वाले अनुदानों और ऋणों से, जिसमें शर्त जुड़ी रहती है, न केवल विदेशियों को राजनैतिक सद्भाव प्राप्त होता है, वरन् अपने माल के लिए उन्हें बाजार भी हासिल होता है। दाता देश की सहायता तात्कालिक रूप से ग्रहिता देश की क्रय-शक्ति बढ़ाती है ताकि वे अपने दरवाजे पर सफेद हाथी बांधने में समर्थ हो जायें। दाता देश, जो विदेशी मुद्रा देता है, उसका अधिकांश भाग उसी देश में खर्च करना होता है। चाहें या न चाहें, उस देश के तकनीकी सलाहकार भी रखने पड़ते हैं, जो उसी सहायता राशि से बड़ी मात्रा में वेतन पाते हैं। इस प्रकार सहायता का एक बड़ा भाग दाता देश में पहुंच जाता है। फिर जो मशीन आती हैं, उसे चालू रखने के लिए कच्चा माल और कलपुर्जे भी आयात करने पड़ते हैं। एक सीमा के बाद, न चाहें तो भी, पुर्जों के पार्टस के लिए नए सिरे से सहायता लेनी पड़ती है और अपनी गर्दन और अधिक फंसाने के लिए बाध्य होना पड़ता है। अतः हमें सर्वप्रथम ऐसा प्रयास करना चाहिए कि इस विदेशी सहायता और ऋण से जल्दी ही मुक्ति मिल सके।

जीविकोपार्जन की सुविधा

किसी व्यक्ति को काम पाने की ही नहीं, काम चुनने की भी स्वतंत्रता हो, साथ ही वह जीविकोपार्जन हेतु पर्याप्त भी रहे। काम के बदले राष्ट्रीय आय का न्यायोचित भाग यदि व्यक्ति को नहीं मिलता तो उसकी गणना भी "बेरोजगार" में होनी चाहिए। व्यक्ति सदैव काम नहीं कर सकता। बालक, वृद्ध, रोगी और अपंग को उत्पादन कार्य में असमर्थ होते हुए भी खाने का अधिकार है। भारतीय मजदूर संघ का नारा है "कमानेवाला खिलायेगा" और "खानेवाला कमायेगा"।

आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण

एक ओर पूंजीवाद ने "भीषण विषमता, गरीबी, बेकारी, अन्याय, एकाधिपत्य, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद" आदि को जन्म दिया है तो दूसरी ओर घृणा में से उत्पन्न, हिंसा में पल्लवित एवं पुष्पित साम्यवाद ने ऐसे "सर्वाधिकारवादी राज्य" को जन्म दिया है, जिसमें व्यक्ति राज्य रूपी विशाल यंत्र का उपकरण मात्र बनकर रह गया है।

हमें सम्पूर्ण मानव-जीवन का विचार करके उत्पादन, वितरण और उपभोग को एक इकाई मानकर चलना है। उत्पादन और उपभोग के केवल अधिकार ही नहीं, मर्यादाएं भी हैं।

तर्कशुद्ध सिद्धांत के साथ-साथ उसकी पूर्ति हेतु साधन शुचिता भी श्रावश्यक है। हम कठमुल्लापन श्रौर यथास्थितिवाद के पोषक नहीं, विवेक युक्त, सचेत, सामाजिक कार्यकर्ता हैं। "बचे रहेंगे तो फिर से लड़ेंगे" इस भाव को भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। दो बुरी बातों में से यदि एक को चुनना ही है तो किसी को न चुनने के स्थान पर, कम से कम बुरी बात का चयन करना चाहिए। श्रकर्मण्य श्रौर निष्क्रिय रहकर श्रनुशासन का पालन करने का ढोंग नहीं करना चाहिए।

अनुशासनहीनता

हम चाहे जो करें, जहां चाहें वहां जायें या न जायें, मन चाहा व्यय करें, हमसे कोई पूछे नहीं, हमें कोई टोके नहीं, ऐसे सभी कार्यकलाप स्वच्छंदता के हैं, श्रौर ये सभी श्रनुशासन-हीनता की श्रेणी में श्राते हैं। श्राज सामाजिक कार्यकर्ता की मनःस्थिति ऐसी बनती जा रही है कि जब तक उसके मन के श्रनुकूल बातें होती रहेंगी, तब तक वह श्रनुशासित सिपाही की भांति व्यवहार करेगा, किन्तु जैसे ही उसकी इच्छा के विपरीत निर्णय हुश्रा कि वह विरोध करने श्रथवा तटस्थ बने रहने की मनःस्थिति में श्रा जाता है। कुछ कार्यकर्ता दूसरों के लिए तो श्रनुशासन का उपदेश देते हैं श्रौर वे श्रनुशासन का पालन करें ऐसी श्रपेक्षा भी रखते हैं, किंतु स्वयं को उस दायरे से मुक्त मान लेते हैं। इतना ही नहीं, कभी-कभी उस दायरे से श्रपने को ऊपर समझ लेते हैं। कुछ लोग ऐसा भी सोचते हैं कि मैं तो रात-दिन इस सार्वजनिक संस्था का काम करता हूं, मेरे लिए कैसा नियम श्रौर कैसा श्रनुशासन? इस प्रकार स्वाभाविक ही श्रपनी कर्मठता के पीछे श्रपने श्रहंकार का गुणगान करके दूसरों पर श्रपनी गलत-सही बातों को लादने का प्रयास करते हैं श्रौर उसकी दुहाई देकर मनचाही बातों की पूर्ति करते हैं। कुछ कार्यकर्ता ऐसे भी होते हैं जो संगठन श्रौर संस्था में श्रपने प्रभाव का उपयोग श्रपनी इच्छा एवं स्वार्थपूर्ति के लिए ही करते हैं। कुछ लोग संगठन श्रौर संस्था की नाजुक स्थिति श्रौर उसकी मजबूरी का लाभ उठाने का भी प्रयास करते हैं। कुछ लोग संस्था के महत्वपूर्ण पदों की सुविधाश्रों का उपभोग करने के लिए ही श्रपनी शक्ति लगाते हैं। कुछ ऐसे भी होते हैं जो यह कहते हैं कि पूरी सत्ता श्रौर समूचा श्रधिकार मिलने पर ही मैं संस्था का काम करूंगा तथा ऐसे भी बहुत से कार्यकर्ता होते हैं जो सफलता मिलने पर उसका सम्पूर्ण श्रेय स्वयं को देते हैं श्रौर श्रसफलता के लिए दूसरों को जिम्मेदार ठहराते हैं। इस प्रकार की सभी बातें श्रनुशासनहीनता की श्रेणी में श्राती हैं।

हमारी एक सीमा है। श्रपनी उस सीमा को ध्यान में रखकर श्रपने लचीले श्रनुशासन की पूर्ति हेतु हमें सन्नद्ध रहना है।

थोथे नारे और भ्रामक विचार

हम जो नारे लगाते हैं, बोलते हैं बतलाते हैं, उन सभी का समाज पर श्रसर पड़ता है तथा कालांतर में उसे श्रद्धा श्रौर विश्वास का स्थान प्राप्त हो जाता है। श्रस्तु, हमें मजदूर

लोगों का जीवन स्तर उठाने की चिंता होगी। उनके जीवन की बुनियादी जरूरतें पूरी कराने की योजना बनानी होगी। आज अपने देश में पैसा अधिक नहीं है, अस्तु, ऐसी योजनाएं हमारे लिए उपयुक्त नहीं होंगी, जिनमें पूंजी ज्यादा लगानी पड़े। हमारे पास श्रम-शक्ति (मैन पावर) की कोई कमी नहीं है, उसका उपयोग होना चाहिए। अर्थात् हमारी योजनाएं धनप्रधान न होकर श्रमप्रधान होनी चाहिए। इससे बेरोजगारी दूर होगी। लोगों की खरीदने की शक्ति बढ़ेगी तथा जनता के पैसे का सही और समुचित ढंग से उपयोग हो सकेगा। देश खुशहाल होगा।

एक शब्द में यदि कहना हो तो हमारी प्रेरणा का आधार मजदूरों में प्रखर राष्ट्र-भक्ति का निर्माण तथा अन्तिम व्यक्ति, निर्धनों को ऊपर उठाने की योजना के दायरे में निहित है।

अनुशासन

भारतीय मजदूर संघ की रीति-नीति और निर्देशों का ठीक ढंग से पालन करना, संगठन के आय-व्यय को ठीक रखना, कार्यसमिति द्वारा उसकी पुष्टि कराते रहना, संगठन के नाम से बैंक खाता खोलना, समय पर प्रतिवर्ष सम्बद्धता शुल्क तथा केन्द्रांश भेजना, विधान के अनुसार कार्यसमिति की बैठक बुलाते रहना, कार्यवाही रजिस्टर में कार्यवाही लिखना समय पर संगठन का चुनाव कराना, मजदूरों की समस्याओं के निराकरण हेतु प्रयास करना, संगठन के कार्यक्रमों के लिए समय देना तथा सदस्यता वृद्धि हेतु सतत् प्रयत्नशील रहना आदि व्यावहारिक बातें पालन हेतु अनुशासन में रखी गई हैं।

अकेले किए गए अपने निर्णय को सबके ऊपर न थोपना, सामूहिक रूप से निर्णय करना, अपनी अच्छी बात को सबकी ओर से आई हुई है, इस प्रकार की स्थिति बनाना, सबके परामर्श को योग्य स्थान देना, किसी की ओर से आए हुए हानिकारक परामर्श की खिल्ली न उड़ाकर समाधान करते हुये उसे टालना, अपनी प्रत्येक छोटी-बड़ी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाना, जबर्दस्ती से, बाध्य करके लादने और थोपने से नहीं, सभी स्वेच्छया स्वीकार करें इसके लिए प्रयत्न शील रहना, "मुझे" नहीं "हमें" की पूर्ति के लिए जुटना है, "मेरा" नहीं, "हमारा" यह कार्य है। "मैंने" नहीं "हम" सभी ने यह तय किया है, इस प्रकार की भावना बनाकर रखने हेतु सतत् और सदैव सजग रहना आदि सभी व्यवहार अनुशासन की श्रेणी में आते हैं।

अपना कोई व्यवहार गोपनीय और रहस्यमय नहीं रहना चाहिए। खुली किताब के रूप में हमारा व्यवहार रहे। राम की पत्नी सीता को संदेह से परे रहना चाहिए, इस सामाजिक सत्य को सदैव स्मरण रखना आवश्यक है। उस गली से होकर हमें नहीं गुजरना चाहिए कि हमारे ऊपर लोग अंगुली उठायें। हम सदा न्याय मार्ग पर रहें, किन्तु उसका न्याययुक्त दिखाई देने वाला व्यवहार भी अनुशासन में ही आता है।

एक मोहक नारा और भी है—"दुनिया के मजदूरो, एक हो"। दुनिया के केवल मजदूर ही क्यों दुनिया के मानव क्यों न एक हों ? क्या दुनिया में कोई ऐसा मजदूर हो सकता है जो अपने गैर-मजदूर पत्नी और गैर-मजदूर बच्चे से अलग रहना चाहता हो ? यदि नहीं, तो उसका परिवार उसके साथ क्यों न "एक हो"। केवल मजदूर-मजदूर ही आपस में एक क्यों हों ? कोई भी मजदूर अपने आपको अपने देश, राष्ट्र और समाज से अलग नहीं रख सकता। उनके दुःख-सुख, देश और समाज के ही दुःख-सुख हैं। फिर ऐसे व्यर्थ के नारे लगाने से क्या लाभ है ?

हां, इस नारे का लाभ उन लोगों के लिए अवश्य है, जो मजदूर को उसके देशवासियों और उसके समाज से अलग रखना चाहते हैं। पंचमांगी तथा गद्दार बनाकर अपने एजेंट के रूप में उसका उपयोग करना चाहते हैं। उनमें स्वदेश और स्व-समाज के प्रति नफरत पैदा करके विदेशों के प्रति प्यार जगाना चाहते हैं। मजदूर और गैर-मजदूर का भाव जगाकर देश को कमजोर करना चाहते हैं तथा अपने एक विशिष्ट "इज्म" (वाद) के माध्यम से विदेशी साम्राज्य स्थापित करने हेतु उसको हथियार बनाना चाहते हैं।

अतः इस नारे के माध्यम से चलने वाले इस घृणित कुचक्र के प्रति हम सावधान रहें तथा इसे सर्वदा के लिए दफना दें।

"हमारा सिद्धान्त—वर्गसंघर्ष" का नारा भी बहुत सुनाई पड़ता है। किसी भी देश में केवल मजदूर और मालिक ही नहीं, अपितु करोड़ों-करोड़ों की संख्या में अन्य समुदाय के लोग भी निवास करते हैं। "हेव्स" और "हैव नाट्स" के तथाकथित दो वर्गों की परिभाषा में जो मजदूर नहीं हैं, ऐसे गरीब लोग कहां, किस श्रेणी में रखे जायेंगे ? नाई, धोबी, मोची तथा खुमचा लगाने वाले आदि किस श्रेणी में आयेंगे ? क्या ये "हैव्स" है ? यदि नहीं, तो संघर्ष किससे है ? कौन इनका मालिक है ? क्या समाज केवल दो वर्गों में ही बंटा है ? टाटा-बिड़ला से लेकर भूख से पीड़ित होकर फूटपाथों पर दम तोड़ देने वाले निर्धन लोग क्या ऐसे वर्गों में ही बंटे हैं ? विषमता की कई सीढ़ियां और उसकी सैकड़ों श्रेणियां हैं। ये पापतुल्य विषमताएं अवश्य समाप्त होनी चाहिए। पर वर्ग तथा वर्गसंघर्ष से इसका कोई संबंध नहीं है। देश के दायरे में सभी एक वर्ग के हैं। भारतमाता के सभी सुपुत्र हैं। कोई किसी का दुश्मन नहीं है।

एक मजदूर है। उसके पास छोटा-सा ही क्यों न हो, अपना घर भी है। क्या वह आठ घंटे "हैव नाट्स" की ओर से संघर्ष करेगा और शेष सोलह घंटे "हैव्स" की ओर से ? दो वर्गों की लड़ाई कहीं पर भी नहीं है। जहां भी शोषण होगा, विषमता होगी, अन्याय रहेगा संघर्ष अवश्यभावी होगा : संघर्ष होना भी चाहिए। अस्तु, दो वर्ग तथा वर्गसंघर्ष की कल्पना, एक मिथ्या कल्पना है।

"हर जोर-जुल्म के टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है" को लीजिए। किसी भी अन्याय के विरुद्ध जेहाद करना परम कर्तव्य है। पर वह जोर-जुल्म किस प्रकार का है ? जोर-जुल्म

क्षेत्र में चलने वाले कतिपय भ्रामक नारों, धारणाओं और मान्यताओं के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए।

"हमारी मांगें पूरी हो—चाहे जो मजबूरी हो" इस नारे को लगाकर हम अपनी सही और न्यायपूर्ण मांगों की पूर्ति की कौन कहे, उसके विपरीत मजबूरी का खराब तर्क देकर उसे असफल बना देते हैं। मजबूरी में भला किसी की मांग क्यों पूरी होगी? होनी भी नहीं चाहिए। अगर विदेशी आक्रमण हो, सूखा, बाढ़, अकाल हो अथवा इसी प्रकार की अन्य आपदायें हों तब हमारी मांगें कैसे पूरी होंगी? इस नारे के लगाने से समाज के मन पर यह प्रभाव पड़ता है कि मजबूरी में भी मजदूर वर्ग अपनी मांगें पूरी करने की मांग कर रहा है, उसे केवल अपनी मांग से मतलब है, दुनिया चाहे रहे या न रहे। अस्तु, यह नारा ठीक नहीं है। हम किसी भी मजबूरी की अवस्था में अपनी मांग नहीं रखना चाहते। यह स्पष्ट रहना चाहिए कि हमारी मांगें न्यायपूर्ण हैं, हम न्यायपूर्ण मांग कर रहे हैं। समाज, सरकार और उद्योग का कर्त्तव्य है कि हर प्रकार से वह हमारी न्यायपूर्ण मांगों की पूर्ति करावे। न्यायपूर्ण मांगों में "मजबूरी" के लिए कोई स्थान नहीं है। अपनी न्यायपूर्ण मांगों के साथ मजबूरी के इस नारे को जोड़कर प्रकारान्तर से अपने एक अच्छे मामले को हम एक कमजोर वकील के हवाले सौंप देते हैं।

"कमानेवाला खायेगा"—का नारा जितना आकर्षक है उतना ही तथ्यहीन भी है। यह न भूलें कि कमानेवाला तो सदैव दूसरे के लिए ही कमाता है। एक फकीर, एक साधु अथवा एक अकेला आदमी (परिवार रहित) कभी कमाने की चिंता नहीं करता। किसी आदमी को कमाने की आवश्यकता तभी पड़ती है जब वह अकेला नहीं रहता। उसके मां-बाप हैं, पत्नी और बच्चे हैं, तभी वह कमाने की ओर उन्मुख होता है। अर्थात् वह परिवार के उन सदस्यों, के लिये जो बूढ़े हैं, बच्चे हैं, काम नहीं कर सकते, कमाता है। कोई भी समाज, कैसा भी हो, उसमें स्वाभाविक ही कमोवेश अपाहिज और अपंग, अस्वस्थ और कमजोर, बूढ़े और बच्चे रहेंगे ही, साथ ही काम न पाने के कारण बेकार भी रहेंगे। जो कमा नहीं सकते, क्या उन्हें भूखों मरने के लिए छोड़ देना चाहिए? यदि नहीं, तो ऐसे नारे हम क्यों लगाएं? हमारा नारा होना चाहिए "कमाने वाला खिलायेगा", "खानेवाला कमायेगा"।

इसी तरह एक नारा है "इन्कलाब जिन्दाबाद"। अंग्रेज तो चले गए। आज हम किसका तख्ता उलटना चाहते हैं? किस क्षेत्र में इन्कलाब करना है, हमें यह पता नहीं है। मात्र जोरशोर से नारे लगाकर हम इन्कलाब की इति श्री कर देते हैं। जब हम अपना जनतंत्र छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं, अपने प्राणों से प्रिय धर्म, संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवाज तथा परम्परा के विरुद्ध जाने के अभिलाषी नहीं हैं तो क्यों इन्कलाब का नारा लगायें? इन्कलाब का अर्थ है आज के हमारे सब सिद्धांत समाप्त हों और उनके स्थान पर उसके ठीक विपरीत कोई दूसरा विकल्प स्थापित हो। यदि हम ऐसा नहीं चाहते तो गुमराह करने वाले नारे कभी न लगाएं।

वह असली वेतन तथा जीवन-वेतन दोनों से वंचित है। कम पाने वाले तथा उससे कुछ अधिक पाने वाले दोनों के वेतन में बढ़ोत्तरी होना शेष है। अर्थात् एक के वेतन में अधिक बढ़ोत्तरी होना है तथा दूसरे के वेतन में उससे कम बढ़ोत्तरी होना अपेक्षित है।

अतः वेतन की विषमता नहीं, अपितु आय की विषमता समाप्त होने की मांग हमें करनी है। अपने देश में एक ओर टाटा-बिड़ला जैसे धनपति हैं तो दूसरी ओर जंगलों, ग्रामों तथा शहरों के फूटपाथों पर जीवन यापन करने वाले आवश्यक वस्तुओं से वंचित गरीब वर्ग है। इन दोनों के बीच में हजारों गुणों का अंतर है। वास्तव में इस विषमता को समाप्त करने की आवश्यकता है। मजदूर-मजदूर तथा गरीब-गरीब के बीच की विषमता का कोई विशेष अर्थ और महत्व नहीं है।

अतः हमारा यह कर्तव्य है कि इस प्रकार के गुमराह करने वाले नारों और मान्यताओं को समाप्त करने का प्रयत्न करें।

आर्थिक लोकतंत्र

"लोकतन्त्र का जब हम नाम लेते हैं तो उसका अर्थ लोग राजनीतिक लोकतन्त्र अर्थात् शासनतंत्र से संबंधित प्रक्रिया को ही समझकर चलते हैं। वास्तव में सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र से ही राजनैतिक लोकतंत्र सुरक्षित रहकर विकसित होगा। उसके अभाव में राजनैतिक लोकतंत्र के संकट में पड़ जाने का खतरा बना रहेगा।

आर्थिक लोकतंत्र में व्यक्ति को काम की गारन्टी, शोषण, विषमता और अन्याय से मुक्ति' पाने की स्वतंत्रता और अधिकार निहित है। काम जीविकोपार्जन योग्य हो, तथा व्यक्ति को उसे चुनने की स्वतंत्रता रहे। जैसे राजनीतिक प्रजातंत्र का निष्कर्ष है, प्रत्येक व्यक्ति को मताधिकार, उसी प्रकार आर्थिक लोकतंत्र का मानदण्ड है प्रत्येक व्यक्ति को उसकी रुचि के अनुसार जीविकोपार्जन योग्य काम का अधिकार। व्यक्ति को काम के स्थान पर लाने के बजाय काम को व्यक्ति तक पहुंचाया जाय, और जनसमुदाय के लिए विशाल पैमाने पर उत्पादन की जगह विशाल जनसमुदाय के द्वारा अधिकतम उत्पादन करवाया जाय।

आर्थिक लोकतंत्र का तात्पर्य है उद्योगों का अधिकाधिक विकेन्द्रीकरण और अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिलना। आर्थिक विकास और अवसर की धारा को नगरों की ओर से ग्रामों की ओर मोड़ा जाये। इसके लिए एक व्यापक सामाजिक-आर्थिक क्रांति अथवा आंदोलन की आवश्यकता होगी। क्योंकि ७० करोड़ की जनसंख्या में अब तक केवल तीन करोड़ ही उसका लाभ उठाते आ रहे हैं। नौकरशाही और धनाढ्य वर्ग ने आपस में सांठगांठ करके गरीबों को खूब लूटा है। ये लोग चुपके-चुपके इस देश की राजसत्ता को पैसे के बल से खरीदकर अपने अनुकूल बनाने का षड्यंत्र करते रहते हैं। उनके ये जहरीले दांत केवल राजनैतिक आंदोलन से नहीं टूटेंगे। इसके विरुद्ध आर्थिक और सामाजिक आंदोलन भी करना होगा।

का स्तर क्या है ? संघर्ष करने योग्य जोर-जुल्म है या नहीं ? क्या संघर्ष करने के पूर्व उस जोर जुल्म के निवारणार्थ हमने अन्य उपाय एवं प्रयास कर लिए हैं ? वार्ता के, समझौते के, न्याय के तथा सरकार आदि के सभी दरवाजे हमने खटखटा लिए ? यदि हां, तो उस जोर-जुल्म के विरुद्ध आखिरी हथियार के नाते संघर्ष और हड़ताल का सहारा लेना ही इष्ट है । अतः होना यह चाहिए कि "हर जोर-जुल्म के टक्कर में संघर्ष आखिरी नारा" है ।

कुछ लोग कहते हैं "आंदोलन और हड़ताल से उत्पादन घटता है ।" समाज का एक वर्ग मजदूर-जगत से सदैव उत्पादन तथा उत्पादन वृद्धि की ही अपेक्षा रखता है, और वह चाहता है कि मजदूर कभी आंदोलन और हड़ताल न करें । हड़तालों पर सदा-सर्वदा के लिए रोक लगाने का भी उसका प्रस्ताव रहता है । ये लोग केवल एकपक्षीय विचार रखते हैं । दूसरे पक्ष की ज्यादतियों के विरुद्ध कुछ कहने तक का भी साहस नहीं रखते । मजदूरों के साथ हो रहे अन्याय, शोषण और उत्पीड़न के परिमार्जन की इनके पास कोई उपाय योजना भी नहीं है । ऐसी स्थिति में हड़ताल और आंदोलन से मजदूर विरत कैसे रह सकता है ? क्या कानूनी रोक लगाने से वह हड़ताल करना छोड़ देगा ।

जिस देश का मजदूर अन्याय के परिमार्जन के लिए संघर्ष करने की क्षमता नहीं रखता, वह काम करने की भी ताकत नहीं रख सकता । बुजदिल मजदूर न केवल संघर्ष करने में अक्षम रहता है, अपितु काम करने में भी अयोग्य, अकुशल और शिथिल रहता है । जुझारू मजदूर ही खतरा मोल लेकर बड़े से बड़ा काम कर सकता है, कष्ट उठाता है और उत्पादन बढ़ाता है । आंदोलन और हड़तालों पर रोक लगाने से मजदूर या तो अन्याय को सहते-सहते बुजदिल और कायर हो जायेगा अथवा अन्याय के विरुद्ध भीषण प्रतिहिंसा से ग्रस्त होकर गोपनीय मार्गों का अवलम्बन करके खूनी अराजकता के लिए सन्नद्ध हो जायेगा ।

अतः अन्याय के परिमार्जन हेतु जनतंत्र में शांतिपूर्ण आंदोलनों और हड़तालों की भारी अहमियत है । उस पर रोक लगाने का विचार करना खूनी अराजकता को निमंत्रण देना है

"वेतन विषमता समाप्त हो", यह नारा जितना मासूम और निरीह दिखाई देता है।, उतना ही निरीह लोगों के लिए दुःखदायी भी है । किसी भी प्रकार के कर्मचारी को चाहे वह छोटा हो, या बड़ा, निजी उद्योग का हो अथवा सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र का, असंगठित क्षेत्र का खेतिहर मजदूर हो अथवा संगठित क्षेत्र का या बैंक का बाबू हो, जब उसे तीस वर्षों (अब चालीस) की आजादी के उपरांत भी आज जीवन निर्वाह योग्य वेतन नहीं दिया जाता है, और न आवश्यकता पर आधारित न्यूनतम वेतन ही दिया जाता है, तो ऐसी स्थिति में इस नारे को लगाने का कोई औचित्य नहीं है विषमता को कम करने की बात तो उन्हीं दो धुरियों के मध्य उठ सकती है, जिसमें एक येन-केन-प्रकारेण अनुचित रूप से अधिक सुविधा प्राप्त कर रहा होता है । यहां तो दोनों ही कम पाने वाले अर्थात् अभावग्रस्त वर्ग के हैं । दोनों को ही समुचित और न्यायिक सुविधा नहीं मिल रही है । विषमता को कम करने के नाम पर किसी के वेतन को कम नहीं किया जा सकता और इस स्थिति में तो हरगिज ही नहीं, जबकि

आज आवश्यकता इस बात की है कि उनमें अलग-अलग पूर्जे और अलग-अलग पार्ट अलग-अलग स्थानों पर बनने चाहिए तथा उनको कसने और जोड़ने का कार्य भी अलग ही रखना चाहिए।

आजादी से पूर्व गांधी जी ने कहा था, "जब अंग्रेज चले जायेंगे तब हम बचे हुए संसाधन और धन से अपनी आर्थिक व्यवस्था सुधार लेंगे"। आगे उन्होंने स्पष्ट करते हुए बताया था कि सबसे निचले वर्ग को ऊपर उठाने के लिए उस बचे हुए धन और संसाधन को लगायेंगे तथा ऊपर वालों से हाथ जोड़ लेंगे। किन्तु आजादी के बाद इसके विपरीत किया गया। सारा संसाधन और धन ऊपर वालों के लिए लगाया गया और नीचे वालों से हाथ जोड़ लिया गया।

बहुद्देशीय निगम एवं विदेशी सहयोग

हमारे देश के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियां कोढ़ के सदृश हैं। केवल कोका-कोला और आई० बी० एम० पर रोक लगाने अथवा ५२ कम्पनियों पर वित्तीय बंधन लगा देने मात्र से विदेशों द्वारा देश का दोहन नहीं रुकेगा। अभी भी अपने देश में लगभग ८०० विदेशी निजी कम्पनियां विद्यमान हैं। इसी मात्रा में तकनीकी सहयोग भी सम्मिलित है। इनकी कुल सम्पत्ति तीन हजार करोड़ है तथा पिछले दस वर्षों में (वर्ष १९६५ से १९७६ तक (सात सौ करोड़ लाभांश और रायल्टी, तकनीकी फीस आदि के रूप में विदेशों को भेजा जा चुका है।

ये बहुद्देशीय निगम हमारा न केवल आर्थिक शोषण करते हैं वरन् देश की राजनीति को भी अपने ढंग से चलाने की कोशिश करते हैं। इतना ही, नही, वे हम पर अनुचित शर्तें थोपते हैं, आयात करों से छूट लेते हैं, महंगी दर पर आवश्यक मशीनरी और कच्चा माल स्रोत-विशेष से ही खरीदने के लिए बाध्य करते हैं। उनके विशाल आर्थिक साधन तथा उच्च-स्तरीय तकनीक को देखकर हमें उनकी अनुचित शर्तें स्वीकार करनी पड़ती हैं। उनकी तकनीक "पूंजी आधारित" होने के कारण रोजगार की संभावनाएं बहुत कम होती है। इस कारण हम अपने देश की बेरोजगारी का भी समाधान नहीं कर पा रहे हैं। हमारी अर्थ-व्यवस्था अभी भी विदेशों पर आधारित है। जब तक इन्हें छुट्टी नहीं दे दी जाती, तब तक ये विदेशी जो कि भारतमाता का रक्तपान करती रहेंगी।

सार्वजनिक क्षेत्र

हमारे देश का दुर्भाग्य है कि सार्वजनिक क्षेत्र घाटे पर चल रहे हैं। कुछ उद्योग तो बड़े-बड़े अधिकारियों और सत्तारूढ़ नेताओं के चारागाह के रूप में काम कर रहे हैं। निजी उद्योगों से भी अधिक पूंजी उन पर लगी हैं। राष्ट्रीय सम्पत्ति का वे किस प्रकार दुरुपयोग करते हैं, यह जानकर सभी को कष्ट होगा। निजी क्षेत्र का सबसे अधिक सम्पत्ति का टाटा स्टील भी उनके मुकाबले ग्यारहवें स्थान पर है।

एकाधिकार न हो

जिस प्रकार एक स्थान पर आर्थिक अथवा राजनीतिक सामर्थ्य का केन्द्रीकरण प्रजातंत्र के लिए घातक है, उसी प्रकार एक व्यक्ति या संस्था के पास किसी भी प्रकार का एकाधिकार आना भी घातक है। राजसत्ता और अर्थसत्ता जितनी अधिक मात्रा में सरकार के हाथों में केन्द्रित होगी, आर्थिक और सामाजिक समानता का नारा उतना ही असफल रहेगा। गरीबी बढ़ती ही रहेगी। देश के भाग्य निर्माण के कार्य में सम्पूर्ण समाज की सहभागिता के स्थान पर मुट्ठी भर लोग स्वयं को देश मानकर मनमाने ढंग का निर्णय एवं व्यवस्था करते रहेंगे। कहा गया है "सत्ता भ्रष्ट करती है, और सम्पूर्ण सत्ता पूर्ण रूप में भ्रष्ट करती है।" "मैं स्वामी हूं और तुम मेरे दास हो", यह भावना पैदा होती है। आर्थिक शक्ति को राज्य की अधीनता से दूर रखा जाय और सम्पत्ति के उत्पादन करने वाले को राज्यसत्ता से वंचित रखा जाये। इस प्रकार इन दोनों शक्तियों को एक दूसरे से अलग रखना चाहिए। पूंजीवाद और साम्यवाद से इसका समाधान संभव नहीं है। एक में "व्यक्ति" समाज का शत्रु हो रहा है तो दूसरे में "समाज" व्यक्ति का। उद्योग तंत्र की दृष्टि से सामान्यतया हमारे निजी क्षेत्र की अमेरिका पर और सार्वजनिक क्षेत्र की रूस पर पर्याप्त निर्भरता बनी हुई है। इससे भी हमारे लोकतंत्र को बहुत बड़ा खतरा है।

श्रमप्रधान योजनाएं

हमारे देश के लिए बड़े कारखाने और बड़ी परियोजनाएं उतनी हितकर नहीं हैं, जितनी छोटे, लघु और मध्यम कारखाने। बहुत बड़ी विशाल जनसंख्या को काम देने की बेहद आवश्यकता है। हमारे देश के उद्योग-धंधे धनबहुल न होकर श्रमबहुल हों। देश में आज लगभग चार करोड़ शिक्षित युवक बेकार हैं। इनमें वे भी सम्मिलित हैं, जिनकी तकनीकी शिक्षा हुई है। पिछले अनेक वर्षों तक देश के आर्थिक विकास की दर शून्य रही है और बड़े औद्योगिक घरानों की संपदा बीस गुनी हो गई है। देश की साठ प्रतिशत जनता—४० करोड़ की जनसंख्या—गरीबी की सीमा-रेखा के नीचे है। उसे एक जून रोटी मयस्सर हो भी जाय तो पोषण की गुंजाइश नहीं है। देश में भयानक विषमता है। गरीबों को दृष्टि में रखकर योजनाएं बननी और प्राथमिकताएं निर्धारित होनी चाहिए।

भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। लेकिन कृषि और उससे सम्बन्धित उद्योग-धंधों के विकास की ओर जितना ध्यान देने की आवश्यकता थी, उतना ध्यान नहीं दिया गया। इसके स्थान पर भारी और बड़े उद्योग-धंधों को अधिक महत्वपूर्ण माना गया। इस असतुलन के कारण धनी वर्ग अधिक धनी बना तथा उसकी संख्या बढ़ती गई। इसी प्रकार गरीबों की गरीबी तथा ऐसे लोगों की संख्या भी निरंतर बढ़ती गई। जनशक्ति को नियोजिन में खपाने की ओर ध्यान न देने के कारण देश में बेकारी बढ़ने लगी। उपलब्ध कच्चा माल और उपलब्ध श्रमशकित की ओर दुलक्ष्य किया गया। बड़े कारखानों के लिए भी

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी है कि यदि उत्पादन बढ़ भी जाय तो खरीदने वाला कौन है ? बेरोजगार और गरीब आदमी के पास पैसा कहां से आयेगा ? अतः आज न्यूनतम वेतन, न्यायोचित वितरण तथा किसी न किसी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था करने की आवश्यकता है। सबको काम देना समाज और सरकार का काम है। जब तक ऐसा नहीं होता, बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता की व्यवस्था करना आवश्यक और उचित होगा।

उद्योगों के स्वामित्व के प्रकार में भी परिवर्तन करने की आवश्यकता है। उद्योगों के दो प्रकार के मालिक होने चाहिये—एक पैसा लगाने वाला और दूसरा, पसीना लगाने वाला। दोनों ही उद्योग के लिए आवश्यक है। उद्योगों का श्रमिकीकरण होना चाहिए। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक निकालने की शास्त्रीय पद्धति अपनायी जानी चाहिए। मजदूर के परिवार में आश्रित सदस्यों की संख्या, अनिवार्य आवश्यक वस्तुओं की समग्र सूची एवं फुटकर दर पर मूल्य आदि सभी को सामने रखकर, पारिवारिक बजट बनाकर न्यूनतम वेतन निश्चित होना चाहिए। सही अर्थों में सभी संस्थानों और कारखानों में मजदूरों को सभी स्तर पर साझेदारी दी जानी चाहिए। प्रत्येक निर्णय में मजदूरों के प्रतिनिधि के परामर्श को स्थान मिलना चाहिए। संस्थान के प्रत्येक दस्तावेज को देखने और जांच करने का मजदूर को अधिकार होना चाहिए। प्रबंधक और निदेशक मण्डल में मजदूरों के प्रतिनिधि को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

समाजहित सर्वोपरि

विदेशी बहुद्देशीय निगम हों अथवा सार्वजनिक क्षेत्र या निजी उद्योगपति, जब तक उनमें मानव-ममता का भाव नहीं रहेगा उनके द्वारा शोषण होता रहेगा। समाज को हानि पहुंचाकर अपनी भलाई का विचार करना गलत होगा। व्यक्ति अपनी चिंता करने के साथ-साथ समाज की भी चिंता करे, तभी समाज सुचारू रूप से चल सकेगा। व्यक्ति का समर्पण समाज के लिए हो, उसके साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को समर्थ बनाने और विकास करने हेतु सब प्रकार का अवसर और सुविधा प्रदान करने का काम समाज का है। समाज व्यक्तिगत स्वातंत्र्य की रक्षा की गारंटी दे तथा व्यक्ति समाज की इच्छा का स्वेच्छा से समादर करे। अधिकार व्यक्ति को इसलिए दिये जाते हैं कि उनके द्वारा वह अपने सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्वाह कर सकें। व्यक्ति को सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार इसलिए मिले हैं कि वह अपने कर्त्तव्यों का पालन करे, न कि सम्पत्ति का उपयोग शोषण करने और अय्यासी करने में करे।

जीविका के साधनों का प्रयोग करने पर जो सम्पत्ति एकत्रित होती है, वह समाज की है, अपना उपभोग बढ़ाने के लिए नहीं है। अधिक से अधिक भौतिक सम्पत्ति का अर्जन करे, धनार्जन करे, किन्तु उपभोग पर अंकुश लगाये। उत्पादन बढ़ाते हुए भी शोषको और मुनाफाखोरों पर कड़ा प्रतिबंध लगाया जाय। हमारा अधिकार उतना ही है जितने में हमारे और हमारे परिवार की न्यूनतम आवश्यकताएं पूर्ण होती हैं तथा जीवन की बुनियादी जरूरत मुहैय्या हो सकती हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र और समाज एक इकाई है और उसके अंग-उपांगों का संबंध वैसा ही है जैसा कि शरीर के अंगों का। पैरों में कांटा चुभता है तो सम्पूर्ण शरीर में

इन उद्योगों के बारे में संगठनात्मक समस्या व्यावहारिक रूप से यह है कि अत्याधिक अंकुश लगाने से निदेशक मण्डलों के उत्साह में कमी आने का भय रहता है तथा छूट देने से वे इतने गैर-जिम्मेदार हो जाते हैं जिसकी कोई सीमा नहीं होती।

भारत सरकार को बिना किसी "इज्म" के चक्कर में पड़े इस समस्या पर गंभीरता से विचार करके इसके निराकरण के लिए शीघ्र कोई ठोस कदम उठाने चाहिए, क्योंकि राष्ट्रीयकरण अर्थात् सरकारीकरण में भी वे सभी दोष विद्यमान हैं, जो पूंजीवाद में है।

अतः सार्वजनिक क्षेत्र के काम में लगे हुए कर्मचारियों को प्रबंध मण्डलों और निदेशक मण्डलों में साझेदारी देकर इस समस्या को हल करने का उपाय ढूंढना चाहिए।

उद्योगपति और धनपति

हमारे देश में एक ओर निकृष्ट एवं छलपूर्ण कार्य चलाया जा रहा है, जिसमें "गरीबी हटाओ" का नारा लगाकर तथा "समाजवाद" लाने का स्वप्न दिखाकर बड़े-बड़े उद्योगपतियों को सम्पत्ति एकत्रित करने की छूट दी गई हैं। बीस औद्योगिक घरानों में देश की निजी सम्पत्ति का तीन चौथाई धन सीमित होकर रह गया है। उनके पास लगभग पांच हजार करोड़ रुपये की सम्पत्ति एकत्रित हो चुकी है। जिन आर्थिक साधनों का उपयोग इस धनी वर्ग के ऐश-आराम के सामान जुटाने के लिए किया गया है, अगर वे साधन ग्रामीण और कुटीर उद्योगों में लगाए गए होते तो आज इस देश की स्थिति कुछ और ही होती। आज भी उद्योगपति को चिंता इस बात की रहती है कि वह अधिक से अधिक लाभ किस प्रकार से कमा सकता है। उसे न देश और समाज से किसी प्रकार का वास्ता है और न उद्योग में अधिक से अधिक लोगों को काम देने की। गांधी जी के ये शब्द "लखपतियों और पूंजीपतियों के बिना देश का काम शायद चल भी जाए, मगर मजदूरों के बिना कभी भी देश का काम नहीं चलेगा", आज भी मनन एवं अनुसरण करने योग्य है। सभी आर्थिक हितपक्षों के गोलमेज सम्मेलनों द्वारा शोषण और एकाधिपत्य स्थापित करने वाले इन लोगों पर अंकुश लगाने की महती आवश्यकता है।

श्रमिक

भारत में प्रशिक्षित वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, डाक्टरों एवं अन्य व्यवसायों से संबंधित कुशल कर्मचारियों को उनकी योग्यता और रुचि के अनुरूप कार्य उपलब्ध नहीं है। नियुक्तियां भी योग्यता के आधार पर न होकर शिफारिस और पहुंच के आधार पर होती है। देश में कुशल, अर्धकुशल एवं अकुशल कर्मियों को काम मिलना कठिन हो गया है। बेरोजगारी की समस्या इतनी जटिल हो चुकी है कि काम में लगे हुए कर्मचारियों को भी उचित वेतन नहीं मिलता, अर्ध-वेतन या कम वेतन पर नियुक्तियां होती है।

मई दिवस क्या है ?

"मई दिवस" श्रमिक एकता का प्रतीक नहीं, अपितु श्रमिक फूट का प्रतीक है। इस दिन के आधार पर दुनिया के दो बड़े श्रमिक संगठन मजदूरों को हस्तक बनाकर एक दूसरे को समाप्त करने के लिए संघर्षरत हैं।

"दुनिया के मजदूरों एक हो" की इस दिन घोषणा करने वाले यह बात भूल जाते हैं कि श्रमिक जिस समाज का स्वभावतः अंग है, उसके प्रति अपना सहज झुकाव, आसक्ति और भक्ति को अपने हृदय से कैसे निकाल फेंकेगा ? किसी भी देश के नागरिकों को केवल मजदूर और गैर-मजदूर, दो हिस्सों में ही नहीं बांटा जा सकता है ? क्या मई दिवस पर किसी भी देश में अथवा अपने ही देश के दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई और कानपुर आदि स्थानों में विभिन्न श्रम-संगठनों द्वारा एक ही पार्क में अलग-अलग स्थान पर आयोजित रैलियों में "दुनियां के मजदूरों एक हो" का नारा स्वयं को धोखा देने वाला नहीं है ? जब एक ही पार्क एवं एक ही शहर के मजदूर एक मंच के नीचे एकत्रित नहीं हो सकते तो किसको बहकाने अथवा धोखा देने हेतु इस व्यर्थ के नारे को लगाया जाता है ?

स्पष्ट है संसार के विभिन्न देशों में अपने एजेंट और पंचमांगी पैदा करने हेतु वहां के भोले-भोले मजदूरों को बहकाकर राष्ट्रद्रोही बनाने के लिए "दुनिया के मजदूरों एक हो" तथा "मई दिवस—जिन्दाबाद" के नारों का प्रयोग किया जाता है।

मई दिवस को जन्म देने वाला देश अमेरिका भी अपना श्रम दिवस सितम्बर मास के प्रथम सोमवार को मनाता है। ग्रेट ब्रिटेन भी पहली मई को नहीं, अपितु उसके बाद में पड़ने वाले प्रथम रविवार को श्रम दिवस मनाता है। एक प्रकार से विश्व के देशों में रूसपंथियों ने ही इस दिवस के माध्यम से मजदूरों में फूट डालने, देशवासियों को मजदूर और गैर-मजदूर जैसे दो भागों में बांटने तथा दो वर्ग बनाकर राष्ट्र को समाप्त करने का माध्यम बनाया हुआ है।

वे मानते भी हैं कि विश्वव्यापी मार्क्सवादी आंदोलन को सबसे बड़ा खतरा प्रखर राष्ट्रवाद से है। किन्तु उन्हें राष्ट्रवाद त्याज्य है ऐसी बात नहीं। वे चाहते हैं कि रूस में तो वह प्रखर मात्रा में रहे, परन्तु और कहीं न रहे। इसके लिए वह निगरानी तक रखते हैं। उन्हें यह प्रवृत्ति न चेकोस्लोवाकिया में सहन हुई, न चीन और न अन्य देशों में। इसी प्रकार चीनी मार्क्सवादी भी चीन में राष्ट्रवाद चाहता है।

रूस में साम्यवादी शासन के बाद भी आज न मजदूरों के हाथ में कारखाने हैं, न किसानों के हाथ में खेत। वहां न विचार स्वातंत्र्य है, न श्रमिकों का अपना राज्य, जिसमें आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक सत्ता श्रमजीवी सोवियतों अथवा पंचायतों को हाथों में हो।

दर्द होता है। "वर्ग" नहीं, सम्पूर्ण राष्ट्र एक इकाई है, का भाव उत्पन्न किया जाना बहुत जरूरी है।

उत्पादन वृद्धि और औद्योगिक शांति महत्वपूर्ण है, किंतु इनसे भी बढ़कर महत्व इस बात का है कि बढ़े हुए उत्पादन का लाभ कितनी जेबों में जाता है, इसकी व्यवस्था करनी चाहिए। क्या गरीबी की सीमा-रेखा के नीचे जीवन व्यतीत करने वालों के पास उत्पादन और उत्पादन वृद्धि का लाभ पहुंच पाता है? आज तक ऐसी कोई व्यवस्था ही नहीं की गई। गरीबों के नाम पर वर्ष १९७५-७६ का मजदूरों के बोनस का पचास करोड़ रुपया छीन लिया गया और उसे टाटा, बिड़ला और अन्य उद्योगपतियों को वापस दिया गया। आपत्स्थिति में लगभग १५०० करोड़ रुपये का कालाधन कालाबाजारियों और तस्करों से छीनकर, आयकर अधिकारियों ने सरकार के खजाने में "सफेद धन" के रूप में जमा किया था। क्या उस पैसे का उपयोग गरीब तब के जीवन में खुशहाली उत्पन्न करने के लिए किया गया है?

भारत का श्रम दिवस

हमारा देश गरीब है। रोजगार कार्यालयों में पंजीकृत बेरोजगारों की संख्या लगभग चार करोड़ से ऊपर पहुंच चुकी है। दोनों समय भोजन न पाने वाले लोगों की संख्या लगभग ४० करोड़ है। ९० प्रतिशत अभावग्रस्तों के लिए बनी योजना में निहित स्वार्थी वर्ग के शेष दस प्रतिशत लोग आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने का तरीका निकाल चुके हैं। आजादी के बाद से उत्पादन के साधनों पर सरकार, नौकरशाह तथा उद्योगपति कुण्डली मारकर बैठे हुए हैं। ये साधन इनके पास से गरीब आदमी के पास पहुंचाना टेढ़ी खीर बन चुका है।

उद्योगों का अधिक से अधिक विकेन्द्रीकरण, अधिक से अधिक लोगों को काम, आर्थिक धारा को नगरों के बजाय ग्रामों की ओर मोड़ने तथा उत्पादन बढ़ाते हुए भी शोषण और मुनाफाखोरी आदि पर कड़े प्रतिबंध लगाने जैसी नीतियों को कैसे क्रियान्वित किया जायेगा? पूंजी-प्रधान नहीं, श्रम-प्रधान योजनाएं बनाने, उद्योगों को घर-घर पहुंचाने तथा उत्पादन को स्वतंत्र साधन बनाकर असहाय वर्ग को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में देशवासियों में विशेषकर औद्योगिक एवं कृषि क्षेत्र के काम में संलग्न लोगों में कौन-सी प्रेरणा जगानी, होगी?

इसके लिए प्रखर राष्ट्रवाद, समर्पित जीवन तथा पौरुषयुक्त कार्य की प्रेरणा जगाने के अतिरिक्त शेष बचता ही क्या है?

स्वाभाविक ही आर्थिक क्षेत्र में ऐसे सेवारत श्रमजीवियों को प्रेरणा देने का कार्य तो "श्रम दिवस" ही कर सकता है।

हम यहां विचार करें कि अपने देश की परिस्थिति, परम्परा और संस्कृति को ध्यान में रखकर ऐसी प्रेरणा क्या हमें "मई दिवस" से मिलेगी।

किसी विशेषज्ञ और तंत्रज्ञ को "विश्वकर्मा" की उपाधि से विभूषित कर हम उसे आदर देते हैं। भारत की परम्परा, संस्कृति और परिस्थिति को ध्यान में रखकर, कृषि प्रधान देश की स्थिति तथा कच्चे माल की उपलब्धता को सामने रखकर देश की प्रगति के लिए विश्वकर्मा द्वारा स्थापित "स्वनियोजित क्षेत्र" अर्थात् जिसे हम "विश्वकर्मा सैक्टर" कहते हैं, जिसमें न कोई किसी का मालिक है और न कोई किसी का नौकर, की बढ़ोत्तरी की आवश्यकता है । इसी से अपना देश आर्थिक दृष्टि से समुन्नत बन सकता है और कम से कम पूंजी में अधिक से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान किया जा सकता है ।

ऐसे श्रेष्ठ जीवन के प्रतीक विश्वकर्मा जब हमारे पास स्वयं विद्यमान है, तो हम उनकी जयन्ती पर श्रम दिवस न मनाकर, बाहर से उधार लेकर एक मई को श्रमदिवस क्यों मनाये ?

श्रमिक क्षेत्र और राष्ट्रभक्ति

उत्पादन बढ़ने पर भी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि हो रही है । मूल्यों में वृद्धि को रोकने के लिए सरकार तैयार नही है । इतना ही नहीं, "मूल्य जाम" के स्थान पर "वेतन जाम" करने का सरकार का इरादा अब छिपा हुआ नहीं है । क्या आप इसे देशभक्ति की संज्ञा दे सकेंगे ? क्या यह चंद देशी एवं विदेशी सरमायेदारों को लाभ पहुंचाने के लिए गरीब लोगों को सीधे सताने का उपक्रम नहीं है ? जनतंत्र में भी सुविचारित शांतिपूर्ण हड़ताल पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है । "जबरा मारे, रोने न दे" की कहावत चरितार्थ की जा रही है ।

सरकार की इन्हीं नीतियों के कारण आजादी के बाद गरीबी की रेखा के नीचे जीवन-यापन करने वालों की संख्या में तीन गुणा तथा लखपतियों और करोड़पतियों की संख्या में ३० गुणा वृद्धि हुई है और कुछ की सम्पत्ति में ७० गुणा से भी अधिक की वृद्धि हो चुकी है । आजादी के इतने दिनों पश्चात् भी राष्ट्रीय आय नीति, व्यय नीति, कर नीति, मूल्य नीति, वेतन नीति, रोजगार नीति, श्रम नीति, उद्योग नीति आदि का स्पष्ट निर्धारण न करना देश के साथ विश्वासघात है । कहा जाता है कि उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि होनी चाहिए । आंदोलन और हड़ताल नहीं होनी चाहिए । इससे कौन इनकार करता है ? पर मजदूरों की न्यायपूर्ण मांगों की पूर्ति में कौन बाधक बन रहा है तथा ट्रेड यूनियन अधिकारों पर कौन हमला कर रहा है ? इस प्रकार से क्या उत्पादन और उत्पादकता की वृद्धि न होने देने तथा आंदोलन और हड़ताल की स्थिति बनाकर रखने की सरकार की मंशा नहीं है ?

सरकार अच्छी प्रकार से जानती है कि श्रम नीतियों का वैज्ञानिक ढंग से निर्धारण और उनको पालन कराने से उद्योगों में अच्छी और शांतिपूर्ण स्थिति लाई जा सकती है किंतु धनपतियों तथा सत्ताधारियों के लिए यह भयंकर घाटे का सौदा है । धनी को और धनी तथा गरीब को और गरीब बनाकर रखने की अबाध प्रक्रिया जारी है । यह स्पष्ट देशद्रोह है ।

मजदूर को आज एक मात्र यही गारन्टी चाहिए कि उसके द्वारा किए गए उत्पादन का लाभ गरीब जनता के पास पहुंचे। जब तक यह गारन्टी नहीं है; किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि श्रमिकों को उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने का उपदेश दे।

आर्थिक दृष्टि से सबसे कमजोर घटक का जीवन स्तर ही राष्ट्रीय समृद्धि का स्तर आंकने की एकमेव कसौटी है। चंद सुविधा प्राप्त लोगों के हितों की सुरक्षा को कभी भी राष्ट्रीय हित नहीं माना जा सकता।

कम्प्यूटरीकरण

हमारे देश में स्वचालितीकरण के कार्यक्रम को स्थगित करने से अर्थव्यवस्था निश्चित ही अधिक रोजगार प्रदान कर सकती है। भारतीय परिस्थिति में इस बात की प्रथम आवश्यकता है कि सबके लिए सम्पूर्ण रोजगार का आधार प्रस्तुत किया जाय। जब तक सम्पूर्ण रोजगार की स्थिति उत्पन्न नहीं होती, उस समय तक स्वचालितीकरण को लागू नहीं करना चाहिए।

जब उद्योगपति किसी उद्योग को शुरू करता है तो वह यह नहीं सोचता कि उससे कितने अधिक लोगों की क्रयशक्ति बढ़ सकेगी। उसकी चिंता का विषय तो बस यही होता है कि यह उद्योग उसे कितना अधिक लाभ दे सकेगा।

किसी भी गरीब देश के लिए प्राविधिक विकास योजनाएं तैयार करते समय पहला लक्ष्य यह होना चाहिए कि उनके जरिये कम से कम समय में समाज से अधिक से अधिक लोगों का जीवन स्तर उठाया जा सके और उन्हें जीवन की बुनियादी जरूरतें मुहैय्या कराई जा सके।

आज हमारे पास पैसा बहुत नहीं है अतः ऐसी प्राविधिक योजनाएं हमारे लिए उपयुक्त नहीं हैं, जिनमें पूंजी अधिक लगानी पड़े। दूसरी तरफ हमारे पास श्रम शक्ति (मैन पावर) की कोई कमी नहीं है। उसका उपयोग किया जाना चाहिए। इससे बेरोजगारी दूर होगी, लोगों की क्रयशक्ति बढ़ेगी और जनता के पैसे का सही और समुचित उपयोग भी हो सकेगा।

पंचमांगी क्यों पनपते हैं?

विदेशों से प्रभावित कुछ ट्रेड यूनियनें उनके एजेंट बनकर पंचमागियों की भूमिका निभाती हैं। किन्तु क्या हमारे देश के पूंजीपति और उद्योगपति भी उनके कार्य को बढ़ाने में सहयोगी नहीं हैं? यदि वे देशद्रोही हैं तो उन्हें बढ़ने देने की परिस्थिति उत्पन्न करने वाले पूंजीपति भी देशद्रोही हैं।

वाद नहीं, प्रखर राष्ट्रभक्ति का भाव

राष्ट्रीय सम्पन्नता में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए यह अनिवार्य है कि ट्रेड यूनियन आंदोलन को सभी प्रकार के इज्म (वाद) की गुलामी से मुक्त रखा जाये। किसी विशेष मत का अंधानुकरण न करके अपना दृष्टिकोण एवं अपनाई जाने वाली पद्धति व्यावहारिक होनी चाहिए।

देश में प्रखर राष्ट्रभक्ति के भाव की अनुपस्थिति में कोई भी कानूनी कार्यवाही अथवा कोई भी पद्धति सुपरिणाम नहीं दे सकती। अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के स्थान पर राष्ट्रवाद कठिन परिश्रम करने और अधिकतम त्याग करने की प्रेरणा दे सकता है। औद्योगिक प्रजातांत्रिक योजना उसी हद तक सफल हो सकती है, जिस सीमा तक नियोजक, कर्मचारी और सरकार अपने आपको सम्पूर्ण राष्ट्र के साथ एकात्म कर सकेंगे।

औद्योगिक सम्बन्धों में शामिल सभी पक्ष राष्ट्रीय जीवन के अंग हैं और उनका वर्गीय हित राष्ट्रहित के साथ एकात्म है। राष्ट्रीय हितों के चौखट में ही मजदूर हितों की सुरक्षा तथा अभिवृद्धि अपेक्षित है।

राष्ट्रभक्ति की कसौटी

किसी भी देश और समाज के आर्थिक जीवन स्तर को उठाने के लिए उत्पादकता में वृद्धि आवश्यक है। आर्थिक उत्थान के लिए इसके अलावा अन्य कोई छोटा मार्ग उपलब्ध नहीं है।

जो भी ट्रेड यूनियन अथवा कर्मचारियों के संगठन इस उत्पादकता की दर की बढ़ोत्तरी के लिए पूरे जीजान से तत्पर नहीं होते, उन्हें राष्ट्रभक्त ट्रेड यूनियन कहना संगत नहीं होगा।

किन्तु इस सदाशयता का दुरुपयोग किया जा रहा है। उत्पादन और उत्पादकता वृद्धि का अतिरिक्त लाभ गरीब जनता और मजदूरों के पास पहुंचाने की दिशा में अभी तक कोई भी काम नहीं किया गया है। इसकी अनिवार्य गारंटी जब तक नहीं दी जाती, उत्पादन वृद्धि हेतु मजदूरों के अंदर उत्साह एवं प्रेरणा जगाना संभव नहीं है।

धीमें काम नहीं, सशक्त हड़ताल

ट्रेड यूनियनों को धीमें काम, नियम के अनुसार काम, अतिरिक्त काम पर प्रतिबंध अथवा अन्य ढंग से काम रोको की स्थिति को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

अधारभूत स्वभाव के अनुशासन की आदतों को किसी भी प्रकार दूषित नहीं किया जाना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर हम पूरे जीजान से हड़ताल पर जायें। शांतिपूर्ण और

अहिंसक हड़ताल जनतंत्र की रीढ़ है। यह अन्याय के मुकाबले सफल प्रतिकार का न्यायोचित साधन है। यह मजदूरों का मौलिक अधिकार हैं देशभक्ति के लिए ऐसे सभी आंदोलनात्मक कदमों पर भी विचार करना आवश्यक है।

असम्बद्ध यूनियनें देश के लिए खतरनाक

किसी भी यूनियन को किसी केन्द्रीय श्रम संगठन की सम्बद्धता के बिना नहीं रहना चाहिए। असम्बद्ध यूनियनें जिम्मेदार यूनियनों के मुकाबले अधिक खतरनाक होती हैं क्योंकि वे राष्ट्रीय स्तर पर किसी भी अनुशासन का पालन करने के लिए तैयार नहीं होती।

राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि असम्बद्ध यूनियनों की समाप्ति हो।

राष्ट्र और मजदूर अन्योन्याश्रित हैं

श्रम आंदोलन राष्ट्र निर्माण का एक साधन है। यदि राष्ट्र खड़ा है तो मजदूर गिर नहीं सकता और यदि मजदूर खड़ा है तो वह राष्ट्र को कदापि गिरने नहीं देगा। साथ ही यदि मजदूर गिर जाता है तो राष्ट्र को कोई दूसरी शक्ति बचा नहीं सकती। मजदूर राष्ट्र का अभिन्न अंग है। राष्ट्र के पुनर्निर्माण के कार्य में मजदूर के कंधों पर भारी जिम्मेदारी है। संगठित मजदूर वर्ग ही राष्ट्र की प्रगति एवं उसके पुनरुत्थान के कार्य को आगे बढ़ा सकता है। श्रमिक क्षेत्र में राष्ट्र निर्माणकर्ता के नाते इस सर्वोच्च कार्य को करने हेतु कटिबद्ध रहना चाहिए।

संगठन और कार्यकर्ता

ट्रेड यूनियन एक सामाजिक कार्य है। जिस प्रकार व्यक्ति के लिए जीवन और जीवन के लिए भोजन आवश्यक है। उसी प्रकार संगठन के लिए सिद्धान्त और उसके लिए कार्य आवश्यक है।

- कार्यक्रम का हेतु क्या हैं? प्रथम मजदूर, द्वितीय सदस्य, तृतीय कार्यकर्ता चतुर्थ कार्य-समिति के सदस्य।

- यूनियन की कार्यसमिति की साप्ताहिक बैठक आवश्यक है। केवल आवश्यकता पड़ने पर बैठक बुलाना उचित नहीं।

- नगर कार्यसमिति की बैठक पाक्षिक होनी चाहिए।

- प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक कम-से-कम मासिक होनी चाहिए।
- सदस्यों की साधारण सभा अथवा सम्मेलन भी दो माह के अंतराल से होते रहना चाहिए।
- सभी मजदूरों की सभा तीन माह में एक बार अवश्य होनी चाहिए।
- इन कार्यक्रमों की रचना सुनियोजित एवं पूर्ण सुविचारित होनी चाहिए।
- हमारा प्रयत्न अपने कार्यकर्ताओं को संघर्षक्षम बनाने का होना चाहिए। कार्यकर्ता साहसी होने चाहिए।
- प्रत्यक्ष कार्यक्रम के संस्कार और कमरे के कार्यक्रम के संस्कार में अंतर होता है।
- सैद्धांतिक ज्ञान से भी अधिक व्यावहारिक ज्ञान आवश्यक है।
- आंदोलन के विभिन्न चरणों का ज्ञान और इस माध्यम से साहसी और संघर्षक्षम कार्यकर्ता का निर्माण होना चाहिए। ये कार्यक्रम हैं २४ घंटे का धरना, काले बिल्ले, दोपहर को भोजन बहिष्कार आदि।
- कानूनों का ज्ञान, मांगपत्र बनाने का ज्ञान, आरोप-पत्र का उत्तर लिखने का ज्ञान आदि से प्रशिक्षित और कार्य के लिए स्वयंसिद्ध होना आवश्यक है। प्रायोगिक ज्ञान अच्छे कार्यकर्ता की आवश्यक अर्हता है।
- कार्यकर्ता को अच्छा वक्ता होना चाहिए।

इन्हीं सब दृष्टियों से एक मास्टर माइंड ग्रुप बनाना होता है। सदस्यों से यूनियन की ये पांच अपेक्षाएं हैं —

१. सदस्य बनें।
२. गेट मीटिंग में उपस्थित रहें।
३. आंदोलनात्मक कार्यक्रम में सम्मिलित रहें।
४. यूनियन के सम्मेलन और अधिवेशन में भाग लें।
५. कार्यालय पर नियमित आवें।

कार्यकर्ता और मजदूर का सम्पर्क कार्यालय से रहना चाहिए। कार्यालय का वातावरण स्वस्थ हो वहां व्यर्थ की बातें और हल्के हंसी-मजाक न हो। वहां मनहूस वातावरण नहीं होना चाहिए। कार्यालय में शतरंज, ताश, जुआ आदि नहीं होना चाहिए।

मजदूरों को कार्यक्रमों में सहभागी बनाना चाहिए।

कार्यकर्ताओं से काम लेते रहना चाहिए। उनके बीच में काम का बंटवारा करना चाहिए। उन्हें दायित्व देना चाहिए।

अन्य संगठनों के कार्यकर्ताओं से अच्छे और मधुर सम्बन्ध रखने चाहिए। मतभेद रखो, मनभेद नहीं।

प्रबंधकों को शत्रु नहीं समझना चाहिए। अभद्रता नहीं करनी चाहिए। वकीलों से सम्पर्क रखना भी आवश्यक है।

पुलिस और जिला प्रशासन से भी परिचय हो और यथासंभव उनसे अच्छे सम्बन्ध होना भी आवश्यक है।

पड़ोसियों से अच्छे सम्बन्ध रखना चाहिए। विशेषतः कार्यालय के पास के पड़ोसियों के साथ मित्रता रखना पूर्ण अपेक्षित है।

समझौता वार्ता से कभी बहिर्गमन नहीं करना चाहिए। उत्तेजित नहीं होना चाहिए। व्यवस्थित तर्क रखने चाहिए। अपने तर्कों पर दृढ़ रहना चाहिए।

कभी व्यक्तिगत गाली-गलौज नहीं करना चाहिए। मारपीट या हाथापाई कभी नहीं करनी चाहिए।

मशीनों को कभी नहीं तोड़ना चाहिए।

कार्यकर्ता का ईमानदार होना संगठन की प्रगति की गारंटी है। यह ईमानदारी मालिकों के साथ व्यवहार तथा चंदे के हिसाब आदि में भी दिखानी चाहिए। समुचित हिसाब-किताब रखना सार्वजनिक कार्यकर्ता का आवश्यक गुण है। मैनेजमेंट नौकरी की लालच देकर फुसला सकता है, इससे बचना चाहिए। पैसे, पदोन्नति, नियुक्ति आदि सभी प्रकार के लालच से मुक्त रहना चाहिए।

समुचित ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। संगठन का सिद्धान्त, नीतियों, श्रम कानून अन्य प्रकार का सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।

कार्यकर्ताओं को जुझारू होना चाहिए। सिद्धांतों और निर्णयों के प्रति दृढ़ होना चाहिए।

साहसी नेतृत्व के अनुयायी होते हैं।

श्रम संगठन के काम में सातत्य की जरूरत होती है। केवल जोश में आकर किसी काम में लगना न तो पर्याप्त है, और न अपेक्षित ही है।

अच्छे कार्यकर्ता हमेशा उपलब्ध रहने चाहिए। इसके लिए उसे गेट और कार्यालय के पास रहना आवश्यक है।

कार्यकर्ता के घर का वातावरण स्वस्थ होना चाहिए। परिवार के सदस्यों का व्यवहार श्रमिकों और कर्मचारियों के साथ अच्छा रहे, इस प्रकार का प्रयत्न कार्यकर्ता को करना चाहिए।

यूनियन के द्वारा आक्रामक मांगें रखी जानी चाहिए, रक्षात्मक नहीं। कानूनी मांगों को दिलवाना गौण काम है। प्रमुख काम नई मांग दिलवाना है। कानूनों को चुनौती देकर मजदूर को कुछ नया दिलवाना ही अपेक्षित है। हमारा संगठन वर्तमान कानूनों की रक्षा के लिए नहीं वरन् सत्य और न्याय की रक्षा हेतु है।

श्रम आंदोलन रोने के लिए नहीं है, चुनौती देने के लिए है। अन्याय और शोषण का प्रतिकार करने के लिए सन्नद्ध होना चाहिए।

यूनियन आत्मनिर्भर होनी चाहिए। कार्यकर्ताओं का मास्टर माइंड ग्रुप होना चाहिए। बाहरी नेतृत्व के प्रभाव से मुक्त होना चाहिए। परावलम्बी होना स्वस्थ लक्षण नहीं है।

हमारा देशभक्त संगठन है। इसका अर्थ है कि हमारे कार्यकर्ता हमसे सम्बद्ध कर्मचारी सरकार और मालिकों से तो लड़ सकते हैं, किन्तु वे जनता से नहीं लड़ेंगे। उनका व्यवहार जनता से अच्छा होना चाहिए। अपना कार्य ईमानदारी से करना चाहिए। जनता से लड़ना देशद्रोह है। ईमानदारी से काम न करना देशद्रोह है। इस दृष्टि से हम अधिकार के साथ कर्त्तव्य की भी प्रेरणा सभी को दें।

सही ट्रेड यूनियन आंदोलन

वर्तमान समय में हमारे देश में नियोजक तथा नियोजित में मधुर सम्बन्ध नहीं रह गया है। न निजी क्षेत्र में, और न सार्वजनिक क्षेत्र अथवा सरकारी विभाग में ही। आदर्श नियोजक की कल्पना करना आज बहुत दूर की बात हो गई है। मजदूरों को कर्त्तव्य का पाठ पढ़ना भी दुष्कर हो चुका है! कोई किसी की बात सुनने के लिए तैयार नहीं है औद्योगिक अशांति, भ्रष्टाचार, अपव्यय, शोषण, विषमता, उत्पादन ह्रास एवं उत्पीड़न आदि प्रतिदिन की घटनाएं बन गई हैं। देश आगे बढ़ने के बजाय पीछे जा रहा है। ऐसी कठिन परिस्थिति

में ट्रेड यूनियन आंदोलन चलाने के लिए व्यावहारिक पक्ष और समुचित दृष्टिकोण अपनाकर उसे सही दिशा देना आज और भी आवश्यक हो गया है।

मजदूरों का, मजदूरों द्वारा, मजदूरों के लिए

हर प्रकार के बाह्य हस्तक्षेप अर्थात् राजनीतिक, प्रशासनिक एवं मालिकों के प्रभाव से सर्वथा मुक्त, मजदूरों का, मजदूरों द्वारा, मजदूरों के लिए चलाये जाने वाला संगठन ही वास्तविक (ज्यन्यून) ट्रेड यूनियन है।

राजनीति नहीं, लोकनीति

ट्रेड यूनियन आंदोलन राजनीति से दूर रहना चाहिए। किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि वह लोकनीति से भी दूर हो जाय। राजनीति अलग है, लोकनीति अर्थात् राष्ट्रनीति अलग। दोनों एक नहीं है। लोकनीति के हित में ट्रेड यूनियनों को अपना सब कुछ सहर्ष त्याग करने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। दूसरे शब्दों में राष्ट्रहित के चौखट के अन्तर्गत मजदूरों .का हित साधन करना ही सही ट्रेड यूनियन आंदोलन है। इसे और भी स्पष्ट करना हो तो कहेंगे कि मजदूर हित, उद्योगहित और राष्ट्रहित तीनों एक दूसरे के अन्योन्याश्रित हैं। दो के हितों में ही तीसरे का हित संभव है। तीनों का गंतव्य स्थान एक है। देश के हित में उद्योग का हित निहित है और उद्योग के हित में मजदूर का हित। यदि देश नहीं रहेगा तो उद्योग नहीं रहेगा, और उद्योग नहीं रहेगा तो मजदूर नहीं रहेगा। संतुष्ट और सुखी मजदूर ही औद्योगिक शांति बनाये रखकर उत्पादन में वृद्धि करने में समर्थ होता है।

उद्योग से नहीं, उद्योगपति से लड़ाई

यहां यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि उद्योग अलग है और उद्योगपति अलग। उद्योगपति और प्रबंधक बुरे हो सकते हैं, किन्तु उद्योग बुरा नहीं होता। मजदूर की लड़ाई, ट्रेड यूनियन की लड़ाई बुरे नियोजक से है, न कि सम्बन्धित उद्योग से। इसको और स्पष्ट करने के लिए यहां डेनियल डीफो का एक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण कथन उद्धृत करना अप्रासंगिक न होगा। उनका कहना था, "ये जो मल्लाह हैं, इनसे मैं नाराज हूं। लेकिन इसलिए मैं नाव को नहीं डुबाऊंगा। तूफान आयेगा तो अपनी जान खतरे में डालकर भी उसको बचाऊंगा। क्योंकि हम जब एक ही नाव में सवार हैं तो उनको मारने के लिए हम उस नाव को डुबाकर स्वयं नहीं मरना चाहेंगे।" जिस प्रकार नाव और मल्लाह के बारे में यह उदाहरण है, उसी प्रकार उद्योग और उद्योगपति (प्रबंधक) के अंतर के बारे में भी ट्रेड यूनियनों को सही दृष्टि रखना चाहिए।

न राजनीतिकरण और न रोजीरोटीकरण

प्राय: लोग ट्रेड यूनियन आंदोलन को दो ही दृष्टिकोण से देखते हैं। एक, उसे राजनैतिक दलों का मंच मानते हैं; और दूसरे, उसे रोटी-रोजी खाने-कमाने का साधन

समझते हैं। किन्तु सही ट्रेड यूनियन का अर्थ इन दोनों से भिन्न है। उसे न तो राजनीति का मोहरा बनना चाहिए और न केवल आर्थिक मांगों तक सीमित रहना चाहिए। उसके लिए राष्ट्रहित सर्वोपरि होना चाहिए। राष्ट्रहित की चौखट में ही मजदूर-हितों के लिए आंदोलन करना चाहिए।

सुविधा नहीं, अधिकार

सही ट्रेड यूनियन आंदोलन का अर्थ मजदूरों को येन-केन-प्रकारेण सुख-सुविधाएं पहुंचाना नहीं, अपितु उन्हें न्यायिक नैतिक और समुचित अधिकार प्रदान कराना है। किसी संस्थान ने मजदूरों को कुछ दिला दिया, उन्हें संतुष्ट कर दिया और सही ट्रेड यूनियन का काम पूरा हो गया, ऐसी बात नहीं। मांगों को कहां तक ले जाना है इसकी सम्यक व तर्कशुद्ध जानकारी रखकर, उसको प्राप्त करने के लिए प्रयास करना और प्राप्त करा देना ही सही ट्रेड यूनियन आंदोलन है।

कर्त्तव्यबोध जरूरी

सही ट्रेड यूनियन मजदूरों को कर्त्तव्यबोध कराती है। किंतु उसका अनुपात भी रखती है। वह इसलिए कि कहीं उनका कर्त्तव्यबोध उनके और अधिक शोषण का कारण न बन जाय। अतः उन्हें उतनी ही मात्रा में कर्त्तव्यबोध कराना चाहिए, जितनी मात्रा में वे देशहित और मजदूरों के हितसाधन कराने में सक्षम है।

अन्तिम उद्देश्य

ट्रेड यूनियन आंदोलन का अन्तिम उद्देश्य देश के उत्पादन में वृद्धि करना, देश को खुशहाल बनाना और उसके साथी मजदूरों का जीवन-स्तर ऊंचा उठाने के लिए उन्हें संस्थान की प्रत्येक परामर्शदातृ समिति, निर्णायक समिति और प्रबन्ध समिति में ही नहीं, वरन् स्वामित्व तक में साझेदारी और प्रतिनिधित्व प्राप्त कराना भी है।

काश! आज की स्टण्टबाजी और नारेबाजी की राजनीति से दूर हटकर मजदूर को राष्ट्र निर्माण के लिए सम्मान मिलता और मजदूर गर्व के साथ स्वयं को राष्ट्र-निर्माण का घटक अनुभव करता।

खेतिहर मजदूर

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। पर उसके उत्पादनकर्ताओं के एक बड़े वर्ग को मानवीय रूप में न तो सम्मान मिल रहा है और न ही जीवनोपयोगी साधन और सामग्री। भारत में खेत मजदूरों की संख्या पांच करोड़ से भी ऊपर है। यह वर्ग राष्ट्र की मूलधारा से

अपने को कटा हुआ सा अनुभव करता है। देश के बढ़ते हुए उत्पादन तथा न्यायपूर्ण वितरण में उसका कोई स्थान ही है। संविधान में समता को स्थान दिया गया है, पर समाज में समता नहीं बन पाई है। आज भी कम श्रम करने वाले ही समाज में प्रतिष्ठित माने जा रहे हैं। कठोर श्रम करने वाले खेतिहर मजदूरों को न न्याय और न ही प्रतिष्ठा मिल पाई है। यह वर्ग जो खेत महाजनों के हाथों में बुरी तरह जकड़ा हुआ है। उसकी जो भी थोड़ी बहुत खेती थी, उस पर भी सूद में अन्य कोई काबिज है। आज यद्यपि बंधक मजदूरी प्रथा तथा ऋणग्रस्तता से छुटकारा दिलाने वाले कानूनों से उसे पर्याप्त राहत मिली है, किन्तु सहायता का यह स्थायी हल नहीं है। बढ़ती महंगाई की तुलना में उनकी मजदूरी में निरंतर गिरावट आई है।

जो भूमि भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को मिलाने वाली थी, वह भी फौजियों, सरकारी अफसरों तथाकथित स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों तथा सेठों में बांट दी गई है। आज भी जमीन बांटने का प्रचार जारी है किन्तु इस बंटवारे में खेतिहर मजदूर के हाथ बहुत थोडा ही लग सका है। नदियों के पेटे, पहाड़, जंगल, ऊसर-बंजर ही नहीं, बने हुए मकान की भूमि भी उसके नाम आवंटित कर दी गई है। स्टण्टबाज राजनीतिज्ञों ने कितने ही सम्मेलन करके इन दुःखते दिलों को और भी दुखाया है तथा उनके जले पर नमक डाला है। इनकी मजदूरी की दर जो सौ वर्ष पूर्व थी, वही आज भी है। अनाज की बढ़ती हुई महंगाई के कारण भूस्वामी वर्ग इन्हें नकद नहीं, अपितु बाजार के भाव के आधार पर छोटे बटखरों से अनाज देता है। सरकारी दाम पर इन्हें कपड़ा, चीनी, अनाज, डालडा तथा सीमेंट आदि कुछ भी नहीं मिलता। कम मजदूरी के अंदर ही उसे ब्लैक के भाव में सारी जीवनोपयोगी वस्तुएं खरीदनी पड़ती है। इन्हें वर्ष में २०० दिन से अधिक काम भी नहीं मिलता।

पिछले दशक में खेतिहर मजदूरों की संख्या में १६ प्रतिशत से २६ प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी हुई है। कृषि की उपज दुगुनी होने तथा महंगाई बढ़ने पर भी उनकी मजदूरी में बढ़ोत्तरी नहीं हुई है। अक्तूबर, १९७५ से कितने ही राज्यों ने पांच रुपये से लेकर साढे छह रुपये तक की मजदूरी निर्धारित की है, किंतु इसका क्रियान्वयन और पालन नहीं हुआ।

राजनीतिक और श्रमिक संगठनों का प्रयास

खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को सुलझाने के लिए कितनी ही गोष्ठियों के आयोजन होते रहते हैं। न्यायमूर्ति श्री गजेन्द्रगडकर की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय आयोग ने भी इस समस्या पर वृहद् प्रकाश डाला है। राजनीतिक और श्रमिक संगठन भी अपने-अपने ढंग से थोड़ा बहुत प्रयास करते रहे हैं। बहुत पहले वामपंथी दलों ने ट्रेड यूनियन के प्रकार का वर्ग संघर्ष के आधार पर खेतिहर मजदूरों में कार्य आरंभ किया था, पर वे असफल रहे। डॉ० लोहिया ने भी इस दिशा में प्रयास किया था। कांग्रेस और इंटक का प्रयत्न आज भी जारी है। सन् १९७२ में अपने तृतीय अखिल भारतीय अधिवेशन के अवसर पर बम्बई में भारतीय मजदूर संघ ने भी असंगठित मजदूरों को संगठित करने और उनकी समस्याओं को हल करने

का निर्णय किया। इस दृष्टि से छह राज्यों में खेतिहर मजदूरों में उसने कार्य भी प्रारंभ किया।

कांग्रेस ने दो वर्ष पूर्व सीतापुर जिले के एक ग्रामीण क्षेत्र में खेतिहर मजदूरों का अखिल भारतीय अधिवेशन बुलाकर उनकी समस्याओं पर गंभीरता से विचार किया। साम्यवादी दल ने राजनीति की दृष्टि से ही क्यों न हो, "भूमि हड़पो आंदोलन" की रूपरेखा बनाई। परंतु अब तक के इसके अनुभव बड़े ही कटु सिद्ध हुए हैं। प्रथम यह कि हड़पी हुई भूमि का बंटवारा कर भी दिया जाय तो भी वे कानून सम्मत नहीं होंगे। दूसरा यह कि खेतिहर मजदूरों की संख्या की तुलना में यह भूमि इतनी अपर्याप्त है कि बंटवारे में उन्हें कुछ भी हाथ लगना संभव नहीं है। जो हाथ लगेगा भी, वह अनार्थिक ही रहेगा। तीसरा यह कि हड़पकर बांटने वाले दल के कार्यकर्ताओं तथा भीड़ के चले जाने पर सरकार और किसान वर्ग उन खेतिहर मजदूरों को वहां रहने नहीं देंगे। वे आतंकित और बेकार होकर गांव छोड़कर भाग जाने के लिए बाध्य होंगे। तात्पर्य यह है कि अब तक के सारे प्रयास सागर में प्रसिद्ध हुए हैं।

न्यूनतम वेतन अधिनियम

सन् १९४८ का न्यूनतम वेतन कानून खेतिहर मजदूरों पर लागू है। उस कानून को प्रदेशों की मर्जी पर लागू करने के लिए कहा गया है। प्रत्येक राज्य के निर्णय अलग-अलग हैं और होंगे भी। उन्हें कितना देना है—अनाज के रूप में देना या रुपये में देना, यह निर्धारण राज्य सरकार करेगी। साप्ताहिक अवकाश अथवा अन्य अवकाश देने या न देने का निर्णय भी सरकारों पर छोड़ा गया है। इस कानून की सबसे बड़ी कमी यह है कि खेतिहर मजदूरों का किन सिद्धांतों के आधार पर न्यूनतम वेतन निश्चित करना है, उस पर भी यह मौन है। कुल मिलाकर खेतिहर मजदूरों के लिए यह कानून कोई अर्थ नहीं रखता। मजे की बात है कि इस कानून की कोई भी धारा निश्चित नहीं है। राज्य सरकारों की मर्जी पर ही सब कुछ है। केन्द्रीय श्रम मंत्री ने खेतिहर मजदूरों के लिए राष्ट्रीय न्यूनतम वेतन निर्धारित करने से इंकार कर दिया है। एक ओर जहां यह कानून लंगड़ा है वहीं दूसरी ओर उससे भी जटिल मामला उसके क्रियान्वयन का हैं। कौन सी तथा किस प्रकार की विशेष व्यवस्था की जाय, यह सरकार की समझ में नहीं आ रहा है।

खेत पर काम अधिक है तो वेतन अधिक मिलेगा। काम कम है तो उन मजदूरों को या तो छुट्टी दे दी जाती है या वेतन काटा जाता है। कृषि क्षेत्र के अधिकांश नियोजक और नियोजित दोनों ही निरक्षर हैं। खेती में कितने घंटे कौन से कार्य होते हैं तथा कितने श्रमिक कार्य करते हैं, उन पर कार्यभार (वर्कलोड) कितना पड़ता है, इसका कोई लेखा-जोखा नहीं है। यह लेखा-जोखा (रिकार्ड) संभव भी नहीं है। खेत मजदूरों को मिलने वाली वेतन दरों की न तो ठीक से जांच हो सकती है और न उनके कार्यों की दशाओं की ही। वेतन के भुगतान की विधियों में भी एकरूपता अभाव है क्रियान्वयन और निरीक्षण का कार्य भी एकदम असाध्य है। इतने विशाल पैमाने पर निरीक्षकों को रखना भी मुश्किल है।

कुछ राज्यों ने न्यूनतम मजदूरी अधिनियम १६४८ की धारा १६ के अधीन समस्त तहसीलदारों को निरीक्षक का अधिकार प्रदान कर दिया है। साथ ही निर्धारित दर से कम भुगतान के सम्बन्ध में दावों की सुनवाई तथा विनिश्चयन हेतु धारा २० के अधीन समस्त परगना मजिस्ट्रेटों को प्राधिकारी नियुक्त कर दिया है। निर्धारित न्यूनतम मजदूरी का प्रभावी प्रवर्तन सुनिश्चित करने हेतु जिलाधिकारियों को आवश्यक निर्देश जारी कर दिये हैं। किन्तु क्या इन व्यवस्थाओं का परिणाम खेतिहर मजदूरों के हित में होगा? यह प्रश्न बना हुआ हैं। कहीं न्यूनतम वेतन अधिनियम के पालन करने की किसी प्रकार यदि व्यवस्था हो भी जायेगी तो निश्चित ही किसान वर्ग इन मजदूरों को काम से हटा देगा। "मरता क्या न करता" की स्थिति में बेकार हो जाने पर अर्थात् बिल्कुल पैसा न मिलने के स्थान पर थोड़ा बहुत मिल जाये, इसी को वह स्वीकार कर लेगा। क्योंकि उसके अंदर सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति नहीं है। तात्पर्य यह है कि उक्त कानून और व्यवस्थाओं से इस समस्या का निराकरण संभव नहीं है।

समस्या का निराकरण कैसे हो?

गांव की चेतना को जगाने की आवश्यकता हैं। गांव की कुरीतियों को दूर करना आवश्यक है। छोटे-छोटे किसानों और खेतिहर मजदूरों के बीच लघु तथा कुटीर उद्योग धंधों का विस्तार किया जाना चाहिए। तकनीकी यंत्रों तथा परिवर्तनों से खेत मजदूरों की हालत में परिवर्तन किया जा सकता है। उन्हें मशीन देकर प्रशिक्षण की व्यवस्था करके बहुत हद तक जापान के खेतिहर मजदूरों की तरह खुशहाल बनाया जा सकता है।

मजदूरी आदि तय करने हेतु त्रिदलीय समितियों का गठन हो, उसके क्रियान्वयन का भार राजस्व और श्रम विभाग पर ही नहीं, अपितु ग्राम पंचायतों पर भी डाला जाये। मजदूरी निश्चित हो जाने पर सरकार की ओर से व्यापक प्रचार किया जाये। जिलों के सभी सार्वजनिक स्थानों पर उसे चिपकाया जाये। खेत मजदूरों के ऐसे व्यापक और शक्तिशाली संगठन की भी आवश्यकता है, जो उनकी बेवसी, बेहाली और लाचारी के खिलाफ सशक्त आवाज उठा सकें। मर्द और औरत की मजदूरी में जो अंतर है, उसे समाप्त किया जाये। हमें यह मानकर चलने की आवश्यकता है कि खेती के क्षेत्र में खेतिहर मजदूर ही हमारी अश्व-शक्ति और बिजली हैं। इस पांच करोड़ अश्व-शक्ति के सदुपयोग का मार्ग हमें ढूंढ़ना है। इस क्षेत्र में संघर्ष से कुछ बनने वाला नहीं है।

कृषि उद्योग रूपी रथ के दो पहिए हैं—एक किसान और दूसरा खेतिहर मजदूर। दोनों में संघर्ष नहीं, अपितु सामंजस्य की आवश्यकता है। उसे एक ऐसा कुल (कॉमनवेल्थ) मानकर चलें, जिसके तीन सहभागी हैं—किसान, खेतिहर मजदूर तथा कारीगर। तीनों के सहयोग से तीनों का अर्थात् पूरे ग्राम का कल्याण होगा। तीनों में यदि विरोध रहेगा तो तीनों का, अर्थात् पूरे ग्राम का विनाश होगा। इन मजदूरों की समस्याओं को न राजनीतिक यूनि-यनें और न ट्रेड यूनियनें ही सुलझा सकती हैं। इनकी समस्याओं को सुलझाने के लिए

हमारे सामने दो विकल्प शेष रह जाते हैं। एक है, प्राचीन भारतीय ग्रामकुल (विलेज कामन-वेल्थ) का पुनरुज्जीवन, जिसमें उसके पसीने (श्रम) का अंश माना जाता था और वह स्वाभाविक रूप से किसान के परिवार का अंग बनकर अपनी तथा अपने परिवार को आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता था। दूसरा विकल्प है बिजली के सहारे ग्रामीण क्षेत्र में छोटे और विकेन्द्रित उद्योगों का विस्तार किया जाय। इन दोनों उपायों से खेतिहर मजदूरों तथा समस्त ग्रामीण जनता को खुशहाल बनाया जा सकता है।

औद्योगिक सम्बन्ध

नियंत्रक और नियंत्रित, दोनों की मनः स्थिति का परिणाम उत्पादन पर होता है। पाने के लिए देने का सिद्धांत मान लेने से उत्पादन पीछे नहीं वरन् बढ़ने की ओर अग्रसर होता है।

सम्बन्ध क्यों बिगड़ते हैं?

व्यवस्थापकों द्वारा श्रमिकों को हीन समझकर व्यवहार करना, आपस में बैठकर श्रमिक प्रतिनिधियों से बातचीत करने में अपना अपमान समझना, श्रमिकों को आत्मा-रहित यंत्र समझना, गुलामी काल के अफसरों की मनःस्थिति, अपनी ही इच्छाओं के आधार पर सिद्धांत निश्चित करना, श्रमिकों को सलाह मशविरा आदि में भागीदार न बनाना, पूंजी को अपने तक ही सीमित रखने का प्रयास करना, श्रमिकों को दैनिक जीवन की व्यवस्था के लिए भी विश्वास में न लेना, और उनकी दरिद्रता आदि ऐसे कारण हैं, जो औद्योगिक सम्बन्धों को खराब करते हैं। परिणामस्वरूप न केवल उत्पादकता पर असर होता है वरन् औद्योगिक अशांति को जन्म देकर दीर्घकाल तक के लिए नई-नई बुराइयों को भी जन्म देता है।

वैसे औद्योगिक सम्बन्ध को बिगाड़ने के अन्य अनेक नये कारण भी हैं, जैसे—

(१) महत्वपूर्ण मामलों में जेबी और कागजी यूनियन से बात करना।

(२) सशक्त होने पर भी अन्य यूनियनों को नहीं, अपितु एक मात्र अकेली यूनियन को मान्यता देना।

(३) श्रमिकों को बेकार रखकर, बैठकी पर भेजकर, ठेके पर काम करवाना।

(४) उत्पादकता वृद्धि होने पर भी मजदूरों के वेतन में वृद्धि न करना।

(५) स्वचालितीकरण द्वारा मजदूरों को बेकार बनाना।

(६) निदेशक अथवा व्यवस्थापक आदि महत्वपूर्ण पदों पर राजनीतिक लोगों की नियुक्तियां करना।

(७) एवार्डों, फैसलों, समझौतों तथा वर्क्स कमेटियों के सर्वसम्मत निर्णयों आदि के क्रियान्वयन में विलम्ब करना।

(८) स्टैंडिंग आर्डर बनाने में श्रमिकों की राय जानने का प्रयास न करना। उसकी रचना में श्रमिकों को स्थान न देना।

(९) कर्मचारी पर अनुशासनिक कार्यवाही, विमुक्ति, सेवामुक्त, निलम्बन, स्थानान्तरण, वेतनवृद्धि रोकने और अर्थदण्ड देने आदि विषयों में वर्क्स कमेटी की सम्मति न लेना।

(१०) व्यक्तिगत शिकायतों पर ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं को परेशान करना आदि।

उक्त कारणों के अलावा औद्योगिक संबंध खराब होने के लिए—(१) यूनियनों का पारस्परिक विरोध ही नहीं, अपितु शत्रुता, (२) मैनेजमेंट से मिलकर चुगली करके दूसरे यूनियन के कार्यकर्ताओं को उत्पीड़ित करवाना, (३) मान्यता प्राप्त यूनियन द्वारा उत्पीड़ित सदस्यों और मान्यता रहित यूनियन की समस्याओं और बातों को न सुनना, (४) अनुशासन संहिता की खामियां, फलस्वरूप मान्यता रहित यूनियनों की जायज मांगों और समस्याओं पर भी मैनेजमेंट का ध्यान न देना, उनसे बात तक न करना और पत्रों का उत्तर न देना, (५) ट्रेड यूनियनों की दुर्बलता, (६) ट्रेड यूनियनों की संख्या की अधिकता, (७) यूनियन नेताओं में एक की शांत वृत्ति, दूसरे की राजनैतिक दृष्टि, तथा तीसरे का दुराग्रह और गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार के कारण समझौते का न होना, (८) एक विशिष्ट यूनियन का यह सिद्धांत कि व्यवस्थापक और श्रमिक एक दूसरे के शत्रु हैं, वे मित्र हो ही नहीं सकते। अतः वर्ग संघर्ष में विजयी होने के लिये दूसरे को समाप्त करने की आवश्यकता पर बल। साथ ही ऐसी दुर्भावना रखने वालों से तात्कालिक लाभ को सामने रखकर व्यवस्थापकों द्वारा समझौते करना, मेलमिलाप करना, क्योंकि वे ही संकट उत्पन्न करने वाले तत्व हैं। फलस्वरूप व्यवस्थापकों का उनसे दबकर रहना, जिसका परिणाम उस यूनियन के प्रति लड़ाकूपन सिद्ध होने से मजदूरों की आस्था और प्रेम तथा उनकी लोकप्रियता में वृद्धि के साथ ही आसानी से खरीदे जाने वाले (भ्रष्ट होने वाले) श्रमिक नेताओं के माध्यम से समझौते करना, तथा औद्योगिक विवादों को रोकना आदि महत्वपूर्ण कारण भी हैं।

सम्बन्ध मधुर बनाने का ढंग

वास्तव में औद्योगिक संबंधों को मधुर बनाने के लिए (१) सर्वत्र वर्क्स कमेटियां बनानी चाहिए, जिसमें व्यवस्थापक और श्रमिक दोनों के एक-एक जानकार व्यक्ति रहे तथा

प्रतिवर्ष उस कमेटी का अध्यक्ष और मंत्री बारीबारी से कभी व्यवस्थापक का रहे तो कभी श्रमिक का इस प्रकार दोनों पदों पर हर समय दोनों वर्गों का प्रतिनिधित्व रहे। (२) इन वर्क्स कमेटियों को उत्पादकता और कार्यभार दोनों महत्वपूर्ण विषय सौंप दिया जाय, (३) एवार्डों और समझौतों का पालन हो। पालन न होने पर संशोधन की जिम्मेदारी रहे कि वह उसे पालन कराये, इसके लिए उसे और अधिकार दिए जाने चाहिए, (४) संसाधन की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए, (५) श्रमिकों के लिए उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय में अलग से पीठ स्थापित हो, (६) पंच-निर्णायक स्वतंत्र हो तथा तकनीकी मामलों का उन्हें अच्छा ज्ञान हो, (७) द्विदलीय सम्मेलन जैसे उपयोगी मंच का औद्योगिक संबंधों को मधुर बनाने में प्रयोग किया जाय। औद्योगिक परिवार की मूल भावना इस माध्यम से प्रकट हो। उद्योग और यूनियन, दोनों एक दूसरे के सहयोगी बनें एक दूसरे को सुविधा और सम्मान दें। (८) न्यून-तम वैधानिक समन्वय और अधिकतम स्वतंत्रता देकर मजदूर वर्ग को देश के प्रति जिम्मेदार बनाया जाय, (९) हर कार्य में सार्वजनिक (सरकारी) क्षेत्र आदर्श उपस्थित करें (१०) सरकारी हस्तक्षेप को सीमित किया जाय, (११) अधिकार और प्रोत्साहन दोनों साथ-साथ चलें, (१२) गैर-मान्यता प्राप्त यूनियन ही नहीं, दूर स्थित श्रमिक की दबी आवाज भी पूरे ध्यान के साथ सुनी जानी चाहिए, (१३) सरकारी हस्तक्षेप उभयपक्षों का समझौता कराने के लिए मार्गदर्शन करें और समझौता न होने पर विवाद को एक ऐच्छिक पंच फैसले के सुपुर्द करा दें, (१४) अफसरों को सुप्रशिक्षित होना चाहिए। वे कर्मचारियों के मामले के दक्ष हों उन्हें शीर्षस्थ अधिकारियों का विश्वास प्राप्त हो ताकि वे निर्णय करने में देर न करें। (१५) कार्यप्रद मूल्यांकन पदोन्नति नीति तथा सेवानिवृत्ति, लाभ योजना आदि जैसे विशिष्ट मामलों को यूनियन और व्यवस्थापकों की एक संयुक्त प्राविधिक समिति को सौंप दिया जाय, जिसमें मान्यता रहित यूनियनों और व्यवस्थापकों के मध्य सुझावों आदि का विनिमय होता रहे।

औद्योगिक संबंधों को मधुर बनाने के उक्त बिन्दुओं के साथ ही कर्मचारियों द्वारा रोष व्यक्त करने पर रोक नहीं लगाई जानी चाहिए, अन्यथा हिंसक रूप से उसकी अभिव्यक्ति होने की संभावना बढ़ जाती है। हड़ताल श्रमिकों का एक वैधानिक अस्त्र है। उसे छीना नहीं जाना चाहिए। हड़तालों को अवैध घोषित करने-कराने की प्रवृत्ति पर रोक लगानी चाहिए। सन् १९६० की केन्द्रीय कर्मचारियों की हड़ताल के पश्चात् सरकार का वादा था "व्हिटले कौंसिल" स्थापित करने का। इसके लिए उसने अनेक शर्तें रखीं और अपनी बुरी नियत का परिचय दिया। कर्मचारियों से यह कहा गया कि वे हड़ताल के अधिकारों को स्वेच्छा से छोड़ दें। फिर बताया गया कि कर्मचारी परिषद् के लिए आज की स्थिति अनुकूल नहीं है। फिर औद्योगिक और अनौद्योगिक का भेद खड़ा करके मजदूरों में फूट डालने की कोशिश की गई। यहां तक कि जब सयुक्त सलाहकार परिषद् बन गई और कार्यवाही की कुछ बातें लिखी जाने लगीं तो कुछ बातें छोड़ भी दी गई। उसके अधिकार को सीमित कर दिया गया। वास्तव में औद्योगिक सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिए संयुक्त सलाहकार परिषद् को और अधिक अधिकार देकर प्रभावी बनाना चाहिए और अंत में सबसे बड़ी बात इस विषय में यह होनी चाहिए कि श्रमिकों का उद्योग में हिस्सा (शेयर) हो, लाभ में वह भागीदार बने तथा संचालक मण्डल में भी श्रमिकों का प्रतिनिधित्व रहे।

यदि हम यह चाहते हैं कि देश की तरक्की हो, उत्पादन में वृद्धि हो, जिसका एकमेव तात्पर्य निम्न वर्ग के जीवन में खुशहाली आने से है, तो उक्त उपायों पर हमें ध्यान देना चाहिए। मजदूर को मजदूर बनाकर, गुलाम बनाकर उसकी अस्मिताओं और अरमानों को कुचलकर किया गया कोई भी प्रयास क्षणिक रूप से सफल भले हो जाये किन्तु टिकाऊ नहीं हो सकता। मजदूर के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने और उसे सम्मान और जिम्मेदारी देकर आदर्श नागरिक बनाने की बेहद आवश्यकता है। तभी मधुर औद्योगिक सम्बन्ध की हम परिपूर्ण और आदर्श कल्पना कर सकते हैं।

सरकार हारी—मजदूर जीता

आज से चालीस वर्ष पूर्व केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों का वेतनमान उनकी सेवा स्थिति एवं अन्य सुविधाएं, देश के निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र में चल रहे अन्य उद्योग-धधों और सेवाओं में कार्यरत कर्मचारियों की तुलना में अधिक आकर्षक और लाभप्रद था। परंतु आज वे सभी क्षेत्रों के कर्मचारियों की तुलना में पिछड़ गए हैं। तृतीय वेतन आयोग की सिफारिशें, जो केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों पर लागू है, दस वर्ष पुरानी हो चुकी है। वह आज की आर्थिक परिस्थिति में कालातीत तथा संदर्भहीन हो चुकी हैं। गत वर्षों में केन्द्र सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग-धधों और सेवाओं, जैसे इस्पात, सीमेंट, कोयला, बिजली, भारत हैवी इलेक्ट्रिकल, हिन्दुस्तान एयरोनाटिक, भारतीय तेल निगम, भारतीय खाद निगम आदि-आदि कुल १८७ उद्योग-धधों और सेवाओं में कार्यरत कर्मचारियों का वेतनमान तीन बार पुनर्निरीक्षित और पुनर्निर्धारित हुआ है।

यह सर्वविदित है कि मंहगाई भत्ते की किश्तें तृतीय वेतन आयोग की सिफारिश के अनुसार स्वयंमेव मिलती रहनी चाहिए थी। किंतु सरकार उसे भी देने में टालमटोल और विलम्ब की नीति अपनाती है। जैसे इस वर्ष में मंहगाई भत्ते की चार किश्तें जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल एक जून से देय थी, किन्तु जुलाई के अंत तक सरकार चुप्पी साधे बैठी रही। जबकि मुद्रास्फीति और मूल्य वृद्धि सरकार निर्मित है, जिसके माध्यम से सरकार कर्मचारियों और उपभोक्ताओं की जेब से प्रतिवर्ष अरबों-खरबों रुपया निकालकर पूंजीपतियों, व्यापारियों, तस्करों, जमाखोरों और अपनी जेब में रख लेती है, परन्तु उसमें से कुछ करोड़ रुपया मंहगाई भत्ता के रूप में देने से कतराती है।

निरंतर मुद्रास्फीति एवं मूल्य वृद्धि के कारण कर्मचारियों के असली वेतन तथा उसकी क्रय-शक्ति में ह्रास होने के कारण उनका जीवन स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है और उनकी क्रय-शक्ति ३७ वर्ष पूर्व प्रथम वेतन अयोग द्वारा दिये गए वेतन के बराबर भी नहीं रह गई है, क्योंकि महंगाई भत्ते के रूप में मूल्य वृद्धि का शतप्रतिशत एवं अंक-दर-अंक समतोलीकरण कभी नहीं हुआ है। मंहगाई भत्ता मूल्य वृद्धि की तुलना में हमेशा कम ही रहा है और पिछड़ता ही गया है। यद्यपि उन्नति तकनीक के कारण कर्मचारियों की उत्पादनशीलता, कार्यकुशलता और कार्यभार बढ़ता रहा है, जिसका लाभ सरकार को हर क्षेत्र में प्राप्त होता

रहा हैं। उदाहरणार्थ रेलवे आदि में लाभांश और पूंजी तथा अन्य विभागों की गतिविधियों में भी वृद्धि हुई, सेवा का प्रसार बढ़ता रहा, जिसके फलस्वरूप सरकार के लाभ में निरंतर वृद्धि होती रही, किन्तु सरकारी कर्मचारियों को उसमें से कुछ भी नहीं मिला है। उल्टे उनके वेतन और जीवन स्तर में ह्रास होता रहा है।

इन सारी परिस्थितियों पर गंभीरतापूर्वक विचार करने और समाधान-कारक मार्ग ढूंढने के लिए भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्ध केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के सभी महासंघों, भारतीय रेलवे मजदूर संघ, भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ, भारतीय डाक-तार कर्मचारी महासंघ और सरकारी कर्मचारी राष्ट्रीय महासंघ के केन्द्रीय कार्यसमितियों की संयुक्त बैठक भारतीय मजदूर संघ के तत्वावधान में २७ और २८ जुलाई, १९८४ को दिल्ली मुख्यालय पर हुई, जिसमें वर्तमान परिस्थिति का आकलन और सरकार की उपेक्षापूर्ण नीति पर विचार करने के पश्चात् कर्मचारियों में व्याप्त क्षोभ को मुखर करते हुए तात्कालिक आर्थिक मांगों को प्राप्त करवाने के लिए २६ दिसम्बर, १९८४ को एक दिन की सांकेतिक हड़ताल का कठोर निर्णय किया गया और उस हड़ताल को सफलता के शिखर तक पहुंचाने के लिए आंदोलन (मोबिलाइजेशन) को तीव्र से तीव्रतर बनाने के हेतु प्रथम चरण के रूप में २८,२९,३० अगस्त, १९८४ को सभी सरकारी प्रतिष्ठानों के सामने तीन दिन की क्रमिक भूख-हड़ताल करने और धरना देने का निर्णय किया गया। ३१ अगस्त को डाक-तार विभाग के कर्मचारियों द्वारा वेतन बहिष्कार करने का निर्णय किया गया। दूसरे चरण के रूप में १४ सितम्बर १९८४ को देश भर के प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शन और जलूस के साथ-साथ विशाल जनसभाओं का आयोजन करने का निर्णय किया गया।

यहां यह उल्लेखनीय है कि जब तक यह निर्णय नहीं किया गया था, तब तक केवल सरकार ही नहीं, बल्कि सरकारी कर्मचारियों के मान्यता प्राप्त अन्य संगठन भी इन मांगों पर चुप्पी साधे रहे और संज्ञाशून्य बने रहे। किन्तु भारतीय मजदूर संघ द्वारा हड़ताल का निर्णय करते ही उनमें भी चेतना आ गई और वे भी इन्हीं मांगों के लिए छिटपुट छोटे-मोटे कार्यक्रमों की घोषणा करने लगे।

इस प्रबल जनमत के कारण जहां केन्द्रीय कर्मचारियों के अन्य श्रम संगठनों ने भारतीय मजदूर संघ द्वारा प्रतिपादित आर्थिक मांगों का दृढ़ता से समर्थन किया, वहीं सरकार को भी सद्बुद्धि आने लगी। वह धीरे-धीरे एक के पश्चात दूसरी मांग स्वीकार करने लगी। सर्वप्रथम सरकार ने रेलवे को ३२ दिन का उत्पादकता बोनस दिया, तत्पश्चात् चार किश्त महंगाई भत्ता देने की घोषणा की। उसके बाद डाकतार विभाग के कर्मचारियों को २५ दिन का उत्पादकता बोनस, प्रतिरक्षा विभाग के कर्मचारियों को ३१ दिन का उत्पादकता बोनस और शेष कर्मचारियों को १८ दिन का तदर्थ बोनस दिया। सरकार के अंतरिम राहत और वेतन आयोग की आंशिक रिपोर्ट प्रकाशित करवाने की मांगों पर विचार करने के लिए अक्तूबर को मध्य में जे. सी. एम. की बैठक बुलाने की इच्छा प्रकट की।

भारतीय डाकतार कर्मचारी महासंघ की मांग पर ई. डी. कर्मचारियों को वेतन, महंगाई भत्तों और अन्तरिम राहत के लाभ पर विचार करने के लिए सरकार ने एक सदस्यीय उच्चस्तरीय समिति नियुक्त किया है। इसके उपरांत औद्योगिक विवाद अधिनियम के अन्तर्गत केन्द्रीय श्रम मंत्रालय के माध्यम से संचार मंत्रालय और भारतीय डाकतार कर्मचारी महासंघ के बीच और पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक तथा पश्चिम रेलवे कर्मचारी परिषद (सम्बद्ध भारतीय रेलवे मजदूर संघ के बीच शेष मांगों पर वार्तालाप प्रारंभ हुआ। पहली बैठक २२ सितम्बर, १९८४ को सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। दूसरी बैठ कविजयादशमी के पश्चात् हुई। जब तक वार्तालाप की प्रक्रिया पूरी नहीं हो जाती, तब तक नियम के अन्तर्गत विधिसम्मत हड़ताल नहीं हो सकती थी।

अतः भारतीय मजदूर संघ ने इन परिस्थितियों पर गहन विचार करते हुए सरकार को एक अवसर देना उचित समझा और प्रस्तावित हड़ताल वार्तालाप के दौरान केन्द्रीय श्रम मंत्रालय के परामर्श पर स्थगित कर दिया।

किन्तु सरकारी कर्मचारियों के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के साथ वेतन समानता के आधार पर वेतन आयोग की रिपोर्ट शीघ्र प्रकाशित करवाने के लिए तथा उनकी अन्य महत्वपूर्ण जायज और बुनियादी मांगों को प्राप्त करने के लिए पूर्वनियोजित आंदोलन (मोबिलाइजेशन) और जनजागरण के कार्यक्रम को जारी रखने का निश्चय पूर्ववत् कायम रहा।

"मजदूरों की मिलिट्री"—मई यूनियन

किसी भी संस्था का प्राण संगठन है। शरीर दुर्बल हो, कमजोर हो, बीमार हो, तो उसमें प्राण सुरक्षित नहीं रहता। संस्था के पास कितने ही अच्छे सिद्धांत हों, लेकिन यदि संगठन बलशाली नहीं है तो वे सिद्धांत हवा में चलने वाले नहीं हैं। बलशाली संगठन ठोस कार्यक्रम के आधार पर बनते हैं। जिस प्रकार व्यक्ति के लिए भोजन आवश्यक होता है। उसी प्रकार संगठन के लिए कार्यक्रम आवश्यक है। अतः सिद्धांत और बलशाली संगठन के अनुरूप कार्यक्रम बनाने पड़ते हैं।

हम लोग ट्रेड यूनियन आंदोलन में हैं। हमारे सामने मजदूरों की जमात आती है, तो यह एक विचारणीय विषय बन जाता है कि इन सबके लिए हम कौन-सा कार्यक्रम दें जिससे ये हमारे साथ जुड़ जाय और हमारे संगठन में सब प्रकार से आत्मसात हो जाय। प्रमुख रूप से चार प्रकार के लोग सामने आते हैं—पहले साधारण मजदूर। दूसरे, अपने सदस्य और समर्थक। तीसरे, अपने प्रमुख कार्यकर्ता। चौथे, कार्यकारिणी के लोग। यदि इन चारों के लिए अलग-अलग प्रकार के कार्यक्रम हमारे पास होंगे तो ये सब संगठन से साथ जुड़ जायेंगे और संगठन बढ़ता जायेगा। अगर हमारे पास चारों के लिए कोई कार्यक्रम नहीं, और हम खास समय आने पर ही सभी का उपयोग करते हैं तो हमारा संगठन हमारे सिद्धांत और कार्य के लायक नहीं बनेगा। वह जैसे आपतस्थिति में किसी को भी जब कष्ट पहुंचता है तो वह कुछ भी करता है, वैसे ही रह जायेगा। वह स्थायी संगठन के नाते खड़ा नहीं होगा।

मजदूरों को आकर्षित करने की दृष्टि से हम लोग हमेशा गेट मीटिंग करते हैं, आम सभा करते हैं, पोस्टर्स लगाते हैं, पर्चे बांटते हैं, और भी नाना प्रकार के कार्यक्रम करते हैं। तो भी वर्ष भर की हमारे सामने क्या योजना है, आम मजदूरों को अपने साथ जोड़ने के लिए हमारे पास क्या कार्यक्रम है यह हमारी आंखों के सामने रहना चाहिए। तभी हम उन सबको अपने साथ ले सकेंगे अगर हमारे पास आम मजदूरों को आकर्षित करने का कार्यक्रम नहीं है तो वह हमारे साथ क्यों आयेंगे। जब हमारे साथ लोग जुड़ जाते हैं, हमारे सदस्य बन जाते हैं तो उनके लिए फिर से अलग कार्यक्रम देना पड़ता है सदस्यता सम्मेलन हो या हमारा एक दिन का अधिवेशन हो, या वार्षिक चुनाव हो हमारे साथ जो जुड़ेगा उसके लिए एक दिन का कार्यक्रम देना है, पिकनिक करना है, आपस में अधिक परिचय करना है, इस दृष्टि से भी हमको कार्यक्रम रखने पड़ते हैं। फिर तीसरा वर्ग आता है अपने प्रमुख कार्यकर्ताओं का। क्योंकि उसी में से दायित्व संभालने और अतिरिक्त समय देने वाल पूर्णकालिक लोग निकलते हैं, अतएव इन कार्यकर्ताओं के ट्रेड यूनियन के कार्य के बारे में, कानून और नियमों के बारे में सब प्रकार से सक्षम बनाने और समर्पित भाव से संगठन के साथ उनका निरंतर विकास करने के लिए शिक्षावर्ग और सेमीनार का आयोजन करने के लिए हम लोगों को अलग से सोचना पड़ता है। इसके बाद अपनी कार्यसमिति के लोग होते हैं। उनको पूरा कार्यक्रम मिलते रहना चाहिए। जहां वह काम करते हैं वहां की समस्या उनके सामने लाते रहना चाहिए। वहां के लोगों के साथ उनके प्रत्यक्ष सम्बन्ध बने रहना चाहिए। सदस्यता अभियान चलता रहना चाहिए, उनको जिम्मेदारी सौंपना चाहिए। वास्तव में कार्यकारिणी ही सब प्रकार से यूनियन की निर्णायक रहती है। अत: उनको सब प्रकार से जिम्मेदार बनाना चाहिए। यदि हमने उनको आंख से ओझल कर दिया तो वे आगे नहीं बढ़ेंगे। कोई जिम्मेदारी नहीं लेंगे। इन चारों प्रकार के लोगों को देने लायक अगर हमारे पास ३६५ दिन के लिए कार्यक्रम है, जिसकी हमने पहले से योजना बना ली है तो फिर हमको छोड़कर वे कहीं नहीं जायेंगे।

मजदूर क्षेत्र के लिए कार्यक्रम देते समय नित्य के कार्यक्रम देने पड़ते हैं। इसके लिए यह अपेक्षित है कि वे प्रतिदिन कार्यालय आया करें ड्यूटी से घर जाते समय या घर से ड्यूटी पर आते समय एक बार कार्यालय में उन्हें आना चाहिए। जरूरत हो या नहीं, कार्यालय से उनका सम्बन्ध बना रहना चाहिए। दोपहर के भोजनावकाश में भी एक निश्चित स्थान पर जहां आराम से बैठ सकते हैं, सबसे अपेक्षा है कि वे वहां मिला करें। ये दो बातें हैं जो हम नित्य कर सकते हैं। आपस में मिलने-जुलने और कार्यालय में आने से बड़ा भारी मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। लोगों का उस ढंग में विकास होता है। नैमित्तिक कार्यक्रम भी समय-समय पर होते रहना चाहिए। सम्मेलन, शिक्षावर्ग तथा अन्य अनेक प्रकार के कार्यक्रम हो सकते हैं। ज्वलंत प्रश्नों पर जो कार्यक्रम होते हैं, उनसे स्थाई संगठन का निर्माण नहीं होता। उस समय वे कष्ट के कारण आते हैं। वह कोई ध्येयवादी लोगों का संगठन नहीं होता।

समस्या सामने आने पर जो लोग हमसे जुड़ते हैं, या समस्याओं के कारण जो लोग हम लोगों को मिलते हैं, वे समस्याओं का निराकरण होते ही चले भी जाते हैं। इस प्रक्रिया में

से स्थायी ध्येयवादी कार्यकर्ता निर्मित नहीं होंगे। हमारे कार्यक्रम के माध्यम से लोगों का हमसे मिलना–जुलना, आना-जाना होता है, वह उनमें भाग लेता है कि नहीं, यह देखना चाहिए। फिर कार्यक्रम देते समय हमको यह भी देखना चाहिए कि हमारी यूनियन के लिए क्या आवश्यक है। बंद कमरे में बैठक करने का परिणाम अलग होता है। नारे लगाते हुए जलूस बनाकर चलने का परिणाम अलग होता है। केवल एक जगह खड़े होकर नारा लगाने का परिणाम कुछ और ही होता है। हरेक कार्यक्रम में हम क्या देना और क्या प्राप्त करना चाहते हैं, इसको पहले सोचना चाहिए। यदि हमको अपने लोगों की झिझक समाप्त कराना है। उनको सामने लाना है, तो कार्यक्रम के आयोजन के समय हमको यह सोचना चाहिए कि हम जो कार्यक्रम दे रहे हैं वह उपयुक्त और उपयोगी है या नहीं। बंद कमरे में केवल बैठक करने वाले बाहर कुछ नहीं कर सकते हैं। वे नारा भी नहीं लगा सकते। उनको बड़ी झिझक रहती है। बड़ा भय रहता है। वे कमरे में ही कार्य कर सकते हैं, उनकी संख्या चाहे जितनी क्यों न हो। वहां संस्कार नहीं पड़ता। संस्कार तो कार्यक्रम के माध्यम से मिलता है। जो यूनियनें आंदोलन का कार्यक्रम नहीं लेतीं, प्रदर्शन के कार्यक्रम नहीं लेतीं, नारा नहीं लगवातीं, वहां की यूनियन के लोग बहुत ही डरपोक होते हैं, किसी काम के नहीं होते। कोई भी संकट आया तो वे लोग अपने बचने-बचाने के चक्कर में रहते हैं। वे मजदूरों का नेतृत्व नहीं कर सकते। कार्यक्रमों के माध्यम से हम नेतृत्व के गुणों वाला कार्यकर्ता निर्माण करते हैं। अगर हमारे पास ऐसे कार्यक्रम नहीं होंगे, तो कुछ भी निर्माण नहीं होगा। हम अपने संगठन को जिस प्रकार से चलाना चाहते हैं, नहीं चला सकेंगे। हमारे संगठन में जो लोग आ रहे हैं, वह बहादुर बनें, संघर्षशील बनें सब प्रकार की समस्याओं का सामना करने के योग्य बनें। यह कार्य कार्यक्रमों के द्वारा ही हो सकता है।

यह सबको पता है कि यहां पर अंग्रेजों ने दो सौ वर्ष तक राज्य किया। यहां की जनसंख्या उस समय ३० करोड़ थी और पूरे ग्रेट ब्रिटेन की ५ करोड़। वे सभी पांच करोड़ लोग यहां नहीं आए थे। पांच हजार की पलटन ने यहां शासन किया और लगातार दो सौ वर्ष तक शासन किया। उन्होंने यह देखा कि सारे लोगों में कितने लोगों को प्रोग्राम दिया जा सकता है। प्रोग्राम दे–दे करके उन्होंने हिन्दुस्तान के लोगों पर, हिन्दुस्तान के लोगों द्वारा शासन किया। उनका सब कुछ ठीक चलता था। गांवों में जो चौकीदार रहता था, उसको साल भर के लिए केवल वर्दी देते थे और वह साल भर रोज हाजिरी देता था। गांवों का मुखिया कोई सरकारी नौकर नहीं होता था, लेकिन एक महीने में वह एस०डी०एम के सामने या तहसीलदार के सामने सफेद कपड़ा पहनकर हाजिरी देने जाता था और गांव में जाकर कहता था, हमारा मालिक, हमारा साहब बड़ा दयालु है, हम लोगों से बड़ी बातचीत की। वह भी अपने आपको सरकार का आदमी समझता था।

पुलिस. और सेना वालों को तो कार्यक्रम दिया ही, जो कोर्ट-कचहरी में वकील, क्लर्क, पेशगार रहते हैं, उनको भी कार्यक्रम दिया। सप्ताह में एक दिन उनकी लाईन लगवाते थे और साहब जब आता था तो उनसे सलामी लेता था। यहां तक कि जो कैदी अपराधी बनकर जेलों में जाते थे, उनको भी जेल सुपरिंटेंडेंट रविवार के दिन परेड कराता था। सब अपनी

तख्ती और तसला लेकर दो पंक्तियों में खड़े रहते थे। सुपरिंटेंडेंट, जिसके सामने जाता था वह सैल्यूट मारता था। चाहे पक्के हों या हैबिचुअल हों उन्हें भी प्रोग्राम दिया। केवल इतना ही प्रोग्राम नहीं दिया तो जेलों में जो वार्ड इंचार्ज रहते हैं, वह कैदियों को कम मारते हैं, लेकिन जो पहले वाले कैदी रहते हैं, वह ज्यादा मारते हैं।क्योंकि प्रोग्राम के द्वारा सब प्रकार की आज्ञा पालन करने की उनकी आदत बना दी थी। अंग्रेजों ने लोगों को प्रोग्राम दे-देकर के यहां के लोगों पर डंडे बरसाने, जेलों में डालने, गोली मारने का काम करवाया। प्रोग्राम में बड़ी भारी शक्ति होती हैं। प्रोग्राम ही किसी संगठन के प्राण है। इस प्रोग्राम के द्वारा जहां चाहें संगठन को पहुंचा सकते हैं। बहादुर लोगों का भी संगठन खड़ा कर सकते हैं और कमजोर और बुजदिल लोगों का भी संगठन बना सकते हैं।

हमारा काम करने का तरीका क्या है? हम लोग ट्रेड यूनियन आन्दोलन में क्यों आए हैं? ट्रेड यूनियन आन्दोलन में पहली शर्त है कि कर्मचारियों की समस्या को हल करना। परन्तु महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि किस विधि से हल करना। पहली शर्त है कर्मचारियों के द्वारा हल करना। किन्तु ट्रेड यूनियन आन्दोलन की इस पहली प्रमुख बात पर हम गौर नहीं करते। हम यह सोचते हैं कि कर्मचारियों की समस्या हल होनी चाहिए। चाहे जैसे भी हो किसी न किसी प्रकार से इसे संकट से मुक्त करवाना चाहिए। यहीं ट्रेड यूनियन आन्दोलन के उद्देश्य को हम समाप्त कर देते हैं सबसे पहली शर्त है—समस्या हल हो, लेकिन कर्मचारियों के बल पर हल हो, यह तथ्य हमारी आंखों से ओझल हो जाता है और संगठन दूसरा मार्ग अपना लेता है।

हम चाहते हैं कि ट्रेड यूनियन आन्दोलन व्यायाम शाला और अखाड़े के रूप में हो। यहां आकर लोग पहलवान बनें, याने ऐसे वीर-बहादुर बनें जिसे देखकर रास्ते पर चलने वाले आदमी भी डरें। मैनेजर और सरकार भी डरें। किन्तु हम लोगों ने ट्रेड यूनियन आन्दोलन का रूप बदलकर अखाड़े से अस्पताल बना दिया है। यहां जो मरीज होगा, जिसको बुखार होगा, जिसको चार्जशीट मिलेगी, जो निलंबित होगा, निष्कासित होगा, जिस पर किसी प्रकार की आपत्ति—विपत्ति आएगी वह यहां (ट्रेड यूनियन में) आयेगा। हमने भी उत्तर लिखाना, मुकदमा लड़ना, वकालत करना शुरू कर दिया है। एक प्रकार से ट्रेड यूनियन आन्दोलन का उद्देश्य ही समाप्त कर दिया है। जब हमने ही मार्ग बदल दिया है तो शक्ति की क्या आवश्यकता है। फिर तो कायदे-कानून, नियम, उपनियम की ही जरूरत रहती है।

यदि हम इसको अखाड़े के रूप में परिवर्तित करते तो कर्मचारी अपने बलबूते पर समस्या को हल कर लेता। लेकिन जब हम लोगों ने इसको अस्पताल बना दिया है तो जब झंझट आते हैं तो लोग ट्रेड यूनियन के पास आते हैं। हम भी सोचते है कि जब कष्ट या मुसीबत कर्मचारियों पर आयेंगी तभी वह हमारे पास आयेगा। जब कोई संकट ही नहीं होगा तो कौन हमारा सदस्य बनेगा। कौन यूनियन में आएगा। हम ऐसा सोचते हैं, और कर्मचारी भी ऐसा ही सोचता है कि हम क्यों आएं। होना तो यह चाहिए कि हमारे डर से, हमारे बल से, हमारे आन्दोलन से, मैनेजमेंट डरे, मजदूर प्रतीक्षा करते रहते हैं कि जब

मैनेजमेंट को कोई आक्रमण हो तब यूनियन के पास जायें। और जब मैनेजमेंट को यह मालूम हो जाता है कि यूनियन ने बचाव का मार्ग अपना लिया है तो उसे बड़ा अच्छा लगता है और वह एक संकट का निवारण नहीं होता उसके पहले ही दूसरा संकट पैदा कर देता है। जिससे यूनियन उसी में फंसी रहे और आगे की लड़ाई की बात ही न सोच सके।

हम लोग अस्पताल के काम में ही ६० वर्ष से लगे हुए हैं। जब से ट्रेड यूनियन आन्दोलन चला है, तब से हम यही कर रहे हैं कि मैनेजमेंट अथवा सरकार की तरफ से कुछ न कुछ हम पर विपत्ति आती है और उस विपत्ति का निवारण करने के लिए हम ट्रेड यूनियन आन्दोलन का उपयोग करते हैं। पहले संकट का निवारण होता नहीं तब तक दूसरा संकट खड़ाकर दिया जाता है। हमारी सारी लड़ाई अपने बचाव की हो गई है। जब मजदूर को मालिक सताता है तब वह दवा कराने के लिये यूनियन रूपी अस्पताल में आता है। ये एक-एक करके मारे जाते हैं और हम उसकी दवा करने में ही सारी जिंदगी बिता देते हैं। अतएव हम लोगों को यह भी सोचना है कि यह बहुत ही आक्रामक, काम है। शक्ति के बल पर अपनी समस्याओं का निराकरण करने का काम है। हम लोगों ने इसको अस्पताल के रूप में व्यवहारित करके बचाव वाली चीज कर दी है। यह एक ऐसा संकट है कि अगर हम लोग चार सौ वर्ष तक और ट्रेड यूनियन आन्दोलन में रहें, तो भी उससे कुछ बनने-बिगड़ने वाला नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि मैनेजमेंट हम लोगों से डरें और वह अपने बचाव का उपाय सोचें।

हम अपने घर में देखते हैं कि यदि आप अपने बच्चे से काम न लें, अपनी पत्नी से काम न लें, तो कुछ दिन में वह आपसे काम लेना शुरू कर देंगे। यह मनुष्य का स्वभाव है। एक वकील साहब हमारे मित्र हैं। वह अपने बच्चों से काम नहीं लेते। हम लोग जाते हैं तो पानी और चाय लाना हो तो वहीं दौड़-दौड़ कर लाते हैं। हम लोगों ने कई बार मना किया कि ऐसा मत कीजिए। वे कहते, रहने दीजिए, बच्चे हैं, खेल रहे हैं। एक दिन हम पहुंचे, छोटे बच्चे को हमने कहा कि बच्चे खेल बन्द कर, एक गिलास पानी ला। वकील साहब पानी लाने चले गये। बोले रहने दीजिए, मैं ही ला रहा हूं। जब चलने लगे तो छोटा बच्चा बोला, पिता जी हमारे लिए भी एक गिलास पानी ले आइए। फिर दोनों बच्चे जो अब तक चुप थे, वे भी कहने लगे कि हमारे लिए भी ले आइएगा। स्थिति यह है कि स्कूल जाने से पहले सब गंदे कपड़े बाथरूम में डाल देते हैं और वे घिसते-बैठते हैं सब्जी वे लाते हैं, दूध वे लाते हैं और अब यह कहने लगे हैं कि हमारे लड़के तो बहुत बदमाश हैं, बदमाश क्या हैं, आपने उन्हें बदमाश बना दिया है।

एक हमारे इन्जीनियर साहब हैं, बड़े पत्नी भक्त हैं। पहले तो भक्त नहीं थे, लेकिन धीरे-धीरे देखा कि भोले पति है। इनकी पत्नी बहुत चतुर है। ये बड़े व्यस्त रहते हैं। कभी ट्रेड यूनियन आंदोलन में जाते हैं, कभी और काम में जाते हैं। इनकी श्रीमती सिर दर्द का बहाना लेकर बैठ जाती है। ये बेचारे स्टोव जलाते है, चाय बनाते हैं, खुद चाय पीते हैं, उसको भी पिलाते हैं। उसे घर में कोई काम नहीं है, वह बैठी रहती है। एक दिन कहने लगे कि जब से

हमारे घर आई है, बड़ी बीमार रहती है। जबकि ऐसी बात नहीं है। वह दिन भर बोलती रहती है। वह कार्यालय के ऊपर रहते हैं, इसलिए सब सुनाई देता है। जब उनके घर आने का समय होता है वह लेट जाती है। कभी उसका पैर दर्द करता है, तो ये दबाते बैठते हैं। उन्होंने एक दिन पूछा तो हमने कहा कि उसे तुम्हारा ही रोग है, उसको और कोई रोग नहीं है। वह परेशान हो गये। हमने कहा कि कभी तुम भी सिर दर्द लेकर पड़ो न। आते ही एक दिन आंख ऊपर-नीचे करना शुरू कर दिया। न जूता उतारा, न कोट उतारा। पत्नी ने चिल्लाना शुरू कर दिया कि देखिए इनको क्या हो गया। हमने कहा कि इनको बहुत काम करना पड़ता है। थक जाते हैं। अब ऐसा ही होगा। अब बीच-बीच में ये बीमार पड़ने लगे और वह अच्छी हो गई।

सवाल यह है कि जब आप मैंनेजमेंट को तंग नहीं करोगे तो मैंनेजमेंट आपको तंग करेगा ही। हमेशा एडवांस तंग करने के लिए हमने उनको अपनी ताकत दिखाने के लिए क्या किया है। हमने कुछ नहीं किया। गेट मीटिंग नहीं की। अपनी मांगे नहीं रखी। मैंनेजमेंट का घेराव नहीं किया। इसलिये व्यवस्थापक महोदय बोले कि आपके लोग बहुत अच्छे हैं। हम समझ गये कि अच्छे क्या है। कार्यकर्ता को भी लगता है कि उसे कुछ करना नहीं पड़ता। व्यवस्थापक उसे बाइज्जत कुर्सी देते हैं। इसी में वह प्रसन्न रहता है। जब मैंनेजमेंट वहां के कार्यकर्ताओं की हम लोगों से प्रशंसा करता है तो हम समझ जाते हैं कि हमारा कार्यकर्ता उन्हें तंग नहीं करता होगा इसलिए कहते हैं कि आपका कार्यकर्ता बहुत अच्छा है, हमारा उसका बड़ा अच्छा तालमेल है। हमें पता चल जाता है कि क्या तालमेल है। कुछ करता ही नहीं होगा। ट्रेड यूनियन आंदोलन को उसने बिल्कुल जेब की चीज बना लिया होगा। अच्छा तो यह होता कि हम लोग जाते तो वह पहले ही उसकी शिकायत करता कि भाई, यह तो बहुत खराब आदमी है। इसने हमको तंग कर रखा है। तब हम समझते कि वह कुछ करता है। अच्छा कार्यकर्ता है। संगठन के लिए यह आवश्यक है। अगर ऐसा मार्ग नहीं अपनाया जाएगा तो कुछ नहीं बनेगा।

सेना में अगर किसी ने कहा कि इतने मर गए, हमारे इतने मित्र चले गये, कैप्टन चला गया, ब्रिगेडियर चला गया, लैफ्टिनेंट चला गया तो लोग क्या कहेंगे। मजाक करेंगे कि या जो तुम्हारा मित्र सेना में था, यह तो मरने-मारने के काम में ही था। देश के काम में तो ऐसा होता ही है। हम ट्रेड यूनियन आंदोलन में आगे बढ़ कर काम करें और लोग कहें कि इतने निष्कासित हो गए, इतने निलम्बित हो गए, इतनों को चार्जशीट दी गई तो समझिए कि काम हो रहा है। यह मजदूरों की सेना इसलिए तो बनी है। मैंनेजमेंट आगे रहने वाले कार्यकर्ता पर आक्रमण नहीं करेगा तो फिर किस पर करेगा। जो लोग पीछे हैं, वह उन पर हमला क्यों करेगा। उनसे मतलब क्या है मैंनेजमेंट का। यह तो चुनौती स्वीकार करने वालों की संस्था है।

कौन सी सेना कितनी बहादुर मानी गयी है, उसका आधार है उसने कितनी लड़ाइयां लड़ी हैं, कितने लोग हताहत हुए हैं। उस सेना के विषय में कहते हैं कि उसने बाहर, विदेश में जा-जाकर लड़ाइयां लड़ी हैं। यह अच्छी सेना है। इनका कमांडर चीफ यह रहा है, इनका

ब्रिगेडियर यह रहा है। इनको बहुत सी लड़ाइयों का अनुभव है। अब कोई कहे कि साहब हमको ट्रेड यूनियन का कार्य करने के लिए सुरक्षा दीजिए तब ट्रेड यूनियन आंदोलन करेंगे। हमको चार्जशीट मिल जाती है, हमारा ट्रांसफर कर दिया जाता है, हमारा निलंबन हो जाता है, हम निष्कासित हो जाते हैं, इसलिए हम काम कैसे करें, तो यह बड़ी अजीब बात है। ट्रेड यूनियन आन्दोलन में आये हो, मजदूरों की सेना में आये हो तो आप पर मैनेजमेंट आक्रमण नहीं करेगा तो किस पर करेगा। हमारी यूनियन की ताकत ही हमारा सब कुछ है। दूसरी गारंटी क्या है? हमारी यूनियन ही हमारी गारंटी है। हमारी ताकत इस पर निर्भर है कि हमने यूनियन को कैसे बनाया है। हम दाएं-बाएं देखें कि हमारी ताकत किसी और जगह है तो कुछ बनेगा ही नहीं। ताकत तो हमारी अपनी ही है।

हमें यह सोच करके चलना चाहिए कि कोई भी मांग पत्र बनाते समय मांग पत्र अच्छा है, बुरा है, यह गौण चीज है प्रमुख चीज है जो मांग पत्र हमने बनाया है, कर्मचारी उसको पूरा कराने के लिए कहां तक तैयार है। यदि पूरा कराने के लिए तैयार हैं तो मांगे पूरी होंगी और नहीं तैयार हैं तो पूरी नहीं होंगी। पहले कर्मचारियों को संघर्ष के लिए तैयार नहीं किया और कहते हैं, साहब, हमने मांग पत्र दिया था। मिनिस्टर साहब से उसका उत्तर आया क्या? अरे, उसका क्या उत्तर आयेगा। इसके पीछे कर्मचारी है क्या? अगर हैं तो पूछने की आवश्यकता नहीं है। जब उस मांग के पीछे जन आंदोलन खड़ा है और सारे कर्मचारी उसे पूरी कराने के लिए तत्पर हैं तो मांग पूरी होगी ही। मैनेजमेंट आपको बुलाकर वार्ता करेगा। यदि आपके पीछे कोई नहीं है, आप केवल मांग पत्र अच्छी भाषा में बना कर लाते हैं और कहते हैं कि इसको केन्द्रीय कार्यालय को भेज दीजिए तो उसका क्या बनेगा? अरे, उसको लेने वाला भी कोई है क्या? उसके पीछे मजदूरों की ताकत है क्या? सारा खेल तो इस बात पर निर्भर करता है कि ताकत है तो मांग पूरी होगी। मैनेजमेंट के पास यदि रिपोर्ट पहुंचती है कि इस मांग पर कर्मचारी आंदोलित हैं, तो बड़े आदर के साथ आप बुलाए जाओगे। आपको रिमाइंडर देने की जरूरत नहीं पड़ेगी। लेकिन यदि आपने यह रास्ता लिया है कि आपने तो मांग पत्र बड़ा वाजिब बनाया लेकिन उसके लिए मजदूर तैयार नहीं हैं और सोचते हैं कि हमारा काम ऊपर-ही-ऊपर हो जायेगा तो कहीं दुनिया में इस प्रकार काम हुआ है क्या?

ट्रेड यूनियन आंदोलन की सदस्यता केवल पैसे से ही नहीं होती। सदस्य को समय भी देना पड़ता है। यूनियन के आह्वान पर हड़ताल और आंदोलन भी करना पड़ता है। जोखिम उठाने के लिए तैयार रहना पड़ता है। ये तीनों बातें होने पर ही यूनियन की सदस्यता पूरी होती है।

पहली बार इंजीनियरिंग उद्योग में जब अवार्ड आया था तो सबका वेतन डेढ़-डेढ़ सौ रुपया मासिक बढ़ा था। उस समय मुझे एक जगह जाने का अवसर मिला। मैंने कहा कि तुम लोग एक मीटिंग तो करो। डेढ़-डेढ़ सौ रुपये मासिक पा सकते हो। उन्होंने कहा हम मीटिंग करें, यहां तो मीटिंग की परिपाटी ही नहीं है। मैंने कहा तुम लोगों का हर महीने डेढ़-डेढ़ सौ रुपया बढ़ जाएगा और तुम मीटिंग करने के लिए भी तैयार नहीं हो। बड़ी मुश्किल से मीटिंग ली।

मैंने कहा कि शाम को मीटिंग है, दोपहर में लंच मत लो। जनरल मैनेजर के आफिस के सामने सात सौ लोग एक साथ एकत्रित हो जाओ। अपने-अपने खाने के डिब्बे रख दो बात करने में, बोलने में बड़ी ताकत मिल जाएगी। लगेगा कि इस मांग के साथ सारे कर्मचारी है। सात सौ लोगों में से ३६ डिब्बे लंच के वहां थे। जब वार्ता करने गए और हमने कहा साहब इस मांग के लिए कर्मचारी इतने आतुर हैं कि आज दोपहर का लंच ही नहीं लिया तो उन्होंने कहा कि मैंने चपरासी भेजकर गिनवा लिया है। आपके साथ केवल ३६ लोग हैं। उन्होंने वार्ता करने से इंकार कर दिया। इस प्रकार कैसे काम चलेगा ? जो लोग थोड़ी देर के लिए एक समय का लंच भी नहीं छोड़ सकते उनकी मांग क्यों पूरी की जाय।

यहां सारा चक्कर ही कर्मचारी की तैयारी का है। अगर कर्मचारी तैयार है तो आपकी मांग पूरी होगी, कर्मचारी तैयार नहीं है तो आप की मांग नहीं पूरी होगी। मेले में हजारों लाखों लोग जुटते हैं। किन्तु यदि दस लोग भी लाठी चलाएं तो पूरी भीड़ भाग जाती है। अब लोग कहेंगे कि लाठी चलाने वाले तो दस लोग ही थे। हजारों लाखों लोग क्यों भाग गए ? क्योंकि उनमें अपनत्व नहीं था, एक दूसरे के प्रति स्नेह नहीं था, विश्वास नहीं था, आदर नहीं था, इसलिए सब भाग गए। ताकत केवल संख्या में नहीं होती। बल्कि कार्यकर्ताओं के साहस, त्याग, बलिदान, अपनत्व, स्नेह, विश्वास और जोखिम उठाने की तत्परता में निहित है। हमने ट्रेड यूनियन आन्दोलन यह समझ कर चलाया है कि जितना बड़ा अन्याय मैनेजमेंट और सरकार की तरफ से होगा, उतने ही जोर से हम उसके खिलाफ सारे कर्मचारियों को जुटा सकेंगे। छोटे अन्याय पर एक जुट होना असम्भव लगता है। लेकिन बड़े अन्याय पर सारे कर्मचारियों को उद्वेलित करके खड़ा करने में आसानी होती है। ट्रेड यूनियन आन्दोलन की यह एक साख, एक विचारधारा बननी चाहिए कि जितना बड़ा अन्याय होगा, उतना ही बड़ा प्रतिरोध भी होगा।

अभिमन्यु मर गया तो पांडव रोने लगे। कहने लगे कि जब हमारा प्यारा बेटा ही नहीं रहा, तो हम राजपाट लेकर क्या करेंगे। इसे कौरवों को ही लिये रहने दो। हमको नहीं चाहिये। फिर भगवान कृष्ण आए और पूछा कि तुम लोग क्या कर रहे हो। उन्होंने कहा कि हमें अब कौरवों से राज्य नहीं लेना है। क्योंकि जिस बेटे के लिए गद्दी लेनी थी वही मर गया। भगवान बोले तुम लोग घोर नर्क में जाओगे क्योंकि तुम बुजदिल हो कायर हो। सात महारथियों ने छलपूर्वक तुम्हारे बेटे को मारा है उनको तुम लोग नेस्तेनाबूद नहीं कर सकते, क्या तुम लोग इतने कायर और बुजदिल बन गए हो। अब वहीं पांडव जो राज्य छोड़ने जा रहे थे लड़ने के लिए तैयार हो गये और १८ अक्षौहणी सेना के साथ कौरवों को मारकर पूरा राज्य प्राप्त कर लिया।

एक इस्पात कारखाने में यूनियन का मंत्री टर्मिनेट हो गया। जब मैं वहां गया तो लोगों ने कहा कि हम कार्य समिति की बैठक तो करा सकते हैं, लेकिन गेट मीटिंग नहीं करा सकते। हम लोगों को बड़ा डर लग रहा है। हमारा मंत्री ही टर्मिनेट हो गया है। मेरे कहने पर उन्होंने मुश्किल से गेट मीटिंग रखी। मैंने पूछा वह क्यों टर्मिनेट हो गया ? क्या चोरी की

थी या किसी की लड़की भगाई थी ? बात क्या है, तुम लोग अपना मुंह क्यों छिपा रहे हो ? वे कहने लगे कि उसने हम लोगों की मांग को लेकर जनरल मैनेजर का घेराव किया था, इसलिए टर्मिनेट हो गया है । मैंने पूछा मर्द का काम किया था न । तुम्हारा मंत्री तो मर्द का काम करे और तुम लोग मुंह छिपा कर बैठ जाओ, गेट पर भी न आओ, मुल्जिम बने हो, जबकि होना उल्टा चाहिए था । उसने तुम लोगों के लिए अपनी नौकरी गवां दी, तुम उसके, परिवार की परवाह तो करते—एक-एक रुपया हर महीने देते, इस पर कुछ दिनों तक कई हजार रुपये हमारे दफ्तर में आने लगे ।

सवाल यह है कि जिस समय हम उनको जगा सकते हैं, सारे कर्मचारियों को अत्याचार के खिलाफ उभार सकते हैं हम भी उस समय रोना शुरू कर दें क्या ? नहीं, हमें इससे घबड़ाना नहीं चाहिए, क्योंकि यह चुनौती स्वीकार करने वाली संस्था है । जितना बड़ा अन्याय होगा उतने ही बड़े पैमाने पर हम उसके खिलाफ सारे मजदूरों को उभार करके, जागृत करके, खड़ा कर देंगे । जब तक यह भाव हमारे मन में नहीं आता तब तक हम संगठन कैसे खड़ा कर पायेगा । हम यह समझकर चलें कि आन्दोलन न्याय प्राप्ति का साधन है । संस्थाएं कानून पालन करने वाली होती हैं । लेकिन दुनिया का कोई भी कानून, नियम, न्याय की कसौटी पर ठहर ही नहीं सकता । हम लोग जानते हैं कि भारत का संविधान ४७ बार बदला जा चुका है तो क्या ट्रेड यूनियन का कानून नहीं बदला जा सकता? जब तक न्याय के बराबर हमारा कानून, नियम नहीं पहुंचता तब तक हमारे चुप रहने का सवाल नहीं आता है । वह जो कानून और नियम बना है, जो स्टेंडिंग आर्डर बना है, हम उसी के पालन करने में सारे मजदूरों को दिशा दे दें तो फिर हमको मिलने वाला क्या है ? अनुचित कानून और नियम का हम उलंघन करेंगे, उसमें संशोधन कराएंगे । न्याय प्राप्त के और भी साधन हैं । कानून और नियम का पालन करने में हम ट्रेड यूनियन आन्दोलन को ले जाएंगे, तो हमको कुछ भी प्राप्त नहीं होगा । हम तो न्याय प्राप्ति के लिए इस क्षेत्र में आए हैं । यह जो सारा संगठन चल रहा है उसे सारे मजदूरों को दिशा देनी है । कहां विषमता है ? कहां, किस प्रकार से शोषण हो रहा है ? गरीब तबके के साथ क्या-क्या अन्याय हो रहा है ? इसके बारे में हम नहीं विचार करेंगे तो और क्या करेंगे ? कानून बन गया है तो वह क्या कोई वेद वाक्य है । कानून तो रोज बनता-बिगड़ता रहता है । हम भी तो अपनी लड़ाई, अपने ढंग से करें ।

कुल मिलाकर के हमारे सामने एक दृष्टि रहे कि हमको एक पुरुषार्थी यूनियन के रूप में सबको संगठित करना है, स्वावलम्बी संगठन खड़ा करना है—पैसे की दृष्टि से, बल की दृष्टि से, सब दृष्टि से ट्रेड यूनियन आन्दोलन को अपने पैरों पर खड़ा करना है । यह सब तभी हो सकता है, जब हमारे मन में क्या है, पहले हम निर्धारित कर लें ।

हमारे बहुत से कार्यकर्ता अकेले-अकेले काम करते हैं । इस पद्धति से काम कैसे खड़ा होगा । आदमी जिस दिन भगवान को प्यारा हो जाता है उस दिन भी उसके लिए चार लोग लगते हैं । लेकिन वह सदस्य अकेले बनाएगा, समस्या से अकेले लड़ेगा, मैनेजमेंट से अकेले मिलेगा तो कैसे काम चलेगा ? ट्रेड यूनियन आन्दोलन में हमेशा यह सोचना पड़ता है कि कितने अधिक

लोगों में काम बांटा जा सकता है। फिर चैकिंग की जाती है कि जिसे जो काम दिया है, वह करेगा कि नहीं करेगा। उसको दिक्कत कहां है, कहां उसको गाइड किया जाये। उसको पूरा सहयोग दिया जाता है। इस पद्धति से हम लोग जिम्मेवार कार्यकर्ताओं का निर्माण करते हैं। एक यूनियन के मंत्री ने कहा कि हम किसी को रसीद-वसीद नहीं देते। क्यों ? वहां लोग काफी बेईमान हैं। पैसा तो देते ही नहीं रसीद भी गायब कर देते हैं। अब अकेले उसकी क्या स्थिति है ? वह कर ही क्या सकता है ? कुछ नहीं। पैसे के चक्कर में वह संगठन ही खत्म हो जाता है और हिसाब-किताब तो वैसे ही साफ है। हमेशा जोखिम उठाकर दस लोगों को जोड़ना है, दस लोगों से काम लेना है। कई नेता अकेले जाते हैं और मंच पर बोलना शुरू कर देते हैं। दूसरों को मंच पर आने ही नहीं देते। समझते हैं कि मैं अच्छा बोलता हूं इसलिए मैं ही नारा लगाऊंगा, मैं ही अध्यक्षता करूंगा, मैं ही प्रस्तावना करूंगा और मैं ही सबको धन्यवाद दे दूंगा।

हमें संगठन खड़ा करना है, ग्रुप निर्माण करना है, मास्टर माइंड ग्रुप निर्माण करना है। हरेक यूनियन के पास कम से कम २५ प्रमुख कार्यकर्ताओं के ग्रुप का निर्माण करना है। आज चार्जशीट का उत्तर तुम लिखो, आज भाषण तुम दो, आज वार्ता में तुम जाओ, हम ही सब अकेले करना शुरू कर देंगे तो निर्माण कैसे होगा ? आदमी हमेशा काम करने से सीखता है। एक अच्छा डाक्टर जो बहुत अच्छा इंजेक्शन लगाता है वह एक दिन में नहीं सीख कर आता। पुस्तक पढ़-पढ़कर नहीं सीखा जा सकता। ट्रेड यूनियन आन्दोलन वाले यदि यह सोचें कि हमने तो कभी चार्जशीट का उत्तर नहीं लिखा है, हम क्यों लिखें, जो अच्छा जानकार है, उसी से लिखवायें, तो फिर काम नहीं बनेगा।

आपको अच्छा कार्यकर्ता बनना है तो जोखिम उठाकर काम करना पड़ेगा। तैरना सीखना है तो हम यह न सोचें कि मैं तो मिहिरसेन की पुस्तक पढ़कर तैरना सीख जाऊंगा। इस प्रकार नहीं सीख पायेंगे। उसके लिए आपको तालाब में कूदना पड़ेगा, नदी में कूदना पड़ेगा, डुबकी लेनी पड़ेगी, पानी पीना पड़ेगा, तैरना सीखते समय जब मरने की स्थिति आ जाती है तो ही लोग तैरना सीखते हैं। इसी प्रकार यदि हमको ट्रेड यूनियन आन्दोलन का अच्छा कार्यकर्ता बनना है, सही दिशा देनी है तो खतरा उठाना पड़ेगा।

एक जगह पर मारपीट बहुत होती थी। परन्तु वहां के कार्यकर्ता पुलिस थाने में नहीं जाते थे। जिला मंत्री एक वकील थे। उनके पास ही जाते थे। एक बार रात्रि के दो बजे मारपीट हो गई। वे लोग वकील साहब के यहां गए कहने लगे कि साहब थाने में चलिए। उनसे पहले उनकी पत्नी जाग गयीं। उन्होंने देखा। १५-२० लोग खड़े हैं। पूछा क्या बात है ? उन्होंने कहा कि मारपीट हो गई है। थाना जाना है। उसने चूड़ियां निकाली और कहा कि तुम लोग नामर्द हो क्या ? थाने नहीं जा सकते हो। चूड़ी देखकर लोग भागे और उसी दिन से थाने जाना शुरू कर दिया। पहले पुलिस थाने जाने से डरते थे। वकील साहब ने तो कुछ नहीं किया, लेकिन उनकी पत्नी ने सबको यह सिखा दिया कि थाने पर भी स्वयं जाकर के शिकायत की जा सकती है, रिपोर्ट लिखवाई जा सकती है। अतः यदि हम एक-एक करके काम

करते जायेंगे तो सब हो जाएगा। फिर हम तो संगठन के काम में हैं। हम को रोज मैनेजमेंट से मिलना पड़ता है, उच्चाधिकारियों से बोलना पड़ता है, पत्रकारों से भी पाला पड़ता है, वकील लोगों की भी जरूरत पड़ती है। पैसे लेकर के हम कहां वकील ढूंढें। इन सबसे भी हम काम करते-करते सम्पर्क तो रखते ही हैं। सामाजिक काम में हम सम्पर्क नहीं करेंगे तो कैसे होगा ? हम कई वर्षों से ट्रेड यूनियन में काम करते हैं, यदि सरकारी अधिकारियों, व्यवस्थापकों अथवा अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों से हमारा सम्पर्क नहीं है तो यह हमारी गलती है। पत्रकार, वकील आदि से हम इतना परिचित नहीं हैं कि आपत्ति, विपत्ति में वे हमारी सहायता कर सकें तो यह हमारे सम्पर्क सूत्र की कमी है।

संगठन में सब का सहयोग लेना पड़ता है। कहीं-कहीं पर तो पड़ोसी लोग भी ट्रेड यूनियन के काम में बड़ा सहयोग करते हैं। लेकिन अपने कार्यालय के पड़ोसी से हमने झगड़ा करके रखा है तो कैसे काम चलेगा। एक बार हमारी गेट मीटिंग हो रही थी पानी बरसने लगा तो जैसे ही दरी-वरी हटा करके सामने वाली दुकान में ले गए तो दुकानदार ने नौकरों के साथ मिलकर के हमारी दरियां बाहर फेंक दीं। हमने कहा कि क्या बात हो गयी साहब ? कहने लगे कि ये लोग बहुत बदमाश हैं, यहां चाय नहीं पीते, उस दुकान पर जाकर पीते हैं। मैंने पूछा जब गेट के सामने दुकान है तो तुम लोग वहां क्यों चाय पीने जाते हो। वे कहने लगे वहां वह बीस पैसे में देता है और यह पच्चीस पैसे लेता है। मैंने कहा यह ठीक नहीं है। पड़ौस में अन्य यूनियनों से मारपीट होती तो यही काम देंगे। इसका डन्डा, बल्ली, मजदूर और कुर्सी काम देगी। तो उनकी समझ में आया। हम लोग भी जाते हैं तो उसी के यहां से कुर्सी लेकर बैठ जाते हैं। वहां दूर वाले से क्या करना, भले ही वह पांच पैसे चाय सस्ती देता हो, यह भी देखना चाहिए कि पड़ौसी से हमारी मित्रता कायम रहे। क्योंकि रात-दिन का काम है। जब मैं एक कार्यालय में गया तो किसी से पूछा कि भाई ये नेता जी कब आते हैं, तो वे बोले हम से मतलब नहीं। सामने वाले से पूछा तो कहने लगे कि हमसे मतलब नहीं। यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ कि आखिर बात क्या है ? एक दिन उन नेताजी के यहां किसी की बकरी आ गयी तो उन्होंने उसको मारा। उसकी टांग टूट गयी। उनके कार्यालय के सामने एक दिन किसी का बच्चा पेशाब कर गया तो उसको इन्होंने बहुत पीटा। जब हमारा व्यवहार ही ऐसा है तो कौन हमारा साथ देगा। हम सार्वजनिक क्षेत्र में आए हैं। यदि हम अपना व्यवहार ठीक नही रखेंगे तो काम नहीं चलेगा पड़ौसी बड़े काम के होते हैं। वह लोग ताली-चाबी भी रखते हैं, आने-जाने वाले लोगों को पानी भी पिला देते हैं, गाइड भी कर देते हैं। कभी मनीआर्डर आ गया, रजिस्ट्री आ गई तो वह भी ले लेते हैं। अगर आपने सबसे झगड़ा करके रखा तो कैसे काम चलेगा।

फिर कार्यालय को लीजिए। संगठन के लिए यह एक बहुत बड़ा और विशेष केन्द्र होता है। हमारा कार्यालय कैसा है ? कार्यालय पर जाकर लोग संतुष्ट होते हैं या नाराज होकर आते हैं। कुछ घरों पर लिखा रहता है कुत्ते से सावधान। वहां तो लिखा रहता है, लोग पहले से ही सावधान रहते हैं। अपने कार्यालय पर तो ऐसा नहीं लिखा रहता कि कार्यालय मंत्री से सावधान। कोई बड़ी आशा-अपेक्षा लेकर सात सौ मील दूर से आया परन्तु

हम झुकेंगे नहीं

मान्यवर, हमारे पूर्व वक्ताओं ने जो बातें आपके सामने रखी हैं उन विचारों से आगे बढ़कर मैं अपने विचार रख रहा हूं। अपने बयान में मंत्री जी ने एक नारा कहा है। वह नारा नहीं था। आठ नेताओं ने हस्ताक्षर करके प्रधानमंत्री तथा श्रममंत्री को सूचना दी थी। उसमें मैं भी था। राष्ट्रीय स्तर पर एक कमेटी है, उसका मैं भी एक सदस्य हूं। यह अधिनियम जो पहले अध्यादेश के रूप में था, बाद में अधिनियम बना। उसके खिलाफ १७ अगस्त को सारे देश में काला दिवस मनाने का प्रस्ताव किया गया था। २३ नवम्बर को फिर से एक प्रस्ताव दिया गया। प्रस्ताव देने वाले आठ सदस्यों में मैं भी था। उसमें नारा नहीं था, सिर्फ सूचना थी। वह एक संकेत था देशव्यापी हड़ताल का, जिसे प्रधानमंत्री ने भारत बंद का नारा बताया। नेशनल कम्पेन कमेटी ने उसका खण्डन किया। पत्रकारों ने खण्डन किया। कानपुर, वाराणसी और लखनऊ में भी पत्रकारों ने खण्डन किया। लेकिन प्रधानमंत्री ने उसे भारत बंद ही कहा। हमने लोगों के लिये चिकित्सा सुविधा चालू रखा, बिजली व्यवस्था चालू रखा, श्रममन्त्री जी ने हम लोगों को बुलाया, पहले ४ जून का नोटिस था। ४ जनवरी को बुलाया और कमेटी के आठों सदस्यों से कहा कि हड़ताल नहीं होना चाहिए। हम लोगों ने कहा कि हमारी १३ सूत्रीय मांगें हैं, उनमें एक ही सूत्र स्वीकार कर लें, हम लोग मान जायेंगे। यह सांकेतिक हड़ताल थी। मजदूरों की समस्याओं को सुनाने के लिये, उन पर हो रहे अत्याचार के निराकरण के लिये केवल हड़ताल के अलावा यहां कोई मशीनरी है ही नहीं। दीक्षित जी होंगे लाबी में, वह भी खण्डन कर सकते हैं, लेकिन हमारे यहां कोई और रास्ता नहीं है। हम सुप्रीमकोर्ट में २० वर्ष तक नहीं लड़ सकते। शांतिपूर्ण अहिंसात्मक हड़ताल पर रोक लगाने की जो बात की जा रही है, वह केवल आंतकित करने के लिये नहीं, यह एक प्रकार से इमरजेन्सी की प्रक्रिया है। ६८ करोड़ जनता पर यह कुठाराघात है कि उसके मौलिक अधिकारों को छीन लिया जाय। सरकार ने हड़ताल पर बंदिश लगाकर हमारे मौलिक अधिकारों को छीनने का प्रयास किया है। श्रमिक संगठित है, इसलिये इनके

संकट आता है, जेल जाने की नौबत आती है, खतरे का आभास होता है तो हम यहां से पहले खिसकें फिर तो कुछ नहीं बनेगा ।

नेता कैसा है ? नेता अगर दमदार है, हिम्मतवाला है तो सारे कर्मचारियों को अपने नेतृत्व में ले जाता है । यदि नेता डरपोक, प्रोमैनेजमेंट, खाने-पीने वाला है, तो सारे कर्मचारी वैसे ही भ्रष्ट बेईमान तथा प्रोमैनेजमेंट हो जाते हैं और यूनियन का बेड़ा गर्क कर देते हैं । ट्रेड यूनियन में एक-एक कार्यकर्ता कैसा है, उनका नेता कैसा है उसी पर सारा मजदूर निर्भर करता है । हमको ट्रेड यूनियन आंदोलन में सारे कर्मचारियों को एक दिशा देनी है । उन्हें संघर्षप्रिय तथा सारी समस्याओं को स्वयं हल करने योग्य बनाना है । हम अपने को बदल लें तो सारा माहौल बदल जाएगा । नेपोलियन कहा करता था कि भेड़ों की जमात का नेता यदि शेर हो तो कुछ दिन में मैं-मैं करने वाली भेड़ें हुंकार भरना शुरू कर देंगी । मैं-मैं करना छोड़ देंगी । ताली पीटने से भागने वाली भेड़े अपनी सींग से ताली बजाने वाले के पेट को फाड़ देंगी । और सिंहों की जमात का नेता भेड़ बन जाए तो कुछ दिन में सिंह मैं-मैं करना शुरू कर देगा । गर्दन झुका कर चलना शुरू कर देगा । ताली पीटने से भागना शुरू कर देगा । हम नेतृत्व करने वाले लोग हैं । हम अपने मजदूरों को क्या बनाना चाहते हैं, यह हमारे ऊपर निर्भर है ।

दृष्टिकोण

मान्यवर अधिष्ठाता महोदय। मैं सर्व प्रथम राज्य सरकार और वित्त मन्त्री जी को बधाई देता हूं कि उन्होंने यह बजट कमजोर वर्ग को ऊंचा उठाने, उसके सुधार के लिये प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोत्तरी तथा अन्य जो तमाम बातें उन्होंने बजट में कही है, उनके लिये प्रस्तुत किया है। जहां पेय जल की व्यवस्था नहीं है, वहां व्यवस्था करने की बातें कही गई हैं। यह भी कहा गया है कि दस हजार शिक्षकों को काम देंगे। इसी तरह लघु उद्योग की बात कही गई है कि वे बहुतायत से फैलाये जायेंगे। परिणाम स्वरूप बेकारी में कमी होगी।

मान्यवर, मैं बजट पर कुछ बोलू, इससे पहले मैं उस बात का उत्तर देना चाहूंगा जो हमारे माननीय मित्रों की तरफ से कही गई है। एक घंटा तक हमारे रमेश भाई आर. एस. एस. को बाते कहते रहे। मेरी समझ में नही आया कि बजट भाषण के बीच में यह बात कैसे आ गई। उन्होंने तमाम बातों के लिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को जिम्मेवार ठहराया है। मैंने उनसे कहा कि जब कल आपके घर में बच्चा होगा तो क्या उसके लिये भी आर.एस.एस. को जिम्मेदार ठहरायेंगे ? कम्युनिस्टों में तो यह बातें होती ही है कि झूठफरेब शरारतपूर्ण बातें कहो। कम्युनिज्म के प्रणेता लेनिन साहब ने तो यहां तक कह दिया है, अपनी पुस्तक में लिखकर रखा दिया है कि कम्युनिज्म तब तक सफल नहीं होगा जब तक आप मजदूरों के साथ झूठ न बोलो। हिंसा कि बात भी उन्होंने कही है। जिसके बिना सफलता नहीं मिल सकती है। इसीलिए रूस में पौने दो करोड़ लोगों की हत्याये हुई हैं।

मान्यवर, इमरजेन्सी के दौरान थर्ड डिग्री मेथड अपनाये गये। केरल के मुख्यमंत्री इमरजेन्सी के दौरान कम्युनिस्ट थे। वहां कम्युनिस्टों का शासन था। वहीं राजन काण्ड हुआ। वहां टार्चरसेल बनाये गये थे। वहां के मुख्यमंत्री इस मामले में सबसे बढ़कर साबित हुये।

अधिकारों को हनन करो। पत्रकारों और जुडीसरी के अधिकारों का हनन करो। यह उनकी चालाकी है। यह एक प्रकार से इन्होंने आक्रमण किया है। न युद्ध का खतरा, न बाढ़ का खतरा, किन्तु हमारे ऊपर यह अधिनियम लाद दिया गया है, यह आपत्स्थिति का पहला कदम है। यह जानबूझ कर लाया गया है। जिस दिन हड़ताल हुई, ५०० कारखाने बन्द रहें। यह स्वीकार किया गया। यह भी कहा गया कि सारे कर्मचारी हड़ताल पर नहीं थे। जबकि ६० से ८० प्रतिशत तक एक हजार से ऊपर कारखाने बंद रहें। लोग चाय की दुकानों और बाजार के बंद होने के पक्ष में नहीं थे। हमने बार-बार इसका खण्डन किया। इन्द्रजीत गुप्त ने भी इसका खण्डन किया। एटक के नेता ने कहा कि जो हड़ताल पर गये, उन पर ३०७ का मुकदमा कायम किया गया। किसी को चोट नहीं आई, किन्तु दरोगा इतना पागल हो गया था कि ३०७ में कर्मचारियों को बंद कर दिया गया। रेनुकूट में बिड़ला फैक्टरी है। वहां पर उन्होंने कहा कि हड़ताल की नोटिस यदि यूनियन वाले वापस नहीं लेंगे तो उनको निलम्बित कर दिया जायेगा और वे निलम्बित कर दिये गये। सारे प्रदेश में पुलिस के बल पर नंगा नाच लिया गया, श्रमिकों को सताया गया, किन्तु फिर भी आज तक हिन्तुस्तान में इतना बड़ा आंदोलन हुआ ही नहीं। १५ जनवरी को जो हड़ताल हुई, उसमें ५० हजार सारे देश में और दो हजार से ऊपर श्रमिक इस प्रदेश में बंद हुए। हम लोगों ने शांतिपूर्ण हड़ताल की। यह तो शुरूआत है। आप आग न लगायें। उत्पादन की बात कहीं गई तो हमने १५-१५ दिन हड़ताल करने के बाद उसी महीने में दो गुना उत्पादन करके दिया है। उत्पादन घटाने के पक्ष में हम नहीं है। हम अधिकारों का हनन करने के लिए लाये गए इस अधिनियम के विरोध में हैं। यह इमरजेन्सी की एक प्रक्रिया है। इमरजेन्सी की शुरूआत है। हमने अभी तो शांतिपूर्ण ढंग से आन्दोलन किया है, यह आन्दोलन आगे चलेगा, हम झुकने वाले नहीं है। हम लोग आजाद देश के नागरिक है, आजाद रहेंगे। आपकी पुलिस, आपकी सरकार हमारे जनतान्त्रिक मौलिक और मानवीय अधिकारों का हनन नहीं कर सकती।

(खण्ड क्रमांक—१८५ (पृष्ठ संख्या ५७१) दिनांक ४ फरवरी १९८२
भारत बंद के दौरान हुये तथाकथित अत्याचारों में विधानपरिषद् में हुई दो घण्टे की चर्चा)

श्री राम नरेशसिंह

मानहानि का दावा कमजोर लोग करते हैं। मान्यवर, यह बात सही है कि "नोबाडी वान्ट्स टू किक दि डेड डाग", कोई भी मरे कुत्ते को ठोकर नहीं मारना चाहता। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक जीवित संस्था है। आज हम पर कामरेड भाई तरह-तरह के आरोप लगा रहे हैं। अभी कुछ दिन पूर्व जब बिजली कर्मचारियों की हड़ताल हो रही थी और हरीश तिवारी अस्पताल में भर्ती हुये तो मैं पहला व्यक्ति था, जो अस्पताल में उनसे मिला। उन्होंने छूटते ही कहा कि "मुझे संघ वालों ने मारा है"। मैंने पूछा कि संघ वालों ने मारा या आपके उन कर्मचारियों ने मारा, जो आपकी यूनियन के सदस्य थे। उन्होंने कहा कि वे लोग बस्ती में माधव प्रसा त्रिपाठी के क्षेत्र में कार्य करने गये थे, और संघ वाले थे। मैं जिम्मेदारी के साथ कह सकता हूं कि संघ वालों का किसी से कोई लेना-देना नहीं है। यह हमारे कामरेड भाई बिना समझे-बूझे आरोप लगाने के आदी हैं। श्री रमेश जी बार-बार सन् १९४२ और १९४७ की बात करते हैं। इन कम्युनिस्ट पंचमांगियों के कारनामों को कौन नहीं जानता। फिर भी बार-बार सन् १९४२ और १९४७ को दोहराया जाता है। ये बोनस की बात नहीं करते। इनके सबसे बड़े लीडर डांगे साहब है। उन्होंने इमरजेन्सी की बड़ी हिमायत की थी और कहा था कि इमरजेन्सी से दस गुना लाभ है श्रीमन्, आज ये मजदूरों के हित की बात करते हैं। जबकि इन्हें मजदूरों के जारे में बोलने का कोई हक नहीं है। इन्होंने सारे मजदूर वर्ग पर कहर ढा दिया है। इन्होंने सब प्रकार से मजदूरों के विरुद्ध कार्य किया है, और आज यही लोग अपने काले कारनामों को दूसरी तरफ फेंक रहे हैं। इनको समझ-बुझकर चलना चाहिये। शीशे के घर में रहकर दूसरे के घर पर पत्थर नहीं मारना चाहिये। इन्होंने देश के साथ क्या किया है, वह सभी जानते हैं। सन् १९३८ में अंग्रेजों ने संघ पर प्रतिबन्ध लगाया, यह उस समय ये कामरेड क्या कर रहे थे ? फिर सन् १९४२, १९४८ और इसके बाद सन् १९७५ में संघ पर प्रतिबन्ध लगाया गया। हमने ही अपने बल से इन प्रतिबन्धों को हटवाया। दमन के बावजूद हमारा यह संगठन खड़ा है। इसको राजनीति में घसीटते हैं। ऐसे-ऐसे आरोप लगाते हैं जिनकी कोई जड़ ही नहीं है, हमारे एक मित्र केन्द्र में मंत्री हो गये हैं। वे ग्रेजुएट हैं, वनवासी हैं। वे पहले भी बिहार की संविद सरकार में मंत्री थे। रमेश भाई कहते हैं कि उनकी पढ़ाई के लिये आर०एस०एस० के लोग लगाये गये हैं। वह तो स्वयं ग्रेजुएट हैं। इन्होंने आर्गनाइजर का उदाहरण दिया है। मैं इनको सलाह देता हूं कि वे उसको पूरा पढ़ा करे और जब कोटेशन दे तो अधूरा नहीं, पूरा पढ़कर दें। उतना ही क्यों देते हैं जिससे उनका मतलब होता है। इससे वे लोगों को भ्रमित करते हैं। जरा पूरा तो पढ़ें। इस तरह एक अंश पढ़ने से सत्य बात सामने नहीं आती। यह तोड़-मरोड़ की नीति ठीक नहीं है। मैं इनकी बड़ी इज्जत करता हूं और यह भी जानता हूं कि इनकी जानकारी अच्छी है लेकिन इतना कहूंगा कि जो चीज सही है, उसी को रखें।

मान्यवर, आज मैं उन भाईयों की बातों को सुन रहा था जो उधर के बैठने वाले हैं। उन्होंने पिछले कांग्रेस शासन की ३० वर्ष की बात तो कही, लेकिन पिछले १९ महीनों की काली रातों की चर्चा नहीं किया कि उसमें जनता के साथ कितने जोर-जुलम हुये और क्या-

विरोधी दल के नेता ने आपत्काल में लिखे गए संघ के सरसंघचालक के पत्र का हवाला दिया है। इस संदर्भ में यह बताना आवश्यक है कि संघ की ओर से जितने भी पत्र प्रधानमंत्री, जय प्रकाश जी, और बिनोबा जी को लिखे गये थे, उन्हें लोक संघर्ष समिति के कार्यकर्ताओं ने हजारों की संख्या में छाप कर बंटवाया है। मैं आप को याद दिलाऊं जब गांधी जी थे, अंग्रेजों का जमाना था, तो समझौते होते थे, उन पर उन्ही की कार्यसमिति में आपत्ति होती थी। बाद में गांधी जी का कहना होता था कि अंग्रेजों को वार्ता के लिये तैयार करने के लिये भाषा की बात मेरे ऊपर छोड़ दो। इमरजेन्सी के दौरान पैंसठ करोड़ जनता सरकार के तानाशाही रवैये से परेशान हो चुकी थी। उस समय सरसंघचालक ने केवल इतना ही लिखा था कि चूंकि आपने सुप्रीम कोर्ट से अपना चुनाव सम्बन्धी मामला जीत लिया है इसलिये सारे मामले पर ठंडे दिल से विचार कीजिये। मैं समझता हूं कि इतना लिख देने मात्र से कि विचार कीजिये, कौन सी आफत आ गई। अगर महात्मा गांधी ने अंग्रेजों से समझौता करने के लिए पत्र लिखा था तो मान्यवर उसमें और इसमें कोई अन्तर नहीं है। बल्कि महात्मा जी के जो शब्द थे उनका झुकाव अंग्रेजों के पक्ष में दिखाई देता था। छोटी सी बात को इतना तूल दे दिया गया और कहा गया उन्होंने माफी मांगी और सरेन्डर किया। संघ के सरसंघसंचालक ने केवल भद्रता के नाते एक प्रधानमंत्री किन्तु उस पूर्ण तानाशाह का जो देश में अराजकता की स्थिति उत्पन्न किये हुये थी, वार्ता करने के लिये एक पत्र लिखा था। उसमें कोई छिपाने की बात नहीं है। उसे तो हम लोग स्वयं छाप कर बांट रहे हैं।

हमारे कामरेड भाई केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को बदनाम करने के लिये इस प्रकार की बातें करते हैं। उन्होंने तो यहां तक कह डाला कि सरसंघचालक के महाराष्ट्र को मुख्यमंत्री श्री चह्वाण साहब को लिखकर दिया कि हम लोग बाहर आना चाहते हैं। आंदोलन के सिलसिले में कुल पौने दो लाख लोग जेल में बंद थे। जिसमें से सवा लाख केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता थे। चौदह नवम्बर के बाद किसी भी पार्टी और नेता का मत नहीं था कि सत्याग्रह चालू रखा जाय। किन्तु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने कहा सत्याग्रह जारी रखना चाहिये। उस समय तो चौधरी चरण सिंह भी बाहर आ गये थे। सभी इस मत के थे कि तानाशाही से मुक्त होने के लिये आंदोलन वापस लिया जाय। वार्ता की जाय। किन्तु संघ के कार्यकर्ताओं ने यह निर्णय किया कि आंदोलन वापस नहीं होगा। इस बात को सारी दुनिया जानती है। अब हमारे कामरेड न मालूम कहां की ऊलल-जूलूल बातें ला रहे हैं। मैं यह दावा तो नहीं कर सकता कि आज देश और प्रदेश की जो स्थिति है उस का श्रेय प्रमुख रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और उसके कार्यकर्ताओं को है, लेकिन इमरजेन्सी के दौरान कम्युनिकेशन की सारी व्यवस्था चालू रखने का श्रेय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को ही है। यही नहीं देश में राजनीतिक चेतना जागृत किये रखने का श्रेय भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को ही है। भले ही वह स्वयं राजनीतिक दल नहीं है। आपत्कालीन स्थिति में जितना काम संघ ने किया, उतना योगदान शायद अन्य किसी भी पार्टी का नहीं है।

श्री रमेश सिन्हा

मेरा बयान अखबार में छपा है आप चाहे तो कोर्ट में मानहानि का मुकदमा दायर कर दें।

चाहिये। लेकिन आपकी सुविधायें देने की नीति नीचे से न होकर ऊपर से शुरू होती है, यह गलत है।

शिक्षा विभाग में आपतस्थिति के समय जो सुविधा छीन ली गई थी और जो समस्याएं पैदा की गई थीं वे सुविधाएं वापस मिलनी चाहिये, उन समस्याओं को ठीक किया जाना चाहिये। लेकिन अब भी कई विद्यालयों में कुछ अध्यापक वापस नहीं रखे गये हैं। कानपुर में श्री मुनि हिन्दू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है। वहां पर महोदय शर्मा प्रधानाचार्य थे। उनके स्थान पर दूसरे व्यक्ति जबरदस्ती प्रिंसीपल के पद पर बैठ गये। श्री शर्मा मीसा में पकड़ कर बंद कर दिये गये। हम लोग अनेकों बार उनके सम्बन्ध में शिक्षा मंत्री से मिले, ज्ञापन भी दिया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उनको अभी तक एक पैसा भी नहीं मिला। मेरे जिले में एक स्थान है किथौर। वहां पर एक राजदान साहब हैं। उनके स्कूल का परीक्षाफल हमेशा सौ प्रतिशत आता है। उनको तरक्की देकर गाजियाबाद में उप-प्रधानाचार्य बनाकर भेजा गया है। वहां राजदान के स्थान पर एक कुमारी मेहरोत्रा को रख दिया गया। उनका केवल डेढ़ महीने के अन्दर ही दो बार स्थानान्तरण हुआ है। मेरा कहना है कि इस तरह की बात नहीं होना चाहिये।

मान्यवर, यह श्रम विभाग की बात है। अभी एन्टीबायोटिक में हड़ताल हुई। मंत्री जी ने वहां पुलिस भेज दी। हड़ताल दबा दी गई। वह आज भी श्रमिकों के सन् १९७४-७५ का बोनस देने के लिए तैयार नहीं है।

श्रमिक संघों को मान्यता प्राप्त करने के लिये आपने संहिता बनाई है। जो संहिता की सारी शर्तों को पूरा करेंगे, आप उनको मान्यता देंगे। कई यूनियनें हैं। एक भारतीय मजदूर संघ भी है। संहिता के अनुसार जितनी शर्तें थी वह सारी शर्तों को पूरा करता है। हमारे जगदीश चन्द दीक्षित ने, जो आपत्काल के समय संसद सदस्य थे, सचिव को पत्र लिखा कि यह यूनियन भारतीय मजदूर संघ की है। सचिव ने वह पत्र श्री माली को दे दिया। हमने कहा कि आप उसे मान्यता क्यों नहीं देते, जबकि उसने सारी शर्तों को पूरा कर दिया है। बाद में सचिव को जो पत्र भेजा गया था वह विथड्रा कर दिया गया। उसके लिये हम सचिव से भी मिले, मंत्री जी से मिले। आज सदन में भी वही बात कह रहा हूं। गलत काम करने के आदेश न दें। लेकिन जो शर्तें थी, जब वे पूरी हो गईं, फिर मान्यता क्यों नहीं देते? इमरजेन्सी के समय जो शर्तें थी, आज भी वहीं हैं।

लखनऊ में नाका हिंडोला में इंडस्ट्रियल इन्स्ट्रमेंट फैक्टरी है। वहां पर आन्दोलन चल रहा है। तीन वर्ष की स्थापित स्कूटर इण्डिया की फैक्टरी है, जिसमें सरकार का पचास प्रतिशत् हिस्सा है। उद्योगमंत्री उस क्षेत्र से चुने जाते हैं। लेकिन वहां पर भी आन्दोलन चल रहा है। वहां अभी वेतनक्रम तक लागू नहीं हुआ है।

मान्यवर, गाजीपुर में जिस तरह की हिंसक घटनायें हुई हैं। उस तरह की घटना कहीं देखने में आई नहीं होगी। मैं उसकी तह में इस समय नहीं जाना चाहता। लेकिन इतना

क्या पाप किये गये। अगर यह जनता सरकार न आई होती या यों कहिये कि जनता ने यदि इस सरकार का साथ न दिया होता तो हम लोग इस सदन में इस समय नहीं होते। शायद इस समय तक हम लोगों की लाशें उठ गई होतीं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने तो यहां तक कहा था कि अभी लाशें उठानी हैं। ज्ञानी जैल सिंह ने कहा था कि इमरजेन्सी में दो-चार मर भी जाय तो कौन सी बड़ी बात है। हरियाणा के मुख्यमंत्री बंसीलाल ने, जो बाद में डिफेंस मिनिस्टर हो गये, कहा था कि इमरजेन्सी हमारा लक्ष्य है और हम हजारों लोगों को मौत के घाट उतारेंगे। सब प्रकार के पाप उन्होंने किये हैं। नक्सलवादियों को ही नहीं बल्कि बेगुनाह लोगों को भी मारा है।

आज हरिजनों की समस्या उठाई गई। मान्यवर, तीस वर्ष का समय बहुत होता है। इन तीस वर्षों में उनको बरगलाकर रखा गया है। कोई भी सरकार एक-दो वर्ष में किसी भी स्थिति को ठीक कर सकती है। इन्होंने तो टाटा और बिड़ला को बढ़ाया है। इन्होंने पूंजीपतियों और एकाधिकार वालों को ही बढ़ाया है। तीस वर्ष में अगर आपने हरिजनों के लिये काम किया होता तो आज इन गरीब हरिजनों की यह दुर्दशा न होती, जो हो रही है। क्या आप शांतिया काण्ड और शेरपुर काण्ड को भूल गये, जहां पर एक धोबी को मार दिया। कांग्रेस पार्टी के एक वरिष्ठ विधायक, जो केन्द्र में मंत्री भी रहे हैं, उनके कपड़े गुम हो गए तो उस बेचारे धोबी को मार दिया गया। यह समस्या है, जिसे जनता पार्टी को देखना है। इसका मतलब यह नहीं है कि अगर तीस वर्ष में इन्होंने कुछ नहीं किया तो जनता पार्टी को भी कुछ नहीं करना चाहिये अगर गरीब हरिजनों को सताया जाता है तो उसको देखना चाहिये। मैं चाहूंगा कि जनता पार्टी के लोग इस चीज को अच्छी तरह से देखें और उस पर अमल करें। इस तरह की बातें कहने का कोई मतलब नहीं है। उन्होंने पहले जो शर्मनाक काम किये हैं उनको देखते हुये उन्हें बोलने में आज लज्जा आनी चाहिये। उनकी जुबानें आज किस तरह से हिलती हैं जबकि पहले उन्होंने लोगों को तंग किया है, सताया है, कहर ढाया है। आज जो समस्या है उसका हल होना चाहिये। इस समय जो स्थिति जगह-जगह पर चल रही है मैं आपके माध्यम से मान्यवर मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि वे उन समस्याओं की ओर ध्यान दें और उनका निराकरण करें।

जैसे शिक्षा की समस्या है। सरकार की ओर से कहा गया कि वह अध्यापकों के लिए व्यवस्था करेगी। आपने यह व्यवस्था क्यों लागू नहीं की? उनके लिये आप क्या करेंगे? इसी तरह से जो उर्दू की पाठशाला में मौलवी तथा संस्कृत की पाठशालाओं में अध्यापक पढ़ाते हैं, उनके बारे में कुछ नहीं किया। जब आप स्कूलों को मान्यता देते हैं तो आपको सारे मान्यता प्राप्त स्कूलों में समान व्यवस्था लागू करनी चाहिए। मेरा कहना है कि जब आप अध्यापकों और क्लर्कों को सभी सुविधायें देते हैं, तो चपरासियों को क्यों नहीं देते हैं। इस प्रकार टालने से काम नहीं चलेगा। शिक्षा विभाग जो सुविधायें देने की बात करता है वह सभी जगह और सभी कर्मचारियों के लिए लागू होना चाहिये। जनता सरकार से अपेक्षा है और हमें अपेक्षा करनी भी चाहिये कि वह अपना कार्य निचले वर्ग से शुरू करें। फिर ऊपर के वर्ग तक जाय। गांधी जी ने भी यही कहा है कि व्यवस्था नीचे के वर्ग से शुरू करना

वहां पर रिजर्व बैंक की तीन शाखाएं हैं। हमारा प्रदेश जोकि दस करोड़ की आबादी का है, यहां पर रिजर्व बैंक की केवल एक शाखा है। यहां पर भी रिजर्व बैंक की तीन शाखाएं और नहीं खुलती तो यहां का विकास ठप्प हो जायेगा। मान्यवर, आपके सामने यह बात कहने में कोई हर्ज नहीं है कि यहां पर आर्डर पास करने के लिए फाइलें रखने की जगह नहीं है, तो विकास का काम कैसे हो पायेगा। इसलिए सरकार को चाहिये कि केन्द्रीय सरकार से उत्तर प्रदेश में तीन रिजर्व बैंक और स्थापित करने के लिये कहे।

आपको शायद याद होगा कि भूतपूर्व प्रधानमंत्री ने, जो रायबरेली से चुनाव लड़ती रही हैं। वहां पर एक योजना चलाई थी। वहां इंजीनियरिंग काम्पलेक्स स्थापित किया गया टेक्नोक्रेट, जो ग्रेजुएट इंजीनियर हैं उनके काम करने के लिये। उसमें ९५ प्रतिशत रुपया सरकार का लगा है और ५ प्रतिशत ग्रेजुएटस का है। वहां सब काम ठप्प है। जो माल तैयार होता है, उसकी बिक्री के लिये बाजार का कोई साधन नहीं है। हजारों लोग लगे हैं, लेकिन हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं, यदि बाजार नहीं खोजा जायेगा, उसकी व्यवस्था नहीं की जायेगी तो होगा क्या ? आडिट एकाउन्ट की रिपोर्ट तक को तोड़ा-मरोड़ा जा रहा है। वह किसी से भी सम्बन्धित हो—चाहे विद्युत फैक्टरी से, चाहे सिंचाई विभाग के इन्स्ट्रूमेंट से और चाहे विदेश से आने वाले सामान से, आडिट एकाउन्ट की रिपोर्ट तोड़ने-मोड़ने की जो बात हो रही है उसकी जरा छानबीन की जाय। जहां जो घपला है उसका निवारण होना चाहिये। तोड़-मरोड़ कर उत्तर देने से काम नहीं चलेगा। आडिट एकाउन्ट की रिपोर्ट में अनेक बातें घपलेबाजी की आई हैं। उन सारे लोगों को सजा दी जाय। उनको आप क्यों बचाना चाहते हैं ? आप जनता के साथ धोखा मत कीजिये। जो मुलजिम हैं उनको सजा दीजिए। आप किसी को बचाने के चक्कर में मत पड़िये। अगर बचाने के चक्कर में पड़ेंगे तो ठीक नहीं होगा।

मान्यवर, पी. ए. सी की समस्या बहुत दिनों से चली आ रही है। श्री कमलापति त्रिपाठी के जमाने से चली आ रही है। अब तो उसको हल कर दीजिए। जिसको सजा देना है, उसको सजा दीजिये, जिसको छोड़ना है उसको छोड़ दीजिये। आपने नक्सलवादियों को माफ कर दिया। पी. ए. सी. काण्ड का भी चैप्टर समाप्त हो जाना चाहिए। इस प्रकार के उलझे हुए सभी मसलों को समाप्त करें यह बहुत आवश्यक है।

मान्यवर, उद्योग विभाग ने रायबरेली में जो फैक्टरी स्थापित की हैं, उसमें हड़ताल चल रही है। वह टेक्सटाइल की फैक्टरी है, राजकीय संस्थान है। उसमें १६ अगस्त से हड़ताल है। आखिर यह है क्या कर्मचारियों की जो जायज मांगें है, उनकी पूर्ति करिये और फैक्टरी चलाइये। एक मंत्री जी ने वहां के डी. एम. और एस. पी. से कहा कि मैं आ रहा हूं। वहां के कर्मचारियों से बात करूंगा। मंत्री जी सूचना देकर गये। डी. एम. और एस. पी. अटेंड करने के लिए तैयार थे। वहां की यह अवस्था है। जो दोषी अधिकार है, उसको अवश्य सजा दीजिए।

कहता हूं कि अगर समय पर सरकार चेत जाती तो शायद इतनी बड़ी हिंसक घटना न होती। जिस पर एक दिन की हड़ताल के लिये आठ दिन का वेतन काटा जा रहा है। इस तरह की बातों से कर्मचारियों में उत्तेजना पैदा होना स्वाभाविक है। इसको वश में करना नेताओं के वश की बात नहीं होगी। जिन चीजों को पहले से ही रोका जा सकता है और उनको रोकना होगा।

मान्यवर, आपके माध्यम से साहू केमिकल्स बनारस के सम्बन्ध में भी सम्बधित मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं। वहां के कर्मचारी एक महीने से आंदोलित है। हम लोगों ने कर्मचारियों से कहा कि हमारी सरकार है। हड़ताल का नारा न दो। इस साहू जैन केमिकल्स के बारे में पहले भी चार-पांच वर्ष लगातार मांगें रखी गई, लेकिन यह कहकर उनको टाल दिया गया कि प्रभु नारायण सिंह और साहू जैन केमिकल्स के संबंध अच्छे हैं। इसलिए कुछ नहीं होगा। यह भी कहा गया कि प्रभु नारायण सिंह ने वेजबोर्ड की रिकमेडशन वहां लागू नहीं होने दिया। गवर्नमेंट के आदेश हैं लेकिन फिर भी लागू नहीं हो पाया। मान्यवर, यह स्पष्ट है कि वहां पर हड़ताल हो जायेगी और मारपीट भी होगी। अगर उसे पहले से नहीं रोका गया तो स्थिति भयावह हो सकती है। इस तरह से छोटी-छोटी चीजों को लेकर उसको तूल दिया जा रहा है तो वे अपने आप ही बढ़ेंगीं।

मान्यवर, ट्रांस्फर के बारे में आपने सामने बोर्ड लगाये हुए हैं। लेकिन इमरजेन्सी के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और सी. टी. यू. के सदस्यों को इनके कहने से ट्रांस्फर किया गया। यह कहकर ट्रांस्फर किया गया कि आपत्स्थिति के उत्पीड़न को मिटाना चाहते हैं। वे यह लिखकर देते हैं कि इनको देखिये। ऐसे चार्जेज पर हमारा स्थानान्तरण हुआ है उसको बदला जाय। तो उनसे कहा गया कि सामने बोर्ड पर क्या लिखा हुआ है उसको देखा नहीं और चले आये। इस तरह से कहने से कैसे काम चलेगा। इस चीज को आप बढ़ने क्यों दे रहे हैं।

मान्यवर, राजबिहारी सिंह जी ने बहुत महत्वपूर्ण बातें कानून और व्यवस्था के संबंध में कहा है। उससे जनता सरकार को चिंतित होना चाहिये। इस तरह की प्रकिया पर सारी बातें निर्भर करती है। हमारे माननीय मंत्री जो यहां जिस प्रकार के उत्तर देते हैं उससे काम नहीं चलने वाला है। मंत्री जी सरकारी अफसरों के कहने पर गलत उत्तर देते हैं। अगर वे इस तरह की बातों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तो वह ठीक प्रकार से अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं कर पायेंगे। अगर ठीक तरह से ब्यूरोक्रेट्स पर अंकुश रखेंगे तो ही वह अपने फर्ज को अंजाम दे सकेंगे। इस सम्बन्ध में यह नई सरकार है केवल यह कहने से काम नहीं चलेगा।

मान्यवर, और भी एक बात आपके माध्यम से कहना चाहता हूं। यहां पर विकास की बहुत बातें हो रही हैं। कांग्रेस सरकार के समय से हो रही है। देश या प्रदेश का सारा विकास बैंकों से सम्बन्ध रखता है। सारी व्यवस्था का सम्बन्ध रिजर्व बैंक से है। बैंकिंग व्यवस्था से थोड़ा बहुत परिचय हम लोगों का भी है। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश से छोटा है।

उसको तो आप देखें। कानपुर में हमारे कार्यालय का भी इसी प्रकार का मामला है। वह मामला डी. एम. की अदालत में था। उनके पास से वह सेशन जज के पास चला गया। सेशन जज ने स्थगन आदेश भी दे दिया। फिर भी डी. एम. ने उसे एलॉट कर दिया। यह अभी की बात है। हमारा कहना यह है कि आप क्या उनसे पूछ नहीं सकते ? आप कार्रवाई क्यों नहीं करते जबकि आप यह कहते हैं अपातस्थिति का दुख-दर्द सुनने के लिये तैयार हैं। कुछ बातों का आप स्वयं निवारण कीजिए।

श्री अधिष्ठाता : माननीय सदस्य का समय समाप्त हो गया।

मान्यवर, मुझे एक मिनट का समय और दे दें। मैं केवल एक बात कहकर समाप्त करता हूं। कानपुर में एक मुस्लिम इण्टर कॉलिज है। वहां कर्मचारी यूनियन थी। वहां के कुछ कर्मचारियों को निकाल दिया गया। दैववश उसमें एक मुस्लिम कर्मचारी भी था। बाकी हिन्दू कर्मचारियों को रखा गया था। एक मुहम्मद अली नाम का मुस्लिम चपरासी था। उन्होंने उससे यह कहा था कि तुम मुसलमान होकर भी यूनियन में क्यों गये ? मैंने शिक्षा-मंत्री से कहा कि यह बात बड़ी छोटी सी है, उसी मामले मे उसी प्रकार के लोगों को रखा गया है, लेकिन उसको नहीं रखा गया। यह केवल एक चपरासी का प्रश्न नहीं है। यह दृष्टि-कोण का प्रश्न है।

अंत में एक बार फिर रमेश भाई से कहना चाहूंगा कि वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नाम लेकर मुसलमान और हिन्दू को अलग न करें। अब आप जहर उगलना बंद कर दें। दोनों ने जेल में रहकर आपस की गलतफहमी दूर कर ली है। अब गलतफहमी न फैलाएं। बहुत दिनों तक आपने फूट डाला है फूट डाल कर उस कम्युनिटी को आपने अपने साथ रखकर देश की मुख्य धारा से अलग रखा है। इसलिए आज वे सही-गलत भी समझने लगे हैं अब रमेश भाई उनका एक्सप्लाइटेशन न करें।

(खण्ड–१५६ पृष्ठ सं.-८६७ दिनांक १२ सितम्बर, १६७७
वित्तीय वर्ष १६७७-७८ के आय-व्यय पर विधान परिषद में सामान्य चर्चा)

मान्यवर, मैं यह कहना चाहूंगा कि महंगाई बढ़ रही है, इस बारे में वक्तव्य दे दिया था, एक ग्राधी चीज का दाम बढ़ने से रोक दिया, तो इससे क्या बनने वाला है । इन्डेक्स के ग्रनुसार वेतनभोगियों का वेतन नहीं बढ़ाते । ग्राप इन्डेक्स के ग्रनुसार शत्-प्रतिशत समतोलीकरण करें । गोदामों में खाद्य निगम का गल्ला भरा हुग्रा है, उसको बाहर क्यों नहीं लाते । जो ग्रादमी दाम बढ़ाता है उसके खिलाफ कार्यवाही क्यों नहीं करते । चीजों के अनाप-शनाप दाम बढ़ रहे हैं उसको रोकिए । कारंवाई करने के लिए मीसा के ग्रलावा भी ग्रापके पास बहुत से साधन ग्रौर कानून हैं । ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन पर विरोधी दल के लोग भी ग्रापका साथ देने के लिये तैयार हैं ।

इसी के साथ यह प्रश्न भी जुड़ा हुग्रा है कि मूल्य बढ़ने का क्या कारण है ? ग्राश्चर्य की बात यह है कि जो वस्तुएं बहुतायत में मौजूद हैं, उनके ही दाम बढ़ रहे हैं । मान्यवर, विद्युत मंत्री जी सदन में उपस्थित नहीं है । उन्होंने कहा था कि हम जल्दी से जल्दी ग्रन्तरिम राहत घोषित करेंगे । साथ ही एक कमेटी की तिथि निर्धारित करने की बात कही थी । मैं यह पूछता हूं कि जब कर्मचारी नोटिस दे देंगे ग्रौर हड़ताल पर चले जायेंगे तब ग्राप घोषणा करोगे ? इस पद्धति को बदलने की ग्राप पहल कीजिए । यदि देना हो तो दे, यदि न देना हो तो ग्राप कहते क्यों हैं कि हम ग्रन्तरिम राहत देंगे । मैं मंत्री जी से यह ग्राग्रह करूंगा कि वह इस बारे में सोचें ।

मान्यवर, यह कहकर मैं ग्रपना भाषण समाप्त करूंगा कि एक ग्रतंरा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय का एक मामला है । पहले तो डी. एम. यह कहकर निकल गये कि वह स्थान तो हमने एलॉट कर दिया ग्रौर बाद में कह दिया कि हमने उस पर ग्रपनी सील-मोहर लगा दी है । फिर उसके बाद उन्होंने कहा कि गलती हो गई । यह संघ का कार्यालय है इसलिए सील हुग्रा । उस सम्बंध में तीन लोग पकड़े गये थे । पहले वे बरेली जेल में भेजे गये । फिर वहां से फतेहगढ़ भेज दिये गये । फिर भी यह कहा गया कि वह खाली था इसलिए उस कार्यालय को कांग्रेस वालों को दे दिया गया । इस सम्बन्ध में मंत्री जी से कहा गया ग्रौर गृह सचिव से भी कहा गया । लेकिन दिक्कत यह है कि न तो सामान मिल रहा है ग्रौर न ही कार्यालय मिला है । पता नहीं कि गृह विभाग क्या कर रहा है । मैं यह मांग करता हूं कि जिन्होंने दो-तीन स्टेटमेंट बदले उनको दण्ड देना चाहिये । हमारा यह कहना है कि बाकी बात तो शाह ग्रायोग देखेगा, क्योंकि उसके पास वह मसला भेजा गया है । लेकिन कुछ चीजें ऐसी हैं कि जो नारायण दत्त तिवारी से लेकर हमारे वर्तमान मंत्री जी तक वैसे ही पकड़े हुए हैं । मान्यवर, उन्नाव पुलिस ने मिश्रीलाल को मार कर उसके तलवों में इतनी चोट पहुंचाई कि उसके पैर काटने की नौबत ग्रा गई है । उस गरीब की बड़ी खराब हालत है । वह बलरामपुर ग्रस्पताल में पड़ा हुग्रा हैं । मैंने कहा कि उसे कुछ सहायता दे दो, गरीब ग्रादमी है, ग्रौर यह भी कहा कि उस पुलिस वाले खिलाफ कारंवाई करो । डी. एम. की ग्रदालत के सामने कचहरी में यह घटना हुई थी । वहां पर एस. पी. भी पहुंच गये थे । लेकिन ग्राप किसी के खिलाफ कारंवाई करने को तैयार नहीं हैं । ये सब बातें हैं जिन्हें इस सरकार को करना चाहिये । शाह ग्रायोग तो जब करेगा तब करेगा, जो ग्रापकी ग्रांखों के सामने है, जो चिल्लाहट हो रही है,

मान्यवर, मान्यता की बात बहुत महत्वपूर्ण है। अब क्या कहूं ? किस प्रकार से और किस नीति के आधार पर ट्रेड यूनियनों को मान्यता दी जाती है ? कौन सा वेरीफिकेशन और सत्यापन का आधार उन्होंने लिया है ? कुछ पता ही नहीं चलता। यह सब इसलिए किया गया कि मंत्री जी ने अभी तक स्पष्ट रूप से कोई भी रूप रेखा उसके सम्बन्ध में नहीं बतायी है। जहां पर कम यूनियनें है अथवा एक यूनियन है और शत प्रतिशत कर्मचारियों की सदस्यता है, उनके साथ किस प्रकार का व्यवहार होता है, यह देखने का बात है। वहां पर चार पांच साल लग जाते है। मैं इस सम्बन्ध में औद्योगिक राज्य निगम कर्मचारी संघ चौपन की विशेष रूप से बात करता हूं। मैं उस यूनियन का नाम ले रहा हूं। उसने मान्यता की दरख्वास्त दी। सारे कर्मचारी उसके सदस्य हैं। लेकिन मान्यता के बारे में मंत्री जी यह देखते है कि यह इण्टक की यूनियन है कि नहीं तब यह सवाल उठता है कि उसको कैसे मान्यता दें। इस प्रकार की धांधलियां चल रहीं हैं।

आप यह भी देखे कि हड़तालों की संख्या दिनों दिन बढ़ती चली जा रही है। डेढ़ वर्ष से कोई उद्योग ठीक से नहीं चल रहा है। मान्यवर, हम ट्रेड यूनियन में काम करते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि हम हड़तालें करवाते है, या यूनियनें ही हड़तालें करवा रही है, अगर आप ध्यान से देखेंगे तो स्थिति दूसरी दिखाई देती। हड़तालें हो रही है, सभी प्रकार की चीजों के बावजूद असंतोष क्यों हैं ? हड़तालें हो क्यों रही है। इसको देखना चाहिये।

मान्यवर, आप आंकड़े देखे। १९६९ में १७० तालाबन्दी और हड़तालों के मामले थे। १९७० में २१० हो गये और १९७१ में १९१। हड़तालों और तालाबन्दी की संख्या दिनोदिन बढ़ रही है प्रभावित श्रमिकों की संख्या वर्ष १९६९ में ५३,००-१९७० में ९३,००० और १९७१ में एक लाख से भी ज्यादा है। हानि हुई कार्य दिवस सन् १९६९ में चार लाख ६२ हजार, वर्ष १९७० में ५ लाल ५७ हजार तथा वर्ष १९७१ में सात लाख ९० हजार थे। विलम्बित मामले भी बढ़ रहे है, वर्ष १९६९ में ३३०, वर्ष १९७० में ३९८ और वर्ष १९७१ में ६९४ निलम्बित मामले रहे। लेबरकोर्ट में श्रम विभाग के अन्दर जो मामले है उनमें भी बड़ी ढिलाई है। यह आंकड़े बतला रहे हैं। नारे तो लगा रहे है लेकिन किसी प्रकार से कोई काम नहीं हो रहा है। इसकी तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

आज के बढ़ते-चढ़ते मूल्यों में जो कुछ उद्योगों में वेजबोर्ड बैठे है, उनका नियम यह है कि वे ५ साल में बैठेंगे। बड़ा आन्दोलन होता है तब जाकर वेतन समिति बनती है। लेकिन कुछ जगहों पर इसका भी प्रावधान नहीं है। इस एक वर्ष में ३० प्रतिशत से ४० प्रतिशत तक मूल्यों में वृद्धि होगी, उसमें आप कर्मचारियों को कहां तक राहत देंगे। उनका वेतन मूल्यों पर ही चलता है। वेतन का आधार न लेकर "बेजबोर्ड" ने जो कह दिया, ५ साल तक उसके अनुसार ही करना अनिवार्य हो जाता है। मान्यवर, मेरी मांग है कि स्थायी बेजबोर्ड की स्थापना होनी चाहिए। यह ५ सालों वाली बात समाप्त कर देनी चाहिए। जैसे-जैसे मूल्य बढ़े वैसे-वैसे वेतन भी बढ़ाना चाहिए। इससे न लड़ाई होगी और न हड़ताल।

ट्रेड यूनियन

मान्यवर, मैं यह बताना चाहता हूं कि ट्रेड यूनियनों के सम्बन्ध में वर्तमान समय में किस प्रकार से कार्यवाही हो रही है। एक डिप्टी रजिस्ट्रार यूनियन हैं। उनका इस ढंग से काम रखा गया है कि वह एक विशेष यूनियन को बचाने के लिए प्रदेश भर में दौरा करते हैं। उनका कोई एक क्षेत्र नहीं है। आप देखेंगे कि उनका दौरे का जो भत्ता आता है वह शायद उस सैक्शन में सबसे अधिक है। उनका एक ही काम है यह बताना और पता करना कि इण्टक को मजबूत करने के लिए कौन-कौन से तरीके और बाकी के सम्बन्ध में कौन-कौन सी अड़चने हो सकती हैं। इन्हीं सब बातों के पचड़े में वे अपना समय व्यतीत करते हैं। मैं यह भी बता दूं कि एक सी. ओ. डी. कर्मचारी संघ आगरा की यूनियन वहां पर रजिस्ट्रेशन के लिए गई। आज उसको १२वां महीना हो रहा है, उसके रजिस्ट्रेशन का कहीं पर भी पता नहीं है। जब कभी रजिस्ट्रार साहब से बात होती है तो यह कहते हैं कि फाइल आगरा गई है और जब आगरा में पता लगाया जाता है तो यह कहा जाता है कि फाइल कानपुर गई है। अभी हाल ही में जब मैं एक आवश्यक कार्य से आगरा में था तो मैंने सोचा उस फाइल का पता लगाया जाय। जब वहां के क्लर्क से बातचीत की तो उसने कहा जब तक पैसे की चीज नहीं चलती है तब तक उस फाइल का पता लगा सकना मुश्किल है। जो अब तक बड़ा साफ था? वह ट्रेड यूनियन का सैक्शन आखिर किधर जा रहा है। अभी लखनऊ के म्यूनिसिपल कर्मचारी संघ के अध्यक्ष और महामंत्री का झगड़ा था। मंत्री ने मीटिंग बुलाकर वहां के अध्यक्ष को बर्खास्त कर दिया। उसके बाद मामला मुन्सिफ के यहां गया। वहां से स्थगन आदेश मिल गया। वे उसकी नकल ले आये। अब यह विवादास्पद प्रश्न हो गया है। मुन्सिफ के निर्णय और उसकी प्रति रिसीव करने के बाद भी रजिस्ट्रार ने, चूंकि वे एक ओर इनक्लाइण्ड थे, विवादास्पद कार्यसमिति को डी-रजिस्टर्ड कर दिया। यह सारी चीजें चल रही है।

आश्वासन देते हैं तो कड़ाई से उसका पालन होना चाहिए । हिंसा और तोड़फोड़ में जो कार्यरत रहे उन पर कार्यवाई होनी चाहिए ।उन्हें दण्ड देने की कार्यवाई करें । लेकिन सबके साथ बदले की भावना से कार्यवाई करना या परेशान करना उचित नहीं होगा।

इसी प्रकार से चिकित्सा का क्षेत्र है, जहां ट्रेड यूनियन का प्राविधान नहीं है । यह बात सही है कि वह ऐसी संस्था है जहां ट्रेड यूनियन नहीं चलना चाहिए । परन्तु कर्मचारियों के हितों की रक्षा किस प्रकार की जाय ? जब अफसरों की तरफ से, मैनेजमेंट की तरफ से उनके विरुद्ध काम हो रहा है तो उनके साथ न्याय कैसे हो ? वहां बात-बात में कर्मचारियों को निकाला जाता है, परेशान किया जाता है, उनके लिए कोई प्रबन्ध होना चाहिए। चिकित्सा के क्षेत्र में हजारो कर्मचारी काम कर रहे हैं, राजकीय कम्पाउण्डर्स की संख्या सात हजार के ऊपर है । परिवार नियोजन का कार्य बन्द होने वाला नहीं है । सब जगह मलेरिया के कर्मचारी हैं । जगह-जगह अस्पताल के कर्मचारी हैं । इनके लिए आप सम्पूर्ण नियम बनायें । उन्हें सर्विस की गारण्टी दी जाय । वेतन तथा सभी अन्य बातों के बारे में उन नियमों का प्रावधान किया जाय, जिससे कर्मचारी समझें कि हम कर्मचारी है और हमें जब चाहे दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल कर नहीं फेंका जा सकता है ।

मान्यवर, मैं चीनी मिल के कर्मचारियों का भी मसला इसमें जोड़ना चाहूंगा । जो महंगाई बढ़ी है उसकी एवज में सरकार ने हर उद्योग में २५ रुपये से लेकर ६५ रुपये तक वेतन बढ़ोत्तरी की है बेजबोर्ड से परे जाकर यह बढ़ोत्तरी हुई है । यह स्वागत योग्य है । मान्यवर, इस विषय में शुगर मिल मजदूरों का एक त्रिवेणी सम्मेलन हरिद्वार में हुआ । जिसमें सरकार के प्रतिनिधि थे । मैनेजमेंट के प्रतिनिधि थे । मजदूरों के भी प्रतिनिधि थे । मुख्य मन्त्री, और राज्य श्रम मन्त्री भी थे । वहाँ पर यह विचार हो रहा था कि जब सभी उद्योगों में वेतन बढ़ाया गया है तो फिर चीनी मिल मजदूरों का वेतन क्यों नहीं बढ़ाया जा रहा है इस विषय को मुख्यमन्त्री पर छोड़ दिया गया । लोगों का विचार था कि क्योंकि सारे उद्योगों में वेतन बढ़ाया गया है इसलिए वह कम से कम २५/- रुपये तो देंगे ही । मजदूर नेता उनके बहकावे में आ गये । मुख्यमन्त्री जी लखनऊ चले आये और पांच रुपये मासिक ही बढ़ोत्तरी घोषित कर दी ।

मान्यवर, हर जगह २५०/- से ३००/- रुपये तक तनख्वाह दी जाती है लेकिन शुगर मिल के कर्मचारियों को केवल १६५/- रुपया दिये जाते हैं । वह भी तीन महीने के लिए जब सीजन होता है । कारखाना क्षेत्र में सबसे कम शुगर मिल के मजदूरों का वेतन है, तो भी केवल पांच रुपया ही बढ़ोत्तरी दी गई, जब कि बाकी उद्योगों में आप अधिक दे रहे हैं । आपने इंजीनियरिंग में २७ रुपया दिया है । बिजली कर्मचारियों के वेतन में दो बार बढ़ोत्तरी हुई । आपने जिस नजरिये से अन्य उद्योगों में बढ़ोत्तरी की है उसी आधार पर शुगर मिलों में काम करने वाले कर्मचारियों की बढ़ोत्तरी करने में क्या आपत्ति थी । लगता ऐसा है कि सरकार कुछ दूसरे ढंग से सोचती है कि किस उद्योग को प्रसन्न करें और किसको न करें । यह बात शुगर मिलों की मजदूरी का न बढ़ाने से सिद्ध होती है ।

मान्यवर, चतुर्थ पंचवर्षीय योजना समाप्ति पर है। पंचम पंचवर्षीय योजना का प्रारूप सामने आ रहा है। मैं मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि आप देख लें, आप जितनी योजना बनाते हैं एयर कण्डीशन्ड कमरे में बैठ कर बनाते हैं। केवल कुछ लोगों की राय लेकर बनाते हैं। आपको इसके लिए एक गोलमेज कान्फ्रेन्स बुलानी चाहिए। जिसमें श्रमिकों के प्रतिनिधि रहें, मालिकों के प्रतिनिधि रहें, सरकार के प्रतिनिधि रहें, विशेषज्ञों के प्रतिनिधि रहें, और जनता के भी प्रतिनिधि रहें। आर्थिक हित से सम्बन्धित इन पांचों प्रकार के प्रतिनिधियों को बुलाकर बात करनी चाहिए। उसमें कोई हर्ज नहीं होगा। हल निकलेगा। जितने अधिक लोगों की राय लेकर योजना का प्रारूप बनेगा, उतना ही व्यावहारिक होगा। आज सारी चीजें एक ही दायरे में घुमाई जाती हैं। जिनका विचार करना चाहिए, जिनकी राय चाहिए, उनकी राय नहीं ली जाती है।

मैं सरकार से यह भी कहना चाहूंगा कि उपभोक्ता भण्डार तथा सस्ते गल्ले की दुकानें उन स्थानों पर इतने व्यापक पैमाने पर स्थापित करनी चाहिए जहां निर्धन और मजदूर वर्ग के लोग रहते हों। क्योंकि इस महंगाई के युग में उनकी तनख्वाह से उनका गुजर-बसर नहीं होता। इस कारण उनके अन्दर अशान्ति बनी रहेगी। आप सर्वेक्षण कर लें कि कहां-कहां पर इस वर्ग के लोग हैं। उसके अनुसार उन्हें १९६० की दर पर उपभोक्ता चीजें, जैसे गल्ला आदि उनको मुहैय्या करायें। बाकी जनता के लिए आप क्या करने वाले हैं और क्या नहीं करने वाले हैं, वह अगली बात है। लेकिन इस वर्ग के लिए जब तक आप नहीं सोचते, तब तक इसका कल्याण नहीं होगा।

सभी विभागों में वर्कचार्ज कर्मचारियों की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। यहां पर कह दिया जाता है कि तीन वर्ष वालों को हम रेगुलर कर रहे हैं। परन्तु रोडवेज, पी. डब्ल्यू. डी., सिंचाई, खदान आदि विभागों में जो वर्कचार्ज कर्मचारी काम कर रहे हैं, वे वैसे ही चल रहे हैं। वे १० वर्ष से वर्कचार्ज में काम कर रहे है, लेकिन उन्हें रेगुलर नहीं किया गया है। यहां वक्तव्य देने से कोई लाभ नहीं होता। आप उसे क्रियान्वित कीजिए। वर्कचार्ज कर्मचारियों के बारे में न तो कोई सर्विस रूल है न उनके वेतन के बारे में कोई बात निश्चित है और न राजकीय कर्मचारियों की तरह उन्हें अन्तरिम सहायता ही मिलती है। वर्कचार्ज कर्मचारी आज भी पीड़ित हैं। उसके बारे में अनेक बार कहा गया है। आपने कहा कि तीन वर्ष वालों को रेगुलर कर देंगे। लेकिन उसका क्रियान्वयन नहीं किया, इस ओर ध्यान देने की जरूरत है।

अभी रोडवेज की हड़ताल हुई थी। यह हड़ताल किन बातों पर थी इसमें नहीं जाना चाहूंगा। मंत्री जी ने बार-बार आश्वासन दिया कि उन कर्मचारियों पर कोई ऐक्सन नहीं लेंगे। जिन्होंने हिंसा और तोड़फोड़ की कोई कार्यवाई नहीं की है वे काम करेंगे। परन्तु ऐसे कई उदाहरण है कि जिन्होंने हिंसा और तोड़फोड़ की किसी कार्यवाही में भाग नहीं लिया है, उनके बारे में जांच-पड़ताल की जा रही है। नाटक किया जा रहा है। अगर डिपार्टमेंट थोड़ा सा भी किसी के ऊपर नाराज है, तो वह उसे परेशान कर रहा है। जब मंत्री जी कोई

सरकारी रीति-नीति

मा. अधीष्ठाता महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बजट के ऊपर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया। बजट को पूर्णरूप से पढ़ने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि मंत्री जी ने इस बात को सत्य सिद्ध करने का प्रयास किया है कि वर्तमान सरकार सारी बातों पर बहुत ही गंभीरता से विचार कर रही है, और हर दिशा में उसका जो भी कदम उठता है वह बहुत ही स्थिर और स्थायी होता है। मान्यवर, कहने के लिये तो बहुत सी बातें हो सकती हैं, परन्तु यदि आप इसके सारे आंकड़े, जो इसमें दिये गये है, देखें तो ऐसा मालूम होता है कि यह बजट चुनाव को दृष्टि में रखकर तैयार किया गया है। मैं समझता हूं कि इस बजट को यदि चुनावी बजट कहा तो ठीक होगा। यह घाटे का बजट है। ७४ करोड़ ३८ लाख रुपया कर्मचारियों पर खर्च होगा, जैसा कि सुल्तान आलम खां साहब ने कहा है। वे वेतन आयोग के सदस्य भी हैं। जो बजट प्रस्तुत किया गया है यह वाकई में जादुई बजट हैं।

आप विस्तार में जायेंगे तो देखेंगे कि कर्मचारियों पर व्यय ७४ करोड़ नहीं, बल्कि तीस ही करोड़ आयेगा। जब कि बजट में ७४ करोड़ के आंकड़े कर्मचारियों के बारे में दिये गये है। फिर बचा हुआ रुपया कहां खर्च होगा? किसके साथ न्याय किया जायेगा? बजट आंकड़ों में ये सारी बातें नहीं है।

जब हम बजट के एक-एक विषय को देखेंगे तो मालूम होगा कि वित्तमंत्री जी ने प्रारम्भ में यह कहा है कि बंगला देश शरणार्थी वाला जो कर केन्द्र द्वारा लगा था, उसे इस साल समाप्त करने की बात है। लेकिन उत्तर प्रदेश में उस कर को वह दूसरे रूप में लगाने की बात कर रहे हैं। कारखानों के बारे में उन्होंने जहां कुछ मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त किये हैं, और (विधान नगर) की बात कही है, उसमें डाला और चुर्क फैक्टरी की बात आई। किन्तु

मैंने पहले भी कहा है कि पब्लिक सैक्टर के उद्योग भ्रष्टाचार के केन्द्र हैं। अपने प्रदेश में बहुत अच्छी फैक्ट्रियां हैं। मान्यवर, केवल आरोप के लिए आरोप लगाने की मेरी आदत नहीं है। चुर्क डाला सीमेंट फैक्ट्री का विवरण में अवश्य रखना चाहता हूं कि वहां थोड़ी सी ढ़िलाई और लापरवाही के कारण लाखों-लाखों रुपयों का वारा-न्यारा हो जाता है। नियुक्ति में भी भ्रष्टाचार बढ़ गया है। मैं एक-एक बात लेता हूं सर्व श्री होल टेण्क इंजीनियर्स लिमिटेड को स्थाई रूप से दोनों फैक्ट्रियों में टेकनिकल कन्सलटेन्ट नियुक्त किया गया है। इन्हें मुंहमांगा पैसा दिया जा रहा है। इनके कार्य आदि की कोई शर्त तय नहीं की है। अन्यों से आफर तक नहीं मांगा गया। इनका अनुभव भी नहीं देखा गया, लेकिन उनकी नियुक्ति कर दी गई। ऐसा करने के लिए कौन सी ऐसी बात आ गई थी? इसके अलावा दो असिस्टेण्ट इंजीनियर्स, तीन शिफ्ट केमिस्टस तथा अप्रेन्टिस केमिस्ट की नियुक्ति कर ली गयी। इसके लिए विज्ञापन कराया गया, चयन कराया गया। जो लोग चुने गये, उन सफल प्रत्याशियों को नहीं लिया गया। उनको न रखकर उनके स्थानों की पूर्ति कर दी गई। तो फिर विज्ञापन निकालकर चयन कराने का यह नाटक क्यों किया गया? भ्रष्टाचार के ये अड्डे बढ़ रहे हैं। मान्यवर, अभी सन् १९७२ में गुरुमा खदान ने चूने के पत्थर खोदने का टेण्डर किया था। उसको स्वीकार किया गया और कम भाव वाले को अस्वीकार किया गया। इस प्रकार चार रुपया अट्ठारह पैसे प्रति टन वाले को ठेका नहीं दिया गया, पांच रुपया पच्चीस पैसे प्रति टन वाले को ठेका दे दिया गया।

खण्ड १४१ दिनांक ५ अप्रैल १९७३, पृष्ठ संख्या ८०६,
वित्तीय वर्ष १९७३-१९७४ के आय व्यय पर सामान्य चर्चा

महालेखा परीक्षक ने अपनी रिपोर्ट में भ्रष्टाचार की चर्चा की है। सिंचाई विभाग और सार्वजनिक निर्माण विभाग का क्रमश: ८२ लाख तथा २९ लाख रुपये का सामान और औजार ११-११ वर्ष से बेकार पड़ा हुआ है। इसकी कोई जांच करने वाला नहीं है। उस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि १९ लाख का गबन हुआ है। सरकार उसके बारे में चुप है। मौन है। वह गबन कैसे हुआ? क्यों हुआ? उसकी कुछ भी चर्चा नहीं है।

मान्यवर, आप यह भी देखें कि सरकार का ५९ करोड़ ४९ लाख रुपया वसूली में पड़ा हुआ है। यह बकाया गन्नाकर, राजस्व कर है। विद्युत कर का ३२ करोड़ रुपया अलग है। यह रुपया पड़ा है। वसूल नहीं हुआ है। किन्तु उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता है। लेकिन यदि कर्मचारियों के वेतन में कुछ बढ़ जाता है तो उसका जिक्र कर दिया जाता है।

मूल्यों को रोकने का उत्तरदायित्व सरकार का है। वह अपने इस कर्त्तव्य की अवहेलना करती है। सरकार का काम क्या है? सरकार का काम हैं (१) देश की सुरक्षा करना, (२) देश में आन्तरिक सुरक्षा (३ सबको काम देना और (४) दाम बांधना। इन चारों में से कोई भी काम सरकार ने नहीं किया है। आजादी के बाद भी यह स्थिति है। इसका उत्तरदायित्व सरकार पर है। जो दाम बढ़े हैं उनको रोकें और जो भ्रष्टाचार फैल रहा है उसे निकाल बाहर करें। मान्यवर, महालेखा परीक्षक की जो रिपोर्ट है, उसमें वसूली के बकाये और घाटे की स्थिति का जिक्र है। इस तरफ सरकार का ध्यान क्यों नहीं जाता?

यहां पर विद्युत के बारे में चर्चा हुई। दुनियां भर की बातों का वर्णन किया गया। यह कहा गया कि रिहन्द बांध में पानी की कमी है पिछले वर्षों में इससे भी पानी की सतह कम रही है, लेकिन बिजली का संकट पैदा नहीं हुआ। फिर अभी क्या कारण है? इसका एक ही कारण है कि वह भ्रष्टाचार का गढ़ है। १२-१२ महीनों से ओबरा और हरदुआगंज की मशीनें बेकार पड़ी हुई थीं। एक पुर्जा रूस से आने वाला था। इस रिपोर्ट में यह लिखा गया है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने केन्द्रीय सरकार पर दबाव नहीं डाला। रूस को कम्पलेन्ट कैसे करें कि वह इसको जल्दी से ठीक करें। वह पुर्जा आयेग तो रूस से ही आयेगा, नहीं आयेगा तो मशीन बन्द पड़ी रहेगी १२-१२ महीने। हैवी इलेक्ट्रिकल्स की भी मजबूरी है, इस प्रकार की बात हो रही है। इसकी तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है कि हम अपने थर्मल पावर को किस प्रकार से जेनरेट कर सकते हैं? किस प्रकार से उसको चालू कर सकते हैं? किस प्रकार से हम उसकी उत्पादन क्षमता बढ़ा सकते हैं? हम अपने पैरों पर किस प्रकार से खड़े हो सकते हैं? बड़े-बड़े नारे लग रहे हैं। लेकिन केवल नारे लगाने से समस्या नहीं सुलझ सकती। फिर भी नारे चल रहे हैं और होड़ लगी है कि हम नारे लगाने में कहीं पीछे न रह जायें।

मान्यवर, जहां मैंने इन सब बातों को आपके सम्मुख रखा है वहां सिंचाई विभाग के बारे में भी कुछ कह देना चाहता हूं। सिंचाई विभाग के बारे में मंत्री जी ने अपनी रिपोर्ट में बहुत सारी बातें कह दी हैं। आपके पास रिग्स के, लिफ्ट के, ट्यूबवेल के, कैनाल के वर्कशाप

इस विषय में बिजली में जो कटौती की गई है उसके कारण ६५ प्रतिशत उत्पादन घटा है। यह तो मंत्री जी ने बताया लेकिन किस तरह से उत्पादन बढ़ाय, उसके लिये क्या करें, उन्होंने इसका उल्लेख नहीं किया है।

मान्यवर, १२ लाख कर्मचारियों के बारे में वेतन समिति की रिपोर्ट आई है। समिति ने न्यूनतम वेतन १६५ रुपये रखा है। मंत्री जी ने कहा है कि १८ गज कपड़ा एक परिवार के लिये पर्याप्त होगा। ४ सदस्यों की एक परिवार की ईकाई मानी गई है। जब कि यह वास्तविकता नहीं है। यह व्यावहारिक भी नहीं है। बाहर के देशों के लिये चार सदस्यों के एक परिवार की बात हो सकती है, लेकिन हिन्दुस्तान में यह सम्भव नहीं है। क्योंकि यहां जो मजदूर या दूसरे लोग होंगे वे अपने बूढे माता-पिता को नहीं छोड़ सकते है। जिसकी बहन अविवाहित है उसे वह नहीं छोड़ सकते। यदि विधवा पुत्री है, तो उसके बाल-बच्चों को नहीं छोड़ा जा सकता। यह चार यूनिट का जो परिवार माना गया है क्या उनके लिये १८ गज कपड़ा पर्याप्त होगा। मैं मंत्री जी के लिये नहीं कह रहा हूं। लेकिन यह जो १८ गज कपड़े की व्यवस्था रखी गई है, तो १८ गज कपड़ा तो एक माननीय सदस्य के ऊपर ही खर्च हो जायेगा। मान्यवर, फिर जो बच्चे होंगे, उनके कपड़े की भी बात आप देखें। गरीब को जो ७ रुपये आवश्यक सुविधा के लिये रखे है, मेरे विचार से देहात में भी यह बात नहीं हो सकती।

आपने १६५ रुपये न्यूनतम वेतन रखा है। इस महंगाई के जमाने में सारे देश की मूल्यांक सूची को आप देख लें। क्या उससे वह अपना खर्चा पूरा कर लेगा। यदि आपने उसको नौकर रखा है तो किसके कहने पर रखा है ? किसकी जिम्मेदारी पर रखा है ? क्या आप उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं करेंगे ? किसी को भी नौकर रखते समय आपने पहले से यह सोच लिया होता कि कैसे वह अपने जीवन की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा, जब तक कि उसे आप उतना नहीं देंगे जितने में वह अपनी जरूरतों को पूरा कर सके। किन्तु आपने इस पर विचार नहीं किया। यहां पर वेतन क्रम के आंकड़े दे दिये। एक ग्यारह और एक तेरह कर दिया। इस आंकड़ेबाजी से उसका काम चलने वाला नहीं है।

मान्यवर, कर्मचारियों पर व्यय करने के लिये मूल्यांक सूची तैयार की गयी है, लेकिन उसका गलत प्रचार होता है। सरकारी लोगों तथा अन्य नेताओं के द्वारा कहा यह जाता है कि उत्पादन दर कम हैं, वेतन वृद्धि की दर अधिक है, इसलिये यह बात होती है। आप हर विभाग के आंकड़े ले लें, चाहे वह उद्योग का क्षेत्र हो या दूसरा क्षेत्र हो, उनका नम्बरिंग तय कर लें। सरकार का ही कहना है कि उत्पादन दर में वृद्धि हुई है और वेतन दर वृद्धि मूल्य सूचकांक से कम हुई है। मैं समझता हूं कि यह कमी होती रहेगी। महंगाई बढ़ती रहेगी और वेतन उसे पकड़ नहीं सकेगा। उत्पादन के बारे में कहा गया है कि वह हमेशा बढ़ा है और आज तक बढ़ा है। जब उत्पादन दर बढ़ता है तो उसी के एवज में या तो मूल्य वृद्धि रोके या उसके अनुसार वेतन दें। वेतन बढ़ोत्तरी का मूल्य सूचकांकों की महंगाई बढ़ने से कोई तालुक नहीं है। आपको सोचना पड़ेगा कि महंगाई की वृद्धि को कैसे रोका जाय।

हीनता पैदा हो जाती है, तो फिर अनुशासन वापस नहीं आता। जब उनके लिये कोई भी न्याय और नियम की बात नहीं चलती है तब मजबूर होकर आन्दोलन में जुट जाते हैं। फिर वे पीछे भी नही हटते। मंत्री जी इस पर विचार कर लें कि फिर क्या होगा ?

मान्यवर, मैं यह निवेदन कर देना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश के समस्त विद्यालयों के लिये एक विधेयक आया था। हालांकि अभी वह पारित नहीं हुआ है। अभी उस पर विचार होगा। उससे राज्य सरकार के मंसूबे प्रकट हो जाते है कि वह क्या चाहती है। आप शिक्षा के सम्बन्ध में विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता खत्म करना चाहते हैं और शिक्षाविदों को भ्रष्ट बनाना चाहते हैं। उस विधेयक कि यह मंसूबा स्पष्ट है। हमारे भाई शायद नाराज होंगे क्योंकि वे तो राष्ट्रीयकरण की बात करते है, परन्तु मैं तो सदैव से राष्ट्रीयकर का विरोधी रहा है। और आज भी हूं। अध्यापक बन्धु प्रबन्धकों से नाराज हैं, लेकिन अध्यापक बन्धु प्रबन्ध को अपने हाथ में नहीं लेना चाहते। वे विद्यालयों का प्रबन्ध ब्यूरोक्रेटस के हाथ में देना चाहते हैं। वे गुलाम के गुलाम बने रहना चाहते है। अपनी समस्त स्वायत्तता को नष्ट करके रख देना चाहते हैं। विद्यालयों को प्रबन्धकों से छीना जायेगा, लेकिन उनको अध्यापकों और शिक्षाविदों के हाथ में न रखकर उसमें सरकार के आदमी रखे जायेंगे। सभी बातें में पूर्ण रूप से सरकार निर्णायक हो जाय, यह ठीक नहीं है। सरकार यह चाहती है कि जो उसकी वाहवाही करने वाने हों और जो उसके लिए काम करते हों, उनको ही केवल वरीयता मिले। केवल उन्हीं को नियुक्तियां मिलें। बाकी जो अन्य विचारधारा के लोग हैं उनको स्थान ही मिलेगा। अन्य विचारों के लोगों को पहाड़ों और जगलों में भेज दिया जायेगा। मैं यह कहता हूं कि सरकार प्रत्येक क्षेत्र में इतने अधिकार क्यों ले रही है। क्या वह अध्यापक बन्धुओं से इतना डरती है ? मंत्री जी बैठे हैं। मैं उनसे यह पूछना चाहता हूं कि आखिर वे शिक्षा को अपने हाथ में लेने के पीछे क्यों पड़ें हैं ?

आप उद्योग-धन्धे भी पूंजीपतियों के हाथों से छीन रहे हैं और राष्ट्रीयकरण की तरफ बढ़ रहे हैं। सभी क्षेत्रों को सरकार अपने क्षेत्र में लेना चाहते हैं। इससे हम लोग बहुत दुखी हैं। इसका कारण यह है कि जब कोई भी उद्योग सरकार के हाथों में गया है तो उसमें घाटा ही हुआ है। आप देखें कि केन्द्र के अनेक उद्योग हैं। मैं एक-एक करके उनका वर्णन करूंगा कि उनकी क्या हालत है। आखिर सरकार के हाथों में उद्योग क्यों दिये जाय ? मैं तो इस राय का हूं कि अगर सरकार के हाथ में सोना भी दे दिया जाय तो वह मिट्टी बनाकर रख देगी। मैं तो यह भी कहूंगा कि पूंजीपति केवल धन का ही शोषण करते है, लेकिन सरकार तो धन और इमान दोनों का ही शोषण करती हैं। आज पब्लिक सैक्टर में चलने वाले उद्योग मिनिस्टरों और अफसरों के चारागाह हो गये हैं।

मान्यवर यहां जितने पब्लिक सैक्टर हैं उनका जो अनुभव हैं उसके आधार पर मेरा आरोप कहिए या तथ्य कहिये, मैं इस धारणा पर पहुंच गया हूं कि अब सारी चीजें मिनिस्टरों और अफसरों को हो जायेंगी। जैसे-जैसे इन क्षेत्रों में जाने का अवसर मिला हम लोगों ने देखा की पूंजीपति अपने स्वार्थ के लिए मजदूर का खून तो चूसता है, किन्तु उद्योग बढ़ाता है,

हैं। ये वर्कशाप कितनी क्षमता वाले हैं ? उनमें कुछ प्रगति हो सकती है क्या ? और कर्मचारी लगाये जा सकते हैं क्या ? वह ठीक प्रकार से चल रहो है क्या ? उनकी आवश्यकतायें क्या है ? उनको तो देखे। वर्कशाप ठीक से चल रहे हैं या नहीं ? सबको वर्कचार्ज बना कर रखा गया है। कर्मचारी सोचता है कि आज रखा गया हूं, कल निकाल दिया जाऊंगा। सर्विस का कोई प्रावधान नहीं है प्रावीडेन्ट फण्ड का प्रावधान नहीं हैं। एक कारखाना अधिनियम बना है, किन्तु सिंचाई के वर्कशाप इससे भी वंचित हैं। सुविधाओं से वंचित है। मूलभूत अधिकार भी कर्मचारियों को नहीं दिये जाते हैं। वर्कशाप भी ठीक से नहीं चल रही है।

शिक्षा की बात लें। मंत्री जी भी उपस्थित हैं। जूनियर स्कूलों के छात्रों के लिए डायरेक्टर बने हैं। माध्यमिक के लिये अलग डायरेक्टर बने है। उच्च विद्यालयों और महाविद्यालयों के लिये अलग हैं। लेकिन मंत्री जी का ध्यान संस्कृत विद्यालयों और महाविद्यालयों की ओर नहीं जाता। ६०० के लगभग संस्कृत विद्यालय हैं। आपने शिक्षा का विकेन्द्रीकरण किया था तो इनके बारे में भी कुछ सोच सकते थे। लेकिन संस्कृत के अध्यापकों की मांगों की पूर्ति नहीं करेंगे। क्यों कि इस प्रकार के लड़ाई-झगड़े में संस्कृत के अध्यापक पड़ते नहीं संस्कृत विद्यालय जिस प्रकार से चलते हैं उस स्थिति में यह चीजें चल भी नहीं सकती। उनकी मजबूरी का नाजायज फायदा उठाया जा रहा है। वहां सेवा-नियमों का पालन नहीं होता। मंत्री जो बैठे हैं सबको वेतन दिया। अन्तरिम सहायता भी दी। लेकिन संस्कृत विभाग कार्यालय के जो कर्मचारी है उनके लिये इस तरह का कोई प्रावधान नहीं है कि वे भी राहत पायें।

मंत्री जी ने कहा कि प्रत्येक परीक्षा केन्द्र पर कर्मचारियों को एम मुश्त पैसा देने का प्रावधान किया है। इस व्यवस्था में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को दो पैसा-तीन पैसा ही रोज पड़ता है। ५०० छात्र परीक्षा में बैठेंगे तो २५० रुपया ४० दिन का मिलेगा। इसका ड्योढ़ा और दुगना भी कर दें तो भी उससे उनको कितना मिलेगा ? प्रति व्यक्ति प्रति पाली की व्यवस्था न करके उनके स्थान पर प्रति केन्द्र एक मुश्त देते हैं। ये कर्मचारी हर तरह का खतरा मोल लेते हैं। परीक्षा केन्द्र पर जाते हैं। कापियां लेकर जाते हैं। छात्र देखते हैं कि वह कहां जा रहा है। किस पते पर कापियां जा रही हैं। उसे चाकू भी दिखाते है। वह पूरी ड्यूटी भी देता है। पहले जाकर केन्द्र पर जितनी मेजे और कुर्सियां हैं उन सबको लगाता है। साफ करता है। उसके बाद बच्चों को पानी पिलाता है। सबके जाने के पश्चात् आखिर में ताला बन्द करने के बाद ही वह अपने घर जा पाता है। आखिर यह तीन-चार पैसे प्रतिदिन कमा कर क्या कर लेगा। अगर उसने २०-२५ साल नौकरी कर ली और उसके बाद अगर उसका कहीं झगड़ा हो गया तो वह झगड़ा कौन सुलझायेगा ? हालत यह है कि जिससे झगड़ा है, वहीं सुलझाने वाला है—वहीं प्रिंसिपल है और वही मैनेजर है। उसको चार्जशीट देकर सस्पेंड कर दिया जाता है, क्योंकि निर्णायक तो वही लोग है। आखिर आप उनके लिये क्या कानून लायेंगे ? मैं यह पूछना चाहता है कि जो कर्मचारी २०-२५ वर्ष से कार्यरत है क्या आप उसको सुरक्षा नहीं देंगे ? अगर नहीं देने की स्थिति में हैं तो आप सारी बातों को कम से कम सुनें तो सही। यह स्थिति आप क्यों आने देते हैं ? मेरे विचार में अगर कहीं एक बार अनुशासन-

हमको सारी चीजों पर सोचना पड़ेगा । दो प्रकार के एकाधिपति है— एक तो निजी पूंजीपति और दूसरे सरकारी पूंजीपति । इन एकाधिपतियों से कैसे सम्पूर्ण क्षेत्र को बचाया जाय । विश्वविद्यालय हो, उद्योग हो या और कोई क्षेत्र हो, जब तक इन एकाधिपतियों से इनको बचाया नहीं जाता तब तक कोई समस्या सुलझने वाली नहीं । सरकार के हाथों में रहेगा तो असंतोष की समस्या सुलझेगी नहीं, बल्कि और उलझेगी । हमें विचार करना पड़ेगा कि आखिर इधर से उधर मालिक बदलने से क्या होगा ? इनके बदलने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा । बल्कि समस्या और उलझ जायेगी ।

जहां मैंने इन सारी चीजों को कहा है वहीं मैं आपके माध्यम से यह भी कहूंगा कि श्रम मंत्री जी ने श्रम के क्षेत्र में बहुत ही बढ़िया काम किया है । उन्होंने बहुत सारी बातें की हैं । लाभत्रयी योजना हैं न्यूनतम वेतन चालू कर दिया है । और भी कई ऐसी चीजें हैं, जैसे निलंबन भत्ता नहीं मिलता था तो उन्होंने उसकी भी संस्तुति की है । और भी कुछ चीजें करने जा रहे हैं । यह सब यहां तक तो ठीक है । लेकिन उनका एक चक्र और चल रहा है और न जाने उनके मन में क्या है कि उन्होंने कहा कि वे दो-तिहाई यूनियनें खा जाते हैं । हम लोगों ने कहा कि इसे स्पष्ट कर दें तो उन्होंने कहा कि एक उद्योग में एक ही यूनियन होगी । तब हम जाकर उनके रहस्य से सजग हुये । वे कमिटेड यूनियन के लिये नियम बनाना चाहते हैं । हमने पूछा कि इसका आधार क्या होगा ? आप सीक्रेट बैलेट का आधार ले लें और जो भी बड़ी यूनियन हो, उसको अधिकृत कर दें । आप केन्द्र से आग्रह कीजिये, वहां आपकी ही सरकार है । लेकिन वह कहते हैं कि सारी यूनियनों को निरस्त कर देंगे । सरकारी स्तर पर यूनियन बनेगी । हमने कहा कि आपके इन्सपैक्टरों का जो रवैया है वह बड़ा ही खतरनाक है । चाहे बड़ी यूनियन हो चाहे छोटी इन्सपैक्टरों का उन पर डण्डा पड़ता है । वे उन्हें अधिक से अधिक आतंकित करते हैं । उनके सत्यापन और अन्य बातों में अड़ंगा लगा सकते हैं, लगाते हैं । जाने कितना परेशान करते हैं । इन्सपैक्टर जाता है और कहता है कि तब तक आतंकित करेंगे जब तक यह प्रस्ताव पास नहीं करोगे कि एक ही यूनियन रहेगी । वह आपकी इण्टक की यूनियन बनाना चाहता हैं, वही रहेगी । यह स्थिति बड़ी खतरनाक है । इसको रोकने की आवश्यकता है । इससे बहुत बड़ा विद्रोह हो जायेगा । एक यूनियन का नारा आप खड़ा करें । लेकिन उन नारे के पीछे जो दुर्भावना छिपी हुई है, उसका निराकरण भी करें । जबरदस्ती आप कैसे कर सकते हैं । ट्रेड यूनियन में सबको यूनियन बनाने का अधिकार दिया गया है । या तो आप केन्द्र से यह नियम बदलवाईये नहीं तो जो अधिकार है उसकी परिधि में रहकर काम करना होगा । सहायक रजिस्ट्रार की जो नियुक्तियां की गई हैं उसमें ऐसे लोग हैं जिनके पास वांछित योग्यतायें नहीं हैं और न कोई अनुभव है, लेकिन उनको अलग से नियुक्त किया गया है ।

खण्ड-१४१ दिनांक ४ अप्रैल १९७३ पृष्ठ सं० ६८९
वित्तीय वर्ष १९७३-७४ के आय व्यय पर सामान्य वर्ग

लेकिन सरकारी लोग तो अपने स्वार्थ के लिए मशीन तक बेच डालते हैं। पूरा का पूरा उद्योग नष्ट कर डालते हैं। मैं इसके बारे में तारीखवार विवरण दूंगा कि किस प्रकार पब्लिक सैक्टर चल रहे हैं। जो उद्योग राज्य के अधीन हैं उनकी क्या स्थिति है। हम कैसे कहें कि राष्ट्रीयकरण कर दिया जाय। रामचन्द्र शुक्ल जी कह सकते हैं। हिण्डालको में मीटिंग हुई। हम लोग भी दौड़े-दौड़े गये। वहां प्रारम्भ में डांगे साहब ने कहा कि इसका राष्ट्रीयकरण होना चाहिये। हम लोगों ने प्रश्न किया कि क्यों नहीं इस प्रकार की मांग मारुति कारखाने के लिये की गई। आखिर में जब भाषण खतम हुआ तो बिड़ला साहब के लोगों ने उन लोगों को पूरा कारखाना दिखाया, चाय पानी कराया। जब उनको ढाई लाख रुपया मिल गया तो उन्होंने बाद में कहा कि अगर यह उद्योग सरकार के हाथ में चला जायेगा तो एशिया का यह प्रमुख कारखाना चल नहीं पायेगा। नष्ट हो जायेगा। बाहर आकर बाद में पब्लिक में भाषण किया कि हिण्डालको का राष्ट्रीयकरण नहीं होना चाहिए, इतना बड़ा उद्योग सरकार के हाथ में जायेगा तो नष्ट हो जायेगा।

डा० रामचन्द्र शुक्ल—यह आप किस आधार पर कह रहे हैं।

श्री रामनरेश सिंह : मान्यवर, मेरी यह जानकारी है। आप पता लगा लीजिये। वहां इण्टक की यूनियन मान्यता प्राप्त है। उसकी शक्ति दुगनी हो गयी है। लेकिन वहां ए. आई. टी. यू. सी. से बात की गई और उनके जितने विक्टीमाइज्ड लोग थे वे पूरे के पूरे रख लिये गये, लेकिन इण्टक के लोग नहीं रखे गये। जिनके ऊपर आरोप थे उनको भी रख लिया गया। इस प्रकार की सौदेबाजी होती है। उद्योग पूंजीपतियों से छीना जाय कोई हर्ज नहीं है। लेकिन सवाल यह है कि उसके बाद किसके हाथ में दिया जाय? सरकार पूंजीपतियों के ऊपर अंकुश लगा सकती है, लेकिन जब वह सरकार के हाथों में आ जायेगा तो सरकार के ऊपर कौन अंकुश लगायेगा? चोर से लेकर डाकू को अगर दिया जाये तो क्या उससे समस्या सुलझ सकती है। इन बदमाशों से छीना जाय कोई हर्ज नहीं है लेकिन क्या उसे सौंपने के लिए कोई स्वायत्ताशासी संस्था होगी? क्या उपभोक्ताओं की आवाज सुनी जायेगी? केवल मालिक बदल देने से, टाटा-बिड़ला की जगह पर माननीय गोस्वामी जी या टंडन साहब आ जाय या, इनके ऊपर वाले लोग आ जायें—इससे काम नहीं चलेगा। जितने अधिकार शासन को हैं, उतने अधिकार श्रम विभाग को नहीं है। एक मामूली आदेश से वहां दफा १४४ लगा दी जायेगी। हम लोग मीटिंग नहीं करने जायेंगे। ट्रेड यूनियन के सारे अधिकार छीन लिये जायेंगे। आज तक शूगर फैक्ट्री में दफा १४४ नहीं लगी थी, लेकिन अब लगा दी। लोगों को मीटिंग के लिये जेल जाना पड़ा। नारे तो बड़े अच्छे हो सकते हैं लेकिन उनसे होता कुछ नहीं। मान्यवर, यहां पर जितनी बातें चल रही है वे सब नारेबाजी से जकड़कर चल रही है। इससे होगा क्या? हमारा तो कहना है इस बजट के माध्यम से इस सरकार को एक स्पष्ट नीति निर्धारित करनी चाहिये? उसे देखना चाहिए कि हर क्षेत्र में जनता के प्रतिनिधि कैसे हो सकते हैं? राष्ट्रीयकरण जब चीन-रूस तक में असफल हो चुका है तो उसे यहां पर क्यों लाया जा रहा है।

नहीं थी, इसलिये उन्होंने इस पर कुछ लिखा ही नहीं अतः आज के वामपंथी लोगों को दिक्कत हो रही है।

खेतिहर मजदूर क्षेत्र में ट्रेड यूनियन से सफलता नहीं मिलेगी। हम और तरह से सोच सकते हैं। फैक्टरी की तरह से धरना देना खेतिहर मजदूरों का बुरा तो कर सकता है, उनको फायदा नहीं पहुंचा सकता। राजनीतिक दलों ने भी मजदूरों का संगठन बनाकर उनके आंदोलन को आगे बढ़ाया। हमारी संस्था ने भी बहुत तो नहीं किया, लेकिन कुछ जिलों—मिर्जापुर, गोंडा और बहराइच—में खेतिहर मजदूरों के बीच काम किया। वामपंथी लोगों ने कई प्रदेशों में भूमि हड़पो आंदोलन के माध्यम से इस काम को लिया, लेकिन वह सब फेल हो गया। इन लोगों ने उनका अहित भी किया। प्रारम्भ में जब मजदूरों को भड़काया गया तो कुछ जगहों पर उन लोगों को भूमि बांट दी गई, लेकिन बाद में भूमि नहीं मिली। दूसरी समस्या यह है कि भूमि लेने वाले बहुत हैं और भूमि उतनी है नहीं। पहले किसानों और मजदूरों में आपस में प्रेम था। लेकिन इस आंदोलन से उनके प्रेम में जो खाई पड़ गई है, वह अभी तक नहीं पट पाई। राजनीतिक पार्टियों का आंदोलन भी फेल हो गया और ट्रेड यूनियन का भी। लेकिन मन्त्री जी के मन में कुछ है जिसकी झलक बातचीत और कमेटियों में हुई बातों से मिलती है। असंगठित मजदूरों के प्रति वे कुछ करना चाहते हैं। मैं स्वयं भ्रमित हूं। आशा है हमें उनके द्वारा इस विधेयक के सम्बन्ध में मार्गदर्शन मिलेगा जिससे कि हम लोग उस प्रकाश में सब चीजें देख सकें और कुछ कर सकें।

वास्तव में अपने यहां जो प्राचीन व्यवस्था थी उसमें पैसा देने की बात नहीं थी, वस्तु की बात थी। जिन्स को मजदूरी में दिये जाने की व्यवस्था थी। उस समय कोई समस्या खेतिहर मजदूरों की नहीं थी। लेकिन आज की महंगाई और अस्थिरता के जमाने में, चीजें अत्यधिक महंगी होने के कारण पैसे की ताकत बदल गई। पहले काइण्ड में मिलता था। और आज भी जिस जिले से मैं हूं उसकी दो तहसीलों का मुझे मालूम है, वहां खेतिहर मजदूरों की सारी व्यवस्था किसानों को बर्दाश्त करनी पड़ती है। इन दो तहसीलों में वे एक भी पैसा नहीं लेते। किसान के परिवार के बगल में उनकी अपनी झोपड़ी होती है और किसान को उन्हें खाना-कपड़ा आदि देना पड़ता है। मंत्री जी ने उनके लिये न्यूनतम वेतन निश्चित कर दिया है।

वर्ष भर में २-२ बार मजदूरी बढ़ा दी है। ठकुरई जी की भी यही इच्छा है। मान्यवर जिन्स में भुगतान होगा तो लाभ होगा, पैसे में होगा तो कोई लाभ नहीं होगा। मैं साधारण किसान हूं। गांव में जो खेतिहर मजदूर रखे जाते हैं उनको नकद पैसा बहुत ही कम दिया जाता है। उनकी गुजर-बसर आसानी से हो सके यह सोचना होगा। जो विधेयक लाया गया है मंत्री जी उसको इस नजर से देख लें। इससे लाभ होने वाला है तो यह बहुत अच्छी चीज है। इन गरीबों का लाभ अवश्य होना चाहिये।

अभी जाफर जी ने कहा कि बड़े उद्योगों का विकास हो तो मजदूर वहां काम पर चले जायेंगे। उनका यह सुझाव बड़ा ही खतरनाक है। वास्तव में जहां वे रहते हैं उनको तो उसी

खेतिहर मजदूर

मान्यवर, अधिष्ठाता महोदय, ठकुरई जी के विधेयक का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। ऐसे समय में यह विधेयक लाया गया है जब श्रम मन्त्री जी और प्रमुख रूप से कहूं तो राज्य श्रम मंत्री जी खेतिहर मजदूरों के बारे में बहुत कुछ करने जा रहे हैं। उसकी बहुत कुछ झलक दिखाई भी दी है। यदि उन्होंने कुछ कर भी दिया है तो उनके मन में एक संगठन तैयार करने की ही बात है। उसके माध्यम से खेतिहर मजदूरों को लाभ पहुंचाने की सोच रहे हैं। न्यूनतम वेतन अधिनियम और उसका परिपालन, उनकी मजदूरी बढ़ाना उसके लिये संराधन अधिकारी नियुक्त करना और इन्सपेक्टरों की फौज खड़ी करने आदि का आखिर उपाय कैसे करेंगे। थोड़ा सा यदि मार्गदर्शन इन लोगों के द्वारा प्राप्त हो जायेगा तो इन सब चीजों को हम लोग भी आगे बढ़ाने की सोच सकेंगे।

जहां तक संगठित मजदूरों का प्रश्न है, वे एक प्रक्रिया के द्वारा चालित है। एक जगह रहते हैं। तमाम सुविधायें संगठन के द्वारा प्राप्त करते हैं। लेकिन ५४-५५ लाख खेतिहर मजदूर दूर-दूर बिखरे हुये हैं। अलग-अलग किसानों के द्वारा वे नौकरी में रखे जाते हैं। उनके लिये कोई भी चीज लागू कराना कहां तक सम्भव होगा, यह भी एक विचारणीय विषय है।

अपने यहां उनके लिये कोई प्रयास नहीं हुआ, ऐसी बात नहीं है। शुक्ल जी ने इस ओर ध्यान दिलाया है कि ट्रेड यूनियन के माध्यम से खेतिहर मजदूरों के प्रति कोई कार्यवाही नहीं की गई। किन्तु ऐसा नहीं है। कार्यवाही समय-समय पर की गई, लेकिन वह असफल रही। वामपंथी लोगों द्वारा अनेक स्थानों पर कार्यवाही की गई, परन्तु उसमें सफलता नहीं मिली। मार्क्स ने जो पढ़ाया कि "हैव्स एण्ड हैव्स नाट" खेतिहर मजदूरों के लिये वह चीज फेल हो गई। उन्होंने ब्रिटेन में बैठकर किताब लिखी थी। वहां खेतिहर मजदूरों की समस्या

भारत में श्रम संघ (ट्रेड यूनियन) आन्दोलन

भारत के श्रम आन्दोलन के निकट भूत के इतिहास पर विचार करने से पहले यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि उद्योगों में मानवीय संबंधों के क्षेत्र में भारत का एक महान योगदान रहा है श्रमनीति का प्रतिपादन जो शुक्रनीति, महाभारत के सर्गों और अन्य पुरातन साहित्य में उपलब्ध है, उसे यदि आधुनिक मानदण्डों में देखें तो भी उसे हमें उन्नत, विवेकपूर्ण और सबल मानना पड़ेगा ।

भारत में प्राचीनकाल से ही लोग श्रम-संगठन का महत्व समझते थे । विभिन्न उद्योगों एवं व्यवसायों में संलग्न व्यक्ति आपस में संगठित भी थे । वैदिक काल में विभिन्न हस्तकलाओं के विकास के साथ ही साथ कर्मचारियों के प्रारम्भिक संगठनों का भी उल्लेख मिलता है। कौटिल्य ने शिल्पियों तथा कर्मचारियों के संगठन के संबंध में अच्छी तरह प्रकाश डाला है । रामायण काल में एक ही प्रकार के उद्योग धन्धों में काम करने वाले शिल्पियों व श्रमिकों के अपने अलग-अलग संघ थे ।

आधुनिक परिपेक्ष में श्रम संघों की उत्पत्ति १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं १९ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई । "औद्योगिक क्रान्ति"का प्रभाव विश्व के अनेक देशों पर पड़ा। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में भी कल कारखाने अस्तित्व में आने लगे । कारखाना पद्धति में हमारे यहां सूती वस्त्रोद्योग का जन्म सबसे पहले हुआ । १८५३ ई० में बम्बई में पहली सूती मिल स्थापित की गई, तदनन्तर प्रमुख औद्योगिक नगरों में अन्य उद्योग क्रमशः स्थापित होते गए ।

कालान्तर में क्रमशः अच्छी मशीनों, वाष्प एवं विद्युत के प्रयोगों से उत्पादन-वृद्धि हेतु मालिकों ने श्रमिकों से स्त्री एवं बालकों सहित रात-दिन काम लेना आरम्भ कर दिया । "चिमनी

जगह पर रखने की आवश्यकता है । वहीं पर छोटे-छोटे उद्योग स्थापित किये जायें ताकि वर्ष में जो सात महीने बेकार रहते हैं, उस समय वे उसमें काम कर सकें । बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना करके खेतिहर मजदूरों के मामले को चौपट कर प्रगति नहीं कर सकते । जहां उद्योगों के बल पर आर्थिक विकास होता है । वहां की बात दूसरी है । हमारे यहां मुख्य धन्धा खेती है । अगर हम यह सोचते हैं कि गांव का झगड़ा उठा कर शहर में डाल दें तो इससे काम बनने वाला नहीं है । दूर देहातों में जहां उपार्जन की कोई विशेष सुविधा नहीं है, वहां छोटे-छोटे उद्योगों की व्यवस्था करने की आवश्यकता है । यदि हम अपने इन लोगों को कहीं काम दे सकेंगे जहां वे रहते हैं, तब यह समस्या सुलझेगी ।

मान्यवर, जो विधेयक ठकुरई जी ने प्रस्तुत किया है उसकी सभी बातों की सफाई होना आवश्यक है । वे सब बातें आपके माध्यम से रख रहा हूं । हम कुछ चीजों को समझ कर चलें । क्या खेतिहर मजदूरों के श्रम को आंशिक पूंजी के रूप में परिवर्तित किया जा सकता हैं ? श्रम का कुछ हिस्सा पूंजी में परिवर्तित किया जाए, क्या ऐसी कोई योजना हो सकती है ? खेतिहर मजदूर को कानून और नियम के सुपुर्द करने के बजाय जहां वह काम करता है वहीं ऐसी संस्थाओं का विकास किया जाय जो सामाजिक और आर्थिक दोनों उद्देश्यों के लिये बनी हो । उसको इन संस्थाओं के सुपुर्द किया जाय । जिस खेत में वह काम करता है उसमें वह भागीदार बन सके । यदि कोई ऐसी प्रक्रिया हो सके जिसके द्वारा दिखाई दे कि उससे उसको कुछ लाभ होगा, तब मुझे अधिक कहने के लिये कुछ बचता नहीं है । मंत्री जी बहुत कुछ सोच रहे हैं । वे इन सब बातों को इस विधेयक के माध्यम से रख दें, जिससे सारी चीजें साफ हो सकें । इन्सपैक्टरों और संराधन अधिकारियों की इतनी बड़ी फौज जिसका सुझाव विधेयक में दिया गया है यदि वहां पर रखी जायेगी तो आपकी सारी योजना असफल हो जायेगी । इस तरह से इन लोगों को गड़बड़झाले में डालना होगा । आज इतने अधिक कानून बनाने के बाद भी आप कारखाना मजदूरों को सुविधायें नहीं दे पा रहे हैं । नैतिक स्तर दिनों दिन नीचे गिरता जा रहा है । देहात के रहने वाले खेतिहर मजदूरों को कानूनी पचड़े में डाल-कर आप उनका भला नहीं कर सकते । उनके लिये ऐसी संस्थायें बनाये जो बड़े श्रम संगठन है, जो राजनैतिक सामाजिक संस्थाएं है, सबको मिलाकर हम किसी एक तरीके को अपनायें । राजनीतिक दल बड़े-बड़े क्रान्तिकारी नारे लगाकर और बढ़ा-चढ़ाकर काम करने की बात कहते हैं, वे सब असफल हो चुके हैं । राजनीतिक लोगों ने प्रयास किया और अनुभव कुछ दूसरा ही हुआ ।

यह बात सही है कि देश में सात करोड़ खेतिहर मजदूर हैं और उनकी स्थिति बहुत ही दयनीय है । उनकी दशा किसी प्रकार से ठीक हो, यह सबकी इच्छा है । ठकुरई जी ने इसी उद्देश्य से यह विधेयक रखा है । यदि खेतिहर मजदूर बेकार हों तो उन्हें बेकारी भत्ता मिले । उनसे अधिक काम न लिया जाय । उनका शोषण न हो । कोई चीज हड़बड़ी में नहीं होनी चाहिये । इसलिए मेरा ठकुरई जी और मंत्री जी से भी निवेदन है कि इस पर गम्भीरता से विचार करें, इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ।

खण्ड-१४१ दिनांक २९ मार्च १९७३

उत्तर प्रदेश खेत मजदूर (उचित मजदूरी तथा काम की दशा नियमन) विधेयक १९७३

ग्रांदोलन (ट्रेड यूनियन ग्रांदोलन) के इतिहास का ग्रारम्भ होता है। श्री लोखंडे को ही "भारतीय ट्रेड यूनियन ग्रान्दोलन का जनक" कहा जा सकता है। इस संघ ने ग्रपने उद्देश्य के प्रचार के लिए 'दीनबन्धु' नामक पत्र का प्रकाशन भी किया।

१८वीं सदी के मध्य से भारतीय श्रमिक ग्रफ्रीका, मलाया, वर्मा, लंका, फीजीलैण्ड्स ग्रादि देशों में कार्य करने के लिए जाते थे। वहां उनकी स्थिति बड़ी ही दयनीय थी। देश के समाज सुधारकों ने उनकी स्थिति में सुधार करने के लिए समय-समय पर ग्रांदोलन भी संचालित किये। ग्रन्ततः सरकार को बाध्य होकर १९१७ ई० में विदेश के लिए भारतीय श्रमिकों की भर्ती बन्द करनी पड़ी ग्रौर १९२२ ई० में यह प्रथा ही समाप्त कर दी गयी।

१९०५ में दि प्रिण्टर्स यूनियन, कलकत्ता तथा १९०६ में स्थायी ग्राधार पर एक ट्रेड यूनियन बनाने का प्रयास बम्बई ग्रौर कलकत्ता के पोस्टल ग्राफिसों में किया गया। १९०७ में बाम्बे पोस्टल यूनियन, १९०९ में कामगार हितवर्धक सभा, बम्बई ग्रौर १९११ में सोशल सर्विस लीग बम्बई ग्रादि ग्रनेक यूनियनों की स्थापना हुई। भारत के श्रम संघों के निर्माण की दृष्टि से यह काल ग्रत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। प्रथम महायुद्ध के कारण मूल्य वृद्धि के फलस्वरूप श्रमिकों के हितों के संक्षरण के लिये ग्रनेक यूनियनों का निर्माण स्वाभाविक था इसी काल में २-३ सप्ताह तक चलने वाली पहली हड़ताल डाक वितरकों ने की। ग्रन्ततः सरकार ने डाक वितरकों की मांगों को मान लिया ग्रौर उन्हें युद्ध कालीन भत्ता देना स्वीकार कर लिया। इस घटना से सारे देश के पोस्टल यूनियनों के एकीकरण को प्रेरणा मिली। इसी से टेक्सटाइल कर्मचारियों को भी प्रेरणा मिली ग्रौर डा० वेप्टिस्टा के नेतृत्व में वे इकट्ठे हो गए। सालिसीटर श्री जिनवाला ने भी श्रम ग्रान्दोलन में मूल्यवान सहायता दी। इसी ग्रवधि में पोर्ट ट्रस्ट यूनियनों का भी संगठन बना। इन संस्थाग्रों के जन्म लेने के पश्चात् ही १९११ ई० में कारखाना ग्रधिनियम भी संशोधित किया गया।

ट्रेड यूनियन आन्दोलन एवं स्वतंत्रता आन्दोलन

उस समय के स्वदेशी ग्रान्दोलन का भारतीय श्रम ग्रान्दोलन पर प्रभाव भी उल्लेखनीय है। १९०५ ग्रौर १९०९ ई० के बीच ग्रनेक महत्वपूर्ण संघर्ष मजदूरों ने किये। १९०८ ई० में लोकमान्य तिलक की गिरफ्तारी के विरोध में राष्ट्रव्यापी हड़ताल हुई जिससे भारतीय श्रम संघ ग्रान्दोलन में राजनीतिक विचारों के प्रवेश का ग्रारम्भ तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता ग्रान्दोलन के साथ परस्पर सहयोग के युग का सूत्रपात भी हुग्रा यह राजनीतिक विचारों के प्रवेश का ग्रारम्भ तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता ग्रान्दोलन के साथ परस्पर सहयोग के युग का सूत्रपात भी हुग्रा। यह राजनीतिक प्रश्न पर श्रमिकों का प्रथम शक्ति प्रदर्शन था।

ट्रेड यूनियन आन्दोलन-एक गैर कानूनी कार्य

१९१८ में श्री बी० पी० वाडिया ने मद्रास में वस्त्र उद्योग के श्रमिकों का संगठन 'मद्रास टेक्सटाइल लेबर एसोसियेशन' बनाया। किसी भी प्रकार की कानूनी सुरक्षा न रहने के

व्याय", ठेका, करार, जबरिया श्रम शिविर आदि पद्धतियों से अन्याय, उत्पीड़न एवं शोषण की पराकाष्ठा तक पहुंचा दी। उनका कहना था जो श्रमिक पेट भर भोजन कर लेगा और भर पेट सो लेगा, वह काम क्या करेगा ? अस्तु इसके विरुद्ध श्रमिकों का सुरक्षा हेतु संगठित होना स्वाभाविक प्रक्रिया थी।

सर्व प्रथम समाज-सुधारकों एवं परोपकारी व्यक्तियों ने इस मशीनी शोषण एवं अमानवीय व्यवस्था के विरुद्ध जनमत जागृत करने का प्रयत्न किया। तदुपरान्त कालान्तर में दक्ष श्रमिकों व अन्य नेताओं द्वारा 'शिल्पी एवं व्यावसायिक', श्रम संघों का निर्माण हुआ।

ट्रेड यूनियन आन्दोलन का श्रीगणेश

वर्ष १८५७ में श्री एस० एस० बंगाली ने बम्बई में विशेष रूप से "स्त्री एवं बाल" श्रमिकों के शोषण के विरुद्ध जनमत जागृत करके वास्तविक आन्दोलन का श्रीगणेश किया।

१८८७ में नागपुर की "इम्प्रैस मिल" में वेतन वृद्धि के प्रश्न पर सर्व प्रथम हड़ताल हुई बम्बई और मद्रास में समय-समय पर कुछ हड़ताल कमेटियां बनाई गयीं परन्तु ये कमेटियां कभी भी स्थायी आधार नहीं बन सकीं।

भारत में सर्व प्रथम कारखाना अधिनियम १८८१ ई० में पारित हुआ। यहां सस्ती मजदूरी तथा अधिक काम के घंटों के कारण वस्त्र उत्पादन इंग्लैंड की तुलना में सस्ती दर पर होता था, इससे वहां के उद्योगपतियों ने नवम्बर १८८८ ई० में "मैनचेस्टर चैम्बर्स आफ कामर्स" में इस आशय का एक प्रस्ताव पारित किया कि ब्रिटिश भारत की सूती मिलों में कर्मचारियों से अधिक समय तक काम लिया जा रहा है। अतः ब्रिटिश कारखाना अधिनियम की धाराओं को भारतीय सूती कारखानों में भी महिलाओं तथा बच्चों पर लागू किया जाना चाहिए।

प्रथम ट्रेड यूनियन की स्थापना

१८८४ में श्री नारायण मेघ जी लोखंडे ने बम्बई में प्रथम श्रमिक कान्फ्रेंस आयोजित की तथा उसमें काम के घण्टों को सीमित करना, साप्ताहिक अवकाश, भोजन हेतु मध्याह्न अवकाश, दुर्घटनाओं की क्षति पूर्ति, महिला तथा बाल श्रम की सुरक्षा तथा नियमित वेतन वितरण आदि विषयों पर कुछ ठोस विशुद्ध श्रम-प्रस्ताव पास किए गए। श्रमिकों के शोषण, अमानवीय कार्य दशायें आदि समस्याओं को तत्कालीन ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त "लेबर इन्क्वायरी कमीशन" के सामने रखा गया और श्रमिकों के पक्ष में जनमत जागृत किया गया। फलस्वरूप सरकार द्वारा श्रमिकों की सुरक्षा हेतु कुछ नियम बनाए गये। अपनी इस सफलता से उत्साहित होकर श्री एन० एम० लोखंडे ने १८९० में बम्बई मिल हैण्ड्स 'एसोसियेशन' की स्थापना की जो सही अर्थों में भारत का पहला श्रम संघ था, यहीं से भारतीय श्रम संघ

१९०९ में गवर्नमेंट ग्राफ इंडिया एक्ट के अनुसार प्रांतीय व्यवस्थापिका सभाओं में श्रमिक प्रतिनिधियों के लिये कुल ६ स्थान सुरक्षित किये गये और उनकी पूर्ति इस प्रकार की गयी—बम्बई में ३, बंगाल में २, आसाम, बिहार, उड़ीसा, व सेन्ट्रल प्राविन्सेज तथा पंजाब प्रत्येक में एक।

सन १९१९ में इगतपुरी में जी० आई० पी० रेलवे में काम करने वाले कर्मचारियों की पहली कांफ्रेंस हुई और उसमें कुछ मांगें रखकर हड़ताल की धमकी दी गयी। कुछ मांगों को मान लिया गया और जी० आई० पी० रेलवे मैन्स यूनियन ने दृढ़ता से कार्य को आरम्भ किया इसके बाद सारे देश में रेलों में आन्दोलन व्याप्त हो गया। आश्वासनों की पूर्ति हेतु सरकार ने एक 'द्विवजन कमेटी' बनायी जिसमें उस समय के 'टाइम्स आफ इंडिया के सम्पादक और न्यायमूर्ति चन्द्रावरकर थे। इस कमेटी ने १९२१-२२ में कार्य पूरा किया और कर्मचारियों के विवादों को सही माना। १९२१ ई० में आसाम के चाय बागान कर्मचारियों ने भी हड़ताल की और उनकी सहानुभूति में आसाम बंगाल रेलवे कर्मचारियों तथा स्टीमर के कर्मचारियों ने भी हड़ताल की।

इस समय तक अनेक सक्रिय ट्रेड यूनियन नेता जिनमें सर्व श्री एन० एम० जोशी, जशवाला, जिनवाला, एस० सी० जोशी बेप्टिस्टा आदि प्रमुख हैं, रंगमंच पर आये और इन्होंने विशेषतया पोर्ट ट्रस्ट, डाक-स्टाफ, बैंक कर्मचारियों (प्रमुखतः इम्पीरियल बैंक और करेंसी), कस्टम, आयकर निम्नश्रेणी स्टाफ आदि को शक्तिशाली यूनियनों का संगठन किया।

प्रथम महायुद्ध, रूस की जनक्रांति, भारतीय स्वतन्त्रता के राष्ट्र व्यापी आंदोलन एवं १९१९ में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संस्था (आई० एल० ओ०) के उदय से श्रमिक वर्ग प्रभावित हुआ और उनमें वर्ग चेतना एवं एकता के संचार से श्रम की महत्ता तथा प्रतिष्ठा स्थापित हुई तथा श्रम संघ आंदोलन को दिशा निर्देश एवं गति मिली।

आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आई० एल० ओ०) के प्रारम्भिक सदस्य के रूप में भारत को भी स्वीकार किया गया। यह एक त्रिपक्षीय संस्था है, जिसमें प्रत्येक सदस्य देश अपने प्रतिनिधि नामजद करता है। आई० एल० ओ० की प्रारम्भिक कांफ्रेंस १९१९ के लिये भारत सरकार ने श्री एन. एम. जोशी को श्रम सदस्य नामजद किया और इसके लिये श्रमिकों के लिए अत्यधिक सहयोग करने वाली संस्था सोशल सर्विस लीग से राय ली गयी। आई०एल०ओ० की प्रतीति कमेटी को संतुष्ट करने के निमित्त ही भारत के प्रथम केन्द्रीय श्रम संगठन का निर्माण भी हुआ था। यह कमेटी चाहती थी कि सदस्य देशों के नामजद श्रम-सदस्यों का सम्बन्ध देश के सर्वाधिक प्रतिनिधि श्रम संगठन से रहे। सन् १९२० में ए० आई० टी० यू० सी० के निर्माण का प्रमुख कारण आई० एल० ओ० के प्रथम वार्षिक कांफ्रेन्स के लिये श्रम सदस्य का चुनाव करना था। इसे जन्म देने का श्रेय अप्रत्यक्ष रूप से आई० एल० ओ० को भी है।

कारण नियोजकों ने श्रम संघों, उनके नेताओं तथा आन्दोलनों का सब प्रकार से बर्बर दमन किया। इसमें तत्कालीन कानूनों, राज्य एवं अन्यान्य व्यवस्था ने भी दमन कार्यों में सहयोग ही प्रदान किया। सरकार और सेवायोजक दोनों ही श्रमिकों के कार्यक्रमों के प्रति शत्रुता का भाव रखते थे। इस सन्दर्भ में बकिंघम कर्नाटिक मिल्स बनाम वी० पी० वाडिया का मद्रास हाईकोर्ट में ऐतिहासिक मुकदमा, उसका निर्णय एवं परिणाम सदैव के लिए एक ज्वलन्त उदाहरण रहेगा।

मजदूर महाजन संघ की स्थापना

श्री शंकरलाल बैंकर सुश्री अनुसूया बेन के प्रयत्नों से तथा १९१८ में ही महात्मा गांधी के मार्ग दर्शन में अहमदाबाद की कपड़ा मिलों के शिल्पीय श्रमिक संघों के सम्मिलन से मजूर महाजन संघ, अहमदाबाद का निर्माण हुआ तथा हिन्दुस्तान मजूर सेवक संघ नामक कानूनी सलाहकार संस्था का भी गठन किया गया।

सन् १९१९ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी ट्रेड यूनियन आंदोलन में भाग लेना प्रारम्भ किया। इसका मुख्य दृष्टिकोण यह था कि ट्रेड यूनियनों को ब्रिटिश से संघर्ष करने के लिये एक अस्त्र के रूप में उपयोग किया जाये, परन्तु उसने प्रारम्भ में श्रम-आंदोलन के लिये कुछ निर्माणत्मक और अच्छा कार्य भी किया। श्री खापर्डे के सभापतित्व में भारत सरकार ने एक पोस्टल इंक्वायरी कमेटी नियुक्त की, जिसने पर्याप्त सामग्री एकत्रित करके ग्रेडों की अपेक्षा टाइमस्केल की मांग को बढ़ावा दिया। यद्यपि उस समय यह मांग चन्द्रमा की मांग करने के समान माना जाता था, परन्तु इस मांग के समर्थन में 'अखिल भारतीय पोस्टल यूनियन' का निर्माण हुआ, जिसने आंदोलन करके सफलता प्राप्त की। कुछ समय के लिये पोस्टल यूनियन एक आदर्श संगठन बन गयी।

हड़तालों का दौरदौरा

इस बीच वेतन वृद्धि तथा अन्य प्रश्नों को लेकर कई स्थानों पर हड़ताल हुई। १९१९ में बम्बई के सूती मिल मजदूरों ने लाखों की संख्या में हड़ताल में भाग लिया और उन्हें अपनी मांगों को पूरा कराने में सफलता मिली। दूसरे वर्ष दस घन्टे काम के दिन की मांग को लेकर पुनः हड़ताल हुई, जिसमें दो लाख मजदूरों ने भाग लिया। कारखाना अधिनियम में संशोधन के पूर्व ही काम के घन्टों में कमी कर दी गयी। १९१९ में कानपुर में हड़ताल हुई और जमालपुर के रेलवे कर्मचारियों ने भी हड़ताल की। १९२० में बम्बई, मद्रास, अहमदाबाद, शोलापुर सूती कर्मचारियों तथा कलकत्ता के जूट मिल कर्मचारियों ने भी हड़ताल की।

इसी बीच काल में एक अन्य विशाल यूनियन रेलवे के लिये बनी। सन् १९१९ से पहले भारतीय रेलों पर एक यूनियन काम कर रही थी, जिसका नाम 'एंग्लो इंडियन रेलवे मैन्स फैडरेशन आफ इण्डिया एण्ड वर्मा' था। भारतीय कर्मचारियों के लिये इसमें कुछ भी नहीं था।

श्रम अधिनियमों का श्रीगणेश

इस बीच श्रमिकों के लिये बहुत से कानून भी पारित हुये। कारखाना कानून में १९२२ ई० में संशोधन किया गया और कार्य के साप्ताहिक घंटे ६० और दैनिक ११ निर्धारित किये गये। १९२३ ई० में 'इंडियन माइंस ऐक्ट' पारित किया गया और उसी वर्ष कर्मचारियों के लाभार्थ क्षतिपूर्तिअधिनियम भी पारित किया गया। श्री वी० पी० वाडिया के योग्य नेतृत्व में बकिंघम कर्नाटक मिल्स, मद्रास की हड़ताल फलस्वरूप हड़ताल के विरुद्ध स्थगन आदेश और क्षतिपूर्ति की मांग आदि को देखते हुये श्री एन० एम० जोशी ने ट्रेड यूनियनों के अधिकारों के लिये एक विधेयक पेश किया, परन्तु तत्कालीन उद्योग वाणिज्य और श्रम विभाग के कार्य-वाहक सदस्य ने स्वयं इस सम्बन्ध में कानून बनाने का आश्वासन दिया और १९२६ में 'ट्रेड यूनियन ऐक्ट' पास किया जिसमें श्रम संघ कार्यकर्ताओं को ट्रेड यूनियन कार्य के लिये संरक्षण प्रदान किया गया। इसके अन्तर्गत श्रम संघों के पंजीकरण की व्यवस्था की गई जिसके अनुसार श्रम संघों को कुछ नियमों का पालन करना और सदस्य संख्या तथा आय-व्यय का विवरण देना अनिवार्य कर दिया गया। श्रमिकों के बढ़ते असंतोष को देखकर 'श्रम सम्बन्धी रायल कमीशन' की नियुक्ति, उसके भी पहले 'फासेट कमेटी' की स्थापना की गयी और सरकार ने शीघ्रता से १९२९ ई० में 'ट्रेड डिसप्यूट ऐक्ट' पारित किया तथा विवादों को निपटाने के लिये औद्योगिक न्यायालय समझौता बोर्डों आदि प्रणाली अपनाने का आयोजन किया। १९२८ में नेशनल यूनियन आफ रेलवे मैन्स का गठन हुआ।

केन्द्रीय श्रम संगठनों की बहुलता

इसके बाद के काल में श्रम संघ आंदोलन एवं राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के समन्वय एवं तद्जनित अन्य परिस्थितियों, विरोधों, सरकारी बर्बर दमनचक्र, द्वितीय महायुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र एवं राष्ट्रीय नेताओं की विचार भिन्नता के कारण केन्द्रीय स्तर पर भारतीय श्रम संघ आंदोलन क्रमशः चार भागों—आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस, आल इण्डिया ट्रेड यूनियन फैडरेशन, रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस तथा इण्डियन फैडरेशन आफ लेबर में विभक्त हो गया।

तत्कालीन ब्रिटिश भारत सरकार ने संरक्षण स्वरूप 'इंडियन फैडरेशन आफ लेबर' को आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के स्थान पर 'भारतीय श्रमिकों के एक मात्र प्रतिनिधि संगठन' के रूप में मान्यता प्रदान की तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय श्रमिकों के प्रतिनिधित्व का अधिकार भी प्रदान किया। लगातार चुनौती दिये जाने के कारण १९४६ में यह अधिकार 'आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' को पुनः मिला। १९३१ में बम्बई में रेल उद्योग के दोनों संगठन 'आल इंडिया रेलवे मैन्स, फैडरेशन एवं नेशनल यूनियन आफ रेलवे मैन्स, आपस में नेशनल फैडरेशन आफ इण्डिया रेलवे मैन्स के नाम से एकत्र हो गये। रेलवे फैडरेशन ने भारतीय श्रम संघ आंदोलन की एकता का मार्ग प्रशस्त किया। वर्ष १९३५ के एटक के कलकत्ता अधिवेशन में रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस का आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस में

१९२० में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ, उसके साथ ही भारत में श्रम संघों के प्रतिनिधित्व एवं परस्पर संबद्धता के युग का सूत्रपात हुआ। भारत सरकार ने भी 'आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' को भारत के श्रमिकों का एकमात्र प्रतिनिधि केन्द्रीय संगठन के रूप में मान्यता प्रदान की तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय श्रमिकों के प्रतिनिधित्व का उसका अधिकार भी स्वीकार किया इस केन्द्रीय श्रम संगठन से उस समय ६४ श्रम संघ सम्बद्ध थे, जिसकी सदस्य संख्या १,४०,८५४ थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने १९१९ ई० में अमृतसर के ३५ वें अधिवेशन में एक प्रस्ताव स्वीकार कर प्रांतीय कांग्रेस समितियों से अनुरोध किया था कि वे श्रमिक वर्ग के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक उत्थान के लिये प्रयत्न करें। दूसरे वर्ष नागपुर में एक उप समिति बनायी गयी, जिसमें सर्व श्री लाला लाजपतराय, चितरंजनदास, अनुसूया बेन, साराभाई आदि को रखा गया तथा उन्हें श्रमिकों की स्थिति में सुधार लाने का कार्य सौंपा गया। १९२२ में राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में 'आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' को पूर्ण सहायता देने का निश्चय किया गया, इसके लिये सर्व श्री सी० एफ० ऐन्ड्रूज, जे० एम० सेन गुप्ता, एस० एन० हलधर, स्वामी दीनानाथ डा० डी० डी० साठे तथा एम० सिंगरवेल चेटियर को दायित्व दिया गया। १९२० में ही रेल उद्योग की सारी यूनियनें 'आल इण्डिया रेलवे मैन्स फैडरेशन के रूप में परस्पर सम्बद्ध हो गयी।

ट्रेड यूनियन आन्दोलन में कम्युनिस्ट प्रवेश

कम्युनिस्टों ने भारत के ट्रेड यूनियन आंदोलन में प्रवेश करने का निर्णय सन् १९२३ में लिया। यह निर्णय रूस में लिया गया था और रूस ने इस कार्य की सहायता के लिए बड़ी मात्रा में धन और कार्यकर्ता भेजा। १९२४ ई० में "कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल' की पांचवी कांग्रेस ने यह सम्मति दी कि भारतीय साम्यवादी दल को श्रम संघ आंदोलन अपने प्रभाव में कर लेना चाहिये। ग्रेट ब्रिटेन से भी बड़ी संख्या में साम्यवादी कार्यकर्ता आये। सन् १९२५-२६ तक में अनेक विदेशी व देशी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों को साम्यवादी सिद्धांतों में दीक्षित करने में वे सफल हुये। साम्यवादी विचारधारा के कट्टर समर्थक श्री डी० आर० ठेंगड़ी १९२५ में बम्बई में 'आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' के अध्यक्ष हुए। सर्व श्री डांगे, मिराजकर, नीमकर, जोंगलेकर आदि व्यक्तियों ने गैर सरकारी (प्रमुख रूप से टेक्सटाइल श्रमिकों) कर्मचारियों को संगठित करना प्रारम्भ कर दिया। पहले उन्होंने नई यूनियनों का निर्माण करने का प्रयत्न किया, परन्तु अपने प्रयत्नों में असफल हो जाने पर उन्होंने पुरानी यूनियनों में ही घुसने का प्रयास किया। उस समय बम्बई के टेक्सटाइल श्रमिकों में सर्व श्री एन० एम० जोशी, आर० आर० बाखले और मुहम्मद रज्जब का नेतृत्व था और उन्होंने १९२२-२३ में प्रथम 'टेक्सटाइल वर्कर्स यूनियन' की स्थापना की सन् १९२५-२६ में कम्युनिस्ट भी इन यूनियनों में घुस आये और वृहद आधार पर हड़ताल आयोजित की। इसमें सन् १९२६-२७ की ६ मास पुरानी हड़ताल प्रसिद्ध है।

देने के फलस्वरूप ग्राल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस में साम्यवादी विचारधारा के लोगों का पर्याप्ति प्रभुत्व स्थापित हो गया था। फरवरी १९४५ ई० में वर्ल्ड ट्रेड यूनियन फैडरेशन' का ग्रधिवेशन लन्दन में था, जिसमें एटक की ग्रोर से सर्व श्री पाद ग्रमृत डांगे ग्रार० एस० खाडिलकर तथा सुधीन्द्र सम्मिलित हुये थे ग्रौर ग्रक्तूबर १९४५ से एटक ने इस संस्था से ग्रपनी सम्बद्धता रखी है।

इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इण्टक)

राष्ट्रीय सरकार के निर्माण के साथ ही श्री बल्लभ भाई पटेल ने बड़ी दृढ़ता से एक नये केन्द्रीय श्रम संगठन के निर्माण की वकालत की। उनका यह विश्वास था कि राष्ट्रीय सरकार को संगठित श्रमिकों का समर्थन ग्रवश्य प्राप्त होना चाहिये ग्रौर इस कार्य के लिये एटक पर निर्भर नहीं रहा जा सकता क्योंकि वह विदेशी समर्थन पर पल रहा है ग्रौर विदेशी मालिकों के इशारे पर उनकी इच्छानुसार ग्रपना रंग बदलता रहता है। १४ मई, १९४७ को नई दिल्ली में सरदार बल्लभ भाई पटेल की ग्रध्यक्षता में एक सम्मेलन हुग्रा, जिसमें मजदूर महाजन संघ, हिन्दुस्तान मजदूर सेवक संघ, नेशनल यूनियन ग्राफ रेलवे मैन्स, ग्राल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस में से इण्डियन नेशनल कांग्रेस पक्ष के लोग एवं सभी प्रदेशीय कांग्रेस के प्रतिनिधियों ने भाग लिया ग्रौर एस सम्मेलन में इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इण्टक) का गठन किया गया।

इण्टक के ग्राग्रह तथा निवेदन पर भारत सरकार ने खुले ग्राम पक्षपात करके १९४८ में इसे प्रमुख प्रतिनिधि यूनियन के रूप में मान्यता प्रदान की तथा ग्रंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के श्रमिकों के प्रतिनिधित्व का एकमात्र ग्रधिकारी स्वीकार किया। ग्रपने प्रारम्भ से वर्ष ७७ के इन्दिरा सरकार के पतन तक इण्टक पूंजीपतियों ग्रौर सरकार जैसे मालिकों के हाथ में खेलती रही है।

हिन्द मजदूर सभा (एच० एम० एस०)

श्री एम० एन० राय द्वारा युद्ध काल में संस्थापित 'नेशनल फैडरेशन ग्राफ लेबर' कुछ समय तक चला परन्तु श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में कांग्रेसी खेमे से बाहर ग्राये समाजवादियों ने पहले 'हिन्द मजदूर पंचायत' का गठन किया। तदुपरान्त हिंद मजदूर पंचायत एवं इण्डियन फैडरेशन ग्राफ लेबर के सम्मिलन से २४ दिसम्बर, १९४८ को 'हिन्द मजदूर सभा' का निर्माण हुग्रा। सर्व श्री एम०एन० राय ग्रौर वी०वी० कार्मिक ने हिन्द मजदूर सभा (एच० एम० एस०) को ग्रपनाया। इसमें श्री ग्रशोक मेहता के प्रयत्न प्रमुख रहे। प्रारम्भ के वर्षों में महामंत्री के नाते उन्होंने ही सभा का मार्गदर्शन एवं नेतृत्व किया।

दिनांक २४-२५ जनवरी, १९७९ के बम्बई सम्मेलन में हिन्द मजदूर सभा तथा १९६५ में लोहियावादी समाजवादियों द्वारा पुनर्जीवित किये गये हिन्द मजदूर पंचायत का

विलीनीकरण हो गया। अन्य केन्द्रीय संगठन भी वर्ष १९३८ के नागपुर अधिवेशन में श्री एम० एम० जोशी, हरिहरनाथ शास्त्री, सइकर, वी० शिवनाथ एवं वी० वी० गिरि के प्रयत्नों से एक हो गये। किन्तु इण्डियन फैडरेशन आफ लेवर १९४८ में एच० एम० एस० के साथ विलीन हुआ। इस प्रकार स्वतंत्रता के बाद तक सशक्त रूप में देश में केवल एक ही केन्द्रीय श्रम संगठन ट्रेड यूनियन कांग्रेस रह गया। युद्ध काल में आई० एल० ओ० की बैठक नहीं हुई। जब ४५ व ४६ में यह बैठक हुयी तो भारत सरकार ने बिना पूछे ही श्रम प्रतिनिधियों को नामजद कर दिया।

वर्तमान ढांचे का स्वरूप

इस समय तक भारत सरकार श्रम मोर्चे पर काफी सक्रिय हो गयी थी। उसने वाइसराय की कार्यकारी कौंसिल के तत्कालीन श्रम सदस्य डा० बी० आर० अम्बेदकर और उनके सहायक के रूप में एस० सी० जोशी को श्रम के रायल कमीशन के सुझावों पर कार्यवाही करने के लिये नियुक्त किया। उनकी प्रेरणा से एक तथ्य-अन्वेषक कमेटी की नियुक्ति तत्कालीन परिस्थितियों के अध्ययन के लिये की गयी। १९४५–४७ की अवधि में वर्तमान श्रम कानून के काफी बड़े हिस्से का ढांचा तैयार हो गया और संराधन एवं अन्य यंत्रों की पूर्ण कल्पना की गयी। सन् ४७ में जब राष्ट्रीय सरकार बनी तो तत्कालीन मुख्य श्रमायुक्त श्री एस० सी० जोशी को श्रम कानून के विभिन्न प्राविधानों के क्रियान्वयन का कार्य सौंपा गया। आज का सम्पूर्ण ढांचा उनके और भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि के कार्यों के प्रति कृतज्ञ है।

इस पूरे काल में भारतीय श्रमिक संघ आंदोलन को सर्वश्री एस० एस० बंगाली, एन० एम० लोखाण्डे, बी० पी० वाडिया, लोकमान्य तिलक, एन० एम० जोशी, महात्मा गांधी, लाला लाजपतराय, दीवान चमनलाल, एम० ए० खान, जयप्रकाशनारायण, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, हरिहरनाथ शास्त्री, विनयकुमार मुखर्जी, अशोक मेहता, वी० वी० गिरि, जमनादास, मृणालकांत, सरदार बल्लभ भाई पटेल, एम० एन० राय, रणदिवे, श्रीपाद अमृत डांगे प्रभृति महान राष्ट्रीय नेताओं का सान्निध्य, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त रही।

ट्रेड यूनियन आन्दोलन-स्वतन्त्रता के उपरान्त

भारत के ट्रेड यूनियन आन्दोलन में स्वतन्त्रता के पूर्व आई एकता चिरस्थायी नहीं रह सकी। विभिन्न राजनैतिक विचारधाराओं से अनुप्राणित हो, वह पुनः अनेक खेमों में बंटती चली गयी।

द्वितीय महायुद्ध में हिटलर के विरोध में रूस और ब्रिटेन की दोस्ती, स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वालों के जेलों में बन्द रहने के कारण उनकी अनुपस्थिति तथा सन् ४२ के आन्दोलन में पंचमागी भूमिका निभाने के कारण अंग्रेजों द्वारा पुरस्कार स्वरूप कम्युनिस्टों को ट्रेड यूनियनों के भीतर येन केन प्रकारेण प्रवेश एवं प्रभुत्व दिलाने में पर्याप्त सहायता

सरकार, राजनीतिक दल एवं मालिक परस्ती से दूर रहकर मजदूरों में ही आत्म विश्वास जगाकर, स्वावलम्बी, आत्म निर्भर, जुझारू एवं सही (जन्यूइन) श्रम संगठन बनाने में सफलता प्राप्त की। आज भी उसके संस्थापक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी इसका मार्ग दर्शन कर रहे हैं।

सेन्ट्रल आफ इण्डियन ट्रेड यूनियन्स (सीटू)

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के अनुयायियों ने वर्ष १९७० में आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस से विलग होकर सीटू का गठन किया।

सर्व श्री रणदिवे, पी० राममूर्ति एवं डा० पन्धे आदि इसके प्रमुख नेता हैं।

नेशनल लेबर आर्गनाइजेशन (एन० एल० ओ०)

इण्टक से विलग हुये संगठन कांग्रेस के अनुयायियों ने मजूर महाजन संघ के सहयोग से १९७१ में "एन०एल०ओ० का निर्माण किया।

श्री वसावड़ा इसके निर्माता एवं मार्गदर्शक थे। आज सर्व श्री बुच, शुक्ला व बारोद आदि इसके प्रमुख नेता हैं।

उक्त केन्द्रीय श्रम संगठनों के अतिरिक्त वर्तमान समय में श्री नरेनसेन के नेतृत्व में एन. एफ. आई. टी. यू. तथा चित्तावसु के नेतृत्व में टी०यू०सी०सी० नामक दो और केन्द्रीय श्रम संगठन चल रहे हैं।

मान्यता

जनता सरकार ने हिन्द मजदूर पंचायत सहित उक्त ११ केन्द्रीय श्रम संगठनों में से जिनकी सदस्य संख्या कम से कम ५ लाख एवं जिनके कार्य कम से कम ४ उद्योगों व ४ राज्यों में हैं, उन्हें ही अ०भा० स्तर पर मान्यता देने का विचार किया था। इस दृष्टि से इण्टक, एटक, एच०एम०एस०, बी०एम०एस० तथा सीटू ऐसे ५ केन्द्रीय श्रम संगठन ही उक्त शर्तों की पूर्ति करते हैं। वर्ष १९७७ के सरकारी आंकड़ों के अनुसार उक्त सभी पांचों केन्द्रीय श्रम संगठनों की सदस्यता ८ लाख से लेकर २४ लाख तक है तथा शेष ६ केन्द्रीय श्रम संगठनों की सदस्यता ३३ हजार से लेकर ४ लाख तक ही है।

केन्द्रीय श्रम संगठनों की सदस्यता (वर्ष १९७७ की)

वर्ष १९७७ के सरकारी आंकड़ों के अनुसार, (१) इण्टक २३,८८, ४५१, एटक १३,०७,४७१, (३) भारतीय मजदूर संघ ८,५९,२००, (४) हिन्द मजदूर सभा ८,५२,५५८,

हिन्द मजदूर सभा के नाम से पुनः एकीकरण हुआ है। अभी यह कहना असंगत होगा कि पूर्व के समाजवादी तथा आज के इन्दिरा कांग्रेस से गये हुये श्रमिक नेता सर्व श्री माखन चटर्जी विमल मेहरोत्रा आदि हि० म० सभा की कितनी यूनियनें व सदस्यता अलग करके कांग्रेस की इण्टक में ले जाने में समर्थ होंगे।

यूनाईटेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस (यू. टी. यू. सी.)

जिन बोल्शेविको और क्रान्तिकारी समाजवादियों को हिन्द मजदूर सभा के उद्देश्य पसन्द नहीं आये अथवा जिन्होंने इसे इण्टक का ही दूसरा सुधरा रूप समझा, उन्होंने ३० अप्रैल, १९४९ की कलकत्ता में यूनाईटेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की। इसके प्रमुख नेता एवं मार्गदर्शक विचारक श्री मृणाल कान्त थे।

आज कई वर्षों से इसके भी दो टुकड़े हो गये हैं। एक यू. टी. यू. सी. के नाम से तथा दूसरा यू. टी. यू. सी. (लेनिन सारणी) के नाम से कार्य कर रहा है।

भारतीय मजदूर संघ (बी० एम० एस०)

लोकमान्य तिलक के जन्म दिन २३ जुलाई, १९५५ को भोपाल में प्रखर राष्ट्रवादियों एवं कट्टर भारतीयतावादियों ने भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की। १२ वर्षों तक इसका न तो कोई अखिल भारतीय अधिवेशन हुआ और न अखिल भारतीय कार्य समिति ही रही। अखिल भारतीय महामंत्री के नाते इसके संस्थापक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी इसका मार्गदर्शन एवं नेतृत्व करते रहे। कालान्तर में स्थानीय एवं प्रादेशिक संगठन बन जाने तथा लगभग सभी उद्योगों में अपने औद्योगिक संघ एवं महासंघों की स्थापना हो जाने के उपरान्त वर्ष १९६७ में भारतीय मजदूर संघ का प्रथम अ० भा० अधिवेशन हुआ और प्रथम अखिल भारतीय कार्यसमिति का गठन किया गया। प्रमुख एवं वयोवृद्ध राष्ट्रवादी गांधीवादी श्रमिक विचारक दादा साहब कामले इसके प्रथम अखिल भारतीय अध्यक्ष निर्वाचित हुये। द्वितीय अध्यक्ष श्री विनय कुमार मुखर्जी एवं तृतीय अध्यक्ष श्री नरेशचन्द्र गांगुली चुने गये।

भारतीय मजदूर संघ एवं अन्य केन्द्रीय श्रम संगठनों में संरचनात्मक आधारभूत अंतर यह है कि जहां अन्य संगठनों का निर्माण प्रवाह शीर्ष से आधार की ओर रहा है, वहीं इसका आधार से शीर्ष की ओर अर्थात् पहले इकाई स्तर की स्थानीय ट्रेड यूनियनें बनीं, तदुपरान्त क्रमशः राज्य स्तरीय एवं औद्योगिक महासघों तथा केन्द्रीय संगठन का निर्माण हुआ।

केन्द्रीय श्रम संगठनों में भारतीय मजदूर संघ ही एक मात्र ऐसा संगठन है, जिसने पूर्व से चल रही मजदूर यूनियनों को अपने कब्जे में करने की छीना झपटी में न पड़कर सर्वत्र अलग से स्थानीय श्रम संघ बनाने से लेकर अ० भा० महासंघों तक की स्थापना की। जाने माने नेताओं का मुखापेक्षी न होकर नेतृत्व करने योग्य कार्यकर्ताओं का निर्माण किया।

(६) भारत का ट्रेड यूनियन आन्दोलन अभी उसके राजनैतिक यंत्र का ही एक हिस्सा है। वह अभी तक अपने राष्ट्रीय जीवन की आर्थिक व सामाजिक संस्था के रूप में योग्य स्थान को प्राप्त नहीं कर सका है।

(७) भारत का ट्रेड यूनियन आन्दोलन अभी तक केवल अपना संगठनात्मक एवं कानूनी पक्ष ही विकसित कर सका है प्राविधिक पक्ष के प्रस्तुतीकरण में वह कमजोर ही बना हुआ है।

(८) सन् १९१६ के युद्धकालीन भत्ते से लेकर अब तक के ट्रेड यूनियनों के प्रयत्न केवल मजदूरी के वास्तविक मूल्य के कुप्रभावों को कम करने में ही लगे रहे हैं। प्रकारान्तर से भारतीय श्रम आन्दोलन अभी तक भारतीय श्रमिकों की यथार्थ मजदूरी को बढ़ाने के लिए कुछ भी नहीं कर सका, वरन् अपने जन्म के समय से ही उसका प्रमुख कार्य यथार्थ मजदूरी के बढ़ाव को रोकना ही रहा है। अस्तु यदि राष्ट्रीय श्रम आन्दोलन के माध्यम से कोई राष्ट्र निर्माणकारी क्रिया को प्राप्त करना अभीष्ट है, तो ऐसी प्रवृति को उलटना आवश्यक है।

(९) इतने दिनों के ट्रेड यूनियन आन्दोलन के बाद भी भारतीय श्रमिकों की मौलिक तथा उल्लेखनीय प्रगति सम्भव नहीं हो सकी है।

अस्तु भारत के श्रम संघों से अपेक्षा है कि अब तक की त्रुटियों से शिक्षा लेकर, कमियों को दुरुस्त करते हुए एक सुविचारित केन्द्र में संगठित हों, राजनैतिक दलों से असम्बद्ध रहकर आदर्श एवं सही ढंग के ट्रेड यूनियन आन्दोलन के लिए सन्नद्ध हो श्रमिकों के जीवन निर्वाह व वास्तविक वेतन की सुरक्षा ही नहीं, अपितु प्राविधिक पक्ष को प्रस्तुत करते हुए उनके जीवन स्तर को बढ़ाने हेतु शोषण, अन्याय व विषमता के विरुद्ध पग उठावें तथा ट्रेड यूनियन आन्दोलन के मूल मंत्र के रूप में देश को वैभवशाली बनाने का उद्देश्य स्वीकार करें।

(५) सीटू ८,१७,८०५, (६) यूटक (लेनिन सारणी) ३,८४,५६४, (७) एन०एफ०आई०टी०यू० २,२४,५२०, (८) हिन्द मजदूर पंचायत २,२१,५२२, (९) एन०एल०ओ० २,०२ ९६५, (१०) यू०टी०यू०सी० १,७३,५७१ तथा (११) टी०यू०सी०सी० ३३,९३१ सदस्यता है।

आपात स्थिति के बाद से आज तक यद्यपि उक्त सदस्यता मे काफी घट-बढ़ हो चुकी है। एक ओर जहां सत्ता के सहारे फूलने फलने वाले केन्द्रीय श्रम संगठनों की सदस्यता में भारी कमी हुई है, वहीं दूसरी ओर जनता सरकार द्वारा सभी केन्द्रीय श्रम संगठनों को त्रिदलीय सम्मेलनों में बुलाने तथा निष्पक्ष व मैरिट के आधार पर प्रतिनिधित्व देने की कार्यवाही से अब तक के उपेक्षित केन्द्रीय श्रम संगठनों की सदस्यता में भारी वृद्धि भी हुई है।

विचारणीय तथ्य

वर्ष १८९० से लेकर आज तक के भारत के ट्रेड यूनियन आन्दोलन पर हम विहगम दृष्टि डालें तो निम्नलिखित महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालते हैं :—

(१) वर्ष १९२० में भारत के प्रथम केन्द्रीय श्रम संगठन 'एटक' का निर्माण इसलिए नहीं हुआ कि तत्कालीन श्रम यूनियनें अथवा मजदूर वर्ग ऐसा संगठन चाहते थे, परन्तु इसलिए हुआ क्योंकि ऐसे निर्माण की माँग अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ कर रही थीं।

वर्ष १९४७ में श्रम आन्दोलन के दूसरे केन्द्र 'इण्टक' के निर्माण का विचार श्रमिकों की आवश्यकता के अनुसार नहीं वरन् राजनैतिक नेताओं ने अपनी गद्दी सुरक्षित रखने के लिए किया।

आज भी इन दो बड़े श्रम संगठनों में से 'एटक' विदेशों से अपनी प्रेरणा ग्रहण करता है जबकि 'इण्टक' अपने जन्म से लेकर १९७७ तक सरकार और पूंजीपतियों पर बहुत कुछ निर्भर रहा है।

(२) भारत के अधिकांश केन्द्रीय श्रम सगठनों की उत्पत्ति तात्कालिक राजनैतिक आन्दोलनों में निहित है।

(३) केन्द्रीय श्रम संगठनों से अभी भी अनेक असम्बद्ध श्रम यूनियनें और फैडरेशन हैं, जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

(४) भारतीय ट्रेड यूनियन आन्दोलन अभी तक सुविचारित रूप से अपना कोई एक केन्द्र नहीं बना सका है।

(५) श्रमिकों का बहुत विशाल हिस्सा असंगठित है।

से अधिक काम भी नहीं मिलता। फसल की बुआई और कटाई के समय में उनको काम मिलता है। कुछ को जानवरों की देखभाल और सफाई आदि के लिये मौसम के अलावा भी काम मिल जाता है। बहुतों को समाज के ऊंचे वर्ग के लिये बेगार में काम करना पड़ता है। पिछले दशक में इसकी संख्या में १६ प्रतिशत से २६ प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी हुयी है। कृषि की उपज दुगुनी होने तथा महंगाई बढ़ने पर भी उसकी मजदूरी में बढ़ोत्तरी नहीं हुई है। उनके काम के घंटे निश्चित नहीं होते। मजदूरों पर काम का बोझ अधिक रहता है। अक्तूबर, ७५ से कितने ही राज्यों में ५ रुपये से लेकर साढ़े छः रुपये तक की मजदूरी निर्धारित की गई है किन्तु इसका क्रियान्वयन व पालन असम्भव सा बना हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों के श्रमिक प्रायः अपने निवास स्थान के समीप ही काम करना पसन्द करते हैं और दूसरी जगह जाकर काम करना नहीं चाहते हैं, क्योंकि घरेलू काम जैसे—जानवरों को चारा खिलाने, उनकी देखभाल करने और अन्य कार्यों के लिये उनकी उपस्थिति निवास-स्थान पर आवश्यक होती है। देहातों में कुटीर उद्योग न होने के कारण जनसंख्या का दबाव विशेषकर ग्रामीण मजदूरों का भूमि पर ही पड़ता है। कुछ श्रमिक के पास भूमि भी होती है, जिन्हें वे आर्थिक और सामाजिक कारणों से बन्धक रख देते हैं। ऐसी भूमि से उनका स्वामित्व धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। ऐसी भी स्थिति होती है कि वे अपनी ही भूमि पर मजदूर के रूप में कार्य करते हैं। ये श्रमिक अधिकांश रूप से ऋण से दबे रहते हैं। गांव के महाजन, जमींदार तथा सम्पन्न व्यक्ति उन श्रमिकों को ऊंचे ब्याज की दरों पर कर्ज के रूप में धन देते हैं। अगर समय से कर्ज की धनराशि अदा नहीं की जाती है तो कर्ज देने वाले लोग उन श्रमिकों का मारने पीटने तथा उनके जानवर आदि ले जाने की धमकी देते हैं। उनकी डर से संगठन आदि बनाने की भी वे हिम्मत नहीं करते हैं। वे बिखरे हुये हैं संगठन के अभाव में न तो वे अधिक मजदूरी की मांग कर सकते हैं और न अपनी गिरी हुई आर्थिक और सामाजिक देशों के बारे में आवाज उठा सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश श्रमिक अकुशल श्रेणी के होते हैं और प्रायः एक जगह से हटा दिये जाने के बाद उन लोगों को उस क्षेत्र में दूसरी जगह कार्य मिलना मुश्किल हो जाता है, क्योंकि अकुशल श्रेणी के लिये नियोजकों को दूसरे अकुशल श्रेणी के श्रमिकों की तलाश करने और काम देने में कठिनाई नहीं होती है। अभी तक इन गरीबों के लिए कोई भी उपाय कारगर नहीं सिद्ध हो सका है। ज्यादातर खेतिहर श्रमिक निम्न कहीं जाने वाली बिरादरी के होते हैं और उनका सामाजिक स्तर गिरा हुआ होने के कारण उनके विकास में बहुत बड़ी बाधायें हैं। समाज में उनकी उपेक्षा होती है।

राजनैतिक व श्रमिक संगठनों का प्रयास अब तक असफल ही रहा

खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को सुलझाने के लिये कितने ही गोष्ठियों के आयोजन होते रहते हैं। न्यायमूर्ति श्री गजेन्द्र गडकर की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय श्रम आयोग ने भी इस समस्या पर वृहद प्रकाश डाला है। राजनैतिक व श्रमिक संगठन भी अपने-अपने ढंग से थोड़ा बहुत प्रयास करते रहे हैं। बहुत पहले वामपंथी दलों ने ट्रेड यूनियन के प्रकार का तथा वर्ग संघर्ष के आधार पर खेतिहर मजदूरों में कार्य आरम्भ किया था, पर असफल रहे। डा०

खेतिहर मजदूरों की दयनीय स्थिति और उसका निराकरण

कृषि ही भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है । पर उसके उत्पादनकर्ताओं के एक बड़े वर्ग को मानवीय रूप में न तो सम्मान मिल रहा है और न ही जीवनोपयोगी साधन और सामग्री । इनकी आर्थिक दशा गिरी हुई है । आमदनी के नियमित साधन नहीं हैं । भारत में खेत मजदूरों की संख्या पांच करोड़ से भी ऊपर है तथा अन्य ग्रामीण श्रमिक सीमांत कृषक सहित लगभग १५ करोड़ है । यह वर्ग राष्ट्र की मूलधारा से अपने को कटा हुआ सा पा रहा है । देश के बढ़ते हुए उत्पादन तथा न्यायपूर्ण वितरण में उसका कोई स्थान नहीं है । संविधान ने समता को स्थान दिया है, पर समाज में समता नहीं बन पाई है । आज भी कम श्रम करने वाले ही समाज में प्रतिष्ठित माने जा रहे हैं तथा कठोर श्रम करने वाले इन खेतिहर मजदूरों को न न्याय और न ही प्रतिष्ठा मिल पाई है । यही वर्ग है—जो खेत महाजनों के हाथों में बुरी तरह जकड़ा हुआ है । उसकी जो भी थोड़ी बहुत खेती थी, उस पर भी सूद में अन्य कोई काबिज है । आज यद्यपि बन्धक मजदूरी प्रथा तथा ऋण ग्रस्तता से छुटकारा दिलाने वाले कानूनों से उसे पर्याप्त राहत मिली है किन्तु सहायता का यह स्थायी हल नहीं है । उनकी मजदूरी में निरन्तर गिरावट आई है । जो भूमि, भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को मिलने वाली थी, वह भी फौजियों, सरकारी अफसरों, तथाकथित स्वतंत्रता-संग्राम सेनानियों तथा सेठों में बांट दी गयी है । आज भी बांटने का प्रचार जारी है किन्तु उसके हाथ बहुत थोड़ा ही लग सका है । नदियों के पेटे पहाड़, जंगल, ऊसरबंजर ही नहीं, बने हुए मकान की भूमि भी उनके नाम आवंटित कर दी गयी है । स्टण्टवाज राजनीतिज्ञों ने कितने ही सम्मेलन करके इन दुखते दिलों को और भी दुखाया है तथा जले पर नमक डाला है । इनकी मजदूरी की दर जो सौ वर्ष पूर्व थी, वही आज भी है । अनाज की बढ़ती हुई महंगाई के कारण भूस्वामी वर्ग इन्हें नगद नहीं, अपितु बाजार के भाव के आधार पर छोटे बटखरों से अनाज देता है । सरकारी दाम में इसे कपड़ा, चीनी, अनाज, डालडा तथा सीमेंट आदि कुछ भी नहीं मिलता । कम मजदूरी के अन्दर ही उसे ब्लेक के भाव में सारी जीवनोपयोगी वस्तुयें खरीदनी पड़ती है । इसे वर्ष में २०० दिन

यूनियन अथवा संगठन की सही भूमिका

ग्रामीण श्रमिकों और भुस्वामियों के सम्बन्ध औद्योगिक क्षेत्रों के नियोजकों और श्रमिकों के मध्य सम्बन्धों से बिल्कुल भिन्न प्रकार का है। ग्रामीण श्रमिकों का कोई भी संगठन, जो उन्हें उत्पादन साधनों के स्वामियों से किसी भेद-भाव के विरोध करने की प्रेरणा देगा, उसका सफल होना बहुत ही कठिन है। अतः ग्रामीण श्रमिकों को संगठित करने के मामले में पाश्चात्य ट्रेड यूनियनिज्म में बहुत बड़े परिवर्तन करने होंगे। उनके संगठन के लिए कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं के सम्मुख उनको संगठित करने, शिक्षित करने साहस और आत्म-विश्वास बढ़ाने जागृति लाकर सामाजिक बुराईयों से छुटकारा दिलाने के साथ-साथ रोजगार के अवसरों की ढूंढने, श्रमिकों और बन्धुवा मजदूरों को पुनर्वास से जोड़ने, ऋणमुक्ति उपाय, श्रमिकों के लिये न्यूनतम वेतन व मजदूरी नियम, भूमि वितरण, उत्पादक रोजगार उपलब्ध कराने तथा अन्य सहायता उपायों की ओर ध्यान देने होंगे।

ग्रामीण श्रमिक संगठनों के कार्यकर्ताओं को स्मरण रखना होगा कि ग्रामीण श्रमिक मात्र वेतन भोगी ही नहीं है। एक खेत में किये जाने वाले श्रम की मात्रा मौसम के अनुसार अलग-अलग होती है और ऐसा भी समय रहता है, जबकि वहां कोई भी काम नहीं रहता। इसलिये श्रमिक और उसके परिवार को पर्याप्त रोजगार के अवसर ढूंढने पड़ते हैं, जिसमें स्वयं नियोजित रोजगार भी सम्मिलित है। ग्रामीण क्षेत्रों के प्रत्येक परिवार को भूमि प्रदान करना भी सम्भव नहीं है, क्योंकि भूमि सीमित है और जनसंख्या बढ़ती जा रही है। यह समस्या खेतों के अतिरिक्त रोजगार के अवसरों के न पाने के कारण और अधिक जटिल हो गयी।

खेत मजदूर एवं अन्य ग्रामीण

आज यह स्पष्ट है कि खेतिहर मजदूरों के साथ समूचे ग्रामीण श्रमिकों को जोड़कर विचार करने से ही उनकी समस्याओं को हल करने में सुविधा मिलेगी। भले ही वह संख्या ५ करोड़ से बढ़कर २० करोड़ तक ही क्यों न पहुंच जावे। कोई भी व्यक्ति जो कृषि, हस्तकला या तत्सम्बन्धी ग्रामीण क्षेत्र के व्यवसाय में मजदूर या स्वनियोजित कारीगर, भूमि-हीन मजदूर, वन एवं मछुये श्रमिक तथा सीमान्त कृषक के रूप में है, इसी श्रेणी में माना जाना चाहिए। उक्त सभी श्रेणियों को सामने रखकर ही उनकी समस्याओं के समाधान का मार्ग ढूंढना चाहिये।

भूमि वितरण एवं अन्य आंकड़े

आपातकाल के दौरान भूमिहीन मजदूरों में भूमि बांटने का बहुत प्रचार किया गया, लेकिन वास्तविक कार्य सन्तोषजनक स्थिति से काफी परे रहा। भूमि सीलिंग कानून के अन्तर्गत बेशी (सरप्लस) बतायी गयी ३८ लाख ४२ हजार एकड़ जमीन में से केवल २० लाख ५५ हजार एकड़ जमीन ही शासन द्वारा अधिग्रहित की गयी और उनमें केवल १२

लोहिया ने भी इस ओर प्रयास किया था। कांग्रेस व इन्टक का प्रयत्न आज भी जारी है। सन् १९७२ में अपने तृतीय अखिल भारतीय अधिवेशन के अवसर पर बम्बई में भारतीय मजदूर संघ ने भी असंगठित मजदूरों को संगठित करने व उनकी समस्याओं के हल करने का निर्णय लिया। उस दृष्टि से आठ राज्यों में खेतिहर मजदूरों में उसने कार्य भी प्रारम्भ किया है। कांग्रेस ने आज से ४ वर्ष पूर्व सीतापुर जिले के एक ग्रामीण क्षेत्र में खेतिहर मजदूरों का अखिल भारतीय अधिवेशन बुलाकर उनकी समस्याओं पर गंभीरता से विचार किया। साम्यवादी दल ने राजनीति की दृष्टि से ही क्यों न हो 'भूमि हड़पी' आंदोलन की रूपरेखा बनायी थी, परन्तु अब तक के इसके अनुभव बड़े ही कटु सिद्ध हुये हैं। प्रथम यह कि हड़पी हुई भूमि का बटवारा कर भी दिया जाय, तो भी वे कानून सम्मत नहीं होंगे दूसरा यह कि खेतिहर मजदूरों की संख्या की तुलना में यह भूमि इतनी अपर्याप्त है कि बंटवारे में इन्हें कुछ भी हाथ लगना सम्भव नहीं है। जो हाथ लगेगा भी वह अनार्थिक ही रहेगा। तीसरा यह कि हड़पा कर बांटने वाले दल के कार्यकर्ताओं तथा भीड़ के चले जाने पर सरकार और किसान वर्ग उन खेतिहर मजदूरों को वहां रहने नहीं देंगे। वे उत्पीड़ित और बेकार होकर गांव छोड़कर भाग जाने के लिये ही बाध्य होंगे।

अभी हाल में कोटा (राजस्थान) में दिनांक ३ व ४ मार्च, १९७९ को आयोजित विख्यात श्रमिक नेता श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी के नेतृत्व में भारतीय किसान संघ ने अपने प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन में खेतिहर मजदूरों की भी समस्याओं पर विचार किया। २० मार्च, १९७९ को दक्षिणपंथी कम्युनिस्ट पार्टी ने संसद भवन पर खेत मजदूरों का एक विशाल प्रदर्शन करके उनकी समस्याओं को उजागर किया है। वाराणसी में ३० मार्च से १ अप्रैल, ७९ को सम्पन्न हुए भारतीय किसान सभा के सम्मेलन में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने भी इन मजदूरों की समस्याओं को बड़े जोर शोर से उठाया है। २० मई, ७९ को महाराष्ट्र के बुलढाना ग्राम में भारतीय मजदूर संघ ने श्री एम० जी० डोंगरे एडवोकेट की अध्यक्षता में खेतिहर मजदूरों का वृहद सम्मेलन करके उनकी समस्याओं के निराकरण के उपायों पर विचार किया है।

इतने पर भी अब तक सारे प्रयास आधे और अधूरे ही सिद्ध हुये हैं, किन्तु भविष्य उज्ज्वल दिखाई दे रहा है। क्योंकि जहां सभी प्रमुख राजनीतिक व श्रमिक संगठन खेतिहर मजदूरों की समस्याओं के हल करने के सम्बन्ध में सक्रिय और प्रमुख रूप से अग्रसर हो रहे हैं, वहीं भारत सरकार ने भी इस दिशा में जोरों से प्रयास प्रारम्भ किया है। ग्रामीण असंगठित मजदूरों के संगठन को मजबूत बनाने के उपायों तथा उनकी सेवा सुरक्षा, न्यूनतम मजदूरी की गारन्टी तथा अन्य कल्याणकारी कार्यों के लिए अधिनियम बनाने के विषयों पर जनता सरकार ने केन्द्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व देते हुए २५ जनवरी, १९७८ को ग्रामीण असंगठित मजदूरों के सम्बन्ध में त्रिदलीय सम्मेलन तो नहीं, पर उसी के प्रकार का दिल्ली में 'विशेष सम्मेलन' बुलाकर वृहद रूप से चर्चायें की हैं और सुझाव मांगे हैं तथा इस सम्मेलन के पश्चात् भी ग्रामीण असंगठित मजदूरों के लिये अनेक गोष्ठियों व सम्मेलनों के आयोजन कर उनकी समस्याओं और उनके निदान पर चर्चायें की हैं।

सन् १९४८ का न्यूनतम वेतन कानून खेतिहर मजदूरों पर लागू है। उस कानून को प्रदेशों की मर्जी पर लागू करने के लिये कहा गया है। प्रत्येक राज्य के निर्णय अलग-अलग है और मांगे भी। उन्हें कितना देना है जिन्स में देना या रुपये में देना—सभी कुछ का निर्धारण राज्य सरकारें करेंगी। साप्ताहिक अवकाश अथवा अन्य अवकाश देने या न देने का निर्णय भी राज्य सरकारों पर छोड़ा गया है। इस कानून की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि खेतिहर मजदूरों को किन सिद्धान्तों पर न्यूनतम वेतन निश्चित करना है, उस पर भी यह मौन है। सब मिलकर खेतिहर मजदूरों के लिए यह कानून कोई अर्थ नहीं रखता। मजे की बात यह है कि इस कानून की कोई भी धारा निश्चित नहीं है। राज्य सरकारों की मर्जी ही सब कुछ है। एक ओर जहां यह कानून लंगड़ा है, वहीं दूसरी ओर उससे भी जटिल मामला उसके क्रियान्वयन का है। कौन सी तथा किस प्रकार की विशेष यन्त्र अथवा व्यवस्था की जाय—समझ में नहीं आ रहा है। खेत पर काम अधिक तो वेतन अधिक मिलेगा। काम कम तो उन मजदूरों को या तो छुट्टी दे दी जाती है या न्यूनतम से भी कम मजदूरी दे दी जाती है कृषि क्षेत्र के अधिकांश नियोजक और नियोजित दोनों ही निरक्षर हैं। खेती में कितने घंटे कौन से कार्य होते हैं तथा कितने श्रमिक कार्य करते हैं, वर्कलोड कितना पड़ता है इसका कोई रिकार्ड नहीं है और वह रिकार्ड सम्भव भी नहीं है। खेत मजदूरों को मिलने वाली न तो वेतन दरों की ठीक से जांच हो सकती है और न उनके कार्यों के दशाओं की ही। वेतन के भुगतान की विधियों में भी एकरूपता का अभाव है तथा क्रियान्वयन और निरीक्षण का कार्य एकदम असाध्य है। इतने विशाल पैमाने पर निरीक्षकों को रखना भी मुश्किल है। कुछ राज्यों ने न्यूनतम मजदूरी अधिनियम १९४८ की धारा १९ के अधीन समस्त तहसीलदारों को निरीक्षण के अधिकार प्रदान कर दिये हैं। साथ ही निर्धारित दर से कम भुगतान के सम्बन्ध में दावों की सुनवाई तथा विनिश्चियन हेतु धारा २० के अधीन समस्त परगना मजिस्ट्रेटों को प्राधिकारी नियुक्त कर दिया है। निर्धारित न्यूनतम मजदूरी का प्रभावी परिवर्तन सुनिश्चित करने हेतु जिलाधिकारियों को आवश्यक निर्देश जारी कर दिये हैं, किन्तु इन व्यवस्थाओं का परिणाम क्या खेतिहर मजदूरों के हित में होगा ? प्रश्न बना हुआ है। कहीं न्यूनतम वेतन अधिनियम के पालन करने की किसी प्रकार यदि व्यवस्था हो जायेगी तो निश्चित ही किसान वर्ग मजदूरों को काम से हटा देगा। 'मरता क्या न करता' की स्थिति में बेकार हो जाने पर अर्थात बिल्कुल पैसा न मिलने के स्थान पर थोड़ा बहुत मिल जाय उसी को वह स्वीकार कर लेगा। क्योंकि उसके अन्दर सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति भी नहीं है। तात्पर्य यह है कि उक्त कानून और व्यवस्थाओं से इस समस्या का निराकरण सम्भव नहीं है।

समस्या का निराकरण

गांव की चेतना को जगाने की आवश्यकता है। वहां की कुरीतियों को दूर करना आवश्यक है। मजदूरों की ऋण ग्रस्तता, निरक्षरता तथा गरीबी को दूर करने के उपायों पर विचार करना जरूरी है। इनके परिवार को आवास, चिकित्सा व शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था करने की ओर कदम उठाने होंगे। कार्य कुशलता की वृद्धि के लिये चाहे वह खेतों से संबंधित हो, लघु उद्योग-धन्धों से, शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये। शिक्षा प्रसार के द्वारा ही

लाख ५५ हजार एकड़ जमीन आबंटित की गयी। ८ लाख एकड़ जमीन सरकार के पास है, जिसका वितरण होना शेष है। इस प्रकार कुल करीब २: लाख एकड़ अतिरिक्त जमीन देश में है, जिसका वितरण होना बाकी है।

देश में १६ करोड़ एकड़ जमीन ऊसर पड़ा है, जबकि १ करोड़ लोग गांवों में भूमिहीन हैं। २१ करोड़ एकड़ जमीन अभी भी असिंचित है और ४ करोड़ लोगों को पीने का पानी भी बड़ी कठिनाई से मिल रहा है। ग्रामीण आबादी में बड़े किसानों की संख्या मात्र १५ प्रतिशत है किन्तु ये ४५ प्रतिशत उर्वर भूमि के स्वामी है। ४० करोड़ से अधिक लोग निर्धनता से भी निम्नस्तर पर जीवन व्यतीत करने के लिये विवश हैं। ढाई करोड़ लोग बेकार हैं, यदि इसमें गांवों के कुछ मौसमी रोजगार पाने वालों का सम्मिलित कर लिया जाय तो यह संख्या ४ करोड़ हो जाती है।

वर्ष १९५०-५१ में छोटे कृषकों व कृषि मजदूरों की आमदनी १९८ रुपये से घटकर १९७६-७७ में १९६ रुपये आ गयी। इसी २६ वर्षों की अवधि में शहरी क्षेत्र के लोगों की आय ३९९ रू० से बढ़कर ८१३ रु० तक पहुंच गयी। ६५ करोड़ की आबादी में ३५ लाख व्यक्ति आयकर देते हैं। १९६०-६१ में भूखे अधनंगे व्यक्तियों का अनुपात ३८ प्रतिशत था, वह १९७८-७९ में ५४ प्रतिशत तक हो जाने की सम्भावना है। उन लोगों की प्रति व्यक्ति आय २५ रुपये प्रति मास है।

देश में सबसे छोटे मजदूर की आय तथा बड़े से बड़े पदों पर विराजमान तथाकथित वेतनभोगियों (अफसरों) की आय की विषमता एक से २०० के बीच है तथा गरीब और अमीर के आय की विषमता एक और कई हजार गुने के मध्य है। 'समाजवाद' की दुहाई देने वाले उसका हजारवाँ अंश भी धरती पर उतार नहीं सके। विकास योजनायें जो ९० प्रतिशत लोगों के लिये बनीं, उसका लाभ १० प्रतिशत लोगों ने उठाया है। राष्ट्रीय आय का अधिकतम भाग मुट्ठी भर लोग उठा ले गये हैं।

न्यूनतम वेतन अधिनियम तथा अन्य व्यवस्थाओं की जटिलता

खेतिहर मजदूर जैसे असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों की समस्याओं का कोई संतोषप्रद हल निकालने के लिए यह आवश्यक है कि पहले तो हम इस बात को स्पष्ट रूप से समझ लें कि ये अत्यन्त छोटी-छोटी इकाइयों में काम करते हैं। कानूनों का भारी बोझ डालना न तो किसानों के लिए हितकर है और न श्रमिकों के लिये। अस्तु, इनके लिये कुछ बुनियादी सिद्धांत तय कर देना चाहिये। उदाहरण के लिए श्रमिकों को काम की सुरक्षा, वेतन, काम के घंटे, छुट्टियों का प्राविधान आदि। इसके लिये एक स्टैण्डर्ड कायम कर देना चाहिये। किसानों और मजदूरों के बराबर-बराबर प्रतिनिधियों की राय से नियम बनाकर उस पर सख्ती से अमल किया जाना चाहिये।

कदम नहीं उठाया जाना चाहिये, जिससे कि एक गरीब दूसरे गरीब से लड़े। इनकी समस्याओं को सुलझाने के लिए हमारे सामने दो विकल्प शेष रह जाते हैं। एक है—प्राचीन भारतीय विलेज कामनवेल्थ का पुनरुज्जीवन, जिसमें उसके पसीने (श्रम) का शेयर माना जाता था और वह स्वाभाविक रूप से किसान के परिवार का अंग बनकर अपनी तथा अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता था। दूसरा विकल्प यह है कि बिजली के सहारे ग्रामीण क्षेत्र में विकेन्द्रित उद्योगों का विस्तार। इन दो उपायों से ही खेतिहर मजदूरों तथा समस्त ग्रामीण जनता को खुशहाल बनाया जा सकता है। ग्रामीण विकास और सम्पन्नता से ही देश का आर्थिक और सामाजिक विकास सम्भव हो सकेगा।

सामाजिक कुरीतियां बेगार और दासता जैसी बुराइयां दूर की जा सकती हैं। उनको एकवद्ध सशक्त व जागरूक बनाने की दिशा में प्रयास करने होंगे। संगठित श्रमिकों के समान वर्तमान यूनियनों व संगठनों को ठीक ढंग से प्रोत्साहन देकर इस ओर अधिक ध्यान दिलाकर अच्छी प्रकार से संगठन बनाने के लिये प्रयत्न करने होंगे। छोटे-छोटे किसानों और खेतिहर मजदूरों के बीच लघु तथा कुठीर उद्योग धन्धों का विस्तार किया जाना चाहिये। ग्रामों में औद्योगिक इकाइयां तथा एग्रो उद्योग प्रारम्भ होने चाहिये। ऐसी योजना बनायी जाय, जिससे रोजगार बढ़ सके। रोजगार जनरेटिंग स्कीम बनायी जाय। देहातों में छोटे-छोटे उद्योग धन्धे स्थापित किये जाने चाहिये, जिससे बेरोजगार लोगों को खेती के अलावा आय के साधन प्राप्त हो सकें। ग्रामीण विकास योजना के अन्तर्गत सरकार द्वारा ऐसे छोटे धन्धे स्थापित किये जा सकते हैं। श्रमिकों की सहकारी समितियां बनायी जाय। भूमि सुधार योजना लागू हो। पर्वतीय क्षेत्रों में जगलात के ठेकेदारों व सरकारी कर्मचारियों द्वारा श्रमिकों का जो शोषण किया जाता है, उसे रोका जाये। श्रमिकों को वित्तीय सहायता देकर गाय, भैंस, भेड़, बकरी, कुक्कुट, मधुमक्खी तथा मत्स्य आदि के पालन की व्यवस्था कराकर उनके जीवन निर्वाह के स्तर को बढ़ाया जाय। तकनीकी उपायों से भी खेत मजदूरों की हालत में परिवर्तन किया जाय। उन्हें मशीन देकर प्रशिक्षण की व्यवस्था करके भी बहुत हद तक जापान के खेतिहर मजदूरों की तरह खुशहाल बनाया जा सकता है। अगर खेत जोतने वाले को खेत की मिल्कियत से वंचित रखा जाता है और छोटी जोतों की मदद करके आर्थिक दृष्टि से सक्षम नहीं बनाया जाता, तो खेती पर जोर देने का कोई अर्थ नहीं होगा। आज के जमाने मे जमीन केवल ७० प्रतिशत आबादी को रहन-सहन का न्यूनतम स्तर प्रदान कर सकती है। इसलिये भारतीय अर्थव्यवस्था को ऊँचा उठाने के लिये जरूरी है कि उद्योगों में खेतिहर आबादी को भी लगाया जाय। कृषि और उद्योग दोनों का सन्तुलित विकास किया जाय। खेतिहर मजदूरों की मजदूरी आदि के तय करने हेतु त्रिदलीय समितियों का गठन हो। उसके क्रियान्वयन का भार राजस्व व श्रम विभाग पर ही नहीं, अपितु ग्राम पंचायतों पर भी डाला जाय। उनकी देय सुविधाओं को दिलाने के लिए व उनका शोषण समाप्त करने हेतु प्रत्येक तहसील पर एक श्रम निरीक्षक तथा प्रत्येक जिले में अलग से एक संराक्षन अधिकारी की नियुक्ति की जाये। मजदूरी के निश्चित हो जाने पर सरकार की ओर से व्यापक प्रचार किया जाय। जिलों के सार्वजनिक स्थानों पर उसे चिपकाया जाय। उनके शोषण करने वालों व मजदूरी कम देने वालों के लिए जेल जैसी सजा का कानूनी प्राविधान आवश्यक है। उन्हें मुफ्त कानूनी सहायता व वकील भी दिये जाने चाहिये। मर्द और औरत की मजदूरी में जो अन्तर है, उसे समाप्त किया जाय। हमें यह मानकर चलने की आवश्यकता है कि खेती के क्षेत्र में खेतिहर मजदूर व अन्य ग्रामीण श्रमिक ही हमारे हार्स पावर व बिजली है। इन बीस करोड़ हार्स पावर के सदुपयोग का मार्ग हमें ढूंढना है। इस क्षेत्र में वर्ग संघर्ष से कुछ बनने वाला नहीं है। कृषि उद्योग रूपी रथ के दो पहिये हैं—एक किसान और दूसरा खेतिहर मजदूर। दोनों में संघर्ष नहीं, अपितु सामंजस्य की आवश्यकता है। उसे एक कामनवेल्थ मानकर चलें। जिसके तीन सहभागी है—किसान, खेतिहर मजदूर तथा कारीगर। तीनों के सहयोग से तीनों का अर्थात् सम्पूर्ण ग्राम का कल्याण होगा। इन मजदूरों की समस्याओं को न राजनैतिक यूनियनें और न पाश्चात्य ढंग पर चलने वाली ट्रेड यूनियनें हीं सुलझा सकती हैं। गरीब किसान उतना ही गरीब है, जितना कि खेतिहर मजदूर। ऐसा कोई

१९८० भारतीय मजदूर संघ, की रजत जयन्ति समारोह (नई दिल्ली) के अवसर पर बोलते हुए बड़े भाई।

(नीचे) अप्रैल, १९८३ — भारतीय मजदूर संघ पंजाब के दसवें अधिवेशन (गोविन्दगढ़) के अवसर पर प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए बड़े भाई।

वि चा र

विराम कहां—
बड़े भाई विचारों
का सिलसिला
आगे बढ़ाते हुये

राष्ट्र भक्ति खेल नहीं है, जब इसकी कसौटी का दिन आता है तो संसार के अप्रतिम लावण्य, नाते-रिश्ते एवं जागतिक वैभव के सुनहले जीवन को बुद्ध से भी भीषण, दधीचि से भी दृढ़ तथा भीष्म की भयंकर प्रतिज्ञा से भी अचल बनकर एक ठोकर से ठुकरा देना पड़ता है ; जो इसकी गम्भीरता समझता है, वही इस कठिन परीक्षा में सफल हो सकता है और वही अमृत-पुत्र है ।

भारतीय मजदूर संघ के पंचम अ० भा० अधिवेशन जयपुर (२१-२३-अप्रैल, १९७८) के उद्घाटन पर ध्वजारोहन करते हुए संघ के तत्कालीन अध्यक्ष स्व० श्री नरेशचन्द्र जी गांगुली व बड़े भाई।

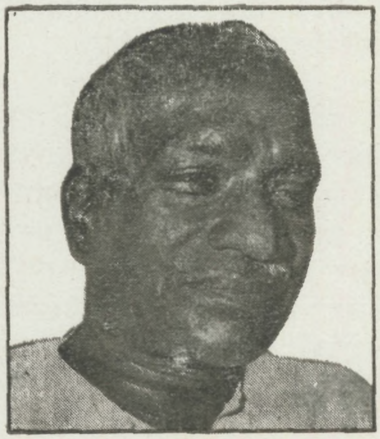

स्मृति दीप

न 'पूंजीवाद' न 'समाजवाद' किंतु 'मानवतावाद'

पूंजीवाद मनुष्य को एक अर्थलोलुप भौतिक प्राणी मानकर चलता है। 'ज्यादा से ज्यादा लाभ' उसका लक्ष्य है। उसमें भूखे किन्तु निर्धन की अपेक्षा पेट भरे और सधन की ही चिंता की जाती है। स्पष्टत: पूंजीवाद की अर्थव्यवस्था 'मानव' का विकास करने में असमर्थ सिद्ध हुई है।

समाजवाद भी मानव को उसकी प्रतिष्ठा नहीं दे पाया। उसने पूंजी का स्वामित्व राज्य के हाथों में देकर संतोष कर लिया। किंतु राज्य तो अत्यधिक व्यक्तिनिरपेक्ष संस्था है। जिस प्रकार जेल मेन्युअल में मानव का विचार कर उसकी आवश्यकताओं की चिंता की गई है इसी प्रकार समाजवादी व्यवस्था में मानव का विचार अत्यंत ही व्यक्तिनिरपेक्षता के आधार पर किया गया है। वहां व्यक्तिगत स्वतंत्रता नाम की कोई चीज नहीं है। इस व्यवस्था में राज्य को सर्वेसर्वा बना दिया गया है। मानव इस समकाय मशीन का पुर्जामात्र रह गया है। यह पुर्जा ठीक-ठीक काम करे इसके लिये किसी अंत:प्रेरणा का विचार नहीं हुआ।

हमें समाजवाद अथवा पूंजीवाद नहीं, 'मानव' का उत्कर्ष और सुख चाहिये। 'मानव' को दांव पर लगाकर आज दोनों लड़ रहे हैं। दोनों ने न तो मानव को समझा है, और न उन्हें मानव की चिंता है। भगवान की सर्वश्रेष्ठ कृति 'मानव' अपने को खोता जा रहा है। हमें 'मानव' को पुन: अपने स्थान पर प्रतिष्ठित करना होगा, उसकी गरिमा का ज्ञान उसे करना होगा, उसकी शक्तियों को जगाना होगा तथा उसे देवत्व की प्राप्ति के हेतु पुरुषार्थ चतुष्टयशील बनाना होगा।

—पंडित दीनदयाल उपाध्याय

वे हमारी स्मृति में चिर अमर हैं

"बड़े भाई" और मैं दक्षिण की यात्रा पर थे । हमें क्यूईलोन से एरनाकुलम और फिर वहां से मदुराई जाना था । एरनाकुलम से क्यूईलोन के बीच दिन में लगभग तीन घन्टे की यात्रा थी इसलिए कोई आरक्षण नहीं करवाया था । हम एक डिब्बे में चढ़े जो कि खचाखच भरा था, लेकिन किसी तरह बैठने की जगह मिल गई । कुछ समय बाद ट्रेन चल पड़ी । हमारे सामने की सीट पर एक यात्री बैठा था उसने अपनी थर्मस से एक कप में काफी उड़ेली और बड़े भाई को प्रस्तुत की । मैं आश्चर्य चकित था कि बिना किसी पूर्व परिचय के और एक दूसरे की भाषा तक न जानने के बावजूद कोई बातचीत या पहचान हुए बिना ही, इतने सारे यात्रियों में से उसने बड़े भाई को ही काफी पेश करने के लिये कैसे चुना !

क्यूईलोन मदुराई के लिए अगली ट्रेन पकड़ने के बीच हमारे पास कुछ घंटे का समय था । मैंने बड़े भाई से पूछ ही लिया कि आप में ऐसी कौन सी विलक्षण शक्ति अन्तर्निहित है जिसके कारण उस यात्री ने इतने सारे लोगों में आपको बिना जाने-पहचाने ही काफी प्रस्तुत कर दी ।

बड़े भाई मेरी इस बात पर जोर से हंसे । फिर बोले, "यह पहला ही अवसर नहीं है जब ऐसा हुआ है ।" उन्हें अनजान व्यक्तियों से अपेक्षित सहयोग अप्रत्याशित ही मिल जाया करता था । उसी बातचीत के दौरान उन्होंने एक और उसी तरह का किस्सा सुनाया ।

उन्होंने बताया, "मैं कुछ स्वयंसेवकों के साथ पुणे के निकट सिंहगढ़ का किला देखने गया था । जब हम किले से लौट रहे थे तो मार्ग में हमारी गाड़ी खराब हो गई । मेरी पुणे से वापसी हेतु ट्रेन यात्रा का आरक्षण कुछ घन्टों के बाद ही था । हम लोगों में से जिनके पास स्कूटर और मोटर साईकिलें थीं वे पहले ही प्रस्थान कर चुके थे । मेरे साथ यात्रा कर रहे

साथियों ने सुझाया कि हम पहाड़ी से नीचे तक पैदल चल जहां से कोई भी गुजरने वाली बस पकड़ लेंगे। मैंने कहा कि वे पैदल जाना चाहें तो चलें, मेरे पैर के जोड़ों में तकलीफ होने के कारण मैं पैदल नहीं चल सकूंगा। मैं यहीं किसी साधन की प्रतीक्षा करूंगा आप लोग मेरी चिन्ता न करके प्रस्थान करें।"

"कुछ ही देर बाद उधर से गुजरता हुआ एक अनजान मोटर साईकिल सवार मुझे देखकर रूका। मुझसे साथ चलने का अनुरोध किया। उसके साथ बैठकर कुछ ही मिनटों में जब मैं अपने पैदल जा रहे साथियों के पास से हाथ हिलाता हुआ निकला तो उन्हें आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता हुई।"

बड़े भाई ने मुझे ऐसी अनेक घटनाएं सुनाईं। हम जानते ही हैं कि बड़े भाई यद्यपि डीलडौल में हमसे तगड़े थे लेकिन उनका चेहरा-मोहरा अति सामान्य और रहन-सहन अत्यन्त सादगी पूर्ण था। इसके बावजूद उनके अंदर ऐसा कुछ विशिष्ट अवश्य था जो हजारों की भीड़ में भी लोगों को सहज ही उनके प्रति आकर्षित और प्रभावित करता था। उनके लिए लोगों के मन में स्वयंमेव श्रद्धा एवं आदर उपजता था।

अध्ययनशील एवं शोधपूर्ण प्रवृत्ति

वे बहुत ही अध्ययनशील थे। मुझे याद है जब एक बार मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने यू० एस० ए० द्वारा पी० एल०—४८० मदद के बारे में इतना खोजपूर्ण और रुचिकर लेख कैसे लिखा? तब उन्होंने बताया था कि वे जब एम० एल० सी० थे तब यदाकदा समय निकालकर विधानसभा पुस्तकालय में अध्ययन करके ही यह लेख लिखा था। इसी प्रकार राष्ट्रीय श्रम दिवस पर लिखे विचार प्रेरक लेख में उन्होंने मई दिवस के संदर्भ में इन्साइक्लोपिडिया ब्रिटानिका ले अनेक उदाहरण दिए थे।

व्यवहारिक दृष्टिकोण

वे अपने सम्बोधन में गहन विषयों को भी सरल उदाहरणों द्वारा सहज ग्राह्य बना देते थे। वे कहा करते थे कि ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं को सहज श्रम कानून रट लेना ही काफी नहीं है। मिहिर सेन की ६०० पृष्ठ की पुस्तक पढ़ने के बाद भी तैरना सीखने के लिए पानी में छलांग लगाना जरूरी है और जब तक दो चार बार नाक और मुंह में पानी नहीं भरता, यह कला नहीं आती। ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता को संघर्ष के समुद्र में कूदे बिना या डुबकियां लगाये बिना अपने कार्य में कुशलता और दक्षता प्राप्त नहीं हो सकती।

सहज ग्राह्य विनोद पूर्ण शैली

वे चाहते थे कि श्रमिक संगठन (ट्रेड यूनियनें) आत्मनिर्भर और मजबूत हों। इस बारे में वे अक्सर चुटीले उदाहरण दिया करते थे। कहते थे यदि तुम्हारी पत्नी को एक साड़ी की

जरूरत है तो तुम्हें यह उसे स्वयं की मेहनत से उपलब्ध करानी चाहिये और यदि आप खुद ऐसा नहीं करते हैं तो क्या यह आप पसन्द करेंगे कि क्या आपका पड़ौसी आपकी पत्नी को यह भेंट करे ?

त्याग-तपस्या की प्रतिमूर्ति

वे देश भर में भारतीय मजदूर संघ के फैले कार्य और कार्यकर्ताओं से सम्पर्क तथा विविध कार्यक्रमों के सिलसिले में लगभग निरन्तर प्रवास पर रहा करते थे। फलस्वरूप अतिव्यस्तता में अपने स्वास्थ्य के प्रति बिल्कुल ध्यान ही न दे सके। नवम्बर १९८४ के प्रथम सप्ताह में इन्दौर अभ्यास वर्ग के दौरान उन्होंने मुझसे कहा था कि पिछले कुछ वर्षों में उनके पैरों के जोड़ों की तकलीफ निरन्तर बढ़ते-बढ़ते अब असह्य हो चली है, जिसके उपचार के लिए वे लगभग एक माह का पूर्ण विश्राम चाहते हैं। मैंने भी उनसे यही कहा कि एक बार सब चीजों को भूल कर उन्हें उपेक्षित उपचार और विश्राम अवश्य ही करना चाहिये लेकिन अफसोस कि वे ऐसा नहीं कर सके। सब यही चाहते रहे कि बड़े भाई कम से कम उनके एक और कार्यक्रम में शरीक हों। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं, मार्गदर्शन करें। यह कभी न खत्म होने वाली "एक बार और" वाली बात जब तक उनके शरीर ने अन्ततः जबाब नहीं दे दिया, चलती ही रही। वे अपने लोगों, अपने कार्यकर्ताओं से इतना अगाध स्नेह रखते थे कि किसी को मना करना या हतोत्साहित करना उनके वश की बात नहीं थी।

ऐसी ही आदर्श प्रेरणापूर्ण स्नेह और आत्मीयता भरी अनेकानेक स्मृतियों में न केवल आज अपितु चिरकाल तक वे हमारे बीच में अमर रहेंगे।

जी. प्रभाकर, महामंत्री,
भारतीय मजदूर संघ

एक कर्मयोगी के सान्निध्य में

मैं अपने परिवार के साथ कानपुर में लगभग चार वर्ष रहा। परिवार में मैं, मेरी पत्नी मंगला एवं बच्चे नीलू, वीनू, आलोक। बच्चे छोटे ही थे।

संयोग से हमारा आवास संघ कार्यालय के सामने था। दोनों के प्रवेश द्वार में करीब ७-८ फीट की दूरी थी। कार्यालय के सामने होने से संघ बंधुओं के आत्मीय स्नेह के कारण हम भूल गये कि हम एक नये अनजान शहर में आए हैं। बच्चे बहुत खुश थे, उन्हें कार्यालय में उधम मचाने में आनन्द आता था।

पत्नी के अनुशासन प्रिय होने से यदा-कदा बच्चों की पिटाई हो जाती थी। ऐसे समय में जब बच्चे देखते कि मां के तेवर चढ़े हैं तो वे सीधे कार्यालय में पहुंच जाते और वहीं पर उधम-मस्ती करते।

उस समय कार्यालय में स्थायी तौर पर श्री देवले जी, अशोक जी, बड़े भाई और बाल जी रहा करते थे। हमें इन लोगों का सान्निध्य प्राप्त करने का सौभाग्य मिलता था। आज भी वह चित्र मानस पटल पर घूम जाता है। बड़े भाई कुछ लिख रहे हैं, कुछ सोच रहे हैं। पर नीलू-वीनू हैं कि उनके कन्धे पर चढ़ रहीं हैं। कलम छीनकर भाग रही हैं। इन दोनों को बड़की एवं छुटकी बिटिया नाम "बड़े भाई" ने ही दिये थे। बच्चियों की इतनी शरारत के पश्चात भी मैंने कभी नहीं देखा कि बड़े भाई नाराज हुए हों। सदैव वही स्नेह। बच्चे भी संभवतः उनसे सबसे अधिक घुले मिले थे। कई बार तो बच्चों को डाक्टर बुलाना पड़ता था। बच्चे प्रायः बड़े भाई या अशोक जी के पास उनके कमरे में सो जाते थे। बड़े भाई एवं अशोक जी के सामान को अस्त-व्यस्त करना बच्चों का मनपसन्द खेल था।

एक बार मैं और बच्चे रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानी पर आधारित "काबुली वाला" चलचित्र देखकर आए। फिल्म साफ सुथरी थी। हम लोग बड़े भाई के पीछे पड़ गये, "चलो यह चित्र देख आएं" बड़े भाई ने कहा—"इस सप्ताह नहीं, कई काम हैं, अगले सप्ताह विचार करेंगे"। अगले सप्ताह हमने उन्हें राजी कर ही लिया। टिकट खरीदकर हाल में पहुंच गये चलचित्र जब शुरू हुआ तो देखा कुछ और ही मसाला कहानी है। बड़े भाई बोले, क्यों दवे जी, (मुझे कार्यालय में इसी नाम से संबोधित करते थे) ये कैसी साफ-सुथरी फिल्म है ? मैंने कहा—"लगता है फिल्म बदल गई।"

बड़े भाई बड़े संकोची थे। कार्यालय का भोजन तो बड़ा सात्विक हुआ करता है। श्री अशोक जी को अरहर की दाल पसन्द थी। श्री देवले जी और अशोक जी दोनों ही शाखा के कार्यक्रम के बाद की चाय निःसंकोच चौके में बैठकर गप-शप करते हुए आनन्दपूर्वक लेते थे।

मगर बड़े भाई संकोची होने के कारण कभी भी अपनी ओर से कोई रूचि नहीं बताते थे। कई बार विशेष भोजन के लिए उन्हें पुकारते, किन्तु वह अपने काम में उलझे रहते। ऐसे समय में नीलू, वीनू जातीं, उनकी पीठ पर चढ़ती और उन्हें रसोई घर तक खींच लातीं।

हां, बड़े भाई का बच्चों के साथ एक खेल निश्चित था। धौल जमाने का, जो प्रति-दिन चला करता था।

बड़े भाई विवाहित थे। विवाह पहले हुआ, प्रचारक बाद में बने। प्रचारक क्या बने, सन्यास ही ले लिया। उनकी पत्नी अस्वस्थ रहा करती थीं। मैं और मेरी पत्नी पीछे पड़ जाते थे कि एक बार तो देख आइये, मगर वे कभी गये नहीं। हमने उनसे कहा भी कि एक-आध सप्ताह के लिये यहीं बुला लीजिए, हमारे साथ रहकर लौट जाएंगी। मगर इस विषय पर बड़े भाई सदैव मौन हो जाते थे।

मैं १९६५ के नवम्बर में इन्दौर चला आया। परिवार शिक्षा सत्र के कारण वहीं रह गया था। कानपुर में अपराध की समस्या सदैव रही है। मगर न तो मुझे और न ही परि-वार को लगा कि हम अकेले हैं। परिवार के अधिक सक्षम सदस्य (सघ के बंधु) तो सब वहीं हैं। बस मैं ही चला आया हूं। यह पारिवारिक भावना संघ की ही देन है।

एक बार बड़े भाई वर्षों बाद घर आए। घर पर आते तो परिवार के सदस्य की भांति रहते। वही ठहाकेदार हंसी। पूछा, "नीलू कहां है ?" हमने कहा—"प्रयाग अपने पति के साथ।" कहने लगे "हमारा भी प्रयाग जाने का कार्यक्रम है।" हमने कहा आप नीलू से जरूर मिलिए बड़े भाई कहने लगे, "वह हमें पहचान पाएगी ?" (उन्हें संभवतः रवीन्द्र की कहानी काबुली वाला का स्मरण हो आया हो) हमने कहा, क्यों नहीं, आप में तो कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, उसमें हुआ है, जैसा कि किशोरावस्था में होता है। मगर उसे पहचानने में कोई असुविधा नहीं होगी।

वे बोले, "भाई हम मजदूर संघ वाले हैं। उसके पति जनरल मैनेजर हैं। कभी उनसे मिला नहीं हूं। क्या वे पसन्द करेंगे ?" मैंने कहा, "व्यक्तिगत संबंध सबसे ऊपर हैं, जाइये तो।"

प्रयाग के प्रवास में वे दो-तीन कार्यकर्ताओं के साथ उसके घर गये। घण्टी बजाई। नीलू ने दरवाजा खोला। पैर छुए और लिपट गई।

बड़ भाई की आंखें सजल हो आईं। थोड़ी देर वहां रुके, जलपान किया और यह आश्वासन देकर कि अगली बार आऊंगा तो अधिक समय निकालकर आऊंगा, चले आए। लौटते समय उनके सजल नेत्रों को देखकर साथियों ने पूछा, "यह कौन है।" बड़े भाई बोले, "हमारी बिटिया।"

गत् २८ या २९ अक्तूबर, १९८४ को फोन आया कि बड़े भाई इन्दौर में एक शिक्षण वर्ग को संचालित करने के लिये आये हैं। मैं उनको कार से घर ले आया। दो-एक घंटे बाद स्टेडियम छोड़ आया। निश्चित हुआ कि शिक्षण शिविर के बाद वे घर आएंगे और एक दिन घर पर रहेंगे।

३१ अक्तूबर को इंदिरा गांधी की हत्या के बाद शहर में उत्पात हो गया। कर्फ्यू में पता नहीं चला कि वे कहा हैं। बाद में पता चला कि वे घटना का समाचार मिलते ही दिल्ली चले गये।

कुछ समय पश्चात् श्री शरद जी से पता चला कि वह अस्वस्थ हैं। ट्यूमर का आपरेशन बम्बई में हुआ है। मैंने और पत्नी ने विचार किया कि चलो उन्हें बम्बई देख आएं। मगर शरद जी ने कहा कि उनकी अस्वस्थता के कारण डाक्टरों ने मिलना रोक रखा है।

कुछ समय बाद उनके अवसान का झकझोरने वाला समाचार मिला। सुनकर एक अजीब सी पीड़ा मन में समा गई।

वे कितने कोमल किन्तु दृढ़ थे। उनकी सादगी ओढ़ी हुई नहीं बल्कि स्वाभाविक थी। सदैव मोटे कपड़े का कुर्ता व धोती, ठण्ड में एक स्वेटर या सदरी, इससे अधिक कुछ नहीं। कार्यालय में दो मोटर साईकिलें थीं। किन्तु उन्हें अपनी पुरानी साईकिल से ही स्नेह था। वही उनका वाहन थी।

संघ नेतृत्व ने जब भारतीय मजदूर संघ का कार्य सौंपा तो उसमें तन-मन से जुट गये। माननीय श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी के विचारों को साकार करने वाला वह शिल्पी, भारतीय मजदूर संघ को अखिल भारतीय स्वरूप देने वाला कर्मयोगी सदैव "बड़ा भाई" ही रहा है। कभी नहीं लगा कि वे अखिल भारतीय मजदूर नेता हैं।

—गोविन्द दुबे इन्दौर,

मंजिलें अभी और भी हैं

हमारे महामंत्री बड़े भाई श्री रामनरेश सिंह जी का किसी से भी अपने मन का काम करवा लेने का ढंग बड़ा अनोखा था। इसके लिए वे कभी किसी को आदेश या निर्देश नहीं देते थे। जिससे वह कुछ करवाना चाहते थे, पहले उसके मन के भाव को और काम करने की सोच को अच्छी तरह भांप लिया करते थे। बहुत धीरे और सहजभाव से उसके भावी कार्यक्रम के बारे में पूछ लिया करते थे। जब वह अपने मन की बात बता देता, तो उसके लिए ऐसा सरल कार्यक्रम बना देते, मानो उसके मन की अधूरी बात पूरी हो गई हो। उसी में जो कुछ वे करवाना चाहते थे, वह भी इस प्रकार जोड़ देते मानो वह उसके पूर्व संकल्पित कार्यक्रम का ही स्वाभाविक अंग हो।

इस प्रकार का अनुभव मुझे अनेक बार हो चुका है। किन्तु मैं यहां केवल एक ही घटना का उल्लेख करना चाहता हूं। केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों की २६ सितम्बर, १९८४ की देशव्यापी सांकेतिक हड़ताल की तैयारी चल रही थी। मैं भी दिल्ली के बाहर दौरा करना चाहता था, किन्तु बहुत दूर तक अधिक समय के लिए नहीं जाना चाहता था। बड़े भाई ने मुझसे पूछा कि कहां-कहां जाने वाले हो। मैंने कहा, बस मुरादाबाद, लखनऊ, बनारस हो आऊंगा। उन्होंने कहा, ठीक है, कानपुर, मुगलसराय भी हो लेना। मैंने ऐसा ही करने के लिए हां कर दिया। फिर कहने लगे कि गोरखपुर एक प्रमुख केन्द्र छूटता जा रहा है। मैंने कहा वहां भी चला जाऊंगा। कहने लगे फिर गोंडा भी मार्ग में पड़ेगा। फिर बहुत धीरे से कहा कि बिहार का दानापुर और जमालपुर छूट रहा है। मैंने कहा कि जब मुझे मुगलसराय तक जाना ही है तो दानापुर और जमालपुर भी चला जाऊंगा। उन्होंने कहा यह ठीक रहेगा। और जब मेरा कार्यक्रम बनाकर मुझे दिया तो उसमें कलकत्ता होते हुए बिलासपुर, रायपुर और नागपुर तक का ऐसा सुसूत्र कार्यक्रम जोड़ दिया जो पहली अगस्त से बीस सितम्बर तक लगातार चलता रहा।

इन सभी स्थानों पर दो-दो, चार-चार दिन और कलकत्ता में पूरे एक सप्ताह रहकर, रेल, प्रतिरक्षा और डाकतार कर्मचारियों की द्वार सभाओं से लेकर कार्यकर्ताओं की बैठक और पत्रकार सम्मेलनों में मेरा सारा समय ऐसे बीत गया, कि कुछ पता ही न चला। सभी क्षेत्रों के अधिक से अधिक कार्यकर्ताओं से मिलकर मुझे बड़ा आनन्द आया। रिपोर्टिंग करने के बाद बड़े भाई भी बहुत प्रसन्न हुए। बाद में मुझे बताया कि उन स्थानों पर जब वे मुझसे पहले गये थे, तो वहां के कार्यकर्ताओं से वायदा करके आये थे, कि दिल्ली जाकर मैं अमलदार सिंह को (मुझे) यहां भेजूंगा। और सचमुच बिना कोई आदेश दिये मुझे भेज ही दिया।

दुर्गुण मेरा, सद्गुण तेरा

बड़े भाई समय के बहुत पक्के थे। कार्यकर्ताओं से भी वे ऐसी ही अपेक्षा रखते थे और उनको इसकी सीख भी दिया करते थे। किसी कार्यक्रम में व्यतिक्रम उत्पन्न न हो, इसका वे बहुत ध्यान रखते थे फिर भी यदि किसी अज्ञात कारणवश कोई कार्यकर्ता पूर्व निश्चित कार्यक्रम में ठीक समय पर न पहुंच पाता तो इस कमी को वे खटकने न देते, और न दूसरों के सामने उजागर ही होने देते।

२७ मई १९६६ को भारतीय रेलवे मजदूर संघ का निर्माण हुआ और मुझे महामंत्री का पद सौंपा गया। कुछ ही दिनों बाद मेरा मध्य रेलवे, उत्तर रेलवे, पूर्वोत्तर रेलवे और पूर्वी रेलवे के दौरे का कार्यक्रम बनाया गया। मुझे बम्बई से झांसी होते हुए सुबह की गाड़ी से कानपुर पहुंचना था और उसी दिन प्रातः १० बजे पत्रकार सम्मेलन में रेलवे के बारे में नई संस्था के निर्माण की आवश्यकता और औचित्य का प्रतिपादन करना था। किन्तु संयोगवश मैं कानपुर पहुंच न सका। शायद झांसी में सो जाने के कारण गाड़ी छूट गई और दूसरी गाड़ी से दोपहर के बाद मैं कानपुर पहुंचा।

मेरे सौभाग्य से उसी दिन और उसी समय कानपुर में पंडित कमलापति त्रिपाठी का भी पत्रकार सम्मेलन था। अतः सभी पत्रकार बंधु पंडित जी के पत्रकार सम्मेलन में पहले गये और वहां का सम्मेलन समाप्त होने के दो ढाई घण्टे बाद एक-एक करके भारतीय मजदूर संघ के कार्यालय में आये। तब तक बड़े भाई प्रेस नोट तैयार किये बैठे थे। आते ही पत्रकारों ने पूछा कि आनेवाले महाशय कहां हैं ? क्या वे आ गये हैं ? बड़े भाई ने तपाक से उत्तर दिया, हां वे आये और ढाई घंटे तक आप लोगों का इतजार करते रहे, और फिर अपने दूसरे कार्यक्रम में चले गये। पत्रकार महोदय विलम्ब से आने के लिए क्षमा याचना करते हुए बोले कि मंत्री महोदय के कार्यक्रम के कारण हम लोग समय पर न आ सके। बड़े भाई ने हंसते हुए कहा, हां भाई, मंत्रियों के आगे हम लोगों की क्या गिनती है। बड़ों का काम पहले छोटे जाएं भाड़ में। इस पर पत्रकार महोदय पुनः क्षमा याचना के साथ कहने लगे कि हमें 'मैटर' दे दें हम पूरा का पूरा छापेंगे।

बड़े भाई ने उन्हें पहले से तैयार प्रेस नोट पकड़ा दिया और वे चले गये। इसी प्रकार जो भी पत्रकार आते गये, उनको विलम्ब से आने का उलाहना देते हुए प्रेस नोट पकड़ाते गये और वे भी क्षमा याचना करते हुए पूरा 'मैटर' छापने का वचन देते गये। फलस्वरूप दूसरे दिन सभी पत्रों में पूरा समाचार ज्यों का त्यों विस्तृत रूप से छपा और यह पत्रकार सम्मेलन महान सफल साबित हुआ। बड़े भाई ने कुशलता पूर्वक काम भी बना लिया और मेरी कमी को भी उजागर नहीं होने दिया। यह था उनकी बुद्धि चातुर्य और संगठन कुशलता।

विनोदी स्वभाव

बड़े भाई ऊपर से देखने में भले ही रूखे स्वभाव के लगते रहे हों। प्रायः हम सबको हंसी-मजाक भरे चुटकुले सुना-सुना कर हंसाते रहते थे। यहां तक कि बैठकों में भी ऐसे ही हास्य और विनोद से भरे किस्से, कहानी और चुटकलों के माध्यम से गंभीर से गंभीर विषय पर भी सरल मार्गदर्शन करते रहते थे। तरह-तरह के अनुभवों का हवाला देते हुए कार्यकर्ताओं को हंसाते हुए कठिन से कठिन परिस्थितियों का सहर्ष मुकाबला करने की प्रेरणा देते रहते थे।

एक बार उन्होंने मजेदार किस्सा सुनाया। कहने लगे कि जब वे संघ के प्रचारक थे तो अक्सर विरोही गांव जाया करते थे। वहां एक नौजवान स्वयंसेवक के घर पर ठहरते थे। घर में केवल उस समय स्वयंसेवक की बूढ़ी मां ही थी। क्योंकि उस गरीब की अभी तक शादी नहीं हुई थी। बड़े भाई जब उसके यहां जाते तो वह बुढ़िया बड़े स्नेह से उन्हें जलपान कराती और कहा करती कि बेटा रामनरेश, अपने इस गरीब छोटे भाई के लिए भी कहीं से रोटी का ठिकाना करवा दो जिससे इसका भी घर बस जाय। तुम्हारी बड़ी जान पहचान है। सब लोग तुम्हारी बात मानते हैं। कहीं से एक दुल्हन ला दो। मेरे न रहने पर यदि इस घर में आओगे तो तुम्हें भी एक गिलास पानी मिल जाया करेगा, आखिर मैं कब तक बैठी रहूंगी। इसी प्रकार उसके दो-चार बार कहने पर बड़े भाई को एक मजाक सूझा। उन्होंने उससे कहा कि माई, मैं नई दुल्हन कहां ढूंढ़ने जाऊं? कहो तो अपनी घर वाली को ही तुम्हारे यहां भेज दूं। इस पर बुढ़िया ने पहले तो कहा कि बेटा तब तुम क्या करोगे, तुम्हें कौन रोटी-पानी देगा। पर जब बड़े भाई ने उसको समझाया कि माई इसकी चिन्ता मत करो, मेरा परिवार बहुत बड़ा है और घर में बहुत से लोग रोटी-पानी देने वाले हैं, तो बुढ़िया बहुत खुश हुई। फिर कहने लगी कि बेटा भगवान तेरा भला करे, तुम जुग-जुग जियो और तुम्हारा परिवार और बढ़े। तुम्ही मेरा घर बसा सकते हो, चाहे जो भी करो, मुझे सब मंजूर है।

इसके बाद जब बड़े भाई दो-तीन बार और उसके यहां गये तो उसने कुछ न कहा लेकिन जब चौथी बार गये तब बुढ़िया ने कहा कि बेटा रामनरेश, वह बात भूल गया क्या? तब तक बड़े भाई वास्तव में मजाक में कही हुई बात भूल चुके थे। पूछा कौन सी बात? बुढ़िया ने कहा कि अरे, वही जो मेरा घर बसाने को कह रहे थे। मैं तो बड़ी उम्मीद लगाये बैठी हूं और रोज-रोज तुम्हारी डगर निहार रही हूं कि कब उसे लाओगे। कहो तो इस बार लड़के को ही तुम्हारे साथ भेज दूं। वह इसको देख भी लेगी और यह उसको लिवा भी लायेगा। बुढ़िया

अधिकार प्राप्त किये जाते हैं

एक हलवाई की दुकान पर एक हट्टा-कट्टा बलिष्ठ व्यक्ति आया और मेजों के सामने पड़ी कुर्सियों में से एक पर शान से बैठ गया। बहुत देर हो गई, उसने न किसी चीज के लिए आदेश दिया और न किसी से कुछ मांगा। थोड़ी-थोड़ी देर में मूछों पर ताव देता और हलवाई की ओर देख भर लेता। पचासों ग्राहक आये और गये। जब दुकान ग्राहकों से लगभग खाली हो गई और वह व्यक्ति वैसा ही बैठा रहा तो हलवाई (दुकानदार) ने यह समझा कि यह कोई इज्जतदार आदमी है, भूखा है किन्तु जेब में पैसा नहीं है। न खरीद कर खा सकता है और न संकोच में मांग पा रहा है। अपने नौकर के हाथ एक दोने में कुछ मिष्ठान रखकर उस व्यक्ति के पास मेज पर रखवा दिये।

मिष्ठान का दोना रखकर जैसे ही नौकर जाने लगा कि वह व्यक्ति कड़ककर बोला "क्या मैं भिखारी हूं, किसी का दिया खाता हूं ?" दुकानदार ने उसका उग्र रूप देखकर नौकर को मिष्ठान वापस लाने को कह दिया। ज्यों ही नौकर ने दोना उठाया और चलने लगा कि वह व्यक्ति एकदम झपट पड़ा और दोना छीनकर मेज पर रख लिया और कहा "सुन लो, न मांग कर खाता हूं और न किसी का दिया खाता हूं। मैं छीनकर खाता हूं।" और मिष्ठान खाने लगा।

इस कथानक के अनुसार ट्रेड यूनियन अपनी शक्ति के आधार पर न्यायोचित तथा आवश्यक अधिकार मालिक से छीनकर प्राप्त करती है, न मांगती है और न स्वेच्छा से दिया अधिकार ग्रहण करती है।

मर्द यूनियन

बिहार में किसी बड़े संस्थान में अपनी यूनियन के कार्यकर्ताओं से कई बार कह कर भी जब द्वार सभा आयोजित नहीं कराई जा सकी तो कारण पूछा गया। यूनियन के सेक्रेटरी

भी महामन्त्री बनवा दीजिये। आखिर ऐसा ही हुआ, राजेन्द्र जी ने तो अपना नाम पहले ही वापस ले लिया था और गोविन्द जी महामंत्री बनने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं हुए। बार-बार कहने पर भी भाग गये। ऐसी स्थिति में बड़े भाई ने कैलाशनाथ शर्मा को बड़ी मुश्किल से तैयार किया। बेचारे कैलाशनाथ तो रोने तक लगे। फिर भी उन्हें सर्वसम्मति से महामंत्री निर्वाचित करवा दिया। यद्यपि यह सब बहुत डरकर श्रीमान् ठेंगड़ी जी से बिना पूछे ही किया गया था, किन्तु मुझे जैसी उम्मीद थी, यह चुनाव सफल और लाभप्रद सिद्ध हुआ। संगठन में जान आ गई और वह गतिशील ही नहीं हो गया, वरन् सदस्यता सत्यापन की कसौटी पर पूर्वोत्तर रेलवे की दोनों पुरानी मान्यता प्राप्त यूनियनों को पछाड़ते हुए प्रथम स्थान भी प्राप्त किया।

अमलदार सिंह
अध्यक्ष
भारतीय रेलवे मजदूर संघ

"झगड़े की जड़ धन कोष"

यूनियन अर्थाभाव में जैसे पनप नहीं पाती वैसे ही यूनियन के पास अधिक पैसा हो जाना भी विकार उत्पन्न करता है। इसके लिए उनके अपने जिले मीरजापुर (उ० प्र०) की एक यूनियन का हवाला देते हुए बड़े भाई बताते थे—

एक यूनियन के पदाधिकारियों के चुनाव के समय बड़ा कड़ा संघर्ष होता था। मारपीट की नौबत तक आ जाती थी। संगठन का कोई भी नेता वहां चुनाव कराने की जिम्मेदारी लेने को जल्दी तैयार नहीं होता था। यह काम जब बड़े भाई को मिला तो उन्होंने पहले झगड़ों की जड़ पहचाननी चाही। ज्ञात हुआ कि यूनियन के कोष में कई हजार रुपये जमा हैं और उसके सदुपयोग-दुरुपयोग का अवसर अधिकारियों के हाथ में आ जाता है।

बड़े भाई ने सभी प्रत्याशियों को विश्वास में लिया और चुनाव के बाद रजिस्ट्रार को सूचना भेजने सम्बन्धी प्रपत्र पर पुराने मन्त्री के हस्ताक्षर करवा लिये (जो उत्तर प्रदेश में आवश्यक होता है) साथ ही बैंक से रुपया निकलवाने सम्बन्धी कई चैकों पर सम्बन्धित पदाधिकारियों से भी हस्ताक्षर करवा दिये। बड़े भाई का व्यक्तिगत प्रभाव भी कुछ ऐसा ही था।

चुनाव की तारीख तय हो गयी। तारीख के एक सप्ताह पहले विंध्याचल (मीरजापुर से ५ मील दूर) तीर्थ स्थल के पास बन विहार के लिए उपयुक्त स्थान "अष्टभुजा देवी" के मंदिर पर यूनियन के सभी साधारण सदस्यों को भोजनादि के लिए आमंत्रित किया। साथ ही अन्य प्रेमी और हितैषी स्वजनों को भी बुलाया गया। दिव्य आहार के साथ ही खेल-कूद और अन्य मनोरंजन के कार्यक्रम भी हुए।

चुनाव के दिन पिछले वर्ष के कार्यवृत्त के साथ आय-व्यय का हिसाब भी सुनाया गया। बैंक में कुल चार-पांच सौ रुपये शेष रह गये थे।

इसके बाद चुनाव के लिए प्रत्याशियों के नामों के प्रस्ताव मांगे गये। काफी देर तक एक भी पदाधिकारी के लिए जब नाम प्रस्तावित नहीं हुआ तो पुराने पदाधिकारियों को ही पुनः निर्वाचित कर लिया गया। कोई संघर्ष नहीं हुआ, यह देखकर सभी आश्चर्यचकित थे।

वीरेन्द्र भटनागर,
संगठन मंत्री,
भा० म० संघ दिल्ली प्रदेश

को प्रबन्धक मण्डल ने निकाल दिया था और कई वर्ष से वह बाहर था। अपने मंत्री की नौकरी न बचा पाने वाली यूनियन भी कोई यूनियन है, यह कहकर न कोई चन्दा देता था और न सभा में ही आने को तैयार था। कार्यकर्ताओं का मनोबल एकदम टूट चला था।

बड़े भाई ने बहुत आग्रह करके उन्हें द्वार सभा आयोजित करने को तैयार किया। लाउडस्पीकर का प्रबन्ध भी अच्छी प्रकार से करवाया गया। जैसे ही संस्थान की छुट्टी हुई कि बिना किसी भूमिका के बड़े भाई ने कहना प्रारंभ कर दिया कि अब तक आप लोगों ने बहुत सी यूनियनों के कार्यक्रम देखे होंगे। आज आपके सामने एक "मर्द यूनियन" की सभा होने जा रही है। इसी बात को पांच-सात मिनट तक बराबर दोहराते रहे ठीक उसी प्रकार जैसे असली खेल प्रारम्भ करने के पहले कुशल मदारी भूमिका बनाता है। "मर्द यूनियन" एक नया नाम सुनकर सबके मन में जिज्ञासा उत्पन्न हो गई और सैकड़ों मजदूर "मर्द यूनियन" क्या बला है, सुनने के लिए रुक गये।

उपयुक्त अवसर देखकर बड़े भाई ने अपनी बात रखी कि अपनी फौज के लिए जान पर खेल जाने वाला कमांडर मर्द कहलाता है। छोड़कर भाग जाने वाला या अपनी जान बचाने में फौज को कटवा देने वाला नहीं। सबने स्वीकार किया। जो नेता अपनी नौकरी बचाने, अपनी सुख-सुविधा बचाने के लिए मजदूर हितों की बलि चढ़ा दे, खुद मैदान से दूर खड़ा रहकर मजदूरों की जान और नौकरी खतरे में डाले वही नेता मर्द नेता और वही यूनियन मर्द यूनियन नहीं कहला सकती।

अपनी यूनियन के द्वारा चलाए गये आंदोलन का उल्लेख करते हुए तथा उसके परिणामस्वरूप मजदूरों को हुए लाभ की याद दिलाते हुए सबकी स्वीकृति बड़े भाई ने ले ली। इस संघर्ष में मंत्री के निष्कासन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मजदूरों के हितों के लिए अपनी नौकरी को दांव पर लगा देने वाले नेता और यूनियन को, मर्द नहीं तो और क्या कहा जाएगा? सबको उपलब्धियां स्मरण हो आई और अपने मंत्री के साहस, त्याग, लगन तथा कष्टों की भी याद आ गई।

अब बड़े भाई ने मर्म स्थल पर प्रहार करते हुए कहा कि ऐसी मर्द यूनियन और मर्द नेता के साथ आप लोगों का व्यवहार कैसा रहा? अपनी रोटी में से एक-एक ग्रास भी यदि निकाल कर देते रहते तो उसका परिवार ससम्मान जीवित रहता और प्रबन्धक मण्डल से लोहा लेता रहता।

न यूनियन को चन्दा और न नेता को सम्मान यह तो विश्वासघात है। यह सुनकर सबने हाथ उठाकर भरपूर सहायता करने की प्रतिज्ञा की। एक वर्ष में ही यूनियन की काया पलट गई। धन व सम्मान से युक्त वह मर्द यूनियन चमक उठी। अर्थात् निष्कासन के बाद फैक्ट्री का द्वार पकड़े रहने वाला मंत्री या कार्यकर्ता सफल रहता है। श्रमिकों के पौरुष और त्याग का आह्वान करते रहने वाली यूनियन सफल होती है।

में आकर मेरे सामने खड़े हो गये। साथ में एक बैग भी लाये थे। ३०,००० रुपये के नोटों का बण्डल बांधकर मैंने तैयार रखा था उसे उनको देकर मैंने अपना बोझ हल्का किया। बड़े भाई स्कूटर पर सवार होकर चले गये।

रात को काफी देर बाद मैं और शरद देवधर उनके आवास पर पहुंचे तब तक और भी पैसे इक्ट्ठा हो गये थे। उनका हिसाब लगाना था। बड़े भाई सहित सब लोग सो चुके थे। मैं और शरद सोच में पड़ गये क्या इस वक्त बत्ती जलाकर हिसाब के लिए बैठना ठीक होगा? दिन भर की थकान के बाद बड़े भाई सो गये हैं, उनकी नींद में बाधा उत्पन्न करना उचित नहीं होगा। लेकिन बड़े भाई सोये हुये नहीं थे। वे हमारी समस्या सुनकर कहने लगे, "बत्ती जलाकर आप अपना काम कर सकते हैं, मेरी चिन्ता मत करिये, जितनी देर बैठना चाहते है' बैठ जाइये। उनके कहने पर बत्ती जलाकर हम लोग हिसाब जोड़ने बैठ गये। इतने में बड़े भाई उठकर अन्दर चले गये। अलमारी खोलने की आवाज आयी और देखा कि बड़े भाई को सवेरे जो नोटों के बण्डल दिये थे, उन्हें लौटाते हुए कह रहे हैं, "ये रहे आपके रुपये, सम्भालिये इन्हें"। रुपयों के बंडल मेरे हाथ में देकर जैसे आये थे वैसे ही अपने बिस्तर पर जाकर लेट गये। मैं और शरद जी देखते ही रह गये। सोचते ही रह गये कि किसके रुपये हैं और कौन हमें लौटा रहा है। संगठन के सर्वोच्च स्थान पर पहुंचकर भी रुपये पैसों के बारे में जो अलिप्तता बड़े भाई जी ने दिखाई उसका एक अनोखा अनुभव लेकर हम लोग धन्य हो गये।

स्मरणमात्र से आत्मबल

अप्रैल १९८१ की घटना : वाराणसी के डीजल लोकोमोटिव कारखाने के पास भुलनपुर नाम का स्टेशन है। उस स्टेशन से मैं अपने बच्चों के साथ सवारी गाड़ी से इलाहाबाद जा रहा था। शुरू में गाड़ी में भीड़ नहीं थी। तीन-चार स्टेशनों के बाद अच्छी खासी गाड़ी में भीड़ हो गयी। उनमें से अधिकतर स्कूल कालेज, तथा कार्यालय में जाने वाले नौजवान लड़के थे। वे स्थान-स्थान पर गाड़ी को रोक कर उस पर चढ़ने-उतरने तथा अन्य यात्रियों को परेशान करने लगे। यह उनका रोज का ही काम था। कोई उनको रोक नहीं सकता था। सभी भयभीत और आतंकित थे। वे महिलाओं से भी छेड़छाड़ करने लगे। धीरे-धीरे मेरे बच्चों की ओर भी इशारे आदि होने लगे। मैं थोड़ी देर सोचता रहा। अन्य यात्री जो भयभीत थे, मुझे भी चुपचाप बैठे रहने की सलाह देते रहे।

अचानक मुझे बड़े भाई का स्मरण हुआ। बड़े भाई उस इलाके में संघ के प्रचारक रह चुके थे। उनके स्मरण मात्र से मुझे आत्मबल प्राप्त हुआ। परिस्थिति से निपटने की प्रेरणा मिल गई।

मेरे पास बैठे हुए जवान लड़के से यों ही बातचीत शुरू की। बातचीत के दौर में मैंने उससे पूछा, "यह बताइये कि क्या आप बड़े भाई रामनरेश सिंह को जानते हैं?" उत्तर में उस लड़के ने कहा जी हां, जानता हूं, हमारे चाचा जी संघ के स्वयंसेवक हैं तथा 'बड़े भाई'

अनोखा अनुभव

सन् १९८० की बात है । लखनऊ में भारतीय रेलवे मजदूर संघ का अधिवेशन होने जा रहा था । अधिवेशन की तैयारी के लिए हम लोग ७-८ दिन पहले से ही लखनऊ पहुंचकर बड़े भाई के आवास पर टिके थे । उन दिनों बड़े भाई उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य थे । हम लोग दिन भर अधिवेशन की तैयारी में बिताकर रात को सोने के लिये वहां पहुंचते थे । बड़े भाई रोज तैयारी के बारे में जानकारी लेते तथा आवश्यक सूचनाएं वगैरह भी देते थे ।

अधिवेशन शुरू होने की पूर्व रात्रि हम लोगों को बिठाकर बड़े भाई ने सारी आवश्यक जानकारी ले ली तथा अन्त में पूछा कि "और कुछ पूछना, बताना हो तो बोलो" इस पर मैंने कहा "मेरी एक छोटी-सी समस्या है, सवेरे से प्रतिनिधियों का आना तथा कार्यालय में प्रतिनिधि शुल्क चन्दा आदि के रूप में पैसे जमा होना शुरू हो जायेगा । ग्यारह—साढ़े ग्यारह बजे तक अच्छी-खासी रकम जमा हो जायेगी । उसे कार्यालय में रखना उचित नहीं होगा, क्योंकि कार्यालय एक छोटे से पण्डाल में है । रकम सुरक्षित स्थान पर भेजने की कोई व्यवस्था हो जायेगी तो ठीक रहेगा ।" इस पर बड़े भाई ने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा कि "आप बेफिक्र रहिये, पैसे सुरक्षित स्थान पर भेजने की व्यवस्था हो जायेगी ।" मैं निश्चित होकर सोने के लिये चला गया । दूसरे दिन अधिवेशन शुरू हो गया और अपेक्षानुसार ग्यारह बजे तक ३०-३५ हजार रुपये जमा हो गये । मैं और मेरे साथी इसमें इतने व्यस्त थे कि सोचने की फुरसत ही नहीं मिली । रात को बड़े भाई से मैंने कुछ कहा था, मैं यह भी भूल गया था ।

उद्घाटन का कार्यक्रम समाप्त होने के बाद अतिथियों को विदा करते ही बड़े भाई कार्यालय में आकर मेरे सामने खड़े हो गये । उन्होंने कहा "श्री निवास जी, रुपये तैयार रखिये, मैं अभी आता हूं ।" मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही, कि मैं भूल गया था । लेकिन बड़े भाई नहीं भूले थे । १५ मिनट के बाद एक कार्यकर्ता के स्कूटर पर बैठकर बड़े भाई फिर कार्यालय

बन्देमातरम् नारा नहीं धर्म है...

२६ जनवरी, १९८२ की बात है। भारतीय जूट मजदूर संघ का द्विवार्षिक सम्मेलन पश्चिम बंगाल के २४ परगना जिला अन्तर्गत बिड़लापुरा नामक स्थान पर हो रहा था। सम्मेलन मे कुछ कार्यकर्ता संगठन के विषय में अपने-अपने सुझाव दे रहे थे। मैं और बड़े भाई उन विचारों को सुन रहे थे। विषय था किस विधि-विधान से संगठन का विस्तार हो सकेगा।

तब ही अपने एक बहुत पुराने और मंजे हुए मुस्लिम कार्यकर्ता आये। उन्होंने अपना सुझाव देते हुए कहा कि हमारे संगठन को मुस्लिम सम्प्रदाय शंका की दृष्टि से देखता है। दूसरे संगठन भी यही प्रचार करते हैं कि यह संगठन मुस्लिम विरोधी है। मुझसे भी लोग पूछते हैं कि तुम मुसलमान होकर कैसे इस संगठन में आ गये। इसलिए हमें संगठन के विस्तार में कुछ कठिनाई होती है क्योंकि एक विशेष सम्प्रदाय इसमें डर और भय से आना नहीं चाहता। मैंने काफी विचार किया है तथा जानकारियाँ भी संकलित की हैं। मुझे लगता है कि हम लोग बार-बार बन्देमातरम् का जो नारा देते हैं इसी से दूसरे सम्प्रदाय के लोग डरते हैं। इसलिए हमें इस नारे पर पुन: विचार करना चाहिये।

उस कार्यकर्ता के ऐसा बोलते ही सम्मेलन में खलबली मच गयी। कई कार्यकर्ता विरोध के लिए खड़े हो गये। बड़े भाई तुरन्त उठे और उन्होंने सीधे एवं स्पष्ट स्वर में सबको शान्त करते हुए कहा कि, "बन्देमातरम् हमारा नारा नहीं, धर्म है। इसके साथ हम समझौता नहीं कर सकते। चाहे हमारा संगठन बढ़े या न बढ़े। इस पर विचार करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। इस पर यदि किसी के मन में थोड़ी सी शंका है तो अभी भारतीय मजदूर संघ छोड़कर चला जाए। ऐसे लोगों के लिए बी० एम० एस० में कोई स्थान नहीं हैं।" बड़े भाई की यह बात सुनकर लोगों में स्थिरता आ गई।

हमारे घर पर आ चुके हैं। यही प्रश्न मैंने और तीन-चार लड़कों से पूछा। सबने जो कुछ कहा उससे यह पता चला कि बड़े भाई उस इलाके के एक—एक गांव के लोगों को जानते थे और उन्होंने अपने आदर्श व्यवहार से अपने लिये तथा संघ स्वयंसेवकों के लिए एक आदर का स्थान बनाया था। अब वे सब लड़के मेरे बारे में पूछने लगे। उत्तर में मैंने इतना ही कहा कि "मैं भी संघ का स्वयंसेवक 'बड़े भाई' का अनुयायी हूं और आजकल भारतीय मजदूर संघ का कार्यकर्ता हूं।" इतना कहने मात्र से सारा वातावरण बदल गया। भय और आतंक का वातावरण प्रेम और आदर के वातावरण में बदल गया। परेशान करना तो दूर अब सब लड़के मेरी मदद करने और मेरा मार्गदर्शन करने के लिये आगे आ गये। उनके पहले के व्यवहार से जो तकलीफ हुई उसके लिये क्षमा याचना करने लगे।

श्री निवास जोशी
कोषाध्यक्ष, भारतीय रेलवे म० संघ०

मजदूर संघ में तुम्हारे कई लाख भाई हैं

२२ नवम्बर, १९८२ की बात है। मैं, अपने जीवन में पहली बार भारतीय मजदूर संघ के कार्यक्रम में बम्बई गई थी। मेरा किसी से परिचय नहीं था। मैं बड़े भाई या अन्य किसी भी अधिकारी को नहीं पहचानती थी। वहां पहली बैठक के बाद मैं एक तरफ चुपचाप बैठी थी कि बड़े भाई धीरे से आये और मुझसे मेरा नाम, स्थान तथा कार्य व्यवसाय आदि परिचय पूछने लगे। फिर उन्होंने अपना परिचय भी बहुत ही सहज ढंग से दिया। इधर-उधर की बातें इस प्रकार करने लगे जैसे वे मेरे बहुत पुराने परिचित हैं। लज्जा एवं संकोच में पहले तो मैं केवल हां हूं ही करती रही, पर उन्होंने बातों ही बातों में मेरा हौसला बढ़ाया और मैं उनसे खुलकर बातें करने लगी।

मैंने पूछा, "बड़े भाई, ये यूनियन वगैरह तो मैं जानती नहीं, भला मैं यह काम कैसे कर सकूंगी!" बड़े भाई ने बड़े स्नेह से कहा, "बहन दुनिया में कोई भी काम कोई भी व्यक्ति मां के पेट से सीखकर नहीं आता है। लगन और साहस उसे मुश्किल से मुश्किल काम सिखा देते हैं। तुम केवल लगन और साहस से आगे बढ़ो। तुम निश्चय ही अच्छे ढंग से यह कार्य कर लोगी। मजदूर संघ में तुम्हारे कई लाख भाई हैं और सभी तुम्हारे साथ हैं। फिर तुम्हें चिन्ता किस बात की?" उन्होंने इतना बड़ा रहस्य इतने सहज एवं विनम्र भाव से कहा कि मुझे लगा कोई अपना बड़ा भाई अपनी छोटी बहन को स्नेह से दुनियादारी की बातें बता रहा हो। मुझे लगा कि वे मेरे अपने सगे बड़े भाई हैं।

इस बात की पुष्टि तब और हुई जब १९८३ में मेरी माँ का स्वर्गवास हुआ था। मां की मृत्यु के बाद मैं अपने को एक दम अकेली महसूस करने लगी थी। मेरा मन खिन्न रहता था। तभी एक दिन मुझे बड़े भाई के करकमलों द्वारा लिखा एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें मां की मृत्यु के लिए दुःख एवं स्वयं न आ सकने का खेद व्यक्त किया गया था। पत्र में मुझे साहस एवं धैर्य पूर्वक जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गयी थी। पत्र इस प्रकार था :

बड़े भाई ने वहां तो अपना गुस्सा जाहिर नहीं किया, पर सम्मेलन की समाप्ति के बाद जब हम लौट रहे थे तो उन्होंने मुझसे बार-बार कहा कि एसे लोगों को जिन्हें बन्दे-मातरम् नारा दिखाई देता है, एकदम साथ रखने की आवश्यकता नहीं है। आप तुरन्त ही उचित कार्यवाही करें। राष्ट्रगान बन्देमातरम् के बारे में इतना सुनने से बड़े भाई सारे रास्ते एकदम अशान्त दिखे। उस समय दिखाई दिया कि बड़े भाई के मस्तिष्क में बन्दे-मातरम् के प्रति अपार श्रद्धा एवं भावना है बन्देमातरम् के साथ उनकी भावनाएं मात्र राष्ट्र-गीत के रूप में नहीं बल्कि मां की पावन स्तुति के रूप में जुड़ी थीं।

—बैजनाथ राय, मंत्री
भारतीय जूट मजदूर संघ

गुणों की खान

बात १९७०-७१ की है। मैंने प्रदेश (उत्तर प्रदेश) का दौरा शुरू नहीं किया था, किन्तु बड़े भाई की इच्छा थी कि मैं दौरा प्रारम्भ करूं। एक दिन बड़े भाई ने कार्यालय पर अपनी सहज बातचीत में कहा "शुकुल" इलाहाबाद चल रहे हो, तुम्हारे डिफेन्स का प्रोग्राम है। मैं हंस कर टाल गया। किन्तु कार्यालय से चलते समय बड़े भाई जी ने फिर कहा "शुकुल" तुमसे किसी विषय पर बात करनी थी, यदि तुम कल प्रातः स्टेशन पर मिल जाओ तो दो-चार मिनट में बात कर लेंगे।

दूसरे दिन प्रातः शाखा समाप्ति के पश्चात शाखा वेष में ही दो-चार स्वयंसेवकों के साथ, मैं बड़े भाई से मिलने स्टेशन पहुंचा। उन्होंने अपनी डायरी निकाली और कहा कि प्लेटफार्म पर बड़ा शोर है, आओ डिब्बे में बैठकर विचार-विमर्श करते हैं ! उनकी बात मानकर मैं डिब्बे में चढ़ गया और बड़े भाई डायरी में नोट बिन्दुओं पर बातें करने लगे। इसी बीच गाड़ी चल दी और मैं उठ खड़ा हुआ। बड़े भाई जी ने प्यार से कहा, शुकुल कहां जाते हो, तुम जवान हो अभी मिनटों में कूद कर उतर जाओगे। गाड़ी भी धीमे चल रही है। मैं उनकी बातों का जवाब देता कि गाड़ी प्लेटफार्म पार कर चुकी थी। इस पर बड़े भाई जी ने कहा, "शुकुल घबराओ नहीं, अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकेगी, वहां से तुम घर चले जाना"। बातचीत में वह स्टेशन भी पार हो गया और बड़े भाई जी ने मुस्कराते हुये कहा, "शुकुल अब घर की चिन्ता छोड़ो और इलाहाबाद चलो"। मरता क्या न करता, उनकी बात मान इलाहाबाद पहुंचा। जहां उन्होंने अपना धोती-कुर्ता दिया, भाषण करवाया और अन्त में कार्यकर्ताओं की कमी, कार्य की महत्ता और आवश्यकता बतलाते हुये दौरा करने का आग्रह किया।

उनके कष्टमय सादा जीवन, कार्यकर्ता निर्माण की उनकी उत्कृष्ट इच्छा और असीम प्रेम का स्मरण कर मुझे आज भी रोमांच हो आता है।

कलकत्ता
दिनांक ८.१.८३

प्रिय श्रीमती मीनाक्षी जी,
सप्रेम नमस्कार।

जूट मजदूरों के अधिवेशन हेतु आया था, आज वापस जा रहा हूं। प्रिय राम जी ज्ञात हुआ कि आपकी माता जी का स्वर्गवास हो जाने के कारण आप अलीगढ़ गयी हुयी हैं। ईश्वर मृतात्मा को परमगति दे तथा शांति प्रदान करे। आपके कष्टों में हम सभी सम्मिलित हैं। भगवान का ही सब कुछ है, जब चाहे, जिसे वापस बुला ले। आपको धैर्य एवं दुख सहन करने की शक्ति भगवान देगा ही।

शेष शुभ है। श्रीमान् सक्सेना जी (अपने पतिदेव जी) को मेरा नमस्कार अवश्य कहें।

आपका
(रामनरेश सिंह)

मैं पत्र पाकर अवाक् रह गई क्योंकि मैंने तो उन्हें कुछ भी नहीं लिखा था। शायद किसी के द्वारा उन्हें मालूम हुआ होगा। आज भी वह पत्र मेरे पास उनके "स्मृति चिन्ह" के रूप में सुरक्षित है। इतने व्यस्त जीवन में सभी को केवल अपने परिवार का सदस्य भर ही न मानना बल्कि उनके दुख सुख की अनुभूति करना किसी दैवी पुरुष के लिए ही संभव हो सकता है।

उनकी दोनों बातें आज भी मेरे हृदय पर अंकित हैं और बड़े भाई मेरे प्रेरणा स्रोत के रूप में आज भी मौजूद हैं।

"हर अन्याय विरोधी वह था, एक वीर के रूप में।
हर मानव का संगी भी था, एक देव के रूप में।"

श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना
पश्चिमी (बंगाल)

मंत्रालयों को मेरे पैड पर जवाब भेज दो। उसकी एक प्रति पत्र भेजने वाले को भी दे दो। हां, यह ख्याल रहे कि एक भी पत्र बिना उत्तर के न रहने पाये।"

यह अन्तिम वाक्य, बड़े भाई के साधारण से साधारण व्यक्ति या कार्यकर्ता के प्रति उत्तरदायित्व और कर्त्तव्य का बोध कराता है कि व्यस्तता चाहे जितनी भी क्यों न हो किन्तु प्राप्त पत्र का समुचित उत्तर अवश्य ही मिलना चाहिये।

भविष्यद्रष्टा मनोवैज्ञानिक

कार्यकर्ता का स्तर और उसकी बुद्धि किस दिशा की ओर जा रही है इसका बड़े भाई सतत् चिन्तन किया करते थे। इसका आभास मुझे उस समय मिला जब मैंने एक घनिष्ठ परिचित मित्र के एक मुकदमे में एक माध्यम का इस्तेमाल करके 'स्टे आर्डर' प्राप्त कर लिया।

हम लोगों ने अपनी सफलता की बात जब बड़े भाई को बताया तो वह भी ऊपरी तौर पर बड़े प्रसन्न हुए और चाय मंगाया। किन्तु जब मैं कार्यालय से उठकर चला तो उन्होंने मुझे फिर बुलाया। बोले "शुकुल ! मैं जानता हूं कि जो कुछ तुमने किया है अपने और अपने स्वार्थ के लिए नहीं है। किन्तु फिर भी अनुचित साधन अनुचित ही होता है। एक बार इस माध्यम से सफलता मिलने पर तुम लोभ संवरण नहीं कर पाओगे और इस साधन को फिर दोहराओगे। कालान्तर में एक स्थिति ऐसी आयेगी जब अपने लिये भी करने में नहीं हिचकिचाओगे। उस समय तुम्हारा स्थान कहां होगा तुम्ही सोचो !"

यद्यपि मैं उन्हें, पुनः न दोहराने का आश्वासन देकर कार्यालय से नीचे उतर आया और निश्चिंत हो गया। किन्तु शायद ऐसा लगता है कि उनकी शान्ति भंग हो गई थी। क्योंकि इसके कुछ ही दिन बाद माननीय अशोक जी ने एकान्त में मिलकर पुनः उस प्रकार के काम न करने का आदेश दिया। शायद उन्होंने यह सोचा होगा कि मैं उनकी बात टाल जाऊंगा और अशोक जी की बात टालना कुछ कठिन होगा। यह बड़े भाई की चतुर्मुखी योजना का एक नमूना मात्र है।

दूसरी घटना बीमारी के पूर्व की है। वह मुझसे पुनः कार्य शुरू करने का आग्रह करते थे किन्तु मैं टाल जाता था। एक बार श्री सुखदेव जी के सामने मजदूर संघ समाचार का कुछ काम सौंप कर वह चिट्ठियां लिखने लगे ! इसी बीच मैं उठकर कार्यालय के नीचे आ गया। बड़े भाई कब मेरे पीछे-पीछे आ गये मुझे पता भी नहीं चला।

इशारे से मुझे एक स्थान पर चाय पीने के लिये ले गये। काफी बातें होने के पश्चात उन्होंने कहा, "शुकुल, वैसे जब मैं आता हूं तो कार्यालय भरा पूरा दिखता है किन्तु मैं यह सोचता हूं कि यह भीड़ टिकाऊ नहीं है। इमरजेन्सी में ये लोग साथ छोड़ जायेंगे। अतएव तुम चाहे काम करो, चाहे न करो, किन्तु कार्यालय पर नित्य आया करो,। इससे पुराने लोग जुड़ेंगे और नये लोग संस्कारित होंगे।"

यह घटना बड़े भाई की दूरदर्शिता का अनुपम उदाहरण है। इससे यह स्पष्ट झलकता है कि संस्कारक्षम कार्य खड़ा करने की उनके अन्दर कितनी व्यग्रता थी।

—रमाकान्त शुक्ल (कानपुर)

कुशल पारखी

भारतीय मजदूर संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता और मंत्री श्री रामप्रकाश जी प्रतिदिन मेरे घर आते थे। एक दिन उन्होंने कहा, "शुकुल ! मुझे बड़े भाई जी कुलियों का चन्दा वसूल करने के लिये स्टेशन भेजते हैं। यदि तुम स्टेशन पर २-४ दिन खड़े हो जाओ और चन्दा कार्यालय पहुंचा दो, तो मेरी दौड़ बच जाय"। मैं अनजाने में ही "हां" कर बैठा और स्टेशन पर एक-एक घंटे कई दिन तक खड़ा रहा। जब किसी ने मुझे चन्दा नहीं दिया तो मैं बताने के लिए सायंकाल कार्यालय पहुंचा और चन्दा न मिल पाने की बात बता दी। इस पर बड़े भाई हंसते हुए बोले "वे लोग तुम्हें पहचान नहीं पाये सभी लोग चन्दा यहां पर आकर दे गये। खैर, कोई बात नहीं। तुम कल अपने आई. जी. एस. के दो-चार स्वयंसेवकों को इकट्ठा करो और मेरी बात करा दो"।

मैंने वैसा ही किया। बड़े भाई जी ने आनन-फानन में यूनियन बनाने की कार्यवाही पूरी करके मुझे बिना बताये मंत्री पद हेतु मेरा नाम डाल दिया। जब इसकी सूचना आई. जी. एस. के कमान्डिंग आफिसर को मिली तो उसने मुझसे सी. पी. आर. ओ. ६३/५६ का संदर्भ देते हुये स्पष्टीकरण मांगा। मैंने बड़े भाई को वह पत्र दिखाया तो उन्होंने सी. पी. आर. ओ. दिखाने को कहा। जब मैंने सी. पी. आर. ओ. दिखाया तो वे बोले, "शुकुल, तुम जानते हो अंग्रेजी अपनी राष्ट्रभाषा नहीं है, इसको पढ़ना तो दूर हाथ लगाना भी पाप है। अतएव अच्छा रहेगा यदि तुम इसका हिन्दी अनुवाद करके मुझे दिखाओ"। मैंने उसका हिन्दी अनुवाद किया और दिखाया तो उन्होंने आदेशात्मक स्वर में कहा कि तुम एम. ए. पास हो, हिन्दी में तुम जवाब नहीं लिख सकते ? खैर, जवाब का काम तो हो गया किन्तु इसके पश्चात बड़े भाई मुझसे माननीय ठेंगड़ी जी, गोखले जी और श्री मनहर मेहता के अनेक लेखों, भाषणों और पुस्तक-पुस्तिकाओं का हिन्दीकरण अनवरत रूप से कराते रहे।

जितने पत्र उतने उत्तर

उस समय जनता सरकार बने थोड़ा समय ही हुआ था। बड़े भाई असम के दौरे से लौटे थे। साथ में दो अनान्नास लाये थे। सभी कार्यकर्ता जब अनान्नास का आनन्द ले चुके तो कुछ लोग उनका झोला टटोलने लगे, इस पर बड़े भाई जी ने बड़े प्यार से कहा कि उसमें कुछ नहीं है। झोले के भीतर से एक छोटा सा झोला निकालते हुए कहा कि इसमें जो चीज है वह केवल शुकुल के लिए है और किसी के लिए नहीं। बस सभी कार्यकर्ता उसको छीनने लगे।

मेरे हाथ में झोला आने पर मैंने देखा कि उसके भीतर चिट्ठियों के बन्डलों के अलावा कुछ नहीं था। थोड़ी देर बाद जब मैं उसे वापस करने लगा तो वह बोले "शुकुल ! यह तुम्हारे ही लिये है। जब से जनता सरकार बनी है लोग मुझें ही मिनिस्टर समझने लगे हैं और काम के लिए अनेकों चिट्ठियां लिखते हैं। तुम इन सबके "मैटर" पढ़ लो और संबंधित

कार्यक्रम नहीं छोड़ सकता

पिछले १९८४ में ही बड़े भाई एक बार असम से लौटकर दोपहर को कलकत्ता आये और बोले, "मुझे आज ही किसी गाड़ी से कोटा (राजस्थान) जाना होगा अन्यथा मैं वहां के कार्यक्रम में नहीं पहुंच सकूंगा।" हम लोगों ने बड़ी दौड़-भाग की, पर किसी भी गाड़ी में आरक्षण नहीं दिला सके। सभी निराश होकर दफ्तर लौटे। बड़े भाई ने पूछा, "क्या बात है, क्या आरक्षण नहीं हुआ?" हम लोगों ने कहा, "नहीं आप कल जायें तो कल का आरक्षण हो जायेगा।" बड़े भाई ने बड़े ही सहज भाव से कहा, "नहीं भाई, इसमें चिन्ता या निराशा की क्या बात है। मुझे आज ही गाड़ी पर चढ़ाइये। मैं बिना आरक्षण के ही जाऊंगा। आरक्षण के लिए मैं कार्यक्रम नहीं छोड़ सकता।" हम लोगों के लाख न चाहने पर भी बड़े भाई किसी तरह कालका मेल के द्वितीय श्रेणी की एक बोगी में चढ़ गये और हंसते हुए अपनी कोटा की यात्रा शुरू की। ऐसा लगा जैसे वे बड़े आराम से प्रथम श्रेणी में जा रहे हैं।

—रास बिहारी मैत्र (कलकत्ता)

संघर्ष स्वयं के बल पर

अक्तूबर १९८४ इन्दौर अभ्यास वर्ग के कार्यक्रम पर हम लोग इंदौर गये हुए थे। कोयला खदान के हम सभी कार्यकर्ता बैठे बातचीत कर रहे थे। उसी समय बड़े भाई घूमते हुए आ गये। बोले, क्यों तुम लोगों की हड़ताल का क्या हुआ? हम लोगों ने कहा दूसरे संगठन के लोग अभी राजी नहीं हैं। बड़े भाई ने झट हंसते हुए कहा, अरे भाई हड़ताल दूसरे के भरोसे नहीं होती है। हड़ताल तो संघर्ष है और संघर्ष हर मनुष्य अपनी शक्ति के सहारे करता है। आप लोगों को ही हड़ताल करनी चाहिए थी। आपके रास्ते ठीक हैं तो बाद में सभी आ जाते पर राह तो आपको ही दिखानी चाहिए। बड़े भाई ने इतने सहज भाव में जो प्रेरणादायक बात कहीं उससे हम लोग अपने आप पर बहुत लज्जित हुए और अपनी भूल मन ही मन स्वीकार कर ली।

—गोरी सारीया (कलकत्ता)

पितृतुल्य व्यवहार

सन् १९८४ के सितम्बर मास की बात है। उस समय मेघना जूट मिल बन्द थी। हम लोगों को मालूम हुआ कि बड़े भाई का कार्यक्रम इच्छापुर में है। इसलिये दौड़ धूप कर कुछ समय के लिए मेघना में कार्यक्रम रखा। मैं जब टैक्सी लेकर श्याम नगर स्टेशन पर गया तो बड़े भाई लोकल गाड़ी से उतरे। बड़े भाई के साथ कुछ अन्य लोग भी बैठे। गाड़ी में सीट न रहने के कारण हमने सोचा था कि रिक्शा से जाएं लेकिन बड़े भाई अपनी गोद में बैठाकर बोले, आओ ऐसे ही चलें। मुझे ऐसा लगा कि अपना पिता अथवा बड़ा भाई ही ऐसा कर सकता है। उस दिन से मैंने जाना कि सच में बड़े भाई सगे बड़े भाई की भांति ही थे।

—ब्रजनन्दन सिंह (२४ परगना)

अपना आदमी

सितम्बर, १९८४ में आखिरी बार बड़े भाई कलकत्ता आये थे। उन्हें कई जगह जाना था। साथ ही कई लोगों से मिलना भी था। इसलिए मैंने अपने एक मित्र की गाड़ी ली और मैं तथा बड़े भाई सारा दिन लोगों से मिलते रहे। सारा दिन घूमने के बाद संध्या समय हम लोग अपने प्रादेशिक कार्यालय में लौटे। गाड़ी वापस लौटानी थी इसलिए मैंने ड्राईवर को कहा, भाई अपनी गाड़ी ले जाओ। ड्राईवर जाने ही लगा था कि बड़े भाई ने हठात् उसे रोकते हुए कहा "जरा ठहरिये" ड्राईवर रुक गया। बड़े भाई अपनी जेब से १० रुपये का एक नोट निकाल कर उसके हाथों देते हुए बोले "भाई आप मेरे लिए सारे दिन परेशान हुए, आप कृपया यह १० रुपये ले लें"। ड्राईवर ने लेने से इंकार किया तो उसे अपने अंक में लेते हुए बड़े भाई ने बड़े प्यार से उसकी पाकेट में वह १० रूपये का नोट डाल दिया। ड्राईवर अवाक् उनका मुख देखता रहा। बड़े भाई दफ्तर में चले गये तो ड्राईवर बोला "इतना सरल और अपना आदमी मैंने आज तक नहीं देखा।"

—निर्मल दत्त (कलकत्ता)

तपस्वी भी, रसीले भी

एक बार गंगासागर स्नान के लिये बड़े भाई सपरिवार कलकत्ता आये। मेरे यहां ठहरे। गंगासागर से लौटने पर एक दिन सुबह मेरी लड़की से उन्होंने पूछा, "मुन्नी आज क्या नाश्ता बनेगा" ? मेरी लड़की ने कहा, "घुघनी", उन्होंने हंसते हुए कहा, "तब तो बेटी मिर्च जरा प्रेम से डालना, बिना तीता के घुघनी कैसी ?" हम सभी परिवार के लोग चकित रह गये कि बड़े भाई जितना तपस्वी जीवन व्यतीत करते हैं, परिवार में उतने ही नम्र और रसीले हैं।

—रामआसरे लाल श्रीवास्तव (घुसुड़ी, हावड़ा)

भोजन पेट के लिए, स्वाद के लिए नहीं

एक बार भारतीय मजदूर संघ कार्यालय में कार्य करते-करते रात्रि देर हो गई। बड़े भाई को राष्ट्रीय स्वसेवक संघ कार्यालय विश्राम हेतु जाना था। मैं उन्हें लेकर चला। उनसे यह भी कहा कि ग्राप बाहर से ग्राये हैं, संघ कार्यालय पर सूचना हुई नहीं है, भोजन मिलना कठिन होगा, क्यों न ग्राप मेरे निवास पर पहले भोजन कर लें, बाद में मैं ग्रापको संघ कार्यालय छोड़ ग्राऊंगा। उन्होंने कहा, "संघ कार्यालय ही चलो, ग्रभी भोजन मिल जाएगा।" लेकिन जब हम लोग पहुंचे तो भोजन समाप्त हो चुका था। उन्होंने रसोइये से कहा कि चार पराठा नमक मिलाकर बनाग्रो, मुझे भी रोक लिया कि स्वादिष्ट भोजन होगा, खाकर जाना। पराठे बन गये। दो उन्होंने लिये, दो मुझे दिये।

मैं सोच रहा था कि बिना सब्जी या ग्रचार के इन्हें कैसे खाया जाए। तब तक प्रचारक महोदय ने पावभर दूध मंगवा दिया। उन्होने नमकीन पराठे को दूध में डाला ग्रौर खाने लगे। मुझे भी उसी प्रकार खाने को कहा। यह स्वाद मेरे लिये नया था ग्रौर ग्रच्छा भी नहीं लग रहा था। मुझसे खाया नहीं गया किन्तु बड़े भाई ने बड़े प्रेम से भोजन किया। मैंने पूछा, दूध के साथ नमकीन पराठे ग्रापको कैसे ग्रच्छे लगते हैं ? उन्होंने कहा कि बहुत स्वाद ग्राया। बड़े दिनों बाद इतना स्वादिष्ट भोजन मिला। उनका कहना था कि भोजन स्वाद के लिए नहीं, उदरपूर्ति के लिए करना चाहिए।

ऐसे थे बड़े भाई

बड़े भाई एक बार कानपुर स्थित भारतीय मजदूर संघ कार्यालय से शाम को लगभग ७ बजे दिल्ली जाने के लिए हावड़ा दिल्ली एक्सप्रेस पकड़ने के लिये चले। उनके पास एक बड़ा थैला था, उसी में उनका बिस्तर, शाल, कपड़े और फाईलें थी। मैं और मेरे एक मित्र उनका सामान उठाकर रिक्शा लेने के लिए रिक्शा स्टैन्ड तक आये।

मेरे मित्र ने स्टेशन तक के लिए दो रुपये में एक रिक्शा किया तथा बड़े भाई से उस पर बैठने के लिए कहा। बड़े भाई ने कहा ऐसा रिक्शा करो जिस पर एक सवारी पहले से ही बैठी हो। मेरे मित्र ने सहज भाव से कहा, बड़े भाई आप अकेले ही रिक्शे पर जाइये, केवल दो रुपये ही तो देने हैं। बड़े भाई ने सात्विक क्रोध में कहा, "सुना नहीं क्या ? ऐसा रिक्शा करो जिसमें एक सवारी पहले से ही बैठी हो, एक रुपया ही किराया दूंगा, दो रुपया पूरे रिक्शे का क्यों दूं।"

आखिरकार हमें वहां खड़े होकर लगभग १५ मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ी। एक रिक्शा आया जिस पर एक सवारी बैठी थी तथा एक बोरे में कोई सामान लदा था, उस पर पैर रखकर बैठना भी मुश्किल था। मैंने भी बड़े भाई को मना किया कि थोड़ा इन्तजार और कर लिया जाय, जब कोई रिक्शा बिना सामान के आ जाये तो उस पर बैठकर जायें लेकिन बड़े भाई उसी रिक्शे पर पैर सिकोड़कर बड़े मुश्किल में बैठ गये और एक रुपये में स्टेशन गये। सार्वजनिक कोष की मितव्ययिता कैसे की जाती है, इसका यह ज्वलन्त उदाहरण है।

गिरीश अवस्थी, महामंत्री,
भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ (कानपुर)

कर्मचारी संघ के तत्कालीन महामंत्री श्री लालचन्द महतो के प्रयास से बड़े भाई का तीन दिनों का प्रवास कार्यक्रम इस क्षेत्र में तय हुआ था। वे उन दिनों भारतीय मजदूर संघ के मंत्री थे। घटना १९७० की है। रात की गाड़ी से पटना से चलकर हम लोगों को बेरमो पहुंचना था। उन दिनों रांची, धनबाद और बोकारो के लिए एक ही गाड़ी थी, रांची एक्सप्रेस। किसी प्रकार द्वितीय श्रेणी में एक शायिका मिली थी। मैंने साग्रह उनसे कहा, आप आराम करें। मैं दोनों शायिकाओं के बीच में सो लूंगा। पर ऐसा न हो पाया। मेरा आतिथ्यभाव उनके आदेश के सामने झुक गया और हम दोनों एक ही बर्थ पर आड़े तिरछे सो-बैठकर बेरमो पहुंच गये।

स्टेशन पर कतिपय कार्यकर्ता झण्डे, बैनर लेकर आये थे। सामान्य औपचारिकता के बाद उन्होंने लालचन्द जी से पुछा, "कार्यक्रम कैसे तय किया है?" अब लालचन्द जी क्या बताए? बड़ी मुश्किल से बताया कि तीन कार्यकर्ताओं की बैठक अमुक स्थान में होगी। उन्होंने पूछा, "गेट मीटिंग क्यों नहीं रखी है?" वे मौन हो गये बड़े भाई ने एक तरफा निर्णय दया कि खेल के मैदान में चार बजे से आम सभा करो।

जैसे-तैसे माइक पर प्रचार किया गया। झंडा-बैनर की व्यवस्था की गई। नियत समय पर मैदान में दो कुर्सियों का मंच बनाया गया। तीनों एक साथ मैदान में पहुंच गये। वक्ता, नेता या श्रोता हम तीनों के अलावा कुछेक कार्यकर्ता ही थे। मैं धीरे से संकोचवश समीप की चाय की दुकान में चला गया। मेरे लिए यह जीवन का नया अनुभव था। पूरा का पूरा मैदान खाली। चाय की दुकान में चाय की प्याली और गप्प में मशगूल लोगों के लिए यह चर्चा का विषय बन रहा था। कई प्रकार के व्यंग्य और आलोचना मिश्रित उपहास सुनने में आ रहे थे। इतने में बड़े भाई के संकेत पर मैं पुन: मैदान नें आ गया। उन्होंने किंकर्तव्यविमूढ़ लालचन्द जी को अपना भाषण प्रारम्भ करने को कहा। लालचन्द जो कार्यक्रम की असफलता, यूनियन के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह, अपनी सार्वजनिक प्रतिष्ठा और फौलादी आदेश के भंवर में गोते लगा रहे थे। एक बार गंभीरता से देखा, उन्होंने कुर्सी पर अविचलित आसीन, दृढ़ स्थित प्रज्ञ पुरुष को, जिसके सामने निंदा स्तुति सब समान था।

फिर क्या था, लालचन्द जी का भाषण शुरू हुआ। परिचय, फिर अपने उद्देश्य और संगठन की विशेषता। कोई दस मिनट भाषण चला होगा कि कुछ कार्यकर्ता और मैदान में आ गये। फिर मुझे बोलने का निर्देश हुआ। सच कहूं मैं न तो वक्ता हूं और न इतना सामर्थ्य था कि सपाट मैदान की हरीतिमा को अपना मौन श्रोता मान बैठूं। सो चन्द मिनटों में ही अपना वक्तव्य समाप्त कर दिया। अब बारी आयी बड़े भाई की। वे अपनी सहज स्वाभाविक मुद्रा में खड़े हुए, लगता था सम्पूर्ण मैदान खचाखच भरा है और लोग उनको सुनने के लिए बेचैन हैं। उद्बोधक तालियों की गडगड़ाहट हो रही है। वे अपने गुरू गम्भीर स्वर में पन्द्रह मिनट बोले होंगे तब तक चालीस-पचास लोगों का एक झुंड मैदान में आकर इधर-उधर बैठ गया। भाषण की गति बढ़ती गयी। भारतीय जीवन दर्शन, श्रमिकों की समस्या और फिर कोयला मजदूरों की दयनीय स्थिति शब्दों में चित्रित होनी शुरू हो गयी। ओजस्वी भाषण का सम्मोहन की तरह ध्वनिविस्तारक यंत्र से प्रवाहित होने लगा। सौ, दो सौ फिर

लौह पुरुष

सादगी, मन, वचन एवं कर्म से त्यागी बड़े भाई भारतीय मजदूर संघ परिवार में ही नहीं सार्वजनिक जीवन में भी सर्वथा अनुकरणीय हैं। यदि हमें एक साथ समस्त मानवीय गुणों को देखना हो तो बड़े भाई के तथोनिष्ठ जीवन में झांक कर देख सकते हैं। जितना विशाल शरीर, उतना ही उदार हृदय। सादगी ऐसी कि सभी अपना मान बैठें। विचार इतने ऊंचे कि बड़े-बड़े नतमस्तक हो जाय। संगठन, समन्वय एवं सृजन की अपूर्व क्षमता। प्रदर्शन-आडम्बर एवं विशिष्टता से सर्वथा दूर उनका व्यक्तित्व अतिविशिष्ट था। दृढ़ता ऐसी कि निर्णय के सामने विपरीत परिस्थितियां स्वत: पराभूत हो जायें और समन्वय ऐसा कि सभी को निर्णय में अपना सहभाग सा लगे।

आज जब मैं उनका संस्मरण लिखने बैठा हूं, ऐसा लगता है बड़े भाई के साथ बैठकर उनके फौलादी व्यक्तित्व को निहार रहा हूं या ऊहापोह में पड़े कार्यकर्ताओं को उनकी ओजस्वी वाणी से प्रेरित करते देख रहा हूं।

लगभग १५ वर्ष बीत चुके हैं, फिर भी उस समय की घटना ज्यों की त्यों प्रेरणा दे रही है। कठिन परिस्थिति हो, निराशा के बादल घिरे हों या उपलब्धि का हर्षातिरेक हो, बड़े भाई की आप्त बातें मन को झकझोर देतीं थी उनका आचरण पथ प्रदर्शक बन जाता था और फिर चरैवेति-चरैवेति।

उन दिनों बिहार के कोयलांचल में भारतीय मजदूर संघ का कार्य शैशवावस्था में था। बिहार के विशाल काले हीरे के क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ से सम्बन्ध कोलियरी कर्मचारी संघ कार्यरत था। पर उसे अपेक्षित गति प्राप्त नहीं थी। इक्का-दुक्का कहीं-कहीं इकाईयाँ थी, तो शेष स्थानों में प्रयास जारी था। अधिकांश क्षेत्र अपनी पहुंच से परे था। कोलियरी

जब हृदय से जाओगे, सबल जानि हों तोहि

पंजाब भारतीय मजदूर संघ का अप्रैल १९८३ में मंडी गोबिन्दगढ़ में अधिवेशन था। बड़े भाई कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन हेतु इस अधिवेशन में पधारे थे। जिस स्थान पर उन्हें ठहराया गया था उस स्थान से सभा स्थल तक ले जाने और ले आने की जिम्मेवारी मुझे सौंपी गई थी। इस समय में मुझे उनके पास ठहरने का अधिक समय मिला। बातचीत में उन्हें यह मालूम हुआ कि मैं बीमार हूं तो मुझसे बीमारी के बारे में कई प्रश्न किये। मैंने कहा कि टांग के निचले हिस्से में दर्द है। मुझे सर्दियों में चलने में बहुत कठिनाई होती है। इस पर बड़े भाई जी ने उसी वक्त कमरे में बिठाकर सात-आठ योगासन सिखाये और कहा कि इनको हर रोज नियमित रूप से करते रहो, आपके कष्ट को दूर करने में ये सहायक होंगे।

करतार सिंह राठौर,
मंत्री,
भारतीय मजदूर संघ (पंजाब)

आन्तरिक शक्ति

घटना उस समय की है जब एक बार मेरे पिता जी श्री कैलाश नाथ शर्मा लखनऊ स्थित भारतीय मजदूर संघ कार्यालय पहुंचे। उन्होंने देखा, बड़े भैया लेटे हैं, उनकी तबीयत खराब है। वह पेचिस से पीड़ित थे। उस समय वे कार्यालय में अकेले थे। इतने बड़े लखनऊ में कही भी जा सकते थे। किन्तु कहीं नहीं गए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय भी नहीं गये। वह ध्यान रखते थे कि किसी की सहायता लेने से उस व्यक्ति को परेशानी न हो जाए, या फिर अपने मजदूर भाईयों के कार्यालय में ही उन्हें शान्ति मिलती थी, यह तो वहीं जानें किन्तु जब पिताजी वहां पहुंचे तो वार्तालाप के दौरान मालूम हुआ कि बड़े भाई बीमार हैं।

हजार ग्रौर देखते ही देखते कोयला मजदूरों से समस्त मैदान भर गया। स्थानीय नेता श्री महतो के चेहरे पर ग्रप्रत्याशित सफलता की ग्राभा झलकने लगी ग्रौर भाषण ग्रविराम गति से चलने लगा। श्रमिकों की दशा का सफल चित्रांकन मैंने वहां चतुर चितेरे की सफल तूलिका की तरह मैदान के कण-कण पर उभरते देखा था। मैदान का ग्रधिकांश भाग भर चुका था। मैं मैदान में इधर-उधर घूमकर मिश्रित प्रतिक्रियाग्रों का ग्रध्ययन कर रहा था। ग्रधिकांश स्वर प्रभावित ग्रौर ग्रभिभूत थे। उन्होंने पूर्व में ग्रपनी ही समस्याग्रों का इतना मार्मिक चित्रण कभी नहीं देखा था। कार्यक्रम तब तक चलता रहा जब तक मैदान में ग्रन्धकार नहीं छा गया। फिर मंच से घोषणा हुई कि ६ बजे रात्रि कार्यकर्ता बैठक होगी। इस बैठक में स्थनानीय शाखा का गठन किया जायेगा। मैंने बड़े भाई से कहा, न सदस्यता, न सम्पर्क, कमेटी कैसे बनेगी? मेरी बातों को लालचन्द जी भी मान रहे थे।

पर स्थिति पूर्णत: भिन्न रही। सैकड़ों लोग बैठक में ग्राये ग्रौर कमेटी का गठन तथा सदस्यता ग्रभियान का निर्णय किया गया। मुझे मन ही मन गर्व का ग्रनुभव हुग्रा ग्रौर मैं उनके व्यक्तित्व के प्रति गतमस्तक हो गया। नजदीक से देखा था उस व्यक्तित्व को जिसके ग्रडिग पग निष्ठापूर्वक जीवन पर्यन्त ध्येय की ग्रोर बढ़ते रहे।

ग्रयोध्या नाथ मिश्र "अनाम"
पटना (बिहार)

कार्यालय कार्यकर्ताओं का है, होटल या धर्मशाला नहीं

नई दिल्ली में अपने केन्द्रीय कार्यालय का भवन खरीदा गया और किरायेदारों से खाली कराने हेतु देशभर से यूनियनों से जितना बन सके धनराशि भेजकर सहयोग करने का आग्रह किया गया। उसी समय यानि वर्ष १९८३ के नवम्बर माह में, मैं अपने प्रदेश कार्यालय के कार्य से नई दिल्ली गया था और कार्यालय में ही ठहरा था। उस समय मेरे मन में एक विचार आया जिसे मैंने बड़े भाई के समक्ष प्रकट करते हुए कहा :—

"वड़े भाई, हमें किरायेदारों से कार्यालय खाली कराने हेतु धन की आवश्यकता है, क्यों न हम बाहर से आकर कार्यालय में ठहरने वाले कार्यकर्ताओं से इस हेतु कुछ दान लेने की व्यवस्था कर दें। कारण, यदि वह कार्यकर्ता दिल्ली के होटलों में भी ठहरेंगे तो उन्हें तीस-चालीस रुपया रोज किराया देना ही पड़ेगा। यदि हम उनसे पच्चीस रुपया रोज के हिसाब से भी दान लेंगे तो उनको भी कुछ बचत रहेगी और हमारी आवश्यकता पूर्ति में भी कुछ सहयोग हो जाया करेगा।" इस पर बड़ें भाई ने कहा—

इस प्रकार का धन अपने कार्यकर्ताओं से नहीं लेंगे। हम तो चाहते हैं कि हमारे अधिक से अधिक कार्यकर्ता कार्यालय में आकर ठहरें और हम उन्हें अधिक से अधिक निशुल्क सुविधायें दें। हम तो विचार कर रहे हैं कि क्या हम कार्यालय में ठहरने वाले कार्यकर्ताओं के भोजन की व्यवस्था भी कार्यालय में करें। यह इसलिए आवश्यक है कि यदि हमने अपने कार्यालय में अधिक से अधिक निःशुल्क सुविधायें दी तो कार्यकर्ताओं का लगाव और कार्यालय से अपनापन जुड़ेगा। हम चाहते हैं कि हमारा प्रत्येक कार्यकर्ता इसे अपना ही कार्यालय समझे। उसे महसूस हो कि यह उसकी सम्पत्ति है।

उन्होंने उनसे दवा लेने को कहा किन्तु वे न तो किसी डाक्टर के यहां चलने को तैयार हुए न ही पिताजी को किसी डाक्टर को बुलाने जाने दिया।

जब पिताजी अधिक आग्रह करने लगे तब उन्होंने कहा, "जाओ एक छोटी सी शीशी कृष्णा मिक्स्चर की ले आओ।" यह कहकर वे पैसे देने लगे। पिताजी पैसे नहीं ले रहे थे किन्तु बड़े भाई ने कहा, "रख लो।" वास्तव में जब पिताजी ने थोड़ी दूर जाकर देखा तो उन्होंने पाया कि उनके पास बड़े भाई के पैसों के अलावा जेब में एक पैसा तक न था। बड़े भाई अगर पैसा न देते तो उन्हें कुछ दूर जाकर दूसरी जगह से पैसा लाना पड़ता। परन्तु बड़े भाई की व्यवहारिकता के कारण संयोग वैसा नहीं बना। वास्तव में वह स्थिति भांप लेते थे, अन्तर्यामी थे। उनके पास कुछ आन्तरिक शक्ति भी थी।

आलोक शर्मा "प्रकाश"
रेलवे कालोनी, लखनऊ

बात मनवाने की अनोखी कला

सीधे-सादे जीवन दर्शन की प्रतिमूर्ति श्रद्धेय श्री रामनरेश सिंह जी (बड़े भैया) के प्रतिदिन के कार्यक्रमों की बातचीत में अलौकिक अनुभूति से ओत-प्रोत क्षण बड़ी सहजता से आ जाते थे जो बार-बार अनायास जीवंत हो उठते हैं। अति सौम्य से दीखने वाले धोती-कुर्ता पहने सामान्य से कुछ लम्बे बड़े भाई सीधे-सादे शब्दों में महत्तम भाव प्रकट कर देने की क्षमता रखते थे।

उस दिन हमारी यूनियन के वार्षिक अधिवेशन का दूसरा सत्र समाप्त हो चुका था। अगले सत्र में चुनाव प्रक्रिया शुरू होनी थी। बड़े भाई ने श्री सोनी जी द्वारा मुझे बुलाया और बगैर किसी प्रकार की भूमिका बांधे कहा, "संगठन की इच्छा है कि तुम यूनियन के महामंत्री का उत्तर-दायित्व सम्भालो। इस विषय में यदि कुछ कहना चाहो तो कहो।" मुझे इस बात की कुछ संभावना थी कि ऐसी बात उठ सकती है। मगर यह कल्पना भी न थी कि भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय महामंत्री श्री रामनरेश सिंह जी ही मुझसे यह प्रस्ताव इतने सीधे-सादे शब्दों में करने वाले हैं। मैं आश्चर्यचकित कुछ अधिक सोच पाने की स्थिति से झटक कर दूर फेंका हुआ कैसे अपनी असमर्थता प्रकट करुं। शब्द ही नहीं सूझ रहे थे। फिर भी रुककर अपनी घरेलू मजबूरियां सामने रख दीं। साथ ही अपने दो अन्य साथियों के नाम सुझाये। एक नाम श्री सोनी जी ने हटा दिया। दूसरे साथी को बड़े भाई ने तुरन्त बुलवाया और मेरी बात उसके सामने दोहरा दी। किन्तु साथी द्वारा भी अपनी असमर्थता दोहरा देने के बाद मेरे पास चारा ही क्या था।

इतनी संक्षिप्त और साधारण बातचीत द्वारा उस महान किन्तु सरल व्यक्तित्व ने अपने सहज ढंग से मुझे यूनियन के उत्तरदायित्व से बांध दिया। साफ, प्रयोजन-साध्य, सीधी-सादी शब्दावली बड़े भाई की सरलता गांभीर्य एवं महानता की परिचायक रही है।

योगेश्वर दत्त
महामंत्री, उत्तर रेलवे कर्मचारी यूनियन

अपने सभी कार्यालय में इसी भावना को लेकर व्यवस्था रहनी चाहिये। कहीं भी तुम्हारे मन में आये भावों को प्रकटीकरण कार्यालय व्यवस्था में नहीं आना चाहिये। यदि ऐसा हुआ तो फिर कार्यकर्ता के मन में कार्यालय के प्रति अपनत्व की भावना आने की बजाय कार्यालय से उसका व्यवहार होटल या धर्मशाला वाली भावना जैसा हो जायेगा।

"कार्यालय खाली करवाने के लिए हमें धन की आवश्यकता तो है पर यह धन हम यूनियनों से कहकर ही मंगायेंगे।"

मांगी लाल पोरवाल, भोपाल विभाग प्रमुख,
भारतीय मजदूर संघ, भोपाल (म० प्र०)

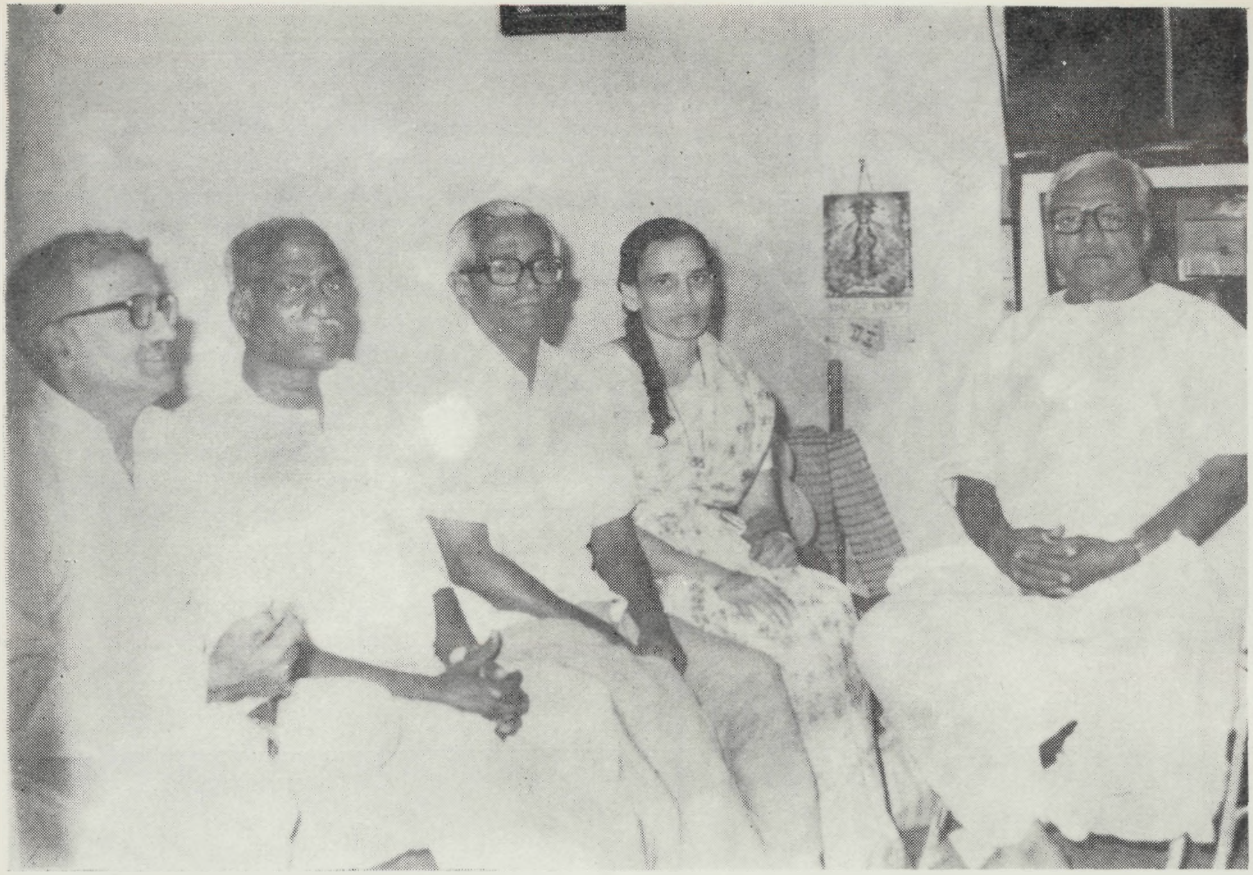

शल्यक्रिया के पश्चात् बम्बई अस्पताल से छुट्टी के बाद सर्वश्री बड़े भाई, डा० परड़कर, रमण शाह, श्रीमती लिमये व दत्तोपंत जी ठेंगड़ी के साथ बम्बई में (बाएं से दाएं)

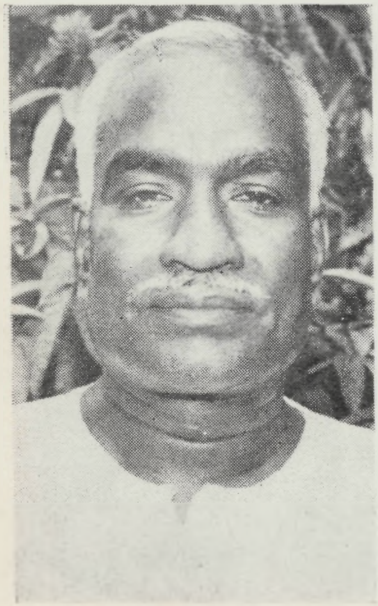

बड़े भाई

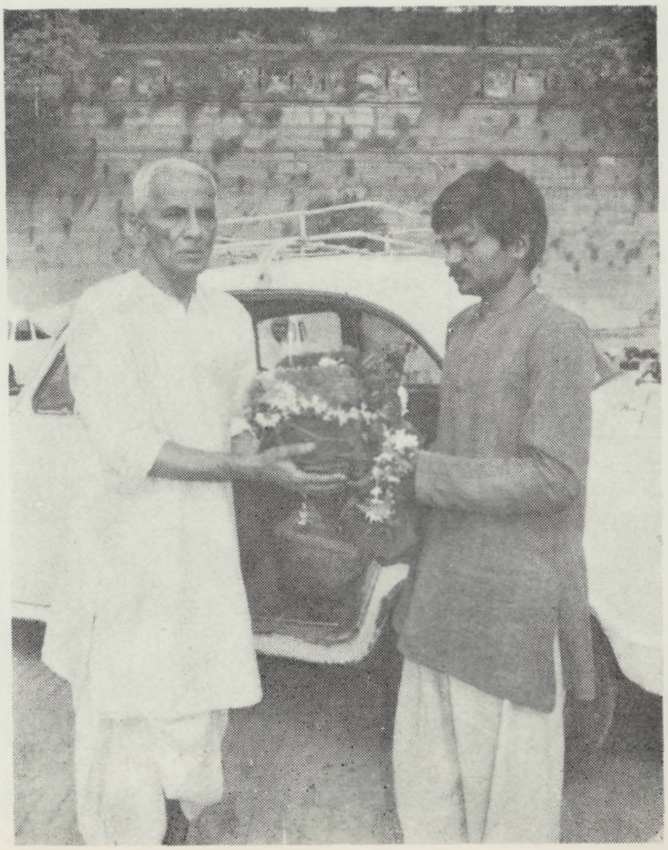

प्रयाग में बड़े भाई की अस्थियां लिए वीरेन्द्र कुमार सिंह चौधरी (एडवोकेट) व रमेश उपाध्याय (संगठन मंत्री, भा० म० संघ, इलाहाबाद)

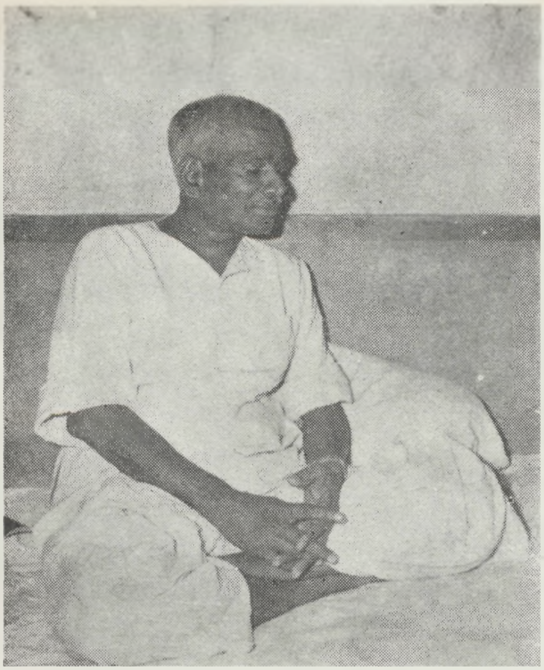

स्मृति दीप

'देश के लिये लड़ने वाला सैनिक अपने जीवन की बाजी अर्थ की कामना से नहीं लगाता। अर्थ का लालच उसे देशद्रोह सिखा सकता है, देशभक्ति नहीं। स्त्री के सतीत्व का अपना मूल्य है, उसे अर्थ की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। वैद्य रोगी की चिकित्सा के बदले में अर्थ किन मूल्यों के आधार पर ले सकेगा? अध्यापक विद्यादान का मूल्य नहीं लगा सकता। सरकारी कर्मचारी किस आधार पर एक फाइल को आगे सरकाने के लिए मूल्य लेगा? दुर्बल की रक्षा करने वाली पुलिस जब अपनी सेवाओं का मूल्य मांगे, तब या तो दुर्बल की रक्षा ही नहीं हो पायेगी अथवा शरीर-शक्ति में दुर्बल अपनी बुद्धि का उपयोग कर धूर्तता से धन कमा कर अपनी रक्षा का मूल्य चुकायेगा। श्रम का, चाहे शारीरिक हो या मानसिक यद्यपि दृश्य वस्तुओं के उत्पादन अथवा सेवाओं में हुआ है तो भी रुपये पैसे में मूल्य आंकना असम्भव है।'

'बड़े भाई'

बड़े भाई का अन्तिम कार्यक्रम—इन्दौर में मजदूर संघ का अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग (एकदम दाएं)।

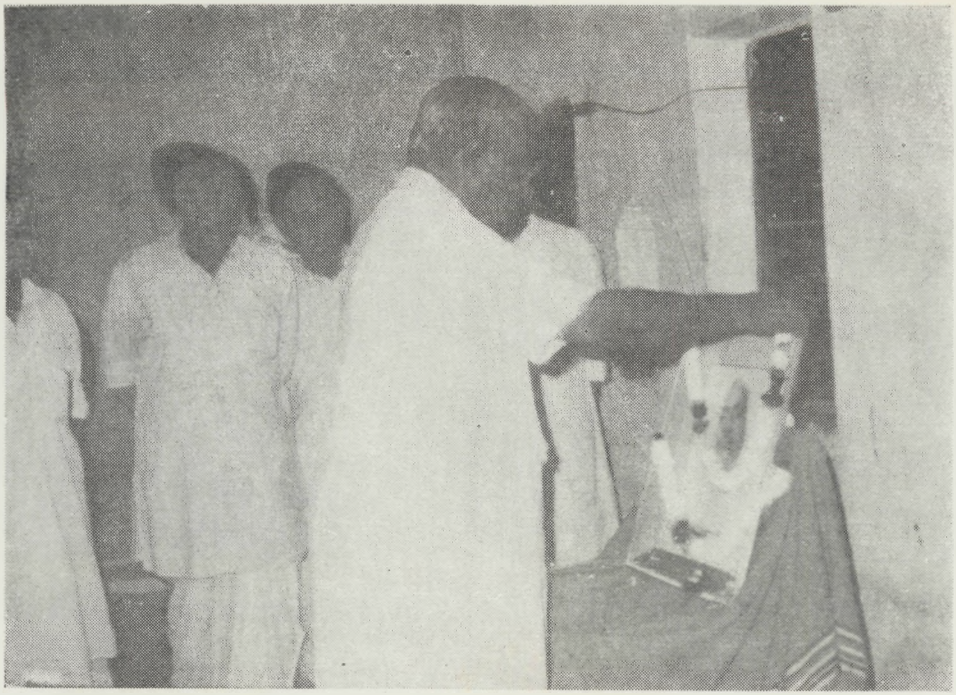

बगही में बड़े भाई के घर पर बड़े भाई की तस्वीर पर माल्यार्पण करते हुए
श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी । साथ में उ० प्र० के संगठन मंत्री रामदौर सिंह ।

(नीचे) बड़े भाई को श्रद्धाँजलि अर्पित करते हुये प० बंगाल के भा. म. संघ अध्यक्ष
शांतिमय चौधरी, रास बिहारी मैत्र ।

तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन्न चार रहें न रहें ।

प्रयाग में अस्थि विसर्जन हेतु ले जाते हुए।

प्रयाग में अस्थियां नाव में ले जाते हुये, का एक दृश्य।

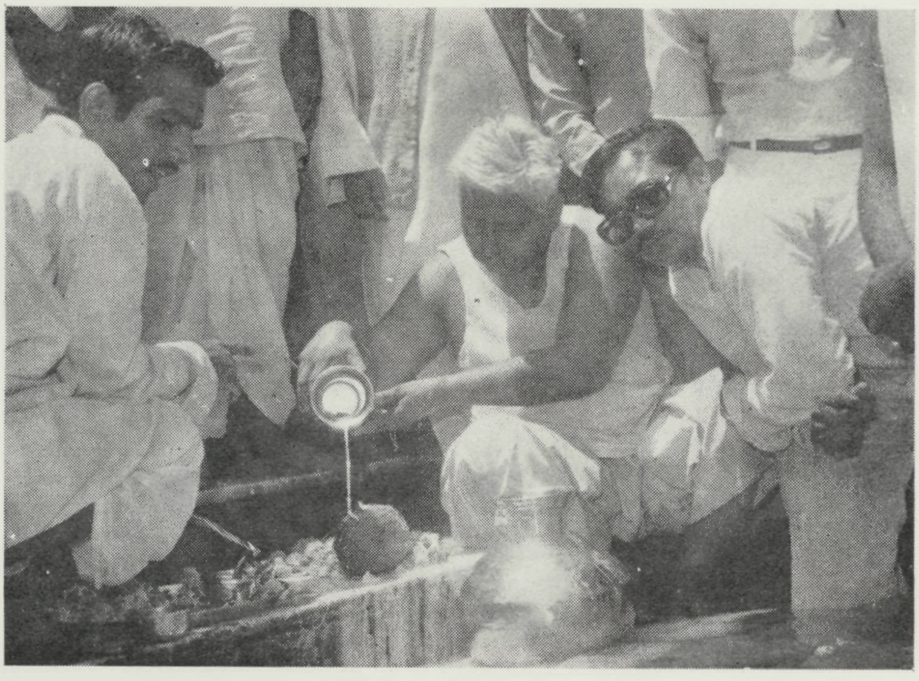

अस्थि विसजन के समय धार्मिक विधि पूरी करते हुये श्री घनश्यामदास गुप्त
(महामंत्री) भा० म० संघ उत्तर प्रदेश।

हमारी प्रेरणा

"जिसने समाज में परमेश्वर के विराट रूप का साक्षात्कार किया है, और उसकी सेवा में जीवन सर्वस्व लगाकर दक्ष रहता है, उसे भूख की ज्वाला से दग्ध हो रहे उदर के लिए फिरने वाले लोग, जो कि जीवन की प्रधान आवश्यकताओं को भी पूरा करने के साधनों से वंचित हो गये है और जिसमें से एक-एक की कहानी को सुनकर और दशा को देखकर पाषाण हृदय भी फट जाए ऐसे लाखों की संख्या में इतस्तत: फैले हुए हीन दीन निराश्रित प्राणी परमात्मा के सर्व प्रथम पूजनीय रूप ही दिखाई देंगे और वह उनकी सेवा में सम्पूर्ण शक्ति लगाने के लिए विकल हो उठेगा।"

—श्री मा० स० गोलवलकर

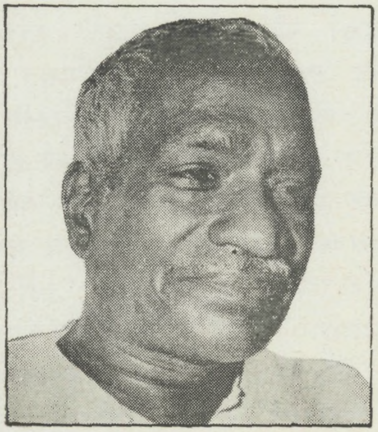

प्रेरक प्रसंग

जाए, यह विचार चल रहा था। ऐसे किसी कार्यकर्ता की महती आवश्यकता थी, जो निर्भय एवं खुले रूप में जनता के बीच घूम सके, उसके मनोबल को ऊंचा बनाए रख सके। विधान सभा तथा जनता के मध्य आपत्काल के क्रूर अमानवीय कृत्यों पर पड़े रहस्य के पर्दे को हटा सके।

संयोग से बड़े भाई जेल से बाहर आ चुके थे। प्रमुख अधिकारियों की निगाह बड़े भाई पर टिक गई। बड़े भाई में विधान परिषद की सदस्यता के लिए लेशमात्र भी उत्कंठा न थी। जबकि उसी समय मेरे कई मित्र अपनी अतृप्त लालसा की पूर्ति के लिए लालयित थे और प्रयत्नशील भी थे। बड़े भाई को वरीयता के प्रथम क्रम में खड़ा करने का निर्णय किया गया। मैंने देखा, इसपर उनको न प्रसन्नता हुई और न ही परेशानी। वे बिलकुल स्थितप्रज्ञ, कर्त्तव्य भाव से प्रेरित दिखाई दिये। नामांकन पत्र भरवाने का दायित्व मुझ पर था। नामांकन पत्र भरवाने के साथ ही मैंने उनके सामने नाम वापसी का फार्म भी रखा। एक क्षण का भी विलम्ब किए बिना उन्होंने उसे भी भर दिया।

दैववशात् इसी प्रक्रिया के समय ही मैं मीसा के अन्तर्गत बन्दी बना लिया गया बड़े भाई जनसंघ के विधान परिषद् सदस्य चुन लिए गए, यह समाचार मुझे जेल में ही मिला।

इससे पूर्व ५–६ मार्च को भारतीय क्रांति दल के चौधरी चरण सिंह, संगठन कांग्रेस के बाबू बनारसी दास तथा राममूर्ति आदि नेतागण जेल से छुटकर आ चुके थे। वे अत्यंत हताश थे। मैं इन सबसे अलग-अलग तीन-चार बार गुप्तरूप से मिला था। उन्हें भूमिगत कार्य की जानकारी दी थी। भूमिगत कार्य कितना हो रहा है, सारे देश में प्रत्येक जिले, तहसील, विकास खंड के स्तर तक सभी सम्पर्क सूत्र जुड़े हुए हैं, सरकार की नाक में दम आ गया है आदि-आदि किन्तु मैं उनमें आत्मविश्वास नहीं जगा सका था।

बड़े भाई ने आते ही उनमें जैसे प्राण फूंक दिये। टूटे हुए हताश विपक्ष को एकत्रित करके उसे सबल विपक्ष में बदल दिया। उत्तर प्रदेश विधानसभा में "लोकपक्ष" का निर्माण करवाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपातकाल के क्रूर कृत्यों का काला चिट्ठा विपक्ष के प्रतिनिधि के रूप में चौधरी साहब ने विधान सभा में रखा। उनका वह सात घंटे का भाषण एक ऐतिहासिक दस्तावेज बन गया। बड़े भाई अपरोक्ष रूप से उनके पीछे थे।

आपत्काल गया। जनता सरकार बनी। सभी लोग जेलों से बाहर आए। जनसंघ विधानमंडल दल की बैठक थी। बड़े भाई भी दल के एक प्रमुख सदस्य के रूप में उपस्थित थे। बड़े सहज ढंग से मैंने उनसे कहा " 'बड़े भाई' आप एक अखिल भारतीय नेता हैं। आपके कुर्ते पर गुड़ी-मुड़ी झुर्री कैसे पड़ी हुई है। आपने तो कंजूसी की हद कर दी। अब ऐसे नहीं चल सकेगा। आज आपकी ओर से दावत होगी पर्याप्त वेतन, टी० ए०, डी० ए०, सभी कुछ तो मिलता है आपको"। कहने को तो मैं कह गया, पर तत्काल मुझे अनुभव हुआ कि मेरा आचरण सबके बीच में उनकी गरिमा के अनुरूप न था। मुझे अपनी कतरनी सी चलती जिह्वा पर क्षोभ हुआ। लेकिन बड़े भाई निर्विकार रहे। कुछ क्षण मौन रहने के बाद बोले, "ठीक

एक निरासक्त प्रचारक

बड़े भाई और मैं दोनों ही समव्यस्क थे। प्रचारक के रूप में लगभग साथ ही संघ कार्य हेतु प्रवृत्त हुये थे। उनके साथ मेरा उठना-बैठना, बोलना, खाना-पीना आदि सभी व्यवहार एक हमजोली का सा था। वे एक अखिल भारतीय संगठन के महामंत्री हैं, अनेक बार मुझे इसका विस्मरण हो जाता। अनजाने में ही क्यों न हो, कई बार तो लोगों के बीच में भी उनके साथ मेरा हंसी-मजाक सीमा का अतिरेक कर जाता। हल्केपान का रूप ले लेता।

आपत्काल के दिन आए। बड़े भाई प्रारम्भ में ही बंदी बना लिए गए। डी० आई० आर० के अंतर्गत कानपुर में उनपर मुकद्मा चला।

शायद वह १६ मार्च, ७६ का दिन था। मैं विधायक निवास के एक कमरे में किसी से मिलने के लिये बैठा था। सहसा बड़े भाई मेरे सामने आकर खड़े हो गए। मैं हक्का-बक्का रह गया। उनका जेल से छूटकर आना मेरे लिये अप्रत्याशित था। उनकी वेशभूषा और उनके चेहरे-मोहरे में कोई भी परिवर्तन नहीं था।

"बड़े भाई, यह क्या ? आपको तो कोई भी पहचान सकता है।" मैंने छूटते ही कहा बड़े भाई मुस्करा कर बोले, "फिर जाना पड़ा तो चले जायेंगे, जेल से बचने के लिए अब मैं वेश बदलते नहीं घूमता फिरुंगा। फिर यह अपना गाढा रंग कहां और किससे छिपा सकूंगा, सबसे अलग चमकता हुआ।" आपत्ति के इन क्षणों में भी वे हंसी-मजाक नहीं भूले थे। धैर्य और संयम उनका भूषण था।

२७ या २८ अप्रैल को उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्यों का चुनाव होना था। उस समय विधानसभा में जनसंघ के ४६ विधायक थे। विधान परिषद् के लिए किसे खड़ा किया

कार्यकर्ताओं के घरों में होता। दवा और आवास की व्यवस्था तो विधायक के नाते निःशुल्क थी ही। विधायक निवास का उनका आवास भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं का आवास स्थल बन गया था। उनके लिए तो एक कोठरी ही पर्याप्त थी।

एक राष्ट्र समर्पित कार्यकर्ता की दृष्टि से पूजनीय श्री गुरू जी (मा० स० गोलवलकर) ने कहा है :—

"व्यक्ति अच्छाई और चारित्रिक पवित्रता राष्ट्रीय हित में सक्रिय एवं गतिशील बनाई जाए। यह राष्ट्र के प्रति सम्पूर्ण समर्पण के रूप में व्यक्त होना चाहिए। प्रतिफल के रूप में किसी भी बात की चाहे वह नाम या ख्याति अथवा अन्य किसी प्रकार का लाभ हो, अपेक्षा न करें। हमें इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि जिनकी हम सेवा करते हैं, वे हमारी प्रशंसा करते हैं या नहीं। हमारे लिए अधिक अच्छा है कि वे ऐसा न करें, क्योंकि तब हम जनस्तुति के उस बंधन से मुक्त रहेंगे जो हमें ऐसे मार्ग पर ले जा सकती है जो अभीष्ट न हो.....। हम अपने राष्ट्र को इष्ट देवता के रूप में देखते हैं। हमारा समर्पण हमारी अपनी सर्व-स्व की भेंट, राष्ट्र देवता के चरणों में है तब हम बदले में किसी भी वस्तु की इच्छा कैसे करें।"

श्री गुरु जी के इस विचार को बड़े भाई ने अक्षरशः मनसा, वाचा, कर्मणा अपने जीवन में उतारा था। कई बार मैंने अपने अनेक मित्रों को यह कहते सुना था कि "मुझे मौका (विधायक बनने का) दिया जाये तो देखिए मेरा पूरा वेतन संघ के खाते में जमा होता है कि नहीं, मैं एक आदर्श प्रस्तुत करूंगा।" कई लोग बड़बतियां बोले, पर जीवन में कभी कर नहीं पाए। किन्तु बड़े भाई—"हे समाजरूपी परमात्मा ! सब कुछ तो तेरा है, मेरा कुछ भी नहीं। केवल जीवनयापन और कर्तव्य पालन हेतु जितना आवश्यक है उतना ही लेना" की श्रेष्ठ भावना से ओतप्रोत थे।

बड़े भाई के वे शब्द आज भी मेरे कानों में गूंज उठते हैं—"क्यों क्या मैं प्रचारक नहीं.....तो मेरा हृदय उनके प्रति श्रद्धा से भर उठता है। कहने को तो हम समवयस्क थे पर वास्तव में वे थे मुझसे बहुत बड़े....बड़े भाई से भी बड़े।

प्रतापनारायण मिश्र, लखनऊ

है, जैसा चाहे—करो। पर इस समय तो मेरे पास रुपये हैं नहीं"। मैंने कहा, "रुपये मैं उधार देता हूं।"

दावत हुई, बड़ी अच्छी हुई। बाद में रुपये भी मुझे वापस मिल गए। कई दिनों बाद मुझे पता चला कि वह रुपये उन्होंने घर से मंगा कर मुझे दिए थे।

विधायकों को प्रदेश में निर्बाध रूप से यात्रा करने के लिए रेल के कूपन मिलते हैं। बस की यात्रा तो निःशुल्क है ही। किन्तु प्रदेश के बाहर जाने के लिए निर्धारित सीमा में ही रेलवे कूपन मिलते हैं। बड़े भाई का अधिकांश प्रवास प्रदेश के बाहर होता रहता था। मैंने पूछा—आप हजारों किलोमीटर की यात्रा द्वितीय श्रेणी में, भारी भीड़ में, गर्मी से जलते डिब्बे में कैसे करते हैं? वे हास्य बिखेरते हुए बोले, "कूपन तो तीन माह भी नहीं चलते।"

"तो क्या हुआ। आप विधायक हैं, बड़े नेता हैं, यदि कहें तो लोग आपका टिकिट प्रथम श्रेणी में स्थान-स्थान से कटा ही सकते हैं"।

"भाई मजदूर संघ बहुत गरीब है, फिर मैं सबसे अनोखा तो नहीं हूं। मेरे कार्यकर्ता कष्ट उठाएं और मैं······।"

"बस···बस··· ! बड़े भाई" शायद मैंने उनकी दुखती रगों को छू दिया था। कितना संवेदनशील था उनका अंतःकरण।

बड़े भाई प्रारम्भ से ही बड़े मितव्ययी थे। पर मेरी दृष्टि में उनकी मितव्ययिता पूरी कंजूसी ही थी। इस "कन्जूसी" का रहस्य तब प्रकट हुआ, जब मेरे ऊपर प्रदेश भाजपा के महामंत्री और बाद में उपाध्यक्ष के नाते आय-व्यय का लेखा-जोखा निरीक्षण का दायित्व आया। मैंने देखा बड़े भाई का एक-एक पैसा, चाहे निजी हो, चाहे सरकारी, पार्टी के खाते में जमा होता था।

एक दिन मैं उनसे पूछ बैठा—"बड़े भाई, किसी प्रकार का अभाव न होते भी आप अभाव में क्यों जीते हैं?

वे मुस्कराए। बोले, "क्यों, क्या मैं प्रचारक नहीं हूं? प्रचारक छोटा हो या बड़ा, प्रचारक तो प्रचारक ही है। सबके कार्य करने की मूल प्रेरणा, भावना और जीवन दृष्टि, सभी समान है। मैं शेष प्रचारकों से अलग नहीं हूं।" कितनी बड़ी बात बड़े भाई ने कह दी थी चंद शब्दों में।

सभी प्रचारकों के समान वे अपना व्यय-पत्रक आजीवन बनाते रहे। व्यय ही कितना था उनका। कपड़े-लत्ते सामान्यतया लोगों से मिल जाते। भोजन आदि जहां जाते वहीं

दोनों ही न्यायालय के निर्णय की प्रतियां चाहते हैं। आवेदन भी साधारण या द्रुत करते हैं। धन चाहे जितना लगे मगर प्रतिलिपि तुरन्त मिले इसकी चाह रहती है। उन दिनों इस विभाग में अंग्रेजी भाषा में ३००० तथा हिन्दी में २५०० शब्द प्रतिदिन १० बजे तक सब लिपिकों को लिखना अनिवार्य था। बड़े भाई हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के लिपिक थे। कचहरी के अतिरिक्त कोई कागज वे अपने निवास-स्थान पर नहीं लाते थे। सायंकाल पांच बजे तक के बाद विभाग का कोई कार्य नहीं करते थे। निवास स्थान पर कोई आवेदनकर्ता प्रतिलिपि की चर्चा भी नहीं कर सकता था। चाहे वह कितना ही निकट परिचय का क्यों न हो। अतिरिक्त धन देकर कार्य कराने वालों की तो उनके पास दुर्दशा ही होती थी। धन का मोह उनके जीवन में तनिक भी न था।

उसी क्षेत्र का होने के कारण तहसील में उनका भरपूर परिचय था। किन्तु इसका कोई प्रभाव उन पर नहीं था। जिस क्रम में आवेदन पत्र आते थे उनका अनुक्रम बना देते थे। और फिर वह तीन हजार व ढ़ाई हजार शब्दों का लेखन चलता था। आवेदन पत्रों का अम्बार लग जाता था। वादी-प्रतिवादी अपने वाद में अपना पक्ष योग्य सिद्ध करने के लिए प्रतिलिपि हेतु आतुर रहते थे। इस कारण उच्च अधिकारियों के पास उनकी शिकायत करते थे। फिर निरीक्षण होता था। हर समय ज्ञात होता था कि कार्यालय के घंटों में जितना कार्य अनिवार्य हैं। वह उनके द्वारा पूर्ण रहता हैं। आवेदन पत्र को जिस अनुक्रम से पंजीकर अंकित करते थे उसी क्रम से लेखन होता था। यह देखकर अधिकारी भी चुप हो जाते थे और निन्दक भी। ऐसी स्थिति में एक दिन बड़े भाई से ही अधिकारियों ने पूछा कि कार्य कैसे पूर्ण हो। उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया कि इसके लिए अस्थायी कर्मचारी भर्ती किये जाये। बड़े भाई को आदेश मिला कि जब कार्य अधिक हो जाये तुरन्त सूचना दें तथा आवश्यक भर्ती भी करें। जब काम बहुत आ जाता था तो वे ऐसे विद्यार्थियों को बुला लेते थे, आर्थिक संकट के कारण जिनकी पढ़ाई में बाधा होती थी। इस विधि से दो काम बने वादियों को प्रतिलिपि समय से मिलने लगी तथा निर्धन छात्र अवकाश का उपयोग करके अपनी पढ़ाई सुचारू रूप से करने लगे।

परन्तु यह धाक जमने के बाद भी बड़े भाई ने अपने कर्त्तव्य में कोई ढील नहीं आने दी, किंचित भी नहीं। वे सदैव अपना कार्य समान गति एवं नियम के साथ करते रहे।

बड़े भाई की मित्र मंडली में सभी विद्यार्थी थे। वह विद्यार्थियों के साथ ही रहते थे। जब चुनार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा प्रारम्भ हुई तो मान्यवर माधवराव देशमुख (जिला प्रचारक मीरजापुर) की दृष्टि भी रामनरेश सिंह पर गई। यह समय १९४४ का था। मुझे माधव जी ने विस्तारक बनाकर चुनार भेजा तथा बड़े भाई के निवास पर ही रखा। थोड़े दिनों के बाद ही मैंने उन्हें बड़े भाई नाम से सम्बोधित किया और वे इसी नाम से विख्यात हो गए।

१९४६ में संघ कार्य की योजना से मैं मड़ियाहूं तहसील जिला (जौनपुर) आया। एक तहसीलदार चुनार से स्थानान्तरित होकर मडियाहूं आये। मेरा उनसे कुछ भी परिचय नहीं

आदर्श जीवन

बड़े भाई श्री रामनरेश सिंह के बाबा श्री हरनारायण सिंह थे। उन्होंने १६२८ में आर्य-समाज की शुद्धि योजनान्तर्गत मुसलमान परिवारों को हिन्दू समाज में पुनः वापस लेकर सबके साथ सहभोज किया। इस कारण रूढ़िवादी बिरादरी के लोगों ने इसका प्रबल विरोध किया तथा ऐसे सभी लोगों को बहिष्कृत करने की घोषणा की। ऐसी स्थिति में उन्होंने अपने कार्य को योग्य मानकर दृढ़ता से रूढ़िवादियों को तर्कपूर्ण ढंग से निरुत्तर कर दिया। काफी समय तक यह विवाद चला, किन्तु श्री हरिनारायण सिंह का पक्ष ही विजयी हुआ।

तात्पर्य यह कि बड़े भाई का परिवार समाज हितैषी कार्यों में पहले से ही भाग लेता था। बड़े भाई पर भी पारिवारिक गुणों की छाप थी। वे भी सही निर्णयों का दृढ़ता से पालन करते थे। किसी भी प्रकार का मोह उन्हें डिगा नहीं सकता था। किन्तु साथियों को भी साथ रखते हुए प्रत्येक निर्णय कार्यान्वित होना कठिन रहता है। यह उनकी विशेषता थी कि साथी भी जुटे रहते थे तो निर्णयों का कार्यान्वयन भी हो जाता था।

इनका परिवार पहले से ही बड़ा था। बड़े भाई के पिता श्री दलथम्मन सिंह खेती करते थे। इनके तीन पुत्र हुये। श्री रमाशंकर सिंह,श्री तेजबली सिंह तथा श्री रामनरेश सिंह (बड़े भाई) स्वतंत्रता आन्दोलन में पूरे परिवार ने भाग लिया। श्री रमाशंकर सिंह मुख्य रूप से आन्दोलनों में भाग लेते थे। आज भी वे कांग्रेस के स्वतंत्रता सेनानी हैं। श्री तेजबली सिंह आर्यससमाज के माध्यम से समाज हितकारी कार्य करते थे। बाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हुए और आज भी हैं। स्वाध्याय द्वारा वे कुशल चिकित्सक बने। पुरुषोतमपुर में उनका दवाखाना है। श्री रामनरेश सिंह (बड़े भाई) चुनार में अपनी पढ़ाई पूर्ण करके उसी वर्ष राजकीय सेवा में कार्यरत हो गये। चुनार तहसील में प्रतिलिपिकार पद पर उनकी नियुक्ति हुई। इस विभाग में जाने के लिये होड़ रहती है प्रतिलिपि प्राप्त करने के लिये वादी-प्रतिवादी

दधीचि

मान्यवर बड़ भाई भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधि के नाते नागपुर बैठक में आने लगे। मान्यवर दत्तोपंत जी के सहयोगी के रूप में जुलाई तथा नवम्बर में वृत कथन में भारतीय मजदूर संघ का भी वृत कथन होता है। जबसे बड़े भाई बैठक में रहने लगे तब से मजदूर संघ का वृत वे ही देते रहे। मजदूर संघ देश का दूसरे क्रमांक का संगठन है। उसके साढ़े बारह लाख सदस्य हैं। मजदूर क्षेत्र में जब उसने प्रवेश किया तब वहां लाल रंग का साम्राज्य जम चुका था। मई दिवस-मजदूर दिवस, लाल निशान-मजदूर निशान था। आज भगवा निशान, राष्ट्र भक्ति तथा विश्वकर्मा दिवस को लेकर मजदूर अपनी मांगों के लिये संगठित हो रहे हैं। देश के हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम, तथा उद्योगों का श्रमिकीकरण, श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण, राष्ट्र का उद्योगीकरण जैसे नये-नये शब्द मजदूर क्षेत्र में आने का श्रेय जिन्हें है ऐसे सैंकड़ों कार्यकर्ताओं में बड़े भाई प्रमुख रहे हैं।

वृत देते समय वह एक मिनट का हो या आधे घंटे का बड़े भाई हाथ में कागज नहीं रखते थे। उन्हें उद्योगों के नाम, मान्यता प्रदान न करने वाले उद्योग, प्रदेश, सदस्य संख्या, अधिवेशन, आंदोलन, मांगे, अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय मजदूर सम्मेलन, उसमें जाने वाले कार्यकर्ताओं के नाम आदि सब कुछ स्मरण रहता था। प्रॉम्टिंग की आवश्यकता उन्हें नहीं रहती थी। कथन में क्रमबद्धता और तर्कशुद्धता रहती थी। इतने बड़े काम का संपूर्ण चित्र उनकी आंखों के सामने रहता था। वे कार्य के केन्द्र बिन्दु थे। बड़े भाई के दिवंगत हो जाने से भारतीय मजदूर संघ को ही नहीं राष्ट्रवादी और राष्ट्रव्यापी श्रमिक आंदोलन को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। बड़े भाई इतने बड़े थे, उनके रहते ऐसा नहीं लगता था। कारण वे बहुत ही सरल और सहज थे। हंसी मजाक से मित्रवत व्यवहार करते थे। मेरे जैसे छोटे कार्यकर्ताओं को भी उनके साथ नजदीक का रिश्ता स्थापित करने में संकोच नहीं होता था। कभी-कभी वे मेरा मजाक उड़ाया करते थे। उनका मजाक भी एक सीख हुआ करता था। बैठकों

था। बड़े भाई के कर्त्तव्यपरायण कठोर व्यवहार से वे मन ही मन में बहुत ही प्रभावित थे। मड़ियाहूं में संघ शाखा को लेकर कई प्रकार के विवाद खड़े होते रहते थे। उन दिनों तहसीलदार काफी प्रभावी होते थे। जब उनको पता लगा कि यह संघ वहीं हैं जिससे श्री रामनरेश सिंह का सम्बन्ध है तो वे तुरन्त बोले कि यह संघ तो बहुत अच्छा है। उनकी मदद हमें सदा मिलती रही।

आगे चल कर भारतीय जनसंघ का जन्म हुआ। चुनार तहसील में जनसंघ प्रत्याशी के नाते बड़े भाई का नाम आया। आज्ञा और क्षेत्र का आग्रह मान कर सन् १९५२ का चुनाव उन्होंने प्रभावी ढंग से लड़ा। चुनाव में उस समय पराजय अवश्य हुई किन्तु स्थान-स्थान पर श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं की टोली खड़ी हुई, जो आज तक है।

चुनाव की लड़ाई कबड्डी के खेल की भांति पूर्ण कर पुनः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संगठन कार्य में लौट आये। वाराणसी जिले की ज्ञानपुर तहसील, विंध्याचल तथा चुनार का क्षेत्र उनके पास था। चुनाव से उन्होंने कुछ निष्कर्ष निकाला। उनके ध्यान में आया कि कुछ स्थान ऐसे हैं जहां विद्यालय प्रारम्भ हो सकते हैं। उनकी प्रेरणा से कम्हरिया (वाराणसी), विंध्याचल, पुरुषोत्मपुर, अहरोरा (मीरजापुर) में विद्यालय प्रारम्भ हुये। इस समय सभी विद्यालय कक्षा १२ तक मान्यता प्राप्त हैं तथा सुचारू रूप से चल रहे हैं।

क्षेत्रीय परम्परा तथा तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के कारण तीनों भाईयों का विवाह छोटी आयु में ही हो गया था। प्रथा के अनुसार योग्य तरुणाई पर गौवना (द्विरागमन) होता था। योग्य तरुण होने पर उनका (द्विरागमन) हुआ। किन्तु जब तक वे संघ कार्य से जुड़ चुके थे। संघ के समाज जागरण के कार्य की ओर इस तेजी से बढ़े कि सांसारिकता पीछे छूट गई। उनकी धर्म पत्नी भी सदा सहयोगिनी की भांति ही रही। उन्होंने कभी कोई बाधा नहीं पहुंचाई।

परिवार को उन्होंने धन से कभी भी सहयोग नहीं किया, किन्तु सारा परिवार उन्हें देवता के समान पूजता है। उनका चित्र रखकर उसके सम्मुख नमन करता है।

सकंढ़ा प्रसाद सिंह,
भारतीय किसान संघ, लखनऊ.

जवाब शब्दों में नहीं, अनुभव से लीजिए

बात पुरानी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंचालक परम पूजनीय श्री गुरूजी, पूर्वी उत्तर प्रदेश में एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। विषय कुछ ऐसा आ गया कि संघ का सफल कार्यकर्ता, ग्रामीण क्षेत्र का एक ऐसा युवक भी हो सकता है जो बहुत पढ़ा-लिखा न हो और आधुनिक प्रश्नों के बारे में जिसको जानकारी भी न हो। इसी क्षेत्र में एक जिले के ग्रामीण क्षेत्र में संघ शाखाओं की अच्छी वृद्धि तथा विकास हुआ है। जिस कार्यकर्ता के द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ है, वह ग्रामीण क्षेत्र का एक सरल और साधारण युवक है।

एक बार एक अच्छे पढ़े-लिखे और आधुनिक प्रश्नों पर अधिकार रखने वाले एक सज्जन की उस कार्यकर्ता से भेंट हुई। बातचीत में वे सज्जन बोले कि पहले यह बताओ कि राष्ट्रीयता किसे कहते हैं? नागरिक किसे कहते हैं? हिन्दू शब्द के पीछे क्या कल्पना है? जिस हिन्दू राष्ट्र की बात आप करते हैं उसकी असंदिग्ध कल्पना क्या है?

अपने इस सीधे-साधे सरल कार्यकर्ता ने सहज उत्तर दिया कि शब्दों में तो मैं आपके प्रश्नों का जवाब नहीं दे सकूंगा, लेकिन अनुभव से आपके प्रश्नों का उत्तर अवश्य प्राप्त होगा। इसलिए मेरा निवेदन है कि आप कुछ समय तक संघ शाखा पर आयें, वहां के वातावरण का अनुभव लें।

इस कार्यकर्ता की सरलता और उत्तर की सहजता ने इन सज्जन को प्रभावित किया। वे बात मान गये। शाखा पर आने लगे। इस कार्यकर्ता तथा अन्य स्वयंसेवकों के साथ वे कुछ

में हम सभी अपना-अपना साहित्य और पुस्तिकाएं सबको देते हैं। मैं भी "घुसपैठ एक छिपा आक्रमण" नाम की एक किताब लाया था। बैठक के पूर्व बैठक कक्ष में लाकर किताबें मैंने रखीं थी। बैठक समाप्त होते ही सबको किताबें बांटी। कोई रह न जाये इसलिए फुर्ती से क्रमश: सबको किताबें दे रहा था। कभी-कभी लोगों को मांगना भी पड़ता था। बड़े भाई मेरी सब गतिविधि ध्यान से देख रहे थे। उन्होंने रामभाऊ गोडबोले (वनवासी कल्याण आश्रम) से कहा-देखो मदन कैसी नम्रता, होशियारी और चपलता के साथ किताबें बांट रहा है। अभिनय करके लोगों पर प्रभाव डाल रहा है रामभाऊ ने उनकी बात का समर्थन किया। मैंने सफाई देने का प्रयास किया लेकिन इस मजाक-मजाक में भी उन्होंने मुझे यह सोचने के लिए बाध्य कर दिया था कि क्या सचमुच मेरा व्यवहार ज्यादा दिखावा करने वाला था। इस प्रकार का मजाक करने का उनका स्वभाव था। परन्तु उसमें चुम्मन नहीं थी। निश्छल हंसी-मजाक में हमारी तीनों समय की बैठकें आनंद से बीतती थीं। बहुत-सीखने समझने को मिलता था।

कुछ दिनों बाद बड़े भाई को पैर के तलवे की तकलीफ शुरू हुई। दो फर्लांग भी चलना सम्भव नहीं हो रहा था। उन्हें किसी के आसन, व्यायाम बताये तो वे ट्रेन की यात्रा में भी व्यायाम करने लगे। काफी प्रगति हुई परन्तु दर्द पूरी तरह समाप्त न हुआ। बाद में ट्रेक्शन भी देना पड़ा। उससे भी कुछ आराम नहीं मिला। क्योंकि पैर का दर्द पैर, का नहीं ब्रेन ट्यूमर के कारण पैदा हुआ दर्द था। दुर्दैव से वह कैंसर निकला। तब तक बहुत देर हो चुकी थी। फिर भी आपरेशन हुआ। आपरेशन के बाद एक बार जब वे घर लौट रहे थे तब दिल्ली में झण्डेवाला संघ कार्यालय पर उनसे मिलने का मौका मिला। उन्होंने मुझसे अपने स्वास्थ्य की नहीं, मजदूर संघ के काम की आगामी प्रवास के योजना की बातें की। मुझे बताया गया था कि वे कुछ ही महीनों के मेहमान हैं। हो सकता है वे 'कोमा' में चले जाय, उनसे वार्तालाप करने की भी मनाही थी।

अप्रैल १९८५ के अंत में बम्बई में विद्यार्थी परिषद का कार्यक्रम था। प्राचार्य श्री यशवंतराव केलकर की षष्ठि पूर्ति पर सम्मान समारोह होना था। उसमें मुख्य वक्ता दत्तोपंत जी को रहना था। उन्हें यह दु:खद समाचार मिला कि बड़े भाई गंभीर रूप से अस्वस्थ है, वे विमान से सुबह जाने वाले थे। मैं भी उनके साथ जाने की सोच रहा था। जा न सका। क्या दुर्दैव है। इतने बड़े कार्यकर्ता बड़ी मुश्किल से तैयार होते हैं।

जब कार्यकर्ता एक कार्य क्षेत्र का भार लेकर उसे सम्भालने की स्थिति में आया तो उसे काल उठा ले गया। कितने लोगों के जीवन की आहुति से यह कार्य होने वाला है, दधीचि जैसे अनेक लोगों के जीवन की भेंट लेकर भी कार्यपूर्ण होता अभी तक शेष है।

बड़े भाई जैसे महान, कर्मठ, कर्त्तव्यपरायण निरलस नेता को नम्र श्रद्धांजलि। विश्वास है कि उनके जीवन से हजारों कार्यकर्ता प्रेरणा लेंगे तथा अधूरा कार्य पूर्ण करके ही रहेंगे।

श्री मदन दास देवी,
अखिल भारतीय संगठन मंत्री,
विद्यार्थी परिषद्.

मर्द नेता

बड़े भाई के प्रथम दर्शन का सौभाग्य हमें मई, १९७४ में रेलवे कर्मचारियों की हड़ताल के कुछ समय पूर्व प्राप्त हुआ था। मैं किसी कार्य से गोरखपुर गया था। उस समय रेलवे की यूनियनों के बारे में न तो कोई जानकारी थी, न कोई लगाव। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नाम अवश्य सुना था। किन्तु सम्पर्क न था। हां, चुनाव के अवसरों पर भारतीय जनसंघ के लिए दो-तीन बार कार्य अवश्य किया था। यद्यपि इसके लिए कोई ठोस आधार नहीं था।

गोरखपुर में रेल कर्मचारियों की आमसभा मे कोई बोल रहा था। "हड़ताल में वे कर्मचारी अवश्य जायें जो अपने को मर्द कहते हों, जिनके अन्दर मर्द की हिम्मत हो, भले वे महिलाएं हों, जिनके सीने में घबराहट हो, बीबी से आफिस, आफिस से बीबी तक ही जिनका सम्बन्ध हो वे ८ मई से पहले आफिस से छुट्टी ले लें। कहीं ऐसा न हो कि ड्यूटी पर जाते समय हड़तालियों से भेंट हो जाये या पुलिस पकड़कर जेल भेज दे।" मैं खड़ा हो गया यह सुनने कि कौन नेता है जो इस अक्खड़ भाषा में बोल रहा है। इसी बीच वक्ता ने कहा, "जो अपने को मर्द समझतें हों वे अपना हाथ ऊपर उठाएं।" कुछ हाथ तुरन्त उठे, कुछ धीरे-धीरे एक दूसरे को देख कर। मेरे मन ने धिक्कारा कहां आ फंसे। इसी बीच पीछे से किसी ने मेरा हाथ पकड़ कर ऊपर उठा दिया। मैंने मर्द कहलाने की ललक में हाथ नीचा नहीं किया। यही घटना शायद बाद में मुझे मजदूर क्षेत्र में खींच लाई।

देशव्यापी रेलवे हड़ताल ६ मई, १९७४ से होनी थी। किन्तु मजदूर नेताओं की देशव्यापी गिरफ्तारी से २ मई से ही स्थान-स्थान पर हड़ताल हो गयी। हाथ उठाने के कारण मैं भी हड़ताल में सम्मिलित हुआ। खुल कर सभी यूनियनों का प्रचार करना शुरू कर दिया। चूंकि हड़ताल के पूर्व मैं किसी भी यूनियन में सक्रिय नहीं था, अतः न तो इन्टेलीजेन्स वाले मुझे पहचानते थे, न अधिकारियों को ही शक था। दिनांक १० मई को एक यूनियन के

ही दिनों में हिल-मिल गये। बाद में बातचीत निकलने पर वे बोले कि "मैं यह तो नहीं कह सकता कि मेरे प्रश्नों का जवाब मिल गया है, लेकिन हां, ऐसा जरूर लगता है कि मेरी जिज्ञासा का वास्तविक जवाब यदि कहीं मिला तो यहीं मिलेगा। अन्यत्र तो दिखाई नहीं देता।"

इतना बताकर श्री गुरूजी ने वार्तालाप का समारोप किया कि हमें शब्दों के लम्बे तर्क-वितर्क में नहीं पड़ना चाहिए। जो संतोष और समाधान हमारे व्यवहार तथा संघ शाखा के वातावरण में आने के बाद व्यक्ति को मिलेगा, वही कारगर होगा।

ऐसे थे हमारे बड़े भाई श्री रामनरेश सिंह, जिनकी सरलता और सहजता तथा प्रभावी सफलता का उदाहरण पूजनीय श्री गुरूजी भी कार्यकर्ताओं की बैठक में देते थे।

राजेन्द्र शर्मा
नई दिल्ली।

रहा था। सभी बगलें झांक रहे थे। बड़े भाई बोले, "निराधार आरोपों और अपने आप मियां मिट्ठू बनकर आसमान के तारे तोड़ लाने का दावा करने से कोई लाभ नहीं, प्रैक्टिकल बनना चाहिए।"

मैं सोच रहा था यह कैसे बड़े भाई हैं, इनमें जरा सी सहनशीलता नहीं है। क्या अक्खड़पन है। क्या इसी के बल पर सबको एक करेंगे? समारोप का कार्यक्रम छोड़कर अवध तिरहुत मेल से लखनऊ के कार्यकर्ताओं के साथ मैं वापस आ रहा था। दिन की यात्रा थी। एक थ्री टायर डिब्बे में हम सभी घुसे। कण्डक्टर से परिचय था। एक थ्री टायर पर बड़े भाई पहले से विराजमान थे। मुझे देखते ही बोले आइए कैलाश जी। समारोप छोड़कर क्यों आ गए। मैं चौंका। बड़े भाई मेरा नाम कैसे जान गये। उनके पास बैठने में डर लग रहा था। किसी बात पर डांटने न लगें। किन्तु जब वे बहुत सरलता और सहजता के साथ मेरे बारे में जानकारी प्राप्त करने लगे तो मेरी हिम्मत बढ़ी। भारतीय मजदूर संघ, श्रमिक संघ से संबंध, अन्य स्थानों पर कार्य, आर० एस० एस०, भारतीय जनसंघ, कार्य कैसे किया जाए आदि विभिन्न विषयों पर मैं उनसे प्रश्न करता रहा वे पूर्ण जानकारी देते रहे। उनके उत्तर अत्यन्त संक्षिप्त किन्तु पूर्ण समाधानकारक थे।

गोरखपुर से लखनऊ के पांच घन्टे की लम्बी यात्रा में मैंने बहुत कुछ जानकारी प्राप्त की। मेरा पूरा समाधान हुआ। अंततः मैं पूछ ही बैठा "बड़े भाई आप बाकी लोगों को आप डांट देते हैं और मेरे बेमतलब के प्रश्नों का उत्तर देते हुए आपको न झुंझलाहट हुई, न गुस्सा आया। वे उन्मुक्त हंसे। बोले "बाद के लिए भी तो कुछ रख छोड़ो। क्या फिर मिलने का इरादा नहीं है?" लखनऊ में गाड़ी से उतरने के बाद उनका झोला मैं उठाने लगा। बोले, बहुत "दिन उठाना पड़ेगा। चिंता न करो।" दूसरे कार्यकर्ता की ओर झोला बढ़ा दिया। क्या है बड़े भाई में विशेषता? स्पष्टवादिता या अक्खड़पन, सरलता-सहजता या फंसाने के लिए ऊपरी दिखावट बहुत देर तक विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचा किसी निष्कर्ष पर न पहुंचा। बाद में अनुभव में आया कि वे जितना कर्त्तव्य कठोर थे उससे भी अधिक मुलायम।

धीरे-धीरे सब समझ में आ जाएगा

अप्रैल या मई, १९७५ में भारतीय मजदूर संघ का अखिल भारतीय अधिवेशन अमृतसर में था। अधिवेशन में चलने का आग्रह मुझसे भी किया गया। यह जानकर कि बड़े भाई से वहां भेंट एवं बातचीत का अवसर मिलेगा, मैं तैयार हुआ। किन्हीं कारणों से लखनऊ के कार्यकर्ता नहीं आए, किन्तु काफी कठिनाई उठाकर मैं अमृतसर पहुंचा। मेरी निगाहें बड़े भाई को खोज रही थीं। किन्तु वे दिखाई ही नहीं पड़ रहे थे। कई लोगों से पूछा भी, किन्तु यही उत्तर मिला उनसे मिल पाना मुश्किल है। काफी व्यस्त होंगे। मैं सोच रहा था कि यहां तो देश के बड़े-बड़े नेता एम० पी०, मिनिस्टर आए होंगे, बड़े भाई प्रदेश के नेता हैं, उन्हें क्या व्यस्तता। किन्तु कार्यक्रम के समय देखा सभी की कार्यवाही से लेकर भोजन-व्यवस्था तक सब कहीं बड़े भाई उपस्थित हैं। कई बार आमने-सामने पड़े, किन्तु नमस्कार के अतिरिक्त बात न हो सकी।

कार्यकर्ता अपने कार्यालय में मीटिंग करके अपनी गिरफ्तारी देने वाले थे। उन्होंने पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ (भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्ध) के नेताओं की आलोचना भी की जो मुझे पता नहीं किन कारणों से बुरी लगी। मैंने भारतमाता की जय और श्रमिक संघ जिन्दाबाद के नारों के साथ अपने कुछ विश्वस्त मित्रों सहित अपनी गिरफ्तारी उन लोगों के साथ ही दिया। इसकी जानकारी नेताओं को बाद में मिली। यद्यपि इस समय तक श्रमिक संघ के कार्यकर्ता भी मुझ पर विश्वास नहीं करते थे किन्तु बाद में उनके द्वारा निकाले गए पत्रकों में श्रमिक संघ के नेता के रूप में मेरा नाम गिरफ्तारी देने वालों में गया। लोग जेल में मिलने आए। बाद में लगातार सम्पर्क के कारण मैं संघ कार्य में आया।

कौन बड़े भाई, किस के बड़े भाई ?

बड़े भाई के सम्पर्क में दूसरी बार आने का प्रत्यक्ष अवसर फरवरी, १९७५ में श्रमिक संघ की जोनल कान्फ्रेंस गोरखपुर मे आया। जब लखनऊ मण्डल के मण्डलमन्त्री श्री चारूचन्द्र मिश्र और सह मंत्री श्री शिवपूजन मुझे घेरकर सम्मेलन में ले गये। बड़े भाई के नाम की चर्चा बार-बार हो रही थी। बड़े भाई कौन हैं, किसके बड़े भाई हैं, यह जिज्ञासा मन में थी। सबके बड़े भाई हैं, यह बात मेरे गले नहीं उतर रही थी। अधिवेशन का उद्घाटन होने वाला था। बड़े भाई कौन हैं, मैं यह जानने को व्यग्र था। तभी देखा बहुत ही साधारण वेशभूषा, मोटे कपड़े का मटमैला कुर्ता, जिसमें पड़ी तमाम सिकुड़नें दूर से ही साफ-साफ दिखाई पड़ रही थीं, अब्राहम लिंकन की ऊँचाई का एक काला आदमी सामने आया एवं भारतमाता की जय तथा भारतीय मजदूर संघ के नारों से आकाश गूंजने लगा। मैं भौचक्का रह गया कि क्या हो गया। आने वाले आदमी के असाधारण स्वागत एवं माल्यार्पण के समय मुझे ज्ञात हुआ कि यही बड़े भाई हैं जिनके कपड़ों पर कोई प्रेस नहीं है और कपड़ों का चुनाव भी अजीब। भाषण शुरू हुआ और मैं अपने मस्तिक पर बराबर जोर दे रहा था कि इन्हें कहीं देखा है।

"जिस प्रकार डाक्टर को रोना मना है, मिलिट्री में रोना मना है उसी प्रकार ट्रेड यूनियन में रोना मना है। मर्दानगी से आगे बढ़ो एवं सम्पूर्ण मजदूर क्षेत्र में छा जाओ" की आवाज सुनते ही पुरानी घटना याद आ गई, जब उन्होंने मर्द होने का जोश देकर हाथ उठवाया था। भाषण समाप्त।

केन्द्र का सहयोग नहीं मिलता, प्रदेश भारतीय मजदूर संघ का डायरेक्टिव नहीं आता। प्रदेश नेताओं के दौरे नहीं होते। कार्यकर्ताओं के कार्य नहीं होते, काम कैसे बढ़े ? अपने कार्यों की बढ़ा-चढ़ा कर प्रशस्ति। बड़े भाई शान्तिपूर्वक सब सुन रहे हैं। लग रहा है सभी आलोचना और कमी उनकी ही है वृत्त समाप्त। बड़े भाई एक-एक मण्डल मंत्री को उठाकर पूछ रहे हैं। कब-कब दौरे मांगे गए ? कौन-कौन समस्याएं केन्द्र और प्रदेश भा.म.सं. को भेजी गई जो पूरी नहीं हुई। अमुक-अमुक कार्यक्रम में आप कहां थे ? अमुक-अमुक सूचनाओं पर क्या अमल किया ? मैंने देखा वृत्त निवेदन करने वालों को कोई जवाब सूझ नहीं

सफलता का रहस्य

इमरजेन्सी के बाद । श्रमिक संघ लखनऊ मण्डल का सम्मेलन । बड़े भाई कर्यक्रम शुरू होने के एक घन्टा पहले ही आ जाते हैं । पूरी व्यवस्था देखते हैं । मण्डलमंत्री श्री चारूचन्द्र मिश्र मुझे बुलाते हैं । बड़े भाई कार्यक्रम की पूरी रचना व्यवस्था की जानकारी चाहते हैं । आवश्यक सुझाव देते हैं । छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी बातों की ओर उनका ध्यान है । मैं मण्डल मन्त्री चुना जाता हूं कार्यालय में कर्मचारियों की आम सभा में बड़े भाई को बोलना है । रात्रि में बड़े भाई से बात करने दारुल सफा जाता हूं । काफी बड़ी भीड़ है । जिसमें विधायक, संघ कार्यकर्ता, सामान्य कार्यकर्ता और सभी उपस्थित हैं । बड़े भाई सबकी बात धैर्य से सुनते हैं । तुरन्त समाधान करते हैं । सबका समय तय करते हैं। बीच-बीच में उन्मुक्त हंसी विनोद ।

मैं दूर खड़ा रहता हूं कि भीड़ कम हो तो बात करें । बड़े भाई बुलाते हैं । जानकारी चाहते हैं । मैं कहता हूं बड़े भाई कल आम सभा की व्यवस्था में व्यस्त रहूंगा । आपको लेने किसी को भेज दूंगा । "नहीं" कोई जरूरत नहीं । मैं स्वयं आ जाऊंगा । निश्चित समय से दस मिनट पूर्व बड़े भाई सभा स्थल आ गये । मैं व्यवस्था में व्यस्त हू । बड़े भाई के स्वागत हेतु दूसरे पुराने कार्यकर्ताओं को खड़ा करता हूं । भाषण समाप्त । बड़े भाई चलने को तैयार । मुझे अलग ले जाकर कहते हैं "तुम मण्डल मन्त्री हो न मैंने कहा "हां" तो मुझसे पहले तुम्हें बोलना चाहिए । कुर्सी, माईक, माला सब तुम्हीं क्यों ढो रहे हो । क्या अन्य कार्यकर्ता नहीं है" । मैंने कहा—"मैंने जुटाया नहीं" । उन्होंने पूछा क्यों ? "देखो यदि स्वयं माईक पकड़ना नहीं सीखोगे और तो दूसरों को कार्य सौंपने की आदत न डालोगे तो सफल कार्यकर्ता कभी नहीं बन पाओगे ।"

भारतीय रेलवे मजदूर संघ का लखनऊ अधिवेशन अक्तूबर १९८० में तय हुआ । २३ जुलाई भारतीय मजदूर संघ स्थापना दिवस पर बड़े भाई लखनऊ में थे । कार्यक्रम समाप्त होने पर मुझे और श्री के० वी० एल० राव को रोक लिया । अधिवेशन की चर्चा चलाई । इसके पूर्व हम लोगों ने बड़े भाई से कोई बात नहीं की थी । स्थान तय हुआ । धन संग्रह के कूपन छपे । अभ्यागतों को पत्र गए आदि, प्रश्नों पर हमने कहा बड़े भाई अभी तो बहुत समय है, देख लेंगे । बड़े भाई बोले, स्थान एक हफ्ते मे तय करके बुक कराओ, कूपन पत्रक भी तत्काल छपने को दो, फिर बात करना । ऐसे ही अधिवेशन नहीं हो जाएगा । मेरी बैठक कार्यकर्ताओं के साथ शीघ्र तय करो । अधिवेशन करना क्या मजाक है ।

पहली बार बड़े भाई की डांट पड़ी । स्थान तय हुआ । शौचालय से लेकर मच, भोजन धन आदि सभी विषयों पर घण्टों बैठ-बैठ कर बड़े भाई जानकारी देते रहे । मैं सोच रहा था क्यों इन छोटी-छोटी बातों के पीछे बड़े भाई पड़े हैं । मेरे विचार से सम्पूर्ण व्यवस्था व्यवस्थित रूप से सुदृढ़ हैं । पर यह क्या, अधिवेशन की पूर्व संध्या पर व्यवस्थाओं की त्रुटियां-कमियां सामने आने लगीं । देख रहा हूं, बड़े भाई हर समस्या का समाधान बता रहे हैं । हर बात की जानकारी उन्हें बहुत पहले से बिना बताए कैसे है ? अपनी भूल को छिपाने की कोशिश करता हूं । किन्तु वह तो बड़े भाई की नजर में अपने आप आ गई है ।

अधिवेशन समाप्त होने के पश्चात् । आधे घण्टे के लिए प्रमुख कार्यकर्ताओं समेत हमें अपने कमरे पर बुलाते हैं । फैडरेशन के कोषाध्यक्ष श्री जोशी और महामन्त्री वहां पहले से उपस्थित हैं । पूछा "शर्मा जी अनुमानित घाटा तुम्हें कितना लग रहा है ।" मैंने कहा "मैं पूरा कर लूंगा । मेरी जानकारी में कोई घाटा नहीं है ।" श्री जोशी की ओर मुड़ते हैं । अलमारी की ओर इशारा करते हैं, बैग निकालो । रुपये गिनो, पूरे रुपये हैं । "शर्मा को ४,००० रुपये दो लगभग इतना ही कम पड़ेगा ।" न चाहते हुए भी मैं रुपये ले लेता हूं । यह सोचकर कि बाद में वापस कर दूंगा पर बाद में जब हिसाब लगाता हूं तो पाता हूं कि लगभग चार हजार की वास्तव में कमी थी ।

कभी उफ् नहीं की

१९८२ पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ का अधिवेशन । मुझे जबरदस्ती महामन्त्री चुना जाता है । मैं बलपूर्वक इन्कार करता हूं, क्योंकि मुझमें क्षमता नहीं है । मैं रोने लगता हूं । बड़े भाई अलग बुलाते हैं । प्यार से समझाते हैं,—कार्य तो सभी कार्यकर्ता मिलकर करते हैं । जहां कठिनाई होगी, मुझसे पूछना । मैं तैयार होता हूं । बाद में पूछता हूं—बड़े भाई महामन्त्री तो बना दिया अब कार्य करने का तरीका भी बताइए । वे बोले देखिये शर्मा जी मां-बाप बेटे की शादी तो करते हैं । बाद की बातें लड़के को करनी होती है । हंसी का ठहाका ।

आर० डी० एस० ओ० में कार्यकर्ता बैठक है । काफी पढ़े लिखे फर्राटे से अंग्रेजी बोलने वाले कर्मचारी अपनी स्थानीय समस्या पर बोलते चले जाते हैं । मैं उनकी बात समझ नहीं पाता । मैं सोचता हूं बड़े भाई अभी क्या जवाब देंगे । यह क्या बड़े भाई ने बीच में टोक दिया "बस करो, आप यह-यह-यह ही तो कहना चाहते है, कोई नई बात ? "नहीं" । एक लाइन में समस्या का सामधान बड़े भाई दे देते हैं ।

गेट मीटिंग है । हजारों की भीड़ है । बड़े भाई आंकड़ों पर आंकड़े दिये चले जा रहे हैं, जैसे कोई कम्प्यूटर बोल रहा हो ? बड़े भाई की मीटिंग पूर्व से तय है । मैं उन्हें लेने जाता हूं । बड़े भाई कहते हैं चलो चल रहा हूं । उनके चेहरे पर कुछ थकावट दिखाई देती है । मैं कहता हूं "बड़े भाई कुछ तकलीफ है क्या । कहते हैं नहीं तो । चलो नीचे रिक्शा लाओ । मैं आ रहा हूं" । मैं आगे आकर रुक जाता हूं, देखता हूं बड़े भाई सीढ़ियों का सहारा लेकर धीरे-धीरे उतर रहे हैं । आगे समतल जमीन है तो भी चलने में कठिनाई हो रही है । मैं पुन कहता हूं—कार्यक्रम स्थगित करा देता हूं । वे मना करते हैं । मीटिंग के बाद देखता हूं बड़े भाई के चेहरे पर असीम पीड़ा के चिन्ह हैं, किन्तु प्रकट नहीं करते । पूछने पर प्रायः इतना बताते हैं कुछ दर्द है ठीक हो जाएगा ।

उन्हें छूना भी पाप है

२६ जून, १९८४ श्रमिक संघ के अधिवेशन में महामंत्री पद से हटने की प्रार्थना करता हूं । बड़े एक प्रार्थना है । बोले—कहो । मैंने कहा "पत्नी की तबियत बहुत खराब रहती है,

पुत्र भी रोगी है। घर की स्थिति ठीक नहीं है। किसी अन्य को मेरा दायित्व दे दीजिए"। बड़े भाई कुछ नहीं बोलते—उनके चेहरे और आंखों में असीम पीड़ा की झलक देखता हूं। "मुझे तुम्हारी स्थिति का ज्ञान है क्यों बार-बार पत्नी-बच्चे का नाम लेते हो।" मैं चुपचाप लौट आता हूं। कार्यकर्ता बैठक हो या ग्राम सभा, बड़े भाई अपनी स्पष्टवादिता के लिए प्रख्यात हैं वह कहा करते थे कि जो किसी भी यूनियन का मेम्बर नहीं है उन्हें छूना भी पाप है। जिनका जीवन आफिस से बीबी और बीबी से आफिस तक है वे क्या करेंगे।

सारे कमंद काट डाले

जब बड़े भाई एम० एल० सी० थे भाभी जी एक बार लखनऊ आयीं। कस्तूरबा की प्रतिमूर्ति उस त्यागमयी को बड़े भाई कभी किसी प्रकार का आराम शायद नहीं दे सके थे। यहां भी प्रकृति ने क्रूर मजाक किया। आने के कुछ समय बाद ही भाभी जी बाथरूम में फिसल कर गिर गई। उनके पैर की हड्डी टूट गई। उसी दिन बड़े भाई को बाहर प्रवास पर जाना था। संयोग से मैं बड़े भाई के कमरे पर पहुंचा। बड़े भाई बोले चलो अच्छा हुआ, तुम आ गये। मुझे आज बाहर जाना है। अपनी भाभी की चिकित्सा व्यवस्था संभालो। मैंने कहा हम लोग देख तो लेंगे किन्तु यदि बहुत जरूरी न हो आप रुक जाएं। बड़े भाई बोले "जरूरी किसे कहते हैं, जब जाना है तो जाना है।" और ये चले गए।

कैलाश नाथ शर्मा
महामंत्री,
पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ लखनऊ

कथनी और करनी एक

आठ मार्च १६८० को मेरा पैर टूट गया। मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित सरसुन्दर लाल अस्पताल में भर्ती था। बड़े भाई समाचार सुनकर तत्काल अस्पताल पहुंचे। बोले "तिवारी जी चिन्ता न करें, परिवार वालों से एक भी पैसा मत लीजिएगा, नहीं तो कहेंगे कि इस हालत में परिवार ही काम आया, संगठन वाले कहां गये। सारी व्यवस्था संगठन करेगा।" मैं आठ माह अस्पताल में रहा। बड़े भाई हर माह मुझे देखने आते रहे। श्री लक्ष्मीनारायण केसरी अध्यक्ष अखिल भारतीय सुगर मिल मजदूर संघ ने बताया कि, आपकी चोट के बारे में पटना में कार्यकर्ताओं से बड़े भाई ने बताया था। बहुत ही दुःखी थे वे।

श्री अत्रिदेव तिवारी,
प्रदेश उपाध्यक्ष,
भा० म० सं० (उ०प्र०) गोरखपुर।

अपनत्व

घटना १६८३ की है। महीना अप्रैल या मई का रहा होगा। भारतीय कृषि मजदूर महासंघ का प्रथम अधिवेशन महाराष्ट्र के बुलढ़ाना नामक स्थान पर होना था। पंजाब प्रांत से मैं अकेला प्रतिनिधि जा रहा था। हमारा आरक्षण दिल्ली से भुसावल तक था। दिल्ली में साऊथ एवेन्यू पहुंचने पर श्री अग्घी जी ने बताया कि बड़े भाई तुम्हारे साथ जा रहे हैं। बड़े भाई की शायिका आरक्षित थी, मेरा नाम प्रतीक्षा सूची में था। पर था बड़े भाई वाले डिब्बे में ही। बड़े भाई ने मुझे अपनी सीट पर बैठा लिया और कन्डक्टर से बात करने लगे। बहुत आग्रह के बाद लगभग १२.३० बजे मुझे शायिका दिलवाने में उन्हें सफलता मिली। जब तक मुझे शायिका नहीं मिली बड़े भाई स्वयं जागते रहे। मैंने कई बार आग्रह किया कि आप तो आराम कीजिए। लेकिन आराम कहां।

दीनानाथ (अमृतसर)

आराम हराम

दिल्ली क्लाथ मिल गेट पर बड़े भाई को प्रातः साढ़े पांच बजे लाकर भाषण कराना था। इसलिए मैं रात को ही विट्ठल भाई पटेल हाऊस, जहां बड़े भाई रुके हुये थे, जाकर सो गया। रात को १२ बजे तक मैंने बड़े भाई को काम में व्यस्त देखा और जब मैं प्रातः चार बजे उनको सोते से जगाने पहुंचा तो वह स्नान आदि से निवृत्त होकर तैयार थे और मैं हैरान था।

हरिराम डागर,
महामंत्री,
कपड़ा मिल मजदूर संघ, दिल्ली।

निःश्छल, निर्मल, निष्कपट

दिनांक २१ एवं २२ जून, १९८१ को अखिल भारतीय फर्टिलाईजर और कैमिकल मजदूर संघ का प्रथम अधिवेशन सिन्दरी (धनबाद) में सम्पन्न हुआ। जिसे बाद में बड़े भाई ने स्थापना सम्मेलन के नाम से घोषित किया।

कार्यक्रम समाप्त होने के पश्चात् वे सभी कार्यकर्ताओं से व्यक्तिगत तौर पर मिले। सभी से परिचय किया। उनके मृदु स्वभाव मधुर भाषा एवं विशाल हृदयता और स्पष्ट विचारों को देख-सुनकर उनके आदर्शों के अनुरूप सिन्दरी के कार्यकर्ता आज तक भारतीय मजदूर संघ के काम को आगे बढ़ाने में दिलोजान से जुटे हुए है। उस समय सिन्दरी में फर्टि-लाईजर उद्योग में हमारी यूनियन ने नया-नया काम शुरू किया था। बड़े भाई ने कलकत्ता में हुए भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय अधिवेशन में कार्यक्रम लेने का निमन्त्रण दिया

था जिससे स्वीकार करते हुए हम सभी कार्यकर्ताओं को बड़ी खुशी हुई थी। कार्यक्रम सफल हुआ।

हम लोगों की सबसे चिरस्मरणीय बात यह थी कि उस अधिवेशन की समाप्ति पर २२ जून को खुला अधिवेशन एवं आम सभा का कार्यक्रम था। आम सभा संध्या ६ बजे से थी। आम सभा में हजारों की भीड़ थी। जब बड़े भाई का भाषण शुरू हुआ उसी समय भीषण वर्षा एवं तेज हवाएं चलने लगीं। सभा में आये लोग सभा स्थल छोड़ कर भागने लगे। लेकिन बड़े भाई ने अपना ओजस्वी भाषण जारी रखा। बल्कि यूं कहा जाए कि बड़े भाई के भाषण में और गति आ गई जिसे सुनकर जो लोग मैदान से भाग रहे थे वे मैदान के किनारे-किनारे लगी दुकानों एवं अन्य स्थानों में खड़े होकर तथा बहुत से लोग पानी में भीगते हुए उसी प्रकार मैदान में खड़े रह कर भाषण सुनने लगे। उनका भाषण छोड़कर कोई भी नहीं गया। बाद में बड़े भाई सिन्दरी में काम करने वाले श्रमिकों जनता, व्यवसायी युवक सभी वर्ग के बीच चर्चा का विषय बन गये।

अशोक प्रसाद,
सचिव भारतीय मजदूर संघ,
धनबाद जिला।

कोई काम छोटा नहीं

पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ का क्षेत्रीय अधिवेशन गोरखपुर में होने वाला था। मैं इस क्षेत्र में नया-नया आया था। मुझे बड़े भाई के टिकट रिजर्वेशन और गाड़ी में बैठाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। रिजर्वेशन करा कर टिकट मैं बड़े भाई को एक दिन पहले ही केशव भवन लखनऊ दे आया था।

२४ जून की रात्रि ५०८ डाउन गाड़ी से लखनऊ से सभी लोगों को जाना था। मैंने बड़े भाई से आग्रह किया था कि आपको लेने आऊंगा किन्तु उन्होंने मना कर दिया था। कहा था कि तुम अन्य काम देखो। मैं स्वयं स्टेशन आ जाऊंगा।

मैं स्टेशन पर इन्तजार कर रहा था कि बड़े भाई अन्दर घुसते दिखाई पड़े। आगे बढ़ा तो देखा कि वे अपने कन्धे पर बड़ा सा झोला लटकाये हुए थे। मैं झोला लेने लपका तो उन्होंने रोकना चाहता। उनके कन्धे से झोला लेकर जब मैंने अपने कन्धे पर रखा तो पता चला कि झोला कम से कम २० किलो वजन का होगा। संभवतः उसमें पुस्तकें, साहित्य आदि था। मैं सोचने लगा कि बड़े भाई को इसके लिए कुली करना चाहिए था, किन्तु पूछ न पाया।

अशोक कुमार शुक्ला,
मंडल मंत्री
पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ लखनऊ

हिंसा कभी नहीं अपनाएंगे

उन दिनों मैं नया-नया भारतीय मजदूर संघ में आया था। मुझे मीरजापुर के घोर जंगलों में नेपाली मजदूरों के रहने का समाचार मिला। उनकी दशा देखकर मैं बहुत ही दुःखी हुआ। ठेकेदार का जुल्म और उसकी क्रूरता सीमा पार कर गई थी। एक रात जगल का वह ठेकेदार हमारी पकड़ में आ गया। हमने उसे रात भर घेरे में रखा। प्रातः रस्सी से बांध कर जला देने की तैयारी कर ली। उस समय मजदूर सघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री वीरेन्द्र भटनागर के समझाने पर उसकी जान बच गयी। यह घटना बाद में बड़े भाई को मालूम हुई। वे अपनी असम की यात्रा स्थगित करके मुझसे मिलने आये। रात्रि को अकेले में मुझसे जानकारी प्राप्त की। फिर मुझे से बचन लिया कि भविष्य में कभी भी हिंसा नहीं अपनाओगे।

मैं अपने जीवन में कई उच्च कोटी के नेताओं के साथ रहा हूं। किन्तु इस प्रकार का सादा जीवन व्यतीत करने वाला पुरुष मेरी नजर में नहीं आया, जो मीरजापुर के इस दक्षिणांचल में मेरे साथ जंगल में जमीन पर रात भर सोया हो।

यह शक्ति प्रभु मुझे दे।

प्रदीप चक्रवर्ती,
मीरजापुर (उ० प्र०)

कार्यकर्ता का मन और मान

रांची (ए० ई० एस० बिहार) में १८ जुलाई, १९७९ को बड़े भाई के निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार एक ग्रामसभा आयोजित की गई। मैं महामंत्री के पद पर था।

रात्रि में कार्यकर्ताओं की बैठक समाप्त होने के पश्चात् वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने कुछ लोगों से बड़े भाई को अलग-अलग एक बन्द कमरे में बात करने का आग्रह किया। बड़े भाई ने सभी के साथ एक-एक करके बात की। स्वभाववश मैंने बिना पूछे कुछ भी कहना उचित नहीं समझा और बाकी व्यवस्थाओं में लगा रहा।

बड़े भाई बिहार भारतीय मजदूर संघ की बैठक के लिए प्रस्थान कर रहे थे। मैं उन्हें रांची बस अड्डे तक विदा करने गया। उन्होंने पूछा तुम उत्तर प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में आ रहे हो। तो मैंने कहा हां। वे बोले तुम से कोई बात नहीं हो पायी है, अब वहीं बात होगी।

२१ जुलाई, १९७९ को मैं बैठक में पहुंचा। प्रथम कार्यवाही समाप्त होने के पश्चात पांच मिनट के अवकाश की घड़ी में बड़े भाई मुझे तथा सुरेश प्रसाद सिन्हा-प्रदेश संगठन मन्त्री को अलग बुलाकर दरी पर बैठ गये। मुझसे बोले तुम्हारे बारे में मुझे कोई आशंका नहीं है। किन्तु कुछ विवाद सुनने में क्यों आ रहा है? मैंने कहा आप जो कह रहे हैं कुछ हद तक सही है। अपने पुराने मित्र कार्यकर्ता जो आपत्काल में रिटर्न पर नाम दिये जाने पर मुझे तरह-तरह की बातें कह रहे थे कि क्यों उनका नाम भेजा गया वे आज पद प्राप्त करने के लिए जहां शिकायत कर रहे हैं वहीं दिन प्रतिदिन कार्यक्रमों में गतिरोध भी उत्पन्न कर रहे हैं। बाधाओं के बावजूद मैं कार्य बढ़ाने की गति तेज करता रहा हूं, साथ ही उन्हें ससम्मान आदर देता रहा हूं। कार्य की वृद्धि एवं उपलब्धियां बढ़ी हैं। किन्तु सबका दिल जीतने पाने में मैं सफल नहीं हो पाया। अत: कुछ साथी चाहे जिस वजह से नाराज हों, इसमें संगठन कुशलता की अपनी कमी मानता हूं। यह दायित्व आप किसी और को दे दीजिये।

कालान्तर में प्रदेश कार्यसमिति में मुझे प्रदेश मन्त्री का दायित्व दिया गया और मेरे स्थान पर हटिया श्रमिक संघ में उन्हीं मित्रों को लाया गया, जिनकी मैंने सिफारिश की थी।

अमर किशोर झा,
प्रदेश मंत्री,
भारतीय मजदूर संघ (बिहार)

अनुपम पारखी

१९-२० फरवरी, १९८३ को जमशेदपुर में इंजीनियरिंग उद्योग महासंघ का प्रथम अधिवेशन हुआ। बड़े भाई दिन भर के कार्यक्रमों के पश्चात् १९ फरवरी, १९८३ की संध्या साकची की ओर मुझसे तथा रघुवंश सिंह के साथ बातें करते हुए घूमने निकले। रघुवंश सिंह अपने संगठन के बारे में बहुत मामूली प्रश्न उनसे पूछ बैठे। बड़े भाई ने जवाब देने में कुछ देर की। इसी बीच मैं रघुवंश से पूछ बैठा कि आप स्वतः अच्छी तरह जानते हैं, फिर यह शंका क्यों? मैंने कहा मेरी समझ में यह बात इस प्रकार है। उस समय बड़े भाई चुप रहे। श्री रघुवंश सिंह जब किसी कार्य से थोड़ी दूर हुए, तो मुझसे बोले यह बात जो तुमने स्पष्ट की वह सही है, किन्तु तुमको नहीं बोलना चाहिए था। यही बात वह मुझसे सुनना चाहता था। मैंने कहा तब तो मुझसे गलती हुई। मैंने समझा कि इन्हीं सब विषय पर दिन भर व्यस्त रहने के पश्चात घूमने के क्रम में मन को हल्का करने निकले हैं तो पुनः उन्ही विषयों पर आपसे कहलवाने से मन बोझिल होता। बड़े भाई कुछ नहीं बोले।

कार्यकर्ता के भाव को गहराई से देखने की उनकी इस घटना को मैं जीवन भर भूल नहीं सकता।

भक्त और अनासक्त

राम नरेश सिंह (बड़े भाई) एक आदर्श, चरित्रवान, विवेकशील व्यक्ति और दृढ़ निश्चयी पुरुष थे। वे समय का मूल्य अच्छी तरह जानते थे। कभी बेकार नहीं बैठते थे।

जब कभी कार्यकर्ताओं के साथ बैठते थे तो अपने अनुभवों के आधार पर कार्यकर्ताओं में कार्य के प्रति दृढ़ निश्चय की भावना भरने का पूर्ण प्रयास करते थे। एक बार वाराणसी

में कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ बैठे थे। जब वे संघ के कार्य में थे, उस समय की एक घटना सुनाई। मां विन्ध्यावासिनी (विन्ध्याचल) मन्दिर के संबंध में बताते हुए कहा कि "एक बार विन्ध्याचल पण्डा परिवार के कुछ स्वयंसेवक प्रात: शाखा पर आये तो बड़े प्रसन्न दिखाई दिये। उनकी प्रसन्नता के सम्बन्ध में पूछने पर उन सबने बताया कि बड़े भाई आज लुचकी में मां के प्रसाद के रूप में हम लोगों को घड़ी, सिकड़ी आदि-आदि सामग्री प्राप्त हुई है।" इस पर बड़े भाई ने पूछा कि यह लुचकी किस प्रकार का चढ़ावा अथवा प्रसाद है। उन स्वयंसेवकों ने बताया कि दर्शनार्थियों की भीड़ में दर्शन के समय जो सामग्री हम लोगों के हाथ लगती है वह लुचकी कही जाती है और यह मां का प्रसाद है। इस पर काफी तर्क-वितर्क हुआ। स्वयंसेवक कह रहे थे कि यह कोई घृणित कार्य नहीं है। यह मां के प्रसाद के रूप में ही हमें प्राप्त होता है। बड़े भाई ने काफी प्रयास के बाद उन स्वयंसेवकों के गले यह बात उतारी कि नहीं यह घृणित कार्य है। उससे विरक्त रहने का आग्रह किया। उसमें सफलता प्राप्त की। यह कार्य बड़े भाई के घुलने-मिलने और आत्मिक सम्बन्ध के कारण ही सभव हो सका था।

अशोक कुमार शर्मा,
महामन्त्री,
उत्तर प्रदेश रोडवेज कर्मचारी संघ

समाज की पीड़ा से पीड़ित

कई बार बड़े भाई के निकट रहने का सुअवसर मिला। वे संगठन कला के मर्मज्ञ थे। उनमें व्यक्ति का हृदय जीतने की अद्भुत कला थी।

चन्दौसी के एक वर्ग में मेरी ओर अतिथि व्यवस्था का दायित्व था। नितान्त नया होने के कारण मेरी व्यवस्था में अनेक अव्यवस्थायें रहती थीं। अनेक बार वरिष्ठ अधिकारियों की डांट सुननी पड़ती थी। बड़े भाई उस वर्ग में आये। निरन्तर प्रवास में रहने वाले बड़े भाई अनेक रोगों से ग्रसित थे। खान-पान में परहेज चलता था। इस वर्ग में बड़े भाई की मैं किसी प्रकार की चिन्ता नहीं कर सका, परिणामस्वरूप वे अस्वस्थ हो गये।

समाचार मिलते ही वरिष्ठ लोग मुझ पर नाराज हो गये। मुझसे बड़े भाई का, जो एक सामान्य कमरे में दरी पर लेटे थे। स्थान परिवर्तन करने के लिए कहा गया। मैं बड़ी ही आत्मग्लानि, अज्ञात भय और मन पर एक बड़ा बोझ लिये हुए बड़े भाई के पास पहुंचा। मुंह से बोल नहीं निकल रहे थे। मेरे साथ गये व्यक्ति ने मेरा परिचय करवाया। मैं सिमटा सा खड़ा था। बड़े भाई के मुंह पर मलाल नहीं था, भयंकर बीमारी में भी वे मुस्कराकर बोले, भाई तुम अव्यवस्था प्रमुख तो नहीं हो ? मेरी ओर देखकर साथ के सज्जन से कहा, अरे भाई लक्ष्मी जी, लगता है इस बेचारे को बड़ा परिश्रम करना पड़ रहा है। देखो, इसका चेहरा मलिन हो रहा है। और स्नेह से मेरा हाथ पकड़ कर अपने पास बैठा लिया। हाथ पकड़ते ही, अरे इसे, तो ज्वर है कहा और अपना सारा कष्ट भूल गये।

मेरी त्रुटि भूलकर अपने अन्तर का सारा स्नेह मुझ पर उड़ेल दिया। साथी सज्जन को भेजकर मेरे लिए औषधि मंगाया। जबकि उनके स्वयं के लिए औषधि की व्यवस्था अभी तक नहीं हुई थी। आगे दो दिनों तक वे उस वर्ग में रहे। अस्वस्थ अवस्था में भी स्वयं आकर

रात्रि में दो-दो बार मेरा ज्वर देखते थे। एक रात मैं उन्हें दूध पिलाने गया तो आधा पिया और आधा मेरी ओर बढ़ाकर कहा, देखो यह दूध वह मेरे स्वास्थ्य के लिए पियो। बहुत मना करने पर भी वह दूध मुझे आग्रह के साथ पिलाया और कहा "तुम्हें आजकल अथक परिश्रम करना पड़ता है। दूध अवश्य लिया करो।" आज जब बड़े भाई का नाम आता है तो उनकी वह स्नेहमयी स्मृति हरी हो जाती है।

आहुति

इस घटना के ठीक–दो वर्ष पश्चात् वर्ष १९८२ के जून मास में नागपुर के धर्मपेठ में बीमाकर्मियों के अखिल भारतीय अधिवेशन में मैं अचानक पहुंच गया था। वहां मान्यवर ठेंगड़ी जी के साथ परिचयात्मक वार्ता कर रहा था। बड़े भाई ने आकर पीठ परे हाथ रख-कर कहा "अरे नरेन्द्र, तुम यहां भी आ गये। तुम तो बड़े परिश्रमी हो।" चन्दौसी वर्ग का उदाहरण देकर मेरी प्रशंसा की। कितना विशाल हृदय था उनका। स्वयं के प्रत्यक्ष व्यवहार के साथ संगठन की इस शृंखला में मेरी जैसी कितनी कड़ियां उन्होंने जोड़ी होंगी। उनकी स्मरण शक्ति अत्यन्त ही तीव्र थी। आश्चर्य तो तब हुआ जब उसके लगभग एक वर्ष बाद हरदोई में डाककर्मियों की एक बैठक में मेरे द्वारा स्वयं का परिचय कराने के पूर्व ही मेरा नाम लेकर परिचय करा दिया। वहां भी उन्होंने मेरी प्रशंसा आरम्भ कर दी। संगठन में व्यक्ति का किस प्रकार सहज रीति से विकास किया जाता है, व्यक्ति के छोटे-छोटे दुर्गुणों को किस प्रकार दूर किया जाता हैं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण बड़े भाई का स्वयं का जीवन और व्यवहार था।

नरेन्द्र सिंह,
डाक विभाग,
हरदोई (उ० प्र०)

जरूरत है मजबूत मर्द संगठन की

पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ के लखनऊ स्थित मण्डल रेल प्रबन्धक कार्यालय में पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ के कार्यकर्ताओं के मध्य समस्याओं पर वार्ता करते समय दुधवा लखीमपुर रेलवे स्टेशन तथा दुधवा नेशनल पार्क के कर्मचारियों के उत्पीड़न एवं शोषण की करुण कहानी का वर्णन करते हुए दुधवा रेलवे स्टेशन पर कार्यरत पूर्वोत्तर रेलवे श्रमिक संघ के कार्यकर्ता श्री प्रेमप्रकाश श्रीवास्तव ने बड़े भाई से समस्याओं के समाधान हेतु मार्गदर्शन मांगा। बड़े भाई ने समस्या को ध्यान से सुनने के बाद बड़े ही सहज भाव से उत्तर दिया—रेलवे स्टेशन एवं दुधवा नेशनल पार्क (खुला शेरों का जंगल) में जिस समय बहादुर कार्यकर्ताओं का मजबूत और मर्द संगठन खड़ा हो जायेगा, समस्याओं का समाधान उसी समय स्वत: हो जायेगा।

सत्ता की राजनीति में एक सन्यासी

आपत्स्थिति के बाद केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनी। विधान सभा के चुनाव होने के बाद प्रदेशों में भी भारी बहुमत की जीत के साथ जनता पार्टी की सरकारों का गठन हुआ। उत्तर प्रदेश में सर्वप्रथम मुख्यमंत्री श्री रामनरेश सिंह यादव सहित जिन पांच नामों का निर्णय वरिष्ठ मंत्रियों के लिए तय किया गया, बड़े भाई उनमें से एक थे। श्री गणेश दत्त वाजपेयी को जब यह जानकारी मिली कि बड़े भाई का नाम मंत्रिमण्डल के लिए तय किया गया है—वह तुरन्त बड़े भाई के निवास पर मिलने आये। श्रम मंत्रालय के अतिरिक्त कोई अन्य मंत्रालय स्वीकार करने का आग्रह करते हुए कहा कि अब मेरा जीवन बहुत ही कम समय के लिए है। आपको और भी अवसर मिलेंगे। इसलिए अंतिम इच्छा है कि मुझे श्रम मंत्री बनाने में सहयोग करें। "बड़े भाई ने तुरन्त उत्तर दिया, मैं दल के प्रमुख नेताओं को जानकारी दे चुका हूं कि मेरा नाम सत्ता को राजनीति से न जोड़ा जाये। मुझे किसी भी स्थिति में

मंत्री नहीं बनना है। फिर भी यदि मेरा नाम लिया गया है तो भी मैं अपने निर्णय पर यथावत हूं। मैं मंत्री पद की शपथ नहीं लूंगा।"

श्री गणेशदत्त वाजपेयी ने जो दद्दू के नाम से जाने जाते रहे हैं, भावविभोर होकर बड़े भाई को अपने सीने से लगाते हुये कहा था—"आप वास्तव में हम सबके बड़े भाई हैं।" बाद में श्री गणेशदत्त वाजपेयी को श्रम मंत्री बनाया गया।

बड़े भाई की दूरदर्शिता

सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री पी. एन. भगवती जिस आवश्यकता को महसूस करते हुए श्रम विवादों के शीघ्र निपटारे हेतु अपीलेट ट्रिब्यूनल स्थापित करने की आवश्यकता महसूस करते हैं। बड़े भाई अपने विधान परिषद के कार्यकाल में १९८१ में अपीलेट ट्रिब्यूनल गठन के संदर्भ में उत्तर प्रदेश की विधान परिषद में भारी बहुमत से एक गैर सरकारी बिल पहले ही पास करा चुके हैं। विधानसभा द्वारा अब तक वह विधेयक पास न होने के कारण आगे कोई कार्यवाही नहीं हो सकी है।

प्रेम सागर मिश्र,
लखनऊ।

जेब खर्च केवल दस रुपये

कुछ समय पहले की बात है। भारतीय मजदूर संघ, २, नवीन मार्केट, कानपुर कार्यालय में बड़े भाई कार्यकर्ताओं से बातचीत कर रहे थे। मैं भी ओ. ई. फैक्ट्री से सायकाल छुट्टी के पश्चात् लगभग साढ़े छः बजे कार्यालय पहुंच गया। बड़े भाई तथा अन्य लोगों से नमस्कार करने के पश्चात् बैठना चाहता था कि बड़े भाई ने कहा—अरे भाई राम वचन नीचे दुकान से जाकर एक कोलगेट पेस्ट ले आओ। दस रुपये का एक नोट हाथ में दे दिया।

मैं-नोट लेकर दुकान पर गया, कोलगेट टूथ पेस्ट बड़ा साइज लगभग नौ रुपये में ले लिया। टूथ पेस्ट देने लगा। तो बड़े भाई ने कहा—अरे, यह क्या ले आये। मैंने समझा कोई गलती हो गई। पूछा बड़े भाई कोलगेट टूथ पेस्ट लाने के लिए ही तो आपने कहा था। क्या मुझसे गलती हो गई ? इस पर बड़े भाई बोले, अरे भाई, मेरे पास जेब खर्च के लिए केवल दस रुपये ही थे। आपने इतना बड़ा टूथ पेस्ट लेकर पैसा तो फंसा ही दिया साथ में मेरे लिए परेशानी भी बढ़ा दी। मेरे पास यह छोटा डिब्बा है जो बैग में पड़ा रहता है। इसमें एक साबुन, ब्रुश तथा टूथ पेस्ट और सेविंग का सामान रखता हूं। पेस्ट का यह पैकेट डिब्बे में नहीं आयेगा। बाहर रखने पर दबकर पेस्ट बह सकता है। साथ ही सफर में बैग का वजन भी बढ़ जाता है।

राम वचन मिश्र,
मंत्री,
हार्नेस फैक्ट्री मजदूर संघ, कानपुर।

सादगी की मूर्ति

बड़े भाई के नाम से विख्यात श्रद्धेय रामनरेश सिंह को काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से भारतीय मजदूर संघ के कार्यक्रम से बरेली जाना था। उसी गाड़ी से मैं भी सपरिवार अपने पारिवारिक कार्य से बरेली जा रहा था।

रेलगाड़ी नई दिल्ली के प्लेट फार्म पर खड़ी थी। बड़े भाई सिर पर अंगोछा बांधे, बगल में थैला लटकाये सामान्य यात्रा की तरह भीड़ में स्थान तलाश रहे थे। मैंने उन्हें देखा। नमस्कार किया। आरक्षित यान में बैठने के स्थान की व्यवस्था की। मेरे परिवार का उन्होंने आत्मीयतापूर्वक अभिवादन किया। कुशलक्षेम पूछा। यात्रा के दौरान मेरे साथ सहभोग किया। तत्पश्चात् पूरी यात्रा में "आर्गेनाइजर" एवं "पाञ्चजन्य" पढ़ते रहे। सायंकाल गाड़ी बरेली पहुंची।

पुष्पहार लिये हुए कार्यकर्ता काफी बड़ी संख्या में स्वागत के लिए आतुर थे। हम लोग प्लेटफार्म पर उतरे। बड़े भाई ने स्नेहभाव से हम लोगों के नमस्कार करने से पूर्व नमस्कार की मुद्रा में "अच्छा पाठक जी" कहा। मार्ग में वार्ता के समय उन्होंने पूछा था, इस बार उत्तर रेलवे कर्मचारी यूनियन का महामन्त्री किसको बना रहे हो। मैंने तुरन्त उत्तर दिया जिसे बनाने का आपका आदेश होगा। फिर मुस्कराते हुए मैंने कहा अभी श्री राजकुमार गुप्त जी को सोच रहे हैं। बड़े भाई कहने लगे प्रदेश बहुत बड़ा है। उन्हें प्रदेश हेतु मुक्त करो भाई।

स्टेशन से रिक्शा में चलते हुए श्रीमती जी कहने लगीं कि क्या बड़े भाई संघ के प्रचारक हैं। मैंने कहा। हां, किन्तु इस समय भारतीय मजदूर संघ के महामन्त्री हैं। कुछ दिन पूर्व श्रम मन्त्रालय की एक बैठक का दृश्य दूरदर्शन पर दिखाया गया था जिसमें बड़े भाई भी दूरदर्शन स्क्रीम पर दिखाई दिये थे। तभी पूरे परिवार को बड़े भाई के दर्शन हुए थे। देश के सबसे बड़े राष्ट्रवादी मजदूर संगठन के देश-विदेश में विख्यात इतने बड़े नेता की सादगी-सरलता ने उस दिन पूरे परिवार पर एक अमिट छाप छोड़ी थी।

महेश कुमार पाठक,
उप, महामंत्री,
उत्तर रेलवे कर्मचारी यूनियन
दिल्ली।

नेता नहीं, साथी

भारतीय मजदूर संघ के पूर्व महामंत्री देश के मजदूरों के आशा केन्द्र, श्रद्धेय (स्वर्गाय) बड़े भाई रामनरेश सिंह के दर्शनों का लाभ सर्वप्रथम उनके जवाहर नगर पधारने पर हुआ। मैं तब नया-नया ही मजदूर संघ के कार्य में आया था। आयुध निर्माणी जवाहर नगर (भंडारा) में मजदूर संघ का काम भी बिलकुल नये सिरे से श्री गोविन्द राव आठवले की प्रेरणा से एक साल पूर्व ही शुरू हुआ था। तब न मुझे मजदूर संघों में कार्य करते समय आने वाली कठिनाइयों का ज्ञान था, न कार्य की पद्धति के बारे में ही कुछ मालूम था।

बड़े भाई के नाम के बारे में यदा-कदा, समाचार पत्रों द्वारा जानकारी मिल जाया करती थी। सद्य: सामाजिक स्थिति तथा बड़े पदों पर स्थित व्यक्तियों के व्यवहार को देखते हुए बड़े भाई के बारे में भी मेरी सोच यही थी कि वे भी आधुनिक बड़े आदमियों जैसे ही व्यक्ति होंगे, जिन तक हम जैसे साधारण लोगों की पहुंच काफी दूर की बात होगी। लेकिन जब वे प्रत्यक्ष श्री गोविन्द राव के साथ जवाहर नगर आये तो उनके उस क्षणिक सहवास से यह अनुभूति हुई कि वे वास्तव में एक साधारण मानव के रूप में एक महामानव हैं।

उस दिन उनका भोजन-विश्राम मेरे छोटे से घर में ही हुआ भोजनोपरान्त उनके उचित विश्राम की व्यवस्था हम लोगों ने अन्यत्र कर रखी थी। लेकिन बड़े भाई तो मानो मेरे घर के ही एक सदस्य हों उसी अनुरूप उन्होंने मेरे क्वार्टर के उस छोटे से कमरे में ही वह भी बिना चारपाई के सीमेंट के फर्श पर दरी और चद्दर बिछाकर उस दिन आराम किया। मैं तो वास्तव में आश्चर्यचकित था कि देश के प्रमुख मजदूर संगठन का महामन्त्री और मार्गदर्शक इतना सादा तथा साधारण स्वभाव का भी हो सकता है। उनको पद की अहंकार छु तक नहीं पाया है, यह अनुभव मुझे उसी दिन प्राप्त हुआ।

प्रताप सिंह विष्ट,
आयुध निर्माणी, भंडारा,
(जवाहर नगर)

श्रम की आराधना

बात १९७८ के भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय अधिवेशन की है। यह अधिवेशन जयपुर (राजस्थान) में हुआ था। आपत्काल में भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदर्शित त्याग, साहस तथा कुशलता के परिणामस्वरूप श्रमिक वर्ग में भारतीय मजदूर संघ के प्रति विश्वास बढ़ा था। इसलिए कार्य भी बढ़ा था। अत: अधिवेशन के विभिन्न उत्तरदायित्वों का भार कुछ नवागंतुक कार्यकर्ताओं पर भी आया। मंच और पंडाल आदि बनाने का काम पिछड़ा हुआ था। यह दृश्य देखने में आया तो राजस्थान के कार्यकर्ताओं को कुछ कहे सुने बिना बड़े भाई अपने साथ श्री रमण शाह आदि बन्धुओं को लेकर पडाल खड़ा कराने में जुट गये। सजावट भी समय पर पूरी हो गई। अखिल भारतीय महामन्त्री का यह रूप सबने देखा कि श्रम ही उनके लिये आराधना थी अर्थात कार्य-भक्ति प्रधान।

धनप्रकाश त्यागी,
संगठन मंत्री,
राजस्थान प्रदेश।

कोरे भाषण भट्ट नहीं

बड़े भाई ९-१० अप्रैल, १९८३ को दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर (मुजफ्फरपुर) में भाग लेने आए थे। बोले, राणा जी चलिए मुजफ्फरपुर का परिभ्रमण करने चलें। मैंने कहा बड़े भाई तो फिर रिक्शा कर लेते हैं। उन्होंने कहा जब परिभ्रमण के लिए चले हैं तो रिक्शा की क्या जरूरत है। रास्ते में मेरे परिवार का हालचाल पूछने लगे। आपके कितने बाल-बच्चे हैं। "हमने कहा दो लडके हैं। एक इन्टर में पढ़ रहा है और दूसरा वर्ग दो में। फिर वे मजाक में पूछ बैठे कि दोनों में इतनी दूरी क्यों ? मैं मुस्करा कर रह गया। उन्होंने दोनों बच्चों के नाम भी पूछे। रास्ते में संगठनात्मक पहलुओं पर भी बातें करते रहे। इसी क्रम में यह भी पूछा कि तरणी बाबू जो रेलवे में गार्ड हैं उनको कार्यक्रम में नहीं देखा। क्या उन्हें कार्यक्रम की खबर नहीं मिली थी।" मैं कोई उत्तर नहीं दे पाया था।

बनारस में अखिल भारतीय विद्युत मजदूर संघ के अधिवेशन तथा हैदराबाद अधिवेशन में जब बड़े भाई से मुलाकात हुई तो उन्होंने मुजफ्फरपुर के हरेक कार्यकर्ता के बारे में पूछा। मेरे दोनों लड़कों का नाम लेकर उनका भी समाचार पूछा। कितनी आत्मीयता थी उनमें। भा.म. संघ की पताका उनकी छत्र-छाया में सबसे ऊंची फहराते हुए भारत में जितने भी अन्य श्रम संगठन हैं उसमें क्रमांक दो पर दावा करने की क्षमता बड़े भाई भाई ने ही उत्पन्न की है।

राणा देवनारायण सिंह
जिला मन्त्री,
भारतीय मजदूर संघ,
मुजफ्फरपुर (बिहार)

उच्च आदर्श–सादा जीवन

धनबाद जिले के कार्यकर्ताओं का एक दिवसीय सम्मेलन। बड़े भाई आए थे। कार्यकर्ताओं के लिए अलग रात्रि विश्राम करने की व्यवस्था थी और अधिकारियों हेतु अलग डी. वी. सी. गैस्ट हाऊस में। आमसभा के पश्चात् कार्यकर्ताओं की बैठक आदि कार्यक्रमों में रात्रि के ९-३० बज गये। गैस्ट हाऊस आते-आते १०-३० बजे। सभी लोग विश्राम करने चले गये पर बड़े भाई अपने कपड़े धोने में लग गए। सब लोग सो रहे थे, बड़े भाई कपड़े धो रहे थे। बड़े भाई अपने कपड़े कभी धोबी के यहां नहीं धुलवाते थे, हमेशा, स्वयं धोये हुए कपड़े को तह लगाकर बिस्तर के नीचे रखा करते थे। ताकि कपड़े पर लोहा करने की आवश्यकता न पड़े।

कुमार अर्जुन सिंह,
मत्री,
अ. भा. खदान मजदूर संघ।

विरोधियों का भी आदर

भारतीय मजदूर संघ कार्यालय २, नवीन मार्केट, कानपुर में एक पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया गया था। बड़े भाई से एक पत्रकार ने पूछा कि भाई जी कृपया आप यह बतलायें कि ट्रेड यूनियन नेताओं के पास मोटर कार और बंगला कैसे हो जाता है। उस पत्रकार ने यह भी जोड़ दिया था कि बड़े भाई मैं आपकी बात नहीं कर रहा हूं। क्योंकि आपके पास तो नहीं है। इस पर बड़े भाई ने हंस कर बड़ी सरलता से उत्तर दिया कि आप जिनकी बात कर रहे हैं उन्हीं से पूछ लें तो सही जानकारी हो जायेगी।

जुग्गी लाल सोनकर
कानपुर।

आसाधारण कर्तृत्व

सन् १९८२ में बड़े भाई का नागरिक अभिनन्दन 'थैली भेंट' कार्यक्रम उत्तरी कर्णपुरा क्षेत्र डकरा कोयलान्चल में था। महीनों से इस बात की चर्चा थी कि उनका प्रवास अपने डकरा क्षेत्र में होने वाला है। वे ट्रेन से डकरा आने वाले थे। लोगों की आशा थी कि जब इतने बड़े विद्वान व्यक्ति, संगठन के इतने बड़े वरिष्ठ अधिकारी आयेंगे तो देखते ही लोग पहचान जायेंगे कि अमुक व्यक्ति ही बड़े भाई महामंत्री भारतीय मजदूर संघ हैं।

जब जीप द्वारा उन्हें कार्यक्रम के स्थान "डकरा कोलियरी" लाया गया तो लोगों को जीप देखकर निराशा हुई। लोगों ने समझा शायद किसी विशेष कारणवश बड़े भाई नहीं आ सके हैं। क्योंकि देखने में कोई बड़ा नेता जैसा असाधारण व्यक्ति जीप में नजर नहीं आ रहा था। एक साधारण सा व्यक्ति धोती-कुर्ता पहने बैठा था, जो वेश, भूषा से ऐसा नहीं लग रहा था कि इतने बड़े संगठन का सबसे बड़ा अधिकारी होगा। किन्तु जब भारतमाता की जय का नारा गूंजने लगा और पूर्व परिचित कार्यकर्ताओं ने उनका परिचय दिया, तब सब लोगों ने जाना कि आगन्तुक व्यक्ति ही बड़े भाई हैं।

दूसरे संगठन के लोग कहने लगे कि क्या आप लोग इतने बड़े केन्द्रीय स्तर के नेता को इस प्रकार के कपड़े लत्ते में रखते हैं। पर कुछ कार्यकर्ताओं द्वारा बताया गया कि इतनी दूर से ट्रेन से सफर करके आ रहे हैं इसलिए उनकी वेशभूषा ऐसी है। किन्तु जब सायं ४-३० बजे जनसभा को सम्बोधित करने के लिये मंच पर पहुंचे तो भी उनकी वेशभूषा में जरा सा भी अन्तर नहीं था। वही भोलाभाला चेहरा और वही साधारण सी धोती और कुर्ता पहने मंच पर पहुंच गये। पर जब उन्होंने अपना भाषण आरम्भ किया और करीबन एक घन्टा बीस मिनट तक के सारगर्भित ओजस्वी भाषण में अपने उद्योग से लेकर देश-विदेश एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं तक पर आंकड़ों के साथ धाराप्रवाह वाणी में तथ्यों का वर्णन किया

तो लोग ग्राश्चर्यचकित रह गये। सारा जन समूह ड़ेढ घन्टे तक मन्त्र मुग्ध होकर उनका भाषण सुनता रहा।

कार्यक्रम के पश्चात् बहुत सारे लोग एवं कार्यकर्ता दबी जुबान से एक दूसरे को यह कहते सुने गए कि स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू ग्रौर इनके जीवन में जरा सा भी ग्रन्तर नहीं है।

तो ऐसे थे बड़े भाई। कुछ लोग वेश-भूषा, धन-सम्पत्ति से बड़े होते हैं तो कुछ लोग बुद्धि, विवेक, प्रतिभा ग्रौर ग्राचरण से बड़े होते हैं।

लाल शैलेन्द्र नाथ शाह देव
क्षेत्रीय सचिव सी. सी. एल.
कोलियरी कर्मचारी संघ,
उ. क. क्षेत्र ढकरा

चन्दन सी सुगन्ध, दीपक सा उजाला

उपदेश सभी देते हैं किन्तु जब उस पर आचरण करने का समय आता है तो अपनी ही कही हुई बातों को बड़ी चतुराई के साथ भुला देते हैं। किन्तु बड़े भाई केवल उपदेश देने वालों में से नहीं थे।

घटना १४ और १५ दिसम्बर, १९७४ की है। भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ का तृतीय अखिल भारतीय अधिवेशन कानपुर में आयोजित किया गया था। इस अधिवेशन में भाग लेने हेतु आयुध निर्माणी मजदूर संघ, अम्बाझरी नागपुर से हम चार प्रतिनिधि गये थे। दिनांक १३ दिसम्बर, १९७४ की रात में लगभग आठ बजे हम लोग अधिवेशन स्थल पर पहुंचे। हम चारों लोग एक दम नये थे और प्रथम बार ही अधिवेशन में भाग लेने गये थे। अतः हमारी किसी से जान पहचान नहीं थी। बड़े भाई से भी नहीं।

वे ठंड के दिन थे। नागपुर में विशेष ठंड नहीं पड़ती है। इसलिए हम लोग साधारण बिस्तर एवं पहनने के कपड़े साथ ले गये थे।

आदरणीय बड़े भाई सामने ही एक कमरे में अन्य लोगों से विचार-विमर्श करते हुए बैठे थे। उन्होंने हमसे पूछताछ की। मैं उस वक्त यूनियन का जनरल सैक्रेटरी था। अतः उन्हें जानकारी देने हेतु उनके पास बैठ गया। ठंड के कारण हमारी हालत को देखते हुए उन्होंने कहा आपको ठंड बर्दाश्त नहीं हो रही होगी उनका कहना तो सही था परन्तु झिझक के मारे मैंने कहा, "नहीं-नहीं ऐसी कोई बात नहीं है।" किन्तु उन्होंने आगे कुछ न बोलते हुए झट से एक शाल जो वे ओढ़े बैठे थे, उसे मेरी ओर बढ़ा दिया और कहने लगे मुझे सब पता है। नागपुर में कानपुर की तुलना में ठंड नहीं के बराबर होती है।

आज हमारे बीच हमारे वह भाई नहीं रहे, जिन्होंने अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक दीपक और चन्दन की तरह दूसरों को सदैव उजाला एवं खुशबू प्रदान की है। उनकी कमी लाखो मजदूर बन्धुओं को हमेशा-हमेशा महसूस होती रहेगी।

डो. एस. डहाके,
जोनल सैक्रेटरी,
भारतीय प्रतिरक्षा मजदूर संघ,
(विदर्भ विभाग)

श्री पिता जी

घटना उस समय की है जिस समय मैं कक्षा छः में चुनार में पढ़ता था और श्री पिता जी पर संघ कार्य की दृष्टि से मीरजापुर जिले का दायित्व था। मैं उस समय चुनार में एक किराये का कमरा लेकर रहता था। श्री पिता जी जब भी चुनार आते तो हम लोगों के कमरे पर अवश्य आते। हम लोग उनके भोजन की व्यवस्था विशेष प्रकार की करते तो वह कहते कि इतना खर्चीला (महंगा) खाना मत खिलाओ। नहीं तो मैं फिर तुम लोगों के कमरे पर नहीं आऊंगा। श्री पिता जी गांव (बगही) घर पर नहीं जाते थे। परन्तु चुनार हम लोगों से माह में दो-तीन बार अवश्य मिल लेते थे। उन दिनों जब भी उनके कपड़े बहुत गन्दे रहते, हम लोग उसे साफ करने के लिए मांगते थे तो पहले वह टाल-मटोल करते फिर देते हुए कहते थे कि देखना जरा सम्भाल कर साफ करना, बहुत अधिक निचोड़ना नहीं और न ही अधिक साबुन लगाना, इससे कपड़ा कमजोर हो जाता है।

पांच शब्दों का पत्र

जब कभी मैं उनको पत्र लिखता था तो उसका जवाब वे केवल पांच शब्दों में देते थे और हमेशा लिखते थे कि कोई बात लिखनी हो तो बड़े और साफ अक्षरों में लिखनी चाहिए।

जब श्री पिता जी भारतीय मजदूर संघ क्षेत्र में आये तो वर्ष में एक बार घर अवश्य आते थे। आने पर अपना कपड़ा साफ करने के लिए मुझे ही कहते थे। गांव आते समय पत्र केवल पांच शब्दों में लिखते थे। घर आने का समय जानकर मैं स्टेशन पर उन्हें लेने पहुंच जाता तो वे कहते कि तुम बेकार में परेशान होते हो। मैं तो घर ही आता। मैं रास्ता भी जानता हूं फिर कहीं भूलने का कारण नहीं है। स्टेशन पर पानी पीने के लिए कहता था तो वे कहते कि अरे, हम लोग घर ही तो चल रहे हैं न, वहीं पानी पी लेंगे।

मुफ्त का टॉनिक हानिकारक

श्री पिता जी जब एम० एल० सी० हुए तो जब कभी मैं लखनऊ जाता तो वे उस समय अधिकतर दौरे पर ही रहते थे। मैं रायल होटल के उनके कमरे में रहता था। उनके दौरे से आने के पहले मैं उनके लिए दूध खरीद कर रखा करता था। वे मुझसे कहते थे कि इसकी क्या आवश्यकता है। पैसा फिजूल नहीं खर्च करना चाहिए। घर से घी लाये हो न, वही ठीक है। दौरे से आने के बाद तुरन्त सभी कमरों को देखते थे कि कहीं बिना मतलब के पंखे तो नहीं चल रहे हैं। बत्ती तो नही जल रही है। यदि पंखा चलता बल्ब जलता देखते तो उसे बुझा देते थे। और कहते थे कि पंखे और बत्ती व्यर्थ में चलाना जलाना अच्छा नहीं होता, जरूरत हो तभी जलाया करो। जब मैं कहता था कि यह खर्च तो सरकार देती है, तो वह नाराज होकर कहते कि सरकारी पैसे और सामानों का दुरूपयोग नहीं करना चाहिए। सरकार का पैसा भी जनता का ही पैसा होता है।

जो होने वाला है, वही होता है

एक बार लखनऊ रायल होटल से लगभग २०० छोटी पुस्तकें जिनका वजन २५ किलो ग्राम था अपने झोले में लेकर कानपुर जाने के लिए तैयार हुए। मैं उस झोले को सड़क तक ही ले जा सका था। भारी झोले को देखकर रिक्शा वाले दुगना पैसा मांगने लगे। इस पर वे उस झोले को अपने कन्धे पर लेकर स्टेशन की तरफ चल पड़े। ऊपर चढ़ कर मैंने कमरे के दरवाजे पर से देखा कि वे कन्धे पर झोला लिए पैदल ही चले जा रहे हैं। बाद में मैंने उनको एक पत्र लिखा कि आप इतना सामान लेकर न चला करें। इस पर उन्होंने वही पांच शब्दों का पत्र लिखा कि कुछ नहीं होता जो होने वाला होता है वही होता है और वही होगा।

बस से आए हो या टैक्सी से

यह घटना उन दिनों की है जिस समय वह सर्वप्रथम बम्बई अस्पताल में भर्ती थे। जब हम लोग निवास से अस्पताल पहुंचे तो कुशलक्षेम जानने के बाद उन्होंने पूछा कि तुम लोग निवास से यहां तक किस साधन से आये, बस से या टैक्सी से ? मैंने कहा टैक्सी से आये हैं। वे बोले अब टैक्सी से नहीं आना। कारण बस का किराया एक रूपया है और टैक्सी का ३० रुपये। जब तुम एक रुपये में यहां आ सकते हो तो ३० रुपये व्यर्थ में खर्च करने से क्या लाभ परन्तु बस में भीड़ होने के कारण वहां के कार्यकर्ता हम लोगों को टैक्सी से ले जाते थे। इसके बाद भी हम लोग जब भी अस्पताल पहुंचते थे तो कुशलक्षेम पूछने के बाद तुरन्त पूछते थे कि बस से ही आये हो न। हम लोग झूठ बोल देते कि, हां, बाबू हम लोग बस से ही आये हैं। (लेखक बड़े भाई के भतीजे हैं और बड़े भाई को पिताजी कह कर सम्बोधित करते हैं प्राइमरी पाठशाला में प्रधानाचार्य हैं)

राजेन्द्र सिंह,
बगही जिला मीरजापुर,
(उत्तर प्रदेश)

हम तो ठहरे गांव के आदमी

सारे देश का प्रवास करते हुए दो-तीन मास में बड़े भाई का केन्द्रीय कार्यालय पर आना होता था। कभी-कभी काम की विशेष प्रकृति अथवा आवश्यकता की दृष्टि से श्रम-मन्त्री से वार्ता इत्यादि करने के लिए उनसे आग्रहपूर्वक प्रार्थना भी की जाती थी।

ऐसे ही एक प्रसंग पर जब हम दोनों श्रम मन्त्रालय जाने के लिए निकले, तो उन्होंने मुझे कहा कि अपने साथ लैटर पैड के दो-चार कागज ले लो।

मैंने उनकी इच्छानुसार लैटर पैड के कागज ले तो लिये, किन्तु साथ ही मन में यह आया कि इसकी कोई आवश्यकता तो नहीं है। अलग-अलग समय पर तीन बार ऐसा हुआ, उनकी इच्छा का पालन करते हुए पैंड के कागज लिए किन्तु कोई उपयोग नहीं हुआ।

आखिर चौथी बार जब हम दोनों एक साथ श्रम मन्त्री को मिलने के लिए गये तो वहां बातचीत ने ऐसी दिशा ली कि वहीं कुछ लिखकर देना आवश्यक हो गया।

जब मैंने उनको अपने मन की पहली वाली बात बताई तो बड़ी आत्मीयता से कहने लगे कि भाई हम तो ठहरे गांव के आदमी। सब प्रकार का इन्तजाम अपने पास रखते हैं। वजन चाहे कितना हो।

राजकृष्ण भक्त,
मंत्री,
भारतीय मजदूर संघ (दिल्ली)

"चु ट कि यां"

मेरे कम्बल में काफी छेद हो गये थे । बड़े भाई कई वर्षों से कह रहे थे इसे बदल लो । पर हर बार वही कम्बल वे देखते । फिर उन्होंने मुझे कम्बल बदलने के लिए कहना छोड़ दिया जब भी जहां मिलते कहते "मदन जी । कम्बल सम्भाल कर रखना लड़के की शादी में काम आयेगा ।"

माननीय साठ्य जी एवं मेरी लुंगी का रंग लाल था । केन्द्रीय कार्य समिति की बैठको में हम सभी होते, कई बैठकों तक में हमारी (मेरी एवं साठ्य जी) की लाल लुंगियां भी चलती रहीं । बड़े भाई बड़े मजाकिया स्वभाव से पूछते "मदन जी, आप दोनों ने एक ही साड़ी में से लुंगियां बनाई है क्या ? यह साड़ी किसकी पत्नी की है ।"

मैं गर्मियों में भी कम्बल ओढ़कर सोता हूं । दक्षिण में एर्नाकुलम में बैठक थी । मैं बड़े भाई के पास कमरे में ही था । मैंने एक सामान्य सूती चद्दर ओढ़ रखी थी । पता नहीं बड़े भाई को क्या सूझी । अन्य कार्यकर्ताओं की चादरें एकत्र करके मेरे ऊपर डालते गये । थोड़ा वजन होने पर मेरी नींद खुली । मैंने चद्दर मुंह से हटा कर देखा तो बड़े भाई खड़े थे । बोले, आप कम्बल नहीं लाये, इसलिए कम्बल का वजन पूरा कर रहा था ।

मदन लाल सैनी

मैं ही बड़े भाई हूँ

बड़े भाई थे तो बड़े लेकिन उनका रहन-सहन और जीवन बहुत ही सीधा-सादा था । उनकी अपनी खुद की आवश्यकताएं बहुत कम थीं । कपड़ों पर बहुत कम खर्च करते थे ।

मोटी धोती, मामूली गंजी और उसके ऊपर एक लंबा चौड़ा, माटी रंग का कुर्ता पहनते थे। तीन कपड़े शरीर पर और तीन कपड़े प्रवास में अपने साथ रखते थे। रोज स्नान के समय अपने कपड़े हाथ से धोते थे। रात में प्रवास को निकलते समय उन्हें अपने झोले में भर लेते थे। उसके साथ एक तौलिया, एक ऊनी शाल, दाढ़ी बनाने का सामान यही उनकी आवश्यकताएं थीं। बिस्तर माने एक थैला। अखिल भारतीय जनरल सैक्रेटरी के साथ प्रवास में यह थैला देखकर कोई भी ऐसा नहीं समझ सकता था कि ये बड़े नेता हैं।

महाराष्ट्र के पूणे में एन० ओ० बी० डब्ल्यू० का एक बड़ा अधिवेशन था। उस समय मैं उनके साथ था। द्वार के बाहर मुझे कुछ कार्यकर्ता मिले। उनके साथ बातचीत करने के लिए मैं रूक गया। उतने में बड़े भाई सभा मंडप के द्वार तक पहुंच गए। रक्षक कार्यकर्ता ने उन्हें रोक दिया। उन्होंने रक्षक से पूछा "आज के अधिवेशन का उद्घाटन कौन करने वाले हैं? कार्यकर्ता ने जवाब दिया, "क्या आप जानते नहीं कि आज हमारे मानवीय नेता बड़े भाई आ रहे हैं। "बड़े भाई जोर से हंसे उन्होंने कार्यकर्ता के कंधे पर हाथ रखा और कहा "दोस्त, मैं ही तो वही बड़ा भाई हूं।"

रमण गिरधर शाह,
मंत्री
भारतीय मजदूर संघ बम्बई

मजदूर नेता नहीं, सच्चे मजदूर

यह सत्य है कि आज आदरणीय रामनरेश सिंह (बड़े भाई) का पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है परन्तु उन्होंने अपने जीवन के जो आदर्श हमारे लिए प्रस्तुत किये, वे सदैव हमारे सामने रहेंगे, और पग-पग पर हमारा मार्ग-दर्शन करते रहेंगे। मुझे तो आज भी ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपने कर्म और वाणी से हमें आगे बढ़ने का आह्वान कर रहे हैं।

बड़े भाई मजदूर नेता थे। मजदूरों की तड़प उनमें थी। वास्तव में वे नेता नहीं थे। वे शारीरिक रूप से मजदूर, आध्यात्मिक रूप से संत और मानसिक रूप से दार्शनिक थे। यह बात प्रसिद्ध है कि संत के सम्पर्क में आते ही सांसारिक दुःख भाग जाते हैं और व्यक्ति एक प्रकार के आध्यात्मिक सुख का अनुभव करता है। बड़े भाई के साथ जिन्होंने कुछ क्षण बिताये हैं, वे जानते हैं कि उनके संसर्ग में घरेलू चिन्ता पास नहीं फटकती थी। मजदूर की भांति पुष्ट शरीर और सतत् परिश्रम। दिन और रात प्रवास और रिक्त समय में पठन, लेखन। मजदूरों सम्बन्धी तथा अन्य समस्याओं को हल करने में वे पटु थे।

उनके साथ व्यतीत किया हुआ एक क्षण भी जीवन के लिए एक यादगार बनकर रह जाता था। उन क्षणों के स्मरण-मात्र से मुझे लगता है कि वे हर समय मेरे साथ हैं।

१९८० का आरम्भ अर्थात् जनवरी की बात है। पुणे में १३ जनवरी से १७ जनवरी तक अभ्यास-वर्ग में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वर्ग में बड़े भाई उपस्थित थे। लगातार पांच दिन तक उनका मार्ग-दर्शन हमें प्राप्त हुआ था। वर्ग समापन के पश्चात् १७ जनवरी १९८५ की रात्रि को बड़े भाई पुणे के संघ कार्यालय में ठहरे। मुझे भी विवश होकर संघ कार्यालय में ठहरना पड़ा था। क्योंकि उस समय दिल्ली आने का कोई साधन नहीं था। सौभाग्य से मुझे बड़े भाई के साथ ही उनके कमरे में ठहरने का अवसर मिला।

मैंने कमरे का भली-भांति निरीक्षण किया। मेरे पास कपड़े रखने के लिए एक अटैची थी। मैं सोच रहा था कि बड़े भाई के कपड़ों की अटैची कहां है ? जो व्यक्ति अहर्निश प्रवास में रहता हो, उसके पास अटैची न हो, ऐसा होना आधुनिक युग के मनुष्य की समझ के बाहर हैं। मैंने ध्यानपूर्वक देखा। परन्तु अटैची के स्थान पर मेरी दृष्टि पड़ी एक साधारण और पुराने झोले पर, जिसमें बड़े भाई के कपड़े रखे हुए थे। मैं कभी बड़े भाई की ओर देखता और कभी उस झोले की ओर। अंतत: मुझसे रहा न गया। मैंने साहस बटोर कर पूछ ही लिया, बड़े भाई आपको दिन-रात प्रवास में रहना पड़ता है। आप एक विशाल संगठन के महामन्त्री है। आपको छोटे-बड़े हर व्यक्ति के पास जाना पड़ता है। आपका यह झोला रेशम के कपड़े पर टाट के पैबंद की भांति दिखाई देता है। मुझे देखिये। मेरी अटैची अच्छी तो है, ही, आराम देने वाली भी है।

बड़े भाई मेरी बात ध्यान-पूर्वक सुनते रहे। मैं चुप हो गया। उत्तर की प्रतीक्षा में उनकी ओर देखने लगा। उनके स्थान पर यदि कोई आधुनिक नेता होता तो न जाने कितनी बातें कहता। परन्तु बड़े भाई के रूप में वहां तो एक संत विराजमान था। वे कुछ देर शांत रहे। कमरे में निस्तब्धता थी। उनके होठों पर मधुर मुस्कान उभरी और फिर सहसा एक अट्टहास। मैं अवाक् उन्हें देखता रह गया। मेरी बात का उत्तर मुझे मिल चुका था। उस समय मुझे आभास हो रहा था कि मैं आकाश को छूते हुए एक विशालकाय देवता के सामने खड़ा हूं। मैं स्वयं को कितना बौना महसूस कर रहा था, यह बता नहीं सकता। उनकी हंसी में मेरे लिए और हम सबके लिए एक मूक पाठ था कि "जिस देश में मजदूरों के पास तन ढ़कने को वस्त्र तक नहीं है उस देश में उनके नेता को क्या अटैची शोभा देती है?"

राजकुमार गुप्त,
महामंत्री,
मजदूर संघ, (दि० प्र०)

मन के जरासंघ से संघर्ष करो

प्रचारक निकलने के पूर्व मैं आर. एम. एस. में नौकरी करता था। इलाहाबाद से स्थानान्तरित होकर प्रयाग के विभाग प्रचारक का पत्र लेकर कानपुर संघ कार्यालय इस विचार से आया था कि जब तक क्वार्टर नहीं मिलता तब तक संघ कार्यालय पर रहूंगा। उसी समय बड़े भाई का प्रथम निकट का परिचय हुआ। दिन भर भारतीय मजदूर संघ के कार्य हेतु वे नगर में घूमते रहते थे। रात्रि निवास संघ कार्यालय पर करते थे। कार्यालय पर कई विद्यार्थी रहा करते थे। सभी बड़े भाई की प्रायः प्रतीक्षा करते रहते। उनके आने पर हंसी का ठहाका वातावरण में गूंज उठता था। गप-शप में काफी रात हो जाती थी।

एक दिन मुझ से मजाक में किन्तु गम्भीर मुद्रा बनाकर बड़े भाई बोले—"तुम नौकरी करने आये हो, तो संघ कार्यालय पर क्यों आये, बहुत गलती कर रहे हो। नौकरी न करना हो तो यहां रहो। यहां जो नौकरी करने आया, वह नौकरी छोड़कर प्रचारक बन गया। अभी तक इस कार्यालय का यही इतिहास रहा है"। फिर कुछ नाम भी गिनाये। सम्प्रति वे सभी प्रचारक हैं।

बड़े भाई का जैसा स्वाभाव था उस हिसाब से कार्यालय पर रहने वाले जितने स्वयंसेवकों थे। उन सबके साथ उनका मित्रता का सम्बन्ध रहता था। पिता के समान उनकी चिन्ता भी करते थे। मैंने अपने मन में अहं बना लिया था कि मैं प्रचारक नहीं निकलूंगा। देखें, इस कार्यालय का ऐतिहासिक रिकार्ड टूटता है कि नहीं। किन्तु आगे कार्यालय का मस्ती का वातावरण जैसे-जैसे बढ़ता गया मेरा अहं टूटता चला गया। मैंने स्वतः प्रचारक निकलने

की इच्छा व्यक्त की। किसी अधिकारी या बड़े भाई ने प्रचारक निकलने हेतु कभी कोई दबाव नहीं डाला। प्रचारक निकल कर जब मैं अपने निर्धारित कार्यक्षेत्र के लिए जाने के पूर्व बड़े भाई से मिलने गया तो वे बड़े जोर से हंसे। बोले, "कहो बच्चू, तुम तो कहते थे कि मैं प्रचारक नहीं बनूंगा। अब तुम्हारा वह अहं टूट गया कि नहीं"। "सब आपका अशीर्वाद है बड़े भाई" यह कह कर मैं अपने कार्यक्षेत्र नें चला गया।

कुछ दिन कार्यक्षेत्र में रहने पर मन में कुछ कमजोरी आई। ऐसा लगा कि प्रचारक जीवन बहुत कठिन है। आगे नहीं चलेगा। अस्तु मन में वापस लौटने का विचार किया। अपने अधिकारियों ने सम्भवत: बड़े भाई को मुझसे बात करने को कहा होगा। संघ शिक्षा वर्ग के पश्चात् होने वाली प्रचारकों की बैठक में बड़े भाई से भेंट हुई। ऐसे ही हंसी मजाक करते हुए वे बोले "भाई सुना है तुम बहुत बड़ा महापुरुष बनना चाहते हो"। वे क्या कहना चाह रहे हैं कुछ समझ में नहीं आ रहा था फिर बात को स्पष्ट करते हुए बोले "सुना है तुम रणछोड़ बन रहे हो अर्थात् प्रचारक जीवन छोड़कर वापस जाने की सोच रहे हो"। तब ध्यान में आया कि बड़े भाई ऐसा क्यों कह रहे थे कि तुम बहुत बड़े महापुरुष बनने जा रहे हो। फिर उन्होंने मुझे अलग से ले जाकर प्रेम से समझाया कि मन के जरासंध से संघर्ष करो, भागने की आवश्यकता नहीं। उनके थोड़े समय की वार्ता का परिणाम था कि मन दृढ़ करके पुन: मैं अपने कार्यक्षेत्र में चला गया। बहुत दिनों तक बीच-बीच में उनका पत्र मार्गदर्शक का काम करता था। आज जो कुछ हूं सब उन्हीं के कारण सम्भव हो पाया। मेरी योजना जब भारतीय मजदूर संघ के लिए हुई तो सोचा था चलो अब २० वर्ष बाद बड़े भाई का पुन: सानिध्य प्राप्त होगा।

किन्तु दुर्दैव कि उनका अधिक दिनों तक सानिध्य प्राप्त न हो सका। मन की बहुत कुछ बातें उनसे हो जाया करती थीं। अब वही हंसी-मजाक का वातावरण कहां मिलेगा। उनका जीवन साधनामय था। सतत संघर्षशील। सदैव मस्ती के साथ बड़े से बड़े कार्य को पूर्ण करने वाले ऐसे साधक को शत्-शत् प्रणाम।

रामदौर सिंह,
प्रदेश संगठन मन्त्री,
भारतीय मजदूर संघ (उ. प्र.)

हम हारे, वह जीते

बड़े भाई फरवरी, १९८५ में बम्बई से चिकित्सा कराकर कुछ दिनों के लिए दिल्ली आये। वहां से सम्भवत: २५ फरवरी, १९८५ को काशी विश्वनाथ से उनको वाराणसी जाना था। लखनऊ स्टेशन पर संघ के एकाध प्रमुख कार्यकर्ता उनसे भेंट करने आये। अधिक भीड़ न हो, इस प्रकार की सावधानी बरतते हुए दिल्ली संघ कार्यालय से श्री शिवप्रसाद जी का फोन लखनऊ संघ कार्यालय को प्राप्त हुआ। संघ कार्यालय से मुझे सूचित किया गया कि काशी विश्वनाथ से बड़े भाई आज वाराणसी जा रहे हैं। मैंने भारतीय मजदूर संघ के कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं से उनके आने के सम्बन्ध में चर्चा की। फिर क्या था, स्टेशन पर लगभग सौ कार्यकर्ताओं का झुण्ड उनके दर्शनार्थ उपस्थित था।

कार्यकर्ताओं को यह निर्देश दिया गया था। कि गाड़ी रात्रि में ११ बजे आती हैं। इसलिए बड़े भाई सम्भवत: सोते हुए मिलें। उनको जगाना नहीं है। यदि जागते हुए मिलें तो उनके दर्शन कर लिया जायेगा। गाड़ी आयी। प्रथम श्रेणी के सारे डिब्बे देखे गये। अधिकांश खिड़कियां बन्द थी। बड़े भाई दिखाई नहीं दिये। वे प्रगाढ़ निन्द्रा में सो रहे थे। कार्यकर्ता उनके दर्शन हेतु लालायित थे। उनके दर्शन का लोभ वे संवरण नहीं कर पाये। भारतमाता की जय के गगनभेदी नारों से सारा वायुमण्डल गुंजा दिया। भारतमाता की जय सुनकर बड़े भाई की नींद खुल गयी। श्री रामदास पांडे ने खिड़की खोली। सभी कार्यकर्ताओं ने खिड़की से ही उनके दर्शन किये। लेटे हुए बड़े भाई को माल्यार्पण भी किया। कार्यकर्ताओं से बड़े भाई प्रसन्न मुद्रा में बात कर रहे थे। उस समय उन्हें हिचकी अधिक आ रही थी। ऐसी लगा कि हिचकी के कारण बड़े भाई को कष्ट अधिक है। एक ओर कार्यकर्ता उनके दर्शन करके गद्गद् हो रहे थे, दूसरी ओर मैं अपनी गलती पर नीचे गड़ा जा रहा था। कारण, बड़े भाई का उस समय जैसा स्वास्थ्य था उसको देखते हुए उनको जगाना, उनकी जिन्दगी से खिलवाड़ करना था। किन्तु कार्यकर्ताओं से यह गलती हो गया। शीघ्र ही दर्शन कर वापस चलने के लिए कार्यकर्ताओं से निवेदन किया।

बड़े भाई के साथ उनकी सहायता करने के लिए श्री रामदास पाण्डे यात्रा कर रहे थे। कार्यकर्ताओं को गलती के कारण उनकी डांट भी खानी पड़ी। सोचता हूं कि उस समय कार्यकर्ताओं को मेरे कारण डांट खानी पड़ी। मैंने ही तो कार्यकर्ताओं को उनके आने की सूचना दी थी। आज भी वह कसक बराबर मन में बनी हुई है। वह दृश्य आज भी आंखों के सामने घूम जाता है। बड़े भाई को अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करते हुए कार्यकर्ताओं की इच्छा पूरी करने में ही सुःख प्राप्त होता था।

कार्यकर्ताओं को समझाने का ढंग

बिहार प्रदेश के कोयला क्षेत्र में कार्य की दृष्टि से १९६६ से कोलियरी कर्मचारी संघ के नाम से रजिस्टर्ड यूनियन कार्यरत है। कोल इण्डिया की तीन सबसिडियरीज कम्पनियों का मुख्यालय बिहार में है। इसके अतिरिक्त इस्टर्न कोल फील्ड लिमिटेल के अन्तर्गत कार्यरत अनेक कोलियरियां भी बिहार में है। इसका मुख्यालय आसनसोल (बंगाल) में है। १९८० से इस यूनियन के महामन्त्री के रूप में मैं कार्य देख रहा था। १९८३ में इस प्रकार की चर्चा चली की बिहार में कोयला खदानों में कार्य करने के लिए कम्पनी के अनुसार सम्बंधित जिले में रजिस्ट्रेशन कराया जाये। यह विचार मुख्य रूप से कुछ केन्द्रीय तथा प्रान्तीय अधिकारियों का था। परन्तु मैं उन लोगों के अलग रजिस्ट्रेशन के विचार से सहमत नहीं था। कोलियरी कर्मचारी संघ की कार्यसमिति ने भी अलग रजिस्ट्रेशन के विचार को नकार दिया। परन्तु अधिकारीगण अलग रजिस्ट्रेशन के विचार और मैं उसके विरोध पर दृढ़ था। अपने-अपने अलग-अलग तर्क थे। अततः यह बात बड़े भाई के पास पहुंची। नवम्बर १९८३ की बात है। बड़े भाई धनबाद में कोयला मजदूरों के प्रशिक्षण वर्ग में भाग लेने आये हुए थे। उन्होंने मुझे बुलाकर इस सम्बन्ध में बातचीत की। मैंने रजिस्ट्रेशन नहीं होना चाहिए के सम्बन्ध में अपना तर्क उनके सामने रखा। साथ ही महामंत्री पद से हट जाने की बात भी मैंने उनके सामने रखी। उन्होंने मुझे कहा कि मैंने तुम्हें महामंत्री नहीं बनाया है। इसलिए हटने के लिये मैं कैसे कह सकता हूं। हां, तुम्हारी कुछ बातों से सहमत होते हुए भी रजिस्ट्रेशन अलग होना चाहिए यह मैं कहता हूं। तुम्हारे उच्च अधिकारी भी यही चाहते हैं। उन्होंने एक बात और कही कि तुम प्रचारक हो। तुम्हें अनुशासन और मर्यादा का पालन करना चाहिए। इतने सहज भाव से उन्होंने यह कहा कि उनकी बात मुझे जच गई। मैंने अलग-अलग रजिस्ट्रेशन कराने की जिम्मेदारी स्वीकार कर ली। अब अलग-अलग कम्पनी के आधार कार्य चल रहा है। बड़े भाई की विशेषता थी कि किसी बात को बड़े ही सरल, आत्मीय तथा स्नेहपूर्ण ढंग से समझाते थे, उसका कार्यकर्ताओं पर प्रभाव हुए बिना नहीं रह सकता

था। साथ ही अपने सहयोगी कार्यकर्ताओं के विचारों की कद्र कैसे हो सकती है, इसका ख्याल रखते थे।

कार्य पूर्ण करके ही छोड़ते

आपत्काल की बात है। बड़े भाई कारागार से छूटने के बाद बिहार प्रदेश के दौरे पर आये थे। मैं उनके साथ प्रवास पर कुछ स्थानों पर गया था। अन्तिम प्रवास कार्यक्रम बरबाडीह का था। बरबाडीह में सिर्फ रेलवे में कुछ कार्य है। हम लोग बरबाडीह पहुंचे। मैं इसके पूर्व बरबाडीह कभी नहीं गया था और न वहां के किसी कार्यकर्ता को ही जानता था। बड़े भाई वहां एक कार्यकर्ता को थोड़ा बहुत जानते थे। उन्हीं का नाम उनके पास था। उनका नाम था आर. लाल। मैं उनको स्टेशन पर एक स्थान पर बैठाकर लाल साहब का पता करने चल पड़ा। उनका नाम लेने पर कोई कुछ बताने को तैयार नहीं। सभी कहते कि यहां आर. लाल हैं ही नहीं। रेलवे कालोनी भी उनको खोजने गया। वहां भी कुछ पता नहीं चला। लाल साहब उस समय ड्यूटी पर ही थे। लोग मुझे सी. आई. डी. का आदमी समझ रहे थे। लौटकर मैंने बड़े भाई को स्थिति से अवगत कराया। वापस चलने का आग्रह किया। बड़े भाई ने कहा कि हम लोग जब यहां आये हैं तो उनको खोजकर, मिलकर ही चलेंगे। मुझे सामान के पास बैठा कर स्वयं उनको खोजने निकले। उनके सामने भी वही समस्या आई। किन्तु बड़े भाई ने उनको ढूंढ ही लिया। उनको मिलने के पश्चात् सायंकाल कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। जिसमें लगभग १० लोग आये थे। उन्हें ढूंढने में लगभग ४ या ५ घण्टा समय लग गया होगा।

सुरेश प्रसाद सिन्हा,
संगठन मंत्री,
बिहार प्रदेश।

रामनरेश सिंह से बड़े भाई

कुछ ठीक से याद नहीं है कि बड़े भाई से पहला परिचय कब हुआ। हां, उनसे सीधा सम्पर्क आने से पूर्व कभी यह अहसास नहीं हुआ, कि वे महान प्रतिभा के स्वामी थे। आपात्काल में जब उनके भारतीय मजदूर संघ के महामन्त्री बनने का समाचार पढ़ा तो विश्वास नहीं हुआ कि वे इस चुनौतीपूर्ण दायित्व को निभा पायेंगे। किन्तु जैसे-जैसे उनके समीप आने का अवसर मिला भ्रम टूटता गया। वे रामनरेश सिंह नहीं रहे, सचमुच बड़े भाई बन गये।

मंत्री जी के आदेश धरे ही रह गये

स्व. श्री सी. एम. स्टीफन संचार मन्त्री थे। उन्होंने कार्यालय परिसर में यूनियन आदि की मीटिंगों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। डाक-तार विभाग में अन्य महसंघों से सम्बन्धित यूनियनों ने परिसर से बाहर मीटिंग करना आरम्भ कर दिया। हमें यह ठीक नहीं लगा। मैंने बड़े भाई से बात की। उन्होंने कहा "भारतीय मजदूर संघ केवल सरकारी नियमों को लागू करने के लिए ही संघर्ष नहीं करता, नये नियम बनवाने और पुराने नियमों में सुधार के लिए भी लड़ता है। आवश्यकता पड़े तो नियमों का उल्लंघन करके भी।

फिर क्या था, जगह जगह कार्यालय परिसर में सभाएं होने लगी। स्टीफन साहब का वह आदेश धरा-का-धरा रह गया।

बड़े भाई को बड़े भाई ही कहिए

उत्तर प्रदेश में जनता पार्टी का शासन था। मुख्य मन्त्री थे श्री रामनरेश सिंह। आपसी फूट के कारण उनका मन्त्रिमंडल दो घन्टे पूर्व ही गिरा था।

श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी जनसंघ घटक के मुखिया थे उस दिन वे दिल्ली में ही थे। बड़े भाई ने मुझे एक फोन नम्बर देकर कहा कि जरा त्रिपाठी जी को फोन मिलाइये। मैंने फोन मिलाया और कहा कि श्री रामनरेश सिंह जी बात करना चाहते है। उत्तर मिला "अब क्या फायदा दो घन्टे पहले बात की होती। कहां है वो"? "यहीं बी० एम० एस० कार्यालय में"। "वे बोले, अरे भाई, बड़े भाई की बात कर रहे हो क्या ? तो फिर बड़े भाई ही कहा होता।"

चार पोस्ट कार्ड, चार कार्यक्रम

भारतीय डाक-तार कर्मचारी महासंघ की स्थापना के लगभग डेढ़ मास पश्चात् २० नवम्बर, १९७७ को मैं उन्हें झण्डेवालान में मिला। मान्यवर ठेंगड़ी जी भी वहां थे। सहज स्वभाव से उन्होंने कहा, "पठेला जी" कुछ दूर-दूर करिये ना। "मैंने कहा कहां जायें बड़े भाई कुछ पता तो है नहीं। उन्होंने पूछा कब जा सकते हो। मैंने कहा कभी भी यहां से अभी"। वे बोले तो फिर उत्तर प्रदेश हो आइये। पहले चार महानगरों में चले जाइये। मैं पत्र लिख देता हूं। काशी विश्वनाथ से बनारस, २७ प्रात: किसी गाड़ी से इलहाबाद और फिर २८ को कानपुर। मैंने शंका व्यक्त किया कि बड़े भाई इतनी जल्दी सूचना, रिजर्वेशन, बैठक की व्यवस्था आदि कैसे होगी। वे बोले सब हो जायेगा। तुरन्त थैले में से चार पोस्ट कार्ड निकाले और लिख दिये चारों नगरों को। आश्चर्य सभी जगह सब प्रकार की व्यवस्था हो गई।

सेवा निवृत्त कर्मचारियों का सहयोग लो

डाक-तार महासंघ के संविधान के अनुसार एक व्यक्ति केवल दो बार ही महामन्त्री पद पर रह सकता है। बड़े भाई कहते, "दो बार का यह नियम तो ठीक है किन्तु व्यक्ति पूजा वाले अपने देश में यह निभा पाओगे क्या ? और फिर सेवा निवृत्त कर्मचारियों का लाभ संगठन को मिलता रहे, इस ओर भी ध्यान दो।

चमचा दे दो-खाना भले ही न दो

कुछ खाते समय मुझे बचपन से चम्मच प्रयोग करने की आदत है। खाने के समय बड़े भाई मेरी तरफ देख कर हंसते और कहते, "अरे भाई पठेला जी को चमचा दिया कि नहीं। इन्हें चमचा जरूर दो, खाना भले न दो।

एक बार गोरखपुर में कार्यसमिति की बैठक से हम लोग लौट रहे थे। स्टेशन पर गाड़ी का इन्तजार था। कार्यकर्ता कुछ पराठें और चूसने के आम ले आये। बड़े भाई मेरी आम खाने की आदत को जानते थे। आमों की तरफ देखा और खूब हंसे। फिर बोले; "पठेला जी कुछ नहीं होगा, चमचा तो है नहीं, चलो आम चूस लो फिर हाथ धो लेना"।

अपने पांव पर खड़े होने की आदत

भारतीय मजदूर संघ की वर्ष १९८० की सदस्यता की सत्यापन होने वाला था। भारतीय डाक-तार कर्मचारी महासंघ को भी इसमें भाग लेना था। देशव्यापी फैलाव के कारण कई कठिनाइयां थी, आर्थिक भी। मैंने बड़े भाई के सामने समस्या रखी। वे बोले, बी० एम० एस० के पास पैसा कहां है और फिर ऐसी आदत न डालो, नहीं तो बिना सहायता कोई काम होगा ही नहीं। महासंघ के घटक ही उसे नोच कर खाने लगेंगे। उन्हें अपने पांव पर खड़े होने की आदत डालो।

वह अमूल्य क्षण

पहली घटना है, शायद मई अथवा जून १९७० की। मैं सुबह लगभग १० बजे बड़े भाई के निवास स्थान ७ रायल होटल, लखनऊ में उनके पास पहुंचा था। तब भारतीय मजदूर संघ के लिए मैं नया-नया ही था। शायद एक या डेढ़ वर्ष हुआ होगा। बुलन्दशहर में मुझे भारतीय मजदूर संघ का कार्य करते इसलिए बहुत ही संकोच के साथ बड़े भाई के पास पहुंचा। किन्तु उनका स्नेह भरा आत्मीयता से लबालब व्यवहार देकर अवाक् रह गया। बड़े प्रेम से उन्होंने मुझे अपने पास बैठाया। तुरन्त जलपान के लिए आंवला का मुरब्बा जो शायद वह अपने घर से लाये होंगे और पानी का गिलास देकर अतिथि सत्कार किया। बाद में चाय भी अपने ही हाथों बनाकर पिलाया। आज के युग में अपने सगे भी इतना सत्कार नहीं करते हैं, वह तो भारतीय मजदूर संघ के श्रेष्ठ नेता और उ० प्र० विधान परिषद के माननीय सदस्य थे। मैं गद्गद् हो गया। जलपान के बाद बड़े भाई ने मेरे आगमन का कारण बड़े ध्यान से सुना और मेरा कार्य जो शायद कठिन ही था, उसी दिन स्वयं लगकर सचिवालय से करा दिया।

आपत्काल में।

जब श्रीमती इंदिरा गांधी ने समूचे देश में एमरजेंसी लगा दी थी। सन् १९७६ अप्रैल की सुबह १० बजे का समय था। मैं डरते-डरते अपने कार्यालय जा रहा था। मैं क्या सभी लुके-छिपे, डरे-सहमे थे और रास्ता चलते पहिचानने से कतराते थे। बच-बच कर जा रहा था कि चिर परिचित बड़ा ही आत्मीयता से परिपूर्ण धीमा स्वर सुनाई दिया, कहो अख्तर साहब कहां जा रहे हो। मैं भौंचक्का रह गया। दुनिया ने वेश बदला था एमरजेन्सी में। पर बड़े भाई, क्या कहूं वही धोती, कुर्ता, चप्पल और कंधे पर टंगा हुआ भारी सा सफारी बैग। मैं आफिस जाने की बजाय बड़े भाई को अपने घर लाया। जैसे अपने ही घर पर हों, उन्होंने चाय,

नास्ता, स्नान, भोजन सभी कुछ मेरे घर पर किया और एक-एक करके बुलन्दशहर के सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं की कुशल मंगल पूछा। ऐसे में कैसे रास्ता निकाल कर काम करना चाहिए बातों ही बातों में इसका भी मार्गदर्शन दिया। उस समय उनसे मिलकर एमरजेन्सी के भूत का डर मेरे मन से एकदम निकल गया और मैं फिर से तरोताजा होकर भारतीय मजदूर संघ के कार्य में जुट गया।

अपने उपचार के लिए फुर्सत नहीं

सन् १९८०-८१ बुलन्दशहर में संघ शिक्षा वर्ग लगा हुआ था। विद्युत विभाग का कर्मचारी और भारतीय मजदूर संघ का सक्रिय कार्यकर्ता होने की वजह से मुझको उस शिक्षा वर्ग में विद्युत व्यवस्था का काम दिया गया था। बड़े भाई इस शिक्षा वर्ग में आए। उस समय उनके पांवों की एड़ियों में असहनीय दर्द होता था। हम भारतीय मजदूर संघ के लोगों को संघ शिक्षा वर्ग की व्यवस्था में सक्रिय योगदान करते देखकर उनको बहुत प्रसन्नता हुई। उनकी प्रसन्नता से हम सभी का उत्साह बढ़ा। बाद में हम लोगों ने परामर्श करके बुलन्दशहर के निकट खुर्जा के सुप्रसिद्ध वैद्य से बड़े भाई को मिलाया। वैद्य जी भी बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा बड़े भाई चिंता की कोई बात नहीं है। आप मेरे पास केवल १५ दिन रहिए आप बिल्कुल ठीक हो जायेंगे।

हम लोग वापिस बुलन्दशहर आए। बड़े भाई बोले, अच्छा अख्तर साहब अभी चल रहा हूं। फिर कभी जब १५ दिन की फुर्सत होगी तो आऊंगा और रुक कर इलाज कराऊंगा। किन्तु बड़े भाई को फिर कभी खुर्जा जाकर और भारतीय मजदूर संघ के १५ दिन लगाकर अपने पांव के दर्द का उपचार कराने की फुर्सत नहीं मिल पाई।

बड़े भाई का निर्णय

योजनानुसार विभिन्न उद्योगों में भारतीय मजदूर संघ का कार्य द्रुतगति से बढ़ सके इसलिए योजनापूर्वक एक उद्योग विशेष में कार्यरत कर्मचारियों को ही उसका प्रमुख दायित्व सौंपा गया था। इसी नाते उ० प्र० विद्युत मजदूर संघ का दायित्व महामन्त्री की हैसियात से मुझे दिया गया। वर्ष १९८४ के अक्तूबर में कानपुर पनकी पावर हाऊस पर प्रांतीय अधिवेशन होने वाला था। बहुत प्रवास और ब्लड प्रेशर की वजह से मैं लगभग बीमार रहता था। इधर कुछ स्पर्धा, ईर्ष्या और पद को प्राप्त करने की होड़ में अनेक लोग विद्युत मजदूर संघ के महामन्त्री अथवा अध्यक्ष पद के दावेदार हो गये थे। इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश के महामन्त्री श्री घनश्याम दास गुप्त ने विद्युत विभाग के हम सभी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं और भारतीय मजदूर संघ के क्षेत्र प्रमुखों की एक बैठक का आयोजन किया था, जिसमें बड़े भाई भी उपस्थित थे। मैं और श्री ब्रह्मदत्त त्यागी खिन्न मन से पूरा विचार बना चुके थे कि इस उठा-पटक से अच्छा तो यही है कि हम लोग अपने-अपने पदों से त्याग पत्र दे दें और खुशी-खुशी आने वाले लोगों का स्वागत और सहयोग करें।

बड़े भाई को परिस्थिति भाँपने में जरा भी समय नहीं लगा। मानों वह निर्देश दे रहे हों। उन्होंने कहा कि अख्तर हुसैन साहब ने बहुत समय से इन महासंघ में कार्य किया है और एक-एक कार्यकर्ता पर उनकी पूरी-पूरी पकड़ और जानकारी है। अतः श्री ब्रह्मदत्त त्यागी और अख्तर हुसैन दोनों ही मिलकर तय करें कि किस-किस कार्यकर्ता को क्या-क्या कार्यभार देना है। साथ ही उन्होंने कहा कि अभी आप दोनों को ही विद्युत क्षेत्र का कार्य भार सम्भालना है।

विद्युत महासंघ पर घिर आये काले बादल बड़े भाई के असंदिग्ध दो टूक निर्णय से एकदम छट गये। अधिवेशन में आए हुए सभी प्रतिनिधियों को भी यह निर्णय बहुत भला लगा। लेकिन दुर्भाग्य से हम विद्युतकर्मियों के बीच में बड़े भाई का यह अंतिम मार्गदर्शन साबित हुआ।

आंखों में आंसू

२३ नवम्बर, १९८४ को बायें अंग में हुए पक्षाघात का निदान कराने के लिए बड़े भाई को पूना भेजा गया, वहां वरिष्ठ डाक्टरों ने उनकी अभी तक की सभी बीमारियों का मूल कारण ब्रेन ट्यूमर बताया, जो कैंसर में बदल गया था। आगे इसका उपचार बम्बई अस्पताल में हुआ आपरेशन सफल हो जाने के पश्चात् मैं बड़े भाई से मिलने जनवरी में बम्बई गया। वह ठीक थे। रेडियोथिरेपी चल रही थी। पर उनकी स्मरण शक्ति बीच-बीच में गड़-बड़ा जाती थी। पता नहीं क्यों उनके मन में बैठ गया था कि उनसे मिलने को आई उनकी धर्मपत्नी को उनसे मिलने नहीं दिया गया है और पुलिस वालों ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया है, यह बात कह कर वह व्याकुल हो जाते थे।

मुझे देखकर उनकी परिचर्या में लगे श्री रामदास पाण्डे असमंजस में पड़ गये कि मिलने दे अथवा नहीं। फिर भी वह बड़े भाई के समीप मुझको ले गए। बड़े ही आग्रह, स्नेह और आत्मीयता से बड़े भाई मुझसे मिले। एक-एक करके सभी कार्यकर्ताओं की कुशलक्षेम पूछा।

उनकी स्मरण शक्ति गड़बड़ाती है इसका जरा सा भी अहसास उनकी बातचीत से जाहिर नहीं हो रहा था। मैंने कहा बड़े भाई उ० प्र० भारतीय मजदूर संघ कार्यसमिति के सभी लोग लखनऊ में मिलने वाले हैं। तो उन्होंने एक-एक का नाम लेकर सभी का स्मरण कया। कहा कि सभी को हमारा नमस्कार कहना है। यह कहते-कहते उनका गल भर आया मैंने शायद जीवन में पहली बार बड़े भाई की आंखों में छलछलाये आंसू देखे।

अख्तर हुसैन,
महामंत्री,
उ० प्र० विद्युत मजदूर संघ।

बड़े भाई की लखनऊ दिनचर्या

प्रातः लगभग ५ बजे उठना चाय पीकर नित्य कर्म से निवृति के उपरान्त लाल बाग शाखा पर जाना। एक प्याला चाय पीकर ७ बजे से ९ बजे तक लेखन कार्य। लेख, कार्यकर्ताओं के पत्रोत्तर, उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं की शासन सम्बन्धी विविध परेशानियों और समस्याओं से सम्बन्धित विधान सभा और विधानपरिषद में उठाने लायक प्रश्न तैयार करना। शासन से प्राप्त प्रश्नों के उत्तर सम्बन्धित कार्यकर्ताओं को पोस्ट करना। प्रातः १० बजे एक गिलास दूध पीकर विधान परिषद जाना। वहां की कार्यवाही में बढ़चढ़ कर भाग लेना। मजदूर समस्याओं को विधान परिषद में उजागर करना। सत्ता पक्ष पर तीखे पर विनोद से परिपूर्ण प्रहार करना। समाचारपत्रों में मजदूर क्षेत्र की सामायिक समस्याओं पर मार्मिक लेख देना। दोपहर में थोड़ा सा विश्राम। सायंकाल लखनऊ नगर भारतीय मजदूर संघ की बैठकों, द्वार सभाओं आदि में जाना। रात्रि ७ बजे से ८ बजे के बीच जनसंघ के प्रान्तीय कार्यालय पर गप-शप। तदोपरान्त मॉडल हाऊस संघ कार्यालय जाकर भोजन करना। लखनऊ में रहते दोपहर का भोजन करने की प्राय उनको फुर्सत नहीं मिल पाती थी।

बड़े भाई के ७-रायल होटल निवास पर सुबह, शाम और रात्रि में स्थानीय एवं प्रान्तीय कार्यकर्ताओं का हमेशा आवागमन बना रहता था। परेशान कार्यकर्ताओं की समस्याओं को ध्यान से सुनना और तत्काल अचूक समाधान सुझाना उनके लिए आम और सरल बात थी। अट्टहास, हसी, स्नेहपूर्ण आत्मीयता का वातावरण उनके सानिध्य में हमेशा बना रहता था। आने वाले कार्यकर्ताओं की छोटी से छोटी आवश्यकता का उनको पूरा ध्यान रहता था। भोजन अथवा चाय के लिए पूछना, स्वयं अपने हाथों से बनाकर चाय पिलाना तथा कार्यकर्ताओं के स्नान, भोजन, शयन की सम्पूर्ण व्यवस्था का ध्यान रखना। यह सब बहुत ही सामान्य ढंग से बड़े भाई करते थे। उनके सानिध्य में घण्टा आधा घण्टा भी रहने वाला कार्यकर्ता उनकी आत्मीयता, स्नेह और सचमुच में "बड़े भाई" तुल्य लाड़-दुलार में सराबोर हो जाता था।

कार्यकर्ता बहुत ही सन्तोष, शान्ति, आनन्द और अपूर्व उत्साह लेकर अपने कार्यक्षेत्र में लौटते थे।

मजदूर ही उनका कुटुम्ब

श्री रामप्रकाश मिश्र एवं मैं २९-३०-३१ अक्तूबर, १९८४ और १ व २ नवम्बर को इन्दौर में सम्पन्न हुए अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग के पश्चात् इन्दौर से जगन्नाथपुरी के लिए चले। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या हो चुकी थी। सारे देश का माहौल भयानक और डरावना बना हुआ था। जगह-जगह उपद्रव, आगजनी, जानमाल की हानि तथा दंगाफसाद हो रहा था। बहुत भीड़ हो तो ट्रेन में तो सफर करने में कितनी दिक्कत आती है, इसका अनुभव तो सभी को होगा। पर मारे खौफ के आधे-अधूरे मार्ग पर ट्रेन खाली चल रही हों और उनमें एकाकी सफर किया जाये तब कितना भय लगता है उस समय यह प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। २ नवम्बर की रात्रि इन्दौर से चलकर तीन दिन बाद ५ नवम्बर को शाम को हम दोनों जगन्नाथ पुरी पहुंचे। ६ की सुबह पुरी के कोणार्क जाते समय, जिस जीप में हम दोनों सफर कर रहे थे उसका टायर फट गया। बहुत बड़ा एक्सीडेंट हो गया। दो लोग वहीं मर गये। हालत ठीक न होने के फलस्वरूप मुझको कटक संघ कार्यालय पर १३-१४ दिन रुकना पड़ा। कुछ चलने-फिरने लायक होते ही कटक से कानपुर पहुंचा तो पता चला कि बड़े भाई अस्वस्थ हैं। रामप्रकाश जी के निर्देशानुसार कानपुर से सीधे दिल्ली पहुंचा।

यह बात है २१ या २२ नवम्बर की। साउथ एवेन्यू में बड़े भाई से मिला। मिलते ही वही चिर परिचित उन्मुक्त हास अरे! तुम ठीक हो? उनके मुस्कराते प्रश्न ने सारी चिन्ता, परेशानी और थकान दूर कर दी। मैंने कहा, मैं तो एकदम ठीक हूं, आपके सामने खड़ा हूं। पर आपको क्या हुआ? "पता नहीं" उन्होंने जवाब दिया—बायां हाथ और पांव कुछ ठीक से काम नहीं कर रहा है। मैंने पूछा क्यों अभी इन्दौर में तो आप बिल्कुल ठीक थे, कहीं ठंड तो नहीं खा गये। बोले—हां, हो सकता है। शायद ठंड ही लग गई होगी।

मैं प्रत्यक्ष देख रहा था कि उनको पैरालाइसिस का अटैक हुआ है। पर बात को हलका करने के लिये देखे को अनदेखा कर रहा था। मन चिन्ता से भर गया। अभी इन्दौर में एकदम ठीक देखा था, थोड़ा, लंगड़ा कर चलते थे, सो वह तो पिछले ८ वर्ष से ऐसे ही चल रहे थे। उनके इस कष्ट को देखने के हम सभी अभ्यस्त हो चुके थे पर यह समझ में नहीं आ रहा था कि भाग्य इतनी शीघ्रता से भी पलटा खायेगा।

मैंने कहा बड़े भाई अब लापरवाही मत कीजिए। सभी लोग आपको पूना ले जाकर सम्पूर्ण चैक-अप कराना चाहते हैं, अब आप दुबारा वापिस तभी आइए जब सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जायें। भारतीय मजदूर संघ को कुछ नहीं होने वाला है। वह तो आपके एवं मान्यवर ठेंगड़ी जी के आशीर्वाद से चल ही रहा है। बड़े भाई २३ की सुबह पूना चले गये।

तब नहीं पता था कि पिछले कई वर्षों से लगातार होने वाला पैर की ऐडी का असहनीय दर्द, लकवे के चिन्ह प्रकट करके ब्रेन ट्यूमर के रूप में पूरे भारतीय मजदूर संघ के सामने आएगा।

१६ व १७ मार्च, १९८५ को उत्तर प्रदेश के सभी क्षेत्र प्रमुखों की बैठक गाजियाबाद में हुई। बड़े भाई अपने गांव बगही से १८ मार्च को संघ कार्यालय आये। स्वाभाविक ही हम सभी उनसे मिलने १८ मार्च को दिल्ली गये। हमने देखा बहुत कमजोर हो गये हैं। स्मरण शक्ति भी बहुत क्षीण हो गई हैं। उनको बार-बार प्यास लगती थी। हिचकी बहुत आती थी, हमसे मिलकर बहुत खुश हुए। बोले, यह अच्छा ही हुआ जो आप सबको एक साथ देख लिया। यह बोलते-बोलते उनका गला रूंध गया और चुप हो गये। मिलकर सब लोग चले गये। पर मैं बड़े भाई के पास ही रह गया। श्रीमान ओमप्रकाश जी अग्री ने पूछा, आपके भोजन का क्या होगा ? मैंने कहा देखा जायेगा। परन्तु बड़े भाई जी जब भोजन के लिए चलने लगे तो बोले चलिए भोजन कर लीजिए। मैंने कहा मैं चलता हूं। जाते-जाते नल पर हाथ धोते हुए भी उन्होंने पुकारा, बाद में थाली पर से उठकर आए। आवाज दी "आइए"। मेरी आखों में आसूं आ गये। सोचा चाहूं अथवा न चाहूं पर अब तो उनके साथ भोजन पर बैठना ही होगा।

बीमारी का प्रकोप, शरीर की क्षीण अवस्था और स्मृति भी साथ न दे रही हो पर फिर भी, मान्यवर बड़े भाई का हम सभी के प्रति ऐसा आग्रहभरा आत्मीयता पूर्ण व्यवहार था।

पूरा वेतन-भत्ता मजदूर संघ खाते में

श्रद्धेय भाभी जी से सम्बन्धित एक घटना है। एमरजेन्सी के बाद की बात है। शायद १९७८ की। उस समय बड़े भाई दुबारा एम० एल० सी० हो गये थे। उनकी धर्मपत्नी और हम लोगों की श्रद्धेया भाभी जी भी कभी-कभी गांव से आकर उनके पास रायल होटल विधायक निवास में रहती थी। दूर-दराज से आए हुए कार्यकर्ता भी भारतीय मजदूर संघ कार्यालय की अपेक्षा बड़े भाई के पास रहना ज्यादा पसन्द करते थे। ऐसे ही किसी कार्यकर्ता की गलती से प्रातः स्नान करते समय साबुन फर्श पर ही घुल गया और साबुन से चिकने-गीले स्नानागार के फर्श पर फिसल जाने से भाभी जी के घुटने की हड्डी टूट गई। अखिल भारतीय महामन्त्री होने की वजह से बड़े भाई का प्रवास अत्यधिक व्यस्त रहता था। पर उसमें से समय निकालकर उनको अपनी धर्मपत्नी की परिचर्या में स्वयं लगना पड़ा। लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में भाभी जी को भर्ती कराया गया।

अस्पताल में जो चिकित्सा सुविधा उनको मिल रही थी वह बहुत पर्याप्त नहीं थी। मैं उस समय भारतीय मजदूर संघ के कार्य की दृष्टि से आगरा क्षेत्र में था। कुछ कार्यवश कानपुर आया हुआ था। वहां पर ही इस हादसे की सूचना मिली। मैं अपना काम जल्दी-जल्दी निपटाकर बड़े भाई के पास लखनऊ पहुंचा। मुझे देखकर बड़े भाई आश्वस्त हुए। बोले अच्छा हुआ तुम आ गये। तुम्हारी भाभी भी तुम्हें याद कर रहीं थी। मैंने देखा कि हड्डी टूट

जाने से कम से कम ३-४ माह की तो छुट्टी हो ही गई थी। बड़े भाई भावुक होकर बोले यह एक मुसीबत अचानक आ गई। फलस्वरूप प्रवासक्रम भी टूट गया और शासन से जो पैसा मिलता है। उसमें से भी १०००-१२०० तो व्यय हो ही जाएगा। हम सभी को पता था कि एम० एल० सी० होने के नाते बड़े भाई को जो कुछ भी धन, भत्ता आदि के रूप में प्राप्त होता था वह पूरा का पूरा सीधे भारतीय मजदूर संघ (उत्तर प्रदेश) के खाते में जमा हो जाता था। बड़े भाई को उससे कोई सरोकार नहीं रहता था। वह तो जीवन भर अपने व्यक्तिगत सुख से निर्लिप्त, कठोर संयमी, अपरिग्रही प्रचारक ही रहे और इसी नाते संस्था को संकल्पित, स्वयं के अर्जित धन में से भी अपनी पत्नी के ऊपर थोड़ा सा भी व्यय करना उनको कदापि अभीष्ट नहीं था।

उत्तर प्रदेश में उस समय जनता पार्टी का शासन था सौभाग्य से हम सभी के सुपरिचित श्री कल्याण सिंह स्वास्थ्य मन्त्री थे। मैं देख रहा था कि मिलने वाली चिकित्सा सुविधा अपर्याप्त है। अतएव बड़े भाई से डरते-डरते संकोच के साथ कहा, "बड़े भाई क्या कल्याण सिंह को सूचित कर दूं? वह एकदम बोले, नहीं-नहीं, किसी को भी परेशान मत करना। अब मैं दुविधा का मारा विवश, किंकर्त्तव्यविमूढ़? लेकिन यह एकदम सत्य और अनुभव सिद्ध बात है कि संकल्पवान व्यक्ति ही परमात्मा होता है। मैंनें देखा कि उस दिन अचानक स्वास्थ्य मन्त्री बलरामपुर अस्पताल का निरीक्षण करने आ गये। मन हुआ कि उनके पास जाऊं, और अपनी परेशानी बताऊं। पर स्वाभिमान आड़े आ गया। कौन जाय किसी मन्त्री के पास हाथ फैलाने के लिए। अतएव मैं दुविधाग्रस्त सामने के वटवृक्ष के नीचे आसन लगाकर बैठ गया। सोचा यही था कि स्वास्थ्य मन्त्री महोदय को यदि आना होगा तो पास आकर कुशल क्षेम पूछेंगे। और यदि कोरे मन्त्री हुए तो चले जायेंगे फिर ईश्वरेच्छा।

ईश्वर की कृपा से हुआ वही जो मेरा मन चाहता था। कल्याण सिंह जी मेरे पास आकर सदल-बल रुक गये। नमस्कार का आदान-प्रदान हुआ। पूछा कैसे आना हुआ? मैंने विस्तार से सभी बातें बताई। बोले अरे, आपने पहले क्यों नहीं बताया। चलिए हम भी भाभी जी को देखने चलते हैं। बस अपना काम तो हो गया। डाक्टर और नर्सों की एक लम्बी फौज के साथ स्वास्थ्य मन्त्री भाभी जी को देखने गये। उस समय डाक्टर और नर्सों की इस बड़ी फौज के साथ कल्याण सिह जी को आया हुआ देखकर खा जाने वाली कुपित निगाहों से बड़े भाई मुझे देख रहे थे। उसमें से उनका प्रखर विरागी और स्वाभिमानी स्वरूप उद्भासित हो रहा था।

राजेश्वर दयाल शर्मा,
शंकर आश्रम, शिवाजी मार्ग,
मेरठ (उत्तर प्रदेश)

बड़े भाई : बड़े भ्राता

स्व० बड़े भाई को पूरे देश में लाखों लोग जानते होंगे, पर उनका नाम बहुत कम ही लोग जानते हैं।

मुझे स्मरण आता है कि एक बार स्व० बड़े भाई के गांव में उनके बड़े भ्राता से कुछ बन्धुओं की गपशप हो रही थी। उन्होंने किसी प्रसंग में कहा आप संघ वाले बड़े झूठे हो। यह सुनकर सब दंग रह गये—किसी ने साहस करके पूछा कि कैसे ? वह बोले रामनरेश सिंह मेरा छोटा भाई है पर आप लोग उसको बड़े भाई कहते हो। इतना ही नहीं तो आप लोगों के कारण मुझे भी उसको बड़े भाई कह कर पुकारना पड़ता है।

वह बड़े परिवार में नहीं जन्मे थे। घर में भी छोटे थे। एक साधारण किसान परिवार में जन्म लिया था उन्होंने। कोई बहुत बड़ी शैक्षणिक डिग्री भी प्राप्त नहीं की थी। फिर भी वह बड़े बन गये।

वह अपने कार्य और परिश्रम से बड़े बने। वह राष्ट्र समर्पित जीवन के कारण बड़े बने। विवाहित जीवन भी उनको संघ का, प्रचारक बनने से रोक न सका और न ही आगे चल कर कार्य करने में बाधा उत्पन्न कर सका। वह अपने साहस के कारण बड़े बने। आपत्काल के आरम्भ में ही वह पकड़े गये। ६ मास जेल में रहने के बाद जब बाहर आये तो उन्होंने वेष नहीं बदला —भूमिगत नहीं हुये। पहले की भांति ही कार्य आरम्भ कर दिया। मानो कुछ हुआ ही न हो।

उन दिनों मैं उनके साथ अनेक स्थानों पर गया। मुझे स्मरण आता है कि जब हम कोटा गये तो वहां डी सी. एम. चौक में अपनी यूनियन के कार्यालय के प्रांगण में जिला

सम्मेलन था। चारों ओर झंडे ही झंडे लगे थे। लाउड स्पीकर का प्रयोग जनसभा के लिए हो रहा था —कार्यकर्ताओं को साहस देखकर मैं दंग रह गया—यह उनकी ही देन थी।

अन्त समय में जब वह बम्बई अस्पताल में थे—अनेक लोग जानते थे कि बड़े भाई का जीवन अब थोड़ा सा ही शेष है। सम्भवतः वह भी यह महसूस करते थे। आपरेशन के बाद जैसे ही थोड़ा स्वस्थ हुए उन्होंने सबसे पहला काम किया देश भर में हजारों कार्यकर्ताओं को पत्र लिखने का।

बड़ा कहलाना तो आसान है पर सचमुच बड़ा बनना बहुत कठिन है उन्होंने बड़ा बन कर दिखा दिया।

—ओम प्रकाश अग्घी
संगठन मंत्री,
भारतीय मजदूर संघ

धुन के धनी

मान्यवर रामनरेश सिंह उपाख्य बड़े भाई के साथ मुझे दो दशक से भी अधिक समय काम करने का अवसर प्राप्त हुआ है। उनके बिछुड़ने की वेदना इतनी गहरी है उसकी अभिव्यक्ति के लिए शब्द नहीं हैं। उनमें हृदय की विशालता, सहज वात्सल्य, आत्मीयता, ममता, और क्षमाशीलता थी। उन्होंने पग-पग पर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। उनका संकल्प अडिग था। वे अदम्य साहसी तथा अथाह सूझ-बूझ, अटूट धुन के धनी एवं कर्मयोगी थे। उनकी अनवरत कर्मठता से भारतीय मजदूर संघ को श्रम जगत में मान्यता मिली। सरकार को भी बाध्य होकर केन्द्रीय श्रम संगठनों की श्रेणी में भारतीय मजदूर संघ को दूसरा स्थान देना पड़ा।

उनमें अद्भुत संगठन क्षमता थी। थोड़े से कार्यकर्ताओं को साथ लेकर निर्भीकता के साथ उन्होंने श्रम जगत में अनेक नये कीर्तिमान स्थापित किए। भारतीय मजदूर संघ से आपका बिछुड़ना ऐसा लगता है कि जैसे किसी माले की सुमिरिनी ही बिछुड़ गई हो। भारतीय मजदूर संघ और बड़े भाई जैसे एक दूसरे के पर्याय हैं।

संगठन के उच्च पद पर होते हुए भी आपने साधारण से साधारण कार्यकर्ताओं के साथ अपना ऐसा सम्बन्ध जोड़ा कि भारतीय मजदूर संघ ने एक परिवार का रूप धारण कर लिया। कब और कैसे उनके साथ हमारा दो दशक से भी अधिक समय बीत गया कुछ पता ही न चला। उनकी अशेष आत्मीयता हमारे मन में सदैव विद्युत की तरह कौंधती है। उनकी स्मृतियां अतीत के वातायन से झांक रही हैं।

एक बार मीरजापुर जनपद स्थित वाष्प विद्युत गृह ओबरा के प्रांगण में विद्युत कर्मचारियों की एक सभा आयोजित थी। जिसको उत्तर प्रदेश के तत्कालीन विद्युत मंत्री स्वर्गीय रवीन्द्र किशोर शाही सम्बोधित करने वाले थे। किन्हीं कारणों से वे विलम्ब से आये। इस बीच कुछ अवांछित तत्व सभा को भंग करने का प्रयास करने लगे। बड़े भाई ने उन्हें शांत करने की कोशिश की। किन्तु वे शरारत करने से बाज नहीं आये। शोर मचाते ही रहे। बात यहां तक आ पहुंची कि वे सब मंच पर चढ़ आये। उनका मंच पर चढ़ना था कि बड़े भाई ने उनके नेता को धर दबोचा। उसकी जम कर पिटाई की। उनके इस साहस ने उनके व्यक्तित्व के इस पहलू को चरितार्थ कर दिया कि आप सीधे के लिए सीधे और अपने को बांकुरा समझने वालों के लिए बांकुरे थे।

वे प्राय: कार्यकर्ताओं से घुलमिलकर बातें करते थे। यदि कभी किसी कार्यकर्ता ने उसकी इस सरलता का दुरुपयोग करने का दु:साहस किया तो उसे उसका परिणाम भी भुगतना पड़ता था। एक बार एक कार्यकर्ता ने उनकी निकटता का व्यक्तिगत लाभ उठाने का प्रयास किया। वे समझ गये। उन्होंने उसे समझाया भी। किन्तु वह अपने स्वार्थ में लिप्त रहा। अन्त में बड़े भाई ने उसे मुक्त कर दिया। वह सीधे भाभी जी के पास गया। भाभी जी ने भी उसकी सिफारिश की। किन्तु बड़े भाई नहीं माने। छुट्टी हुई तो छुट्टी। संयोग से मैं रायल होटल, जहां बड़े भाई रहते थे—गया। भाभी जी से मैंने पूछा कि "बड़े भाई कहां गये हैं?" उत्तर मिला, "तुम्हारे बड़े भैया तो कालिदास हैं—जिस डाल पर बैठते हैं उसी को काटते हैं। देखो न। ओका छुट्टी कर दिहेन।" मैं चुप रहा। कारण, सारी बात मुझे पता थी। इस घटना से एक बात स्पष्ट रूप से सामने आ जाती है कि संगठन के सामने बड़े भाई का न कोई सगा था, न मित्र। संगठनात्मक निर्णय करते समय उनकी भूमिका—'सख्त हुआ तो कोह आलम क्या—नरम हुआ तो बर्फ गुलाब क्या चीज' जैसी थी। उनका व्यवहारिक पक्ष नरम था किन्तु संगठनात्मक अनुशासन पक्ष बड़ा ही कठोर था। नि:सन्देह संगठनात्मक अनुशासन के वे आदर्श पुरुष थे।

कठिन बीमारी के समय जब वे बेहोशी की स्थिति में थे तो कभी-कभी बोलते और थोड़ी बात भी करते थे। एक दिन भाभी जी ने उनसे पूछा "अब झोलवा लइके दौरे पर न जाब्या।" उत्तर था, "जाबरे"। उनका उत्तर सुनकर सबकी आंखें छलछला आई। अन्तिम क्षण तक उनके मन में संगठन के लिए प्रवास करने की भावना बनी रही। संगठन के लिए वह समर्पित व्यक्तित्व हमारे बीच नहीं रहा।

—रामप्रकाश मिश्र, मंत्री,
भारतीय मजदूर संघ (कानपुर)

न्याय के लिए

बड़े भाई तथा श्री रामजी दास शर्मा, नवीन मार्केट स्थित भारतीय मजदूर संघ कार्यालय आ रहे थे। रास्ते में नवीन मार्केट के दुकानदारों ने उन्हें रोक लिया। कहने लगे—"नेताजी नगरपालिका हमारी दुकानों का किराया लेती है। हम सामान लाते हैं और उसे यहां उतारते हैं तो नगरपालिका की गाड़ी बाहर पड़े सामान को उठा ले जाती है। कृपया हमारी मदद करें"। बड़े भाई ने उत्तर दिया, "तुम दुकान करो और हम नेतागिरी करें, यह संभव नहीं। यदि तुम दुकानें बन्द करो, तब हम कुछ कर सकते हैं।"

सभी दुकानदार दुकानें बंद करके इकट्ठा हो गए। बड़े भाई ने श्री रामजीदास शर्मा से कहा कि नगरपालिका की गाड़ी रोक कर सामान उतरवा दो। शर्मा जी ने वैसा ही किया। नगरपालिका इंस्पेक्टर तथा कर्मचारियों में हाथापाई भी हुई। इंस्पेक्टर ने भागकर नगर प्रशासन को फोन किया। थोड़ी ही देर में नगर प्रशासक, एस० एस० पी०, डी० एम० आदि पुलिस बल सहित वहां आ धमके।

बड़े भाई ने नगर प्रशासक से कहा—"तुम इन दुकानदारों से किराया लेते हो और इन अपने ही किराएदारों को परेशान करते हो। क्या यह ठीक है ?"

बड़े भाई की युक्तिपूर्ण बातचीत से नगर प्रशासक को झुकना पड़ा। दुकानदारों के सामान की समुचित व्यवस्था करने का आश्वासन दिया।

त्रिभुवन सिंह, कानपुर

बहुआयामी व्यक्तित्व

एक बार जब बड़े भाई पुणे स्थित "सिंहगढ़" देखने निकले। तीन हजार फुट की ऊंचाई पर उनकी जीप पंचर हो गयी। उन दिनों बड़े भाई को पांव में कष्ट भी था चलने में काफी तकलीफ होती थी। आधा घन्टा चलने पर उनके पांव सुन्न हो जाते थे। साथी कार्यकर्ताओं को चिन्ता हुई कि अब क्या किया जाए। लेकिन बड़ी सरलता और विश्वास से "बड़े भाई" ने कहा—बन्धुओं! तुम आगे चलो मुझे तो वाहन मिल ही जायेगा! विवश होकर कार्यकर्ता आगे बढ़े। पन्द्रह मिनट के बाद ही कार्यकर्ताओं ने देखा कि किसी एक अनजाने व्यक्ति की मोटर साईकिल पर सवार होकर "बड़े भाई" उनसे आगे निकल गए।

बड़े भाई के व्यक्तित्व में अनेकविध पहलू थे। घरेलू दवाओं की उन्हें अच्छी जानकारी थी। मेरे पिताजी जब दमा से बीमार थे तब उन्होंने अदरक से बनाई हुई एक दवा मुझे बताई। इस दवा से मेरे पिताजी को आराम हो गया था।

बड़े भाई, मेरी चार साल की बेटी को उसके नाम से जानते थे। लखनऊ के एक अधिवेशन में मैं मेरे परिवार को लेकर गया था। उनके भाषण के समय बेटी ने रोना शुरू किया तो हम उसे लेकर बाहर निकल गए। बड़े भाई ने बाद में मेरी पत्नी से पूछा—क्यों गायत्री, भाषण सुनने नहीं देती ना?" हजारों कार्यकर्ता के परिवारों का ध्यान आप कैसे रखते हैं। मेरी पत्नी ने आश्चर्य से उनसे पूछा था और वे हंस दिये थे। १६८४ में बड़े भाई औषधोपचार के लिए पुणे पधारे। इस समय उनकी शरीरावस्था विकलांग सी थी। फिर भी उनका हास्य उतना ही प्रबल और ताजा था। उनके स्वागत के लिए स्टेशन पर गए कार्यकर्ताओं के साथ विनोद करते रहे। पुणे के मच्छरों पर भी व्यंग्यपूर्ण बातें करते रहे।

—उदय पटवर्धन, पुणे

पहली मुलाकात

आपतकाल का समय संभवतः सितम्बर-अक्तूबर का महीना था। उस समय भारत हैवी इलैक्ट्रीकलस में नौकरी में था। यूनियन का महामन्त्री था। खबर आई बड़े भाई आ रहे हैं। बस अड्डे पर उन्हें लेने पहुंचा। इसके पूर्व उन्हें देखा नहीं था। बस से पहले जुमड़े जी उतरे। उनके पीछे-पीछे एक ठेठ देहाती चलन की घुटने तक धोती, रंग काला, बड़े ऊंचे कंधे पर थैला टंगा हुआ। मैं उन्हें दुर्लभ करते हुये और कोई व्यक्ति होगा अन्य प्रवासी कौन उतर रहे देखने लगा। मन में कल्पना थी सूट-बूट पहने टिप-टॉप हमारे भारतीय मजदूर संघ का नया महामंत्री होगा। इतने में जुमड़े जी ने इशारा किया 'आप बड़े भाई हैं'। उनका थैला उठाने के लिये बड़े अनमने भाव से आगे बढ़ा ही था कि उन्होंने पूछा कहां चलना है। मैं अपनी गाड़ी पर बैठाकर उन्हें अपने गोविन्दपुरा के अपने मकान पर ले आया।

स्नान से निवृत्त होने के बाद मुझे पास बैठाया। मैं डरते-डरते उनके पास बैठा। उन्होंने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। यहां बी० एच० ई० एल० मे क्या करते हो? बी० एच० ई० एल० में कितना वेतन मिलता है? डाक्टरी में क्या-क्या पढ़ा? दवाखाने की आमदनी क्या है? घर में कौन-कौन हैं? कुछ जिम्मेदारियां हैं क्या? मैं उनके प्रश्नों का जवाब देता रहा। दूसरे दिन जब स्टेशन पर वापस छोड़ने गया तब धीरे से पूछा "बड़े भाई कल आपने कई प्रश्न पूछे। पर क्यों पूछा यह समझ नहीं पाया"। उनका जवाब था, "डाक्टर तुम बहुत लालची हो। जब कोई जिम्मेदारी नहीं, है, शादी भी नहीं की, तब पैसों के पीछे क्यों मरे जा रहे हो। छोड़ो सब और काम में लगो। भारतीय मजदूर संघ को कार्यकर्ताओं की जरूरत है।" मैंने उसी समय तय किया कि अब नौकरी नहीं करूंगा। बड़े भाई की आज्ञा का पालन करूंगा।

समय ने करवट बदली। आपत्काल हटा। मैं भी नौकरी से त्याग पत्र देकर पूर्ण-कालिक कार्यकर्ता बना पहले उनके प्रति मन में जो डर था वह जाता रहा। कार्यकर्ता को पूर्ण

हम नत् मस्तक हैं

राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद के शिष्ट मण्डल में मुझे भारतीय मजदूर संघ की ओर से जापान आदि देशों की यात्रा हेतु मनोनीत किया गया था। प्रतिनिधिमण्डल को २३ जनवरी १९८२ को नई दिल्ली से टोकियो के लिए प्रस्थान करना था। किन्तु मेरा पासपोर्ट नहीं बन पा रहा था। २१ जनवरी १९८२ को लखनऊ पहुंचा तो बड़े भाई अपने निवास पर १०३ डिग्री ज्वर में पड़े थे। उन्होंने मुझसे पूछा कहो, कैसे आना हुआ। तुम्हारे पासपोर्ट का क्या हुआ ? मैंने कहा बड़े भाई, अभी तो नहीं बन पाया। मेरी सी. आई. डी. रिपोर्ट अन्तिम रूप से नहीं लगी है। उसी के सम्बन्ध में आया हूं। भारतीय जनता पार्टी के प्रादेशिक कार्यालय मंत्री श्री बिपिन बिहारी तिवारी जी के मामा सी.आई.डी. में हैं उन्हें ही वह रिपोर्ट भेजनी है। यह सुनकर बड़े भाई उठने लगे। मैंने कहा बड़े भाई आपको ज्वर है। आप विश्राम करें। मैं उनसे जाकर मिल लूंगा। उन्होंने एक न सुनी। कपड़े पहन कर ज्वर में ही मेरे साथ चल दिये और बताया कि श्री तिवारी जी उनके (बड़े भाई) के सिवा किसी और के कहने से नहीं जायेंगे।

बड़े भाई ने भारतीय जनता पार्टी कार्यालय जाकर श्री तिवारी जी को मेरे साथ चलने को तैयार किया और बताया कि वह आ गये हों तो विधान परिषद् का सत्र रहा है, सदन में ही उनसे (बड़े भाई से) सम्पर्क करें कि क्या परिणाम रहा ? मैंने कहा विधान परिषद तक पहुंचना बिना प्रवेश पत्र के सम्भव नहीं है। बड़े भाई ने स्वयं जाकर मेरा प्रवेश पत्र बनवाकर मुझे दिया। कार्य व कार्यकर्ता के लिए अपने शरीर के साथ इस आत्मीयता के कारण उनके सम्मुख नत् मस्तक होना पड़ता था।

दूसरों के प्रति मुलायम, अपने प्रति कठोर

वाराणसी मजदूर संघ कार्यालय पर बड़े भाई के साथ में भी था। उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक मान्यवर माधव जी देवले वाराणसी संघ कार्यालय पर स्वास्थ्य अत्यन्त खराब होने के कारण चिकित्सा करा रहे थे। विचार बना कि देवले जी से भेंट करने संघ कार्यालय चला जाय। साईकिल रिक्शा से हम दोनों ने संघ कार्यालय के लिये प्रस्थान किया। रास्ते में वार्ता चल रही थी कि देवले जी को अब प्रवास बन्द कर देना चाहिए। किसी केन्द्र स्थान पर बैठकर मार्गदर्शन करना ही उचित है। संघ कार्यालय पर पहुंचकर मा० देवलेजी से चाय पर वार्ता का चक्र प्रारम्भ हो गया। बड़े भाई ने देवले जी से स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चा की। अपना सुझाव रखा कि आप अब प्रवास के दायित्व से मुक्त होकर किसी केन्द्र स्थान पर रहकर मार्गदर्शन करें। और भी चर्चायें चलती रहीं। कुछ समय बाद देवले जी ने बड़े भाई के स्वास्थ्य और पैर के दर्द के सम्बन्ध में पूछताछ प्रारम्भ की और लौटकर उन्होंने भी वही सुझाव बड़े भाई के सम्मुख रखा कि ऐसी स्थिति में आपको प्रवास बन्द कर देना चाहिए। बड़े भाई जी का उत्तर था, मेरा तो अभी चल रहा है, अधिक कष्ट नहीं है। यदि बहुत बढ़ा तो देखूंगा।

मां जैसी ममता

आपत्काल के पश्चात चीनी उद्योग के प्रमुख कार्यकर्ताओं की दो दिवसीय बैठक बड़े भाई के निवास रायल होटल लखनऊ पर थी। उस समय उनके पैर में दर्द था। बैठक दूसरे दिन भोजन तक चली। बैठक में उनके पैर में तेल की मालिश की गई और सभी लोग विश्राम करने लगे। बैठक समाप्त हो गई थी। अतः कार्यकर्ता प्रस्थान कर चुके थे केवल चार-पांच लोग बचे थे। सायंकाल चार-पांच बजे बड़े भाई ने चाय पीने का प्रस्ताव किया। चाय बनाने हेतु हम उठकर रसोई में जाने लगे तो बड़े भाई जी ने हमें रोका और स्वयं चाय बनाकर पिलाई।

हमारी गाड़ियां तीसरे दिन प्रातः थीं। इसलिए सिनेमा में मनोरंजन का कार्यक्रम बना। किन्तु यह बात बड़े भाई से कहने का साहस न जुटा सकने के कारण मैंने कहा कि बड़े भाई आपके पैर में बड़ा कष्ट है। अतः आप एक चाबी हमें दे दीजिए ताकि यदि हम लोग देर से आए तो कमरा खोलकर सो जायें। उन्होंने पूछा क्या बात है, कहां जा रहे हो ? संकोच व झिझक के साथ मैंने कहा कि बड़े भाई आज पिक्चर जाने की इच्छा हो रही है। उन्होंने उत्तर दिया "फिर मैं ही यहां अकेला क्यों रहूंगा। "कार्यकर्ताओं में प्रसन्नता का अद्भुत संचार हुआ। भोजनोपरान्त सामूहिक मनोरंजन के लिए हम सब बड़े भाई के साथ चल दिये। पिक्चर प्रारम्भ होने में देर थी। हम लोग कुछ इधर उधर हो गये। मैं और बड़े भाई एक दुकान के चबूतरे पर बैठ गये। श्री ओमप्रकाश गौतम आदि कार्यकर्ता बड़े भाई को ढूढ़ने में चिन्तित दिखाई पड़े। मैंने उन्हें आवाज देनी चाही। किन्तु बड़े भाई ने विनोद करते हुए टोक दिया। कहा गौतम जी हैं, कुछ खाने पीने गये होंगे, जरा आनन्द लो उन्हें थोड़ा घूमने दो।

गुदड़ी के लाल

बड़े भाई के साथ सजीव सम्पर्क रहने के कारण, हमारे मानस पटल पर उनकी अनेक उत्प्रेरक स्मृतियां अंकित होगी । अनेक सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति जहां उनसे प्रभावित होता था, वहां प्रत्येक को ऐसा लगता था कि बड़े भाई उससे केवल एक ही कदम तो आगे हैं । अतः उसकी पहुंच के भीतर होने के कारण वह भी बड़े भाई जैसा बन सकता है ।

सम्पर्क में आये हुये से स्थायी आत्मीय सम्बन्ध बनाये रखने की कला उन्हें आती थी। निजी उपयोग के लिये गीताप्रेस गोरखपुर की डायरी रखते थे किन्तु उपलब्ध अन्य आकर्षक डायरियां प्रतिवर्ष स्थान-स्थान पर कार्यरत सहयोगियों को बाँट देते थे । एक बार बंगलोर में कार्य समिति बैठक के बाद रामेश्वर दर्शन से लौटते समय हम सभी ने अपने सम्पर्क के आत्मीय बन्धुओं को देने हेतु शंख खरीदे किन्तु बड़े भाई ने सस्ते मूल्य में उपलब्ध सिप्पियों की एक या दो नहीं, तो इकट्ठा २० मालायें कार्यकर्ताओं के कुटुम्ब की कन्याओं तथा महिलाओं को देने हेतु खरीद ली । अपने इस गुण के कारण भिन्न-भिन्न प्रकृति एवं प्रवृत्ति के अनेक लोगों को संगठन के साथ न केवल जोड़ सके अपितु समाज सेवा में उन्हें समरस भी बना सकें ।

प्रसन्नचित साहासिक, निर्भय, विनम्र, विश्वास के धनी, स्वावलम्बी मित्तव्ययी, बड़े भाई का कोई भी काम कभी अधूरा नहीं छोड़ते थे । प्रत्युत्पन्नमति विरले लोगों का ही श्रृंगार बन पाती है । योग्य उपाय के तुरन्त सूझ पड़ने के इस दुर्लभ गुण के कारण, विकट से विकट परिस्थिति से भी बड़े भाई सदैव ही सेट पट स्वा सेट साबित हुए ।

—प्रेमनाथ शर्मा
कार्यालय मंत्री
भारतीय मजदूर संघ, नई दिल्ली

फरवरी १९८४ में मेरे बड़े पुत्र अजय का विवाह था । मैंने श्री सुखदेव मिश्र, संपादक, भारतीय मजदूर संघ समाचार से आग्रह किया कि बड़े भाई के कानपुर प्रवास के समय उनकी पसंद का एक कुर्ता और धोती उन्हें बनवा दें। श्री सुखदेव ने कपड़ा खरीदा और सिलने को दे दिया । धोती के लिए जब कहा तो बड़े भाई ने कहा कि नहीं, धोती नहीं लेंगे । उसका काफी खर्च हो गया लगता है। इतना ही नहीं कुर्ते की सिलाई भी उन्होंने स्वयं दिया । बाद में मुझसे उन्होंने एक बार पूछा कि विवाह में कितना आया, कितना खर्च हुआ । बहू कैसी आई । मेरे माता-पिता न होने के कारण मुझे लगा कि बड़े भाई सचमुच बड़े भाई हैं । माता-पिता के अभाव की पूर्ति उनकी इस आत्मीयता से हो गई ।

घनश्यामदास गुप्ता, महामंत्री,
भारतीय मजदूर संघ (उ. प्र.)

समय कार्य में लगाने की उनकी शैली में विशेष प्रेम था। उसके दायित्व सोचते हुए मानसिक तथा बौद्धिक विकास करने का विशेष प्रयास करते थे। इसी सिलसिले में अखिल भारतीय खनिज धातु मजदूर महासंघ का निर्माण करवा कर मुझे महामंत्री का भार सौंपा। हिन्दुस्तान कॉपर के बेज कमेटी में आग्रहपूर्वक मुझे रखवाया। उनकी इच्छा के अनुरूप मैं सिद्ध हुआ कि नहीं मुझे नहीं मालूम।

डा० सुधाकर कुलकर्णी
महामंत्री
अखिल भारतीय खनिज धातु मजदूर संघ

अच्छे मित्र

जब बड़े भाई पुणे में आकर अस्पताल में भरती हुए, तब उनकी व्यवस्था देखने के लिए मजदूर संघ के एक कार्यकर्ता श्री रामदास पांडे उनके साथ आए थे। लेकिन अस्पताल की व्यवस्था देखना और बाकी बातों के लिए दौड़-धूप करना अकेले व्यक्ति के लिए असम्भव था। इसलिए मेरे सौभाग्य से इस कार्य के लिए उन्होंने मुझे चुना गया और अस्पताल की व्यवस्था देखने के लिए मुझे कहा। उस समय मेरे मन में यह विचार आया कि एक ज्येष्ठ कार्यकर्ता की सेवा करने का जो दायित्व मुझे सौंपा गया है उसे पूरा करने में क्या मैं उनसे अपेक्षित सेवा कर सकूंगा क्या ?

इस प्रकार का विचार मन में आने का कारण यह था कि अधिकतर कार्यकर्ता दूर से जितने अच्छे लगते हैं, नजदीक जाने पर उतने अच्छे नहीं लगते। उनके साथ रहना कष्टदायक होता है। लेकिन जितने दिन बड़े भाई की सेवा करने का अवसर मुझे मिला, उसमें मैंने यह देखा, अनुभव किया कि वे जिस प्रकार संघ के ज्येष्ठ प्रचारक हैं, उसी प्रकार अच्छे मित्र भी हैं।

पुणे के अस्पताल में आने के बाद कुछ दिन उनका स्वास्थ्य ठीक हुआ सा लगता था। लेकिन सभी प्रकार की जांच करने के बाद डा० मुले जी को लगा कि उनको बम्बई के 'बम्बई अस्पताल' में भरती करना उपचार करने के दृष्टि से अधिक लाभदायक होगा।

"मैं एक सामान्य कार्यकर्ता हूं। वास्तव में अन्यों की सेवा करना ही मेरा काम है लेकिन अभी मुझे ही अन्यों से सेवा लेनी पड़ रही है।" इस बात से बड़े भाई बहुत दुखी थे। एक दिन माननीय दत्तोपंत ठेंगड़ी अस्पताल में आये थे। उनको देखकर बड़े भाई की आंखों से आंसू बहने लगे। श्री रामदास पांडे और मेरी नजरों ने उनकी यह व्यथा साफ-साफ देखी।

ब. नी. उर्फ आप्पा गोखले,
अधिवक्ता
भारतीय मजदूर संघ पूणे विभाग

दिशादर्शन

एक दुबले-पतले अपराधी को न्यायालय में न्यायाधीश के सामने खड़ा किया गया। न्यायाधीश ने देखा कि अपराध संगीन है पर अपराधी बेहद कमजोर हैं अतएव दया आ गई और बोले तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता को देखते हुए तुमको तीन दण्ड बताए जाते हैं। अपनी सुविधानुसार तुम उनमें से एक दण्ड चुन लो, वही तुमको दिया जाएगा। पहले १०० किलो प्याज खाओ अथवा १०० जूते अपने सिर पर खाओ अन्यथा १०० रू० दण्ड दो। अपराधी ने प्याज खाना सरल समझकर उसको स्वीकारा पर एक दो किलो प्याज खाते ही उसकी आंखों में जलन मचने लगी आंसू आ गये, आंखें फूटने का डर लगा तो जूते खाने को तैयार हो गया पर २०-२५ जूते लगते ही लगा कि सिर फट जायेगा और मेरी मृत्यु भी हो सकती है तब चिल्लाया रोको, रोको मुझ से जुर्माना ले लो। मैं १०० रूपये देने को तैयार हूं। मतलब उसने प्याज खाये, जूते भी खाये और अन्त में जुर्माना भी भरना पड़ा।

शासन भी उपरोक्त अपराधी की तरह से मजदूर समस्याओं पर विचार करता है। मजदूर अपनी समस्याएं रखते हैं, आंदोलन करते हैं, हड़तालें होती हैं, उत्पादन गिरता है। लाठी, गोली, जेल, घिराव, तोड़-फोड़, सभी कुछ होता है। इस सबके बाद ही शासन मजदूर की मांग पर विचार करता है, शुरु में नहीं।

● ● ● ●

लड़के को, कर्ज लेकर पत्नि के जेवर बेच कर पढ़ाता है कि नौकरी लगेगी कर्ज चुक जाएगा जेवर बन जायेगा वृद्धावस्था में लड़का हमारी सेवा करेगा। इस आशा में स्वयं कष्ट उठाता है। पर पूरी पढ़ाई करने के बाद दर-दर की ठोकर लगने के बाद साक्षात्कार पर साक्षात्कार एक के बाद एक प्रतियोगिता में निराशा हाथ लगने के बाद माता-पिता द्वारा नौकरी के लिए पूछे जाने पर वही पुराना जवाब मिलता है। और एक दिन तंग आकर वही नौजवान गली चौराहों पर अन्धेरे में पैसा प्राप्ति के लिए लोगों की हत्या करेगा या दूसरे अपराधिक

साधनों से पैसों की पूर्ति करेगा। माता-पिता की आशा पर पानी फेर दिया कम्प्यूटर के द्वारा खड़ी की गई बेकारी ने।

● ● ● ●

जिनकी मांग है उसके पीछे उनकी शक्ति खड़ी करो।

● ● ● ●

आज के श्रम कानून मजदूर का जीवन सुखी नहीं बना न पाये। ऐसे असक्षम कानूनों को तोड़कर नये कानूनों को लागू कराने वाली शक्ति का नाम ही श्रम संगठन है।

● ● ● ●

पैसा सत्ता और पुलिस के मुकाबले में हमारे पास असंख्य मजदूरों की शक्ति है। जिसको साथ लेकर हम श्रम का पूरा मूल्य लेकर मजदूरों की मान प्रतिष्ठा बढ़ा सकते हैं।

● ● ● ●

भारतीय मजदूर संघ का कार्यकर्ता अपनी पूरी ताकत उत्पादन बढ़ाने में लगा देगा। उसमें किसी से पीछे नहीं रहेगा। पर वह यह भी देखेगा कि परिश्रम की तुलना में उसको लाभ (वेतन) मिल रहा है या नहीं। केवल मुठ्ठी भर लोगों के ऐसो-आराम के लिए वह उत्पादन नहीं बढ़ायेगा।

● ● ● ●

आज की अर्थव्यवस्था कुछ इस प्रकार की बनी है कि उत्पादन का सारा लाभ उद्योगपति, अधिकारी, जमीदार एवं नेताओं के पास किसी न किसी रास्ते से पहुंच जाता है। जैसे वर्षा का पानी कितनी भी भयंकर वर्षा हो सारा पानी जमीन में रिस कर नदी नालों के माध्यम से समुद्र में चला जाता है। आवश्यकता है इस प्रक्रिया/व्यवस्था को देश की गरीब जनता के जीवन स्तर को ऊपर उठाने की दिशा में मोड़ने की।

● ● ● ●

देश के विकास का मापदण्ड हवाई जहाज बड़े-बड़े कारखानों का निर्माण नहीं हो सकता। उसका आधार होना चाहिए कितने लोगों को जीवन गरीबी रेखा से ऊपर उठा। कितने भूखे पेटों को रोटी मिली, छत, कपड़ा और सम्मान मिला। देश के विकास का अर्थ है गरीब का विकास।

● ● ● ●

भारतीय मजदूर संघ ट्रेड यूनियनों को चिकित्सालय बनाना नहीं चाहता है जहां मजदूर बीमार होने पर, समस्याएं उत्पन्न होने पर, उनका निदान कराने के लिए आयें। इसके विपरीत हम चाहते हैं कि ट्रेड यूनियनें व्यायामशाला बनें जहां पर संगठित होकर मजदूरों शक्तिशाली बनें ताकि शासन अथवा सरमाएदार उनका हक मारने की हिम्मत ही न कर सकें।

'बड़े भाई'

कोटा में राजस्थानी साफा धारण किए बड़े भाई। साथ में भा० म० संघ राजस्थान के अध्यक्ष मामा चतुर्वेदी।

(नीचे) १९७८—केन्द्रीय निधि संग्रह अभियान का श्रीगणेश करते हुए बड़े भाई—नरेशचन्द्र गांगुली और परितोष पाठक को कूपन बेचते हुए।

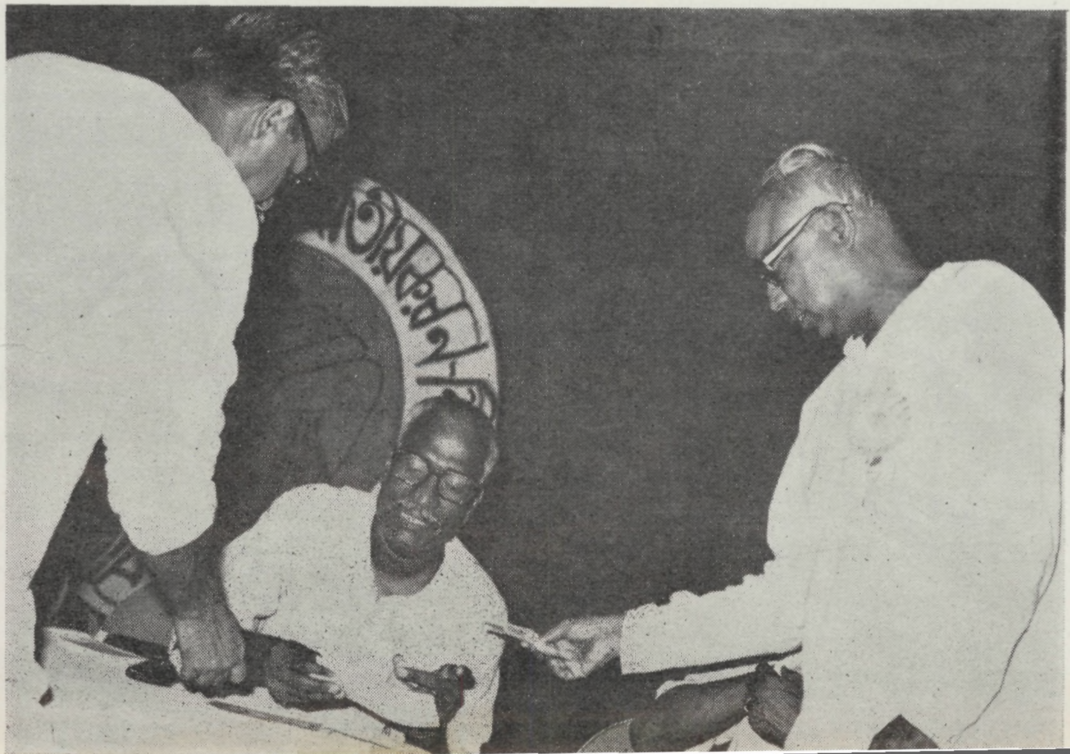

१९८०—भारतीय मजदूर संघ कर्नाटक की ओर से बड़े भाई का अभिनन्दन ।

(नीचे) डी० एम० रावदेव (महामंत्री भा० रेलवे मजदूर संघ) से बातचीत करते हुये बड़े भाई । साथ में श्रीनिवास जोशी, रावदेव, कृष्णाचारी, बी० गंगाधरन ।

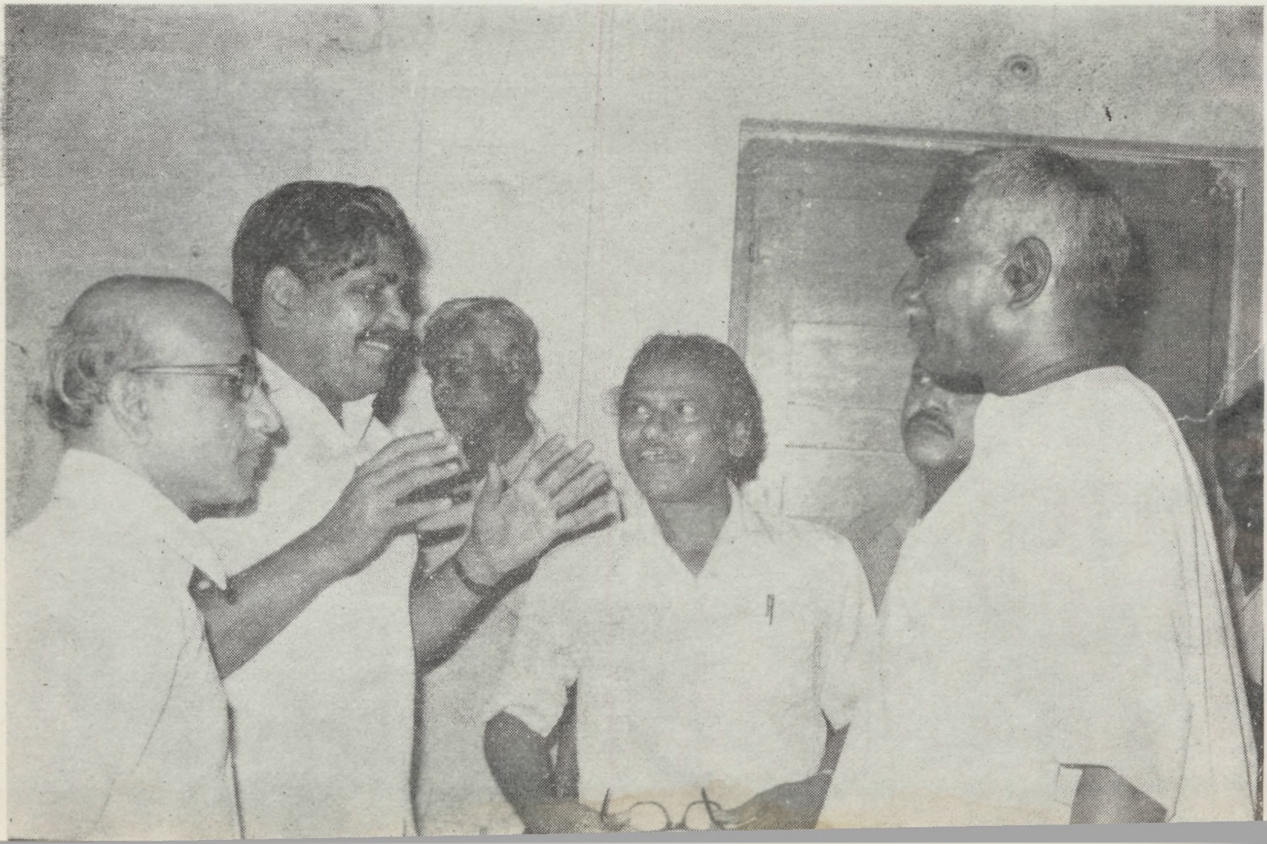

बड़े भाई, रा० स्व० संघ के विदेश विभाग के प्रमुख लक्ष्मणराव भिड़े और बीच में एक अन्य कार्यकर्ता।

कानपुर जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन के दौरान बड़े भाई, ए० डी० एम० के (दाएं)। साथ में खड़े हैं, हंसदेव सिंह गौतम तथा रमाकान्त शुक्ल।

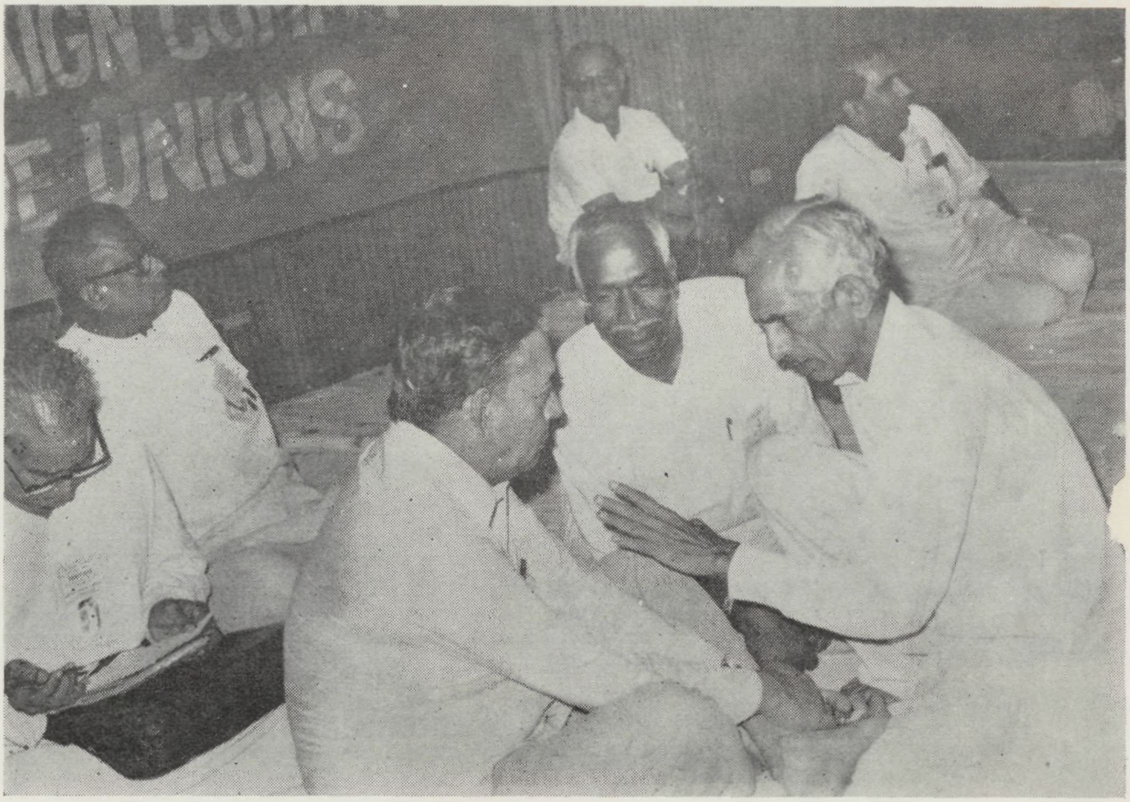

एटक के नेता इन्द्रजीत गुप्त से विचार विमर्श करते हुए बड़े भाई और राजकृष्ण भगत (दाएं)।

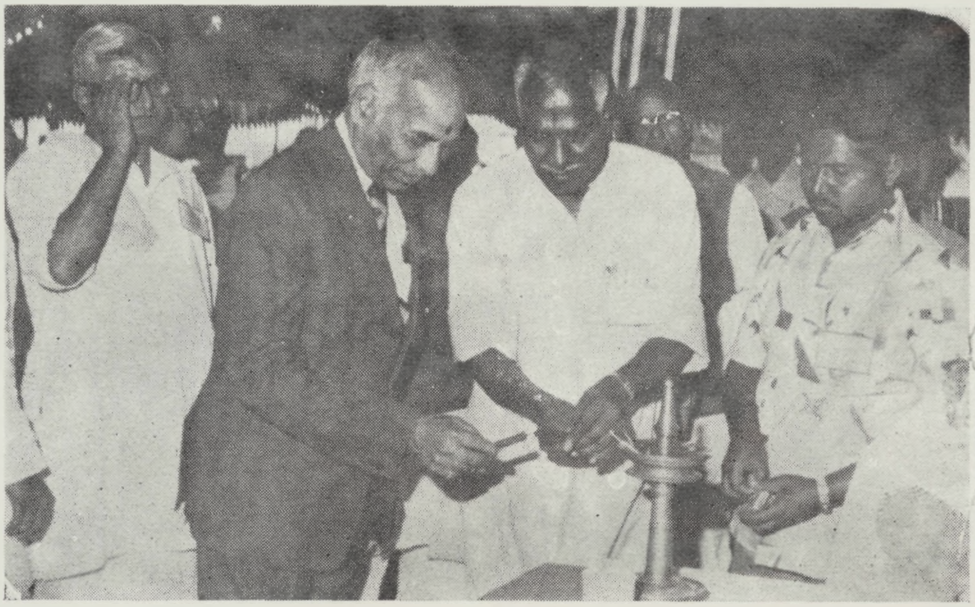

हैदराबाद अधिवेशन में दीप प्रज्वलित कराते हुए बड़े भाई साथ में न्यायाधीश
एच० आर० खन्ना एवं श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी।